माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालायाः सप्तत्रिंशत्तमो ग्रन्थः

महाकविपुष्पदन्तविरचित
त्रिषष्टिमहापुरुषगुणालंकारं नाम
अपभ्रंशभाषानिबद्धं

महापुराणम्

तस्यायं

आदिपुराणं

नाम

प्रथमः खण्डः

पुण्यपत्तनस्थवाडियाकॉलेजाख्यविद्यामन्दिरनियुक्तेन
संस्कृतप्राकृतादिभाषाध्यापकेन
वैद्योपाह्वपरशुरामशर्मणा
संपादितः

प्रकाशिका
माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रमाब्दाः १९९३] [खिस्ताब्दाः १९३७

मूल्यं दश रूपिकाः

Text (pages 1–893) Printed by Ganesh Kashinath Gokhale, Secretary Shree Ganesh Printing Works, 596–97 Shanwar Peth, Poona 2 and the rest by Anant Vinayak Patwardhan, B. A., at the Āryabhushan Press Poona, Peth Bhamburda, House No. 915/1 and published by Pandit Nathuram Premi, Secretary Manikchand Digambara Jaina Granthamala, Hirabag, Girgaum, Bombay 4

TABLE OF CONTENTS



प्रकाशकका निवेदन

अपभ्रंश भाषाके सर्वश्रेष्ठ महाकवि पुष्पदन्तकी रचनाओंका परिचय संभवत: सबसे पहिले, मैंने अपने एक विस्तृत लेखमें दिया था जो 'जैन-साहित्य-संशोधक' के जुलाई सन १९२३ के अंक में 'महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण' शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। उसके बाद अनेक विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और अपभ्रंशके साहित्यके विषयमें लोगोंकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। किंग एडवर्ड कालेजके प्रोफेसर सुहृद्वर प० हीरालाल जैन एम० ए०, एलएल० बी० तो अपभ्रंश-साहित्यपर मुग्ध ही हो गये और उन्होंने अपने अध्ययनका मुख्य विषय ही इसे बना लिया। अपभ्रंशके साहित्यके लिये उन्होंने जयपुरकी यात्रा की और वहाँके पुस्तक-भंडारोंका महीनों तक अन्वेषण किया। कारंजाके भंडार भी उन्होंने समय समयपर देखे। इसके फलस्वरूप उनके पास अपभ्रंश साहित्यका और उसकी साधन-सामग्रीका इतना अच्छा संग्रह हो गया है कि अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उनकी जिह्वापर तो इस साहित्यकी सुललित सूक्तियाँ निरन्तर ही नृत्य करती रहती हैं। इस विषयपर वे अँगरेजी और हिन्दी पत्रोंमें कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं।

सन १९३१ में उनके उद्योगसे कारंजा-सीरीजका प्रारंभ हुआ और उसमें महाकवि पुष्पदन्तके यशोधरचरित और नागकुमारचरित तथा अन्य कवियोंके पाहुड दोहा, सावयधम्म दोहा और करकण्डुचरित ये पांच ग्रंथ उन्हींके संपादकत्वमें प्रकाशित हुए।

यह महापुराण भी उक्त सीरीजमें ही प्रकाशित होता, परन्तु कुछ आकस्मिक कारणोंसे उसके फण्डमें कमी आगई और अर्थाभावके कारण यह संभव न हो सका। तब इसे माणिकचन्द्र-ग्रन्थमालामें प्रकाशित करनेका निश्चय किया गया।

परन्तु यह ग्रन्थमाला भी तो धनसम्पन्न नहीं है, समाजसे जो दस पन्द्रह हजार रुपया इसे मिला है उससे ही यह अब तक चल रही है और किसी तरह अत्यन्त मितव्ययसे ३५-३६ ग्रन्थ प्रकाशित करनेमें समर्थ हुई है। बड़ी कठिनाईसे महापुराणका यह प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है और उत्तरभागके लिये चिन्ता है कि क्या किया जाय। पूर्वप्रकाशित ग्रंथोंकी विक्री इतनी कम है कि उसके भरोसे इस महान् ग्रन्थके प्रकाशन करनेका साहस नहीं किया जा सकता। यह तो तभी संभव हो सकता है जब जैनसमाज अपने अमूल्य साहित्यके प्रति अपने कर्तव्यको कुछ समझे और ग्रन्थमालाको इतना दरिद्र न रहने दे।

INTRODUCTION

THE Mahāpurāna or Tisatthimahāpurisagunālamkāra is the earliest and the largest of the three known works of Puspadanta in Apabhramśa. Of the two smaller works, the Jasaharacariu was edited by me and published in the Kāranjā Jaina Series, Vol I, 1931. The Nāyakumāracariu was edited by Professor Hiralal Jain and published in the Devendrakīrti Jaina Series, Vol I, Kāranjā, 1933. I am now presenting to the reader the first volume of Puspadanta's Mahāpurāna comprising the Adipurāna, and hope to complete the work in two more volumes. When I announced in my introduction to Jasaharacariu that I had undertaken the edition of the Mahāpurāna I did not realise how enormous the task before me was, and what financial and other difficulties the editor and the publishers might be involved into, but I am glad, after six long years of waiting, to offer to the linguists and the students of the Jain culture the first volume of this great work, and now I can assure the reader that if no further difficulties arise, I would offer the rest of the work within the next two or three years' time, so that all the three extant Apabhramsa works of Puspadanta will have been brought to light.

This Volume contains the first thirty-seven Samdhis out of the total of one hundred and two of the entire work. This portion is popularly known as the Ādiparva or Ādipurāna, and describes the lives of Risaha or Rsabha, the first Tīrthamkara, and of Bharata, the first Cakravartin. The second volume will begin with the thirty-eighth samdhi and end with the eightieth, and the third volume will cover all the remaining samdhis. Dr Ludwig Alsdorf of Hamburg, Germany, has just published in Roman characters a portion of the Mahāpurāna under the title "Harivamsapurāna, Ein Abschnitt aus der Apabhramsa Welthistorie, Mahāpurāna Tisatthimahāpurisagunā-

अभिमानमेरु पुष्पदन्तके ग्रन्थ जैनसाहित्यकी अमूल्य निधि हैं और ऐसी निधि हैं जिनका वह गर्व कर सकता है। परन्तु दुर्भाग्यकी बात है कि हमारा समाज उस भाषाको एक तरहसे बिलकुल ही भूल गया है जिसमें इस महान् कविने और इसके पूर्व-उत्तरवर्ती सैकड़ों कवियोंने अपनी सरस सालंकार, सुपदन्यास रचनाओंसे सरस्वती माताका अपूर्व शृंगार किया था। एक समय था जब ये रचनायें घर घर पढ़ी और गाई जाती थीं और इनका संस्कृत काव्योंसे भी अधिक आदर था। सर्वसाधारण जनता शायद इसी भाषाको समझती थी और अपने कलाप्रेमको परितृप्त करती थी। परन्तु आज यह दशा है कि जहाँ हमारे समाजमें संस्कृतके जाननेवाले सैकड़ों विद्वान् हैं वहाँ इस भाषाके जानकार दस पाँच भी कठिनाईसे मिलेंगे। हमारे भंडारोंमें अब भी अपभ्रंश-साहित्यके सैकड़ों ग्रन्थ मौजूद हैं परन्तु पंडित कहलानेवाले भी उन्हें कोई महत्त्वकी चीज नहीं समझते। वह भी नहीं जानते कि आखिर ये किस भाषामें हैं। उन्हें पता नहीं कि वर्तमान प्रान्तिक भाषायें इसी भाषाकी बेटियाँ हैं इसलिये आज भाषा-शास्त्रियोंके लिये इसका साहित्य बड़े ही महत्त्वका साहित्य बन गया है। बॉम्बे, प्रयाग, बनारस और नागपूर यूनीवर्सिटियोंने अभी अभी इस साहित्यके एक दो ग्रन्थोंको अपने पाठ्य-क्रममें स्थान दिया है और आशा है कि शीघ्र ही अन्य यूनीवर्सिटियाँ भी इस ओर ध्यान देंगी। मेरा तो विश्वास है कि किसी भी प्रान्तीय भाषाका ज्ञान तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह अपभ्रंश-साहित्यकी थोड़ा बहुत न जान ले। इस दृष्टिसे जो विद्यार्थी हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली आदि प्रान्तीय भाषाओंको लेकर एम० ए० होते हैं, उनके लिये अपभ्रंश-साहित्यके ग्रन्थ अनिवार्य रूपसे पढ़ने होंगे।

इस ग्रन्थका सम्पादन संशोधन संस्कृत, पाली प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओंके प्रकाण्ड विद्वान्, वाडिया कॉलेजके प्रोफेसर डॉ० परशुराम लक्ष्मण वैद्य एम्. ए. डी. लिट्. द्वारा हुआ है। आपने अपनी स्वाभाविक उदारता और अपभ्रंश-साहित्यके प्रेमवश ही इस कार्यको किया है, अन्यथा इस दरिद्र ग्रन्थमालाकी उन जैसे धुरंधर विद्वानोंसे कार्य कराने जैसी शक्ति कहाँ है? इसके लिये ग्रन्थमालाके संचालक होनेके नाते साहित्यके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं, साथ ही श्री हीरालालजीकी भी ग्रन्थमाला ऋणी है जिनके सहयोग और उद्योगसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है और जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थकी अंग्रेजी भूमिकाका हिन्दी सारांश भी लिख दिया है। यह माला कारंजा सीरीजके अधिकारीवर्गकी भी कृतज्ञ है जिन्होंने बहु व्ययसे तैयार की गई इसकी प्रथम प्रेस-कापी इस मालाको प्रदान कर दी।

बम्बई
१-८-३७

नाथूराम प्रेमी,
मंत्री

This is one of the best and the most authentic of the Mss of the work that I possess My text therefore is based mainly on this Ms. There have been a few—indeed very few—occasions when I had to adopt a reading other than the one given in it, but I feel confident that there were sufficient reasons for doing so on every such occasion

2 K This is a paper Ms containing 732 pages measuring 16″ × 4″ Of these 732 pages, 288 are covered by the Ādipurāna or Ādiparva as it is called there Each page contains 8 lines with about 50 letters to a line The Ms. is carefully written and has copious marginal gloss The words of the text are separated by a vertical stroke between words to be separated Occasional use of prsthamātrās is noticed The Ms is decorated with thick red lines indicating the margin and there are three dots in red ink of the size of a four-anna silver coin, two in margins and one in the centre of the page where a square blank space is left It seems that these dots represent the holes of a palm leaf Ms from which this Ms may have been copied I secured this Ms through my friend and pupil, Professor A N Upadhye of the Rajaram College, Kolhapur, who obtained it from his friend Mr Tatyasaheb Patil of Nandni, near Kolhapur It begins – ॥ ओं नमो वितरागाय ॥ सिद्धिवहूमणरजणु etc , and the Ādipurāna portion ends — इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहरिसहनाहभरहणिव्वाणगमण णाम सत्ततीममो परिच्छेउ समत्तो ॥ आइपव्व समत्त ॥ It adds in a different hand भ० श्रीवीरचद्रास्तत्पट्टे भ० लक्ष्मीचद्रास्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूपणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचद्राणां पुस्तक ॥ The Uttarapurāna portion ends —इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वीरजिणिंदणिव्वाणगमण णाम दुत्तरसयपरिच्छेयाण महापुराण समत्त ॥ छ ॥ ग्रथाग्र ॥ श्लोकसख्या २०००० (?) ॥ शुभ भवतु ॥ We find on the final blank leaf —भ० लक्ष्मीचद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीवीरचद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूपणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचद्राणां पुस्तक ॥ It adds further in a different hand भ० श्रीवादिचद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीमहीचद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचद्राणां पुस्तक ॥

The entire work seems to be written in one hand , in fact this is the only Ms of the whole of the Mahāpurāna, i e , Ādipurāna and Uttarapurāna, written in one hand, that I have so far discovered This Ms seems to preserve the text as in G described above, but seems to be corrected to the version represented by the M B P group of Mss , in a different hand This Ms thus represents a mixed text It is however easy to decipher what the original reading might have been The gloss in the margin is more copious than in the Tippana

lamkāra von Puṣpadanta, Hamburg 1936 which contains saṃdhis 81–92 of the work. This portion will be re-edited in Devanāgari characters and incorporated in the third volume so that the entire work will now be made available to the public in a uniform edition. Besides as we now possess more Mss. than Dr Alsdorf was then able to get, improvement on his work may be possible.

3000
It is

veniently issued in one volume. I therefore propose to include in each volume an Introduction, dealing chiefly with the problems which concern the text of that volume only reserving larger questions arising out of entire text for the Introduction to the third and the last volume. Moreover Introductions to Jasaharacariu and Nāyakumāracariu already contain some information about the author the language of his works, metres etc., which the reader is presumed to possess.

THE CRITICAL APPARATUS

The text of the Adipurāṇa or of the present volume of the Mahāpurāṇa is based upon the following five Mss. fully collated.

1 G This Ms. consists of 503 leaves measuring 11 × 5. It has 8 lines to a page and about 29 letters to a line. It was written [illegible] of the Samvat era, or 1441 of the [illegible] pṛṣṭhamātrās and has [illegible] Ms., belongs to the Balātkāra Gaṇa Mandir at Kāraṇjā, Berar and bears No. 524 of their list (No. 7752 of the Catalogue). It was secured for my use by Professor Hiralal Jain. It begins—[illegible] etc., and ends—

[illegible]

This is one of the best and the most authentic of the Mss of the work that I possess My text therefore is based mainly on this Ms. There have been a few—indeed very few—occasions when I had to adopt a reading other than the one given in it, but I feel confident that there were sufficient reasons for doing so on every such occasion

2 K This is a paper Ms containing 732 pages measuring 16″ × 4″ Of these 732 pages, 288 are covered by the Ādipurāna or Ādiparva as it is called there Each page contains 8 lines with about 50 letters to a line The Ms. is carefully written and has copious marginal gloss The words of the text are separated by a vertical stroke between words to be separated Occasional use of prsthamātrās is noticed The Ms is decorated with thick red lines indicating the margin and there are three dots in red ink of the size of a four-anna silver coin, two in margins and one in the centre of the page where a square blank space is left It seems that these dots represent the holes of a palm leaf Ms from which this Ms may have been copied I secured this Ms through my friend and pupil, Professor A N Upadhye of the Rajaram College, Kolhapur, who obtained it from his friend Mr Tatyasaheb Patil of Nandni, near Kolhapur It begins – ॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc , and the Ādipurāna portion ends — इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहरिसहनाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेउ समत्तो ॥ आइपव्व समत्त ॥ It adds in a different hand भ० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे भ० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्राणां पुस्तक ॥ The Uttarapurāna portion ends —इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वीरजिणिंदणिव्वाणगमणं णाम दुत्तरसयपरिच्छेयाण महापुराण समत्त ॥ छ ॥ ग्रंथाग्र ॥ श्लोकसंख्या २०००० (?) ॥ शुभं भवतु ॥ We find on the final blank leaf —भ० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्राणां पुस्तक ॥ It adds further in a different hand भ० श्रीवादिचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीमहीचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचंद्राणां पुस्तक ॥

The entire work seems to be written in one hand , in fact this is the only Ms of the whole of the Mahāpurāna, i e , Ādipurāna and Uttarapurāna, written in one hand, that I have so far discovered This Ms seems to preserve the text as in G described above, but seems to be corrected to the version represented by the M B P group of Mss , in a different hand This Ms thus represents a mixed text It is however easy to decipher what the original reading might have been The gloss in the margin is more copious than in the Tippana

of Prabhācandra, (for which see below). There is no indication of the age of the Ms although its original, probably a palm-leaf Ms represents the older of the two recensions of our text. The corrections made therein to make it agree with a later recension of our text represented by the M B P group are made in a different hand, perhaps after about three generations of monks who owned it.

3. M. This Ms. consists of 470 leaves measuring 11 × 4½″. It has 8 lines to a page and about 33 letters to a line. It is written in Mathurā, modern Muttra, in 1883 of the Samvat era, i.e. in 1826 A.D. It is written in good modern hand and has some gloss in the margin but not so copious as in K or in the Tippana of Prabhācandra. It belongs to the Deccan College Collection now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona and bears No. 1050 of 1887 91. It begins —ॐ नमो वीतरागाय ॥ सिद्धि[illegible] etc., and ends :— [illegible]

4. B. This Ms consists of 306 leaves measuring 11 × 5″. It has 9 lines to a page and about 33 letters to a line. It belongs to the Balātkāra Gaṇa Mandir at Kāranjā, Berar and bears No 523 of their list (No 7753 of the Catalogue). It was secured for my use by Prof Hiralal Jain of Amraoti. It was written at Yoginipura, Dehli, in 1659 of the Samvat era, i.e. 1602 A.D. The Ms. is worn out, and its margins are decayed. It is an indifferently written Ms, omits portions mechanically while copying from its original, and has no gloss at all. I was at one time inclined to stop collating it, but did not do so for the simple reason that I thought I might find in it a version not influenced by the marginal gloss. I was however disappointed to see that the Ms. was very indifferently prepared. It begins ॐ नमः वीतरागाय [illegible] etc., and ends :— [illegible]

राज्ये अथ सवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये सवत् १६५९ पोषसुदि ४ बुधवासरे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीसिंघकीर्तिदेवा

5 P This Ms is incomplete and has lost a portion at the end The available portion of it consists of 305 leaves measurig 11½″ × 5″ It has 9 lines to a page and about 30 letters to a line It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No 370 of 1879–80 It seems to be a very old Ms, edges of leaves being worn out. There is a profuse marginal gloss The prsthamātrās are used The available portion ends with a part of the third kadavaka of the 28th samdhi (see foot-note 8 on this kadavaka on page 433 of our edition) This Ms preserves a recension which is metrically correct, i e, it uses इ, ए, उ and ओ as they are required for their correct metrical value almost uniformly I found it therefore very convenient to follow it for this purpose, and hence have not recorded variants like पणविवि and पणवेवि where पणविवि respresents the metrically correct form It beings —स्वस्ति ॥ ओं नम ॥ सिद्धेम्य ॥ सिद्धिवहूमणरजणु etc, and ends with चामर° in XXVIII 3 11

In addition to these five Mss fully collated, I came across three more Mss of the Ādipurāna Of these one is deposited in the Sena Gana Mandir at Kāranjā, (No 7754 of Rai Bahadur Hiralal's Catalogue of Mss in C P & Berar) I examined it on the spot during my visit to that place in 1927 This Ms was got copied at her own cost by a lady ancestor of the famous Chaware family of Kāranjā and presented by her to the Bhattāraka of the temple It is dated Wednesday the 8th of the dark half of Kārtika of 1591 of the Samvat era, i e, 1534 A D As I could not secure it for full collation, I prepared some trial collations from it, but as they did not reveal any difference in the variants other than those found in M B P, I dropped the idea of incorporating them in my apparatus The two other Mss belong to the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona One of them bears No 1140 of 1891–96 It is incomplete and carelessly written It contains the first 19 samdhis only, and is dated the 5th day of the bright half of Jyestha of 1848 of the Samvat era, i e, 1791 A D I made some trial collations from this Ms. but found the variants agreeing with those of M B P and hence did not collate it further The other Ms from the Bhandarkar

of Prabhācandra, (for which see below). There is no indication of the age of the Ms although its original probably a palm-leaf Ms represents the older of the two recensions of our text. The corrections made therein to make it agree with a later recension of our text represented by the M B P group are made in a different hand, perhaps after about three generations of monks who owned it.

3 M This Ms. consists of 470 leaves measuring $11'' \times 4\frac{1}{2}''$ It has 8 lines to a page and about 33 letters to a line It is written in Mathurā, modern Muttra, in 1883 of the Samvat era i e. in 1826 A.D. It is written in good modern hand and has some gloss in the margin, but not so copious as in K or in the Tippana of Prabhācandra. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No 1050 of 1887 91. It begins —ओं नमो वीतरागाय । [illegible] etc., and ends :— इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे [illegible] णाम [illegible] परिच्छेओ समत्तो । [illegible] । [illegible] ॥ [illegible]

4 B. This Ms. consists of 306 leaves measuring $11 \times 5''$ It has 9 lines to a page nd about 33 letters to a line. It belongs to the Balātkāra Gana Mandir at Kāranjā, Berar and bears No. 533 of their list (No. 7753 of the Catalogue) It was secured for my use by Prof Hiralal Jain of Amraoti It was written at Yoginipura, e Delhi, in 1659 of th Samvat era, i. 1602 A D. The Ms. is worn out, and its margins are decayed It is an indifferently written Ms., omits portions mechanically while copying from its original, and has no gloss at all. I was at one time inclined to stop collating it, but did not do so for the simple reason that I thought I might find in t version not influenced by the marginal gloss. I was however disappoi ted to see that th Ms. was very indifferently prepared It begins —ओं नमो वीतरागाय । [illegible] etc., and ends — इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए [illegible] परिच्छेओ समत्तो । [illegible] । आदिपुराण [illegible] [illegible]

राज्ये अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६५९ पौषसुदि ४ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीललितकीर्तिदेवा

5 P This Ms is incomplete and has lost a portion at the end The available portion of it consists of 305 leaves measuring $11\frac{1}{2}'' \times 5''$ It has 9 lines to a page and about 30 letters to a line. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No 370 of 1879–80 It seems to be a very old Ms, edges of leaves being worn out. There is a profuse marginal gloss The prsthamātrās are used The available portion ends with a part of the third kadavaka of the 28th samdhi (see foot-note 8 on this kadavaka on page 433 of our edition) This Ms preserves a recension which is metrically correct, i e, it uses इ, ए, उ and ओ as they are required for their correct metrical value almost uniformly I found it therefore very convenient to follow it for this purpose, and hence have not recorded variants like पणविवि and पेणवेवि where पणविवि respresents the metrically correct form It beings —स्वस्ति ॥ ओं नम ॥ सिद्धेभ्य ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and ends with चामर° in XXVIII 3 11

In addition to these five Mss fully collated, I came across three more Mss of the Ādipurāna Of these one is deposited in the Sena Gana Mandir at Kāranjā, (No 7754 of Rai Bahadur Hiralal's Catalogue of Mss in C P & Berar) I examined it on the spot during my visit to that place in 1927 This Ms was got copied at her own cost by a lady ancestor of the famous Chaware family of Kāranjā and presented by her to the Bhattāraka of the temple It is dated Wednesday the 8th of the dark half of Kārtika of 1591 of the Samvat era, i e, 1534 A.D. As I could not secure it for full collation, I prepared some trial collations from it, but as they did not reveal any difference in the variants other than those found in M B P, I dropped the idea of incorporating them in my apparatus The two other Mss belong to the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona One of them bears No 1140 of 1891–96 It is incomplete and carelessly written It contains the first 19 samdhis only, and is dated the 5th day of the bright half of Jyestha of 1848 of the Samvat era, i e, 1791 A D. I made some trial collations from this Ms but found the variants agreeing with those of M B P and hence did not collate it further The other Ms from the Bhandarkar

Oriental Research Institute bears No. 1139 of 1891–95. It is dated Wednesday the 10th of the bright half of Phālguna of 1925 of the Samvat era i 1868 A. D. This Ms. consists of three parts written in three different hands and on two different kinds of paper. The first part consists of 142 lea es and contains the text of the first sixteen samdhis. The second part contains 1 leaves which are numbered from 1 to 1 7 and not from 143. The third part contains the remaining 83 pages, numbered from 1 8, but written by a different person. I made some trial collations from this Ms. also, but did not find variants different from those found in M B P and hence did not collate it further. This Ms. puts dots at places where the writer was unable to decipher his original either because it was illegible or damaged. Besides, these last-named Mss. are considerably modern and could, on that account too, be ignored.

By far the most important aid for fixing the text and preparing the critical apparatus was obtained from the Tippana of Prabhācandra (T in the Critical Apparatus). I Secured a Ms. of this Tippana on the Adipurana portion from the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, which bears No. 568 of 18 6– This Ms. measures 13¼″ × 5½ has 51 leaves, with 13 lines to page and 45 letters to a line. The script used is peculiar in that words like [illegible] are written like [illegible] There is no ln-
— to belong to the 16th
[illegible]
[illegible]
[illegible] It ends —[illegible]

I also examined a Ms. of Prabhācandra s Tippaṇa on the Uttara purāṇa which I obtained, through the kindness of Professor Hiralal Jain, from Master Motilal Sanghi of Jaipore. This Ms. measures 13″ × 5½″
[illegible] to line. It
[illegible]
[illegible]

ममाप्तम् ॥ अथ सवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्द सवत् १५७५ वर्षे भाद्रवासुदि । बुद्धदिने । कुरुजांगलदेशे । सुलितानसिकदरपुत्र सुलितानब्राहिमु राज्यप्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासघे मथुरान्वये पुष्करगणे । भट्टारकश्रीगुणभद्रसूरिदेवा । तदाम्नाये जैसवालु चो टोडरमलु । इद उत्तरपुराणटीका लिखापित ॥ सुभ भवतु ॥ मांगल्य ददाति लेखकपाठकयो ॥ This Ms is dated Samvat 1575, i e = 1518 A. D =1518

On examining the colophon of the author of the Tippana we learn some very important and interesting particulars about the manner of its composition We learn that the Tippana was composed in the year 1080 of the Vikrama era, i e, 1023 A D, i e, within sixty years of the completion of the Mahāpurāna by Puspadanta, we also learn that king Bhoja of Dhārā was then ruling in Malva, that Prabhācandra consulted the works of Sāgarasena for his Tippana, that he also consulted the original Tippana, probably of Puspadanta himself (मूलटिप्पणकां चालोक्य), and prepared a collected Tippana (समुच्चयटिप्पण) on the Mahāpurāna, embodying the original Tippana An author's writing a Tippana on his own work may appear somewhat strange, but it is not altogether impossible, for I had an occasion to examine Mss written by the authors of the 18th century in their own hand bearing also a gloss in their own hand, and I feel certain that these authors must have borrowed the mentality of writing a gloss on their own works from their forefathers I therefore think that Puspadanta must have written a short gloss on the difficult words of his work, this gloss must have been amplified by Prabhācandra, and that the process of amplification must have continued still further down The gloss found in Mss of our text is not identical with the Tippana of Prabhācandra, but is one which is either abriged or amplified

Professor Hiralal Jain, in his Introduction (LXIII—LXIV) to the Nāyakumāracariu refers to the colophon of a Ms of the Tippana of Prabhācandra which he came across, and says that Prabhācandra lived in the reign of Jayasimhadeva of Dhārā (*circa* 1055 A D) But in view of the express mention of the date, 1080 of the Vikrama era, i e, 1023 A D and of the reign of King Bhoja in our Ms., we must regard that reference to a subsequent copy of the work, perhaps by Prabhācandra himself Our Ms of the Tippana again does not contain the stanza तत्त्वाधारमहापुराण etc Prabhācandra might have added this stanza in a subsequent copy of his work at a later date, which assumption may also explain the reference to king Jayasimhadeva

The critical apparatus described above divides the Mss. into two groups, one comprising G and K, and the other M, B and P not only because of the general agreement of the variants noted, nor on account of additions or omissions to the original text in a particular group (see page 514), but also on the strength of the agreement of the Praśasti stanzas found at the beginning of several saṃdhis. I have already alluded to this topic in my Introduction to Jasaharacariu (page *1), but I think it is necessary to discuss it in detail as it throws considerable light on the Ms. tradition of the works of Puṣpadanta and also the principle on which I have grouped the Mss. and valued them.

THE PRASASTI STANZAS OF THE MAHAPURANA

When I had an occasion to study the manuscript material for my edition of Jasaharacariu, I discovered that certain Mss. contained, at the commencement of a saṃdhi, stanzas in praise of the poet's patron, Nanna while others did not record them. In the course of the collation of Mss. I also discovered the fact that those Mss. which contained these praśasti stanzas agreed very closely in one set of variants, while those Mss. which did not contain these stanzas agreed very closely in equally another set of variants. On further examination I found that those Mss. which did not give the praśasti stanzas presented an older recension of the text, while those that contained these stanzas presented a later and amplified recension. In the case of the Jasaharacariu the amplified passages were located and their author and his date found out. As that interpolator who lived four centuries after the poet, had nothing to do with the poet's patron, I was convinced that the poet himself must have composed these praśasti stanzas, and was forced to advance hypothesis that the poet himself with the help he obtained from his patron must have got made two or three sets of copies of his work, in one of which he wrote at leisure, at first in the margin perhaps some stray stanzas glorifying his patron, while other set or sets had already gone out of his hand without the addition of these stanzas. This hypothesis, briefly enunciated on

Some of the Praśasti stanzas are put together by P. ᴾᵗ Nathuram Premi in his article on Puṣpadanta in Jaina Sahitya Saṃśodhaka, Vol. II, No. 1, 1923.

page 21 of the Introduction to Jasaharacariu, enabled me then to fix up that Mss S and T of the work presented an older version. I had there an occasion to test the correctness of the hypothesis by referring to one of the Praśasti stanzas of the Mahāpurāṇa, viz,

दीनानाथधन सदाबहुजन प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुर पुरंदरपुरीलीलाहर सुन्दरम् ।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्ध विदग्धप्रिय
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्त कवि ॥

which puzzled the historian in respect of the fixing of the date of the composition of the Mahāpurāṇa, in as much as the plunder of Mānyakheta, a well-ascertained historical event of 972 A D, was referred to by the poet in the middle of the work in the above-mentioned stanza found in the Kāranjā Ms. at the beginning of the 50th samdhi, while the completion of the Mahāpurāṇa in the Krodhana year, i e, in 965 A. D, was an equally certain event. I found that the stanza did not occur in my Ms K. This fact coupled with the absence of praśasti stanzas in my best Mss of the Jasaharacariu enabled me to advance the hypothesis set out above, which further examination of a large number of Mahāpurāṇa Mss fully corraborates The Nāyakumāracariu of Puspadanta, which was then being prepared for the Press by my friend Professor Hiralal Jain, did not contain any praśasti stanzas in any of his Mss, and hence I could not test the accuracy of my hypothesis there. I therefore proceeded to collate the prasasti stanzas occurring at the beginning of the samdhis of the Mahāpurāṇa I have not so far discovered a Ms of the Mahāpurāṇa which has no praśasti stanzas at the same time I have found that Mss do not agree in giving them all I have however found that groups of Mss. agree amazingly in giving a stanza at a particular place or omitting it altogether A smaller number of stanzas was found in my Mss G and K of the Ādipurāṇa, while the remaining Mss gave a much larger number of them I therefore regard that G and K preserve an older, if not the oldest, recension of the text of the Ādipurāṇa I think that these stanzas do not form an integral part of the text and hence they are relegated to notes in the Critical Apparatus I however believe that they were composed by the poet himself as nobody could be interested in glorifying Bharata to such extent I also believe that the poet composed these stanzas

long after he had completed the composition of the Mahāpurāṇa. At any rate the stanza [illegible] etc. he could not have written before 972 A. D., i. e. seven years after the completion of the Mahāpurāṇa. As the question of these stanzas is important for the manuscript tradition and as they throw considerable light on the relation of the poet with his patron Bharata and allied topics, I give them all arranged in groups, i. e. (a) those found in G and K (b) those found in other Mss of the Ādipurāṇa (c) those found in Poona, Kāranjā and K of the Uttarapurāṇa portion; and (d) those found exclusively in the Jaipore Ms. I have also numbered them consecutively for easy reference in the next section

(a) 1. (i) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

This stanza states that the fame of Bharata, the patron and friend of Khaṇḍa, i. e. the poet himself, has pervaded the entire universe. The stanza is found at the commencement of the 3rd saṃdhi in G and K but at the beginning of the 2nd saṃdhi in the remaining Mss. (See foot-note on page 18 and also note the variants).

2 (ii) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

This stanza mentions some of the qualities which Bharata, the poet patron, possessed. This stanza is found exclusively in G and K at the beginning of the fourth saṃdhi

3 (iii) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

This stanza states that Bharata, the poet friend and patron, is so virtuous that he would never think of the wife of another person The stanza is found at the beginning of the 5th saṃdhi in G and K,

and in other Mss also at the same place (See footnote on page 72 and also note the variants)

4 (iv) एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः
एकः काव्यपदार्थसंगतमतिश्चान्यः परार्थोद्यतः ।
एकः सत्कविरन्य एव महतामाधारभूतो विदां
द्वावेतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

This stanza brings out the characteristics of the poet and his patron, both of them adorning the earth The stanza is found in G and K at the beginning of the eighth samdhi, but in all others at the beginning of the 9th samdhi

5 (v) जग रम्म हम्म दीवओ चन्दबिम्ब
धरित्ती पल्लंको दो वि हत्था सुवत्थ ।
पिया णिद्दा णिच्च कव्वकीला विणोओ
अदीणत्त चित्त ईसरो पुप्फदन्तो ॥

This stanza states that the poet Puspadanta is a king in as much as he has the nobility of mind the whole world is his fine mansion-house, the moon the lamp, the ground his bed-stead, his arms his clothing, sleep his beloved and poetry his pastime. The stanza is found in G and K, and in all other Mss at the beginning of the tenth samdhi, and also at the beginning of the fiftieth samdhi of the Uttarapurāna in Poona, Jaipore and Kāranjā Mss

6 (vi) णाइन्दसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदंसणकइमुहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥

7 (vii) तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकैः
कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरौघैः ।
काले तृष्णाकराले कलिमलमलितेऽप्यद्य विद्याप्रियो नः
सोऽयं संसारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥

Of these the first stanza glorifies the poetic genius of Puspadanta and the second glorifies Bharata, the poet's patron, for his appreciation of learning in the Kali age These stanzas are found in G and K at the beginning of 30th samdhi and in MBP and others of this group at the beginning of 29th samdhi

8. (viii) भमिरुप्परि घरेघरे भमिरुमने सोरडसमावती ।
भरहस्स पढमालो कीर्तिरुहि सिमरए ॥

The stanza notes that it was strange on the part of Bharata still to cherish love for fame, conceived as his wife, when she wanders wantonly in every house and freely dallies with bards. This stanza is found in G and all Mss of the other group, but is missing in K. The want of agreement in G and K in this respect, however strengthens my hypothesis that these stanzas do not form an integral part of the text, but were composed by the poet at a later stage and added in the margin of some of the copies of his work that he still had with him.

The *agreement existing* between G and K regarding the location of the above-mentioned praśasti stanzas led me to believe that they formed a group by themselves. This belief of mine was confirmed by general agreement of the variants and also by non-inclusion of a long passage, found in Mss. of the other group and noted by me in the Critical Apparatus on page 514 of the printed text. Further the fact that the number of praśasti stanzas in the other group is much larger than in this group indicates that this group of Mss represents an older recension than the other one Occasional disagreement between G and K is due to the fact that K represents a mixed version, the text in it being corrected on the model of the text in the MBP group at numerous places. I have noted all such places in the Critical Apparatus where I was abl to read the original and the corrected variants, but at places the pigment or the ink was applied rather thick which mad it difficult for me to decipher the Ms. correctly

The second group of Mss. in my Critical Apparatus is represented by M, B and P Besides these, I had an occasion to consult three more Mss on from the Sena Gana Bhāndāra at Kāranjā and two from the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. All the Mss. of this group contain the Praśasti stanzas, (i) and (iii–viii) given above. Over and above this, they also contain the following :—

(b) 9 (1) भमिरुहिप्पमणिसिनु तवेंनु सर्वमिनुरलोनु ।
वैसमलमपरिमकमनुसो भरमलसकि ॥

(Found at the beginning of the third saṃdhi).

10 (ii) आश्रयवशेन भवति प्राय सर्वस्य वस्तुनोऽतिशय ।
भरताश्रयेण सम्प्रति पश्य गुणा मुग्यतां प्रापा ॥

(Found at the beginning of the fourth samdhi)

11 (iii) श्रीर्वाग्देव्यै कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि सतत लक्ष्म्यै ।
भरतमनुगम्य नाम्रतमनयोगत्यन्तिकं प्रेम ॥

(Found at the beginning of the sixth samdhi)

12 (iv) इहो भट्ट प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसन्त्यानकर्ता
कोऽय श्याम. प्रधान' प्रवरकरिकराकारबाहु प्रसन्न ।
धन्य प्रालेयपिण्डोपमधवलयशोधौतधात्रीतलान्त
ख्यातो बन्धु कवीनां भरत इति कथ पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

(Found at the beginning of the seventh samdhi)

13 (v) मातर्वेसुधरि कुतूहलिनो ममैत-
दापृच्छ्न कथय सत्यमपास्य शाठ्यम् ।
त्यागी गुणी प्रियतन सुभगोऽतिमानी
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतायनुल्य ॥

(Found at the beginning of the eighth samdhi).

14 (vi) सूर्यात्तेज (!) गर्भाग्नि जलनिधे' स्थैय सुराद्रेर्वैचो
सौम्यत्व कुसुमायुधात्सुभगतां त्याग चले नम्रमान ।
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा तसे सांप्रत
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशास नण्ड (!) कवेवल्लभ ॥

(Found at the beginning of the eleventh samdhi)

15 (vii) तीव्रापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना
सतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभो सेवया ।
यस्याचारपद वदन्ति कवय सौजन्यमत्यास्पद
सोऽय श्रीभरतो जयत्यनुपम' काले कलौ सांप्रतम् ॥

(Found at the beginning of the thirteenth samdhi and also at the beginning of the thirty-fourth samdhi)

16 (viii) केलासुद्भासिकन्दा धवलदिग्गिरटग्गिण्णदन्तङ्करोहा
सेताहींयद्धमूला जलदिनलसमुद्भूयपिण्डीविना ।

मन्ये छिलन्ती जगनरतमर्न चन्द्रलिम्ब कमली
कुसुली लारोग् मवा नवमा तुम्ह नाहेम भिली ॥

(Found at the beginning of the fourteenth saṃdhi).

17 (ix) त्वमे वस करोमि नावरमनानुन्यकुरोचवल
कीर्तिर्वल नमीनिवा तिलुगे रेमाकवर्व रहु।
सोमर्ना कुमनेनु वरव तुम्ने केन्नोज्मदा गिरुनि
नमनोनो मरण मनुर्वन मकेरानिमिरित गुरेनिना ॥

ri

t is also
in K

18. (x) कविसह कमितम्मु भरतवत तकनवानुरितमेयम्।
सरवनातुरिवनरमवि मुक्तं नि (वे 1) कमति कविमम् ॥

(Found at the beginning of the seventeenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the 102nd saṃdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss.)

19 (xi) तत्वविमयत्वानितेजनतनाग्नीरतानुरूपे।
इति गुणलनुबन्ध कवो माता हम सिविता ॥

(Found at the beginning of the eighteenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the thirty ninth saṃdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss.)

20 (xii) स्तमपि नवनयुक्तं सरस्वत्यवनद्भगवान।
भरतवरोरा केमरि कमा कानवलीगुनेन ॥

(Found at the beginning of the nineteenth saṃdhi).

21 (xiii) कविति नियुगसीन मेवननवि कवविमेनु पतिस-
समविनु मवर्करि इवनि मनतनेनु वुविमद।
मनुनवि मायनत कौनकिनि कावविनवनाने
दिवि रिवे विमानीर विनदेन विनोकवीर कनुवे (?) ॥

(Found at the beginning of the twentieth saṃdhi).

22. (xiv) न न मा रविसुमारातवनवलाय वर्मवि
कीवुलननानानुनर्धमधी मस्तु नितानो।

वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे
स जयति जयतु जगति भरतेश्वर सुसमयममलमङ्गल ॥

(Found at the beginning of the twenty-first samdhi)

23 (xv) मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना
मृगपतिनादरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम् ।
निमलतरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा
भारतमह्न सास्तु देवी तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

(Found at the beginning of the twenty second samdhi)

24 (xvi) अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरुम्बकर्णिक
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुमनचक्रचुम्बितम् ।
विलसदनुमतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमल
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

(Found at the beginning of the twenty-third samdhi)

25. (xvii) हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुधवलितगगनमण्डल
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरकुसुमसकरे ।
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमध क्षिते-
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावक यश ॥

(Found at the beginning of the twenty-fourth samdhi)

26 (xviii) उन्नतातिमनुमात्रपात्रता (?) भाति भद्र भरतस्य भूतले ।
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

(Found at the beginning of the twenty-fifth samdhi)

27 (xix) घनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणां मुहुभ्रमताम् ।
गणनैव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च ॥

(Found at the beginning of the twenty-sixth samdhi)

28 (xx) गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।
भीमपराक्रमसार भारतमिव भरत तव चरितम् ॥

(Found at the beginning of the twenty-seventh and thirty-seventh samdhis)

29 (xxi) [illegible] ।
[illegible] ॥

(Found at the beginning of the twenty-eighth samdhi).

30. (xxii) [illegible] ।
[illegible] ॥

(Found at the beginning of the thirty-second samdhi)

31 (xxiii) [illegible] ।
[illegible] ॥

([illegible] samdhi. It is also [illegible] Uttarapurāṇa in [illegible]

32. (xxiv) [illegible] ॥
[illegible] ॥

(Found at the beginning of the thirty-fifth samdhi)

It will thus be seen that the MBP group of Mss. which I fully collated for my work and at least three more Mss one from Sena Gaṇa Bhāṇḍāra at Kāranja and two from Poona, contain as many as twenty four more stanzas at exactly the same point in the Ādipurāṇa portion Some of these are repeated in some Mss. of the Uttarapurāṇa, no doubt, still the evidence strongly supports me to group them together *The variants in the text that they give justify the above view*

The above conclusion led me to see if similar groups of Mss existed for the Uttarapurāṇa also Unfortunately the number of the available Mss. of the Uttarapurāṇa is very small, viz., four Of these one is my K, the second comes from the Bhandarkar Institute, Poona, the third from Jaipore and the fourth from the Balātkāra Gaṇa *Bhaṇḍāra at Kāranja* On examination I *found that* Poona and Kāranja Mss agree in putting certain stanzas at a place particularly those four that are given at the beginning of the 50th samdhi, while K omits these very stanzas there and the Jaipore Ms. distributes them over four different samdhis from 50th onwards I give below these stanzas with their location in the four Mss. mentioned above.

(c) 33 (i) परमकरोद्पारतगविवरमहिकिरणेन्दुमण्डल
यद्पि च जलधिवलयमधिलघ्य निधेस्तद्न्तर दिश. ।
विगलितजलपयोदपन्ग्दयुति कथमिदमन्यथा यश
प्रसरदमादमल्लकदनाभारत भुवि भरत सांप्रतम् ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss at the beginning of the 41st and the 47th samdhis The Jaipore Ms has it only at the 41st K does not give it anywhere)

34. (ii) भास्वानेककलावतोऽस्य च भवेद्यनाम तन्मङ्गल
सवस्यापि गुरुबुधः कविग्य चक्रे अय च (?) क्रम ।
राहु. केतुरय द्विषामिति द्धत्साम्य ग्रहाणां प्रभु
सप्रत्योदय (?) मातनोति भरत सर्वस्य तेजोधिकः ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss at the beginning of the 50th along with two following and जग रम्म हम्म etc. (see stanza 5 above) The Jaipore Ms gives this stanza alone at the 50th, and K does not give it anywhere)

35 (iii) सया सन्तो वेसो भूसण सुद्धसील
सुसलुद्ध चित्त सव्वजीवेसु मेत्ती ।
मुहे दिव्वा वाणी चारुचारित्तभारो
अहो खण्डस्सेसो केण पुण्णेण जाओ ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss at the 50th, the Jaipore Ms gives it at 49th, and K does not give it anywhere)

36 (iv) दीनानाथधन सदाबहुजन प्रोत्फुल्लवल्लीवन
मान्याखेटपुर पुरंदरपुरीलीलाहर सुन्दरम् ।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
केदानीं वसतिं करिष्यति पुन श्रीपुष्पदन्त' कवि ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss at the 50th, in the Jaipore Ms. at 52nd, and K does not give it anywhere)

37 (v) अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीति' स्थितिश्छन्दसा-
मर्थालङ्कृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतय. ।
किं चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्ध ययोरीदृशम् ॥

(Found in all the four Mss at the beginning of the 59th samdhi)

29 (xxi) मलमिनोएस्तपति गुणभूषद्दसा सवैव बहुलेषि ।
चोक्खमित्रम कले सुहृदि सरस्वती रमइ ॥

(Found at the beginning of the twenty-eighth samdhi).

30 (xxii) सम्पगन्यस्तलोमिलसदुणालिकविकिरितरस ।
सन्देश सर्व समर्थीकिमह रहणी न सम्भवति ॥

(Found at the beginning of the thirty-second samdhi)

31 (xxiii) भिमापु(एकलाणाहो दुरबने विस्मितुवि अलेन ।
मरव तव सैन्यवल्लभानुसारी मयसि मरुव एव ॥

(Found at the beginning of the thirty-third samdhi. It is also found at the beginning of the fortieth samdhi of the Uttarapurāṇa in Poona and Jaipore Mss., but is missing in K.)

32. (xxiv) इसि भरतस्य निनेत्रमनेरविरोमनेर्नुणानुष्ठम् ।
मनु न वर्मितोन गुरुको करपाति समस्येतु ॥

(Found at the beginning of the thirty-fifth samdhi)

It will thus be seen that the MBP group of Mss. which I fully collated for my work and at least three more Mss. one from Sena Gana Bhāndāra at Kāranjā and two from Poona, contain as many as twenty-four more stanzas at exactly the same point in the Adipurāṇa portion. Some of these are repeated in some Mss. of the Uttarapurāṇa, no doubt, still the evidence strongly supports me to group them together. The variants in the text that they give justify the above view.

The above conclusion led me to see if similar groups of Mss. existed for the Uttarapurāṇa also. Unfortunately the number of the available Mss. of the Uttarapurāṇa is very small, viz., four. Of these one is my K, the second comes from the Bhandarkar Institute Poona, the third from Jaipore and the fourth from the Balātkāra Gana Bhāndāra at Kāranjā. On examination I found that Poona and Kāranjā Mss. agree in putting certain stanzas at a place, particularly those four that are given at the beginning of the 50th samdhi, while K omits these very stanzas there and the Jaipore Ms. distributes them over four different samdhis from 50th onwards. I give below these stanzas with their location in the four Mss. mentioned above.

44. (xii) चञ्चच्चन्द्रमरीचिचञ्चुरचातुर्यचक्रोचिता
चञ्चन्ती विचटच्चमत्कृतिकृषि प्रोद्दामकाव्यक्रियाम ।
अञ्चन्ती त्रिजगन्ति कोमलतया चाधुर्यधुर्यो रसे.
खण्डस्येव महाक्वे समरतान्नित्यं कृति शोभते ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 68th samdhi)

45 (xiii) लोके दुर्जनसकुले हतकुले तृष्णाकुले नीरमे
सालङ्कारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे ।
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ सांप्रत
क यास्यस्यभिमानरत्ननिलय श्रीपुष्पदन्त विना ॥

(Found in all the four Mss at the beginning of the 80th samdhi)

The following three stanzas are found only in the Jaipore Ms.

(d) 46 (i) सोऽयं श्रीभरत कलङ्करहित कान्त सुवृत्त शुचि
सज्ज्योतिर्मणिराकरो प्लुत इवानर्घ्यो गुणैर्भामते ।
वंशो येन पवित्रतामिह महामत्राह्वय प्राप्तवान
श्रीमद्वल्लभराज—⌣कटके यश्चाभवन्नायक ॥

(Found at the beginning of the 42nd samdhi)

47 (ii) वापीकूपतडागजैनवसतीस्त्यक्त्वेह यत्कारित
भव्यश्रीभरतेन सुन्दरधिया जैन सुराणां (पुराणं ?) महत् ।
तत्कृत्वा प्रवमुत्तम रविकृति (?) ससारवार्धे सुखं
कोऽन्यत् (?) त्रसहगो (?) स्ति कस्य हृदय न वन्दितुं नेहते ॥

(Found at the beginning of the 45th samdhi)

48 (iii) सज्जुडियजाणुकोप्परगीवाकडियन्यणावयवो ।
अणुहवइ वेरिय तुज्झ ण पावइ लेहओ दुक्ख ॥

(Found at the beginning of the 58th samdhi)

It will be seen from the account of these prasasti stanzas that even the Uttarapurāna Mss preserve three different recensions, K representing the oldest, the Poona and Kāranjā Mss the middle and the Jaipore Ms the youngest Leaving the question of the genealogy

38 (vi) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 63rd samdhi).

39 (vii) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 64th samdhi).

40 (viii) [illegible] (?) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] (?) [illegible]

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 65th samdhi).

41 (ix) [illegible]
[illegible]

42. (x) [illegible]
[illegible]
[illegible] (?) [illegible] (?) [illegible]
[illegible] (?)

(Both these stanzas are found in all the four Mss. at the beginning of the 66th samdhi.)

43 (xi) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

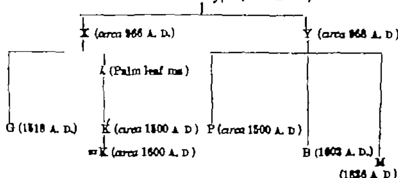
(Found in all the four Mss. at the beginning of the 67th samdhi).

We have now an excellent account of the *Rāstrakūtas and their Times* by Dr A S Altekar (Poona, 1934) We find that a few pages (115-123) are devoted there to the political events of Krsna III (939-968 A. D) We also have there a section dealing with education and literature (Chapter XIV) of the period And yet, we do not find any reference in the book to Bharata, the minister of Krsna III, nor do we find any reference to the Poet On the contrary we read on page 412 a remark to the effect that there is hardly any output of Prakrit Literature during the period Puspadanta, under the patronage of Bharata and his son Nanna, composed three works in Apabhramśa, which covering as they do over 2000 pages of the size of the present volume, cannot be easily ignored, nor can Bharata, the patron of learning, be neglected, who constantly urged on the poet to make the best use of his gifts It will not therefore be out of place to construct the story of the life of Bharata, the forgotten patron of Prakrit Literature, from out of the material like the references in the works of Puspadanta and the praśasti stanzas

Krsna III is known in Puspadanta's works by three names Tudiga, Suhatuṅgarāya (Sk Subhatungarāja) and Vallabhanrpa He came to the throne in 939 A D, and ruled up to 968 A D In this year he was succeeded by his younger brother Khottigadeva It was during the reign of Khottigadeva, in 972 A D, that Mānyakheta, the capital of the later Rāstrakūtas, was plundered by the king of Dhārā Bharata was the minister of Krsna III Nanna, Bharata's son, also, is mentioned as a minister of Suhatungarāya, i e, Krsna III Bharata however was still living when Puspadanta's Mahāpurāna was completed, i e, upto 965 A D As Krṣna III died in 968 A D, we have to suppose that Bharata must have died between 965 and 968 A D, so that his son, Nanna, could succeed his father by 968 A D After the death of Bharata, Nanna extended his patronage to Puspadanta and induced him to write Jasaharacariu and Nāyakumāracariu

Bharata seems to have come from the family of Kondella gotra (Sk Kaundinya) This was a rich family and held the office of ministers (महामत्राह्वय वशः, 46), but had become poor. There are references which indicate that Bharata regained the lost wealth of his family by devoted service to his master (सतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभो सेवया) His grandfather's name was Annaiya or Annayya His

of the Mss. of the Uttarapurāṇa for the time being I present below in genealogical form the relation of the different Mss of the Ādipurāṇa —



BHARATA, THE PATRON OF PUSPADANTA

There are in all 48 praśasti stanzas found in the Mss of the Mahāpurāṇa. Of these stanzas, six, viz 5, 6 16 30 35 and 48 are in Prakrit and the remaining are in Sanskrit. The Prakrit of these stanzas is grammatically correct and graceful, but we cannot say the same about the Sanskrit of the same Prakritisms occur there pretty often (e. g [illegible] in 29). The subject matter of these stanzas covers topics such as homage to the goddess of learning ([illegible] 6) and Ambikā (23), the poet Puṣpadanta himself (5, 30, 36 39 40, 45), the poet and his Mahāpurāṇa (37), the relation between Bharata, the patron, and the poet (1, 4, 14, 26 35, 37 38, 42, 43, 44), and the glorification of Bharata, the poet patron (remaining stanzas) Bharata is mentioned and glorified in the body of the work (I. 3–8; XXXVII. 3–5; CII. 13) and also in the Ghattā lines and the puṣpikā at the end of each saṃdhi ([illegible]) of the Mahāpurāṇa. There are three stanzas in Sanskrit in some Mss of the Jasaharacariu glorifying Nanna, Bharata's son and successor in office; and a long praśasti at the end of the Nāyakumāracariu (page 112) gives some [illegible]

The asterisk indicates conjectural M

We have now an excellent account of the *Rāstrakūtas and their Times* by Dr A S Altekar (Poona, 1934) We find that a few pages (115-123) are devoted there to the political events of Krsna III (939-968 A. D) We also have there a section dealing with education and literature (Chapter XIV) of the period And yet, we do not find any reference in the book to Bharata, the minister of Krsna III, nor do we find any reference to the Poet On the contrary we read on page 412 a remark to the effect that there is hardly any output of Prakrit Literature during the period Puspadanta, under the patronage of Bharata and his son Nanna, composed three works in Apabhramśa, which covering as they do over 2000 pages of the size of the present volume, cannot be easily ignored, nor can Bharata, the patron of learning, be neglected, who constantly urged on the poet to make the best use of his gifts It will not therefore be out of place to construct the story of the life of Bharata, the forgotten patron of Prakrit Literature, from out of the material like the references in the works of Puspadanta and the praśasti stanzas

Krsna III is known in Puspadanta's works by three names Tudiga, Suhatuṅgarāya (Sk Subhatuṅgarāja) and Vallabhanrpa He came to the throne in 939 A D, and ruled up to 968 A D In this year he was succeeded by his younger brother Khottigadeva It was during the reign of Khottigadeva, in 972 A D, that Mānyakheta, the capital of the later Rāstrakūtas, was plundered by the king of Dhārā Bharata was the minister of Krṣna III. Nanna, Bharata's son, also, is mentioned as a minister of Suhatungarāya, i e, Krsna III Bharata however was still living when Puspadanta's Mahāpurāna was completed, i e, upto 965 A. D As Krṣna III died in 968 A D, we have to suppose that Bharata must have died between 965 and 968 A D, so that his son, Nanna, could succeed his father by 968 A D After the death of Bharata, Nanna extended his patronage to Puṣpadanta and induced him to write Jasaharacariu and Nāyakumāracariu

Bharata seems to have come from the family of Kondella gotra (Sk Kaundinya) This was a rich family and held the office of ministers (महामत्राह्वय वशः, 46), but had become poor There are references which indicate that Bharata regained the lost wealth of his family by devoted service to his master (सतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभो सेवया) His grandfather's name was Annaiya or Annayya. His

father's name was Aiyana or Airana and his mother was called Devi. Bharata had no brother or near relative (बन्धुरहित, 15) He was married to Kundavvā and had seven sons, viz. Devalla, Bhogalla, Nanna, Sohana Gunavamma, Dangalya and Santalya. Nanna is mentioned as the son of Kundavvā and it is not unlikely that Bharata had more wives than one. All the seven sons of Bharata were still living in 965 A. D. while Nanna is stated to have succeeded his father already in 968 A. D. We have therefore to presume that his two elder brothers died following the death of their father or that Nanna had some special qualifications to supercede his brothers in the office of his father

Bharata is described by Puspadanta as possessing dark complexion (सामल वण्ण 12 सामलवि 20) He had a beautiful figure and is likened to the god of love (20) He had a good physique (महाभुज 23), and held the office of a general in the army of Krsna III (महामात्य वंशे महामात्यपदप्राप्ता 46). He also held the portfolio of the minister of charities in the royal household (समस्तदानाधिकृतस्य महाप्रधानस्य 12) He had a gentle dress and courteous manners and speech (सच्च वाणी वेसे, सुंदे विणय वाणि, 35). He was fond of learning (विज्जापिय, 7) He combined in him wealth and learning (श्रीसदि, सरस्वती सन्ताणु मे 22) It was impossible to count his virtues as it is impossible to count the waters of the sea (11; 12) He had a pure character (सच्चोय मलालोण ण सच्छवि, 8). He was in fact a rendezvous of all virtues, most striking among them being his generosity Poems were being recited in his house, copyists prepared copies of works. Thus, since Puspadanta became the friend of Bharata, his house became meeting place of the learned (48). He was always generous to the needy and so held a place amongst generous persons of the past such as Bali, Jimutavāhana, Dadhīci, Vinayāṅkura and Sātavāhana (9 31) His fame travelled far and wide (1). He had countless virtues as he had countless enemies (37), who experienced the same miseries as copyists experienced while toiling (48). One graceful act on his part was to induce Puspadanta to write the Mahāpurāṇa and to offer him the necessary help for this purpose. In fact, instead of spending his wealth in building wells, lakes, ponds and Jain temples, he used it on the preparation and propagation of the Jain epic with the help of which he would cross the ocean of saṃsāra with comfort (47)

The poet Puspadanta came of a Brahmin family of Kāsyapa gotra. His father's name was Keśava and mother's name was Mugdhādevī. Both of them were devotees of Siva, but were later converted to Jainism. Puspadanta had a dark complexion and a lean body. He does not seem to have married. He was in extreme poverty, had neither property nor house, and yet he possessed a lord's noble mind (5). He seems to have been in the court of a king named Bhairava or Vīrarāja, and written a poem on him, but being insulted there, left his court, and came to Mānyakheta, modern Malkhed, which was then the capital of the Rāstrakūtas, and very prosperous (36). There he stayed in a grove of trees, outside the town; two citizens, Indrarāja and Annaīya by name, saw him there and persuaded him to go to the house of Bharata where he would have a good reception. The poet was at first unwilling because of his bitter experiences of the wicked world in the past. He was however assured by these men that Bharata was a man of a different type, that he was so kind and noble. The poet thereupon went to him, had a good reception, as assured. After a few days' rest Bharata requested him to write the Mahāpurāna so that his poetic gifts could be rightly used. It was in this way that the poet began his Mahāpurāna in the house of Bharata in the Siddhārtha year of the Saka era, i. e. in 959 A. D. The poet was out of mood after he had completed his Ādipurāna, i. e., the first thirty-seven samdhis, and halted there for some time. The goddess of learning appeared before him and encouraged him to resume the work. Bharata also induced him to complete the work. The poet thereupon finished his work in the Krodhana year of the Saka era, i. e., in 965 A. D. He seems to have been highly pleased with his performance, and out of satisfaction and just pride he wrote—

अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-
मर्थालंकृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतय ।
किं चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥ (37)

in the same spirit which prompted Vyāsa of the Mahābhārata to say—

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् ।

For the Mahāpurāna is as sacred to the Jains as the Mahābhārata is to the Hindus. The poet attributed the successful completion of the

work as much to his genius as to the generosity of Bharata. His fame as poet travelled far and wide as that of Bharata for his generosity. It appears that Bharata died within three years of the completion of the Mahāpurāṇa, Nanna succeeded him in the office, extended his patronage to Puṣpadanta and asked him to write two more poems in Apabhraṃśa, Jasaharacariu and Nayakumāracariu. The glory of the Rāṣṭrakuṭas, however soon came to the end. Their capital Mānyakheṭa, was plundered in 972 A. D. and the poet became destitute once more ([illegible] 36)

WHAT IS A MAHAPURANA?

The Digambara Jains hold that their sacred literature consisting of Purvas and Aṅgas is lost; they do not therefore accept the authority of the Canon of the Svetāmbaras. The Canon according to the Digambaras, consists of four divisions (i) Prathamānuyoga, lives of Tīrthaṃkaras and other great men of the faith; in other terms, the kathā literature; (ii) Karaṇānuyoga, description of the geography of the universe (iii) Caraṇānuyoga, rules of conduct for monks and laymen; and (iv) Dravyānuyoga, philosophical categories or philosophy. According to this classification works like the present text fall under the category of Prathamānuyoga.

The Mahāpurāṇa is a term peculiar to the Jain literature and means a great narrative of the ancient times. There are purāṇas or old tales in the Jain Literature, but they narrate the life of a single individual or holy person. The Mahāpurāṇa, on the other hand describes the lives of sixty-three prominent men of the Jain faith. Jinasena uses the term Mahāpurāṇa as a synonym for Triṣaṣṭilakṣaṇa, while Hemacandra calls his work on the theme as Triṣaṣṭiśalākā-puruṣacarita, i. e. the lives of sixty-three prominent men (śalākāpuruṣa). Puṣpadanta uses the term Mahāpurāṇa to alternate with Tisaṭṭhimahāpurisaguṇālaṃkāra, Adoration of the Virtues or qualities of Sixty-three Great Men. The term purāṇa is defined in the Hindu Literature as follows :—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं चेव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

The purāṇa deals with the five topics, viz., the creation, the dissolution or secondary creation, dynasties, epochs between the Manus and the history of the dynasties. This definition is applicable to our

Mahāpurāna as well, for we do find the five topics mentioned above in our work. Still it is interesting to see how the Jains themselves interpret the term Jinasena who is a predecessor of Puspadanta in the writing of a Mahāpurāna says —

तीर्थेशामपि चक्रेशां हलिनामर्धचक्रिणाम् ।
त्रिषष्टिलक्षण वक्ष्ये पुराण तद्द्विषामपि ॥
पुरातनं पुराण स्यात्तन्महन्महदाश्रयात् ।
महद्भिरुपदिष्टत्वान्महाश्रेयोनुशासनात् ॥
कविं पुराणमाश्रित्य प्रसृतत्वात्पुराणता ।
महत्त्व स्वमहिम्नैव तस्येत्यन्यैर्निरुच्यते ॥
महापुरुषसबन्धि महाभ्युदयशासनम् ।
महापुराणमाम्नातमत एतन्महर्षिभिः ॥ I. 20–23

"I shall recite the narrative of sixty three ancient persons, i e, of the Tīrthamkaras, of the Cakravartins, of Baladevas, of half-Cakravartins (i e Vāsudevas) and of their opponents (i e, of Prati-Vāsudevas) The work is called 'purāna' because it is a narrative of the ancients It is called 'great' because it relates to the great (persons), or because it is narrated by the great (sages) or because it teaches (the way to) great bliss Other writers say that, because it originated with the old poet it is called 'purāna' and it is called 'great' because of its intrinsic greatness The great sages have called it a Mahāpurāna because it relates to great men and because it teaches the bliss" A Tippana on I 9 3 of our text seems to make a distinction between *aihāsa* and *purāna* and says that *aihāsa* means the narrative of a single individual while *purāna* i e Mahāpurāna means narratives of sixty-three great men (अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा, पुराण त्रिषष्टिपुरुषाश्रिता कथा पुराणानि) The Mahāpurāna therefore is a work on the lives of sixty-three great men of the Jain faith, and thus occupies the same place of importanee as the Mahābhārata or the Rāmāyana in Hinduism The Mahāpurāna however lacks the unity of the Mahābhārata or of the Rāmāyana and therefore cannot be called an epic in the strictest sense of the term

The sixty-three great men whose lives are described in a Mahāpurāna are classified under five heads I give their names below for ready reference —

(a) The Tīrthamkaras (24) (1) वृषभ or ऋषभ, (2) अजित, (3) शंभव or संभव, (4) अभिनन्दन, (5) सुमति, (6) पद्मप्रभ, (7) सुपार्श्व (8) चन्द्रप्रभ,

(9) पुष्पदन्त or सुविधि ; (10) शीतल ; (11) श्रेयांस ; (12) वासुपूज्य ; (13) विमल ; (14) अनन्त (15) धर्म ; (16) शान्ति ; (17) कुन्थु ; (18) अर ; (19) मल्लि ; (20) सुव्रत ; (21) नमि ; (22) नेमि ; (23) पार्श्व ; and (24) महावीर.

(b) The Cakravartins (12) (1) भरत ; (2) सगर ; (3) मघवत् (4) सनत्कुमार ; (5) शान्ति ; (6) कुन्थु (7) अर ; (8) सुभौम or सुभूम ; (9) पद्म (10) हरिषेण (11) जयसेन or जय , and (12) ब्रह्मदत्त

(c) The Vāsudevas (9) (1) त्रिपृष्ठ , (2) द्विपृष्ठ ; (3) स्वयंभू , (4) पुरुषोत्तम (5) पुरुषसिंह (6) पुरुषपुण्डरीक , (7) दत्त , (8) नारायण , and (9) कृष्ण

(d) The Baladevas (9) ; (1) अचल ; (2) विजय (3) भद्र ; (4) सुप्रभ ; (5) सुदर्शन ; (6) आनन्द (7) नन्दन ; (8) पद्म ; and (9) राम (बलदेव).

(e) The Prati Vāsudevas (9) (1) अश्वग्रीव (2) तारक (3) मेरक (4) मधु ; (5) निशुम्भ ; (6) बलि ; (7) प्रह्लाद (8) रावण and (9) मगधेश्वर or जरासंध

It is to be noted that Śānti, Kunthu and Ara are Tīrthaṁkaras as well as Cakravartins

WORKS ON SIXTY THREE GREAT MEN

The oldest known published work on sixty-three great men is the Mahāpurāṇa or more accurately Ādipurāṇa of Jinasena (*circa* 850–875 A D) Jinasena calls his work Triṣaṣṭilakṣaṇamahāpurāṇa-saṁgraha, and thus seems to have planned a complete Mahāpurāṇa. He was however unable to complete it, probably on account of his death We get from his hand forty-two parvans only of the Adipurāṇa, the remaining five parvans of the Ādipurāṇa and the whole of the Uttarapurāṇa being written by his disciple Guṇabhadra and completed in 820 of the Saka era, i. e., in 898 A D at Vaṅkāpura, under the patronage of Lokāditya, a feudatory of Akālavarṣa *alias* Kṛṣṇa II (880–914 A. D.) This Mahāpurāṇa is written in Sanskrit, and printed twice, first at Kolhapur with a Marāthi translation by Kallappa Nitve and again at Indore with a Hindi translation by Pandit Lalaram Jain It is written from the point of view of the Digambara Jains.

The second known work on the subject is the present work and belongs to the Digambara sect of the Jains

The third work is the Triṣaṣṭiśalākāpuruṣacarita by Hemacandra. It is a Śvetāmbara work and is written in Sanskrit. It is one of the last

works of Hemacandra and so may have been written about 1170–72 A D It was published by the Jaina Dharma Prasāraka Sabhā of Bhavnagar in 1905–9, and a reprint of it is being issued at present

The Jain Granthāvali published in 1965 of the Vikrama era, i e in 1907–8 records three works named Mahāpurusacarita on page 229 One of them is by Silācārya (*circa* 925 of the Vikrama era, i e. 868 A D), is written in Prakrit and its Mss are said to be deposited in the famous Patan Bhandar No 1 and also at Jesalmer Bhandar The same book mentions another work on the subject in Prakrit by Āmrasūri on the authority of Brhattippanikā It mentions a third work in Sanskrit on the theme by Merutunga, Mss of which are deposited in two Bhandars at Patan and also at Ahmedabad I propose to give in the last volume a concordance of Jinasena-Gunabhadra, Puspadanta and Hemacandra, as also of Silācārya and Merutunga if these two last named works become available to me

THE GLOSS ON THE CONSTITUTED TEXT

The reader will notice that the bottom portion of the printed text is divided into two parts The first part, separated from the text by a wavy line gives the variants found in the Mss or recorded in the margin of Mss, and also in the Tippana of Prabhācandra. The second part, separated from the first part by a double line, gives a short gloss on the text in Sanskrit I have culled it from the marginal notes in Mss G, K, M and P, and also from the Tippana of Prabhācandra In selecting the gloss for this purpose I have kept in mind the difficulties which a reader is likely to meet with while going through the text, and I hope that if the reader is equipped with a good knowledge of the Sanskrit language and literature and some elementary knowledge of the grammar of the Prakrit and Apabhramśa dialects, he will be able to understand the text easily with the help of this gloss Extracts from Prabhācandra's Tippana, where they appeared to be interesting but rather extensive to be accommodated at the bottom of the text are given in the notes at the end I hope this method of supplying the gloss at the bottom of the page will be appreciated by the reader as it taxes him less, and helps me to reduce the volume of notes. It should be noted that I have not retouched the text of the gloss, but have retained it as it was found in Mss even though I felt at times tempted to improve upon uncouth Prakritisms or unwarrant-

ed historical allusions (see for example, the gloss on धुयु सिंधिवेर on page 8)

ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or another assisted me in the production of the present volume I must thank in the first place the Trustees and the Secretaries of the Manikchand Digambara Jaina Granthamālā who were kind enough to find the necessary fund for the preparation and publication of this volume, and I feel sure they will also find the necessary funds to complete the work. The poetic genius of Puspadanta required the benevolent encouragement of his patron Bharata in the 10th century After the plunder of Mānyakheta in 972 A. D. the poet became desolate and remained uncared for for about a thousand years, and had it not been for the help that the Trustees of the Series offered to the Editor his efforts to bring the poet out of oblivion would have been of no avail. The spirit of Puspadanta will thus take a special delight in having once more discovered the spirit of his former patron regenerated in the Trustees of the Series. The Editor hopes that the same spirit will find a few thousand rupees more to enable him to complete the task that he has undertaken to rescue from oblivion this monumental work of the Poet.

To Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, I owe a special debt of gratitude. He moved heaven and earth to find the funds for this publication He has helped me in various other ways, in securing the loan of Mss from Kāranjā and Jaipore, and in sending me bits of information that he came across To Pandit Nathuram Premi, the veteran servant of Jain literature and an adventurous publisher of Jain works, I also tender my heart felt thanks.

I would like to record here my sense of high appreciation of the services which Mr R G Marathe, M A., formerly my pupil and now professor of Ardha Māgadhi at the Willingdon College, Sangli, rendered me in the preparation of this work. He did a lot of copying work for me and helped me at the time of collation as well.

Nowrosjee Wadia College, Poona
August 1937

P L VAIDYA

ग्रन्थ-परिचय

१ अपभ्रंश-साहित्यकी खोज

आज से बीस वर्ष पूर्व अपभ्रंश भाषा का उपलभ्य साहित्य नहीं के बराबर था। कुछ स्फुट रचनाएं जैन धार्मिक समाज मे प्रचलित थीं, पर न तो विद्वत्समाज को उनका कुछ परिचय था और न जैन समाज मे ही भाषा की दृष्टिसे उनका कोई विशेष महत्त्व था। किन्तु गत बीस वर्ष मे उस भाषा के अनेकों ग्रन्थों का पता चला है और धीरे धीरे उनका सूक्ष्म अध्ययन, सुसंशोधित प्रकाशन और विद्वत्समाज मे आदर भी बढ रहा है। विशेष रूप से इस ओर ध्यान तभी से गया है जब से मैने सन् १९२४ मे कारंजा के भंडारो का अवलोकन किया और वहा के उपलभ्य दश बारह अपभ्रंश ग्रन्थों का परिचय मध्यप्रान्त के हस्तलिखित संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की सूची मे प्रकाशित कराया, तथा उन ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ ही कारंजा ग्रंथमाला की स्थापना कराई। तब से मेरी इस साहित्य की खोज बराबर जारी है। जिसके फलस्वरूप मुझे इस भाषाका विपुल साहित्य उपलब्ध हुआ है। हर्ष की बात है कि इस साहित्य के अध्ययन, संशोधन और प्रकाशन मे अब अनेक सुप्रतिष्ठित विद्वान् मेरा हाथ बँटा रहे है।

२ पुष्पदन्त के ग्रन्थ

इस खोज से अबतक जितने ग्रन्थों का पता लगा है, उनमें पुष्पदन्त के ग्रन्थ विशेष महत्त्वशाली ज्ञात हुए है। वे भाषा की दृष्टि से सब से प्रौढ, काव्य की दृष्टि से सबसे सुन्दर तथा प्राचीनता मे, एक स्वयंभूके काव्यों को छोड, सबसे पूर्व के प्रमाणित होते है। पुष्पदन्त के जो तीन ग्रन्थ अबतक पाये गये है उनमे से 'जसहर-चरिउ' प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादक श्रीयुत डा. वैद्य द्वारा ही सम्पादित होकर कारंजा-सीरीज में और 'णायकुमार-चरिउ' मेरे द्वारा सम्पादित होकर देवेन्द्र कीर्ति-सीरीज मे प्रकाशित हो चुके है। तीसरा ग्रन्थ यही प्रस्तुत महापुराण है। इसे भी कारंजा सीरीज मे प्रकाशित करने का विचार था और इसी के लिये इस ग्रन्थ का संशोधन सम्पादन प्रारम्भ किया गया था किन्तु उस सीरीज मे प्रकाशित होने में अभी कुछ विलम्ब होता। प्रकाशनीय साहित्य बहुत विपुल मात्रा मे तैयार है। इसी से अवसर पाकर यह ग्रंथ इस ग्रंथमालाद्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

पूरे महापुराण मे एक सौ दो सन्धि अर्थात् परिच्छेद हैं। इनमें से प्रथम सैंतीस संधियों में आदिपुराण समाप्त हो जाता है। यही आदिपुराण वर्तमान संस्करण में प्रस्तुत है। शेष पैंसठ संधियाँ उत्तरपुराण की है जिन्हें आगे दो ग्रन्थों मे प्रकाशित कराने का विचार है। इस उत्तरपुराण का एक खण्ड मेरे एक जर्मन मित्र डा. लुडविग् आल्सडॉर्फ ने सम्पादित कर के अभी अभी जर्मनी मे प्रकाशित

करा दिया जाय और इसी विचार से मित्र आल्सडोर्फ ने बड़े ही परिश्रम से अपने संस्करण का पाठ नागरी लिपि में तैयार कर दिया, भूमिका का भी अंग्रेजी अनुवाद कर डाला और नोट्स व अनुक्रमणिकादि भी बना कर भेज दीं। पर इसके प्रेस में भेजने में कुछ विलम्ब हुआ और इसी बीच जर्मनी से उनका रोमन लिपि में जर्मन भाषामय भूमिकादिसहित संस्करण प्रकट हो गया। तब विचार हुआ कि अब इसके नागरी लिपि के संस्करण के प्रकाशन में जल्दी करने की आवश्यकता नहीं है। विद्वानों को ग्रंथ उपलब्ध हो ही गया है। अब उत्तरपुराण के क्रम वश प्रकाशन में ही यथास्थान इस का उपयोग करना उचित होगा। यही विचार कर इसकी छपाई स्थगित करा दी गई।

३ संशोधन-सामग्री

प्रस्तुत आदिपुराण का संशोधन आठ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों पर से किया गया है। इनमें से पाँच का तो पूर्ण रूप से उपयोग किया गया है और उनके पाठ-भेद दिये गये हैं, और शेष तीन का यत्र तत्र उपयोग किया गया है, क्योंकि या तो उनके पाठ उक्त पाँच में से किसी एक के साथ अभिन्न थे या वे अपेक्षाकृत अर्वाचीन थे। जिन प्रतियों का पूरा पूरा उपयोग किया गया है उनमें से दो बलात्कारगण-जैनमंदिर, कारंजा की हैं, दो भांडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूना, की और एक तारावालाविह पाटील, नांदणी (कोल्हापुर) के पास से प्राप्त। इनमें से कारंजा के बलात्कारगण मंदिर की संवत् १५७५ में लिखित प्रतिको प्रधान रूपसे सामने रख कर पाठ संशोधन किया गया है।

४ प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण

पाठ संशोधन में सब से अधिक महत्त्वपूर्ण सहायता प्रभाचन्द्रकृत महापुराण टिप्पण से मिली। आदिपुराण-टिप्पण की एक प्रति सम्पादक को भंडारकर-इन्स्टिट्यूट से प्राप्त हुई जिसमें संवत् का उल्लेख नहीं पाया गया। उत्तर पुराण के टिप्पण की एक प्रति जयपुर से प्राप्त हो गई थी जिसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह टिप्पण संवत् १०८० = १०२३ ईस्वी में, अर्थात् महापुराण के रचे जाने के साठ वर्ष के भीतर ही लिखा गया था। उस समय मालवे में राजा भोज का राज्य था। प्रभाचन्द्र ने इस टिप्पण को 'श्रीचन्द्रसेन सैद्धान्तिक से परिज्ञात करके तथा मूलटिप्पणिका का अवलोकन करके लिखा था। संभव है यह मूलटिप्पणिका स्वयं कवि पुष्पदंत की ही लिखी हुई हो।

५ संधियोंके प्रारम्भके स्फुट पद्य

महापुराण की भिन्न भिन्न प्रतियों में कुछ संधियों के प्रारंभ में कवि के आश्रयदाता भरत की प्रशंसा के छंद पाये जाते हैं। इनमें से कुछ की भाषा प्राकृत और शेष संस्कृत

संस्कृत है। इसमें सन्देह नहीं कि इनकी रचना स्वयं कवि पुष्पदंत की ही है, क्योंकि अन्य किसी कवि को उनके आश्रयदाता की ऐसी गुणगाथा गाने के उत्साहका कोई कारण नहीं दिखता। दूसरे इनमें से कुछ छन्दों में स्वयं पुष्पदंत के व्यक्तिगत भावों और अनुभवों का उल्लेख है जो दूसरे कवि के द्वारा नहीं किया जा सकता। ऐसे कुल पद्यों की संख्या ४८ है। पर ये सभी पद्य सभी प्रतियों में नहीं पाये जाते और न उनमें से प्रत्येक छंद किसी एक निर्दिष्ट संधिमें ही पाया जाता है। किसी प्रति में कहीं कोई पद्य, तो दूसरी प्रतिमें कहीं अन्यत्र, या तीसरीमें वह बिलकुल ही नहीं पाया जाता। इस अवस्थासे अनुमानतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ये पद्य कविने ग्रंथरचना के समय ही रचकर विशेष विशेष स्थानों पर नहीं रक्खे। ग्रंथरचना समाप्त हो जाने, तथा उसकी कुछ प्रतिलिपियाँ बाहर चले जाने पर यथावसर कविने जो पद्य कभी रचा उसे अपनी प्रति में किसी संधि के प्रारंभ में लिख दिया, ऐसा जान पड़ता है। इससे उस 'धारानाथ नरेंद्र' के उल्लेख वाले पद्य की गुत्थी भी सुलझ जाती है जो पूना और कारंजा वाली प्रतियों में ५० वीं संधि के प्रारम्भमें और जयपुर की प्रतिमें ४९ वीं संधि के प्रारम्भमें, और तात्या साहिब वाली प्रतिमें कहीं भी नहीं पाया जाता। इस पद्य में धाराके नरेन्द्र श्री हर्षदेव के मान्यखेट पर आक्रमण का उल्लेख है जो 'पाइयलच्छी-नाम-माला' के उल्लेख परसे १०२९ संवत् की घटना सिद्ध होती है। इस घटना का उल्लेख सात वर्ष पूर्ण समाप्त हुए ग्रंथ के बीच में कैसे आया यह बहुत समय तक मेरे लिये एक उलझन बनी रही जिसके सुलझाने के लिये मुझे अनेक अनुमान लगाना पड़े। किन्तु अब इन पद्यों की रचना के इतिहास परसे यह सहज ही समझमें आजाता है कि अन्य अनेक पद्यों के समान उसे भी कवि ने पीछे रचकर अपने ग्रंथ में डाला होगा।

६ कविके आश्रयदाता भरत का परिचय

उक्त पद्यों की प्राकृत भाषा बिलकुल शुद्ध और सुन्दर है। संस्कृत पद्यों में कहीं कहीं प्राकृत का प्रभाव आ गया है। इन पद्यों का विषय कहीं सरस्वती देवी की उपासना है, कहीं कविका आत्म परिचय है, पर अधिकांश पद्यों में कविके आश्रयदाता भरत की प्रशंसा पाई जाती है। इन पद्यों तथा महापुराण की उत्थानिका व पुष्पिकाओं और जसहरचरिउ व णायकुमारचरिउ के उल्लेखों पर से भव्यात्मा भरत और उसके कुटुम्ब का खासा इतिहास हमें मिल जाता है। भरत राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराज तृतीय के मंत्री थे। इस नरेश के तुडिग, शुभतुंगराय और वल्लभराय नाम भी पुष्पदंत के ग्रंथों में पाये जाते हैं। इन्हों ने सन् ९३९ से ९६८ तक राज्य किया। उनके पश्चात् उनके लघुभ्राता खोट्टिगदेव सिंहासनारूढ हुए। उन्हींके राज्य में सन् ९७२ (विक्रम १०२९) में उनकी राजधानी मान्यखेट पर धारानरेश हर्षदेव का आक्रमण हुआ था। महापुराण की समाप्ति अर्थात् सन् ९६५ तक भरत मंत्री जीवित थे। अन्य दो काव्यों की रचना के समय उनके पुत्र णण्ण मंत्रिपद को विभूषित कर रहे थे। इस बीच में या तो भरतजी का परलोकवास हो गया, या उन्होंने वैराग्य धारण कर लिया होगा।

भरत कौण्डिन्य गोत्र के थे। उनके कुल में महामात्र पद परम्परागत था। पर बीच में इस कुटुम्ब को कुछ दुर्दिन देखने पड़े थे। इस दुरवस्था से भरत ने अपने कुल का पुनरुद्धार किया। उनके पितामह का नाम 'अण्णय्य' पिता का 'एयण' या 'ऐरण' तथा माता का 'देवी' था। इनके कोई भ्राता नहीं था। उनकी धर्मपत्नी का नाम 'कुन्दव्वा' था। उनके सात पुत्र थे। जिनके नाम—देवल्ल, भोगल्ल, नन्न, सोहन, गुणवर्म, दंगय्य और संतय्य थे। भरत का शरीर सुन्दर और सुरोचित था और वर्ण श्याम। वे कृष्णराजके मंत्री, सेनानायक और दान-विभाग के अधिष्ठाता थे। इतना होने पर भी उनका वेषभूषा तथा व्यवहार बहुत सौम्य और शिष्ट था। वे सद्गुणों की खानि और विद्याप्रेमी थे। श्री और सरस्वती का उनमें असाधारण संयोग था। उनका आचरण सर्वथा निर्दोष था। उनके भवन में काव्य-रचना, काव्य गायन और काव्य-लेखन होता रहता था। वे बलि, जीमूतवाहन, दधीचि, विक्रमांकुर और शालिवाहन जैसे महादानी थे। उनका यश सुविस्तृत था। वापी कूप तड़ाग व देवमंदिर निर्माण कराने की अपेक्षा जैन पुराण की रचना और प्रसार कराना उन्हें अधिक अभीष्ट था। इसी हेतु उन्होंने कवि पुष्पदन्त का आश्रय देकर उनसे यह महान उत्तम कार्य सम्पन्न कराया और संसार-समुद्रको तरने का साधन पा लिया।

७ कवि—परिचय।

कविराज पुष्पदन्त काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम केशव और माता का नाम मुग्धादेवी था। वे दोनों शिव के उपासक थे किन्तु पीछे उन्होंने जैन धर्म ग्रहण कर लिया था। पुष्पदन्त का शरीर श्याम और कृश था। उनका विवाह हुआ हो ऐसा जान नहीं पड़ता। उनके न घर-द्वार था, न धन सम्पत्ति, किन्तु उनका मन बड़ा ऊंचा और विशाल था। वे पहले किसी भैरव या वीरराय नाम के राजा के आश्रय में रहे थे जिसकी प्रशंसा में उन्होंने कोई काव्य भी रचा था। किन्तु किसी कारण से सम्भवतः अपमानित होकर वे मान्यखेट आये और वहाँ नगर के बाहर उपवन में ठहर गये। इन्द्रराज और नागय्या नाम के दो नागरिकों ने उन्हें वहाँ देखा और उनसे नगर में आकर भरत से मिलने का आग्रह किया। पहले कविराज राजी नहीं हुए। क्योंकि उनका हृदय कटु अनुभवों के कारण संसार से और विशेष समाज से विरक्त हो गया था। किन्तु उन्हें जब यह आश्वासन दिया गया कि भरत मंत्री दूसरी ही प्रकृति के सज्जन हैं, तब वे उनसे मिलने पर राजी हुए। भरत के यहाँ उनका बड़ा स्वागत सत्कार हुआ। उन्हीं के शुभतुंग-भवन में वे रहने गये। कुछ दिनों के पश्चात् भरत ने उनसे महापुराण रचने की प्रार्थना की, जिससे उनकी काव्य-शक्ति का समुचित उपयोग हो और संसार का कल्याण हो। इस प्रकार कवि ने सिद्धार्थ शक ८८१ में महापुराण की रचना प्रारम्भ की। आदिपुराण पूरा होने पर कवि को फिर कुछ उद्वेग हुआ जिसका स्वयं सरस्वती देवीने निवारण करके उन्हें उत्तरपुराण पूरा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कवि ने महापुराण को क्रोधन शक ८८७ में समाप्त किया।

उन्हें अपनी इस सफलता से बड़ा सुख और संतोष हुआ। उन्होंने कहा है कि "इस रचना में प्राकृत के लक्षण, समस्त नीति, छंद, अलंकार, रस, तत्त्वार्थ-निर्णय सब कुछ आगया है, यहाँ तक कि जो यहाँ है वह अन्यत्र कहीं नहीं है। धन्य हैं वे पुष्पदन्त और भरत जिनको ऐसी सिद्धि मिली।" इसे पढ़कर महाभारतकार व्यासके इन वचनोंका ध्यान आये बिना नहीं रहता–

'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'

जो यहाँ है वही अन्यत्र मिलेगा, जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं।

८ महापुराण के लक्षण

दिगम्बरमतानुसार महावीर स्वामीकी वाणी जिन ग्यारह 'अंग' और चौदह 'पूर्व' में ग्रन्थित थी वे अंग पूर्व सब विच्छिन्न हो गये। जो श्वेताम्बर अंग अब पाये जाते हैं उन्हें दिगम्बर समाज स्वीकार नहीं करता। वह अपना धार्मिक साहित्य प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, और द्रव्यानुयोग ऐसे चार अनुयोगों में विभाजित करता है। प्रथमानुयोग का विषय तीर्थंकरादि पुरुषोत्तमों का चरित्र वर्णन करता है। महापुराण इसी प्रथमानुयोग की एक शाखा है। उसमें चौवीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ प्रतिवासुदेव और नौ बलदेव इन त्रेसठ शलाका-पुरुषों अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषोंका चरित्र वर्णन किया जाता है। पुष्पदन्त की इस रचना का भी यही विषय है और उसे उन्होंने "तिसट्ठि-महा-पुरिस-गुणालंकार" नाम भी दिया है। जिनसेनने अपने संस्कृत महापुराण को भी त्रिषष्टि लक्षण नाम दिया है और हेमचन्द्राचार्यने भी त्रिषष्टि शलाका पुरुष-चरित।

जिनसेन और हेमचन्द्र के महापुराण छप चुके हैं। उनमें और प्रस्तुत ग्रंथमें कहाँ कैसा मेल व बेमेल है यह अन्तिम जिल्द की भूमिका में स्पष्ट किया जावेगा।

९ आभार-प्रदर्शन

इस महापुराण का सम्पादन मेरे प्रिय सुहृत् डॉ परशुराम लक्ष्मण वैद्य ने किया है। पाठक इन विद्वान् सम्पादक से सुपरिचित ही होंगे, क्योंकि उनके सम्पादित अनेक प्राकृत जैनग्रन्थ छप चुके हैं। कारंजा-सीरीज का प्रथम ग्रन्थ (इन्हीं पुष्पदन्तकी दूसरी रचना) भी इन्हीं विद्वानद्वारा सम्पादित हुआ है। प्रस्तुत विशाल ग्रंथ के संशोधन सम्पादन में वैद्य जी ने कितना परिश्रम किया है यह मर्मज्ञ पाठक इस ग्रंथ के अवलोकन से ही समझ सकेंगे। अनेक प्रतियों में से सबसे शुद्ध पाठ चुनकर रखने में, अन्य सब पाठोंको फुट नोट में अंकित करने में, तथा उपलब्ध टिप्पणियाँ भी नीचे उद्धृत करने में उन्होंने बड़ी ही कुशलता और विद्वत्ता दिखलाई है। उनके इस परिश्रमके फल स्वरूप जिन्हें अपभ्रंश या प्राकृत पढ़ने का अभ्यास नहीं है किन्तु जो संस्कृत जानते हैं वे भी इस काव्य कलापूर्ण सुन्दर रचना का आनन्दोपभोग कर सकते हैं। उनकी इस निर्व्याज साहित्य-सेवा के लिये मैं तथा समस्त पाठकसमाज उनका उपकार माने बिना नहीं रह सकते।

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि इस महापुराण को पहले कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था। और इस हेतु प्रथम इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ कारंजा तथा अन्य स्थानों से संग्रह की गई थीं। अम्बादास चवरे ग्रन्थमाला फंड से इसकी प्रथम प्रेस कॉपी तैयार करने में तीनसौ रुपया खर्च हो चुका था, किन्तु पीछे इस ग्रंथमाला में फंड की कमी के कारण इस बहुव्ययसाध्य प्रकाशन को रोकना पड़ा। इसी समय माणिकचन्द्र-ग्रंथमाला के अधिकारीवर्ग ने मुझे इस ग्रंथमाला का सम्पादक और सहकारी मंत्री निर्वाचित किया और इस महान् ग्रंथके प्रकाशनकी अनुमति दे दी। अतएव माणिकचन्द्र ग्रंथमाला की ओर से मैं चवरे ग्रंथमाला के अधिकारी वर्ग और विशेषतः गोपाल सावजी चवरे का आभार मानता हूँ कि उन्होंने इस व्यय का ख्याल न कर के केवल साहित्योद्धार की भावना से प्रेरित होकर अपनी वह सब सामग्री इस माला के उपयोगार्थ अर्पित कर दी।

१० आशा

यह साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास को समझने के लिये विशेष रूपसे महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से इसकी कदर करनेवालों की संख्या जैन समाज में बहुत कम है। कितने ही समाजहितैषी शास्त्रप्रेमी धर्मी बन्धुओं ने मुझे इस साहित्य के लिये इतना अधिक परिश्रम और व्यय करने से रोका है, और मेरे न मानने पर मुझे इस बात का दोषी बतलाया है कि मैं समाज का पैसा इस अनुपयोगी प्रकाशन में व्यर्थ खर्च करा रहा हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस समाज के अद्वितीय साहित्यसेवी और मेरे अभिन्न मित्र तथा इस माला के सुयोग्य मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमी का विशेषरूप से कृतज्ञ हूँ कि उन्हीं ने इस साहित्य के महत्त्व को अच्छी तरह समझा है और अपने प्रभावशाली उद्योग से इस महान् ग्रंथ का प्रकाशन संभव किया है। इस कार्य में उनको विशेष आनन्द और संतोष होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि जैसा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है, पुष्पदन्त और उनकी रचनाओं का परिचय सबसे पहले उन्होंने ही विद्वत्संसारको दिया था।

मुझे आशा ही नहीं दृढ़ निश्चय है कि उनके प्रयत्न और साहित्यप्रेमी समाज की उदारता से इस ग्रंथ का शेष भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित हो सकेगा और इस प्रकार महाकवि पुष्पदन्त की समस्त रचनाओं का विद्वत्संसार में प्रचार हो जावेगा। यह जानकर किसे प्रसन्नता न होगी कि पुष्पदन्त के पूर्वप्रकाशित दो ग्रंथ जसहरचरिउ और णायकुमारचरिउ इलाहाबाद और नागपुर विश्वविद्यालयों के एम० ए० के कोर्स में नियुक्त हो गये हैं।

माणिकचन्द्रग्रंथमालाकी अभीतक प्रकाशित सभी पुस्तकों का आकार छोटा रहा है जो इस ग्रंथ के लिये अनुपयुक्त पाया गया। इसी कारण यह ग्रंथ इस बड़े आकार में प्रकाशित किया जा रहा है। माला के ग्राहक, आशा है इसे पसंद करेंगे।

अमरावती }
१८-८-३७ }

हीरालाल जैन
सम्पादक और सहमंत्री

तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारु

णाम

महापुराणु

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि इस महापुराण को पहले कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था। और इस हेतु प्रथम इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ कारंजा तथा अन्य स्थानों से संग्रह की गई थीं। अम्बादास चवरे ग्रन्थमाला फंड से इसकी प्रथम प्रेस कॉपी तैयार करने में तीनसौ रुपया खर्च हो चुका था, किन्तु पीछे इस ग्रंथमाला में फंड की कमी के कारण इस बहुव्ययसाध्य प्रकाशन को रोकना पड़ा। इसी समय माणिकचन्द्र-ग्रंथमाला के अधिकारीवर्ग ने मुझे इस ग्रंथमाला का सम्पादक और सहकारी मंत्री निर्वाचित किया और इस महान् ग्रंथके प्रकाशनकी अनुमति दे दी। अतएव माणिकचन्द्र ग्रंथमाला की ओर से मैं चवरे ग्रंथमाला के अधिकारी वर्ग और विशेषतः गोपाल सावजी चवरे का आभार मानता हूँ कि उन्होंने इस व्यय का ख्याल न कर के केवल साहित्योद्धार की भावना से प्रेरित होकर अपनी वह सब सामग्री इस माला के उपयोगार्थ अर्पित कर दी।

१० आशा

यह साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास को समझने के लिये विशेष रूपसे महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से इसकी कदर करनेवालों की संख्या जैन समाज में बहुत कम है। कितने ही समाजहितैषी शास्त्रप्रेमी दानी बन्धुओं ने मुझे इस साहित्य के लिये इतना अधिक परिश्रम और व्यय करने से रोका है और मेरे न रुकने पर मुझे इस बात का दोषी ठहराया है कि मैं समाज का पैसा इस अनुपयोगी प्रकाशन में व्यर्थ खर्च करा रहा हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस समाज के अद्वितीय साहित्यसेवी और मेरे अभिन्न मित्र तथा इस माला के सुयोग्य मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमी का विशेषरूप से कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने इस साहित्य के महत्त्व को अच्छी तरह समझा है और अपने प्रभावशाली उद्योग से इस महान् ग्रंथ का प्रकाशन संभव किया है। इस कार्य में उन्हें विशेष आनन्द और संतोष होना स्वाभाविक ही है क्योंकि जैसा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है, पुष्पदन्त और उनकी रचनाओं का परिचय सबसे पहले उन्हींने ही विद्वत्संसारको दिया था।

इस माला का यही दृढ निश्चय है कि उसके प्रयत्न और साहित्यप्रेमी समाज की उदारता से इस ग्रंथ का शेष भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित हो सकेगा और इस प्रकार महाकवि पुष्पदन्त की समस्त रचनाओं का विद्वत्संसार में प्रचार हो जायेगा। यह जानकर किसे प्रसन्नता न होगी कि पुष्पदन्त के पूर्वप्रकाशित दो ग्रंथ जसहरचरिउ और णायकुमारचरिउ अलाहाबाद और नागपुर विश्वविद्यालयों के एम. ए. के कोर्स में नियुक्त हो गये हैं।

माणिकचन्द्रग्रंथमालाकी अभीतक प्रकाशित सभी पुस्तकों का आकार छोटा रहा है जो इस ग्रंथ के लिये अनुपयुक्त पाया गया। इसी कारण यह ग्रंथ इस बड़े आकार में प्रकाशित किया जा रहा है। माला के ग्राहक, आशा है इसे पसंद करेंगे।

अमरावती }
१८–८ ३७ }

हीरालाल जैन
सम्पादक और सहमंत्री



1

सिद्धिवहूमणरंजणु परमणिरंजणु भुवणकमलसरणेसरु ॥
पणविवि विगयविणासणु णिरुवमसासणु रिसहणाहु परमेसरु ॥ ध्रु० ॥

1

सुपरिक्खिय वरक्खियभूयतणु पवरमयधणुण्णयच्छिवणु ।
णयरक्खियमाणयपयणयरयहं परसमयभणियदुण्णयरयहं ।
सुहसीलगुणोहणिवासहरं दंसियसुपहं दिव्वासहरं ।
सुरणिम्मियमंदरमेहलय थुइमुहलहारमणिमेहलय ।
सोहंतासोयसिहरिपियरं उल्लासियसउणावयविवरं ।
सुरणारफुरियपइट्ठपयं अइपउरपसायपइट्ठपयं ।
णयतरणिसमप्पहभावलय णिरुद्धुस्सहदुम्मयभावलयं ।
हरिमुक्कपुप्फकुसुमंजलिणाह बहेहयमणतजस अणहं ।

1 १ B दंसियसुपहं २. M °दुम्मह°. ३ MBP अरहंत°.

1 1 सिद्धिरनन्तचतुष्टयप्राप्तिरिति वधूस्तस्या मनोरञ्जनविधायकः, णिरंजणु पापरहित, णेसरु सूर्यं. 2 णिरुवमसासणु उपमातीतमत, परमेसरु परा उत्कृष्टा मा समवसरणानन्तचतुष्टयादिलक्षणा बाह्याभ्यन्तरलक्ष्मीस्तस्या ईश्वर. 3 a भूयतणु भूतविस्तार, पृथिव्यादिप्रपञ्च 4 a णयरयहं नगरमार्गम्, b दुण्णयरयहं दुर्णयाः सर्वथैकान्तप्रवादाः प्रमाणानि, तेषां रथाः प्रतिपादकशास्त्राणि तान् हन्ति निराकरोति य तम् 5 b दिव्वासहरं नमगुदाकरम्, दिव्यासोधरम 6 a थुइ स्तुति; °मंदरमेहलय °मन्दरमेखलकम्; b °मणिमेहलय °रत्नमेखलकम् 7. a असोय अशोक, °सिहर पक्षिश्रेष्ठम्; b °विवर बिलम् 8 a पइट्ठपय प्रकृष्टपादम्, b °पइट्ठपय आनन्दितालोकम, (प्रहृष्टप्रजम) 9 a °भावलय °भामण्डलम्, b णिरुद्धुस्सहेत्यादि-णिरुद्धुस्सहा अतिशयेन सोढुमशक्या प्रमाणविरुद्धत्वात्ते च ते दुर्मतमाश्च मिथ्यागमप्रतिपादितार्थास्तेषां लयो निराकरण यस्मात 10 a हरि इन्द्र b अणहं निष्पापम्,

सीहासणछत्तत्तयधारिं वरअरिपवरं सरिसं सहिरं ।
दुंदुहिसरपूरियभुवणहरं चंपयकुसुमविहियमहरं ।
पुप्फदंतजियं जियकामसरं दुरियखयकरणमहागमसरं ।
वियसं वरयं पियमोहरयं उसहपमुहजिणमोहरयं ।
पणमामि एवं केवलकिरणं मत्तगमणं जसियं किर णं ।

घत्ता—भवह वि पत्तई जिणिहयदुम्मई कोवपावविद्धंसणु ॥
जासु णिण्णि मई कयउ णायसमियउ जिणमई समासणु ॥ १ ॥

2

णिम्मायिमाणमायामयारं जिणसिद्धसूरिसुयपरिसयारं ।
साहुण वि भरुकमोरहारं भोयविसयसुरणयमुहारं ।
कयहरिसु मरणु सुमइंद मन्त्रि दोमलपणाई अविचार णिति ।
गंभीर पसण्ण सुयन्तिर कंतिल्ल कुडिल गंभीरवेर ।
तालंकारी छंदेण वंति बहुसंतपमत्तयागण वहति ।
कोई सुणिउ तुबसमं गे जिणवयणविणिमाण सपयंति ।
बम्मुखसुरपातिसि सारवोवि कसिसोहर सा मे हणेवि ।
दुक्कनयपयकारिवि सोचवाणि पणवेवि सरासइ दिमवाणि ।
पम्माएसासवपरमरिउ पुणु कहमि जिणु व देयचरिउ ।

४ MBP सिरलव° ५ MB पुरउ° ६ T notes पवणमिरिमे as p and explains it as पमाप-मेषि प्रभो पणमे लेपः स एव नामो वस्य (?) निसरा इति लेप्पतम् ७ M किल्प°

2. १ M °णिम्मेयमाई but पुरसेपाइ in the margin. २ MBG भो वरिसिय° ३ M बहुसरलपरय कंपरिसि but adds सत्थ in margin. P बहुसरलपवरकवणाई ४ M कोइइ°, P वसइ° T णेउर° ५ T कुमि° ६ M °णिमव ७ P तालवीसि

11 b वरअरिवरं कमुकितकित्यमाणितं वहलामम था. 12 b कामदमनमित्सर्थं 13 a जिय कामसरे जितकामवाणम्. 14 a वियसं वियसं केवलम्; वरयं वरदम्; पिय मोहरयं केवलीनाम्, b उसहं वृषभादिजिनमोहरकम् 15 a मत्तगमण परिव्याकतरम् माता यस्मिन् चम्पकर्णि निर्जुमिते ते इतापाता दुरय देवीं कतम् प्रसंसन् अथवा मतमय कतिरम्मा समवसरणमम्ये उपनयतु कामन मातलगके कम्य 16 व भवई वर्तेनाय्

2.1 b "तुवदेवाद "सुरसम्रपालमनाम् 2 a जयसमोहिमातिमिरं, b "च व" "ब" 4 b कुडिल कुटिला वी यो क्रोधिनि T b चोदेवई" निमेयस्तुति, वा वक्ती, वोरहोमि वोमोमि यो यावोइ बोमि हसीम्बोमि. 9 पम्मापुणाइन धर्मादिभासनम्, b विरइ निमान्

घत्ता—जेण सुपुण्ण सुहोहइ तिहुयणसोहइ होंति चारुकल्लाणइं ॥
उप्पज्जंति पसत्थइ मुणियपयत्थइ मणुयहो पंच वि णाणइं ॥ २ ॥

3

न कहमि पुराणु पसिद्धणामु सिद्धत्थवरिसि भुवणाहिरामु ।
उव्वद्धजूडु भूभंगभीसु तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु ।
भुवणेक्करामु रायाहिराउ जहिं अच्छइ तुडिगु महाणुभाउ ।
तं दीणदिण्णधणकणयपयरु महि परिभमंतु मेपाडिणयरु ।
अवहेरियखलयणु गुणमहंतु दियहेहिं पराइउ पुप्फयंतु ।
दुग्गमदीहरपथेण रीणु णवयंदु जेम देहेण खीणु ।
तरुकुसुमरेणुरंजियसमीरि मायंदगोंछगोंदलियकीरि ।
णंदणवणि किर वीसमइ जाम तहिं बिण्णि पुरिस संपत्त ताम ।
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एम्व भो खंड गलियपावावलेव ।
परिभमिरभमररवगुमगुमंति किं किर णिवसहि णिज्जणवणंति ।
करिसरवहिरियदिच्चक्कवालि पइसरहि ण किं पुरवरि विसालि ।
त सुणिवि भणइ अहिमाणमेरु वरि खज्जइ गिरिकंदरि कसेरु ।
णउ दुज्जणभउँहावंकियाइं दीसंतु कलुसभावंकियाइं ।

घत्ता—वर णरवरु धवलच्छिहे होउ म कुच्छिहे मरउ सोणिमुहणिग्गमे ॥
खलकुच्छियपहुवयणइं भिउडियणयणइं म णिहालउ सूरुग्गमे ॥ ३ ॥

---

८ P तिहुयणु खोहइ

3 १ MP ओवद्द° and gloss in M उत्कृष्टकेशपाशम्, B नवद्धजूड २ M भदीण° ३ MP मेवाडि°, B मेवाड° ४ K मायदगोंदिगोंदलिय° ५ MBP खज्जउ ६ M हउँहावकियाइं, BP भउहावंकियाइं

---

10 सुहोहइ सौख्यसमूहा 11 पयत्थ पदार्थ

3 1 *b* सिद्धत्थवरिसि सिद्धार्थनामसंवत्सरे 2 *a* उव्वद्धजूडु उद्बद्धजूटम्, *b* चोडहो चोडदेशनृपस्य 3 *b* तुडिगु कृष्णराज 4 *b* यत्र मेलपाटीयनगरे 9 *a* तेहिं ताभ्याम 11 *a* दिच्चक्कवालि दिशामण्डले, करिसर° गजस्वर° 12 *a* अहिमाणमेरु पुष्पदन्तस्य विरुदमेतत् 14 धवलच्छिहे उज्ज्वललोचनाया, सोणिमुह° कटिच्छिद्र° 15 कुच्छियपहुवयणइं कुत्सितराजवदनानि, भिउडिय° भ्रुकुटित°

4

भमरालिकसणकुंचियसुणाइँ भरिहिसमोयमुपमत्तणाइँ ।
भविवेयइ वप्पुत्ताखियाइँ मोहंधइ मारवसीकियाइँ ।
सव्वंगरजमरमारियाइँ पिउपुत्तमयरसपारियाइँ ।
विससइजम्मइँ जडयत्तियाइँ किं कच्चिउ विरससिरियत्तियाइँ ।
सेयइ जणु भीरसु पिव्विसेसु गुणवंतउ जहिं सुरगुरु वि वेसु ।
तहिं मसहइ कइ कायणु जि सरणु मारिमायें सर्वुं भरि होउ मरणु ।
भम्महयरसरयहिं वेहिं भायेंप्पिणु ते पहसियमुहेहिं ।
गुणविणयपणयपयणियसिरीहिं परिवमणु विष्णु णायरनरेहिं ।
घत्ता—अप्पमेयतिमिरोसारण मयतमवारण विप्फुरियपवणिपायर ।
मो मो केसवतणुरुह णवसररुहमुह कव्वरयणरयणायर ॥ ४ ॥

5

धम्मंकमवयणाभयकिरिपि अणवरयरइयजिणणाहभत्ति ।
सुहतुंगमेवकमकमजमसहु पीसिसक्कणाविष्णाणकुसलु ।
पापयकयकव्वरसायरत्तु संपीयसरासइसुरहिदुद्धु ।
कमलच्छु अमच्छरु सच्चसंधु रणभरधुरघरणुग्घुट्ठखंधु ।
सविलाससिलासिणिहियथणु सुपसिद्धमहाकइकामधेणु ।
काणीणदीणपरिपूरियासु जसपसरपसाहियदससिवासु ।

4 १ MBP वेसु २ MBP मायत्तिय G भायत्तिय ३ MB तिमिरोवारण

5. १ MBPK कुसलु, but G °रसमणु and marginal gloss रसमणुर ; T also रसम णु *and explains it as* रसिकमानस. २ MBP °सरसुरहिदुद्धु ३ *MP* °थेणु.

4. 2. भरपुत्ताखियाइँ दर्पोद्धतता दर्पोत्कटता 3. भारिमा °पाया 3 सिरपुरा° मिद्-पुत्रमुनिस्तत्परस्त्रिनः नगत्रा मित्रुत्राण्यप्रमानि कीतवनायकता 4. विससहजम्मइं जन्मजात पातञ्जल 3 मिरसमिरत्तियाए निग्रहमनीदता 5. मिमिरेषु वसतेयो गुणगुणीभवत्युदिव 3 वेषु दृष्टा. 7. जम्मह-सरउच्चयणो हो पुरुषौ 8. बालवरणोहि पहसदनदाम् 10 तिमिरोसारण ब्याध्मनिवारण

5. 2. सुहतुंगमेव कुम्भाद. तत्रविज्ञानितो निवस 4. धवलधु समग्रधि 5. सविलासिणी अतिरसिर°; °थणहिय° °मपिरस°; °निधणु °विदुद्ध

दव्वमणिवंसु हुअमोल्लु   उप्पायमाइ हुअपुप्फमल्लु ।
गुणगणपवरणविवइत्तणु   णिविडेवियपंवगन्धुम्मवंगु ।
सव्वइकव्वचउरह पवणु   हम्मि व वाणोहियवीडिण्णु ।
महलवंसणयरणु गहीरु   णवरयणमणविवरमरवीर ।
दुज्जणमाहप्पसंघायण्णु   ण पियवाणिहिं किं पालेण महदु ।
घत्ता—थोड आसु महो मंडिव पउवा ...डिव हुअडयवगु जायइ ॥
सो गुणगणचिंधिउ णिहुवणि महउ पिच्छइ पइं संभासइ ॥ ५ ॥

6

जो विहिणा णिम्मिउ कव्वपिंडु   तं णिसुणिवि सो संचलिउ खंडु ।
आवंतु दिट्ठु भरहेण केम   णाइंदरिंदणियलोउ जेम ।
पुट्ठ तासु तेण विअड पहाउ   घर आयरो अब्भागयविहाउ ।
संभासणु पियवयणेहिं रम्मु   णिम्मुक्कडंसु णं परमधम्मु ।
तुहुं आयउ णं गुणमणिणिहाणु   तुहुं आयउ णं पंकयहो भाणु ।
पुणु एवं भणेप्पिणु मणहराइं   पहंहंसणाइं णहसुहयराइं ।
घणण्हाणविलेवणभूसणाइं   दिण्णाइं देवंगइं णिवसणाइं ।
कप्पूरवासियाइं भोयणाइं   गलियाइं जाम कइवयदिणाइं ।
ऐवहिं कइ भणिउ ताम   भो पुप्फयंत ससिलिहियणाम ।
णियसिरिविसेसणिज्जियसुरिंदु   गिरिधीर वीर भइरवणरिंदु ।
पइं मण्णिउ वण्णिउ वीरराउ   उप्पण्णउ जो मिच्छत्तराउ ।

४ P णिविडेणिवडेवि° B [illegible]° ५ M [illegible] ६ P °[illegible] though marginal gloss °[illegible].

6 १ B omits this line २ B omits a of this line ३ M [illegible], P [illegible] ४ MBP [illegible]° ५ B [illegible] ६ B [illegible] ७ MBPK [illegible], but GT [illegible] and gloss [illegible]

7 b [illegible] . 9 a [illegible] , [illegible]. 10 a °[illegible] [illegible]. 11 a [illegible] 13 a [illegible] , [illegible]

6 6 a [illegible] 8 b [illegible]. 9 a [illegible] 10 b [illegible]- [illegible], [illegible], P [illegible] 11 a [illegible].

पच्छिमु तासु वर करहि भव्व ता भणइ गुरु परमोवयारु ।
तुहुं देव को वि मम्मपयणु पुव्वयचरियमारस्स वंधु ।
जम्मंतरियमो सि दे देहि तेम विम्भिगमे झडु जिणइ तेम ।
घत्ता—मायाविणयए गंभीरए सालंकारए वायए ता किं किज्जइ ।
वेइ कुसुमसरविप्पारउ मयणु मणारउ सम्मार्णे व पुविज्जइ ॥ ६ ॥

7

सिपरंतपत्तियभवीकलाहु ता जंपइ वरवायाविलासु ।
भो देवीवल्लह जयसिरीह किं किज्जइ कव्वु सुपुरिससीह ।
गोमरिजल्पीहिं व पमारियीहिं सुरवरचावेहि व विम्गुणेहिं ।
माहिन्दविरतीहिं वं वंरमणेहिं छिद्दण्णेसिहिं वं विसहरेहिं ।
जडवायगीहिं वं गयरसेहिं दोसायरेहिं वं रक्खसेहिं ।
आयच्छियपरपुट्ठिमणेहिं वरक्कर पिसिज्जइ दुपवखेहिं ।
जो बालवुड्ढसंतोसहेउ रामाहिरामु लक्खणसमेउ ।
जो सुम्मइ कइवइ विहियसेउ तासु वि दुज्जणु किं परि मे होउ ।
घत्ता—णउ महु बुद्धिपरिग्गहु णउ सुयसंगहु णउ कासु वि केरउ बलु ॥
भणु किह करमि कइत्तणु ण लहमि कित्तणु जगु जि पिसुणसयसंकुलु ॥ ७ ॥

8

तं णिसुणिवि भणइ गुरु ताम भो कइकुलतिलय विमुक्कगाव ।
सिमिसिमिसिसिमंतकिमिभरियरंधु मिलेवि कलेवरु कुणिमगंधु ।

M पुरए° १ M वा
7 १ T वराहेहिं २. PG व

18 पुरएव° वाविणय°

7 1 a यवलीकलाहु धवलीकृतास्य 2 a जयसिरीह जयश्रीसमालिङ्गक 3 a गोमरिजल्पीहिं गर्वोद्धतैः वचोविस्तरैः 6 a आयच्छियपरपुट्ठि 7 b लक्खणसमेउ व्याकरण-समेत, पक्षे लक्ष्मणसमेत 8. सुम्मइ श्रूयते; कइवइ विहियसेउ कपिभिर्विहितसेतुर्यस्य तेन इत्थं सेतु पक्षे अलंकारे एषा—व अलंकारो येषां—तेन कृत सेतुबन्धनाम काव्यं रामायणम्.

8 1 b विमुक्कगाव विमुक्तगर्व, 2 b कुणिम कुथित

ववगयविवेउ मसिकसणकाउ　　सुदरपएसि किं रमइ काउ ।
णिक्कारणु दारुणु बद्धरोसु　　दुज्जणु ससहावें लेइ दोसु ।
हयतिमिरणियरु वरकरणिहाणु　　ण सुहाइ उलूयहो उइउ भाणु ।
जइ ता किं सो मंडियसराहं　　णउ रुच्चइ वियसियसिरिहराहं ।
को गणइ पिसुणु अविसहियतेउ　　भुक्कउ छणयंदहु सारमेउ ।
जिणचरणकमलभत्तिल्लएण　　ता जंपिउ कव्वपिसल्लएण ।

घत्ता—णउ हउं होमि वियक्खणु ण मुणमि लक्खणु छंदु देसि ण वियाणमि ॥
जा विरइय जयधवलहिं आसि मुणिंदहिं सा कह केम समाणमि ॥ ८ ॥

9

अकलंककविलकणयरमयाइं　　दियसुगयपुरंदरणयसयाइं ।
दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं　　णउ णायइं भरहवियारियाइं ।
णउ पीयइं पायंजलजलाइं　　अइहासपुराणइं णिम्मलाइं ।
भावाहिउ भारवि भासु वासु　　कोहलु कोमलगिरु कालियासु ।
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु　　णालोइउ कइ ईसाणु बाणु ।

8 १ MBP सुहाय २ P उयउ. ३ P छणइंदहु. ४ P पयासमि but marginal gloss कथं समानयामि वर्णयामि

9 १ B दत्तिल° २ MBP पायजलि° ३ M भारहि, B भारहभासु ४ MBP कालिदासु ५ MP णालोयउ

8 3 *a* ववगयविवेउ नष्टविवेक, °कसणकाउ °कृष्णशरीर', *b* काउ काक 4 *b* ससहावें स्वस्वभावेन, लेइ गृह्णाति 6 *a* मंडियसराहं मण्डितसरसाम्, *b* वियसियसिरिहराहं विकसितकमलानाम् 7 *b* छणयंदहु पूर्णिमाचन्द्रस्य, सारमेउ कुक्कुर 8 *a* °भत्तिल्लएण °भक्तियुक्तेन, *b* कव्वपिसल्लएण काव्यराक्षसेन पुष्पदन्तेन 9 लक्खणु व्याकरणम्, देसि देशी भाषा 10 विरइय विरचिता; जयधवलहिं जगद्वन्द्यै; समाणमि वर्णयामि

9. 1 *a* अकलंक न्यायकुमुदचन्द्रोदयकर्ता; कविल सांख्यदर्शने मूलकार; कणयर वैशेषिकदर्शने मूलकार, *b* दिय वेदपाठक, सुगय बौद्ध, पुरंदर चार्वाकमते ग्रन्थकार, णयसयाइं सुगतयोऽभिप्राया वा. 2 *a* दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं दत्तिलविसाहिलकृतानि संगीतशास्त्राणि, *b* भरहवियारियाइं भरतमुनिकृत नाट्यशास्त्रम् 3 *a* पायंजल पाणिनिव्याकरणभाष्यम्; *b* अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा, पुराण त्रिषष्टिपुरुषाश्रिता कथा पुराणानि. 4 *a* भावाहिउ भावाधिक अर्थगौरववान्, वासु व्यासो महाभारतकार, *b* कोहलु कूष्माण्ड कश्चित्कवि 5 *a* चउमुहु कश्चित्कवि, सयंभु पांचडीबद्धरामायणकर्ता आपलीसंघीय.

णउ णाउ ण लिंगु ण गणु समासु | णउ कम्मु करणु किरियाविसेसु ।
णउ संधि ण कारउ पयसमत्ति | णउ जाणिय मइँ एक्क वि विहत्ति ।
णउ बुज्झिउ आयमु सद्दधामु | सिद्धंतु धवलु जयधवलु णामु ।
पडु रुद्दडु अवलम्बियासयारु | परिपच्छिउ णाडउँ णीरसारु ।
पिंगलपत्थारु समुद्दि पडिउ | ण कयाँ वि महारउ चित्ति चडिउ ।
णउंधु सिंधु कल्लोलसित्तु | ण कलाकोसलि हियवउ णिहित्तु ।
हउँ बप्प णिरक्खरु कुक्खिमुक्खु | णरवेसें हिंडमि चम्मरुक्खु ।
अइदुग्गमु होइ महापुराणु | कुडएण मवइ को जलणिहाणु ।
अमरासुरगुरुयणमणहरेहिँ | जं भासि रिसिहिँ मुणिगणहरेहिँ ।
तं हउँ मि कहमि मत्तीभरेण | किं णहि ण ममिज्जइ महुयरेण ।
पहु विणउ पयासिउ सज्जणाहँ | सुहि मसिकुंचउ करे दुज्जणाहँ ।

घत्ता—घरे घरे मग्गिउ असारउ दुग्गयगारउ णियरोत्थउ किं अक्खइ ॥
केहँ मइँ सो मोक्कलिउ लज्जु दुल्ललिउ केउ पोट्ठु जइ पेक्खइ ॥ ९ ॥

10

चारुचापास्तकैलाससैलासिमो | किंपरीवेषुलीलाप्रभीतोसिमो ।
सामवण्णो वडण्णो पसण्णो सुहो | भारहेणाण देवाहिमओ सुहो ।
गामसुद्दो समुद्दो होउ अक्खो मई | चित्तवंतस्स एवं पमेयं कई ।
विग्घविद्दावणी चारुकेसरी | सत्थसारंभकल्लोलमालासरी ।
वेरिणिद्दारिणी सुमणी पंमणी | भासि अब्भंतरे होविपा वंमणी ।

१ BP गुण ७ M कम्म ८ MBP किरियाविसेस. ९ M णाणम° १ MBP [illegible]. ११ M णाडउँ पर १ .. B [illegible]. १३ K कहिउ १४ MB कुडए १५ M मित्त १६ G [illegible]. १ MB मत्तु १८ MB [illegible]

10 १ MBP [illegible] २ MB °[illegible]; P °[illegible].

7 [illegible]. 9 [illegible]; [illegible] 12 [illegible]. 15 [illegible] 17 [illegible]; [illegible] 18 [illegible]

10 1 [illegible]; [illegible]; [illegible] 2 [illegible]; [illegible] 4 [illegible] 5 [illegible].

साहुदाणेण संजाइया जक्खिणी णाणसम्मत्तवंती गुणायेक्खिणी ।
उज्जयंतत्थलीकाणणावासिणी सव्वभासासमूहं समुब्भासिणी ।
सुंदरे मंदरे कंदरे कीलिरी तुंगणग्गोहपारोहहिंदोलिरी ।
पिक्कमायंदगोच्छेण डिंभ णिय संथवंती हसंती चवंती पियं ।
खुद्दघाईविवेयावहा वाइणी अविया गोरि गंधारि सिद्धाइणी ।
पोमवत्ताहवत्ता पवित्ता सई णायचूडामणी देवि पोमावई ।
कव्ववित्थारदुत्तारमग्गे सही ठाउ मज्झं मुहे देवया भारही ।
होउ बुद्धी महासत्थसामग्गिणी एरिसो छंदओ भणणए सग्गिणी ।

घत्ता–मइ णिम्मियहो उयारहो सद्दगहीरहो जो णरु भसइ णियधहो ॥
जणदुव्वयणहिं दड्ढहो तहो दुवियड्ढहो दुज्जसु होउ मयधहो ॥ १० ॥

11

अहवा हउं णिग्घिणु पावयम्मु ण वियाणमि अज्ज वि किं पि धम्मु ।
मिच्छाहिरामरंजियविवेउ ण वियाणमि जिणवरवयणभेउ ।
उग्गयरसभावणिरंतराइं अलियाइं जि कहमि कहंतराइं ।
लइ हत्थे झंपमि णहु सभाणु लइ कलसि समप्पमि जलणिहाणु ।
लइ तुच्छबुद्धि णिण्णट्ठणाणु लइ अक्खमि एउ महापुराणु ।
लइ णिंदउ दुज्जणु मच्छरेण लइ कहमि कव्वु किं वित्थरेण ।
करिमयरमीणजलयरवमालि चललवणजलहिवलयंतरालि ।

३ P कीलिणी ४ P °हिंदोलिणी ५ MBP °गोंछेण ६ B omits this foot ७ BP उययारहो and gloss in P उपकारस्य उदारस्य वा ८ K होइ

11 १ M पावकम्मु २ MB मिच्छाहिमाण°, P मिच्छाहिमाण but gloss मिथ्याभिराम° ३ M उग्गव° and gloss उत्कट ४ MBP अइतुच्छ° ५ MBP करमि

7 *a* उज्जयंत ऊर्जयद्गिरि, गिरिनगरपर्वत 8 *b* णग्गोह वटवृक्ष 9 *a* खुद्दघाई° क्षुद्रकादिविवेकोपघातिका 11 *a* पोमवत्ताहवत्ता पद्मपत्राभमुखी, *b* णायचूडामणी त्रिफणसर्पयुक्तमस्तका 12 *a* सही सखी सहाया 13 *a* महासत्थसामग्गिणी महाशास्त्रसामग्रीसहिता 14 भसइ निन्दति, णियधहो महापुराणस्य 15 दुवियड्ढहो दुर्विदग्धस्य, मयधहो मदान्धस्य

11 2 *a* मिच्छाहिराम° मिथ्या असत्य यचित्रकथादिक तत्राभिराम. अत्यासक्तिस्तया रंजितो विवेको यस्य स, *b* °भेउ °भेदो विशेष 3 *a* उग्गय उत्पन्न 4 *a* णहु समाणु भानुर्फ नभ, *b* जलणिहाणु समुद्रः 7 *a* °वमालि °कोलाहले

दीवंतरुसरसमहिमपरि जंबूलक्खंठमि जंबुदीवि ।
तारमेयगिरिहिसामीवसंमि सुरसिहरिहि संठिउ दाहिणंगि ।
सरिगिरिदरिणिउरपुरवरविचित्तु पायडिय पसिद्धउ भरहखेत्तु ।
तहु मज्झि परिट्ठिउ मगहदेसु जं वण्णहुं सक्कइ णेव सेसु ।
महि पुलइय जासु सोहामहासु जसु णामि भरिय धीरासयासु ।

घत्ता—सीमारामासेमहिं पविउलगामहिं गज्जंतहिं धणणोहहिं ॥
साहइ हलहरसालहिं धण्णसमग्गहिं णिच्च णिय णिलयहहिं ॥ ११ ॥

12

अंकुरियइं णवपल्लवघणाइं कुसुमियफलियइं णंदणवणाइं ।
जहिं कामु हिंडइ कुसुमसरिंदु पवणमफिडइ णं कुसुमरेणु ।
जहिं वहिय भमरावलि विहार पवरिंदुणीलमहामिव णाइ ।
आवेरिव मराली हंसपंति णम धवल णाइं सप्पुरिसकित्ति ।
जहिं सलिलइं माणपेलियाइं रविसासमयण ण हलियाइं ।
जहिं कमलइं कप्पिउ सग्गु सयणु सहुं ससहरेण चडुय पियंगु ।
किर दो वि ताइ महपुण्णयाइं आणंति ण तं जडसंभवाइं ।
जहिं उच्छुवणइं रसगब्भिणाइं णावइ कव्वाइं सुकइहिं तणाइं ।
कुसुमंतरसिसवसणुप्पवाह मंथाभिमियमंथणिरप्पाइं ।
जंपसुरसुप्पवप्पउरकाइं कोलिमणोवालइं गोउलाइं ।
जहिं चउरंगुल कोमलतणाइं पवणवसचलियाइं करिसणाइं ।

---

१ M सुरगु. ० B मगहदेसु. M पुरउ ९. MB °रम्मि; P °रम्मम्मि
12 १ M णवपल्लव, BPT णवपल्लव २ MBP कप्पवणु वणु ३ P °मणिरण. ४ M उच्छुरसरुच°

---

9 b सुरसिहरिहि मेरु 11 b वण्णहुं वर्णयितुं शेषु धरणेन्द्रः (शेष). 12 b सोहामहासु शोभामहसः. 13 °रामहिं °रामैः, घणणोहहिं धान्यराशिभिः 14. हलहरसालहिं कर्षकगृहैः; णियणिलयहहिं निजनिजनिलयैः.

12. 2 a कोरइ कोमिन, पवणसिंहु कुसुमसर कुसुमरेणुः 3 विहार विकासि b °महामिव °नीलमणिमय. 4 a आवेरिव आवर्तिता; 5 a माणपेलियाइं मानुष प्रेरितानि b हलियाइं कर्षिताणि 7 a महपुण्णयाइं महापुण्यकृतानि; b जडसंभवाइं जलसम्भवानि जडसम्भवानि 8 a रस° सुरस- भृतानि 9 b °मंथमि° मंथाः 11 b करिसणाइं कर्षितक्षेत्राणि

घत्ता–तहिं छुहधवलियमंदिरु णयणाणंदिरु णयरु रायगिहु रिद्धउ ॥
कुलमहिहरथणहारिए वसुमइणारिए भूसणु णं आइद्धउ ॥ १२ ॥

13

सकेयागयविरहीयणाइं सासोयपवड्डियकंचणाइं ।
बहुलोयदिण्णणाणाफलाइं णावइ कुलाइं धम्मुज्जलाइं ।
जहिं महुगंडूसहिं सिंचियाइं विंभरियाहरणहिं अंचियाइं ।
सीमंतिणिपयपोमाहयाइं वियसंतविडववुड्ढीगयाइं ।
पियमणियसुहआणासणाइं जहिं सदरिसियवाणासणाइं ।
पडिखलियसूरभावियरणाइं उज्जाणइं णं भावियरणाइं ।
उक्कलियालइं णवजोव्वणाइं णिरु सच्छइं णं सज्जणमणाइं ।
जहिं सीयलाइं असमाणियाइं परकज्जसमाणइं पाणियाइं ।
जहिं जणुल्लुंचणु कंटयकरालु जलि णलिणें लिहक्कावियउ णालु ।
बाहिरि णिहियउ वियसतु कोसु भणु को व ण ढंकइ गुणहिं दोसु ।
जहिं भमरु तहिं जि सहिउ सुहाइं मगहु सिरिणियणजणहु णाइं ।

घत्ता—कुसुमरेणु जहिं मिलियउ पवणुल्ललियउ कणयवण्णु महु भावइ ॥
दिणयरचूडामणियइ णहकामिणियइ कंचुउ परिहिउ णावइ ॥ १३ ॥

13. १ P वियसति but gloss विकसित २ M उक्कलियालइ ३ PK जणुलुचणु ४ M B P उद्धुल्ललियउ and gloss in P उच्छलित

12 छुह सुधाचूर्णम् 13 कुलमहिहरथणहारिए कुलपर्वता एव स्तनाः तान् धरति, आइद्धउ गृहीतम्.

13 1 *a* सकेएत्यादि–सकेतेनागता विरहिजना येषूद्यानेषु, कुलपक्षे सकेतेन नागता विरहिजना येषु; *b* सासोएत्यादि–वनपक्षे, अशोकवृक्षैः सह प्रवर्धिता काञ्चनवृक्षाः चम्पकवृक्षा येषु, अन्यत्र, अशोके हर्षे सह प्रवर्धितानि काञ्चनानि सुवर्णानि यत्र 3 *a* महुगडूसहिं मद्यचुलकै, *b* विंभरिय विस्मृतानि साश्चर्याणि वा 4 *a* °पयपोमाहयाइ °पदपद्माहतानि, *b* विडव विटपा शाखा, अन्यत्र विडव विटा इव 5 *a* पियेत्यादि–वनपक्षे, पिकानामभिमता सुभगा आणाशब्दास्तेषामसन प्रचरण येषु, युद्धपक्षे, प्रियाणां मानिता अङ्गीकृता सुभगानामाज्ञास्वना आदेशशब्दा 'सग्राम जित्वा मम हस्तिमुक्ताफलादिकमानेतव्यम्' इत्यादय येषु 6 *a* पडिखलियेत्यादि वनपक्षे, प्रतिस्खलितमादित्यप्रभाविवरण यत्र, युद्धपक्षे, प्रतिस्खलित शूराणां सुभटानां भावियरण प्रतापप्रसरण यत्र, *b* भावियरणाइ भावित परिकलित रण यै पुरुषै 7 *a* उक्कलियालइ कल्लोलमालाविराजितानि, पक्षे कलिरहितानि 8 *b* परकज्जेत्यादि–परकार्ये सति जना शीतला, स्वकार्ये उत्तावला (?) 9 *b* लिहक्काविय उ गोपितम् 13 परिहिउ परिहित

14

जहिं कीलागिरिसिहरंतरेसु कोमलमरगयसिहरंतरेसु।
सिक्खंति पढिय रसणावियार विरहयणियमम्मगुज्झावियार।
जहिं णिक्कसासिओर्वे पवेण उज्जाइ मईं व उप्परिमवेण।
पंगुत्तें सीरें पीयसेण पियवंतरिक्खलएहरोण।
जहिं संचरंति पंडुरगाइगाउ अइ पंगु मुणा च हु पुणु ठेयाउ।
गोवालबाल जहिं रसु पियंति पक्कसरसहंसिआयमसि सुयंति।
मायंदकुसुममंजरि सुयण हयसंकुपण कवमण्णुपण।
जहिं समपक्क साहर वाहिपासि वाइमणपक्षण पित्थरइ पुहि।
हरि भामिजंति कसासवाहिं अणाविप पार कुसासवेहिं।
णिज्जंति णाय कप्पारएहिं णाय व्व णायकप्पारएहिं।
रक्खंति मयासा ईरिएहिं सीम व्व मयासाईरिएहिं।
वासयर दिंति सिक्खायराउ वं मुणिवर गुणसिक्खायराउ।
कप्पूरविमीसु पवासिएहिं जहिं पिवाइ सलिलु पवासिएहिं।
घत्ता—ससिपहपायपोयहिं पोरणाएहिं जिणवरमवणपसाहरहिं।
महेसरहिं विहारहिं परचित्थारहिं बसावासविलासहिं ॥ १४ ॥

15

वं साहइ जहिं मणिदिरियाउ गंधव्वे व केवसपमंदिरियाउ।
सिरिं पिठिपक्कपयकमसाउ धराउ पायार भरिसिरिविचियाउ।

14. १ MP मरगय. २ MBP सिक्ख. ३ MBP मु॰ gloss in M [illegible] but in P [illegible]. ४ MBPK कुसासेहिं but gloss in K [illegible]. ५ MBP [illegible].

15 १ MBP [illegible]. २ M [illegible]

14. 1 a कोमलसि॰ [illegible]; b [illegible] 3 a [illegible] b [illegible] 5 b [illegible] 4 a पंगुत्तें [illegible] b [illegible] 6 a [illegible] b [illegible] 7 a [illegible] b [illegible] 8 a [illegible] b [illegible] 9 a हरि [illegible] 10 a [illegible] b [illegible] 11 a [illegible] b [illegible] 13 a [illegible] b [illegible] 14 [illegible].

15. 1 a [illegible] b [illegible]. 2 b [illegible].

अवियाणियकरदप्पणविसेसि माणिक्कराइयभित्तीपएसि ।
दीसइ सबिंबु महुमत्तियाहिं मण्णिय सवत्ति हम्मइ तियाहिं ।
जहिं अलिउलु अलयावलि मिलंतु णिद्धाडिउ सासाणिलि घुलंतु ।
अगणवावीसयदलगु जाइ जलकीलिरबालावयणि ठाइ ।
सजणियघट्टलमयरद्धरंगु जहिं सरवहु सवोहइ पयंगु ।
तं चेय खुडइ मत्तउ विहंगु सिरिहरहो असुंदरु दुट्ठसंगु ।

घत्ता—जहिं दीसइ तहिं भल्लउ णयरु णवल्लउ ससिरविअतविहूसिउ ॥
उवरिविलवियतरणिहिं सग्गें धरणिहि णावइ पाहुडु पेसिउ ॥ १५ ॥

16

जहिं मणहरु सोहइ हट्टमग्गु बहुसंथउ णं जडचट्टवग्गु ।
जहिं णेहलो भरिउ विहाइ माणु पूरिउ पत्थेणं कणेहिं दोणु ।
कामिणिकमवियलियकुंकुमेण णिल्हसइ जंतु जहिं जणु कमेण ।
कणिरेणियसुकिंकिणीसणेहिं गुप्पइ णियइंतहिं भूसणेहिं ।
खुप्पइ गयमयहयफेणपंकि तंबोलुग्गालइ जणियसंकि ।
जहिं राउलु रेहइ रयणजडिउ णं अमरविमाणु णहाउ पडिउ ।
जहिं धूवधूमकयमणवियार जलहरभंतिए णच्चति मोर ।
जहिं विजयवडहहुहुदिसरेहिं सुव्वइ ण किं पि णारीणरेहिं ।
णवदिणयरकरतंबिरइ गोसि विरिथण्णइ जहिं पगणपएसि ।

१ M °रविअर्ति विहूसिउ
16 P पत्थेहिं २ MBP कणिराणेयकिंकिणी° ३ P सुम्मइ

4 *a* सबिंबु स्वप्रतिबिम्बम्, *b* सवत्ति सपत्नी; तियाहिं स्त्रीभि 5 *a* अलयावलि कुन्तलकेशपंक्ति ; *b* सासाणिलि मुखश्वासानिले. 6 *b* पयंगु पतङ्ग सूर्य 8 *a* विहंगु हंस *b* सिरिहरहो कमलस्य तथा लक्ष्मीपते. पुरुषस्य दुष्टसंगोऽस्तीव दुःखद 9 णवल्लउ अभिनवमपूर्वम्, ससिरविअतविहूसिउ चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमणिविभूषितम् 10. तरणि सूर्य ; पाहुडु प्राभृतम्.

16 1 *b* बहुसंथउ बहु रत्नधनादिक तेन संस्तृत:; जडचट्टवग्गु मूर्खशिष्यवर्ग 2 *b* पत्थेण प्रस्थेन, पक्षे पार्थेन धाणेन कृत्वा पूरितो द्रोणाचार्य . 3 *b* णिल्हसइ स्खलति; जंतु गच्छम् 4 *b* गुप्पइ पतति. 5 *a* खुप्पइ स्खलति 6 *a* राउलु राजगृहम्, रेहइ शोभते 7 *a* °कयमणवियार °कृतमनोविकारा: °कृतसंदेहा मयूरा 8 *a* विजयवडह° विजयपटह° 9 *a* गोसि प्रभाते.

घत्ता—सेंदुरु जयसिरिसारहिं रायकुमारहिं चक्कोवावहिं ताडिउ ॥
अणिमज्जाप्पूरयहिं परकरयायहिं णावइ मेरु समाहिउ ॥ १६ ॥

17

तहिं सेणिउ णामें अत्थि राउ गारुडगुरु व्व विण्णायराउ ।
कल्लोलु व्व संजायवेउ रिउवंसरुहहि वि जायवेउ ।
सीयामउ व्व रामाहिरामु सूरो इव पयडियपयासु ।
पियसमयाभिसेयवियप्पकामु पाउसु व पवड्ढियदाणवाहु ।
पविदंडो इव णिद्दलियकोहु मयमारउ व्व णासियमलोहु ।
भवमारि व गुरुयणि मुक्कमाणु सुरवरकरि व्व अविहंडदाणु ।
कोइंसउ व्व इयरोहरिसु जं जसपसु पिय होंति पुरिसु ।
जाणइ णियमइ संधाणु तासु जं वेयोयकरणु महापसाउ ।
सत्तंगु वि पालइ रज्जु जेम पव्वइंगियसु णियवेगु जेम ।
पवणो इव वेरियघणंतमेहु सोयामु व ववमहिहोलणेहु ।
मंडलियमउडपायडियचरणु जिणणाहु व णिहिलणियवसरणु ।

घत्ता—पैयरेहहिं तिणि रायउ सो भासीवरु सिंहासणि दीहरकरु ॥
चेल्लियणिवेसहिं मंडिउ णं मयरद्धउ चक्कपीरु सुरवरु ॥ १७ ॥

17 १ MBP णिण्णु वेयाणु मणु २ MBP परायरउ ३ MBP अलेयहिं ४ P वर वालीभर ५ M वेवरोवी°; B वेहिरि° P वेल्लरोवेहि.

10 सेंदुरु [illegible], चोयावयेनी (यष्टिः) 11 [illegible]

17 1 [illegible]; [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 5 [illegible] 6 [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible] 11 a "परिट्ठि" "परिपूर्ण"; [illegible] 12 [illegible]

18

अतुलियबलपलकुलपलयकालु जामच्छइ मेइणिसामिसालु ।
तामायउ तहिं उज्जाणवालु सिरसिहरचडावियबाहुडालु ।
अणवरयविहियसामंतसेव सो पभणइ भो भो णिसुणि देव ।
कुसुमसरपसरपसमणसमत्थु णीसेसमंगलासउ पसत्थु ।
अहिमयरसयरणरणमियपाउ तेल्लोक्कणाहु जिणु वीयराउ ।
आहंडलणिम्मियसमवसरणु चउदेवणिकायाणंदकरणु ।
चउतीसातिसयविसेसवंतु अरहंतु महंतु अणंतु संतु ।
परमप्पउ परमु महाणुभाउ तित्थयरु वीरु देवाहिदेउ ।
उप्पाइयकेवलु विमलणाणु अट्ठविहपाडिहेरहिहाणु ।
जगदुरियतिमिरणिहणेक्कभाणु विउलइरि पराइउ वड्ढमाणु ।
तं णिसुणिवि दुज्जणहिययसल्लु परपुरदावाणलु सुहडमल्लु ।
परिवड्ढियजिणधम्माणुराउ आसणु मुएवि रायाहिराउ ।
लहु पणविउ सत्तपयाइं गपि पहउ थुइवयणु करंतु किं पि ।

घत्ता—जय पयपणमियसुरगुरु जय तिहुयणगुरु सामिय सयलपयाहिय ॥
जय णिहयणियामय भरहणियामय पुप्फयंततेयाहिय ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सम्मइसमागमो णाम
पढमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १ ॥
॥ संधि ॥ १ ॥

18 १ B °सल्लु २ M °खयरणिव° ३ MB °केवलविमल° ४ M विउलइर ५ MBP करहु

18 1 *b* जामच्छइ यावदास्ते 2 *b* °बाहुडालु °प्रलम्बहस्त 4 *a* कुसुमसर° काम°, *b* णीसेस मंगलासउ निःशेषमङ्गलाश्रय 5 *a* अहिमयर° आदित्य° 6 *a* आहंडल° इन्द्र° 7 *b* अणंतु शुद्धात्म द्रव्यापेक्षयानन्त, संतु पर्यायापेक्षया सान्त 10 *b* विउलइरि विपुलाचले, पराइउ प्राप्त. 13 *a* गपि गत्वा, *a* करहु उच्चरन् 14 सयलपयाहिय सकलप्रजाहित 15 णिहयणियामय निहतनिजरोग, भरहणियामय भरतक्षेत्रजनानां नियमदाता नियामक, पुप्फयंततेयाहिय चन्द्रसूर्यादपि तेजोऽधिक

II

पणिवीउ करवि पसण्णमणु भवियणपयोरुहमुक्कलिउ ॥
मा परमइ सई भियपरियणिय णामु जिणिंदु गंधारिउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

पहयार्णवमरि पसु वाहिउ
पुरुचारियपु हेरिसुप्पेहिउ ।
माणिणि का वि देर्पगुणभाविणी
वासिय मैं कममहुरय र्ण गोमिणि ।
का वि सर्पसव महर महामर
र्ण ससपहविणियवचणामर ।
कुवमउ का वि मेर अमपारिणि
र्ण परपायविति रिउवारिणि ।
रुप्पयपासु का वि पुमिणामरु
मामिषिंदु व संमायपासरु ।
पवरकमणगंभोहकरंबउ
दबरवंतु प वेबउभिंबिबउ ।
कप्पयपसु कार वि करि परिवउ
इंसबीममउ मातिपमरियउ ।
कावर वहयसु रहविप्फुरियउ
गुरुचरणारविंदु संमरियउ ।
का वि ससंपर समुहसही पिव
का वि सचकम विहायमही विव ।
का वि सप्पमय वेसाविवि व
का वि सरस कहकव्वपउत्ति व ।

MBP have at the commencement of this Samdhi the following stanza in praise of the poet and his patron —

भव्यितोरवर्णवापुरलयमार्कंपुरमवे
य हेमावकना गुणेसविवमारा वेहरवणाय् गुणय् ।
या पत्ताकवकरहेलमममयरा स्वर्गयत्तन यत्र
कीर्तिर्वस व वेपि भग् मवलस्वामावि वस्वल्ल ष ॥

Gh. gives it at the beginning of the third Samdhi and has वसताय् for गुणय्, पूवामवे for पूवामवे and कीर्ति वस्य व वेत्ति for कीर्तिर्वस व वेपि.

1. १ M पवमाउ २ MB °रम्मु° ३ MBP राहुपेसिउ ४ MBP वैमगुणभाविणी ५ MBP सहरमसमउ ६ P र्ण रमि°

1. 1 रहरुमवाहिव इर्षेण वाहत 2 पानु पार्श्व 8 b क पेम्मित मेरित 4 मानिनि मानिनी स्त्री, °मानिनि °मानवमुख; b पे मिनि मनी 5 b व ना व र °ममसहि 6 a गुदवव पीमोरूवां गुण-अवर्तव 7 a गुमिवा व व गुपमगुवम् °रा मा व व °रम्मुवम् 8 a °कवनयवं° गुणानुर वस्तुरियवरि b ववरवाँद राहुवा मरसमावम् 9 a कवनवयु व्वावपानम् 10 a वदु° मवा° 11 a ववांव मंगुवा नमुइवही हूमिनी b विहानमही विवमवगुवा गुणी 12 b ववरव गुरुचरमेगुवा गुवमति स्नेहिता च

का वि जिणिंदभत्तिपब्भारें णच्चइ भरहभावविंत्थारें ।
काहि वि दिट्ठउ पयडु थणत्थलु णाइ णिरंगकुंभिकुंभत्थलु ।
मयणंकुसवणरेहारुणियउ समवंतेण पिर्एण ण गणियउ ।
काहि वि घुलइ हारु मणिमंडिउ णावइ कामें पासउ मंडिउ ।
झल्लरिपडहमुइंगसहासहिं वज्जतहिं जयजयणिग्घोसहिं ।

घत्ता—आरूढउ महिवइ मत्तगइ मयजलघुलियचलालिगणे ॥
ण महिहरि केसरि खरणहरु पवणुल्ललियतमालवणे ॥ १ ॥

2

चोइउ कुंजरु कमसंचारें गंडालीणभमरझंकारें ।
चामरचवलें छंत्तधारें गच्छमाणु सहुं णियपरिवारें ।
पत्तु णरेसरु तियसरवण्णउ दिट्ठउ समवसरणु वित्थिण्णउ ।
णिम्मिउं सइ सोहम्मपहाणें ठियउ एक्कजोयणपरिमाणें ।
माणखंभमणितोरणदामहिं कप्पियकप्पपायवारामहिं ।
जलखाइयधूलीपायारहिं तियससरासणवण्णवियारहिं ।
वेंल्लीवणपरिभमियमरालहिं चेईहरणाणाणडसालहिं ।
सुरणरविसहरथोत्तवमालहिं खयरुच्छाइयकुंसुमोमालहिं ।
गंभीरहिं भुवणयलाऊरहिं वज्जंतहिं बहुमंगलतूरहिं ।
स रि ग म प ध णी सरसंधायहिं तुंबुरुणारयगेयणिणायहिं ।
उव्वसिरंभाणच्चणभावहिं कणरणतआलावणिरावहिं ।
ज रेहइ तहिं राउ पइट्ठउ परमेसरु सवडमुहु दिट्ठउ ।

७ MBP °वणियउ ८ BP पिएण व ९ MBP घुलिय १० MBP आरूढु महीवइ
2 १ M छत्तें धारें, P छत्ताधारें २ P णिय सहु परिवारें ३ M वल्लिय° ४ MBP सुकुसुममालहिं

13 *b* भरहभावविंत्थारें संगीतभावविस्तारेण 14 *b* णिरंगकुंभिकुंभत्थलु काम एव गजस्तस्य कुम्भस्थलमिव 15 *a* मयणंकुस° नख°, *b* समवंतेण कामखेदेन उपशमयुक्तेन वा भर्त्रा 16 *b* पासउ बन्धनपाश॰ 17 *a* °सहासहिं °सहस्रैः 18 मत्तगइ मत्तगजे 19 महिहरि पर्वते

2 1 *a* कमसंचारें चरणसंचरणेन 2 *a* °चवलें °चपलेन 3 *a* °रवण्णउ रम्यम् 5 *b* कप्पिय° विकुर्वणया कृत° 6 *b* तियससरासण° इन्द्रधनु 7 *b* णडसालहिं नाट्यशालाभिः 8 *a* °थमालहिं °कोलाहलैः, *b* कुसुमोमालहिं कुसुमानामिव समन्तान्मालाभिः 11 *b* आलावणि वीणा 12 *a* ज रेहइ यत् समवसरणं शोभते, *b* सवडमुहु संमुखः

घत्ता—मीहोसणसिहरामीणु जिणु णिम्मलु [illegible] ॥
पाणउ पुणइं मगाहिंपिय भुवणेमाग्गहियमयम ॥ २ ॥

3

जय सयल	भुवणमस-
मलहरण	समिमरण ।
परमरण	ममधरण ।
भवतरण	जरेमरण ।
परिहरण	जय वरण ।
पामणम-	अमरपय ।
पणुपमण	मिरिगमण ।
तिमसयर	फणिलपर-
समिममण	सिरयमण ।
मउटयल	मणिमसिम ।
धुंपविमल	कमकमल ।
जय मिहिल	विहिकुसम ।
पयमुसम	हयपवल-
सुयमवम	रियवविल-
सिवसुगम	करंकुसय ।
पहरसय	मयंमणय ।
मवरहिय	दुरेरहिय ।

५ MBP मीरवन° ६ B विणु [illegible]°

3\. १ B [illegible] २ BP गुणिमव ३ MBP [illegible]° but Gh. [illegible] and T [illegible]- [illegible]° ४ MBP [illegible]. ५ B omits दुरहिय

---

16 °[illegible] °[illegible] 14 पुणइं [illegible]

3 2 b [illegible]° [illegible]° 7 a [illegible]° [illegible] ; b [illegible]° [illegible] [illegible] [illegible]. 12 a–b [illegible]° [illegible] [illegible] 16 a [illegible] – [illegible] [illegible]. 16 b [illegible] [illegible]. 17 a [illegible] [illegible]

मुणिमहिय महमहिय ।
सुरहिरस- विसमरिस ।
कुसुमसर- अणवसर ।
जय दुरह- हरिसरह ।
बुहतिलय सुहणिलय ।
रइविलय जुइवलय-।
जियतरणि जय करुणि ।
जडदमिर- मणभमिर-।
घणतिमिर- हरमिहिर ।
जय सुमुह जय समह ।
जय सुमण जय गयण-।
चुयसुमण- पहगमण ।
जय चलियचमररुह जय ललियसुरकुरुर ।
जय गहिरमहुरझुणि जय चरमपरममुणि ।
जय विसयविसिगरुल जयधवल जसधवल ।
जय रसियजसवउह गयगरुह जय अरुह ।

घत्ता—सीहासणछत्तालंकरिय उत्तारेप्पिणु चउगइहे ॥
जय मयमयणिवहमयाहिवइ मइ णेज्जसु पंचमगइहे ॥ ३ ॥

६ MBP गयणयल° ७ B णहगमण ८ B omits this line ९ B omits this line १० MB जय जय मयणिवह°

18 *b* महमहिय मखा यज्ञा मथिता येन, अथवा, महेसु पूजासु महित पूजितो वाञ्छितो वा 19 *a* सुरहिरस° गोदुग्धम्, °विससरिस विर्ष तत्र सम 20 *b* °अणवसर °अविषय 21 *a–b* दुरहहरिसरह दुष्पापसिंहस्याष्टापद 24 *b* करुणि करुणायुक्त 25 *a* जडेत्यादि–जडानां मूर्खाणां दमका मनसा भ्रान्ति प्राप्नुवन्त ये मिथ्यादृष्टय ते एव घनतिमिराणि तेषां हरणे मिहिर सूर्य 32 *a* विसयविसिगरुल विषया एव सर्पास्तेषां गरुड 32 *b* जयधवल जगता मङ्गलध्वज. 33 *b* गयगरुह अनिन्द्य. 35 मयमयणिवह° मदा एव मृगास्तेषा यूथम्, °मयाहिवइ सिंह , पचमगइ सिद्धावस्था.

4

एए वंदिवि जिणु णमियसुरु पणएणामर कराइं विरिकरु ।
संमत्तंतभवेमाग्गमपंगउ भुवइ मतिसारणविरयपउ ।
पुच्छइ मगहेसर मंखमपायउ मक्खाहि गोत्तमसामि महारउ ।
पावणासु चउवग्गाणुच्चरं कम महापुराणु भवारुच्चरं ।
तं णिसुणिवि भासेसइ गणहरु वासारगमि पत्ति म सम्महरु ।
सुणि णमिय मयमोहविहीणहि भरहेरावयछीहि वोछीणहि ।
णाइ कंतु माणिणिहि णिरुत्तउ पहरु णीरजिणविर्दे वुत्तउ ।
पढमु समासमि कालु भणाइउ सो अणंतु जिणणाणे जोइउ ।
अगपरिणामसु सो सइयारिउ मरसु अणंपु मरूउ समारिउ ।
भुवइ का वि सम्मत्तविपस्सणु जिणभणकासु पयसणकस्सणु ।

घत्ता—मा मुणिपयपंकयभमर णिव तणु ण कासु वि हउं रहमि ॥
ववहारकासु परमेट्ठिमुहिं जिह णिसुणिउं तिह तुह कहमि ॥४॥

5

अणुमंतरपर समउ भणिज्जइ मापमि तहिं असंखहिं किज्जइ ।
उस्सासु वि मापणिहिं तु संखहिं सत्तुमासहिं थोवउ अक्खहिं ।
सत्तहिं थावपहिं मवु भणियउं इह णियकालिविणयणं मुणियउं ।
हौंति महामुणिणिवावणियहि सहू जि अट्ठतीस लव घडियहि ।

4. १ MBP वरिय २ MBP मयमाण°; K मयमाण° but corrects it to मयमार°; T मयमाण° but explains १ as तयो पठनां अतुर ३ MBP विणयहिं

5. १ M थोवमु २ MBP नरसहिं ३ MBP कउ

4. 2 संसारतीरवासी .... 4 a .... 5 b .... 6 b .... 7 a .... 8 a .... 9 b .... 10 b .... 11 ....

5 1 a .... 2 a .... 3 b .... 4 b ....

घडियहिँ दोहिँ मुहुत्तहु अवसरु तीसहिँ तेहिँ जाइ णिसिवासरु ।
तेत्तियहिँ जि दियँसहिँ विरइज्जइ मासु महारिसिणाहहिँ गिज्जइ ।
बिहिँ मासहिँ उहुँमाणु णिवद्धउ उहुहिँ तीहिँ पुणु अयणु पसिद्धउ ।
बिहिँ अयणिहिँ संवच्छरु वुच्चइ पचहिँ वच्छरेहिँ जुगु वुच्चई ।
बिहिँ जुगेहिँ दसवरिसइं जायइ दहगुणियइं सयसंखइ आयइ ।
सउ दहेहिँ ताडिज्जइ जामहिँ आवइ अद्दसहासु वि तावहिँ ।

घत्ता—सो सहसु वि दहहउ दससहँसु होइ समासिउ मइ णिउणु ॥
ते दह वि दहहिँ जइ गुणइ गुणि तो उप्पज्जइ लक्खु पुणु ॥ ५ ॥

६

सखाणाणिहिँ णिम्मिउ चगउ चउरासीलक्खहि पुव्वगउ ।
जाणिज्जइ फुडु अक्खियमेत्ती लक्खसमएण जि कोडि पउत्ती ।
पुव्वगें पुव्वगु णिहम्मइ जइ तो इह अवरु वि अवगम्मइ ।
वरिसह सत्तरि कोडिउ लक्खह छप्पण्णेव ताउ सँहसखह ।
परमागमि ज देवें वद्धउ पुव्वपँमाणु पउ तं लद्धउ ।
पव्वु णउदु कुमुदु वि पउमक्खउ णालिणु कमलु तुडियउ वि समक्खउ ।
अडडु अममु हाहा हूहू तिह जाणहि जिणवरेण जाणिउं जिह ।
मउलय लय वि महालइयगउ पुणु वि महालयणामपसगउ ।
सीसपकपिउ हत्थँपहेलिउ अचलप्पु वि वीरें उम्मीलिउ ।
णाणाणामपमाणहिँ मेज्जउ पत्तिउ कालु होइ सखेज्जउ ।

घत्ता—परमाणु अट्ठ जइ मेलवहिँ तो तसरेणु समुब्भवइ ॥
अट्ठहिँ तसरेणुहिँ पिंडयहिँ एक्कु जि रहरेँणुउ हवइ ॥ ६ ॥

४ MBP दिवसहिँ ५ MBP रिउमाणु ६ MBP वुच्चइ ७ MBP दससहस

6 १ K सहसक्खह २ M पुव्वे पमाणु ३ B हत्थपहिल्लिउ, P °पहिल्लिउ ४ MBP रहरेणू

---

7 *a* उडुमाणु ऋतुप्रमाणम् 10 *a* ताडिज्जइ गुण्यते, *b* अद्दसहासु अब्दसहस्रम् 11 दहहउ दशगुणित

6 1 *a* संखाणाणिहिँ गणितज्ञै 2 *a* अक्खियमेत्ती आख्यातमात्रेण 3 *a* णिहम्मइ गुण्यते 6 *a* पउमक्खउ पद्मसंज्ञम् 8 *a* मउलय मृदुलता, लय लता, महालइयगउ महालतिकाख्यम् 9 *a* हत्थपहेलिउ हस्तप्रहेलिका; *b* अचलप्पु अचलात्मकम्, उम्मीलिउ प्रकाशितं कथितम् 10 *a* मेज्जउ मेय,

7

भुवहिं रयरेणुपहिं समभाविं विउरमाउ भुवहिं विउरमाणिं ।
मिंभर भणिय पुणु भुवहिं विवरंवहिं मियसियरत्तु कहिउ णिहयनखहिं ।
भुवहिं घरिसवहिं परिमाणिउ अवपमाणु देवागमि माणिउ ।
परमप्पपरिवुड को दूसइ भुवखंगुल सुरि समासइ ।
छंगुल पाउ विहत्थि दुभाई दोहिं तार्हि किर रयणि वि हुई ।
चउरयणिउ दंडु मणि भाणहिं दंडहिं भुसहासिहिं णायहिं ।
जोयणु तं पि मवहिं गुणिवार पंचहिं पुणु कोसणु णमिवार ।
एम महाजोयणु वक्खाणिउं तं जगमाणकरणु अहिमाणिउं ।
तस्स पमाण वसम्भइ पावी परिवद्धुमिय सैपरियरहिरवी ।
कत्तरियाहिं मंथितायहिं सुसुमु सा परिखार सिसुमणिरोमदुं ।
होउ पहुवार केवलें म गणहिं संवच्छरसइ एकु वि भवणहिं ।
जरणई रोमपासि सा विवार तरणई पक्किमोवमु सुंदु पुणार ।
तेहिं भसंसिहिं दहारक्खउ दीपसमुद्दपमाण पवक्खउ ।
तं पि भसंखगुणियं भवारउ भवकिंदिमाउपमाणभारउ ।
होइ समुद्दोवमु सुभणाविहिं पलाबमहरकोडाकोडिहिं ।

घत्ता—तेत्तियहिं वि सायरसमहिं फुडु कालचक्कु भई लक्खियउ ॥
सर पउ वि णयर वि पुणु मणमि केवलणाणे अक्खियउ ॥ ७ ॥

7 १ MBP णिसम्म. २ MBP णियपरहिं ३ M वासिउ ४ MBP णवहिं जोयणु पुणु वरिसियइ ५ MBP बोल्ली ६ Tp कसरिय and adds कसरियेहि ग्रहिउप्पत्रबोमाणं MBP कणिमवाहिं. MP पुणु B पुणु. ७ MBP एम विणवाउ॰

7 1 b विदुरमाउ देवायुः 2 b बिब विवत्तु वैक्रियम् णिदवण्णहिं विरोणिर्देशकानुसिहः 3 a घरिणावियं एवम् कृत्वा b देवागमि सिद्धान्ते 5 a दुभाई हाभ्यां णवाभ्याम् b रयणि हस्तः (भरत्नि). 8 b जगमाणकरणु लोकमानम् अहिमाणिउ कथितम् 9 b सपरियरहिरवी सपरिवेष्टिता विदुषा. 10 b कसि केश 11 b भवणहिं लोके 13 b पवक्खउ वदन्तु 14 b भवहिदि मानविधि॰ 16 a एवमति विहि समितिपरिमाणि, सर्वोपरिवेशोपरि स्पर्शन त्वम्

8

सुसमसुसमु अण्णेक्कु वि सुसमउ सुसमदुसमु पुणु दुस्समसुसमउ ।
दुस्समु अइदुस्समु पविहत्ता इय छक्काल वीरपण्णत्ता ।
ए ओहामियदावियइड्ढिहिं परिभमंति जगि हाणिपवुड्ढिहिं ।
भुयवलविहवसरीरिसरीरहिं धम्मणाणगंभीरिमधीरहिं ।
वड्ढंतेहिं होइ उच्छप्पिणि ओहट्टंतएहिं अवसप्पिणि ।
सायराहं विंभियगिव्वाणहिं चउतिदुकोडाकोडिपमाणहिं ।
तीहिं मि कालहिं तिण्णि विहत्तइ दहविहविडविपसाहियखेत्तइ ।
दरिसियमाणवदेहारोयइ इच्छासंणिहमाणियभोयइ ।
छच्चउदुधणुसहाससरीरइ वोरक्खामलमेत्ताहारइ ।
तिण्णिदुएक्कपल्लथियजीवइ रयणाहरणविहूसियगीयइ ।
उत्तिममज्झिमाइ णिकिट्ठइ भोयभूमिचिंधाइ पइट्ठइ ।

घत्ता—णउ सत्तु असेसु वि मित्तु तहिं सीहु गइंदें सहुं वसइ ॥
लायण्णवण्णविब्भमभरिउ जणवयजोव्वणु णउ ल्हसइ ॥ ८ ॥

9

बहुवोलीणइ तइयइ कालइ थियपल्लोवमट्ठभायालइ ।
अट्ठारहधणुसयतणु थिरजसु पलिओवमदहमंसु चिराउसु ।
पडिसुइ णामें जायउ कुलयरु पुणु तेरहसयचावपईहरु ।
अममिमयाउ राउ मंथरगइ अवरु वि हूवउ णामें सम्मइ ।
पुणु णं माणुसवेसु अणंगउ अट्ठसयाइं सरासणतुंगउ ।

8 १ MP सुसमुसुसमु २ MBP सुसमुदुसमु ३ MBP दुस्समुसुसमउ ४ P पवहता but gloss प्रविभक्ता पृथग्गुणिता ५ MBP छच्चउदुधणुसहास° ६ MBP विहूसियगीवहिं

8 1 *a* अण्णेक्कु द्वितीय 2 *a* पविहत्ता प्रविभक्ता, 3 *a* ए एते षट् काला, ओहामियदाविय इड्ढिहिं स्फेटितदर्शितऋद्धिभ्यां हानिवृद्धिभ्याम्, अवसर्पिण्या ऋद्धि स्फेट्यते उत्सर्पिण्यां ऋद्धिर्दृश्यते 6 *a* सायराह सागरोपमे 7 *b* दहविहेत्यादि–दशप्रकारै कल्पवृक्षैर्मण्डितक्षेत्राणि, मद्याङ्गतूर्यभूपास्रग्ज्योतिर्दीपगृहाङ्गका । भोजनामत्रवस्त्राङ्गा दशधा कल्पशाखिन 8 *a* °आरोय °आरोग्य, *b* इच्छासणिह° इच्छानुरूपा °माणिय° प्राप्त 9 *b* °अक्ख° बिभीतक 10 *a* °पल्लथियजीवइ °पल्यस्थितिजीवितानि 11 *b* पइट्ठइ प्रविष्टानि 13 णउ ल्हसइ न पतति

9 1 *b* °अट्ठभायालइ अष्टमे भागे काले 2 *b* पलिओवमदहमसु पल्योपमस्य दशमो भाग, 3 *b* पईहरु प्रदीर्घतर 4 *a* मंथरगइ मन्दगति

अट्ठउपमाणियाउ खेमंकरु संभूयउ सुमइपछेमंकरु ।
सत्तसयाइं पंचसत्तरि मणु अच्छिउ मणु वि उप्पण्णउ मणु ।
खेमंधरु णामें पं दिण्णउ गुरियएं औवेप्पिणु सो मेउ ।
सवसत्तइ पंचासहि सुत्तउ पैत्तपमाणउ आसु पवत्तउ ।
कमलत्ती वि सीमंकरु मण्णइ तहु चरिमु णइ सुरगुरु वण्णइ ।
पलियासहु किर को णइ मण्णइ वायामणई सरीरसमुण्णइ ।
सत्तसयाइं पंचुत्तरवीसइं आसु तिविहमहारउ मासइ ।
सिरिकरपल्लवमासिमपमाणउ सी मंजायउ पुणु सीमंधरु ।
पणुवीसुत्तिमपाइं विहणारउ कोवंडइं सप्पाइं मणपारउ ।
वसिणाइं पुणु गुणमणिमंडिउ विमलवाहु हुउ पंडापंडिउ ।
पेंछ वि पोंमु आसु संजणिउ सुउ सुहकम्में सुरवरु पाविउ ।
छट्ठमपणउरागिरि पसाहिय जासु देहउच्चत्तु पसाहिय ।
कम्मुणाइं कामिणिकयविमउ णाम सुपसिद्धउ चक्खुम्मउ ।
पडमंगाउ महीयलि आच्छिउ पच्छा लयकालेण णियच्छिउ ।
पुणु वि जसस्सि पुण्णपंचाणणु उप्पण्णउ परियवपंचाणणु ।

घत्ता—छसुमाणइं सयाइं कैलासउ पण्णासाहियाइं धणमि ॥
तहु पएरंगयणु पत्तहर जीविउ कुमुउ पलु मैणमि ॥ ९ ॥

10

पवाहु अणिन्वयाइं वेसियाइं वि पंचवीसउरहियाइं वेसियाइं वि ।
पुणु जायहु चउगुणियपरिहइ धणुसयाइं आहिचंदवरिट्ठइ ।
कुमुयंगाउणियपमाणहु किउ सो काउें अमरविमाणहु ।

9 १ MP मुउ २ MBP कम्माहिं ३ MBP णउमाणु णमि णाणु णवउ ४ MP णिविणु मवमउ ५ MBP पढु पोमु णा सो संजणिउ ६ MBP कम्मुणाइं BP णायामणइ ८ MBP णविउ ९ MBP देहुवत्तु १० MBP णमिउ

6 b गुणुमइपछेमंकरु सुठु माणिणां क्षेमंकरो 7 b उच्छिउ उच्छित्रः 10 a कमलत्ती वि कमलाइत्यान्यष्टाशीति-आयुः 11 a पलियासहु पलितसहसु 14 सिरिकिरपल्लव श्रीकरपल्लव 15 b पंडाअसिउ पण्डा बुद्धिः तया पण्डितः 18 a कम्मुणाइं कर्मुकाणां धनुषाम्, b चक्खुम्मउ चक्षुष्मान्, 19 b णियच्छिउ निरीक्षितः 21 तहु तस्य; पएरंगयणु पदाधिकारम्; 22 कुमुउ कुमुदानाम्

10 2 a चउगुणियपरिहइ चतुर्गुणितपरिधिः

पंचसयइं पुणु सयसजुत्तइं   चावहं जासु जिणेण णिउत्तइं ।
णउद्वाउसु महिवइ संजायउ   इह चदाहुं णाम विक्खायउ ।
तहु पच्छइ गच्छतें कालें   उच्छिज्जतें सुरतरुजालें ।
अज्जवलोयहु आसि पहाणउ   हुउ मरुण्ड णाम बहुजाणउ ।
सायवीढह सयइ महिट्ठिउ   पच्च पचहत्तरइं पवड्ढिउ ।
गउ सो णउयगउ जीवेप्पिणु   थिउ सुरहरि सुरवोंदि लएप्पिणु ।
सहुइं पंचसयइं रणचडह   देहपमाणु जासु धणुदडह ।
पल्लाउसु पय पालहु जाणइ   पुणु हुउ मणु णामेण पसेणइ ।
कडमोक्खकरणाह सउण्णउ   पचसयाइ सवायइ उण्णउ ।
पुव्वकोडिजीवियसपुण्णउ   सुद्धबुद्धि सब्भावाउण्णउ ।
तिहुअणभवणखंभु णं दिण्णउ   संतजुज्जलक्खणवण्णउ ।
गुरुउब्धरियवसु वरमेहलु   दावियकप्पतरुवरामयहलु ।
भूसणरयणकिरणहयतममलु   सयणुतेयउज्जोइयणहयलु ।
मउडासिहरु हारावलिणिज्झर   सुरवरसेवाजोग्गधराधरु ।
ण अवयरियउ जंगमु मदरु   ण णहाणिवडिउ देउ पुरंदरु ।
घत्ता—हुउ पच्छइ आयहं तेरहहं बाहुब्धारियभुवणभरु ॥
जियलोयहो णाहि व णाहिपहु णरसंथुउ कुलयरु पवरु ॥ १० ॥

11

णहयलि जंतजणेण णं याणिय   पहिलएण रविससि वक्खाणिय ।
अण्णु वि रुइरुक्खक्खइ दिट्ठइ   विंदुयविंदुएहिं उवरिट्ठइं ।

10. १ MBP चावहिं २ MBP चदाहणामु ३ MBP उच्छज्जतें ४ MBP add after this line दीहयाहु उरयलवित्थिण्णउ ५ B °वसु ण मेहलु ६ M °जोग°, BP °जोग्ग° ७ MBP जगममदरु ८ MBP °भुवणहरु ९ MBP कुलयरपवरु

11 १ M ण जाणिय

7 *a* अज्जवलोयहु आर्यलोकस्य, *b* बहुजाणउ बहुश्रुत 8 *a* सायवीढह धनुषाम् 9 *b* सुरवोंदि देवशरीरम्. 10 *a* रणचडह संग्रामप्रचण्डानां धनुर्दण्डानाम् 11 *a* पल्लाउसु पर्वप्रमाणायु 12 *a* कडमोक्खकरणाहं धनुषाम् 13 *b* सब्भावाउण्णउ सद्भावपूर्ण 15 *b* °अमयहलु अमृतफलम् 16 *b* सयणुतेयेत्यादि-स्वतनुतेजसाद्योतितनभस्तल 19 आयह एतेषाम् 20 जियलोयहो जीववर्गस्य

11 1 *a* णहयलीत्यादि-आकाशे गच्छता जनेन कल्पतरूणां बहुलतेजस्त्वात् न ज्ञातो, *b* पहिलएण प्रथमकुलकरेण प्रतिश्रुतिना 2 *a* रुइरुक्खक्खइ कल्पवृक्षस्य क्षयात्, ज्योतिरङ्गक्षयात्

णीयत्त वि कोयणु मयरहिउं महरत्तई अक्कत्तई सिहूई ।
इपा व सुंग दारुण जायई तइयत्तइ ते साहिय तरयइं ।
सिसि यंचिय साहि वि परिहरिया सोम्मे सुक्ख्ख्याय पियबोद्ध करिया ।
चोत्थियण पुणु वउ सम्पेकिवउ अउ मुणेहिं चउंतव पविख्यउ ।
ताहिव ते दहरंडयहारिहिं पंचमेण वहुपुक्खियवारिहिं ।
वियलियफलय हव विरइयमेरउ मज्ञव सुविरोहिय मियकेरउ ।
पविरलकुसुमफलाइ कुलंता फलमोरो कोंडे सुमंतंता ।
छट्टएण मणुवा मंणुवंचे वारिय धर कप्पसीमाविंचे ।

घत्ता—कुलयरपवरेण वि सेसमय जियमइविहवें मीसिउ ॥
पइाणिमिव इयगयवरवमहमारागोहणु दीसिउ ॥ ११ ॥

12

अहमेण पंगउ अवपत्तिउ हिमयईसयमउ विज्भासिउ ।
णवमएण सुयमुहससि दरिसिउ तं जोईवि जणु हियवा हरिसिउ ।
जणु जीवेप्पिणु सुय सामाइउं दहमें केवि पयासिय णाइउं ।
पयापइमइ कुसपरि जायइ पंचनि मायवयंसहु इवइ ।
जीउ ण जयइ करयरियसरं णाएइमइ हुइ वहुयई वरिसइं ।
णंचइ पय पयाइ संभुत्ती तेरहमेण वियप्पिय विती ।
विहियइं सरिसमुइजलजाणइं गयवरकमामिरिवरसोवाणइं ।
तहावइ जायइं मिम्मम्मइं कुसरि कुसायर कुकुहर कुम्मइं ।

---

१ MBP मिन २ M मिमिव मविय B मिवमविय ४ MBP चीम ५ B मियावमरिया. ६ P चउमयम
७ MBP विवहि MBP वणुवई. ९ P ववयइ १ MBP मवीयउ ११ MBP दसीवउ
12 १ P वोएप्पिणु हियए. २ P दहमइं ३ MBP मायामीएवु

---

3 a °रिद्दुई वत्सला 4 b साहिय साधिता:, वृत्तत्तय वलितमित्वा 8 a मेरउ मर्यादा; b सुवि रोहिय सुविरुद्धा: 10 a मणुवंचे मनुवंशेन जातेन

12 2 a सुयमुह° सुतमुख° 3 a मोजाणउं मुखदर्शनम् 5 a चीउ चीन 6 a दयाइ पुत्र-दिवि b वियप्पिय विकल्पिता रचिता मिती वृत्ति:. 8 a मिम्मम्मइं निर्मिताश्रमाणि कुसरि कुसरी; कुकुहर कुपर्वत

घत्ता—जोयं मणुणा चोद्दहमइण णरसिसुणालइ खंडियइ ॥
कसणब्भइ थियइ णहंगणइ चलसोदामणिमंडियइं ॥ १२ ॥

13

विसकालिंदिकालणवजलहरपिहियणहंतरालओ ।
धुयगयगंडमंडलुड्डावियचलमत्तालिमेलओ ॥
अविरलमुसलसरिसथिरधारावरिसभरंतभूयलो ।
हयरवियरपयावपसरुग्गयतरुतणणीलसद्दलो ॥
पडुतडिवंडणपडियवियडायलरुंजियसीहदारुणो ।
णच्चियमत्तमोरगलकलरवपूरियसयलकाणणो ॥
गिरिसरिदरिसरंतसरसरभयवाणरमुक्कणीसणो ।
महियलघुलियमिलियदुदुंहसयवयसालूरपोसणो ॥
घणचिक्खल्लखोल्लखणिखेइयहरिणसिलिंवकयवहो ।
वियसियणवकलंवकुसुमुग्गयरयपिंजरियदिसिवहो ॥
सुरवइचावतोरणालंकियघणकरिभरियणहहरो ।
विवरमुहोयरंतजलपवहारोसियसविसविसहरो ॥
पियपियपियलवंतवप्पीहयमग्गियतोयबिंदुओ ।
सरतीरुल्ललंतहंसावलिझुणिहलवोलसंजुओ ॥
चंपयचूयचारचवचंदणचिंचिणिपीणियाउसो ।
वुट्ठो झत्ति जस्स कालम्मि जए सुहयारि पाउसो ॥

४ MBP जायए ५ MBP चउदहमइण

13 १ MBP विसि° and gloss in P सर्प २ P धुव° ३ P °तडिपडण° ४ M डिंडुह, P डेंडुह, B डुडुह ५ MBP °चिक्खिल्ल° ६ MBP °कयव° ७ MBP °बव्वीहय° ८ P °बिंदओ ९ MBP °धव°

10 कसणब्भइ कृष्णमेघा, °सोदामणि° विद्युत्

13 1 विस° विषवत्कृष्णमेघ, °कालिंदिकाल° यमुनासदृशकृष्णमेघ 2 °मेलओ मेलापक समूह 3 °थिरधारा° अखण्डवृष्टि 4 °सद्दलो °पत्रयुक्त 5 °तडि° विद्युत्, वियडायल° विस्तीर्णपर्वत, रुंजिय शब्दित 7 °सरसर° °जलस्वर° 8 दुदुह° निर्विष सर्प, सयवय शतपद सर्प, सालूर भेक 9 खणिखेइय गर्तायां निक्षिप्ता, सिलिंब शिशु 11 °घणकरि° मेघ एव हस्ती 12 °रोसिय° कोपित 13 °बप्पीहय° चातक 14 °हलवोल° कोलाहल 15 पीणियाउसो एषां वृक्षाणां प्राणसिंचन कृतम् 16 जस्स कालम्मि यस्य नाभिराजस्य काले, सुहयारि सुखकारी

सुमकुसुमपवंगुससपवदपतिसेसीवीहिमासपा ।
फममरणविसकविसकणवंपवदिवरिवसुपेंसहासया ॥
ववगयमोयमूमिमपसूरह सिरिजिणवरसामही ।
जाया विविहपयोहुमयोहोगुम्मपमाहया मही ॥

घत्ता—तं पेच्छिवि[१०] जणवउ संचलिउ मउ मोहेप्पिणु हरिस वहिं ॥
तच्चीयवपेहिसयच्छमलु मच्छुर णाहिणरिंदु जहिं ॥ १३ ॥

14

किं तरुवरइ पवण फोडइ घर पिण्डरंड जिह मेसावइ णर ।
पंचवर्ड हरियाण्णु कि दीसइ दुम देव किं गज्ज परिसइ ।
गयकप्पदुम तेत्थु थिसण्णा पयहिं णवर के वि उप्पण्णा ।
भण्णइ कलमरिया णिप्फण्णइ थिवमव रागमुगसहिवज्जइ ।
अम्हइं जइ वयायसविषाया वीहरभुक्खापाम पीया ।
मोज्जामोज्ज तेत्थु किं हासइ णं थिसुणेप्पिणु सहियइ पोसइ ।
जो एसंतु वरिसइ सो जेवयणु ज पंचवउं दीसइ तं धुरयणु ।
जा गिरि वमइ वमइ सा विसुह पंचवीयधुंयिपकोमयवह ।
सुरतरुवरपरिभासि हुम्मसया कम्ममूमिमूहह संजाया ।
कइयगरसु चीरसु संविसाइ जं भुयरइ सुणाइ तं विसइ ।
वरिसवंसत्यवपिरवंतें पस मणेप्पिणु णाहिणरिंदें ।
थिवरसाउ जम्मुसरियर जणु इत्थिउंमि किउ महिपमाणणु ।

घत्ता—कम्मवंकमासिहिसंजुभइं पयपविहायइं माणियइं ॥
कम्मासहसुपरिसंफुभइं पउपेरियम्मइं वाणियइं ॥ १४ ॥

---

१० MBP °कुसुमासया ११ M °मण १२ MBP पेच्छिवि
14. १ MBP किव° MB णिवसु ३ P णिवइ. ४ MBP परिवहइ ५ P °परियम्मइ.

---

17 [illegible] 18 °[illegible] 19 [illegible] 21 [illegible]

14. 1 a [illegible] 4 [illegible] 5 a [illegible] b [illegible] 7 a [illegible] 8 b [illegible] 10 a [illegible] b [illegible] 11 a [illegible] 12 [illegible] 13 [illegible] 14 °[illegible] °[illegible]

15

तासु घरिणि मरुएवि भडारी जाहि रूवसिरि अइगरुयारी ।
अमरइ पतिइ पयपणवंतिइ लंघियाइ अम्हइ णहयतिइ ।
कमयलराएं काइ गविट्ठउ गम णाइ णेउरहिं पघुट्ठउ ।
पण्हिहिं रत्तउ चित्तु पउंसिउ अंगुलियहिं सरलत्तु पयासिउ ।
अंगुट्ठुण्णयइं ज गूढइं गुप्फइं नं किर पिसुणइं मूढइं ।
णीरोमउ विसिरउ वट्टुलियउ मसिणउ मोहियाउ उज्जलियउ ।
जघउ कमहाणिइ ओहरियउ दिट्ठउ ण खलमित्तइ किरियउ ।
गूढइं णरवइमंताभासइं वायरणाइं व रइयसमासइं ।
णिविडसंधियधइं णं कव्वइं देविहि जण्णुयाइं अइभव्वइं ।
ऊरुयरंभ णराहिवइमणहु तोरणखंभाइं व रइभवणहु ।
जेण ससुरणरु तिहुयणु जित्तउ कामतंतु ज देवहिं वुत्तउ ।
दिण्ण थत्ति तहु सोणीबिंबहु किं वण्णमि गरुयत्तु णियंबहु ।

घत्ता—गंभीर णाहि तहि मज्झु किसु उयरु सतुच्छउ दिट्ठु मइ ॥
ससग्गवसें गुणु कासु हुउ जो णवि जायउ जम्मि सइ ॥ १५ ॥

16

तिवलीसोवाणेहिं चडेप्पिणु रोमावलिकुहिणी लंघेप्पिणु ।
सिहिणगिरिंदारोहणदोरइ लग्गउ वम्महु मोत्तियहारइ ।
पियवसियरणु वसइ भुयमूलइ सुइसोहग्गु जाहि हत्थयलइ ।

15 १ T णहकतीए but adds णहयतिइ इति पाठे आकाशादागत्येत्यर्थः २ MBP चित्तु पदरिसिउ, T चित्तु पृत्तत्यम् ३ MBP गुफइं ४ P दिट्ठा ण ५ M °समाणइं ६ MBPK ऊरूखंभ ७ MBP ससुरयणु. ८ M सवित्थरु

15 2 *b* णहयतिइ आकाशादेन्या, अथवा नखकान्त्या 3 *a* कमयलेत्यादि–नूपुर इति हेतो शब्दं करोत्यस्माकमवशां विधाय चरणतलरागे किं दृष्ट देवपत्न्या, काइ किम्, गविट्ठउ दृष्टम् 4 *a* रत्तउ चित्तु भर्तरि रक्तं चित्तम् 6 *a* विसिरउ शिरारहिता, *b* मसिणउ स्निग्धा 7 *a* ओहरियउ अपकर्षं गता 8 *a* गूढइं प्रच्छन्नानि, णरवइमंताभासइं राजमन्त्रसदृशानि; *b* रइयसमासइं पद् समासा कर्मधारयादयः, पक्षे मांसयुक्तानि 9 *a* णिविडसंधियधइं सुश्लिष्टपदबन्धानि शरीरावयवबन्धानि च
16 1 *a* चडेप्पिणु आरुह्य, *b* °कुहिणी मार्ग 2 *a* सिहिण° स्तन°, °दोरइ सूत्रे रज्ज्वाम् 3 *a* पियवसियरणु प्रियवशीकरणम्, *b* सुइ° निर्मलम्

मेरुपंधु मेभिपंधि परिट्ठिउ | मायण्णें समुद्दु ण संठिउ ।
जाहि णवरं तं अणियविमाणउं | महुरउ इयरहु करउ खारउ ।
कंकमीए पर कंतूं पावा | परसामाउरिउ कंद ओवार ।
णियोदणिविड्ढउ णियणसिकंमिहि | मोयहि पवणहि हंणु पंतिहि ।
महरवियु देहु दयाकर | मुत्ताचमिमहि भारें पयामरु ।
णम्मई भार कणीर ण संमुदु | उज्झउ णासाणंसु वि दुम्मुदु ।
मरंहउं कंकरयु वि ण सहियउ | णयणहिं मंपि ण कण्णइं कहियउ ।
णिसिहिपि मसि दवि गयणविसंमिव | विब्भि वि मंडवमार परिविंबिय ।
कुंडमसिरि कहंमि पवणम्मिहि | णियणणणिवहि मंकणणपुं प्फिमहि ।
कुडिलाम्म भाउपवि णिरंतर | मुहकमलहु पुसंति णं महुयर ।
मंचर वि ताई माव सिंघरेल | मुहससहरमयण णं तमरउ ।
णवमिहे पंहि पउट्टे दीमर | कुसुमरिव्वमीसियउ विहासर ।

घत्ता—मंचवंतिउ धमपविमासिपिउ घाहिपिहेव णिवीणिपउ ॥
मारुतवकेंवर सुंदरिहि पवमाइयप्पणपीणिपउ ॥ १६ ॥

17

तियसमहीहरपिहियपहसासा | मारहवरिसहु मज्झुदेसर ।
जं णियहोउ समुभापणंमिह | सरयामणु णं धम्मसरिकंतिह ।
जं सव्वगु पुणिमोपवसंसर | जं जाणिमिउ धम्मु कहेसर ।

16 MBP [illegible] १ BP [illegible] २ MB [illegible] P [illegible] and gloss [illegible] ४ M [illegible] ५ M [illegible]° ६ P [illegible] ७ MBP [illegible]° ८ P °[illegible] ९ MB [illegible] १० K [illegible] ११ P [illegible] १२ BP [illegible]

4 a [illegible]. 5 a [illegible]; b [illegible] 6 a [illegible]; b [illegible] 7 a °[illegible] 9 a [illegible] b [illegible] 14 b [illegible] 15 b "[illegible]" 16 [illegible] 17 [illegible].

17 1 a [illegible]° [illegible], °[illegible] 2 a [illegible].

पीवरपीणपयोहरकयकरु ताइ समउ सो पच्छिमकुलयरु ।
अच्छइ णाहिणरेसरु जइयह सुयरइ सुरवइ णियमणि तइयह ।
सुरणरवंदणिज्जु जैगि सारउ गुरुससारमहण्णवतारउ ।
कामकंदकप्परणकुठारउ होसइ पयहु भवणि भडारउ ।
इय संचिंतिवि पुणु परिछिण्णउ इंदें धणयहु पेसणु दिण्णउ ।
धणय धणय लहु करि णिरु भल्लउ पुरवरु चउदुवारु सोहिल्लउ ।
ता तं पेसणु जक्खें लइयउ खणि साकेयणयरु पविरइयउं ।

घत्ता—जहिं पवणाइरियवसेण णंदणवणइं सुपत्ताइं ॥
णच्चंति फुल्लमुहमुक्केण मयरंदेण व मत्ताइं ॥ १७ ॥

18

जहिं सरवरि सिरिपयसफासें वियसइ कमलु णाइ संतोसें ।
परभुत्तें विमुक्कतमदोसें अहवा णंदिउ को वे ण कोसें ।
त तेहउ वि पीलु [3]किं भजइ महुयरउलु ण रोसें रुजइ ।
सो तहु दाणु देइ किं भीयउ अवरु वि गरुयउ होइ विणीयउ ।
वडपारोहइ हिंदोलंतिहिं जोइउ जक्खिहिं दरपहसंतिहिं ।
जहिं कई अइपहसणरसधारउ सुइ णियदिट्ठि थिवइ सवियारउ ।
रत्तउ सारसियहि जहिं सारसु को वि परिट्ठिउ अहिणवु सारसु ।
सहइ तमालधारयसारिउ जहिं कलु कोइलु लवइ णिवारिउ ।

17 १ M पओरुह° २ MPT सुमरइ, B सुमरइ and gloss स्मरति ३ MBP जग° ४ B °समुण्णव° ५ MB °कुढारउ, K °कुठारउ but corrects it to °कुढारउ ६ MBP चउदुवारसोहिल्लउ ७ MBP पवणायरिय° ८ MBP °मुक्कएण

18 १ M परिभुत्तें २ P को वि ३ P कह ४ BP कइवइ पहसण° ५ M को ण ६ MBP अहिणव° ७ MBP कलु

4 *a* °कयकरु °कृतकर, *b* समउ सह 5 *b* सुयरइ स्मरति 7 *a* °कप्परण° °छेदन° 8 *a* परिछिण्णउं ज्ञातम्, निश्चितम् 10 *a* लइयउ गृहीतम् 11 पवणाइरिय° वायुरेव आचार्य

18 1 *a* सिरिपयसफासें लक्ष्मीपदस्पर्शेन 2 *a* परभुत्तें हंसे जनैश्च भुज्यते, विमुक्कतमदोसें पापोज्झितेन, अथवा, तम क्रोध, पक्षे तिमिरयुक्तरात्रिरहितेन, *b* कोसें कर्णिकया द्रव्येण च 3 *a* पीलु हस्तिपाल, *b* रुंजइ शब्दं करोति 5 *b* दर° ईषत् 6 *a* कइ कपि, अइपहसणरसधारउ अतिप्रहसनभारक हास्यं कारयतीत्यर्थः, सुइ शुके 8 *a* तमालधारयसारिउ तमालवृक्षान्धकारस्य सा लक्ष्मीस्तस्या रिपु, *b* णिरारिउ अनिवारितम्

पवरंबयकुसुमहि डाइयरुउ महिकहि कोइल हाइ वाइयवरु ।
जहिं मालिणि ण करइ दरपरियउ बीउ घरिसिसिहि को वि ण घरइ ।
महुरयवरमासविहत्तहं जहिं छप्पय सुप्पकहं छेत्तहं ।

घत्ता—जहिं भम्मइं कणमयपमींमियरं परिममंति सच्छेण पसु ॥
वणसरिद्दसिगयहारुजुर महिसिहिं पिअइ पच्छुरसु ॥ १८ ॥

19

कुरु कुरु भायभूमि जहिं जित्ती तिमिरिसमिद्ध भिहुण परित्ती ।
चिंतिउ चिंतिउ देंति ण पावइ पुण्णपसायु ण भेउं सवइ ।
जहिं पालि पवरमरगोवरि सुप्पइ पइ पइ पंउमहु पंकु लिप्पइ ।
णवंपारद्दु करेहिं चमिक्कइ फलु भउमु करइं मि मविक्कइं ।
कुवलयघरविउ ण णिवाहउ जहिं परिहउ वहंति पवहउ ।
जं मविसमविभमकम्मोपरियउ भवचार्ट्ठमु णाणासरियउ ।
बहुमाणिक्कमयमपेहावहिं जं मयणवणु सुरवरघोवहिं ।
अहिपसिपारयमवण्णविपारहिं जं सीहइ सच्चहिं पावारहिं ।

घत्ता—जं विणहि मिथायरणंत पविकिरणहिं सिहिमावधु गमइ ॥
तं पीयइ णिसि ससिपरपुसिवमणिमपिमलघाराहयउ ॥ १९ ॥

P वर १ MBP केवर १ MBP पमरिमर

19 १ BP °घमिविभिग्धर १ P मैवर्ं १ MB पत्तौं पक्कु लिप्पइ; P पउमु पवेंहि लिप्पइ ४ MB पमारहु मरेहिं जहिं तिमर. ५ M adds after this line मुरमुरती मिरिव मविवमर, and gloss मुरवम मयुरले वनि P reads in its place मुरमइवति मिरिव मविवमर, and after it reads सिरवियुविवी सवारि मिमर, वसु परउनु करं मि नामिवमर. ६ MB add after this line मिवर मिचुविती मवारि मिमर, मिचु मारमार मिचु पूरमर M वहिं परिहा वर्देवि पवंहिम ८ MBP °पहि. ९ MBP °भावे

9 a सं व द क कि म भासकालिका 10 a प र प द द द ददपुवसपकिम् b बीज बीजम्, पररद मक्तिरी, परिभ्रमणकरम्पासि गन्नामीलनं 11 a वाय° वस्त 18 °रोरि द° महिप

19 1 a कुरुकुरु वरा वरा मित्ती लब्धा 2 b पुष्पसा पु करमकपसामिकपुणसामथ्यात 3 b पदे मकरलववमै 5 a निर्वहद्द गवयाकमेन b परिधाव वाहिका वहंउ अर्वी 7 °बहु° °सिरप° 8 a बहिवसिकावर्ण° फलोदरा° 9 निभावरकेत पूर्णमानकल; सिहि मावधु अभिमवमधु 10 सीयर विपासवति; °पुसिव °स्रवा; °चलिमपि °वमवमलकम

20

मरगयकयघरि पक्खविहूसिउ　　जहिं चंचुइ लक्खिज्जइ पूसउ ।
इंदणीलघरि णहविप्फुरणें　　विमलें मोत्तियदामाहरणें ।
जाणिज्जइ सामा पहसंती　　णाहें णवकुंदुज्जलदंती ।
कणयरइयमंदिरि वियरंती　　अवेरविसंझाराउ वहंती ।
करकंकणु करफरिसें जाणइ　　णेउरु सद्देण जि अहिणाणइ ।
दहिकुट्टिमयलि दइए आणिउ　　कलरावेण हंसु परियाणिउ ।
तहिं जि पडीवउ जहिं सियणिवसणु　　ठविउ ण पेच्छइ अइभोलउ जणु ।
फलिहसिलालयमज्झि णिविट्ठउ　　पिहियकवाडु वि वहुवरु दिट्ठउ ।
पोमरायमंडवि आसीणी　　जेत्थु का वि हरिणच्छि पहाणी ।
घुसिणपिंडु ण णियति विसूरइ　　जहि सोहाइ ण सग्गु वि पूरइ ।
चदणचिक्खिल्लें पहु चिड्डइ　　जहिं कप्पूरधूलि णाहि उड्डइ ।

घत्ता—ण कलागमु अक्खरु णेय गुरु णउ दासत्तणु सविहिउ ॥
वइसवणें एक्केक्कु जि मिहुणु जहिं आणिवि माणिवि णिहिउ ॥ २० ॥

21

मंदिरि मंदिरि सहसा भरियइं　　तोरणाइ रयणहिं विप्फुरियइं ।
गिज्जंतें मंगलसंघाएं　　देवदिण्णपडुपडहणिणाएं ।
घरसंचारियंकलस वि दिट्ठा　　सरयब्भेसु वे चंद पइट्ठा ।
णिच्चुप्पाइयसुरयणहरिसहिं　　समज्जियदप्पणयलसरिसहि ।
विहुतारावलिदिणयरपंगणु　　दीसइ भूमिहि सयलु णहगणु ।
गुरुअच्चासणभयवसणडियउ　　णं सोहइ पायालइ पडियउ ।

20 १ B पख° २ MBP अवरु वि ३ MBP करफर्से ४ M फलिहसिलायलमज्झि, BP °सिलायलि मज्झि ५ MBP पउ but gloss in P पन्था
21 १ MBP °सचारिम° २ MBK य

20 1 *a* पक्खविहूसिउ पक्षयोर्विशिष्टा भूपा यस्य, *b* पूसउ शुक 5 *b* अहिणाणइ अभिजानाति 6 *a* दहिकुट्टिमयलि धवलशिलोपरि, दइए भर्त्रा 7 *a* पडीवउं पतितम् 8 *a* फलिहसिलालयं स्फटिकगृहम्, *b* वहुवरु वधूवरम् 9 *b* पहाणी चित्रकारिणी स्त्री 10 *a* ण णियन्ति रक्तत्वादपश्यन्ती, विसूरइ खिद्यते 11 *a* पहु पन्था , चिड्डइ आर्द्रीभवति. 13 माणिवि मानयित्वा
21 1 *a* सहसा शीघ्रम्, भरियइ भद्राणि 5 *a* विहु° चन्द्र 6 *a* अच्चासण° हीलना

हु सो विउलु हु महारउ | इय जं मण्णिवि जणवयसारउ।
भवणसिहरजाविर्य जे संविउ | जहिं जलजम्मरु मोरें चुंबिउ।
जउ चोरभउ विराहि ण रोरहु | सुसमिच्छु जउ दीसइ देसहु।
धम्मु अणिवउ ण इसु ण हासिउ | जउ पासंडिउ को वि कयंतासिउ।
धम्मु ण वणुइं ण सियवासासिउ | पसुवहु जहिं ण वेयं घोसिउ।
वेस ण कत्थइ वामियहत्थी | मज्जु ण सज्जं जारि कुमइत्ती।
जहिं ण महव्वय पंचाणुव्वय | दुण्णियकारिणि जउ जरउ पय।

घत्ता—सामण्णइं मयणइं माणुसइं जहिं एक्कु वि सुविसेसिउ।
सियपुप्फयंतु सो णाहिणिउ जो मरहेण णिहसिउ ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे उज्झाणयरीवण्णणं णाम
दुइओ परिच्छेओ समत्तो ॥ २ ॥
॥ संधि ॥ २ ॥

---

३ P विरेहु. ४ P जणसिय ५ MBP विसमए ६ M पसुवह वहु ण B पसुवह वहु ण; P पसु वहणेंण ७ MBP जारि तण K णाहिणिउ

7 b °विणारउ °विणउ 8 a जे जणहरे 9 b सुसमिच्छु सुख [illegible] 11 b णाहिं ण्णहिउ 12 a वेस वेसा [illegible] 13 b दुण्णिय णारि णि दुच्चरियकारिणी [illegible] 14 [illegible] 15 सियपुप्फयंतु [illegible]; मरहेण भरतेनेव [illegible]

III

तहिं जाम मणोज्जु भुंजइ रेज्जु णिच्चलु णाहिणरिंदु ॥
मंडियसविमाणु कालपमाणु चिंतइ ताम सुरिंदु ॥ ध्रुवक ॥

1

पेहहि महिणाहें माणियहे उयरइ मरुएविहि राणियहे ।
छम्मासहिं होसइ परमजिणु णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु ।
सम्मत्तसमत्तणु सभरमि गब्भासयसोहणु लहु करमि ।
लइ पउ जि कज्जु महुं तणउं दक्खालमि पेसणु घणघणउं ।
इयें चिंतिवि पुणु हियवइ धरिय छणससिमुहि पीणपयोहरिय ।
सिरि हिरि दिहि देवी ललियकर वर कंति कित्ति लच्छी य वर ।
छ वि एयउ चारु चवंतियउ पणएण णएण णवंतियउ ।
इंदीवरदीहरणेत्तियउ सुरणाहणिहेलणु पत्तियउ ।
वेल्लहललयाणिहगत्तियउ देविंदें झत्ति पउत्तियउ ।

घत्ता—जाइवि णरलोउ भुजियभोउ णाहिणरेसंहु गेहु ॥
जिणगब्भणिवासु दुक्कियणासु सोहहु देविहि देहु ॥ १ ॥

GK give at the commencement of this samdhi आदित्योदयपर्वतादुरुतरात् for which see footnote on Second Samdhi, MBP give the following stanza —

बालिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।
सम्प्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥

1 १ MBP भोज्जु २ MP एयहि, B एवहि ३ MBP छहिं मासहिं ४ MBP इय चिंतेविणु हियवइ ५ P णमतियउ ६ M °लयाणियवत्तियउ, BP °लयाणिय° ७ MBP °णरेसरगेहु

1 1 मणोज्जु मनोज्ञम्, णिच्चलु निश्चलम् 2 मडियसविमाणु मण्डितस्वविमान इन्द्रश्चिन्तयति, कालपमाणु तृतीयकालस्यान्त कियान् वर्तते 4 *b* णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु सर्वार्थसिद्धेरप्यागत्य गर्भेऽवतरिष्यति तेन ज्ञायते भुक्तिं विना कर्म न नश्यति 5 *a* सम्मत्तसमत्तणु सम्यक्त्वस्य समग्रत्वम्, सभरमि सस्मरामि, दर्शयामीत्यर्थ, *b* °सोहणु °शोधनम् 6 *b* घणघणउ सातिशयम् 8 *a* ललियकर कोमलहस्ता *b* वर परा उत्कृष्टा 9 *a* छ वि एयउ एता श्र्यादिषड्देवता 10 *a* इदीवरेत्यादि-नीलोत्पलदीर्घनेत्रा, *b* सुरणाहणिहेलणु इन्द्रमन्दिर, इन्द्रालयम् 11 *a* वेल्लहललयाणिहगत्तियउ कोमललतानिभगात्रा, *b* पउत्तियउ प्रयुक्ता

हउ सो विबुह हउ महारउ इय जं भणिवि पयणपियारउ ।
मयणमिहरचरियं जें तंपिउ जहिं मयणमहउ मोरें चुंपिउ ।
जइ वारउसु ³विरोहि ण पावहु सुमणमित्तु जइ दीसइ देवहु ।
पंभणु वणियड ण हसु ण हासिउ जइ पासंडिउ को वि कवाडिउ ।
धम्मु ण धम्मुई ण मिपेयरमासिउ पसुवइ वाहिं ण वेयं घोसिउ ।
वेस ण करपइ कामियपुत्ती भजण सयं पारि कुमरत्ती ।
जहिं ण महव्वय पंचाणुव्वय कुच्छियकारिणि जइ कारय पय ।

घत्ता—सामण्णई भयवई माणुसई जहिं एक्कु वि सुविसेसिउ ॥
सिरिपुप्फयंतु सो णीहियिउ जो मयरेण विहूसिउ ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे कव्वालंकारवण्णणं णाम
दुइओ परिच्छेओ समत्तो ॥ २ ॥
॥ संधि ॥ २ ॥

---

३ P मिरोधु. ४ P बसाणिउ ५ MBP मिवक्ख° ६ M पसुवइ वाहु ण; B पसुवइ वाहु ण; P पसु वाहवाइ ७ MBP वारि वस्स K वारिणिपु

7 b °मि चार एव °मिवस्स 6 बे जाणले 9 b मूल मि णु मूल कायकम्मे और चाहे देव गुरु देवइ वेता- वचाणि ण पुरुले 11 b वाहिं व्याघ्रेण 12 वेच वेत्ता ण दणि ण पुत्री वेत्ताणा पुत्रिकायम्; b मजण भार्या. 13 b कुच्छिय कारिणि कुत्सितकारिणी का दव णव विवाहिनी अस्ति. 14 सामण्णई सामान्यानि पुरुषाणि. 15 सिरिपुप्फयंतु सुकुमारपुष्पदन्तः ; मयरेण मदनेन मकरध्वजेन सदलंकृतः.

III

तहिं जाम मणोज्जु भुंजइ रज्जु णिच्चलु णाहिणरिंदु ॥
मंडियसविमाणु कालपमाणु चिंतइ ताम सुरिंदु ॥ ध्रुवकं ॥

1

एहहि महिणाहहँ माणियहे उयरइ मरुएविहि राणियहे ।
छम्मासहिं होसइ परमजिणु णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु ।
सम्मत्तसमत्तणु संभरमि गब्भासयसोहणु लहु करमि ।
लइ एउ जि कज्जु महुं तणउं दक्खालमि पेसणु घणघणउं ।
इयें चिंतिवि पुणु हियवइ धरिय छणससिमुहि पीणपयोहरिय ।
सिरि हिरि दिहि देवी ललियकर वर कंति कित्ति लच्छी य वर ।
छ वि एयउ चारु चवतियउ पणएण णएण णवंतियउ ।
इंदीवरदीहरणेत्तियउ सुरणाहणिहेलणु पत्तियउ ।
वेल्लहलल्याणिहगत्तियउ देविंदें झत्ति पउत्तियउ ।

घत्ता—जाइवि णरलोउ भुंजियभोउ णाहिणरेसहु गेहु ॥
जिणगब्भणिवासु दुक्कियणासु सोहहु देविहि देहु ॥ १ ॥

GK give at the commencement of this samdhi आदित्योदयपर्वतादुत्तरात् for which see footnote on Second Samdhi, MBP give the following stanza —

वालिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।
सम्प्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥

1 १ MBP भोज्जु २ MP एयहि, B एवहि ३ MBP छहिं मासहिं ४ MBP इय चिंतेविणु हियवइ ५ P णमतियउ ६ M °लयाणियमत्तियउ, BP °लयाणिय° ७ MBP °णरेसरगेहु

1 1 मणोज्जु मनोज्ञम, णिच्चलु निश्चलम् 2 मडियसविमाणु मण्डितस्वविमान इन्द्रश्चिन्तयति, कालपमाणु तृतीयकालस्यान्त कियान् वर्तते 4 *b* णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु सर्वार्थसिद्धेरप्यागत्य गर्भेऽवतरिष्यति तेन ज्ञायते भुक्ति विना कर्म न नश्यति 5 *a* सम्मत्तसमत्तणु सम्यक्त्वस्य समग्रत्वम्, संभरमि संस्मरामि, दर्शयामीत्यर्थ, *b* °सोहणु °शोधनम् 6 *b* घणघणउ सातिशयम् 8 *a* ललियकर कोमलहस्ता *b* वर परा उत्कृष्टा 9 *a* छ वि एयउ एता श्र्यादिषड्देवता 10 *a* इदीवरेत्यादि-नीलोत्पलदीर्घनेत्रा, *b* सुरणाहणिहेलणु इन्द्रमन्दिर, इन्द्रालयम् 11 *a* वेल्लहलल्याणिहगत्तियउ कोमललतानिभगात्रा, *b* पउत्तियउ प्रयुक्ता

2

ता संचल्लिय सुरयमणियउ मेहउरंकोहिरंरमणियउ ।
कयसमासयपसिम्ममणियउ मयमंपयसिसुरगमणियउ ।
वेल्लोकमारमपयमणियउ विरेयाहुं मि एयमपयमणियउ ।
कुंडलैयेपपयकोह्मियउ वं मयवे पोमकोह्मियउ ।
कंतिय वोपंति प के सियउ मणिसंणिहमेगुरकासियउ ।
तणुतेयकोएपयरउ पोक्खविचित्तविरवरउ ।
जपसत्तमणिविहिरसमियउ मिच्छमेमपोरमिरसमियउ ।
थिय सुयपहाणपारिरयउ वं ममरिय पाणपारिरयउ ।

घत्ता—पयउ कम्माउ सुरकम्माउ वरिथि मिळमिमिवेसु ।
मणीउ परेण मत्तिभरेण सिरिमरुपपिहि पासु ॥ २ ॥

3

पउमेसरि सुरवरलोयपहुया कोमलभुयाकंपेहयमुया ।
हीसइ सुरयारिहिं भलसुया वं सिहिविम्मोलसमहिसुया ।
सव्वंपावयवसुसकणिया फणिसुरखरजणमुसमुपमिया ।
वेयारपवंविपपायहुया मारुलिग्गहिं मोत्तसयहिं सुया ।

2. १ T reads "रयोवल" but adds. रयोविरिति पाठे मेहकमा रयोलवालिका विमलवालिका एक-चौका ২ MBP मिरयाहि but gloss मिरतमा मलोभाम्. ३ B कोडलवैयरय° M "विमयय" ४ B पाल-कमु मियउ; P पाकमोसियउ and gloss पालकरेखा ५ K मिच्छमय°; P मिच्छमय° but gloss मिच्छाम्य° ६ MBP मारयउ

3. १ MBP "भुय २ M सिहिमलाम°

2. 1 b मेहवेम्माणि–मेहकमा रयोलवालिका विमलवालिका रयणोमा 2 कयेति-इय रयपकमाणि मैवर्त वामि b मयमपर° मतेन मन्तरो मन्त ; "सिसुर" इति 3 वेल्लोकेत्यादि वेल्लोक्यस्य सारवया भवती-त्यर्थः ऐवों इत्यमिया b मिरयामु मतीभामु एवमपदमसियउ रवो हुरथे मम रयमन त्पुर्याणीति एवमर्थेन वणित यमाम् 4 a "पेयरय" मृगिनी; b मयवे पालकओमियउ वर्धित इमा पालकरम एव.5 a वो में हि च वे यमलित म वे, यदि तु वंवै ममुष्या देवा वा यमलित, सियउ सित 6 a जयरय मात्यरस्य, b "य र य रय देवानपयम् 7 a जमेत्यादि–इया देवसमवा उत्तमत्वे च देवों मिपि एकमाया विहवा वाला द्य ; b मिच्छे-त्यादि–मिच्यामत्तस्य हेना देवों मिरयविमा 8 a पालकारि° इन्द्रस्यवी देवा ; b रापवारि रयउ मयमरिमि एवा अथवा मरुस्ये रयो देवो वाशी वा 9 मिळमिमि° मनुष्यवी (पुत्रायिनी).

3. 1 a "भुय "भुजा b "सिहल" कोमल° 2 a भयभुया कोमपणिमस्य पुयी b सिहिविम्मोल बहसिहुपा विविधिमयमसमाहिभूता करममरस्यान, 3 b मयहुवसुरणिया मलोमारिस, 4 वेयारव° देवा..

अम्मो जय जय जगगुरुजणणि जय घणथणयलविलुलियहारमणि।
जय धम्मझाणसंताणजणणि जय धम्मविडवनवसरणि।
पइ दिट्ठइ णिट्ठइ पावमलु सणिज्झइ मंचिंतिउ सयलु।
पइ लद्धउ महिलाजम्मफलु सुउ पुच्छिहि होसइ जिणधवलु।

घत्ता—णिरु भग्गु णट्ठु पयहिं पडहु विरइयपंजलिहत्थु॥
सेवंतिय पइ इच्छइ सेय अमरविलासिणिसत्थु॥ ३॥

४

क वि अलयतिलय भंगिए करइ क वि आइंसणु अग्गइ धरइ।
क वि अप्पइ धवलपसाहणु क वि लिंपइ कुंकुमेण चरणु।
क वि णच्चइ गायइ महुरसरु क वि पारंभइ विणोउ अवरु।
क वि परिरक्खइ णिसियासिकरी क वि थाहि परिट्ठिय दंडधरी।
अण्णाणउ का वि किं पि कहइ विण्णाउ फणिंदहु का वि महइ।
क वि थाइवार विणए णवइ क वि सुरहिसलिलेहिं ण्हवइ।
क वि मालउ चेलिउं उज्जलउ ढोयइ मयलहणु सुपरिमलउ।
छम्मासु ताम मज्जणिगिहिं पयडत्तु समीहिय सोक्खणिहिं।
णियमरगणेति णिहिणिहियधणु वुट्ठउ रयणहिं वइसवणु घणु।

घत्ता—हंसि व सरपोमि रम्मि सुहम्मि उरविलुलियहारावलि॥
सोवंति समग्गि सयणयलग्गि सइं पेच्छइ सिविणावलि॥ ४॥

३ P णट्ठइ ४ MBP णिरइयअंजलि° ५ MBP महाइउ ६ MBP पट्ठियएण

4 १ P कणयथु २ P चेलउ ३ M ढोइय ४ MBP समलहणु ५ MBP °धणगंति ६ MB वइसवणघणु ७ M हंसियसरपोमि, BP हंसि व सरपोमि ८ MB पेच्छिवि ९ MBP सुहंगावलि.

6 a अम्मो हे मातः 6 a °अरणि अग्न्युत्पादककाष्ठम्, धर्मध्यानसमर्थारदेवोत्पादकत्वात् b °विडव° पादप. 7 a णिट्ठइ नश्यति 8 b जिणधवलु जिनवृषभ 10 सेय सेवाम्, °सत्थु सार्थं समूहं

4 1 a अलयतिलय अलिके ललाटे तिलकम्, b आइंसणु दर्पणं 3 b विणोउ विनोदम् 4 b थाहि द्वारे. 5 a अण्णाणउ अपानकम्, b फणिंदहु फणीन्द्रस्य 7 a मालउ पुष्पमाला, चेलिउ वस्त्रशाटी, b मयलहणु विलेपनम् 9 a णियमगणति प्राङ्गणमध्ये, णिहिणिहियधणु निधिषु निहितं स्थापितं धनं येन, b रयणिहिं रत्नैः, वइसमणु घणु धनद इव मेघः 10 सरपोमि सरोवरपद्मे, सुहम्मि सौधगृहप्रासादे, 11 समग्गि सम्यं अग्रं उपरितनभागो यस्य, सयणयलग्गि शयनतले अग्रे प्रधाने

5

पत्तिया गब्भाइअहरत्तिया ।
सुत्तिया णिम्मीमियपयडियत्तिया ।
कामए णिसाणिरामजामए ।
इच्छए सुहावई णियच्छए ।
केतयं चउप्पयारकेतयं ।
णिम्मरं हरंतराणणिज्झरं ।
मंसयं सरासणाइफंसयं ।
गुंमयं णिरंतरंबवणिग्गयं ।
वारयं गिरिंदभित्तितारयं ।
पंतयं वणम्मि हेडरंतयं ।
मायरं धम्मवसुगहणायरं ।
कुयरं कुरंगणाहपंजरं ।
मासुरं पुमंतकंपकेसरं ।
कोयणं जलंतपिंगलोयणं ।
मीसणं मुहा विमुक्कभीसणं ।
सीहयं णिबंधमाणसीहयं ।
अंचियं दिसागयाइं संचियं ।
मच्छियं विसुद्धपंकमच्छियं ।
दंसयं पहुत्तणामदंसयं ।
संमुहं मणुणायं सुहावहं ।
माहयं सुहम्मई णमीहयं ।

5 १ PGT record p कमल्ल and add कमल एवि गले [illegible] २ M [illegible] ३ MB °कोमलं, ४ MBP गुरोसिय° ५ M °सिवयं ६ MPT °पुरसं

5 1 पत्तिया पत्नी; [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 5 [illegible] 7 [illegible] 11 [illegible] 15 [illegible] 17 [illegible] 18 [illegible] 19 [illegible] 21 [illegible]

हसय खमाणसेक्कहंसयं ।
रत्तय सरतरे तरंतयं ।
रम्मय चलं झसाण जुम्मय ।
उब्भडं थियभ[7]कुमसंघडं ।
मायरं प[8]हुल्लपंकयायरं ।
सायरं र[9]सतवारिभीयरं ।
आसण म[10]यारिरूवभू[11]सणं ।
सुंदर पुरंदरस्स मंदिर ।
सोहण महाहिणो णिहेलण ।
उ[12]च्चय अणेयर[13]ण्णसंचय ।
दित्तय हुयासणं पलित्तय ।

घत्ता—इय जोइवि मुद्ध पुणु पडिवुद्ध सिविणइ जं जिह दिट्ठु ॥
उइयइ पच्चूहे अरुणमऊहे रायहु त ति[14]हिँ सिट्ठु ॥ ५ ॥

६

ता णरवइ णारीसारियहे अक्खइ मरुपविभडारियहे ।
दिट्ठेण गइंदें गुरुहु गुरु होसइ णंदणु पयपणयसुरु ।
गोणाहें गोमंडलु धरइ सीहेण सविक्कमु वित्थरइ ।
सिरिदंसणि लहइ तिलोयसिरि दामेण वि जाणहि पुरिसहरि ।
पावइ पविहररइयण्हणउं जं दिट्ठउ पइ मयलंछणउ ।

७ BT वियम and gloss in T वियभोऽमृतजलम् ८ P पफुल्ल° ९ MBP सरन° १० M सयारि° ११ MBP °भीसण १२ MBP उब्भय १३ B °रयण° १४ B तिहे

22 *a* हसय आदित्यम्, *b* खमाणसेक्कहसय गगनमेव मानसरोवर तस्य हंसम् 23 *a* रत्तय अन्योन्यक्रीडारतम् 24 *b* जुम्मय युग्मम् 25 *a* उब्भडं प्रकटम्, *b* थियभ° भृतजलकुम्भयुग्मम् 26 *a* मायर लक्ष्मीकरम् 27 *b* रसतवारिभीयर शब्दायमानजलभयानकम् 28 *b* मयारि° सिंह 29 *b* पुरंदरस्स मंदिरं विमानम् 30 *b* महाहिणो नागेन्द्रस्य, णिहेलणं गृहम् 31 *b* रण्ण° रत्न° 32 *b* पलित्तय प्रदीप्तम् 34 पच्चूहे आदित्ये, अरुणमऊहे आरक्तकिरणे

6. 1 *a* णारीसारियहे स्त्रीमध्ये उत्तमाया 3 *a* गोणाहें वृषभेण, गोमंडलु भूमण्डलम् 4 *b* पुरिसहरि पुरुषसिंह.. 5 *a* पविहर° इन्द्र

तं होसइ सुउ कम्मणिहणु जं पुणु वि पेक्खोसइ णरकिरणु।
तं मोहंधारविणासयरु मम्मयणवाहिवणणिवसयरु।
हसवुयणें दोसी सोमवाणिहि कुंभेहिं वि सुरसरिहिसेयणिहि।
कमलायरसरोवरेहिं विहिं मि गुणवंतु णहिव सुवणहं तिहिं मि।
सिंहासणेण पंचमियं णाइ पावेसइ पंचमणुवरगइ।
सिहिणिहिं तियसयणाणइं घरेहिं सेवेसइ देवेहिं विसहरेहिं।
रयणोहें सिवसंपयतिथएण मिंतुइय हुयासें कम्ममलु।

घत्ता—सिविणयफलु अम्हु विहं विरयहु कहमि भ रयणमि सुम्हु।
जगसयणपयंवु धम्मायरिसु होसइ णंदणु तुम्हु॥ ६॥

7

ता तम्मि पत्तम्मि तइयम्मि कालम्मि णवणत्तसोहंतमपण्णतरावम्मि।
कप्पदुमच्छेयपणाविवरिविहारम्मि ससिरविणवरविलिवमत्पभयपारम्मि।
णवउण्णिवसिप्पियसियपएसम्मि णरमोयवम्मारसुमरियमासम्मि।
मायामहामोहबंधयहं हणेवि सासाई पवराई पुण्णाई संचेवि।
सोसहम वि तणमायणायो पहावेवि जगणमियतित्ययरणामं समज्जेवि।
दंसिणाई सिरियाई जिणियाई मंजेवि वेत्तीसअक्खियदिसमाणाउ मुंजेवि।
आसंतराणायसुविसयपहावेण हिमहारगोहारसियणवसहरवण।
आसाढमासम्मि किण्हम्मि बीयाम्मि संपत्तए उत्तरासाढरिक्खम्मि।
सव्वत्थसिद्धीविमाणाउ मोसरउ परमेसरो जयणिणाम्मम्मि संभवउ।

6. १ M पुणोरु; P नोमरु २ MB सेणाउ

7 १ B हवण°

6 b णरकिरणु पूर्ण 8 a हसउवयणेन मत्स्ययुग्मेन; b सुरसरिहिसेय° देवाभिषेक° 10 a पंचमियं णइ मुक्तिः 11 a °णाणइं °गामकान् 14 a पयकलु यत° अवतारः°

7 2 a कप्पदुमच्छेयवय विवरिविहारम्मि कल्पवृक्षविच्छेदेन कलितविहारे, b ससि रविणवरविलि भयपारम्मि चन्द्रार्क-मण्डले. 3 a णवउण्णिवसिप्पियसिं° नवनवनीतवर्णाभिः पुष्पाभिः b °मासम्मि भोगभूमौ 5 a सोसहम वि सर्वं सिद्धान्तं भोगम् भावना पहावेवि प्रभाव्य 6 b °दसमाणाउ °समान आयुः 7 b हिम° भाजनानी भोग्यो वा; °सियणवसह° सम्पूर्णाः. 8 किण्हम्मि बीयाम्मि कृष्णद्वितीयायाम् 9 b संभवउ संभवो प्रवेश करोति.

सरयब्भमज्झम्मि रुइरुदइंदु व्व सयवत्तिणीपत्तए तोयबिंदु व्व ।
आया सुरा गब्भवासं णमंसेवि सग्गं गया रायदेविं पसंसेवि ।
तव्वासराए घ देवाहिवाणाइ रक्खिदणाइंदपालिज्जमाणाइ ।
जक्खेण माणिक्कवुट्टी कया ताम मासेहिं तिहिं हीणु संवच्छरो जाम ।

घत्ता—उयरत्थु अबाहु वड्ढइ णाहु तणुकिरणइ पसरंति ॥
मरुदेविहि देहे ण णवमेहे णवरवियर णिग्गंति ॥ ७ ॥

8

मासम्मि चइत्ते पक्खे कसणे अहिमयरवारि फुडणवमिदिणे ।
उत्तरआसाढारिक्खवरे जोयम्मि बंभि वहुसोक्खयरे ।
जिणु तियसालावणीहिं झुणिउ मरुदेविइ णंदणु सजाणिउ ।
उत्तत्तदित्ततवणीयछवि सुरवइदिसाइ णं बालरवि ।
णं विप्फुरंतु अरणीइ सिहि ण दिक्खालिउ धरणीइ णिहि ।
ण जीवसहाउ सिद्धसहए णं अत्थु महाकइकयकहए ।
णं अमयलवेहिं जि णिम्मविउ णं गुणगणु पुंजेप्पिणु ठविउ ।
जगु णरयपडंतउ णवि सहिउ णं धम्में पुरिसरूवु गहिउ ।

घत्ता—जणतमणिण्णासु लोयपयासु कित्तिवेल्लिवरकंदु ॥
मयमलपब्भट्ठु कुवलयइट्ठु उइउ जिणाहिवचंदु ॥ ८ ॥

२ M °रुदयदु व्व, T °इदु व्व ३ MBP रायदेवी ४ MBP जक्खिद°, but T रक्खिद° राक्षसेन्द्रा

8 १ B चइत्तहो, P चइति २ MBP फुडु ३ MBP बंभि ४ M मरुदेविं, B मरुदेवे, P मरुदेवी°. ५ P दिक्खालउ and gloss दर्शित ६ MP णरइ पडंतउ ७ MB णव

---

10 *a* रुइरुदइंदु व्व महादीप्यमानचन्द्र इव. 12 *a* तव्वासराए तद्दिनादारभ्य, देवाहिवाणाइ इन्द्रस्याज्ञया 14 अबाहु बाधारहित 12 णवरवियर बालार्करश्मय

8 1 *b* अहिमयरवारि रविदिने 3 *a* तियसालावणीहिं त्रिदशवीणाभि, झुणिउ गायित 4 *a* तवणीयछवि सुवर्णकान्ति, *b* सुरवइदिसाइ पूर्वदिशा इव 6 *a* सिद्धसहए सिद्धसभया श्रेण्या, यथा सिद्धध्यानेनात्मा दृश्यते 10 मयमल° मदाश्च मलाश्च, अन्यत्र मृग एव मल., कुवलय° पृथ्वीमण्डल कुमुदसंघातश्च

9

आयस्थियउ थियउ विदेहें | जयजणवंजणचावियगत्ते ।
उप्पण्णे णाहे हयरण्णो | आगो इंदस्सासणकंपो ।
कप्पेसुं सत्तहावें णाणा | घंटारवणाय संजाया ।
जोइस भिन्नासियसवियासा | जोइसवासे सीहविनादा ।
वेंतरभेवाणासयेपसुं | गज्जंते पडहा विविरसुं ।
संजणिओ माणणमयणेसुं | संपण्णो घोसो सुवणेसुं ।
णाउं णाणेणं जिणणाहं | भूमीमाए हूयं देवं ।
सुद्धो चित्ते धम्माणंदा | चलिओ संखो सक्को चंदो ।
हत्थिपदे एरावणणामो | वेउव्वियणवपीरपरिणामो ।
मणिमयकणेगमणमोहणसद्दो | रणझणंतघेडावलिसद्दो ।
कण्णरिणणमामणुरियंगो | कण्णचमरपविपिधारियपिसिचो ।
पत्तो भत्तो मंदरमेत्तो | बीसायंता बहुविहरयंतो ।
दंतिपसाहियपवरमिसाई | इति ईति सरसयवत्ताई ।
पत्ते पत्ते सुररमणीओ | णच्चंतीओ णरमणीओ ।
एय वहून तमिहमरकयं | णच्चिओ सोहम्मीसो सिग्घं ।
सव्वत्थ वि णयणाणवण्णं | सव्वत्थ वि चामरसंछण्णं ।
सव्वत्थ वि णयणाणाणावण्णं | सव्वत्थ वि वाईतविमाणं ।
सव्वत्थ वि पसारियजहोणं | सव्वत्थ वि चमरुंदुरियणं ।
सव्वत्थ वि सरमेयरसाउं | सव्वत्थ वि पक्षारयमाणं ।
तरयत्तविरयं पिय णहयमयं | सोहइ सुरवरपाणाजवणं ।

9 १ MBP मिढवें २ P °णहु ३ MBP मिरोसु but gloss in P मिरोसु मिरेसु कप्पेसु T कोइसु वसेसु ४ MB वद्धो सुद्धो. ५ P °णरमण° ६ MB पत्ते. ७ MBP सुरवरपाणाजवणं.

9 [illegible] 1 b [illegible] 6 a [illegible] 6 a [illegible] b [illegible] T a [illegible] 8 b [illegible] 10 a [illegible] 11 a [illegible] 18 a [illegible] b [illegible] 15 a [illegible] ([illegible]). [illegible] 18 a [illegible] 20 b [illegible]

घत्ता—णवतणुरोमंचु दावइ उंर्चु जिणभवि हरिसु वहंति ॥
तरु चलदलपाणि णडइ व खोणि भावें घहुरसवंति ॥ ९ ॥

10

महिसेहिं मेसेहिं आसेहिं भासेहिं ।
हंसेहिं मोरेहिं कुंरेहिं कीरेहिं ।
सरहेहिं करहेहिं दुंरएहिं वसहेहिं ।
दीवीतरच्छेहिं रिंछेहिं मच्छेहिं ।
सारंगसीहेहिं तरुगिरिहिं मेहेहिं ।
सिहि जम महाभीस णेरिय समुद्देस ।
मारुंय कुवेरक ईसाण णीसक ।
मज्झम्मि खामाहिं मुद्धाहि सामाहिं ।
छणयंदवैयणाहिं णवणलिणर्णयणाहिं ।
थणघुलियहाराहिं पसरियवियाराहिं ।
धयरट्ठगौमिणिहिं सोहंतकामिणिहिं ।
गयणोवडंतीहिं सरसं णडंतीहिं ।
वज्जंतवज्जेहिं कीलंतखुज्जेहिं ।
वाहूरविल्लेहिं दुक्कंतमल्लेहिं ।
वहुविहविलासेहिं मंगलणिघोसेहिं ।
संचल्लिया पव्व णाणाविहा देव ।

घत्ता—पावेवि अउज्झ र्परमदुगेज्झ परियचेवि तिवार ॥
फणि दिर्णयर चंदु भणइ सुरिंदु जय णाहेय कुमार ॥ १० ॥

---

८ MBP उच्चु ९ MBP तरु वरदलपाणि

10 १ BP कुररेहि २ MB दुरहेहि ३ MB रिच्छेहि ४ B मारुव ५ MBP °वयणेहि ६ MBP °णयणेहि ७ MBP गामणिहि ८ MBP परदुग्गेज्झ ९ MP °दिणयरु

---

10 1 *b* भासेहिं उलूकै. 3 *b* दुरएहिं द्विरदैर्गजै 6 *b* समुद्देस वरुण 7 *b* णीसक इन्द्र 8 *a* खामाहिं तुच्छोदरीभि 11 *a* धयरट्ठ° हंस, 12 *a* गयणोवडंतीहिं गगनादवतरन्तीभिः. 14 *a* वाहूरविल्लेहिं करास्फोटनशब्दै 17 परियचेवि प्रदक्षिणीकृत्य

11

गयणंगणकमारिमणिहरसिहरु पणवेप्पिणु णाहिणरिंदपवरु।
जंपिवि पियवयणइं जिणवरेँ मायहि मायासिसु देवि करेँ।
जमयासजगजसंमाणियए कड्ढिउ दविउ इंदाणियए।
सहसक्खेँ दिट्ठु परमपरु कमेकमलसरं वं णवदिवसयरु।
पक्खइ भव्वायतमोहहरु वं अंकुरिउ पिउ धम्मतरु।
वं वयड सिवसुहकयपरसु वं पुरिसरूवि संठियउ जसु।
वं सयलकलासयल चम्ममिउ वं पयडहिं कणयप्पुंजु थिउ।
दविउ दिसंतु जिणपडिमरु मोहम्मिनेण पडिच्छियउ।
बरवेसारपवरंगहिं भविउ पणवेप्पिणु मेरुमाइ कविउ।
का व मज्ज पुप्फपरिप्फुरिउ ईसाणें धवलछत्तु धरिउ।
चमरइ विधुंति चमराहिवइ साणकुमारमाहिंदवइ।

घत्ता—जगु जित्तउ जेहिं जिणिमिउ तेहिं जणुणहिं देवहु देहु ॥
तं सुरउ णियंतु दससयणेत्तु णिमिहउं पुरंदरणेहु ॥ ११ ॥

12

पुणु पमणइ मई इयकम्ममलु बाहुलेयणणु कायव सहलु।
णाहउं तिहुयणपरमेसरहो जं दिट्ठउं मुहु जिणेसरहो।
इय भासिवि पुणु पुणु जोइयउ ईसें भाराणउ जोइयउ।
परमेट्ठि णमंसिवि ममिपणवे सच्छरु सामरु संचलिउ णहे।
मेघमयई सप्पउयइं जोयणइं मरि सुरवि वाणु तारयणइं।

---

11. १ M °णरिंदु णर २ MB जोयरो. ३ BP वण्णु कयाणए ४ MB णिंमु ५ MBP भविय ६ MB पुप्फपरिप्फुरिउ ७ MBP णिमिउ

12. १ T p मयमयइं and explains it as मयमयइं इति पाठेऽप्यस्यैवार्थ

---

11 1 a गयणंगणतल° नभस्तल°; णिम्मि° निर्मितम्. 2 a जिणवरें भगवता; b देवि दत्त्वा. 3 a जमयासजग° देवा; b कड्ढिउ आकृष्टः. 4 a कमलसरं कमलेष. 5 a पक्खइ दीसती. 8 a दिसंतु दीयमान; b पडिच्छियउ गृहीतः 9 b मेरुमाइ नत्वाते. 10 a पुप्फपरिप्फुरिउ पुष्पप्रकाशम् 11 विधुंति क्षिपन्ति 1° जित्तउ जितम्; जणुणहिं जननानि 18 सुरउ सुरेन्द्र.

12. 1 b बाहुलेयणणु बहुलोचनम्. 4 a ममिपणवे नमस्कारे आकाशे; b सच्छरु साप्सराः सामरु सामराः; मेघमयइं मेघमयानि; सप्पउयइं जलानिगमितानि.

तेत्थाउ सुदूसहकरपसरु जोयणहिं पसाहियसरयसरु।
उप्परि दहहिं जि रवि परिभमइ पुणु असियहिं ससि सइं संकमइ।
चउहु जि रिक्खोहु णिरिक्खियउ पुणु तेत्तियहिं बुहु लक्खियउ।
तिहिं सुक्कु तिहिं जि सुरगुरु भणमि तिहिं अंगारउ तिहिं सणि गणमि।
सउ एम दहुत्तरु लंघियउ सुद्धायासु वि आसंघियउ।
सहसाइं णंपि अट्ठाणवइ अवरु वि जोयणसउ तियसवइ।
एत्तेण जि सोहइ दीहरिय जोयण पण्णास पवित्थरिय।
अट्ठेव समुण्णय हिमविमल अद्धिंदुसरिच्छी पंडुसिल।
जहिं तहिं पत्तेण पवित्ततणु जय जय पभणंते परमजिणु।
देवाहिवेण तेल्लोक्कहिउ तहि उप्परि सीहासणि णिहिउ।

घत्ता—पहु सहइ णिसण्णु कंचणवण्णु असहियतेयपसंगु॥
णं कुरुहकरेहिं वेल्लिहरेहिं मंदरु ढंकइ अंगु॥ १२॥

13

जिणणाहहु भावें मेरुगिरि णं हरिसें दावइ णिययसिरि।
णं पणमइ फलभरणमियतरु ण घेल्लइ चमरीमय चमरु।
णं कोइलकलरवेण चवइ णं फलिहसिलासणाइं ठवइ।
पक्खालंतु व पहुकमकमलु आणइ जवेण णिज्झरणजलु।
लिंपइ व सविणय पणयवसेण करिणिहसणचुयचंदणरसेण।
जोयइ व रुवु सु सियासियहिं अहिणवणलिणच्छिहिं वियसियहिं।
णच्चइ व पणच्चियणीलगलु गायइ व रुणुरुणियरुंणिय भसलु।

२ P सुदूसहु ३ B णिरेक्खियउ ४ M सहसइ गपिणु, BP सहसा गपिणु ५ M सवित्थरय, BP सवित्थरिय,
13 १ M पणवइ २ M घल्लय ३ M रुणुरुणिय° ४ MBP °रुणिय

6 *a* तेत्थाउ तस्मादागत, *b* °सरयसरु शरत्कालसरोवरम्, अथवा सरोजले जातानि सरजानि पद्मानि तैरुपलक्षितं सर 7 *b* सइं स्वयम् 8 *a* रिक्खोहु अश्विन्यादिसप्तविंशतिनक्षत्राणि 9 *a* तिहिं त्रिभि, सुक्कु शुक्र, सुरगुरु बृहस्पति, *b* अंगारउ अङ्गारक कुजो भौम, सणि शनैश्चर 10 *b* सुद्धायासु शुद्धमाकाशम्, आसंघियउ आश्रितम् 11 *a* सहसाइं सहस्राणि 13 *b* अद्धिंदुसरिच्छी अर्धचन्द्राकारा 15 *a* °हिउ हित 16 सहइ शोभते, 17 कुरुहकरेहिं वृक्षकरैः, वेल्लिहरेहिं वल्लीवारकैः, मंदरु ढकइ अंगु मेरुर्निजाङ्गं प्रच्छादयति.

13 1 *b* णिययसिरि निजश्रीः 2 *b* चमरीमय चमरीमृग 4 *b* जवेण वेगेन 5 *b* करिणिहसण° हस्तिनिघर्षण° 7 *a* °णीलगलु मयूर

थं कुसुममोयं मीसयइ थं रयणरयणपंतिहिं हसइ।

घत्ता—ऐंदिउ मणिवंति मंदरसिहरि कंपयवासविमीसु ॥
जिणु सासयसोक्खु णाणइ मोक्खु पिउ देवेंणाउ सीसु ॥ १३ ॥

14

ता इयरु मेरुसिहरपंडुरंगसंकप्पालायमोर्ग मज्जयारं।
सिम्मियेहिं पाणिपायकुंचियाइं वणियाइं चामेयाइं सुहयाइं ॥
भूपयवरकिंपरेहिं खेयरेहिं रक्खसेहिं णायणारुभीसणेहिं।
मायणहिं पूरियं णिरंतरं महंतरं मयंतमाणमाणिणिहिं ॥
णाणामंसणाभिणीहिं रंभचलणभिणीहिं गाइयाइं मंगलाइं।
रमणीयंतपूयणीयमहिमाणमेहिं ताइं णिम्मियाइं णिम्मलाइं।
णवणवयणियणारवीरयंदये कुरंतमाणिणहिं मंडिऊण।
कंपणणिकारयाइं कुम्मियाइं कंकियाइं छेड्डिऊण ॥
सरिऊण णायरेण सायरेण मासमासरे वरे पमोसिऊण।
मंगपूयकुसुमणीयणोमणंकुरुमसणसलीमायण णिवेसिऊण ॥
सयविहिणिकामेरिमण्णणाणिमे कुबेरसंडिओ समप्पिऊण।
मंगलजिणं णिहिं सुहयाइं समागमे समाहियं समासिऊण ॥
जीय देव णंद वड्ड सिद्ध बुद्ध सुहयसील सामिसाल भासिऊण।
घोरघोरेहिं घोसणेहिं कंपणेहिं णियणियणसंठुरीहिं माणिऊण ॥

14. GK mention at the beginning णिवाणंदो णाम दंडओ; MBP have णिवाणंदो णाम [illegible]. १ M °पुल्व° २ MB °णायहरणाइं ३ MB वणयाइं ४ P °[illegible]° but gloss पूर्णा ५ K [illegible] ६ M °[illegible]° ७ BP °पूयिओ ८ KT पूरणि

8 b रयणरयणपंतिहिं [illegible]

14. 1 [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 6 °[illegible]° पूर्णो °[illegible]° [illegible] 8 [illegible] 9 [illegible] 10 [illegible] 11 [illegible] 13 [illegible] 14 [illegible]

मंदरं छिवंतियाइ बद्धदेवपंतियाइ खीरसायरंतियाइ ।
वोममयं कमंतियाइ धंतियाइ थंतियाइ जंतियाइ पंतियाइ ॥
हारदोर[10]कंचिदामवभसुत्तकंकणा[11]लिकुंडलाहिं भूसिएहिं ।
आइबीयकप्पपुंगमेहि आसणासिएहिं सम्मयाहिलासिएहिं ॥
अट्ठजोयणोयरेहिं एक्ककठवित्थरेहि अब्भय णिसुंभएहिं ।
हुदहोपयच्छिएहिं पाणिणा पडिच्छिएहिं उग्गयवुथेंभ[12]मेएहिं ॥
चंदणेण चच्चिएहिं पुप्फदामवेढिएहिं ण घणेहिं सभएहिं ।
एक्कमेक्कढोइएहिं पोम[13]पत्तछाइएहिं सायकुंभकुंभएहि ॥
सिंचिओ पुणच्चिओ णमंसिओ पसंसिओ पसाहिओ महाइदेवो ।
कामकोहमोहलोहमाणडंभचप्प[14]फलत्तवज्जिओ हयावलेवो ॥

घत्ता—जो णाणविसुद्धु जिणु सइंबुद्धु सो ण्हाविउ लइ ण्हाइ ॥
झसवासहु तोउ भत्तउ लोउ सूरहु दीवउ देइ ॥ १४ ॥

15

णिम्मलहु जि ण्हाणु विराइयउ मंगलहु जि मंगलु गाइयउ ।
परमेट्ठिहि जाणियसवरहो किं अवरु दिण्णु णिरवरहो ।
किं भूसणु भूसणि सणिहिउ किं जगमंडणि[1] मंडणु लिहिउ ।
पविसूइइ ववगयभवरिणहो विंधेप्पिणु[2] सवणजुयलु जिणहो ।
विच्छूढइ मणिमयकुंडलइ ण ससहरदिणयरमंडलइं ।
चवलब्भपिसायहु णट्ठाइ णाहेयहु सरणु पइट्ठाइ ।
किं कोसिएण जगसेहरहो सिरि सेहरु वद्धउ मणहरहो ।

९ MB मदिर, K मदिर but corrects it to मदर १० P °डोर° ११ P ककणाहि° १२ MBP °विंभएहिं, but gloss in P उन्नतोच्छालितजलबिन्दुभि १३ P पोमवत्त° १४ P °चप्पलत्त°
15 १ P जगमडणु मडणि २ P विंधेविणु

16 वोमय कमतियाइ व्योम व्याप्नुवत्या, धंतियाइ धावन्त्या 18 आइबीयेत्यादि—आद्यद्वितीयकल्पपुंगवाभ्याम् 19 एक्ककठवित्थरेहिं मुखे एकयोजनविस्तीर्णै, अब्भय णिसुंभएहि मेघपटलविध्वंसकै 20 हुदहोपयच्छिएहिं 'गृहाण भो' इत्येव भणित्वा प्रदत्तै, °थेंभएहिं °बिन्दुभि 21 सभएहिं साम्भोभिर्जलयुक्तै. 22 सायकुंभ° सुवर्ण° 24 चप्फलत्त° बहुप्रलापित्वम् 26 झसवासहु समुद्रस्य
15 2 *a* जाणियसवरहो ज्ञातसर्वस्य 3 *a* भूसणि भूषणभूते, *b* जगमंडणि त्रैलोक्यमण्डनस्य, मंडणु तिलक. 4 *a* पविसूइइ वज्रसूचिकया 5 *a* विच्छूढइ परिधापिते 6 *a* अब्भपिसायहु अभ्रपिशाचो राहुस्तस्मात् 7 *a* कोसिएण कौशिकेन इन्द्रेण

मऊरेहामिसें वलियपयण   देहमुहेण परिघुलियपयण ।
हियउल्लउ हारें सेवियउ   अइसायं किं पि ण भावियउ ।

घत्ता—जो सालंकारु णिरलंकारु सुरवर तासु करंति ॥
मणु हियवइ मंति णउ कम्मेति वसु कार्इं ढंकति ॥१५॥

16

किं चुंदि ण पूर्ण सुरयणहो   मणिबंधु महग्घउ कंकणहो ।
कडिसुत्तउ कडियलि बद्धयउ   किंकिणिसद्द बहइ ण पुहइयउ ।
किं सीहविवंधु पइ सिरि   भइ अच्छइ तं मेरुगिरि ।
कमजुइ संणिहियउ मणमणइ   मंजीरजुयलु एउ जं भणइ ।
जं मग्गणीवम्मंतामरणु   संसारमहाजलणिहितरणु ।
णोमरुहरयंगुलियसकमणु   णहकिरणपसरपहतिमिरमणु ।
मई मउउ जिणवरपयजुयलु   महु आवेउ भूसणहु सयलु ।
जं कण्णयालि सिहिणाविय   तं तवहसु जं विहियाविय ।

घत्ता—सुरसायरतोउ णाहविओउ ण सहइ विरहच्छाउ ॥
मंदरगिरिगुज्झि महिहेमज्झि जं पहउ अप्पाणु ॥१६॥

17

तुराउ भत्तु णिबच्छिप्पउ   सीसेण सुरेहिं पडिच्छियउ ।
संतिदार जिणयसु पेरिकुहिय   कणयरंगपणियंजणि सुहिय ।

१ MBP वलियाउ ४ BP एयसि.
16 १ P सिर॰ २ M भूसणवु भावउ ३ P अहिरर॰
17 १ P सीसेहि २ MBP परिकुहिय ३ K ॰णियरंजुहिय

8 b देहमुहेन मयेनमुखेन. 9 b न कमपि कनकमयता मुक्तमणेन. 11 मति विलय.
16 1 b सर्वोत्पत्ति–स्तोत्र नरकात्सरकाँ स्तवं 3 a पदन्यपद पदम्, b पुनस्य ऐकावि- वह् 8 a एक एवा. 5 a ॰दान॰ खंडति 7 a नहइ सवम्. 8 a सिहिणाविय आलिङ्गित्वा 9 सुरसावर॰ क्षीरसमुद्र. 10 म समअप्पाणु आत्मानं स्थितवति
17 1 a जिनविवन निर्देशेनं आवर्तं वलितं च 2 a ॰परिकुहिय परिक्षिप्त b कणय॰ कनक॰; सुहिय सुस्थित

णिज्जइ देवेहिं करेंण करु गुरुसंगें को णउ होइ गुरु ।
पंकयकेसररयधूसरिउ कसीरयराएं पिंजरिउ ।
घणकुंजरकुंभत्थलखलिउ करडयलगलियमयपरिमिलिउ ।
संचलियसिलिम्मुहचित्तलिउ णाणामणिकिरणहिं सवलिउ ।
परिघोलइ सिहरिंदहु तणउ ण पचवण्णु उप्परियणउं ।
णहिं णहयरेहिं महियलि णरेहिं पायालि पडतउ विसहरेहिं ।
धावंतु थंतु वियलंतु चलु घदिउ सव्वण्हुहि ण्हाणजलु ।

घत्ता—इच्छियगुरुसेव चउविह देव हरिसें कहिं मि णमंति ॥
उट्ठंत पडंत पुरउ णडंत वारवार पणवंति ॥ १७ ॥

18

केण वि वाइत्तउ वाइयउ केण वि सुइमिट्ठउ गाइयउ ।
केण वि बहुसुक्किउ संचियउ केण वि भावालउ णच्चियउ ।
सवलहणउ केण वि ढोइयउ केण वि आहरणु णिवेइयउ ।
केण वि योत्तइं पारद्धाइं केण वि तोरणइं णिवद्धाइं ।
पडिहारु को वि हुउ दंडधरु कु वि पासि परिट्ठिउ खग्गकरु ।
पढु पढइ को वि अणुराइयउ केण वि मालउ उच्चाइयउ ।
कासु वि आलावणि णिद्धतणु जहिं छिप्पइ तहिं तहिं करइ मणु ।
सरलंगुलिताडिय रणझणइ णिज्जीव वि जिणवरगुण थुणइ ।
तहिं अवसरि कयणाणावयणु थुइ गुरुहि करइ दससयणयणु ।
आयासु जि आयासहु सरिसु उवमाणु ण तुज्झु को वि पुरिसु

४ P करेंहिं ५ PT कासीरय° ६ MBP °सिलीमुह° ७ MBP कहव ८ MBP पणमंति
18 १ B णाणावयणु तणु

4 *b* कसीरय° काश्मीरज कुङ्कुमम् 5 *b* करडयल° गजकपोल° 6 *a* °सिलिम्मुह° भ्रमरा ; चित्तलिउ कर्बुरितम् 7 *a* सिहरिंदहु मेरो 9 *a* थंतु तिष्ठत्, *b* सव्वण्हुहि आदिजिनस्य 10 चउविहदेव भुवनवासिव्यन्तरज्योतिष्ककल्पवासिनो देवा

18 1 *a* वाइत्तउ वादित्रम्, *b* सुइमिट्ठउ कर्णामृतम् 2 *b* भावालउ भावयुक्तम् 3 *a* सवलहणउ विलेपनम्, *b* णिवेइयउ दत्तम् 6 *a* अणुराइयउ धर्मानुरागयुक्त 7 *a* आलावणि तन्त्रीवाद्यविशेष, 8 *a* कयणाणावयणु कृतानेकवक्त्र , *b* दससयणयणु सहस्रलोचन इन्द्र. 10 *a* आयासु आकाशम्

जइ पई जि समासउं पइ भणमि ता परमसर किं पई थुणमि ।

घत्ता—जो कहइ कपण कर कम्मेण जिणवर गुरु गुणरासि ॥
सो णिउं महुएण करधुणुएण मूढु मयइ वयरासि ॥ १८ ॥

19

गुरु पोरापिवस्स चिरं वंव वेमि महमीम पिडुवयेपेयं वंदेमि ।
मयमोहलोमेहिं संगतिपमगेहिं परमारिहिंसामुसाणंदिपंगेहिं ।
पहुमसमभंजुभावापिवुमहिं कुव्वाताविम्मावंगावावस्वीहिं ।
मयभुमिरप्पमीहिं मिच्छमिरुणहिं कइ दीसमि तं महामोहमूढेहिं ।
भसिमवपुम्मंतपाउ परंताम मरपसिम्म पनि माहीने परंताप ।
समपासविप्पीरिवावं सपाहीम जिप का करपकंवपं देर वेदीम ।
इणं मो वोपेजम्मवामे पिहिंतून परमं पपं मार वसे तं पमापूप ।
जय कामकामभिआसमपमीकंत जय ईरपाणंसकपमीकमापंप ।
जय मोरसंसारकसारमित्पार जय दम्मपमावसमापमासार ।
जय मारसिंगारपम्मारमिम्मेप जय वीतवामिरदोहणाविम्छेम ।
जय तुमिमपिंतरंपाण तुम्मेम जय णाह मीराप मीसह माहेप ।
जय देम पंडीरपुमूरपीवरप जय कूरपिवेसु मपोसु मम्मतप ।

घत्ता—जय मेयरमामि तिहुयमसामि पच्छिम मम्मिम देहि ॥
जहिं जम्मु न कम्मु पाउ न धम्मु तहु पसहु मई णेहि ॥ १९ ॥

१ P पद.
19 १ K क्यामे २ MBP °मसमोहिं ३ MBP मागम्मुमेहिं ४ M मिच्छमि° ५ B मममम°

18 क इ कमि 18 व ण ए मि वसुम्

19 1 मुहेमाति—तम लोकमेम रतमामर्त तस्य तस्थानाबरस्य तस्य लोकानरणे बनीम मेतमा सरमी-सर्व 2 स म भि व प हि सेवामिमी 8 b °माणा प क देहिं पमोंमसी 5 भ सि व प तु म्मं त पा के मसिमामरे b मते मम्मके. 7 प प प म्म वा ध वस्मम्पपम् 8 कामेलामि—कामे ममपाके कमामि ममपामिलस्य पमानाय मते मेप 9 मित्पार पर्यन्तमम b °स पा प मा° ममा 11 a तु मि म पी मं त रं पा म ममम्; तुम्भे म मसुमसय 18 a क डी र तु मू र पी र त्व सिहारमस्य 18 व सिप वाम्मिम्

20

देव सुण्हविऊण भत्तीइ णविऊण ।
पडुपडहणाएहिं थं[1]गिदुगिगघाएहिं ।
दुं[2]णिकिटिमटकेहिं झंझंसघोकेहिं ।
भं[3]भंतभंभाहिं ढक्काहुडुक्काहिं ।
करडाहिं काहलहिं झल्लरिहिं मं[4]द्दलहिं
तालेहिं सखेहिं अण्णहिं असखेहिं
वहिरियदसासेहिं जयतूरघोसेहिं ।
वहुवयणु वहुणयणु करपिहियपिहुगयणु ।
हरिसेण विच्छुं[5]रिउ णियतरुणिपरियरिउ ।
विविहगहारेहिं रसभावसारेहिं ।
उप्पयइ पं[6]रिवडइ आहडलो णडइ ।
धम्माणुराएण पयजुयणिवाएण ।
सुरमहिहरो फुडइ महिवीढु कडयडइ ।
परिभमइ थरहरइ णियदेहु संवरइ ।
रोसेण फुं[7]प्फुवइ फणि फरुसु विसु मुयइ ।
विसजलणु वित्थरइ धगधगइ हुरुहुरइ ।
तावेण कढकढइ जलयरकुलं लुढइ ।
जं[8]लही वि झलझलइ सेर[9] समुल्लसइ ।

घत्ता—रिक्खइं णिवडंति दिसउ मिलंति महिविवरइं फुट्टंति ॥
णच्चंते इंदें णयणाणंदें गिरिसिहरइं तुट्टंति ॥ २० ॥

20 १ MB ठगदुगिग°, P थगदुगिग° २ MB दुणिकिट्टिमटकेहि, P दुणिकिट्टमटकेहि ३ MBP भमत° ४ MBP मदलहिं ५ MBP विप्फुरिउ ६ P पडिवडइ ७ MB पुप्फुवइ ८ MBP जलणिहि वि ९ MB सरस

20 2 *a* पडु सस्वैरव्यक्तशब्दवादित्रैरित्यर्थ 4 *b* हुडुक्का वाद्यविशेष 8 *a* वहुवयणु शेषनाग, वहुणयणु इन्द्र, *b* °पिहु° पृथु 10 *a* अगहारेहिं अङ्गविक्षेपै 18 *b* सेर स्वेच्छया

21

इय पभणिवि णिम्मिवि वसहसिरि माऊडु सवारंभवाभे हरि।
सच्छत्तु सचिंधु जणु संचलिउ पवणंदोलियधयवडमुहलिउ।
संपीयसहकोलाहलेण सो चालिउ सुरवरवलेण।
चउकसिमारवारियविहुरा संप्परि पंतेण देवपहुणा।
दीसइ अहरु पवण्णरागु जं पोढसरि फुरिउ कमलवणु।
जं मोत्तियमंडणु मेहिणिहि जिणु ण्हाणंमिणि मंदाइणिहि।
सियमउडमणियर समुच्छलिउ जं दीसइ दसदिसासु घुलिउ।
कप्पूरउरि ससि पयासयउ रायंगणि खेउ ण माइयउ।
वच्छपिहि करिहि हरि आइयउ मायापियरहुं सिसु ढोइयउ।
तिहुयणपरिपालणपरमविहि संगहिउ तेहिं सो णाहणिहि।
णिहु धम्मु णेय मोह त्ति पहु मासियउ पुरंदरेण विसहु।

घत्ता—जगगुरु समत्थु पुण्णवंतु मंगलु देवि भणीय ॥
सुरसंथुयणाय हरिसिय माय पुप्फदंति णासीय ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणजम्माहिसेयकल्लाणं णाम
पढमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ १ ॥
॥ संधि ॥ १ ॥

---

21 १ P सप्परि पंतेण but gloss समागमने २ B महसियकुसिउ P महसयकुसिउ ३ K कुसुम कुसु ४ MBP add after this foot. कीलंतेण सवेसरा G gives it in the margin in second hand, but K does not give it at all. ५ M तह ति ६ BP पुप्फयंतणाईण

---

21. 1 b वहसिरि वर्षभम; b कवारंभ° सर्वोपचय°; हरि इन्द्र 2 a सच्छत्र सध्वजः 4 a बहुलिमारवारियविहुरा 5 a अहरु 6 b ण्हाणमिणि 8 a कप्पूरउरि 10 a °परमविहि °परमो विधाता 11 a [illegible] 13 पुप्फयंति [illegible]

IV

घरि पुणरवि सयणहिं परियणहिं जिणजम्मुच्छवु जो रइउ ॥
त पेच्छेवि विसेहरु णरु खयरु सुरवरु कोउ ण विम्हइउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

जमेट्टिया—तणुअणुरुवइं रजियरूवइ ॥
देवि पसत्थइं भूसणवत्थइं ॥ १ ॥

घोलतउ मालइमालियाउ	थणथण्णामयधारालियाउ ।
कंकेल्लिपल्लवाइयकराउ	धाईउ समप्पिवि अच्छराउ ।
किंकर गिव्वाण अणत देवि	सिसुणाहहु णिरु भावें णवेवि ।
तं गुरुजुयलुल्लउं विमलणाणि	पुज्जेवि पसंसिवि कुलिसपाणि ।
पुच्छिवि गउ सयमहु सघरु जाम	कोसलपुरि वड्ढइ वालु ताम ।
उत्ताणसेज्ज णिम्मुक्कगथु	ण सिद्धिहि केरउ णियइ पंथु ।

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza —

सौभाग्य शुचिता क्षमा भुजवल शौर्य वपु सुन्दर
सत्य सर्वजनोपकारकरण वृत्त स्वक सन्मतम् ।
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजनन विद्यार्थिनामाशु य-
स्यैकैक गुणमग्रमूर्जितधियां पुसामचिन्त्य भुवि ॥

MBP have the following stanza —

आश्रयवशेन भवति प्राय सर्वस्य वस्तुनोऽतिशय ।
भरताश्रयेण सप्रति पश्य गुणा मुख्यतां प्राप्ता ॥

1 १ MBP पेच्छिवि २ M विसिहरु ३ MB विंभयउ, P विंभियउ ४ MBP धाइयउ ५ MB तग्गुरु° ६ P पुछिवि ७ P णिमुक्क°, K णिमुक्क° but corrects it to णिम्मुक्क°

1 3 *a* तणुअणुरूवइ शिशुशरीरयोग्यानि भूषावस्त्राणि, *b* रजियरूवइ अनेकवर्णयुक्तानि 4 *a* देवि दत्वा 5 *a* घोलतउ लोलायमाना , *b* थणथण्णामय° स्तनदुग्धामृतम् 6 *a* कंकेल्लि° अशोक , *b* धाईउ धात्रीभ्य 8 *a* गुरुजुयलुल्लउ नाभिराजमरुदेवीयुग्मम् 9 *a* सयमहु शतमख., *b* कोसलपुरि अयोध्यायाम्. 10 *a* णिम्मुक्कगंथु नग्नो वाल., *b* णियइ पश्यति

वड्ढंतें वड्ढइ सिरिविसेसु खेलंतें खेलइ सिहिविलासु।
णच्चंतें णच्चइ सिरि णवल्लि रंगंतें रंगइ समउ अच्छि।
पसरंतें पसरइ सुथिरकंति चउहोंतें चमगइ कित्ति।
मत्तंतयण वक्खियपयाइं कुसुमइं चायब्ब वि अक्खराइं।
चिर पेरियाइं दरदंतें पयाइं संभरियाइं पुव्वंगइं पयाइं।
तिहुवणसिरिणा धीरें तणुपमाणु विण्णायउ जलसहि वि जहाणु।

घत्ता—करचिंधिहिं पिरसेमूसमइ माइ सत्तु संमाणियउं॥
तं [1]चिंतंतें परमेसरेण जोइदि जगु परियाणियउं॥ १॥

2

जंमेहिया—समसमसमूलउ जमसाहाउउ॥
सुरसमरकुसुमसो जिर्णकप्पदुमो॥ १॥

अमरामयंहिं सिंचियमाणु सोहइ पुण्णेण पवड्ढमाणु।
घरे चिय चिय चिम्मलासु मणिमेंदरावरणु मणंतु सत्तु।
जसिसेविंपु सुरविंतु पेसइ वणवहु वि हारणीहारमउड।
वरदसारिसंहभासयमाणु संपत्तेसु पविहारु पवराणाणु।
जहिं जहिं जि तहिं जि सोहाविहाणु तहु अवर वि समचउरंससंठाणु।
वेगसाय सुरज सुवेंसयमाणु पियहियमियवयणेंसु मिहिरियविसु।

MBP ऐरावणें वेणा १ MBP वरिसर्द. १ MBP च चिरर्टे.

2. १ B चिंयु २ MBP वण्णउयु ३ MBP मिरसेय° ४ MBP सार but gloss in P मधुरा. ५ MBP मियर° ६ MBP तेएणु MBP पवयाणु but gloss in P मधुपेन वर्ण ब MB तउ P तउं ९ MB वयरसरयु, P वयरसरवर १ MBP वयवयणु ११ MB °मणु मियरा° and gloss in M मिथिमयराम P °वयणमिहिरा° and gloss वरोरिमिरिव

11 b सिरि° धुणि सलोव 12 b समव कविय वरणीसेणा च 13 b चहुविंडि दमीमिरा 15 b पुणो मई वामाउसि. 16 a वेंते सुरता. 17 करचिंधिहिं दमिमघुप्पा मिरसमुवरद रसुमि; वयु मुसमान्नम् सम्मानितम सिरि पीतम् 18 जोइदि ज्ञानेन.

2. 1 a समस° समसम; समस° इतिमयर; b जमसाहाउउ यमजीविनियमवाणुकम. 2 a सुरसमरकुसुमसो सुरमरकुसुमभुक; b जिनकल्पदुमो जिन एव कल्पद्रुम. 3 °मयरहिं मपूहें 4 b पवड्ढु वर्धितुम् अरथा तस्य वारि. 5 भो वेण °मि सेर°; परम मधुरम् b वणवहु वनिरम् °समय प्रमाम् 6 b वरसमु मधु महारसानम मधुरदेणे या 8 a सुरज धीयनम्; b °मि हि च मि यु वरोरिमिरवर

अइसय दह जासु पर पसिद्ध जम्मेण समउ धम्मे णिबद्ध।
ण पुरिसरूवपरिमाणु लद्ध विहिकरणब्भासविसेसु सिद्ध।

घत्ता—जसु को वि ण सरिसु भुवणयलि परमजिणिंदहु णिरुवमहो।
ससि दिणयरु मयरु मयरहरु कि उवमाणउ देमि तहो ॥ २ ॥

3

—जमेट्टिया-गुणगणसण्णय ववगयदुण्णय।
तोसियजणमण को वण्णइ जिण ॥ १ ॥

जो ससहरु सो तहु कंतिपिंडु चिंततु व हुउ सकलंकु चंदु।
दिणयरु तहु तेएं जित्तु णाइ णहयलि भमेवि अत्थवणु जाइ।
जो सुरगिरि सो तहु ण्हवणवीढु जं महिमंडलु तं तेण गीढु।
जं जगु त तहु जसपसरठाणु जं णहु त तहु णाणप्पमाणु।
जो जलणिहि सो तहु कायकोंडु जो वम्महु सो भयमुक्ककंडु।
जो वरकरि सो वाहणु मयंधु सीहु वि तहु सिंहासणि णिबद्धु।
पसु कामधेणु हयसहियहेउ जो वग्घु सो वि पाविट्ठु जीउ।
जो कप्परुक्खु सो कट्ठु कट्ठु देवेण समाणु ण को वि दिट्ठु।

घत्ता—सुर किंकर दासिउ अच्छरउ सुरवइ घरि वावारि जहिं॥
तिहुयणु कुडुबु परमेसरहो सिरिविलासु कि भणमि तहिं ॥ ३ ॥

१२ MBP विसेससिद्धु but gloss in P °विशेष सिद्ध

3 १ MBP °पुण्णय but gloss in P सान्वयम २ MBP वज्जिय° but gloss in P व्यपगत° ३ M णहयलु ४ P तहु सो ५ MBP ण्हाणपीढु ६ MBT फायकुडु, P ण्हाणकुडु ७ P वग्घु वि सो ८ M पाविट्ठ° ९ MBP तिहुयणपहुत्तु

9 *b* जम्मेण समउ सहजोपनीता 10 *b* विहिकरणब्भासविसेसु ब्रह्मण करणाभ्यासविशेष 12 मयरहरु समुद्र

3 1 *a* गुणगणसण्णय गुणगणानामन्वययुक्तम्, *b* ववगयदुण्णय व्यपगतमिथ्यानयम् 2 *b* चंदु चन्द्र 4 *b* अत्थवणु अस्तमनम् 5 *b* गीढु गृहीत स्वीकृतम् 7 *a* कायकोंडु गात्रप्रक्षालनकुण्डम, *b* भयमुक्ककंडु तद्भयान्मुक्तधनुष्य 8 *a* मयंधु मदान्ध 9 *a* हयसहियहेउ हतस्वहितकारणम् 10 *a* कट्ठु कट्ठु काष्ठ निकृष्टम्, कल्पवृक्ष रत्नमय पृथ्वीकायः, परंतु लौकिकदृष्टान्तेन काष्ठ कथ्यते कष्टमेव

4

खंभेट्ठिया—सेसफणीखिया
कोउहलीकिया।
पहुणा दाविया
केण ण भाविया ॥ १ ॥

पविरइयविविहकीलाविसार
समयं रमंति सुरवरकुमार।
तणुतेओहामियतरणिबिंबु
घणपरमाणुवलिविणिम्मियंगु।
धूलीधूसरु णवगयकलहु
सहयारफलभक्खणकीलयरिसु।
विप्परमयिहि कयर महत्तरेण
अमरिंदाणिवहि करंकरेण।
चिंतार थिरेसविसमुहपाणु
केण वि भवकोयर मुद्धवणु।
सो तहिं जि विप्परइ केण सार
णवकमलसासुकर भमरदे णार।
कण वि पडसाविर हंससामि
केण वि वोल्लाविर मोरसामि।
केण वि कर्णे वि खेल्लिवर रिच्छु
कर कीर मोर भमर वि रच्छु।
गिण्हाउ को वि दुरु तेयवच्छ
कु वि वप्पुरंगु कु वि विसु पीसु।
कु वि मेहे मरिसु सुयवकमल्लु
कुं वि मप्फोडइ होणवि मल्लु।
सोवंतर कु वि सुहरावयम
परिवेढ़ि अम्माहीरयम।

घत्ता—सोवंतउ सो[11] सो सुहुं सुयणहिं परं पलवंतउ भूयणग्गु।
वेयइ रिज्झइ दुक्खियमणेण कासु वि मक्खिउ ण होइ मणु ॥ ४ ॥

5

खंभेट्ठिया—धूलीधूसरे
कहिकिंकिणिसरे।
विरइयमकीलए
कीलइ बालए ॥ १ ॥

4 १ MBP °कमिय २ P विर ३ MBP कुमरघणु ४ M केम ५ MBP घणु ६ M एव समाणि. ७ MB केलवई ८ MBP विनु पीसु ९ MBP मरिसु मेसु १० B omits this foot. ११ P परिवेढिय १२ MB सुमर. १३ M सो ते BP होवि.

4. 1 a खेयरफणीखिया खिड्डुरकमणेसि 3 a पविरइयवं प्रविरचितं, b समयं सह 4 a °ओहामिय° तिरस्कृत; °तरणि° सूर्यं; b °विणु विरचितं 5 a धूलिय परिधानसहायं, b सहयारय° आम्र-फल°; °कलिय °कलाभक्षिता कुमारवर्यपरिवेष्टिताः. 6 b अमरिंदाणिवहि देवेन्द्राणां 7 a सिचार सींचे, °हुकवरनगु हुड्डतमेव एवं केन स 9 a हसाणामि मन्त्रमान 10a खेल्लवई खेलापयत्; b कर कटि 11 तेयवच्छ कुंकुर; b °सोम पलाव 12 b मप्फोडइ करेण कुंवें ताडयति 13 सोवंतउ सुप्त कं, सुहरावयम सोवरतांगनविम b परिवेढइ आच्छादयति; अम्माहीरयम स्वकीयमातृकादिनिद्रावलिना. 14 होइ मण सोवो 'होवो अव मव लय' इति वाक्य. 15 रिज्झइ हस्तमित्युपरि ब्रवीति

रंगंतु संतु ज किं पि धरइ　　इदु वि ण हु त थामेण हरइ ।
धरणिंदु वे चंदु व संवरेवि　　लहुयारी हत्थंगुलि धरेवि ।
चलु जोक्खइ को जि जिणेसरासु　　कंपावियमेइणिमहिहरासु ।
सो णीसासेण य जाइ तासु　　णहु लंघेवइ किर सत्ति कासु ।
पुणु चूलार्करणिज्जइ कयम्मि　　उम्मिल्लइ भल्लइ णववयम्मि ।
सपुण्णचंदमंडलमुहेण　　मरुपविमहासइतणुरुहेण ।
देवगंधेरवरणिवसणेण　　घोलंतविविहमणिभूसणेण ।
भुयहेलंदोलियदिग्गएण　　चलपाणिवेणुदंडग्गएण ।
हउ फदुउ गयणे समुल्ललतु　　णं दीसइ सयमहघरहु जतु ।
णिम्मुक्कजीउ णिहिट्ठमग्गु　　गुणिसंगें को णउ लहइ सग्गु ।
णिवडतउ सचारेवि णेइ　　समवयसहु तं छिवहु मि ण देइ ।
पहरें पहरें सो जाइ केम　　दिसलाणिहे समुहु सूरु जेम ।

घत्ता—पडिछंदउ पुरिसरूवकरणे णाइं विहाए सगहिउ ॥
णवजोव्वणभावि जाम चडिउ णायणरामरेहिं महिउ ॥ ५ ॥

6

जमेट्टिया—कंचणगोरउ　　धीरो गोरउ ।
परिरक्खियपउ　　णिवयदियपउ ॥ १ ॥

सिरिरमणीरमणुद्दामरगु　　धरणिंदुच्छगे णिवेसियगु ।
घरुणोवरि पाय परिट्ठवंतु　　पवणामरि करपल्लव घिवतु ।

5 १ MBP त ण हु २ P वि चंदु वि ३ MBP जो जि ४ MBP °करणुजइ ५ MBP देवगवत्थ-यर° ६ MBP भुयवलअदोलिय°, but T हेला अनायासम् ७ MBP दडुग्गएण ८ M गुणसगें ९ B लहउ १० M जाय

6 १ MBP धीरउ २ MBP °पल्लउ

-5. 3 *b* इदु-इन्द्र 4 *a* सवरेवि प्रगुणीभूय,-*b* लहुयारी लघुतरा 5 *a* जोक्खइ आकलयति 7 *a* चूला°क्षौरम्, उम्मिल्लइ प्रकाशिते प्रकटीभूते, भल्लइ रम्ये 10 *a* हेलदोलिय° अनायासेन क्षिप्तः, *b* दडग्गएण दण्डाग्रेण 11 *a* हउ हत, समुल्ललंतु सम्यगुच्छलन् 13 *a* सचारेवि अग्रे गत्वा, *b* छिवहु मि स्प्रष्टुमपि 14 *a* पहरें प्रहारेण, सो कन्दुक, *b* दिसलाणिहे दिङ्मर्यादाया 15 पडिछदउ प्रतिबिम्बम्, विहाए विधात्रा

6 1 *a* कचणगोरउ सुवर्णवर्ण, *b* धीरो समर्थ, गोरउ ज्ञानरत 2 *a* परिरक्खियपउ प्रतिपालित प्रज 3 *a* रमणुद्दामरगु क्रीडार्थ विस्तीर्णा रङ्गभूमि

पयंपंति पुरंधरि सिद्धि देतु उब्भासिहि भरहु बाहउ णियंतु ।
अच्छिय(ल्ल)णमणविसिसमाणु णमणाउलासियकुसुमबाणु ।
फणिपहउवारियविसिस्सभेंड [illegible]आसीहयतिपमल्पाणमाइ ।
जं पभणसि एयरूपयासपम्मु जहिं अप्पउ णइ विद्धामपल्लु ।
जहिं पत्तउ हुअवह मजइ पम्म जो विसुणि विसुणि देवाहिदेव ।
किं ण हणइ करयमि कमकमंतु पाहाणपुंजि पयरूवणयिह ।
मासामुहि सिहिक महामउत्तु सिप्पिउडि विमोपि मासिमरसमुह ।
हउं पिउ गुरु सुउ तं किमिविमाणु भुणयरउ फिर माणु जि पहाणु ।
णहमापडुं पासिउ को महग्घु को तुम्ह वि अमाइ पुरिसमंतु ।
णियणउँ महइ भरहसंणय। हउँ भणमि किं पि णिहुअपवेण ।

घत्ता—बाहुबलणु पुरोहिउ भइ वि मा वि ण आगिहि कयारि मइ ॥
किवाइ विवाइ सुकुमार गुरु अम पंचहर मायगह ॥ ६ ॥

7

जंभेट्टिया—पविमभणाहिया मोहविरोहिया ॥
मअहसमाहिया हयणुव्वाहिया ॥ १ ॥
विहुणा सर्व—अ मयमणुपवं ।
मणिपमयमवं एवं वयवं ।
बयसंसारं मोहमारं ।
मधुमियकयं किमिउलपुच्छं ।
णयाणिमसुवं संतविलिसवं ।
पाउविवरं भरयावरं ।

१ MB वर्णवे° ४ MBP °णाय ५ MBP °विहव° ८ MBP इह ९ MP पुरिसु ११ MBP पमत्त

7 "हउडाहिय" दोमाहिय प्रतिहार 8 a उचभाणमणु उपलाणक्ख 10 a णयु °विणउ 11 a बारशाकुहि सिप्पिउडे सिप्पि शुक्ति. 18 a पोहणाति—कवोपाम्माणानि कौ महत्. 14 a कविकिसवं 16 कौ वदइ कौमुहिं प्यतास

7 1 b मोहनि रोहिया मोहवतुणा 2 a ब्रह्माहिया ब्रह्मपरमार्थवर्तनिमा °ह णयाहिया का एव पर्याय 3 a विहुणा प्रभुणा 5 b मोहकार अज्ञानविनिर्मितम् 6 a मधुमिप्ति कर्मिततम् 8 मार्ग° महाय (स्वामु°) b अदुनोपम अविजयाणां सर्वाणं प्रैषिक

लालागिल्ल रुहिरजलोल्ल ।
बहुमलकलुस धरियपुरीसं ।
कुच्छियगंधं णवविहरंधं ।
णिद्दासत्त[1] पडइ पमत्त ।
णिसि णिद्दाण[2] मडयसमाणं ।
उट्ठइ मुद्धं धणकणलुद्धं ।
पहसमसंत[3] कारिमजंत[4] ।
हिंडइ वियहे णिवडइ विग्गहे ।
तरुणियणकण असुहरणहणं[5] ।
वाहिविलीणं भुक्खाखीणं ।
पित्तपलित्तं सिंभपसित्तं[6] ।
पवणपहग्गं माणवियंगं ।
सेवंताणं गुणवंताणं ।
होइ[7] ण सोक्खं वड्ढइ दुक्खं ।

घत्ता—परवसभउ वाहासयसहिउ विच्छिण्णउ रयवधयरु ॥
इह जं सुहु लद्धउ इंदियहिं तं कह सेवइ विउसु णरु ॥ ७ ॥

8

जंभेट्टिया—ता कुलकारिणा णायवियारिणा ।
सुहहलसाहिणा भणियं णाहिणा ॥ १ ॥
भो भो कयसुरणरखयरसेव लब्भउ णरजम्मु ण रम्मु देव ।
वच्छइ सुहु भुंजइ णवर दुक्खु वंट्टंते[1] विहडइ बुद्धिचक्खु ।

7 १ MB णिद्दामत्त २ MBP विद्दाण and gloss in P ग्लानम ३ B पहममसत्त ४ B कारिमजत्त ५ MBP °हरणमए ६ MP सिंभपमित्त, B सिंभपलित्त। ७ MBP इय
8 १ M वुड्ढते, BP वुड्ढंतें

9 *a* °गिल्ल °भक्षकम् 10 *a* ° कलुस °मलयुक्तम्, 13 *a* णिद्दाण निद्रायुक्तम्, *b* मडय° मृतक°, 15 *a* पहसमसत मार्गश्रमश्रान्तम्, *b* कारिमजत कृत्रिमाश्वादियन्त्रसमानम् 18 *a* वाहिविलीण व्याधिभिर्नष्टम् 19 *b* सिंभ° श्लेष्मा 20 *a* °पहग्ग °प्रभग्नम्, *b* माणवियग मनुष्यस्त्रीणां शरीरम् 23 परसभउ पराधीनम्, विच्छिण्णउ सान्तरं सच्छिद्रम्, रयवधयरु अष्टविधकर्मबन्धकरम् 24 विउसु विद्वान्
8 1 *b* णायवियारिणा न्यायविचारिणा 2 *a* °साहिणा °वृक्षेण

सुकइ व कयंजलि सयणमीरु मयउ वि अणुराएं सरीरु।
सयरु ईहियसुहुं मुहु व होउ मयउ सुहुं परमेसरि मोउ।
मयउ संसारु असारु जउ वि मउ मणु उवरोहु वरु तउ वि।
कम्मइंतमाणि परवयण कम्मु परिणामि सयंवर पम्माणिं इममु।
मं णिसुणिवि जिणु णिवसीसु धुणिवि णिउ हणुमुहु मणियणु मुणिवि।
णियउ परमेसरु सयहिर्यंगु सयपिरियवारि सिरिणयणिधिर्गु।
मम पि मणु वीरियावरणु कम्मु णेसहिअसलपुण्णइं आगम्मु।
ता आणिवि णियमम्मयंगणुं समहिणियमम्मणरमेणसंगु।
सहसा कुलम्मारि पेम्मिणीहिं रयणाहरणाहविहूसिणीहिं।

घत्ता—ता कण्णमहाकण्णाहिवइपुणउ धणमरणमिणयउ ॥
करपणकुसुमपयरविरइहिं मेमिहिं आएवि मम्मियउ ॥ ८ ॥

9

जेमहिया—कयमहिपाहहा तिहुयणणाहहा।
विरइउ णयरूवं कण्णाणुरूवं ॥ १ ॥

ता कण्णमहाकण्णाहिवहिं मद आएवि सिरसंणविणयवईहिं।
णिम्मउ णाहेणु सुरयरु कामसरपरवसर्हेउयरु।
पारंभु परमेसरु णिवाहु मायउ सुरयणु हरिवरिणिवाहु।
गेय कुसुमंजलिउर कोवणाम सुहि पंचम पुण्णमपीडयाम।
कुंमेरिति वरि मंगुलयउ एहु परिहउ पणंकुद मं णिवहु।
गुमगुमियममियचमम्मरुवयउ चउ मेहउ विचिहतुवाउमीहु।

1 MB कयार, P नयर 2 MBP सुकर. 3 MBP °णिवमयरि. 4 MB वरियावणु 5 MBP °रमणु.

9 1 P °पणंमिव° 2 K °मेण्ठउ 3 MBP वम° MP कुसुमंजलियर. 4 MBP मणोहराम 5 MP कुरयंरि, B करेहि

6 b वरकीमायवीइ रत्न पकाकुमार. 7 b वचरोहे मामेन 10 b सिरिवरिमियंगु अश्वगीढि 11 b कवम्मु पूर्वकम्म 12 a °कहरंगु अङ्ग, b रुमहिषियवै °कमहिमानि 14 °पुरग कर्म °नमितन मनीयू

9 1 a °एइ पीमा. 2 a वनवनं तत्तद्रूप 4 b °कामवाण° पुष्पकामस्थ 5 b हरिवरि णिवाहु यथा यथा परिपवतु मनु वयर्दे कम्म कुत्कल 7 b मिहदु मंगुर्वुन

माणिक्कमुक्कसुयुक्कफुरिउ णवसायकुंभखंभेहिं धरिउ।
चंदोवचीणपट्टेहिं छइउ महिदेविइ णावइ मउडु लइउ।

घत्ता—अमलिंदणीलमणिपंतियहिं णिविडकरोलिहिं भूसियउ।
णं तिमिरहु रवियरतासियहो सरणु णिवासु पयासियउ ॥ ९ ॥

10

जंभेट्टिया—भम्मपसाहिउ चिद्दुमसोहिउ।
सग्गामेहउ णं महिमागउ ॥ १ ॥

कत्थइ रुप्पयभित्तिहिं सुहाइ सरयब्भखंड णिम्मविउ णाइं।
कत्थ वि फलिहुज्जलु भूमिरंगु णं गंगतरंगु पवित्तियंगु।
कत्थ वि मुत्ताहलदिण्णछाउ ण णक्खत्ताचिउ गयणभाउ।
कत्थ वि हरियारुणमणिवरिट्ठु आहंडलधणुमडलु व दिट्ठु।
अहिणवदुमपल्लवतोरणेहिं णावइ वसंतु माणिउ घणेहिं।
पवणुद्धुयणहयलधुलियकेउ णरणिहयतूरमंगलणिणाउ।
पाडहियकरंगुलिणिहसणेण दंकंकुंदकुंदकयणीसणेण।
पडहुल्लउ कुडुवें छित्तु तेम धं धो त्ति दो त्ति रउ हुयउ जेम।

घत्ता—भंभाभेरीसरसखुहिउ पहु पुण्णाणिलेण चलिउ।
आवेप्पिणु तहु मंडवहु तले णीसेसु वि तिहुयणु मिलिउ ॥ १० ॥

६ MBP सरण°.

10 १ M सम्गसमेहउ २ MBP महि आगउ ३ MB °तरंगपवित्तिय° ४ MBP हरियारुणु ५ MBP दकुक्कादिकुदि ६ MBPT कुडवें

9 *a* °मुक्क° मौक्तिकानि, सुयुक्क° स्तबका 11 अमलिंदणील° निर्मल इन्द्रनीलमणि, °करोलिहिं किरणपंक्तिभि

10 1 *a* भम्म° काञ्चन सुवर्णम् 3 *b* सरयब्भखंड शरन्मेघपटलम् 4 *a* भूमिरंगु क्रीडार्थं विस्तीर्ण प्रदेश, *b* पवित्तियंगु पवित्रीकृतगात्र 5 *a* °दिण्णछाउ °दत्तशोभ 6 *b* °धणुमडलु °धनुर्विस्तार, 7 *b* माणिउ अवतारित 9 *a* पाडहिय° पटहवादक, °णिहसणेण °ताडनेन, *b* °णीसणेण शब्देन, 10 *a* कुडुवें वादनकाष्ठेन, छित्तु स्पृष्ट ताडित

11

आमेल्लियं—इयर सुहरउ कन्नासमइउ।
रमइ सुरंमउ हरइ मणंगउ ॥ १ ॥

थं थं थं थं तिविथाइ वेणु
विणु मणइ हउं मि वेरम धुणु।
मणुहेविउ जं मयंमर ममंतु
जं भासइ तं तं णं मणंतु।
संसारु मि वीणाणिबद्धु
मणि संजोयंइ माइइ बद्धु।
बहुतिस्थंगु जं विवु वंण
ण कुहइ णाई महुरें मेण।
कि मरसु बा मायणउ महइ
णा पउ वि परस्स तरूण महइ।
काइत्यवयणई वित्थारियाई
ण सुहपयणणीसारियाई।
माउग्गिय पीसासेण मेरु
बहिरेय मय पंगु वि धमेय।
दिसामइ ताडई सरसमंत
विहेडेप्पिणु मिहुणा रव मिलंति।
मालमाग्गविहुत्थयाइ
के मुणिय वरंतणुफुसियाई।

घत्ता—

12

आमेल्लिया—का वि पियाणणें का वि सुहीयणें।
मंडइ बहुवई, कु वि इ मंदिरें ॥ १ ॥
णा तिमसपुरपिहिँ बहुवराई
जरमाणीहि मि पंकयकराई।

11. १ MBP हुण २ MBP घुणु ३ MBP मयणममइ ४ BP बमोच ५ MBP वंमइ णदु
६ MBP वरेव M थीसरि कुणाई BP वीसविगमाव

11. 1 a सुहरउ सुभगो सुविश्व 2 a रमइ क्रीडां करोति 3 b यदेन नारीमुखेन विरचितेन च 5 a °मिरूपणु °कम संसारोपि योषिति यत्र कंकणमिति वेणुनाम 6 नारीतिलामि-नामित मिह एवं ग्णिकमार्गानुबंधेन तेन नवनायेन बहुरेव क्रिया एवमनन्तरम् अथवा बहुविधी नव 7 b बहुतरम् 8 काइत्यवयणई रस्युर्संयुक्तानि 9 a भीतयेन कि वसिन अथवा मिथ्या धनिता अयेन प्रतिपादिता 11 वेबडमाई रुलानि 12 मदरयमिति शिरः आलापोलिम्बकानि, अथवा वल्लभाक्रीडामि 13 रवरेंमि तुए एवौ मधुप्रेमे समुद्री गति।

12. 1 a पियाणणें प्रियाननम्

पाडियउ सलोणहु काइं लोणु चामरु जि पडउ संजणियमाणु ।
गाइज्जइ मंगलु अवरु धवलु सणिहियउ कलसजुउफु धवलु ।
सो सुत्तेण जि सुत्तिउ विहाइ णीसुत्तु ण जडसंगहु मुयइ ।
तरुणिहिं उच्चायवि कयउ ण्हाणु गोरगइ पाणिउ धावमाणु ।
सोहइ लायण्णें विप्फुरंतु णावइ चामीयररसु गलंतु ।
सियसुहुमइं वत्थइं परिहियाइं आहरणइं ससहररुइहियाइं ।
मंदारोमालिउ लइउ मउडु दीसइ णं सुरगिरिसिहरु वियडु ।
देवहु देवयठवणाइ काइं लोइयमग्गें णिहियाइं ताइं ।
आणंदें णच्चिउ सयणु बंधु बद्धउ कंकणु णं णेहबंधु ।

घत्ता—भमरावलिजीयारवमुहलु मणसरोहणपुलइयउ ॥
कंदप्पें रूसिवि जिणवरहो णिययसरासणु वलइयउ ॥ १२ ॥

13

जंभेट्टिया—विरइयठाणउ सधियवाणउ ।
उग्गयरोमउ विलसइ कामउ ॥ १ ॥

अमुणंतियाइ पुरिमिल्लु भाउ हा किं रईइ पयडियउ राउ ।
हा वम्मह तुहुं मि णिवारिओ सि हा हे वसंत किं पेरिओ सि ।
किं वग्गहु लग्गहु अज्जु ईसि णिवडेसहु कइहि वि तवहुयासि ।
णं गज्जिउ दुंदुहि भणइ एम्व किं तुज्झु वि रिउ देवाहिदेव ।
फणिसुरणरखयरकउच्छवेण विरसंततूरजयजयरवेण ।

12 १ M सलोयहु, BP सलोणहु २ BP उच्चाइवि ३ MB मंदारमालउलइय°, P मंदारयमालउ लइय ४ MBP णच्चिय सयणबंधु ५ MBP मणसरोहणु

13 १ MB तुहु वि णिवारिओ २ MBPT कइयवि ३ MBP विलसंत°, K विरसंतु

4 *a* पाडियउ दत्तम, सलोणहु सलावण्ययो, *b* संजणियमाणु संजनितमान चामर पूर्वमुन्नतस्याऽन्ते नाभिमानयुक्त दृश्यते 6 *a* सुत्तेण जि सुत्तिउ आवेष्टितेन सूत्रेण घट इव, *b* णीसुत्तु श्रुतरहितो मूर्ख जडगण न त्यजति 7 *b* गोरगइ गौराङ्गे 9 *b* ससहररुइहियाइं चन्द्रदीप्त्यनुकारीणि 11 *a* देवयठवणाइ काइं कुलदेवतास्थापनया किम्, *b* लोइयमग्गें लौकिकाचारानुसारेण 13 जीयारव° ज्याशब्द°

13 1 *a* °ठाणउ मुष्टिवन्ध, धनुर्धराणामालीढप्रत्यालीढवैणवपाढादीनि वाणमोचनावसरे स्थानानि भवन्ति, पक्षे चित्ते कृतस्थिति 3 *a* अमुणंतियाइ अज्ञातवत्या रत्या 5 *a* ईसि जिने 7 *b* विरसंत° शब्दायमान,

संचल्लिउ परिणइ जिणकुमारु मायंगहु तहु तहिं चरिउ होउ।
जं संसारहु भोगिउ जिणेहु हा किं मुहुं परिणहि वरमहेहु।
तहिं हवि गिरंतु बोधेवि धाउ मयमंथि पाडउ मुहपसारु।
फेडिउ मुहरउ जं मेहपडलु सिहुर सुहु जं छंमंगु विमलु।
कंपिउ कुंजरिहिं जणवरमणम करु घरिउ जाइ तिलरिणकम्मणु।
कण्णाहिसेण मिगारउ लेवि पाणिवरहु पणसप्पिउ समेवि।

घत्ता—जं पाणिउ मुक्कउं तासु करे विविहासासाइंविपउ॥
जं तेण मंगालमाकविकउ मोहमहातरु सिंचियउ॥ १३॥

14

जंमेट्टिया—कयसिवसविहे जसवरहेविहे।
वरहु जाविहे जावि ण मुवंयहि॥ १॥

जणवेसु जयण कम्मा तिरिच्छ मच्छेहिं जाइं परिचलिय मच्छ।
पियवेहाद्धरिय विलयंति णाणा सुरसुसिरहिं पाससंति।
विसाई चिसि मिसियाइं केम पवचर जाससिलाई सासिसि जेम।
कमणीयकामिणीयणवेहि चियलसुपरिचिविउ हसमेहिं।
सिहुर परिचनचालेविणाहिं तें कह व कह व सुसिहउ णिवाहिं।
पत्तेमुबारन पत्त तदवि णीयण सुयण सुरस परिणि।
पेच्छि वि संप्पिणु चीसरिउ णाहु जं कण्पठण्णु पेक्षीसणाहु।
जोसीसमयहिं संपुण्णमाणु वरसमणिवहिं चगासमाणु।
पक्कोहयणसमरयोक्कियाहिं थासीयउ समउं बहुसिवाहिं।

घत्ता—चारसायरु जासु गहीरु सहुं पणवाइ पय महियलि भुमरु॥
सो चरहु वि कुम्मसंतिवरु होमें भुक्त वि संमवेरु॥ १४॥

४ MBP कस. ५ MB चोरि. ६ P कमरहु. MB कुमरिहिं P कुमरिहिं ८ MB सुणालणाह°
14. १ MB चीसिसिल २ MBP जातीणएहिं ३ M चोसि. ४ MBP संसिवह

8 a ब रिचहु परिचिरम् 9 सिचहु मिल 12 b हि कि न क प च सिरहमकतेत, 14 हु ह च विलय, मि मि- हा पा चा हं मि च च चिमिचा कता कन्या एप कला कला बचित चरिउ 15 तेष माप्सचतेन न चा क चाक- मि क क मन एपक्कसाथ तयेन लान क्ल मीहमहातरोः
14 4 b हुरहु सिरसिं कर्मणिरेपु 7 व रि व म्य° कसची. 10 a चा ची च ह म हिं वार्णीयेतलो, b वेहु° वेविय 11 च कीत्° शहुर्वन 12 व हे हिं चहुं वारिचापिनस्ये नाहि तु व द सदि

15

जंभेट्टिया—मत्ताचारय विग्घणिवारयं ।
परिरक्खियजयं तह वि हु तं कय ॥ १ ॥

देवासुरेहिं संगीयमाणु चलचामरेहिं विज्जिज्जमाणु ।
रमणिहिं सहुं रमणु णिविट्ठु जाम रवि अत्थसिहरि संपत्तु ताम ।
रत्तउ दीसइ ण रइहि णिलउ णं वरुणासावहुघुसिणतिलउ ।
णं सग्गलच्छिमाणिक्कु ढैलिउ रत्तुप्पलु णं णहसरहु घुँलिउ ।
णं मुक्कउ जिणगुणमुद्धएण णियरायपुंजु मयरद्धएण ।
अद्धद्धउ जलणिहिजलि पइट्ठु ण दिसिकुंजरकुंभयलु दिट्ठु ।
चुँउ णियछविरजियमायरंभु णं दिणसिरिणारिहि तणउ गब्भु ।
आहिंडिवि भुवणु अलद्धवासु ण गयउ रयणु रयणायरासु ।
लच्छीहि भरंतिहि कणयवण्णु णिच्छुट्टवि कलसु व जलि णिमण्णु ।
वारिहिरहल्लिमालोवणीउ ण उल्हाणउ जगभवणदीउ ।

घत्ता—पुणु संझादेवयसदिस महि रंजिवि राएं विप्फुरिय ॥
कोसुंभु चीरु णं पंगुरिवि णाहविवाहहो अवयरिय ॥ १५ ॥

16

जभेट्टिया—कज्जलसामलो उडुदसणुज्जलो ।
पत्तउ भीयरो तमरयणीयरो ॥ १ ॥

वियलंतउ मुक्कचउत्थपहरु तें पीयउ संझारायरुहिरु ।
महिपंकयमयरंदु व घणेण आवत्तें अलिउलसणिहेण ।

15 १ MBP मद्दुमारय २ P णिवद्दु ३ MBP घुलिउ ४ MBP गलिउ ५ MBP अरुणच्छवि-रजियसारयम्भु ६ MB णिच्छुट्टिवि, P णिच्छुटिवि ७ MBP णिवण्णु ८ MBP कोसुभचीरु ९ MBP °विवाहे
16 १ MBP पत्तो २ MBP त

15 1 *a* मत्ताचारय यद्यपि जगत्स्वामी वर्तते तथापि मात्रा आचार कृत 5 *b* वरुणासावहु° पश्चिमाणेव स्त्री; °घुसिणतिलउ कुङ्कुमतिलक 6 *a* ढलिउ पतितम् 8 *a* अद्धद्धउ अर्धबिम्ब सूर्यस्य 11 *b* णिच्छुट्टवि स्खलित्वा 12 *a* वारिहिरहल्लिमा° समुद्रलहरीलक्ष्मी, °लोवणीउ लुप्त, अथवा, वारिधिलहरीमाल्योपनीत

16 1 *b* उडुदसणुज्जलो नक्षत्रदन्तोज्ज्वल

पुणु भुवणु तिमिरछण्णउं विहाइ रविविरहें पिउ कामउं वि णाइ।
हामिदु यस्सु णं परिहरवि चडउ णीलंबरु पंगुरेवि।
रा उउ चंदु सुरवरदिसाइ सिरिकलसु व पयसारिउ णिसाइ।
सर मणमामउं परमंतिणाइ ताराकुसुमउ हसंतियाइ।
ण रोमाकरमकमारिउ पोम्मु णं तिहुयणसिरिलावण्णधामु।
सुरजम्मवविसमसमाणहार तरणीयणविहुरूविप्प सयाइउ।
ण ममणविहुणंदाएं कंदु ओसहिसिहि केरउ णावं कंदु।
माणिणतारासणवत्तफलु णं णहसरि सुणउ रायहंसु।
भायासरंगि ससहायणीडु णं कामपत्तणहिसणणीडु।
णं इंदु परिणउ पयलकतु तइविइ णं रुप्पणु णिहिउ।

घत्ता—वरतारावंकुस णिविवि सिरि सासि परिणहुलु रावणिलउ॥
तिमिसमोणिउ णिसिहि णवसिरपहि णावइ दीविं कउ तिमउ॥ १६॥

17

जमहिया—ससहरकंतिइ दिसि पसरंतिइ।
मोहइ लोयउ सुंदु ण णोयउ॥ १॥

ता णिसि पेम्मणउ विरसमंतु णारउ झयवरिविणि वेंतु।
माउकाइं जेम सुहुम णासु मा पुण्णिहीतिदिसेंमंकवासु।
तहाहिणि उत्तरंमुहविणिडू गायणु तुंबरु वेयहि विडु।
तहु संमुहियउ मडणारयाउ वणहुरु मरसारमारयाउ।
तहु णाहिणेण णंदियउ सुमिरु णम्मामणासि वेयरपणिपउ।

१ M सुरसरिवार. २ B कुसुमम° ३ P णमिय ४ MPT °संभोरहु. BP बम° ५ MB °णेतु
६ MP विणरमणिइ.

17 १ M तुड़ BP तुणि. MB °णिसि° २ MBP वतणुरु

6 b कामस्य रत्नम् 8 a मदनाम्ब मनवं मण्डितम 9 a योगा सम्यति. 10 a सुरजम्मणविसमस्या- वतार स सुरलोकमविसमकलतो रस ; b वेदवादक सेत एव रस 11 a मणपविदुर्वेरोदु मरलाविमुण्ण ; कंदु निरुलिं 12 a कालनवरतणंकु एवा एव कलाय कमल दल साहें 13 a नवहारणीदु सत्र सारपुष्प् 14 b तरेमिर दत्तमा 15 णिणिणि णिणा. 16 वणिदं तस.
17 b सुड सुम्मेन 4 a माउ अहं वाहिमासाम् वाणु मार निमित्ति 6 मधमारमार सहु मानीय 7 सुणिर सुमिरोरमितसावसु. b वेदरमणिसव वीणाणासमिति

इय णरहु अवणिणिविट्ठु गणिउ   पच्चाहारु वि सो च्चेय भणिउ ।
वज्जइं मज्जिवि साहारणाइं   पम्मारवी य समज्जणाइं ।
सहसा मुहसोसगुहोलणेण   उहिक्कएणु किउ हिंदोलएण ।
थिरवण्णछडयधारावियेसु   कउ णाणयणहिं गुणु तहिं पएसु ।
उच्चसिरभाणामाणियाहिं   आलत्तमेणइयालियाहिं ।

घत्ता—आमेल्लियणवकुसुमजलिहिं देविहिं रंगि पइट्ठियहिं ॥
मोहिउ जणु मम्मणमोयणिहिं ण वम्महधणुलट्ठियहिं ॥ १७ ॥

18

जमेट्ठिया-अहिणयकोच्छरो   भुवणिहियच्छरो ।
णच्चइ सुरवइ   ढोल्लइ वसुमइ ॥ १ ॥
विरइय णडेहिं णाणाविचार   चारी वत्तीस वि अंगहार ।
अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु   करणहं अट्ठोत्तरु सउ वि दिण्णु ।
चोद्दह वि सीससंचालणाइं   भूतउवाइं गजियमणाइं ।
णव गीविउ णयणगुहावियाउ   छत्तीस वि दिट्ठिउ दावियाउ ।
अतिमरसविरहिय जणियहाव   अट्ठ वि रस सथेयणसहाव ।
एक्कोणा पण्णास भाव   अवर वि अउव्व भावाणुभाव ।
फुरणइं वलणइं अणिवारियाइं   णच्चतहिं तहिं अवधारियाइं ।

४ MBP कहय ५ MBP किउ ६ B रण°

18 १ MBPT अहिणय° २ KT भुय° ३ MB चउदह ४ BP गीयउ ५ MBP दिट्ठउ ६ MBPT °भाव ७ P अपुव्व ८ M करणइं ९ MKT अवधारियाइं

8 *b* पच्चाहारु म एण प्रत्याहार इति अन्यत्र प्रसिद्धः 9 *a* मज्जिवि मृदादिभिर्मार्जयित्वा, साहारणाइं युगपत्सर्ववाद्यनिपाताय, *b* पम्मारवी सर्ववाद्यानां मृदादिसमार्जन कर्मारवी नाम. 10 *b* उहिक्कएणु आलतिकरणहिंदोलकरागविशेष 11 *a* °वण्णछडयधाराविसेसु वर्णच्छटकधाराख्यस्तालविशेषा 14 मम्मणमोयणिहिं कामबाणमोचनिकाभि प्रेक्षकजनप्रमोदजनिकाभिश्च

18 1 *b* अहिणयकोच्छरो अभिनयदक्ष, *b* भुवणिहियच्छरो भुजेषु निहिता अप्सरसो येन 3 *b* चारी पदप्रचार 4 *a* अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु परस्पर शरीराश्रयेषु, यथा पादो हस्ते, हस्त पादे, *b* करणहं शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य क्रियन्ते इति करणानि 5 *b* भूतउवाइं भ्रूनृत्यानि 6 *a* गीवउ ग्रीवा, *b* दिट्ठिउ प्रेक्षितानि 7 *a* अतिमरस° शान्तरस°, जणियहाव जनितस्थायिभावा,

पुणु पत्तई वीरियपमयवाई छंदचंदपमोयं णिम्मवाईं ।
सुरहं पेम्मंधाईं हसपंतु णिम्मेहाईं मिहुणाईं दिसपंतु ।
ताराताराचरइ दरंतु विहरिमैंचक्कउक्कं मेल्लंतु ।

घत्ता—रद्दिउ एयिविंदु सियहसिरिए मरवयकिरणमालफुरिउ ॥
उप्पेहरि महापयणु चवरि अर्वैरत्तउं छत्तु व धरिउ ॥ १८ ॥

19

चंमेहिया-ससिपायाहया कुसुर्ल पिव मया ।
मणिरयरसणिया रुंभइ व मिसिमिसिया ॥ १ ॥
दंसइ पविभेअं मोसंसुकवडं ।
तं पसरियकरो पुसइ व हमिहरो ॥ २ ॥

पं सोहइ दीविये अंबुरीउ पहमहिसंरुवपुहि णिम्मु दीउ ।
जहुण्णामंतु पं खोमपवणु पं पंतहु सेसहु सीसरयणु ।
पं वारवणि पहसायवासु पं णिसिविसियपरिमुहमासेणाहु ।
पं ताहि कि केरउ महरविंदु पं णिसिमेहुणहि पयमग्गु तंतु ।
पं वासरविरुमंकुर विमित्तु पं अप्पकरहि पवरम णिहित्तु ।
ता तहिं सोहणि संसारसार कासु वि काडियुत्तउ दोरैं हार ।
कासु वि हयगयचोडिउ रयम्मु कासु वि चर्उ कम्मु सुवम्मु कम्मु ।

१ MB कुमुयसमोए, PT कुमुयसमोए. ११ MBP समम्मु ११ BP णिहरियचक ११ MBP उम्मारि १४ MBP व रत्त

19 १ MBP घम्म २ BP पविभर्ज. ३ MBP दे. ४ MBP व ५ MBP दीसर ६ MBP °वर्णमि पुरविम्मु ७ MB णिमि° ८ MB °मसमाहु P °संतु णाहु ९ MBP °महुणहि १ M अप करवे णिहु. B अप्पकरहि पवरम P कवि करहि णिहु ११ MBP हार दोर. १२ M चवम्मु P वम्मु सुवम्मु

10 °चन्दवारई चन्द्राणि; 3 छ ह स प ं° सुरतोत्सवादौसुरतक्रीडितं कुमुदसमोम्य 12 तारतारई° चन्द्र°

19 2 b रमइ रुचति; मिसिमिसिया दीप्तिमती 3 b मोसंसुकवड असत्य एव वस्त्रम् 4 b पुसइ मार्ष्टि, हमिहरो चन्द्रः. 5 a दीविय दीपम् b वेवइ चन्द्रेरम्य 7 b तावणाहु सोमपान 9 वासरविरुमंकुर दिवस एव हस्तासाङ्कुरः; णिमित्तु निर्मित 10 a सोहणि शोभने महोत्सवे.

जो जं मग्गइ तं तासु[13] दिण्णु　　　　काणीणदीणदालिद्दु छिण्णु ।
संमाणियाइं सुहिपरियणाइं　　　　चोत्थइ दिणि मुक्कइं कंकणाइं ।
चित्तइ विवाहि विहवेण साहु　　　　थिउ रज्जु करंतु णएण णाहु ।

घत्ता—जसवइसुणंदरायाणियहिं पणएं हियवइ भावियउ ॥
सियपुप्फयतु[14] सो रिसहपहु[15] भरहखेत्तणिवसेवियउ ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे कुमारविवाहकल्लाणं णाम चउत्थओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ४ ॥

॥ संधि ॥ ४ ॥

१३ M सो तासु　१४ MBP सिरिपुप्फयतु　१५ MBP रिसहु पहु.

14 b णएण न्यायेन　16 सियपुप्फयतु शुक्लकुन्दपुष्पवद्दन्ता यस्य

V

पियमेलय गयकाला पत्ताहिं विमि सुहकारिणि ।
पियसंगमसद सेंधुरोंगा णाहिणयवमेणहारिणि ॥ ध्रुवकं ॥

1

पथिता—कमेसिसिरवरकिरणमिहविहिपरमरसवंजणपत्ति सुरिया ।
पथिमसरसरयणमणपुणकणपहुकोमलकमिणमत्तिया ॥ १ ॥

चोराइ जसेणाहिवं सोहमाणा | जवणकिण्णहंसी व मिहणमाणा ।
सुरपायुणयाणपाणिउतीरं | णिवंहियवहीरेणपगंभीरणीरं ।
हरिसपवमोराणिपूरियससायुं | सीसिकंवपम्मारणिणिकिंवमाणु ।
कारिएसणिणिमिणसोवण्णपरायं | सिविणपगयं पेच्छए सकरायं ।
ससहरमकंमारमूर्य मिसाय | पथिमपि मुहे भीहरंत विसाय ।

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza—

मूर्धानां जय मुख वत्तगुणाग्रतिक महता
मा त्वं दर्शय भारमपमाशिता तन्मा? कमानहया ।
मुग्धे भीममलिनणजुणवेलंमुधैवत
स्थैरमेव परायं न मया भीमोपमिर्णियति ॥

MBP have the same stanza, but M reads °हमाणिर्णाहसा and DP read °हमाणिर्णिया for हमाणिक मत्ता and MBP read भीमामुणि for भीमोपमि

1. १ MBP सिधुर° २ M कमलाहिमि ३ M मममाणिरसमकिरण°; D °हरिसवर° ४ MD °सम-मसल° ५ MBP have before this line रम्मीसमला माम करो GK hav रम्मीसमला ६ M मिलत्व°; P मिमिनिर° MB पलोपव° MB °मिमिम्मसाणु

1 1 सिमसैलद पोहसिरसम्मसेलसे 5 °सिसिरवर° कमा; सुरिया सल. 5a नहिसं वारिणपु 6 a °यवाललव° रसासालन°; 6 सिवहिव° मिलिन 7 °सोउमि° बलय; 6 a बहिवव° बलय कमलमणि, 8a सिखिमलोवसयण मिरहहहसंसंवेह 6 वेनगवं वेयु[illegible] सिवाव दुलिमामा,

सयदलदलालविरुंटतभिंग सरवग्गमसारिच्छतिंगिच्छपिंग ।
दसदिसि यहुप्पिच्छरंगतभंग जलयलणयक्ष्यालियर्दिदसिंग ।
अमरिसवसप्फालणुद्दतसद्दं करिमयरमालारउद्द समुद्द ।
सयलमवि आलोयए सविसत णियवयणपोमम्मि छोणीयल त ।

घत्ता—इय पेच्छिवि परिदच्छिवि सुप्पहाइ सीमंतिणि ॥
कयराहहो गय णाहहो घरु पुरधिचूडामणि ॥ १ ॥

2

रचिता—पभणइ सुणसु पुरिसहरि सुरगिरि सस्सि रवि सरवरोयही ।
मइ णिसि सिविणयम्मि दिट्ठा पिययम गिलिया इमी मही ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णराहिउ घोसइ चक्कवट्टि तुह तणुरुहु होसइ ।
मंदरेण दिट्ठेण पियारउ महिरायाहिराय गरुयारउ ।
ससहरेण सुहड सोमाणणु कतिवंतु कतासुहमाणणु ।
सूरें सूरु पयावें दूसहु सरवरेण पयडियसिरिसगहु ।
रयणायरेण सवसपहायरु चडि चारु चोद्दहरयणायरु ।
महिआहारें रिउ भंजेसइ छक्खड वि मेइणि भुंजेसइ ।
कइहिं मि दियहहिं होइ णिरुत्तउ देवि ण चुक्कइ ज मइं वुत्तउ ।
तो सव्वत्थसिद्धिअहिहाणहु सइ अहमिंदु चालिउ सविमाणहु ।
पुव्वपुण्णसपयसपुण्णउ जसवइदेविहि गब्भि णिसण्णउ ।

९ BP° रुंटंत° १० M °तिग्गछ°, BP °तिगिंगछि° ११ B समालोवए, P मालोयए १२ MBP परियच्छिवि १३ M कयरायहो १४ M घर°
2 १ MBP णिसुणि २ MBP °वरोवही ३ M देव ४ MBP °अहिणाणहु

10 *a* °रुंटंत° शब्द कुर्वन्त , *b* असारिच्छ° अनुपमम्, तिंगिच्छ° मकरन्द 11 *a* उप्पिच्छ° उल्वण°, *b* अद्दिंद° अद्रीन्द्र° 12 *a* अमरिस° अमर्ष क्रोध , *b* करिमयर° जलहस्ती 13 *a* सविसत प्रविशत्, *b* वयणपोमम्मि वदनकमले, छोणीयल पृथ्वीमण्डलम् 14 परिदच्छिवि वितर्क्य, सुप्पहाइ सुप्रभाते 15 कयराहहो कृतशोभस्य, पुरधिचूडामणि यशोमती

2 4 *a* पियारउ सर्वपां प्रियतम 5 *b* कतासुहमाणणु कान्ताया सुख मानयति 9 *b* पयडियसिरिसगहु प्रकटितलक्ष्मीसग्रह 7 *a* सवसपहायरु कुलप्रभाकर , *b* चडि हे तरुणि

घत्ता—सुवेणुम्मवि सिसुसंभवि जेहिं कयउ काहल मुहुं ॥
ते सुहय भवइ वि मण णिवसिहिंति हिउसुहु ॥ २ ॥

3

रचिता—सुपमरपसरमाणकेसरपरे विमलियं वकियपं ।
विहुयपवाहयपंकरोहावहियं व कयं पयत्थं ॥ १ ॥

एत्थे गंभिर वियरण व वायउ | पेहइ तोहैं कयं संजायउ ।
रिपाहि पसाहिय सुहुरि सुविम्मवि | विमयसुम्मं मइ पहमंडवि ।
जमवाममहि विमसियपंकयमुहु | पवमासीहि वम्मम्मत तहुणहु ।
ता तहि मरि सुरदुंदुहि वज्जइ | जं सेसोसें सायउ पवहइ ।
णाहु हेवि वारम्म वमि संठिय | कोस व माणुस हरिसुक्कंठिय ।
मेह सवंति सुगंधइं सलिलइं | बिम्मुहाइं विव वायइं विमलइं ।
मायासु वि पीसइ मलमलिउ | णीलम भायणु णं संमलिउ ।
मंदरकंदरगय विरमरियउ | पक्खणु णं कुवेरहु भरियउ ।
ताउम्मोहियपावमहिं मुक्किउ | णहु वि तायउ सव्वहुं पाविउ ।
महि सई जय वहंति चउपासिहि | णं वज्जरइ महावरमोसिहि ।

घत्ता—सरणकिम्मीहिं जं जयवहिं पर विवंति मह उच्चर ॥
मरणकिम्मीहि परिसुक्किम्मीहि वेल्लीमुयहि पवचर ॥ ३ ॥

---

१ T records a p सुवसुम्मवि and adds सुवसुम्मवि इति पाठे सुवनाममुरलीसं मथा.

3 १ M जलकियर°; BP जलायर° but gloss in P जलोयरे. २ MB वमिवियएण; P वमियवर. ३ MBP तुंहु ४ MBPK विमुक्किर ५ MBP सुमयु

---

12 सुवसुम्मवि सुवसस उज्ञपः उत्तवेल्ल मधुजयो वहिर. 13 णिवसिहिंति निवसिष्यन्ति.

3 1 जकरयरे जमेलर, विमलियं पक्कि विमलम् पक्किवाससयेण वरं कसं वाअसिलर्क. 2 विहुयपवह° विधुतानि°, जयकरोहा° जलविरोहा° 3 a एत्थं एतेन एवा च. 12 a महिसलि-महि पुष्पी जसार ताराल्यो महावरोक्यवसीयेन दृश्यते इत्यर्थ यथा इव एव एतैति. 13 पद मलिप्. 14 सवयवि मनुपाहिर..

4

रचिता—णियगुणरयणणियरकरमंजरिधवलियणिवइवंसओ ।
विसरिसमुकयसाहिसाहासिउ वड्ढइ रायहंसओ ॥ १ ॥

णामकरणचूलाकरणाइउ सव्वु वि कयउ विसेसविराइउ ।
जणणीजोव्वणफलगोंछो इव विहलियलोयकप्परुक्खो इव ।
सुहियणयणामयबिंदुपवेसु व मित्तचित्तसरहणणिवेसु व ।
गुणसंतावपयासमग्गो इव रोयमोयउज्झिउ सग्गो इव ।
पिउसहावसचउ रूढो इव बंधुणेहबंधणबद्धो इव ।
किंकरयणमणचिंतामणि विव अरिमहिहरसिरवज्जासणि विव ।
णिहिलणायसब्भावणिही विव दुग्गणकरणउद्धरणविही विव ।
भारसोढु गरुययरु महि विव भूरिभोयभारिल्लु अही विव ।
दुणिरिक्खु मज्झण्णरवी विव वज्जदेहु जंभारिपवी विव ।
लायण्णवुपवाहसरो इव विलयावदहु कुसुमसरो इव ।
घत्ता—सिरि उरयलि महि असिदलि भुंइ जयसिरि जयकारिणि ॥
जसु णिवसइ मुहि सरसइ कित्ति तिलोयविहारिणि ॥ ४ ॥

5

रचिता—गिरिसरिकलसकुलिसकमलंकुसविसहसलक्खणाहिओ ।
सुरणरखयररमणिवीणारवगाइयजसपसाहिओ ॥ १ ॥

ण सोहग्गपुंजु णिव्वडियउ णाइ पयावें विहिणा घडियउ ।
जलिवि जलिवि उल्हाइ ण जीवइ जासु भएण णाइ सिहि णीवइ ।

4 १ M मुकय° २ MBP णामकरणु ३ P चूडा° ४ MBP °गुछो ५ P विहसिय°. ६ MB सुह-वयणामय°, P सुहणयणामय° ७ MBP धण° ८ P °सिरि ९ MBP गरुययरु १० MBP भुयजुइ.

4 1 °करमजरि° किरणसघाता, °णियइवंसओ °राजवंश 2 विसरिस° अद्वितीयम्, °सुकय-साहिसाहासिउ पुण्यवृक्षशाखाश्रित 5 b °णिवेसु स्थानम् 7 a पिउसहाव° प्रियः स्वभावः पितृस्वभावो वा, रूढो प्रसिद्ध 9 a णाय° न्याय, b °विही विधाता 10 b °भोय° भोगा फटाटोपश्च 11 b जंभारि° इन्द्र 12 a अवुपवाहसरो समुद्र, b विलयावदहु वनितावृन्दस्य 13 असिदलि खड्गपत्रे, भुइ भुजे

5 1 विस वृषभ, °अहिओ अधिक 2 °पसाहिओ °मण्डित 3 a णिव्वडिउ कपोत्तीर्ण 4 a जलिवि जलिवि प्रज्वल्य प्रज्वल्य, उल्हाइ ज्वालारूपतां परित्यजति, अङ्गारावस्थो भवति, ण जीवइ ज्वालारूपेव नावतिष्ठति, b णीवइ विध्याति, अङ्गाररूपतामपि त्यजतीत्यर्थ

माएवंतु पुणरवि णासंतइ जइसंतु वि मज्झाए ण संभइ।
णामिणवेअउ कमु भवसायरु जासु मयण जि पिउ जोइ वासरु।
णायगाउ णुहउ कीडाउ मंतु वि आयउ कंदमहिउ।
पत्थि पत्थि सो दीसइ ममाउ पवणु वि गमणब्भासहु कमाउ।
कंतु वि दंसणगुणु गुणिं णावइ अक्क वि तं तेइउ जणु जावइ।
णियकरि पहरणु कहिं मि ण दावइ विणयण जि पयंतु मउ भावइ।

घत्ता—मणिजमपसु भुवणपयासु महिहरभित्तिविघाएण॥
भणिदिणसर कुलियकर जसु तसंति दिसिवोएण॥५॥

6

दुविला—करिसिरकमिपरसकिणुणपमोत्तियणतरयकमरा।
सिसुससिकुडिसणुसणिमुजभणपराजणणसासुरो॥१॥

पहुओ वि हरि विप्फुरियाणणु जासु भयण ण संभइ काणणु।
जगजाम्माणि वर्इतु परमेसरु सुरवरकरिकरथिरथोरकरु।
सो सिरुणाविउ णमियवा सम्मइं कामकयरइं णावियगंधम्माइं।
णायपाइं वधुमायरसत्थाइं जरमोरिहिं कमयजाइं पसत्थाइं।
सम्मूसायरजाइं विविहाइं कम्मइच्चारियाइं हियणुविच्छाइं।
गीयपडलिउ रयणपरिक्खउ मंत तंत परदेयणयणमिक्खउ।
कोंतणपासियापमताणाइं चक्कचावपहरणविण्णाणाइं।
हेमदासिमासमाणिविमणाइं करचामरकारविहाणाइं।

5. १ B मधु २ MBP ण. ३ MP वसु ४ M देवमणि गुण; BP गुण ५ MBP दिसावय
6. १ MBP णरणाउ २ P हयत्तय°

6 b मा एवं तु पुणरवि णासंतइ णास ण सम्मइ, 6 जसु मयण मदनः; b कई यथा. 9 गुणि णावइ गुणवर्णितमपि ...... 12 ककरिकिरणर ......; कुलियकर वज्रहस्त-पुरुषाः।

6 1 °रमेस्यादि °......। 3 a इह जो ईशा हरि विहु 5 b काम कय-रइं ......। 7 a सम्मूसायरजाइं ......। b कम्मइच्चारियाइं ......; हिय-णुविच्छाइं ......। 10 हेमदासिमासमाणि ......; मिमिणिमि; b करचामर-काराविहाणाइं ......

जोइसछंदतक्कवायरणइं   मल्लगाहजुज्झइं कयकरणइं।
वेज्जैणिघंटोसहिवित्थारु वि   बुज्झिउ सव्वलोयवावारु वि।
चित्तलेप्पसिलवरतरुकम्मइं   एवमाइ अवराइं मि रम्मइं।

घत्ता—पयणयसुरु तिहुयणगुरु जासु सइं जि वक्खाणइ।
अइविमलउ सो सयलउ कलउ किं ण परियाणइ॥ ६॥

7

रचिता—पुणरवि णियसुयस्स सो णिवरिसि णेहवसेण भासए।
गिरिथणिधरणितरुणिपरिपालणविहिविसयं पयासए॥ १॥

पभणइ पहु भो पढमणरेसर   अत्थसत्थु णिसुणहि भरहेसर।
ववसाए सुसहाए सपय   होइ णिरुत्तउ पयपाडियपय।
अलसत्तें खलसंगें णासइ   सा मइ एहउ तुह सुय सीसइ।
असहायहु जगि किं पि ण सिज्झइ   हत्थि वे सुत्तसमूहें वज्झइ।
जाइ णाव मारुइण विलग्गें   जलइ जलणु तासु जि ससग्गें।
मंति सूरु दुहसहु सुहि सहयरु   तासु करेज्जसु कज्जि महायरु।
जगि कज्जु जि मित्तारिहि कारणु   तेण ण किज्जइ तहिं अवहेरणु।
तं पि बुद्धिदारेण समुब्भइ   बुद्धि वि बुहेहिं सेवइ लब्भइ।

घत्ता—सिरपलियहिं मुहवलियहिं मुइ जराइ णिब्भच्छिय॥
जे सत्थइ कम्मत्थइ कुसला ते मइं इच्छिय॥ ७॥

---

३ B वेज्ज ४ MBP सयल

7 १ MBP णिसुणिहि २ MBP हत्थि वि ३ MB सुहदुहसहु, P दुहसुहसहु ४ MBP बुद्धिचारेण ५ B बुहसेवइ ६ MP सिरि पलियहिं, B सरे पलियहिं ७ MBP मुय

---

11 *b* कयकरणइ आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिकृतचेष्टानि 12 *a* वेज्ज° वैद्यकम्, णिघंट° कोश 13 *a* तरुकम्मइ काष्ठकर्माणि

7 1 णिवरिसि राजर्षि 2 गिरिथणि° गिरि स्तन• यस्या सा पृथ्वी 3 *b* अत्यसत्थु नीतिशास्त्रम् 4 *a* सुसहाए सुसहायेन 5 *b* एहउ ईदृशम्, सीसइ कथ्यते 7 *a* मारुइण विलग्गें वायुना पृष्ठतो लग्नेन 8 *a* सूरु सुभट, दुहसहु दुःखस्य सोढा, सुहि सुहृत्, सहयरु मित्रम्, *b* महायरु महादरम् 9 *b* अवहेरणु अवगणनम् 10 *a* समुब्भइ विचार्यते 11 मुइ मुग्ध, णिब्भच्छिय तिरस्कृतस्वरूपा 12 कम्मत्थइ कर्मकरणे

8

दुविदा—विसमइमयणविहयपविसोइयपरपर्यठइचारिणो ।
पंडुपियइमविमासत्तासहु पिहाणय पाइचारिणो ॥ १ ॥

कुम्मिदुममतोमियमहिमंडल मंतचारणियमहिमाइंडल ।
दुत्रा जोर्हि ण साहिय मसिद जड मुणंति कयाइ वि पयिद ।
ते सुंदर आयसु दुवियड्ढा कुमवकसिसिप्पिपयसर्णे घुत्रा ।
होंति भयुद दुइसंपि दुत्रा चंपयवास तिर्ठ वि सुगंधा ।
गुहसयास दुवि उप्पयइ सा सत्तविह कुमार कहिज्जइ ।
सुस्सुसा सवणु वि संघारणु मायणु गाहणु माणु विण्णयमणु ।
तिविह होइ मंतणु संबंधिणि सा वि कहइवि तिजयविसामणि ।
पिहुपिपयारवंसमंडणपय गुरुपयगय सुयपय पियमयगय ।
ताइ मंतु भवर्तें पिरुफजइ मा पंचविहु कहंति महामइ ।

घत्ता—भाइणइ कम्मणइ पहमुवाउ विसेसइ ॥
परहवि वि पयत्तुवि वि देसु कालु आणवइ ॥ ८ ॥

9

दुविदा—मवि य सहरिस पुरिस दंडपोरिस सुकयावायपरक्कमं ।
मविरलमिसिमविरुद्धपसमिसिहि वि आयसु मंतकम्मणं ॥ १ ॥

सुयणुसरणु दुखविणासणु वि पायं कणुमायसंगमणु वि ।
मणयपयासमणु जा सुवइ दंडणीइ सा पुण पवुबइ ।
किसि पसुपालणु वाणु वाणिज्जें वत्त भणिज्जइ महियपुज्जें ।

8 १ MBP मु° २ MBP किम य. ३ MBP कहिं. ४ MBP मिणमइ.
9 १ MBP दलगरिह.

8. 1 "परचर" कमा; "विहयारिणो चारुसा 2 पहुमिरइय" मिच्छामिमिरपिय"; पिहाणय पियामनुष.; पहयारिणो मिच्छामिसोमायणीय 3 अवतिइ मारर्णं इनीय (प+पवित). 5 अदुमिपड्ढा पणविहतः; अ"यव" "मदत. 8 अवचारणु वाकपतमिलपणह अ लोयणु इवे मिच्छयमणु मदा-पोइविज्ञामणि. 11 ताइ तथा निमित्ता पुच्चा 12 आइणइ कम्मणइ आरम्भे कर्मे पइनुवाय कर्मणिपाता.

9 1 "सुकयावायरक्कम सुकृतापायगमह. 8 पदुबइ" पावायत यत. 5 अदत दर्मे यत एवमिपा.

चउवण्णासमु धम्मु तइत्तिय अज्ज वि सुंदर होंति ण सोत्तिय ।
ते अप्पणु पइं पुरउ करेवा हीण दीण दाणेण भरेवा ।
ताहं कम्मु जगसतिपयासउ जणियभूयगहयणसतोसउ[2] ।
अय तिवरिस जव तेहिं हुणेवउ जणहु जीवदयवयणु भणेवउ ।
ज[3] जि पढेवउ त जि करेवउ असि ण धरेवउ[5] दाणु लएवउ ।
दंसणणाणचरित्तु[4] करेवउ तिउणउ सुत्तु सरीरि ठवेवउ ।
बंभचेरु अहवा कुलउत्ती अण्णणारि मइं ताहं ण उत्ती ।
णिच्चण्हाणु जिणपडिमापूयणु णिच्चहोमु णिच्चातिहिभोयणु ।
इय मज्जाय विलघवि लपड ते खाहिंति जीउ मारिवि जड ।

घत्ता—सुयसंगहु करुणावहु दाणु धरणिजणधारणु ॥
इय इट्ठउ मइं सिट्ठउ खत्तियकम्मवियारणु ॥ ९ ॥

10

रचिता—वियलियमलमईहिं मंतीहिं कुमग्गगय[1] परिपिच्छय ।
पंसुसममिणमसेसमहियलयमहो णरणाह रक्खिज्जय[2] ॥ १ ॥

पढणहवणदाणइं[3] याणिज्जइ इय वणियहु कम्मइं णिरवज्जइ ।
सुद्दहु सेणु[4] वत्ताणुट्ठाणु वि वण्णत्तयपेसणसमाणु[5] वि ।
अवरु कुसीलकारुजीवित्तणु एम कम्मि संजोएवउ जणु ।
कम्मरहिउ जगि भद्दु ण भुजइ धम्मविवज्जिउ त पि ण किज्जइ ।

२ MBP गहगण° ३ K त जि पढेवउ ज जि करेवउ ४ MBP दसणु णाणु चरित्तु ५ MBP धरेयउं,

10 १ T reads कमग्गगय and explains it as पादाग्रे स्थितम्, it however records a p कुमग्गगय and explains it as कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम् २ M पसुसिम ३ MBP पढणइ घणदाणइ ४ P पुणु ५ MBP °पेसणु संमाणु

6 *a* आसमु आश्रमा, तइत्तिय त्रयी विद्या, *b* सोत्तिय विप्रा 7 *a* पुरउ करेवा अग्रे कर्तव्या 8 *b* भूय भूत° 9 *a* अय अजा त्रिवर्षयवा एव येषामङ्कुरोत्पत्तिर्न विद्यते 11 *b* तिउणउं सुत्तु त्रिगुण यज्ञोपवीतम् 15 सुयसगहु श्रुतसंग्रह, करुणावहु दयामार्ग 16 इट्ठउ इष्टम्

10 1 वियलियमलमईहिं विगलितपापमतिभि, कुमग्गगय कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. 2 पसुसममिण पशुसदृशमेतत्, यथा गवादीनां पालनं क्रियते 4 *a* वत्ताणुट्ठाणु वार्तानुष्ठानम्

मंतिठाणि कुंभपुरिह चत्ता | गिरसत्र पयलपाअभाई अमणा ।
अंतेउरि पमत्त कामाउर | सुन्न पणाहियारि पसरियकर ।
ण थविस्संति कालं वित्थारें | जाणइ पहु दुट्ठे परिवारें ।
परिकम्मयम ताहु महपसरणु | कहाइं ण वि परियवपारिसगुणु ।
सहवासेण सीसु जाणवउ | ववहारेण सउणु मुणेवउ ।
जाणेवा राएं पेसिवि चर | कुल सुद्ध माणिय मीवम पर ।
सामभेयमवसंदसमागउ | मारि रहजइ जं जासु जोग्गउ ।

घत्ता—णियरज्जु वि परज्जु वि कम्मबलणयसुरयणु ॥
जाणेवउ माणेवउ पत्थेउ पुत्त पहुत्तणु ॥ ९ ॥

II

पविता—कुणमु सज्जणसयपरिवियपेसियपणियपीयविहारवं ।
परियवसपसमित्तसंतोसपरं संमाणसरावयं ॥ १ ॥

दुत्थिहु वि जयरवसम्मु हरेवाहु | सिविहसयिसमाउ करेवाहु ।
माणियउं ववेक्खियउं वि मुणिवरहु | भिमागु अवरु मग्गुम्मग्गु देवहु ।
सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि मेमाहि | सव्वविणोयसुहि संदाणहि ।
चयकंचेवाहु गुणहियपवत्तु | गुणहु सिद्धंकामुणकामितणु ।
चपकरणु सव्वोवयामितणु | वाकसंगु वि दुज्जससमपवत्तणु ।
मारि धूय मारप मयमारणु | कामुप्पत्तउ वरमिहु सावणु ।

१ M मंतिठाणेहु कुंभपुरिह चत्ता BP मंतिठाणि कुंभपुरिह चत्ता. ९ MBP घत्ति
11 १ MBP वित्तावहि २ MBP भिहु° but gloss in PT एवं जीवने ३ MBP जयाणि

१ a कडीत्यादि–मन्त्रिस्थाने कुम्भपुरिथिता न कर्तव्या b विवका दीक्षा क्रिया चे d सामन्तपरिरक्षणे न व्यासक्तिः 8 b वयणहिमारि नाम्नाभारप्रसिद्धे. 10 b कहइ वेदमानमूले 11 b सउणु निमित्तिका 12 b परदमत 13 °समावय °मन्तु. 14 कम्मबलसयतणु कर्मस्वाधमपितकारिणां सुमित्र निर्वाहकम्

11. 1 °णमित्तीणमित्तिहाणव सत्पुरुषप्रतिविकासक 3 a दुत्थिहु नायकवि देवस्य समाधियुक्त पत्युत्पाद b तिमिरहरति तत्परोहितसमूलतरुम 4 b भिमागु दुस्सहु; वयुगागु प्रयाणम् 5 b विगोय सुहितरागति सत्कर्म केन विवेचितं कर्तव्यं सततं सर्वत्र 6 b सिद्धकामुणकामितणु एवं जीवने ये कालुका समस्तेतोद्गम हेतु माभिवानं पुत्र 8 a मयमारणु कथ्या

अण्णाए ण दविणु णासेवउ　　तिक्खदंडु सुंफरुसु भासेवउ।
रोसुप्पण्णउ वसणु तिहेयँउं　　मइं महियरसासाणि विण्णायउं।
इय सत्तविहु भरेण ण किज्जइ　　रिउछव्वग्गहु हियउ ण दिज्जइ।

घत्ता—मुइ कोहु वि मउ लोहु वि माणु हरिसु सहु कामें।
गुरु घोसइ सिरि होसइ पयहु णयपरिणामें ॥ ११ ॥

12

रचिता—एक्कंतरिउ मित्तु णिरंतरु सत्तु भणंति सूरिणो।
तासु महंति मंतु पइसेसिय गूढा लिंगधारिणो ॥ १ ॥

गूढ वि पडिगूढहिं जाणेवा　　जे विरुद्ध ते तहिं णिहणेवा।
कीरइ कालि गमणु धवगयमलि　　आसणु बहुकणतणजलमहियलि।
विग्गहु हीणें अहव समाणें　　बलवंतेण संधि कयदाणें।
दुग्गासिएण समाणु वि किज्जइ　　मित्तु वि पडिवक्खत्तु ण णिज्जइ।
एम अलद्धउ लब्भइ मंडलु　　परिरक्खिज्जइ कय चिंतियफलु।
उप्पाइज्जइ दव्वु पसत्थहं　　तं दिज्जइ अट्ठारहतित्थहं।
तित्थहिं धरिउ रज्जु थिरु अच्छइ　　रायाइल्लउ रायहु ण गच्छइ।
सामि अमच्चु रट्ठु धणु सुहि बलु　　भणु सत्तमउं दुग्गु हयपडिबलु।
इउ सत्तंगु जेम्व णउ सिज्जइ　　तेम तणय वसुमइ पालिज्जइ।

घत्ता—इय भाविउ सिक्खाविउ चक्कवट्टिलच्छीहरु ॥
णियजणणें णं तवणें वियसाविउ कमलायरु ॥ १२ ॥

---

४ MBP सुफरसु भासेवउ. ५ MBP रोसुप्पण्णु वसणु णिहणेव्वउ ६ P adds after this line णिच्छउ मइ हियवइ संभाविउ ७ MP चित्तु

12 १ MBP णेरंतरु २ MBPK दीणें ३ M कयमाणें ४ MBP दुग्गासिए समाणु जि किज्जइ

---

10 *a* रोसुप्पण्णउ वसणु तिहेयउ अन्यायेन द्रव्यनाश, तीक्ष्णदण्ड, परुषवचन चेति रोषोत्पन्न त्रिभेद व्यसनम् 11 *a* भरेण आतिशयेन 12 मुइ मुञ्च

12 1 एक्कतरिउ एकदेशान्तरस्थ राजान मित्रम्, णिरंतरु समीपस्थ शत्रुम् २ तासु महंति मंतु तस्य शत्रो भिन्दन्ति मन्त्रम्, लिंगधारिणो विविधवेषधरा 5 *a* विग्गहु संग्राम 6 *a* दुग्गासिएण समाणु दुर्गाश्रितेन सह संधि क्रियते, *b* पडिवक्खत्तु शत्रुत्वम् 9 *b* रायाइल्लउ अनुरागयुक्तम् 10 सुहि सुहृत्. 11 *b* वसुमइ पृथ्वी 13 तवणें सूर्येण

13

रचिता—गुणमणिकिरणसरपसमियतुम्मपतिमिरमेक्कमो ।
हुउ वासवपवयममलसिपविहुयघाय वयणमीकसो ॥ १ ॥

पम्मत्पेसु कुसलु देवंसिउ तिपमियमहुरमासि पियसंसिउ ।
मपिसुणु वहुपम्मु वरूसणु सुर सुपीव वसवंतु महासणु ।
मेरुगिरिहरु समत्तु किचिसिरि सहसुयम्मपुणि अमबंरिउ ।
दूपमोव मईसरमुत्तउ पुरिसण्णउ पसण्णु गुणमत्तउ ।
पिउ संमेरणसीलु पिम्मलयरु सपेक्खु मसिमसिउ मरहारु ।
मूलमस्तु मेहावि सपावउ किं वम्मिवइ मारुयावउ ।
पुणु सम्मत्पपिमाणइ मापउ वसहसेणु णामें संजायउ ।
वसवरदेपिति बीवउ पंकउ पुणु वि मवंतविजउ रिउमहणु ।
मवरु मणंतवीउ पुणु मचुउ वीरु सुवीरु मयकरिकेसरु ।

घत्ता—गोवमंगाइं चरिमंगाइं पुण्णपहावपरुण्णई ।
गुणहुत्ताइं सउ पुत्ताइं पयमाए उप्पण्णइं ॥ १२ ॥

14

रचिता—पवपवरपेपपवयमपकरपमपकसयपकाषपवसोहिया ।
समियसविसयविरसेविसपेरणि सीलसिरीपसाहिया ॥ १ ॥

धीय सयकवल कोमलगत्ती मणवयपीतिपिक्षिपयमत्ती ।
जसवासस्सरीरि संमूई चंभी णामें मवर वि हूई ।

13 १ GK have हुई for रचिता from this Kadavaka onwards to the end of the Sandhi. २ P पसमिय ३ B महसीहर ४ B संसरणसीलु ५ MBP सु. ६ B मसिमसिउ. ७ BP मवरु but gloss in P मचुर ८ MBP सुवीर ९ MBPT मयारु

14 MB °पयवयम° २ MB °सिरसेविसपेरणि ३ P सीलसिरी° ४ MB °साहिया.

13. 3 पम्मत्पेसु धर्मशीलो देवसिरः देवसमः 4 b महासणु महाशनः; 5 a मेरु गिरिहरु मेरुगिरिधरः; 6 a दूपमोव दूरमोगी शीघ्रमतिः; मईसरपुत्तउ श्रीमत्पुत्रः; b पुरिसण्णउ पुरुषश्रेष्ठः; 7 a संमेरणसीलु शमशीलः; पिम्मलयरु निर्मलतरः निर्मलगुणः; b मसिमसिउ अप्रतिहतः; 8 a मूलमस्तु मूलमल्लः मतिमान्; वम्मिवइ वर्मिपतिः 12 गयमेयए गर्भावस्थायामपि।

14 2 सविसयसि—समिया उपशमं नीता स्वविषयविरतेषु सेवकाः यया सा.

वियलियसोयहि भुंजियभोयहि　　पुणु वि सुणंदहि णंदियलोयहि ।
हुउ सव्वत्थसिद्धि परमेसरु　　हुउ मणहरु णं मरगयमहिहरु ।
सिसु अविपिक्कवंसर्सुच्छायउ　　बालउ बाहुबलि वि तहि जायउ ।
तुच्छबुद्धि अप्पउ अवगण्णमि　　पहिलउ कामएउ किं वण्णमि ।
गज्जमाणजलहरजलणिहिसरु　　फलिहपईहथोरकरपंजरु ।
पुण्णमियंकवयणु जसहलतरु　　सिरिफीलागिरिंदसमभुयसिरु ।
पुरकवाडपविउलवच्छत्थलु　　विससद्दूलपधु अवियलवलु ।
दलियासामयर्गलगलसंखलु　　णीलणिद्धमउपरिमियकुंतलु ।
तणुमज्झप्पएसि रइरंगउ　　अगॅ सहु जि अउव्वु अणगउ ।
वियडणियंबु तवविंबाहरु　　उच्छुचावजीयासंधियसरु ।

घत्ता—णवजोव्वणि जायइ घणि पंचहिं तेहिं पयंडहिं ॥
पुरथीयणु कंपियमणु विद्धउ कोसुमकंडहिं ॥ १४ ॥

15

रचिता—पसरियमयणजलणहुयरसवससुसियंगेहिं कालिया ।
विलवइ चलइ घुलइ सुहयस्स कए तहिं का वि बालिया ॥ १ ॥

का वि पलोयइ पयणियतुट्टिहिं　　मउलियललियहिं चलियहिं दिट्ठिहिं ।
का वि पएसु पडंती दीसइ　　का वि सविणय किं पि समासइ ।

५ M °गिरिवरु ६ MBP °सच्छायउ ७ MBP कामदेउ ८ M °गलगयसखलु ९ P °कोंतलु.
15 १ MBP चवइ २ MPK चलियहिं

7 *a* अविपिक्कवससुच्छायउ अपक्ववशवत्सुकान्ति 9 *b* फलिहपईह° अर्गलावत्प्रदीर्घ° 10 *a* °ण्ण मियंकवयणु पूर्णचन्द्रानन, *b* गिरिंदसमभुयसिरु गिरीन्द्रसमानोन्नतांस. 11 *b* विस° वृषभ, अवियलबलु स्थिरबल 13 *a* दलियासामयगलगलसंखलु दलिता आशामदकलाना दिग्गजानां गलशृन्खला येन 13 *a* रइरगउ रते रङ्गभूमि 14 *a* वियड° विकट°, तंबविंबाहरु ताम्रं रक्त यद्बिम्बीफलं तद्वद्रक्त ओष्ठो यस्य, *b* उच्छुचावजीयासंधियसरु इक्षुचापप्रत्यञ्चासंधितशर 15 पचहिं तेहिं तै पञ्चभि पुनै, कामपक्षे, स्तम्भनमोहनशोषणकर्षणवशीकरणै 16 कोसुमकडहिं पुष्पमयैर्बाणै

15 1 °मयणेत्यादि– कामाग्निना जनितो यो रस प्रेम तद्वशेन शोषितानि दग्धानि अङ्गानि यस्या, अत एव कालिया श्यामवर्णा 2 घुलइ पतति, सुहयस्स कए सुभगस्य कृते 3 *b* मउलिय° मुकुलित°, सलज्जतया किंचित्सकुचिताभिरित्यर्थ

का वि भणइ दिवउ मासिंगणु जइ महिसेहइ भेरउ मंमणु।
ता हासइ तुइ तावइ करी भाण सुरिंदमणि जवरी।
अंचलि पीसमाणइ विसम्भइ क वि मोहमामिणय लहिं मग्गइ।
कंगाहरणइं दप्पणिरत्तउ का वि दर कंकणु कहिमुत्तउ।
हम्मायणपम्म भिणइ मणचिंती क वि आमावइ सालउं देती।
क वि ललुवे पाय पक्खालइ पूणइ जुम्मु तहु ण णिहालइ।
दोरि विरंविंड कं वि मीमूणइ मइ मण्णंति पियह सिसु कूवइ।
काइ वि आपंतिर मणरजउ बप्पु भणिवि परि मंडसु बजड।
काहि वि चोचीपंथणु हसियउ पेम्मसामिसु ऊरुपसि गमियउ।

घत्ता—घर मज्जउं करगहउं का वि देह करि पेसइ॥
उहामें हय कामें संतावित सयलु वि पुरु॥ १५॥

16

दुवित—कुसुमपमसयणमोहमाणुम्माहवीणाहरवणपसिरं।
हसिवमणिव वंदंति एमीयइ कस्स सिपेहविलसिरं॥ १॥

किह किह सुंदरु खेलइ दम्मइ गिह तिह हियवउ हरइ वरम्मणि।
सोमेमु सुरंसणु पसु कुमारउ पेम्मगिरि बाहुबलि कुमारउ।
काइवि कउ कवालि कउ कोमलु हणुवंतिम कवत सरकोमलु।
काहि वि विरंहविरिं परखिउ पसु पवणु वि कमसु हुवउ चीणुप्पसु।
सहइ कामु मड्डसमयागमणें विहप का वि पियसमयागमणें।

१ MBP मेम्पीर ४ MBP पमु ५ M खिलेण ६ MBP चोर ७ B कर्णिमीमूणइ ८ P कसमामाहि
16 १ B हरि २ MBP सेमु ३ P पिरहविरिं

5 b बेहेसइ मुखति 6 b आत्र वस्त्र 7 बेढेणवड (स्वामी 8 a दवगिवदतं एतयासिम् 9 a वदनिची स्वकान्तमया, b सादई ललितम् 10 b पूणइ पश्यति प्रोक्षमिणि वसी दृति 11 a मीपूणइ मम्मले b पिवदशिशी 12 b बजउ कुक्कुर: या मममार्ज 14 वदने
16 1 वीणाहरव॰ मीणारावितान 2 हसिवमणिवदहति वणिजस्त्रीणां कुमारविकं न वन्दते 3 b बहम्मणि पुरुदकोमलरवा 4 b कुमारक की हरिमाशे मारः स्वा 5 b सर कोमलु सरोमरम्यम् 6 a विरहविरिं विरहाग्निना वपरिवक्ष मम्मवितदपम्, पसु पवलम् 7 a मड्डसमयागमणे वसन्तागमनेन, b पियसमयागमणे पत्यो चीन पतम स्वपोच विवमिने कुमारवीपोषकोर्ति पर हेय प्रियसमये आगमनेन वा

मउलिय फुल्लिय मल्लिय काणणि मंडणु देइ पुरंधि ण काणणि।
णिग्गय पल्लव णवसाहारहु मुयइ तत्ति विरहिणि साहारहु।
पइ मेल्लेप्पिणु लवइ व कोइल सुहयत्ते किर भूसइ को इल।
मुहमरुपरिमलमिलियसिलिम्मुह जे ते णं कंदप्पसिलिम्मुह।
का वि चवइ पिय हउं तुह रत्ती अज्जु गइय महु दुक्खें रत्ती।
का वि भणइ पिय करि केसग्गहु वियलउ मालइकुसुमपरिग्गहु।
का वि कहइ लइ चुंबहि वयणउं अवरु म देहि किं पि पडिवयणउं।

घत्ता—णउ मेल्लइ क वि बोल्लइ म करहि काइं वि विप्पिउ॥
घरु वित्तु वि णियचित्तु वि सयलु वि तुज्झु समप्पिउ॥ १६॥

17

रचिता—क वि रुणुरुणइ किं पि सुइसुहयरु मणरुहविसिहसल्लिया।
पिययमवयणकमलरसलंपडि तरुणीमहुयरुल्लिया॥ १॥

जो सूहउ महिलहिं माणिज्जइ कंदप्पु जि पुणु कहु उवमिज्जइ।
गब्भि सुणंदहि रूवरवण्णी तासु वहिणि अवर वि उप्पण्णी।
णवजोव्वणि चडंति सा छज्जइ चंदु कलंकें वयणहु लज्जइ।
रत्तुप्पलु पयसोहइ जित्तउ तेण वि अप्पउ सलिलि णिहित्तउ।
भूवंकत्तणु थणथड्ढत्तणु अहरहु केरउ अइराइत्तणु।
पडिआयहं दंतहं धवलत्तणु जणमारण णयणहुं मि चलत्तणु।

४ B मल्लु ५ K सिलीमुह ६ MBP म किं पि देहि
17 १ M अइरत्तत्तणु, BP अइरायत्तणु

8 *b* ण काणणि का स्त्री मण्डन न ददाति आनने मुखे, अपि तु सर्वा ददाति 9 *b* साहारहु स्वाहारस्य, अथवा साहारहु हारस्य 10 *b* इल पृथ्वी 11 *a* °सिलिम्मुहु भ्रमर, *b* °सिलिम्मुहु बाण 15 विप्पिउ विप्रियमनिष्टम्

17 1 रुणुरुणइ सकाममव्यक्तशब्द करोति, मणरुहविसिह° कामबाणा 2 तरुणीमहुयरुल्लिया तरुण्येव मधुकरी भ्रमरी 4 *b* तासु बाहुबले 6 *a* पयसोहइ पदकमलशोभया. 7 *a* थणथड्ढत्तणु स्तनकठिनत्वम्, *b* अहरहु अधरो दरिद्र ओष्ठश्च, तत्र दरिद्रेऽतिरागित्व दोष, ओष्ठे तु गुण. 8 *a* पडिआयह पूर्वमेकवार पतिता पुनरुद्गतास्तेषां दन्तानाम्, पक्षे पराजयात्प्रत्यागतानां धवलत्व कथम्

तुम्बीफलसाविहि गंभीरिम कासिहि भवउ थियंथइ थट्टिम ।
पंचविसोमएण सबंगु परिबंधइ परमेमघिरत्तु ।
सीसाकडकेसकुडिलत्तणु पुरिसोवरि माणसकडिलत्तणु ।
विज्जोदइ मयणें भसमेदइ मग्गु भमंतइ ण हुय दुम्मइ ।
तुंगपयोहरविसुद्धियथणथण कक्खारायविसोसिय कक्खण ।
सिसिय तेहिं जाइं मइ सीसइ रोमराइ जवकेलि ण दीसइ ।
एम सव्वें जगणारिहि सुंदरि जाणिवि तीए कोविस सुंदरि ।

घत्ता—पडुसव एमपुरउ सह उमपई तुर पूर्वेण ॥
कमठोड्डिहिं परमेट्ठिहिं आयउ भत्तुपमरतउ ॥ १७ ॥

18

दुवई—जयजयरवमणहरबमुहम्मि महारिसिवंसमहया ।
बहुसुपणियरवरपरिभमइ जाया सयलवंसया ॥ १ ॥

भावें णमसिवि पणवेप्पिणु णाहिणरामकरेहिं विसेप्पिणु ।
देहिं मि विम्मलकंचणवण्णइं मयणएमकियाइं कलियइं कण्णइं ।
जत्थे जहेण वि सोहियउ णदु भणइ धुणिहु कम्मुहउ ।
णमइ पायउ पुणु भणइसउ विरउ कण्णाइउ सयलंसउ ।
सत्थयच्छाविउ सेमाणियइउ णाउउ भणयाउम कौहरियउ ।
णयिणइउ णाहाइउ णयिणउ गेयवजलणयणु वि सिरिपियउ ।
यंसे सइं अक्खाणियउं थे सिह कुमिरपियुणयें सुभियउ तं तिह ।

१ M कणीसमयल २ B ताइएं. ४ MBP सीयइ

18 १ MBP "सिर" २ MBP णमि सिमयउ ३ MBP णयसइ ४ MBP सिणयणु जणणु
५ MBP कुमरो"

9 a तुम्बीफलसिहि तुम्ब फलस मयुरसम्पं तसिमणनसमशियल गम्भीरिमा पीणो कामेषु तुम- 10 b रविबंघइ [illegible] 12 a जयमेदइ [illegible] 18 a [illegible]
15 b [illegible]

18. 1 [illegible] 2 [illegible] 5 b [illegible] 6 a [illegible] 7 a [illegible] 8 a [illegible]
9 a [illegible]

सुयहं महंतु कहतु अणेयइं विण्णाणइं णाणइं बहुभेयइं ।
एम भडारउ अच्छइ जइयहुं भग्गी पय दुक्कालें तइयहुं ।

घत्ता—अविवेइय घरु आइय चवइ जिणेण णिरिक्खिय ॥
पहु दहविह सुरमहिरुह अवसप्पिणियइ भक्खिय ॥ १८ ॥

19

रचिता—सयमहवियडमउडतडमणिगणवियलियविमलवारिणा ।
धुयकमकमलजुयल परमेसर पइं मि महारिवारिणा ॥ १ ॥

कप्पंघिवविणासि संहारहु णउ परिरक्खिय भुक्खामारहु ।
जिण्णइं अंवराइं मलमलिणइं कालें विहडियाइं आहरणइं ।
तणु लायण्णु वण्णु परिल्हसियउ जढरहुयासें रुहिरु वि सुसियउ ।
लग्गणखंभु अण्णु को अम्हहं एवहिं सरणु पइट्ठा तुम्हहं ।
असणवसणभूसणसपत्तिहि भवणजाणसयणासणजुत्तिहि ।
णिहिलकलाविसेससंपत्तिहि करि णिम्मिंत असेसहि वित्तिहि ।
तं णिसुणेवि जायकारुण्णें देवें पउरणाणसंपण्णें ।
करिसणकरणु धरणु मयाणिवहहं हरिकरिमेसमहिसविसकरहहं ।
पहु घहु भोयणु भायणु रंजणु घरु पयणविहि पीढु मणरंजणु ।
सेज्ज सरीरताणु जलधारणु हारु दोरु केऊरु सकंकणु ।
असि मसि सिप्पु वि जं जिह जेहउ अक्खिउ लोयहु तं तिह तेहउ ।

घत्ता—परमेसरु सुंधरियधरु आइपुरिसु कमलासणु ॥
जगु पेसिवि संतोसिवि पालइ खत्तियसासणु ॥ १९ ॥

19 १ MBP ° दारिणा २ MB सघारहु but PGKT सहारहु ३ MBP को वि ण उ अम्हहं ४ K णिप्फत्तिहि ५ P णिम्मत ६ K °सपुण्णें ७ M °वस° ८ MBP परियणु वि ९ MBT जलवारणु, but T records a *p* जलधारणु and remarks 'जलवारणु छत्रम्, अथवा जलधारणु वापीकूपतडागादिकम्' १० MBP सुचरियधरु

11 *b* पय प्रजा

19 2 पइं मि त्वयापि, महारिवारिणा महादुःखनिवारकेण 3 *a* सहारहु प्रलयकालात्, *b* भुक्खामारहु क्षुधामरीसकाशात्. 5 *a* परिल्हसियउ हीन जातम्, *b* जढरहुयासें जठराग्निना 6 *b* एवहिं इदानीम् 8 *b* वित्तिहि जीविकायाम् 11 *a* रंजणु अलजल अलिंजरो वा, *b* पयणविहि पचनविधि 12 *a* सरीरताणु कवचादिकम्, जलधारणु छत्रादिकम्, 14 सुधरियधरु सुधृतभूमि

20

दविदा—मवर वि मणिय वणियवर इयवर सुयरियकरीयफुक्कयहा।
जड परिमेविपयम्म वेडाव वि पमविपमिविहपेसुयहा ॥ १ ॥

सेवय ओलग्गय कुंभार वि तिलपीलय मालिउ चम्मार वि।
जोहिं जं वि विपक्कसु पयासिउ ताहं ते वि कुलदेवें भासिउ।
पल्हव सेंधव कोंकण कोसल धक्का हीर कीर खस केरल।
अंग कलिंग मंगे जालंधर जम्मउ जवण कुरु गुज्जर बव्वर।
दविड गउड कण्णाड वराड वि पारस पारियाय पुण्णाड वि।
सूर सुरट्ठ विदेहा ववर वि कोंग वंग मालव पंचाल वि।
मागह कोट्ट मोट्ट पेमाल वि कड्ड पुंड हरि कुरु मंपाल वि।
हेमाउसामुम्मय ससरिल घाहारण मच्छ पर संभव।
णिरिहम्मसरिणुगोहिं दुसंचर मउरवेस वसिकमचर सचर।

घत्ता—धरपरिणीहिं वणाहरिणीहिं महि सोहइ जरयासिहिं॥
कवेगामहिं आरामहिं देसहिं पदुकोसहिं ॥ २ ॥

21

दुवई—जड़विहगोयरां जड़दारं कमरं भूमिभूसणो।
कारावइ पुराइं पुरसंबयिणो सुरविण्णपेसणो ॥ १ ॥

---

20 १ K पविदविय° २ P °सुणिया, MB °पहुला ३ MBP पं. ४ MBP वव्वर. ५ MBP मा ६ MBP पणिस्सर. MB कसणाविहि MBP सोसहि

21. १ MBP call this couplet दविदा; GK call it दुवई which it is २ MB दुसर° ३ B सुरवरविण्णपेसणो

---

20 1 सुणरिय° सुचरिता सम्बमा; °सुकयहा सुकर्मणां 2 परिमविपयम्म सर्वसमीपा पवसिवमिमिहपदुपहा अवसिविमलमतस्य 8 अ सेवय किकरी सेवका 10 हेमाउसामुम्मय पेमपहियतिपपपसा वपिण सपीवमावेसा विप्पभणणा; ३ धाहारण सपीवमतिपलिय मेयहणा मा विवसणा; 11 ३ मउरवर वसरे मिधे वसिरा 12 महवरिणहिं छामिसुं

21. 1 भूमिभूसणो भालिमण

खेडइ थियदुवासगिरिसरियइं कव्वडाइं महिहरपरियरियइं ।
पंचगामसयसहियमडवइ रयणजोणिपट्टणइं अउव्वइं ।
दोणामुहइ जलहितीरत्थइ संवाहणइ अद्दिसिहरत्थइ ।
सुणिरूवियसविणयसेवायर वइरायरपहुइ जे आयर ।
पयणियरायसुरिंदाणंदें ते रक्खाविय कुलयरचंदें ।
वण्णचउक्कमग्गु उवएसिउ दंडें दोसु असेसु पणासिउ ।
तिहुयणरायहु महिरायत्तणु कवणु ग्गहणु तउ ःणुयपहुत्तणु ।
कम्मभूमिसंपय दरिसंतहु कणयरयणधारहिं वरिसंतहु ।
पुव्वहुं वीस लक्ख गय जइणहु वड्डु पट्टु जगणाहहु तइयहु ।
णाहिणरिंदामरसघायहिं कच्छमहाकच्छाहिवरायहिं ।

घत्ता—सिंहासणि णिवसासणि आसीणउ परमेसरु ॥
जयसिरिसहि पालइ महि बहुहलहरउवणीयकरु ॥ २१ ॥

22

रचिता—हयमलचरणकमलजुयणिवडियविसहरखयरभूयरो ।
अकलुसतियसतरुणिकरपल्लवचालियचारुचामरो ॥ १ ॥

भोयविरामि छुहवेविरतणु उड्डियकरयलु णीसेसु वि जणु ।
घरि उच्छुरसु पियहु जेणायउ पहु इक्खाउवसु तें जायउ ।
सोमप्पहु कोक्किउ कुरुराणउ सो जायउ कुरुवंसपहाणउ ।
हरि हरिकतु कहि वि हरिवसहु कउ पुरिमिल्लु[1] पुरस्सु सपससहु ।
कासवु मघवु भणेप्पिणु घोसिउ उग्गवसेमूलिल्लु[2] पयासिउ ।
अवरु अकंपणु सिरिहरु भाणिउ णाहवसि सो पहिलउ जाणिउ ।
चोद्दहमयकुलयरा[3]पियणदणु मरुएवीमणणयणाणदणु ।

४ MBP °गाम° ५ K कुवलयचदें
22 १ MBP पुरमिल्लु २ MBP उग्गवसु ३ MBP चउदह°

8 *a* दुवास° द्विपार्श्व° 5 *b* अद्दिसिहरत्थइ पर्वतशिखरस्थानि 6 *b* वइरायरपहुइ वज्राकरप्रभृति, *a* आयर आकरा खनय 7 *b* ते आकररत्नानि 14 उवणीय° उपढौकित°
22. 1 हयमल° हतमल परमेश्वर, °भूयरो मनुज 6 *a* हरि हरिनामा पुरुष, हरिकतु कहि वि चन्द्रवत् कान्त इति भणित्वा, *b* पुरिमिल्लु आद्य 7 *b* °मूलिल्लु प्रथमपुरुष

फणिवइसिरमणिदिप्पपयपेरंत सकलसयल सपुत्त संतेउर ।
कहियणोरेसरकुमरि विराइउ पभणइ एम्व करेंतु महाइउ ।

घत्ता—एम पयासइ दसवाउ णायसमग्गु भाभासुरु ॥
सिरिभरहें सहुं भरहं पुप्फयंतु रिसहेसरु ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे आइदेवमहारायपट्टबंधो णाम
पंचमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ५ ॥
॥ संधि ॥ ५ ॥

४ M °णोरुपुडेहिं E णोरुपुडेहिं

11 कहियणरेसरकुमरि पूर्णीकृतकलशराजपुत्री ; b महाइउ महार्घ्य· 18 सिरिभरहें श्रीभरतेन.

VI

अण्णहिं दिणि रमयणि सुरवरगिरि मउडु सयवयगारउ ॥
फणिणरसुरयहिं मणुयहिं संथियउ णिउ अत्थाणि भडारउ ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

I

मलयविलसिया—कंचणघडिया मणिगणजडियइ ।
हरिवरधरियइ पहरिसकुरियइ ॥ १ ॥

आसणि आसीणउ परमपहु अमरहिं किं वण्णिज्जइ तिम्महु ।
तिण्णइं चाउरिपट्टासणइं मुणिवित्तिदित्तयेत्तासणइं ।
रयणंचियाइं सोहासणइं रुंदुण्णयाइं रुंदासणइं ।
पक्खेवय पाहणा सोणि मिलिय ताहिं आणिमण्ण वहु मंडलिय ।
कु वि णरवइ धुसिणें समलहिउ ण सिरिरंगामिणिराएं गहिउ ।
कु वि दीसइ चंदणधूसरिउ पंडुरु णं णियजसेण भरिउ ।
मयणाहिविलित्तउ को वि णरु णं गिरिविभीयउ धरइ व तिमिरु ।
णिवि धवलहिं मि घुलइ हारावलिय कसणइ ण जलहरि विज्जुलिय ।
कासु वि पडंति चमरइं चलइं ण खित्तिभुभिणिणिहि सयदलइं ।
कप्पूरधूलिधवलुज्जलइं रुणुरुटइ तहिं महुयरु घुलइ ।
सो केण वि मंतु णिवारियउ तंबोलहु पाणि पसारियउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza

श्रीसंतेव्यै कृष्णा मार्वेयी देहि सत्त लक्ष्मी ।
भरतमनुगम्य यांत्रासमनयोरात्यंतिक प्रेम ॥

GK do not

1 १ MBP चाउरिविसालाणइं २ MBP मुणिदित्तवित्तपहासणइं ३ G माणमिलिय ४ MBPT कु वि णिवरु

1 1 सभयणि स्वप्रासादे, सपयगारउ गणतिमारक 2 अत्थाणि आस्थाने सभायाम् 4 *a* हरिवर° सिंहवर, *b* पहरि° प्रमया 6 *a* चाउरि° गादीति देशी 7 *b* रुंदुण्णयाइं दण्डवदुन्नतानि 8 *b* संणिसण्ण उपविष्टा 9 *b* सिरिकामिणिराए लक्ष्मीप्रेम्णा 11 *a* मयणाहि° कस्तूरिका 12 *a* निवि रूपे, *b* कसणइ कृष्णशरीरे मेघे 13 *b* खित्तिभुभिणिणिहि कीर्तिरेव शोभना पद्मिनी तस्या, सयदलइं पद्मानीव 14 *b* रुणुरुंटइ शब्दं करोति 15 *a* सो भ्रमर

घत्ता—जगसामिहिं कोमिहिं मयणहि वि वंदारयवंदियपयहिं ।
पयवंतहिं संतहिं रामियहिं जहि विरोहु मणिकिरणहिं ॥ १ ॥

2

मलयविलसिया—जत्थ णिसण्णो पणयपसण्णो ।
णिग्गयराउ णमामियराउ ॥ १ ॥

णियमीति जत्थ जहिं मणिवर कढ्ढियहर परेयविहारयर ।
पहुमम्मइ सेवागमणयरं पिहुविवणु विमणु पहसणयरं ।
कमर्कपणु महु णिहालणउं हिंकारउ मेंठहालणउं ।
वासणु पणिणामिणयरं करमोडि पयासणयरं ।
मयठमणु एणयसणयरं महकंपणु सगुणपरंसणयरं ।
सवियारउ कायणियणणयरं हुयमणेवडुग्गुंछणयरं ।
सेकेयणपयणयारणउं पयणिवणु पायपमारणउं ।
मयर वि कं णियपं विगहियउं ण म कीरइ पुरुयणगरहियउं ।
मण्णइ मोणुसु सामिहि तणउं इंधणु दीपयणु मण्णणउं ।

घत्ता—इय लच्छिउ भच्छिउ सेवणो महिमोमिहिं वहु चमरउ ।
इयपारियपेरियवरुइ या जिणउ वडु भगवं ॥ २ ॥

3

मलयविलसिया—सुरयरसारउ पम मडारउ ।
मण्णइ जोवहिं सुरपइ गोवहिं ॥ १ ॥

---

५ MBP कामिहिं कामिणिहिं ६ P वहिणिहिं
2 १ MBP वर° २ M मउहा° ३ M कएहिं, BP वएहु ४ MBP वाणणु. ५ MB वाहि माणहिं
3 १ MBP वड्ढइ २ MBP तड्ढइ

---

16 कामिहि देवस्त्रीणां कामके दारतव° देवा एव वन्दिता है 17 रहमियहि प्रीतिभूतैः
2 8 a नियमहि निर्मलानि b कढ्ढियहर कर्षिता 5 महु मिहालणउं मालावलोकनम्; b मउहा° मू 9 a वडेव° लोच 11 a मण्णइ मन्यते 12 महिमा भिहि वहुणवड गहकारिणी जल पाव न हु तथा

संचिंतइ अवहीणाणधरु वारहगविसंणिरकुलिसयरु ।
पुव्वहं परमेसरेण रमिय कुमरत्तें पीम्म लक्ख गमिय ।
भुंजंतहु महि तेसट्ठि गय अज्जु वि अवलोयइ चवल हय ।
अज्जु वि माणि मण्णइ मत्त गय इच्छइ अज्जु वि संदण सधय ।
अज्जु वि घेरि रइ किंकरणिवहि अज्जु वि ण विरप्पइ कामसुहि ।
को हुयवहु इंधणेण धवइ सरिसलिलें सरिणियराहिवइ ।
को भोएं जीवहु करइ दिहि वलेंचनउ सव्वहु कम्मविहि ।
जाणंतु वि मुज्झइ देउ जहिं अण्णाणु अवरु किं भणमि तहिं ।

घत्ता—रइराविउ भाविउ एउ जगु किं पि ण याणइ जुत्तउ ॥
सफलत्तहिं पुत्तहिं मोहियउ णिवडइ हेट्ठाहुत्तउ ॥ ३ ॥

4

मलयविलसिया—दुट्ठे धिट्ठे इज्झागु तिट्ठे ।
ण तुह धणेण तित्ति इमेण ॥ १ ॥

अज्जु वि णउ फिट्टइ मोयरइ अज्जु वि णउ चिंतइ परम गइ ।
अज्जु वि पहुहियउ णउ उवसमइ माणन्तरमणीरमणउ रमइ ।
सरणिहिसमाहं मइ पयडियउ अट्ठारहकोडाकोडियउ ।
णट्ठाइ धम्मकम्मतरइ दंसणणाणइ चरियइ वरइं ।
आयारइ पंचमहव्वयइ अणुवयगुणवयसिक्खावयइ ।
ण पयासइ णवपयत्थसहिउ सिद्धंतु अणाइ अरुहें कहिउ ।
इय चिंतिवि इदें जाणियउं अवहिए भवियव्वु पमाणियउं ।

३ MBP रइ घरि ४ B °णिवहो ५ B कामसुहो ६ M सरणियरा° ७ MBP सव्वह वलवतउ ८ MBP जाणतउ ९ K एहु १० MBPK एम ११ MP ण जाइ, B ण जाणइ १२ MBP हेट्ठाहुतउ

4 १ MBP ण उवसमइ २ T सरिणिहि° ३ B Omits this foot ४ MBP °महावयइ ५ MB अरुहकहिउ

3 6 *b* सदण रथा 7 *a* किंकरणिवहि सेवकसमूहे 8 *a* धवइ ध्मापयति, *b* सरिणियराहिवइ समुद्र 9 *b* कम्मविहि कर्मप्रकार, कर्मैव विधाता 11 राविउ रञ्जितम्, भाविउ पुन पुन प्रकर्षं नीतम्

4 1 *b* तिट्ठे हे तृष्णे 5 *a* सरणिहिसमाह सागरोपमानाम्

काहडु मज्झु वि करिसावरडु पुरु जिणवर गोयरु तवचरडु ।
पुण्णोदएण भीमंकस णरहु गयजीविय जाइ समाइ पउरु ।
तो हाइ पियाणु काएणउ इह दुक्खु संसारसुहकारणउ ।
जिणधम्मपयासणु होइ जये इय संभरेवि पुणु पुणु वि मणे ।

घत्ता—पीभंकस एववस मुणिवयण हवें भणिय मणिवहो ।
तुहुं गच्छहि पेच्छहि कमलपमु वयणि पुरउ जिणिंदहो ॥ ४ ॥

5

मलयविलसिया—ता तुंगमणी सयमहरमणी ।
रयणमयघरे साकेयपुरे ॥ १ ॥
मणमा वहेण भउमोयरिय [illegible] भाई मलविप्फुरिय ।
पोसहियपाणसुरएरियरिय काहेवमिलेहणमि मययरिय ।
पणवेप्पिणु पहु मोक्खभिपय पेक्खंसयहु मयसर माभिवय ।
जारपयपाएम पउमु माणिउं णीसंगु वि पुण्णरंगु वणिउ ।
णारयउ विपुल्लउ सुंदरउ सुपसिद्धउ लोयमणहरउ ।
णयमग्गु दुक्खगु [illegible] तिपविभउ तिमयउ मणहरणु ।
तिमियउ तिप्पाउ तिभोपेयउ तिघरियउ पंचपाविपहउ ।
तिपयाउउ मयउ तिमयमउं णीसासंसारउवमयवयरं ।
मणुपउमाहि मैविउ पपहिं गुणेहिं मयवंकियउ ।
णयरय माणिउं पुणु णायरह संपिमयपुणु वि मणहारि कुरु ।
इय ताकोहिं ढीहिं मणंवरिउ वहुमहि सम्मेयहि परिपरिउ ।
वसुहारीहिगिरवसंविमउं सोहवारं वज्ञारं वाप्पियउं ।

१ MBP लक्खाउ P दुक्खाउ ४ P तो ५ MBPK इय but G इय with gloss [illegible]. ९ MBP [illegible]

5 १ MBP पमहि मायव° २ MB पेक्खणी. ३ MB तिमयउ ४ MB तिपाउ; P तिमयउ; T तिमयाउ. ५ MBP तिबोपेयउ ६ MB सपिय हुपु; P सपियहु हुपु ७ MB ताकहि

10 b पुरु जुवं जिनवेन विभवउ वशीयकम चाहि 12 b दुषि द्वु तत्कट्टु (पिबन्धनम) समानमाय [illegible] मिथयन्नमाहदवना 13 b तं सवरो मि जिनव्रिया 14 मुण मथण दुवनिनी; भणि दरो एरीकस

5 1 b तयमहरमणी एमाणी 3 a वदमोयरिय वानीति 5 a मोव विवय [illegible] 14 b मोव वेदना रि—एवमुणो वसवर सरं तत [illegible] भणि जना कर्म शासिरकरीत मेरि.

घत्ता—जहिं लोयण तिहुअणु जलहिसम सुहसखाइ सुललियहिं ॥
चलवद्धहिं अद्धहिं मुक्कियहिं वत्तावत्तंगुलियहिं ॥ ५ ॥

6

मलयविलसिया—विरईपुसिरे	घंझे सुसिरे ।
णेकयपससे	जायउ वंसे ॥ १ ॥

सरु जेत्थु झुणंति सुअत्थसुइ	थिय मुक्कंगुलि य सुअट्ठसुइ ।
कंपंतियाइ उग्गमु तिसुइ	मुक्कगुलियइ हूयउ दुसुइ ।
वत्तंगुलि मोक्खवसेण कय	संहु सज्जें मज्झिमपंचमय ।
सरिसहु धेवउ कंपातियए	सामण्णसरंतरसंणियए ।
गंधारणिसायविचेलिययाइ	अद्धइ मुक्कइ अंगुलिययाइ ।
पयणियवेणू णाणायरेहिं	तुंबरुणारयसंणिहसुरेहिं ।
पयडियउ जि देवागामि भाणिउं	णिक्कलु तेप्पु वि तंतीराणिउ ।
घणु कसतालजुयलाइयउ	समहत्थु देवि जेहिं चालियउ ।
अमरहिं जिणमणसंमाइयहिं	पारद्धउ गेउ महाइयहिं ।
उप्पण्णउ उरठाणंतरए	वावीस सुईउ णहंतरए ।
कमरइयपमाणहिं संछिवइ	वड्ढंतु णाउ सुइहिं थिवइ ।
सुद्धसु वि स रि ग म प धें णी यणाम	सर सत्त तेसु दोण्णि वि जि गाम ।

---

८ MBP चवलद्धहिं, T चवलद्धहिं but explains it as स्थितमुक्ताभि

6 १ MBP विरइयपुसिरे २ MBPT वज्जियसुसिरे ३ MBP णिकयपसंसे ४ MBP जाओ. ५ MBP जेसु ६ P सुअत्थवई ७ BP कपांतियाउ ८ MBP उग्गउ ९ P सहुं मज्झें. १० MBP धेयउ T धइवउ. ११ M सामण्णें सरतरसंतियए, B सरतरसनियए, सरतरसणियए १२ M विचलियाइ, B विच-लियाइ, P णिचलियाइ १३ MB अंगुलियाइं, P अगुलियाइ १४ P तिपुव्वि १५ MB समहत्थ १६ K सचालियउ. १७ P जिणसमण° १८ MBP वावीस वि सुइउ १९ MP °पधणीसणाम, B °पधणिणाम

---

16 व त्ता व त्त गु लि य हिं उक्तविशेषणविशिष्टाभिरव्यक्तव्यक्ताङ्गुलिभिः.

6 1 *a* वि र ई पु सि रे विरतिप्रोञ्छके, अनुरागोत्पादक इत्यर्थ 3 *a* स रु स्वर 5 *b* स ज्जें षड्जेन सह 6 *b* सा म ण्ण स रं त र सं णि य ए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्त 8 *a* णा णा य रे हिं नानादरैर्नानादरैर्वा 6 *b* णि क लु ते प्पु वि त ती र णि उ तन्त्रीवाद्य द्विविध निष्कलं त्रिपच (तेप्पु) 12 *b* ण ह त र ए आकाशे 13 *b* णा उ नाद

घत्ता—सुरपुज्जइ सज्जइ जिणवरहिं जायउ सेंसु पउत्तउ ॥
एयारहु सुयरहु मज्झिमइ पीणियसत्तजणसोत्तउ ॥ ६ ॥

7

मलयविलसिया—सत्तेयारह इय अक्खरइ ।
जाइविसद्दइं लक्खणविसुद्धइं ॥ १ ॥

अंसाइं सउ बावीसाहियउ पडुत्तउ तं पि पसाहियउ ।
तहिं हालउ सत्तरयणप्पियउ पहिलें पंच समप्पियउ ।
सुत्ता मिच्छा पुणु पेसरिय मउली साहारमिया सरिय ।
गहिं गामराय नवर वि माणिया मयवयसपगुणितसमाणिया ।
इय तीस कमेण जि संगहिय रहमाण ति माणमलपपाहिय ।
परिहारउ रंजयउ कहिउ मणुवेक्खासमगासहिं सहिउ ।
अप्पुहिं पंचमु वि पयासियउ सिरिं वि विहासहिं भूसियउ ।
भासाहियमोहियजगविसरु तिरोधउ परमासाविसरु ।
मालविकेसिउ सहि बुद्धियउ ममपहिं मि दोहिं मि अंकियउ ।
सुयरु सज्जु वि सतहिं कहिउ ककुदु मि तिहिं माणहिं संकलिउ ।

घत्ता—सुविसासहिं सरसहिं सिरिं सहिउ सो गायउ सुरसमियउ ।
मणहरियउ किरियउ दाविसउ जहिं परिगयपरिमाणउ ॥ ७ ॥

---

१ BP सुरसयउ

7 १ MBP सत्त मि सुयाई २ MBP पंचम पंचम ३ MBP कहिय ४ MBPT रयणत्त
५ MP सिरिं वेय विहासहिं, B सिरिं वेय विहासहिं

---

16 सुयरह स्वरैनाम् °सोत्तउ °कर्णौ

7 1 अक्खरैः सप्तैकादश च 2 जातिविशुद्धानि भाषाभेदविशुद्धानाम् 3 अंसाइ अंशकानाम्; 4 सत्तरयणप्पियउ सप्तस्वरा 5 सरिय स्वरा 6 मणुवेक्खासमगासहिं [illegible] 10 भासाहियेत्यादि—भाषाहिता [illegible] [illegible] [illegible] वेय एतस्यो हिंदोलरागः.

8

मलयविलसिया—दह चउगुणिया संखा भणिया ।
भासाण सा छह वि विहासा ॥ १ ॥

भणियउ रजियबुहयणमणउ पयारह दहवर मुच्छणउ ।
एकुणवण्णास वि ताण जहिं किं वण्णमि गेयारंभु तहिं ।
संजोय ताण वहुदिण्णरस णीलजस णच्चइ विमलजस ।
भणु कासु ण सा दिट्ठिहि भरइ णच्चंती जणहियवउ हरइ ।
तेरहविहु सीसु पणच्चियउ छत्तीस दिट्ठि परियच्चियउ ।
णवतारउ परिपालियरइउ अट्ठ वि रइयउ वसणगइउ ।
तेत्तियविहु पुणरवि भावियउ णंदप्पयारु फुडु दावियउ ।
भू सत्तभेय परहिययहर छव्विह णासा कचोल अहर ।
सत्तविहु चिबुउ[१] चउ मुहहु राय णव गल चउसट्ठि वि करण भाय ।
सोलहविहु तिविहु चउव्विहु वि किउ करणमग्गु भुउ दहविहु वि ।
उरु सरविहु पासजुयलु तिविहु पोट्टु वि पायडियउ त तिविहु ।
कडियलु जंघा कमकमलाइं तव्विहइं जि णिहियइं विमलाइं ।
सउ करणहं वसुसंखाहियउ चलवत्तीसंगहारमियउ ।
चउ रेयय णडगुरुकित्तिधय सत्तारह पिंडीवध कय ।
चारिउ सोलस दुअसंखियउ णच्चियउ जियक्खहिं अक्खियउ ।
वीस वि मंडलइं पंयासियइं[२] ठाणाइं तिण्णि सदरिसियइं ।

घत्ता—सचरियहिं धरियहिं थाइयहिं[३] भावहिं णडइ अणेयहिं ॥
भासाइहिं[४] जाइहिं णवरसहिं दावियणाणामेयहिं ॥ ८ ॥

8 १ MT विउउ, B चिवउ, GK चिउवु २ M पसासियइ, P पसाहियइ ३ MBP भाइयहिं, ४ K हासाइहिं

8 2 *b* विहासा विभाषा षड् भवन्ति 8 *a* परिपालियरइउ पोषितरागा 9 *b* णंदप्पयारु नवे नन्दाक्षेपा प्रकार 10 *a* भू भ्रुकुटी 11 *b* करण भाय हस्तानां भेदा 12 *b* भुउ भुज 13 *a* सरविहु पञ्चप्रकारम् 16 *a* णडगुरुकित्तिधय नटाना गुर्व्या कीर्तेर्ध्वजा 17 *b* जियक्खहिं जितेन्द्रियैर्गणधरैर्देवादिभि 19 थाइयहिं भावहिं स्थायिभावै रत्यादिभि

9

मलयविलासिया—विय जणहरिसें स हि पवमरसें ।
झत्ति भरंती विद्दु मरंती ॥ १ ॥

सिरिमइ ता भंजंसिय
कइवयदिहि तं पंगुसिय
जो थवि विहुमिय राहि पुरि
तं रंगसत्थारि पउमिणिय
जं चंदरहु मरि अप्पसिय
रमवादिहि दिव्ववत्थसुद
पउ थण भोवणुगुण पउ वयणु
पउ कलसमाह पउ हारभय
सुण्णउं पंगणु हरिणीवयणु
ममपाविष्याविरयणु सुयउ
हा हा मयंतु सोयं करउ
जं केण वि विहि किवि पुंसिय ।
कायपच्चतरंगिणि जं सुसिय ।
जं हय जगणयणमिवासविरि ।
कम्मण कामदवें सुणिय ।
ण सुरघणुसिरि मयणा समिय ।
जं भासिय पिसुणें सुक्कहिं ।
पउ विरमु रमणु संविपमयणु ।
पउ अप्पणु सुंदरि कहिं मि गय ।
जं विमुविवशिर मेहरयणु ।
तं पेच्छिवि कामवलु हुयउ ।
अप्पाणु असेसु वि विम्हरउ ।

घत्ता—तहिं मरण कंकणें कंपियउ मरहजमणु सविसउ ॥
गुणिहउ पकउ तिजगगुरु कुसुमयंतु रामुहउ ॥ ९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सिरिमंजसामिणिव्वाणो णाम
छट्ठो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ६ ॥

॥ संधि ॥ ६ ॥

9 १ MB कुसिय. २ MBP कहवदिव ३ MB हणुव ४ MBP करेवर° ५ MBP कव कर कव ६ M विहुउ B विमउ; P विविमाउ ७ MBP करवें MBP कुमकंत° and gloss in P कुसुमवल्ल वा कंवजन्म तस्य लोडुंक:

9 1 a G का पीमजग हि ल्हुयम पदमरउं पाणालम्; 3 a पुसिय प्रेषितम्. 4 a पंगुसिय प्रगुसिता a म द का परमेव 9 a अणहु अवने 11 a हरि थवो ह म सु एकादिशमसिक्खलम्. 14 a-सि व द उ मसियव 15 कुहु व प गु कुसुमनालो नाम तस्य कारिणः; ए ह सु द व लोडुंक.

VII

कयतिहुयणसेवें चिंतिउ देवें जगि ध्रुउ किं पि ण दीसइ ।
जिह दावियणवरस गय णीलजस तिह अवरु वि जाएसइ ॥ १ ॥

I

खंडयं—इह संसारदारुणे बहुसरीरसधारणे ।
वसिऊणं दो वासरा के के ण गया णरवरा ॥ १ ॥

पुणु परमेसरु सुसमु पयासइ धणु सुरधणु व खणेंद्धे णासइ ।
हय गय रह भड धवलइं छत्तइं सासयाइं णउ पुत्तकलत्तइं ।
जंपाणइं जाणइं धयचमरइं रविउग्गमणे जंति ण तिमिरइं ।
लच्छि विमल कमलालयवासिणि णवजलहरचल बुहउवहासिणि ।
तणु लायण्णु वण्णु खणि खिज्जइ कालालि मयरंदु व पिज्जइ ।
वियलइ जोव्वणु ण करयलजलु णिवडइ माणुसु ण पिक्कउ फलु ।
तयहि लवणु जसु उत्तारिज्जइ सो पुणरवि तणि उत्तारिज्जइ ।
जो महिवइ महिवइहिं णविज्जइ सो मुउ घरदारेण ण णिज्जइ ।

घत्ता—किर जित्तउ परबलु भुत्तउ महियलु पच्छइ तो वि मरिज्जइ ॥
इयँ जाणिवि अद्धुउ अवँलविवि तउ णिज्जणि वणि णिवसिज्जइ ॥ १ ॥

MBP have, at the commencement of this samdhi, the following stanza –

इहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसख्यानकर्ता
कोऽय श्याम प्रधान प्रवरकरिकराकारबाहु प्रसन्न ।
धन्य प्रालेयपिण्डोपमधवलयशोधौतधात्रीतलान्त
ख्याता बन्धु कवीनां भरत इति कथ पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

MB read इंहे for इहो, प्रचण्डाधनि° for प्रचण्डावनि°, and °सख्यात° for °सख्यान° GK do not give it

1 १ M reads खंडियं throughout २ T ससमु but adds सुसमु वा शोभनोपशमयुक्त ३ P खणद्ध ४ MBP तियहिं ५ B इउ ६ B अधुबु, P अद्धउ ७ MBP अवलवियभुउ but gloss in P तपो गृहीत्वा

---

1 3 *a* ससारदारुणे दारुणे ससारे 4 *a* वसिऊण उपित्वा 5 *a* सुसमु शोभनोपशमयुक्त द्वादशानुप्रेक्षारूपं वा 7 *a* जपाणइ पालखीति देशी 8 *b* बुहउवहासिणि पण्डितद्वेपिणी 9 *b* कालालि कालभ्रमरेण यमभ्रमरेण 11 *a* तृयहिं स्त्रीभि , *b* तणि उत्तारिज्जइ तृणे तृणसस्तारके तृणोपरि स्थाप्यते, मृते तृणोपरि स्थाप्यत इत्यर्थ 13 जित्तउ जितम् 14 अवलविवि गृहीत्वा

2

दुवई—वाहिरिउयरप्पहरणं किं जोयइ भुयपहरणं ।
मण्णइ अप्पाणं घण मरणविवज्जियं अयमियं ॥ १ ॥

जइ वि चवंति धीर धर किंनर मरुय वरुण सपवण वइसाणर ।
गरुड जक्ख रक्खस विज्जाहर भूय पिसाय णाय ससि दिणयर ।
परिमलकुसुमकामधणुकामस इंद पडिंदहमिंद महावस ।
पेम्माउरवहुमुहचुंबिरमुह कुसुमसर वासवाइ हरि हलहर ।
जइ वि धरंति देहेमा भासुर पवरउवइपणीय वणासुर ।
जइ पइसइ मयरहरब्भंतरि किंकरहरिकरिरहवरंतरि ।
सरसरियगिरिदरिकंदरकंदरि पुप्फवेढकुसुमसारंपसि पंजरि ।
वइरमयमंदिरपायारसमहिभूहर जइ पायालि णिलिप्प पयासइ ।
तो वि जीउ केण्हि वि काले हरिणा हरिणु व णिउदिज्जइ ।

घत्ता—एय बुज्झिवि असरणु रंभिवि तिपरणु तेण णरिंदु ण विम्हरइ ॥
तं माणुसजम्में णायविसेसें ममइ कलेवरु सुम्मरइ ॥ २ ॥

3

दुवई—मित्तसपणसंजोयणो होंतु होइ विओयणो ।
एक्को चिय जाइ जीयडो ममइ सकम्मविवसिमओ ॥ १ ॥

एक्कु वि जइ अण्णु जाणेसइ पुण्णउ सुहु सुहवि पुणइ ।
दुयइ कुमाणुसाणि दुहिहाणउ एक्कु वि जीउ जाइ पंचाणउ ।
एक्कु वि पसुहरइ सवरु वणतरि एक्कु वि सुरवरु मणिमयसुरवरि ।

2 १ MBP णम्मणम° MBP देव भामसुर. २ MBP कुसुमसरण° ४ MBP °रमयमंदिर. ५ M कलेवरु.
3 १ P संजोयण २ P विओयण

2 1 b भुयवइहरण भुज व प्रहरणं च. 2 अज अमरं अमरणं च b वव मिव हर जवण, 8 b व व व माविज्जमारि 6 a व व व र ह र° समुद्र ; b °भूईहरि मुक्तान्तरे 11 b हरिणा हरिणु व मिहिन वाम इव 12 तिपरणु मनोवाक्कायाः विम्ब इव अनुभवति 18 पा व तिमे मे नाणाविशेषेण समुत्रेण वा
3 1 b होइ भूया 2 b °विवशमो ह्यैव 5 a व ह उ ह व अनुचर ; b पुणइ वदिति; पुण्य वड पुण्यति 4 a पुनिहाणउ पुण्येण 5 a पसुहरइ तरवर अनुचरि विय ; b °सुरहरि °विमाने

अप्पउ पुण्णहीणु पडिवज्जइ सयमहविहवपलोयणि झिज्जइ ।
एक्कु जि णहि णहयरु थलि थलयरु एक्कु जि विलि विसहरु जलि जलयरु ।
एक्कु जि मृगजोणिहि[3] उप्पज्जइ परिहि[4] तलिवि पउलिवि खाणि खज्जइ[5] ।
एक्कु जि दूहउ दूसहु दुम्मइ णरयविवरि णारइयहिं हम्मइ ।
एक्कु जि तरइ मरइ वइतरणिहि चरइ जलणपज्जलियहि धरणिहि ।

घत्ता—एक्कु जि भवकद्दमि णिवडइ दुद्दमि रइसुहपंकयछप्पउ ॥
एक्कु जि तवताविउ णाणें भाविउ होइ जीउ परमप्पउ ॥ ३ ॥

4

खडय—इय णिसुणिवि एयत्तण गाढं णियमइ णियमण ।
एक्कु जि जीउ वरायओ सयलु वि अण्णु जि लोयओ ॥ १ ॥

अण्णहिं परमाणुयहिं णिवज्झइ अण्णु जि पिंडु गब्भि सवज्झइ ।
अण्णु जीउ अण्णु जि दुक्कियमलु अण्णु जि सुक्कियउ[1] अण्णु जि तहु फलु ।
अण्णहिं कुलि कलत्तु परिणिज्जइ अण्णु जि को[2] वि पुत्तु णिप्फज्जइ ।
अण्णु जि मित्तु सयजि[3] कयायरु अण्णु जि होइ सणेहउ[4] भायरु ।
अण्णु जि भिच्चु होइ धणलोहें जीउ तइ वि मोहिज्जइ मोहें ।
अण्णु जि भणइ महारउ मत्तउ णउ जाणइ जिह सयलहिं चत्तउ ।
अण्णहिं जंति खणद्धें रहवर हयवरगयवरचिंध सचामर ।
परमत्थें ण को वि जगि कासु वि एक्कल्लउ[5] जि जाइ पुहईसु वि ।

घत्ता—राएण णिवद्धउ इंदियलुद्धउ खुद्दु अण्णु जि महु[6] भावइ ॥
ससहाउ ण पेक्खइ अण्णु जि कंखइ जीउ महावइ पावइ ॥ ४ ॥

---

३ MBP मिगजोणिहि ४ M परिहि तलिज्जइ पउलिवि खज्जइ ५ B खिज्जइ

4 १ MBP सुधिउ २ MBP पुत्तु को वि उप्पज्जइ ३ MBP सकज्जि ४ M सणेहें ५ MBP एक्किल्लउ ६ MB जणि, P मणि

---

6 *b* झिज्जइ क्षियते 8 *b* परिहि परैर्विप्रै 11 एक्कु जि असहाय एव, °पकयछप्पउ कमले भ्रमर 12 तवताविउ तपस्तापित

4 1 *a* एयत्तण एकत्वम् 2 *a* वरायओ वराक , *b* अण्णु जि भिन्न एव, लोयओ लोकश्चेतनाचेतनपदार्थसघात 3 *b* पिंडु देह 4 *b* सुक्कियउ सुकृतम् 5 *b* पुत्तेत्यादि–आत्मा वै पुत्र इति वेदवाक्य मृषेत्यर्थ 7 *a* भिच्चु भृत्य 8 *a* मत्तउ विवेकशून्य 10 *a* पुहईसु वि पृथ्वीशोऽपि 12 ससहाउ निजस्वरूपम्, महावइ महापत्तिं महतीमापदम्

5

संदर्य—चउकसायरमरसियओ मिच्छत्तसंजमवासियओ ।
जायाजम्मु वियारए भामिउ संसारए ॥ १ ॥

नरयगईहिं उप्पज्जउ जायउं जागयणिपरिहिं वेमिवि तरयउं ।
सिसु सिसु छिदिवि सिरिहिं विहाउ कमारिउ घुमिउ वमिउ विपिवाइउ ।
वारवार पवारिउ जूरिउ विभुणरखतरवारिविवारिउ ।
पक्क वि मुपहिं तहिं पारंभिउ कढिउ दहिउ पयमाडिउ सिद्धंभिउ ।
मोडामिउ मामिउ ओणामिउ खुडि कपनयंति संकामिउ ।
भग्गमेडिउ मोडिउ महिं पाडिउ विरसमाणु करवत्तहिं फाडिउ ।
सूरियंतु काडेहिं विहिम्भउ कंटीपूहडि मुंसडहिं छुम्भउ ।
सत्तिहिं हणिउ कंतिहिं पीडिउ वडिवजसमजाडोडिहिं जाडिउ ।
कम्मविरेहमेहिं दुम्मोडिउ सेठुमडिवायसहिं सडिउ ।
पूयडुहि उप्पेडिवि महिउ मडिप्पाहाविपमेंड भाणाडिउ ।

घत्ता—माणि रोसु परंतहं रमि पहरंतहं कम्मइ गम्मु वित्तसु वि ॥
सुहु णत्थि तमंपहं पावपसंकहं खणपणिमीलणमेत्तु वि ॥ ५ ॥

6

संदयं—सिंगीसु य पक्खीसु य दाढीसु य पक्खीसु य ।
मुंजंतो मयसंपर्म य लहइ जीवो तिम्मसं ॥ १ ॥

कायकंककोइलमयरंडहिं भारसवासमामभेरंडहिं ।
सीहसरहसुपरसामरपहिं पारमीरमंडलमजारहिं ।

---

5 १ MBP संकमि वडिवउ २ MBP °कम्म° ३ MB विराहि ४ MBP दुम्मो ५ M °विडसोय

5 1 a °रय ।
मणिय मिपिमाइय ।
7 मोडामिउ नमिमूत ओणामिउ ऊर्ध्वमुखो नामित 9 सूरियंतु विदारियमाण विहिम्भउ विनिघ्न, b वडी दहवि महोत्सुके 10 हणिउ प्रोत 11 दुम्मोडिउ दुर्मोटित b °मायसहिं वर्णोदिपसी 12 b पडिपोहविपमेंड वडिरणमणिदवारि ओणामिउ नाम पाडिउ 13 सिंगसु मिमरण कर्णोदानस्.

6 2 मयवसनई छयरंदन्मन् 8 °मारड° भयमाड

कीरकुररकुंजरसारंगहिं　　　लावयपारावयहिं तुरंगहिं ।
कुंकुड[2]मक्कडमहिसमरालहिं　　　मेसवसहखरकरहसियालहिं ।
सेढा[3]सरढतरच्छहिं रिंछहिं[4]　　　मयरमहोरयकच्छवमच्छहिं ।
तिक्खतिरिक्खदुक्खसंदाणहिं　　　सभवंतु णाणाविहजोणिहिं ।
वलणिम्मथणु णियलणिवंधणु　　　भारारोहणु णाणावधणु[5] ।
छिंदणु भिंदणु ताडणु तासणु　　　उक्कत्तणु सरीरविद्धंसणु ।
सरपाहाणसंघसघट्टणु　　　लोट्टणु आवट्टणु परिवट्टणु ।
दलणु मलणु मुसुमूरणु जूरणु　　　पीलणु पउलणु दारणु मारणु ।
छुहतिण्हा[6]किलेससंतावणु　　　भारारूढदेसपुरगामणु[7] ।
एव दुक्खलक्खाइं सहेप्पिणु　　　जीउ तिरियगइ कह व मुएप्पिणु ।

घत्ता—णियकम्मवसायउ होइ चिलायउ पारसु वव्वरु सिंहलु[8] ॥
हुणचीणाणिवासउ अमणुयभासउ[9] णउ पावइ अज्जवकुलु ॥ ६ ॥

7

खंडय—मेच्छो ण कुणइ[1] णियहिय　　　करइ दुलंघ दुक्कियं ।
विहुरावत्तरउद्दए　　　णिवडइ णरयसमुद्दए[2] ॥ १ ॥

जइ वि लहइ अवियलु पविमलु कुलु　　　हियइच्छियउ किं पि संपयफलु ।
खमदमसमसंजमसंजुत्तहं　　　तो वि ण लहइ संगु गुणवंतहं ।
कुगुरुकुदेवकुमग्गे[3] मुज्झइ　　　जिणवरवयणु कया वि ण वुज्झइ ।
जडविडकहियहु मयवहधम्महु[5]　　　लग्गइ काइं मि कुच्छियकम्महु[4] ।
लुद्ध मुद्ध चंडिहि मडिवि मिसु　　　पियइ मज्जु कवलइ सरसामिसु ।

6　१ M लायय°　२ B कुकुड°　३ MBP सेहा°　४ MP °रिच्छहिं　५ MBP णासाविंधणु. ६ MBP छुहतण्हा°　७ M °गावणु　८ MBP सिंघलु　९ MBP अमुणियभासउ, but gloss in P नरभापारहित

7　१ MBP मुणइ　२ B णरइ समुद्दए　३ P °कुसम्मे　४ MBP °कम्महु　५ MBP °धम्महु

10 *b* उक्कत्तणु उत्कर्तनम्　12 *a* मुसुमूरणु पिण्डीकरणम्　15 °वसायउ अधीन　16 अमणुयभासउ नरभापारहित , अज्जवकुलु आर्यकुलम्

7　1 *a* मेच्छो म्लेच्छ　2 *a* विहुरावत्त° दुःखावर्त　3 *a* अवियलु बन्धुजनादिपरिपूर्णम्　6 *a* मयवह° मृगवध　7 *a* चंडिहि मडिवि मिसु चण्डिकामिष कृत्वा

पसुवहि देंतहं ण कमइ वरवसु मारउ भणिवि होइ पुणरवि पसु।
णिरसंतहं सिरकमलु सुणिज्जइ सो वि तहिं जि जम्म मारिज्जइ।
पुण्णविवज्जइ अप्पइ भावइ जो जं करइ सो जि तं पावइ।

घत्ता—पसु पाविवि पावइ णारयपि पिज्जइ सग्गु मोक्खु पाविज्जइ॥
जइ पसु जि कम्में ता किं धम्में पारद्धिउ सेविज्जइ॥७॥

8

जवई—दुर्दपइदुणिया सम्मार्य जंति पराजरमम्मर्य।
जाया देवा जइ अया परिसया णियवरणया॥१॥

वेयवाहिपमंतहिं मायामइ तो मप्पावउ कीस ण होमइ।
सोणिउ समंसासवु किं वेच्छइ किं कुसरीरें वज्जइ मच्छइ।
णियविंमइ मुइ धाइहि कंदइ सप्पेसु छमउ कमिमउ छिंदइ।
तारिज्जइ संतज्झइ वज्जइ पप्पु णिरोहिहिवि मज्जें दुज्जइ।
जाइ पुरीसु विधुसि वरार्इ दुरियपइवेण छुयहि संभूरि।
कोपइ देवि मणिमि वज्जामइ दुरु भडुत्तं मंगु आणइ।
गाइ वरुप्पय तप्पयरि जेही सुयरि देविवि वि रोहिमि तेही।
हा हा वंसवेण माणविय रापइ पयणिवि हरिसाविय।
णियरपवदु पयप्पु णिरिक्खइ मेसत्तंइ णियपंकिय मक्खइ।
मायंवइ दुवें पक्खालइ होइ कहिं मि संगासु ण घवकइ।
पइ वेइ कि साहिउँ दुप्पइ हिंसारंभें कंभे छिप्पइ।

१ MBT विगुमइ.

8. १ P दुणयु २ M सम्मजोसु B सम्पजीसु; P सम्मजेसु ३ MBP जवयवणइ ४ MB दुप्पइ MBP वहुत्तं मणइ ६ MBP हरिणी रोहिणि ७ MBP णिउ वंदिउ ८ MBP णिकाउमि वंचि वो छिप्पइ.

8 a वइदवु मनः 11 वदमि मदन्

8 1 a दुवद्दुमिका भमी रोमिणाः b वराचर° मोक्षः 3 भमा मजा b दियवरमवा दियमात्मविमला 3 a माताबद् दुपयवे व्यास्थिते दुग्धयं प्रमाणितेर्थ स्तोति 6 b असिव मवव 7 सिदुष्टि लिप्यदुरिः b दुरदि मी 9 वदमव बढमरी दमनरि दूरसरी 11 a वियदेवमव रिपूव साहारेयम् b रिववरिव पियमिता

अण्णण्णें रंगें रंगिज्जइ परमागमरसेण णउ भिज्जइ ।
मूढु जिणिंदसेव कहिं पावइ सवणु गहणु धरणु वि ण विहावइ[१] ।

घत्ता—मायारउ मण्णइ मुणि अवगण्णइ जीवहिंस पडिवज्जइ ॥
माणुसु वि हवेप्पिणु पाउ करेप्पिणु पुणु संसारि णिमज्जइ ॥ ८ ॥

9

खंडयं—ईसि[1] णिउंचिय जोव्वण कामकोहतवभावण ।
काउ सेवइ जो वणं सो पावइ त भावण ॥ १ ॥

अवरु वि जायउ उववणठाणइ जोइसकप्पणिवासविमाणइ ।
वाहणु वेयालिउ छत्तियधरु वाइत्तयवायउ सब्भेयरु ।
णच्चणु गायणु सुइसुहदावउ[2] अण्णु वि होइ असम्मयभावउ ।
णवर मरंतु संतु उव्विज्जइ वेवइ चलइ[3] घुलइ परिखिज्जइ ।
हा कप्पद्दुम हा माणससर हा णीहारहारसंणिहघर ।
हा अच्छरउलमणसंमोहण हा परियणपडिवक्खणिरोहण ।
हयवलिपलियरोयसयसंचय[4][5] हा हा दिव्वदेह हा णववय ।
हालिकारसार सहसंभव[6] हा गंधार महुर वीणारव ।
हा देवंगवत्थ णिच्चुज्जल हा मंदारदाम चल सभसल ।

घत्ता—सम्मत्तविमुक्कहु जिणपयचुक्कहु अवसें हियउ ण सुज्झइ ॥
सग्गग्गु मुयंतहु पलयहु जंतहु कासु सरीरु ण डज्झइ[7] ॥ ९ ॥

---

१ M विभावइ

9 १ MT इसी and gloss मुनिर्भूत्वा, P इसि २ MP सुदूसहदावउ. ३ MBP चलइ. ४ MBP हा वलि° ५ MBP °सचुय but gloss in P देह ६ सोलंकार° ७ MB कासु ण हियवउ, P कासु वि हियउ ण

---

15 *b* विहावइ विभावयति प्राप्नोति 16 मायारउ मातृरत विप्र समानयति

9 1 *a* ईसि ईषत्, णिउंचिय सङ्कृतं कृत्वा 2 *b* भावण भवनवासिदेवस्वम् 4 *a* उववणठाणइ व्यन्तरदेवस्थाने 4 *b* सब्भेयरु भण्डो भवति सभ्यादितर 6 *a* उव्विज्जइ चिन्ता करोति. 9 *a* °सचय देह. 10 *b* गंधार गीतम्

10

दुवई—सुरविरइयमहाविसेसयं मइमोहुप्पियमाणयं ।
सोयविरोयपविरइयं णायं मह पयडियं ॥ १ ॥

सयलकलाविसेसगुणमंदर पुणु पुणु पणवियगिरिकंदर ।
हा हे कुलिसपाणि जगसुंदर पइं मि ण रक्खिउ देव पुरंदर ।
हा मई माणुसत्त होएवउ किमिमलभरियइ गब्भि वसेवउ ।
सा विविहविमाणि दुक्खु जिणेवउ पारियडोवलोवलि पिएवउ ।
हा हा देवलोय कहिं पेच्छमि कुडियकलेवरि वासु ण इच्छमि ।
जाउ मसाणु तं मसाणउ वेर वणि होसमि वंसु वंसु ।
महएवइमाणसंजोयं मिच्छमिदिट्ठि सुदिट्ठिविओयं ।
हा हा हा मरंतु पव्भिंभकर पेम मरंति रोविरि सुर तरवर ।

घत्ता—जिणधम्मपरंमुहु दुक्खपरंमुहु मणकाले मच्चोभिउ ॥
बहुविहमयमत्ते देव मिच्छत्तें को मयमइवि ण पाविउ ॥ १० ॥

11

दुवई—तिरियपासंसंठाणयं णाईदरजुयमाणयं ।
जीवाजीवसुसंकुलं पिच्छं णिच्चं णियच्छं ॥ १ ॥

पिउ आयासि अणंताणंतइ केवलणाणविणाणपयोयइ ।
गाढु गाढु जहिं एक्कहिं मरियउ केण वि णिम्मिउ ण केण वि धरियउ ।
पुण्णाकम्मविमाणकम्मेयहिं कामधम्मेण जाइ पजायहिं ।

10 १ MBP °विउल° २ B °मरिसयणि MK °चोय ४ MBP वि ५ MBP वेदि. ६ MBP °संतोइ ७ MBP °विमोहउ MBP °कर ९ M एम मरंति रोएं सुर तरवर BP एम मरंति रोय सुरतरुवर; १ MBP एए
11 १ MP °मउडइ° २ P adds after this line: अप्पउ अप्पु वि अप्पइ धरियउ णिम्मलणाण णिय णिय परिणउ

10 1 b मइमोहं दुखितं° अनिमानं° 2 a °विसंवादं सत्यत् b मह मम; घ घनि सर्व प्रकटितं मरणचित्रम 7 b कुटिल कुत्सित° 8 b वंदनु रज्जिकिला निम्बा इक्ष्वाकु 10 b रोदिति सुर तरवर देव वृक्षा मरणेन 11 अनपेक्षित बान्धवा 12 °कं कं मतैं बहुप्रतिसंप्रतिम.
11 1 तिर्यग्लोक° लोकाकाश[illegible] २ b नित्यं नित्यं पश्यति.

पहिलउ दाणवणरयणिवासउ पल्हत्थियसरावसकासउ ।
बीयउ मणुयतिरिक्खणिहेलणु वज्जोवमु पयत्थपरिघोलणु ।
कप्पाकप्पदेवणेवच्छउ तइयउ जगु मुइंगसारिच्छउ ।
मोक्खु वि आयवत्तसणिहयरु जो त पत्तउ सो अजरामरु ।
परमाणुयपरमाणु ण पेक्खमि संसारियहु सोक्खु किं अक्खमि ।

घत्ता—चउगइहि भैरतें पुणु पुणु हॉतें विहसिवि देवें वुत्तउ ॥
सुहदुक्खणिरतरि तिजगब्भंतरि जीवें काइ ण भुत्तउ ॥ ११ ॥

12

खंडय—सारमेयवुड्ढिंगय सारमेयसिवजोग्गय ।
एसो कम्मकलेवर मण्णइ तहं वि कलेवर ॥ १ ॥

अट्ठिलट्ठिकुड्डयलणिउत्तउ दीहरणाउणिबंधणवत्तउ ।
पांसुलियातुलाहिं घणघडियउ संधिहि संधिहि खीलियजडियउ ।
पट्ठिवंसखंभुण्णयमाणउ जंघाजुयलु समोड्डियथूणउ ।
मेज्जमंसचिक्खिल्लविलित्तउ णवदुवारु लोहियससित्तउ ।
सेयसुक्कमेत्थिकदुगंधउ छिरंतुदाहिजालसंरुद्धउ ।
वोक्कयतकिमिउलमलपोट्टलु वियालियरसवसवीसद्दु विट्टलु ।
अब्भंतरि किर केण पलोइउ बाहिरि चम्मपडलपच्छाइउ ।
णिच्चमुत्तलालाजलथिप्पिरु रोइ पूइ अन्दुउ सताविरु ।

३ M भवंतें, BP भमतें

12 १ MBP सारमेयवुड्ढीगय २ P तइ व ३ MBP णिवधणवत्तउ ४ MB पसिलिया°, P पसुलिया° ५ MBP खीलिहिं ६ BP समोड्डिय° ७ P मज्ज° ८ MBP °दुवार° ९ B °मथिक° १० P थिर°, K छिर° but corrects it to थिर° ११ MBP °वीउजि and gloss in P वीभत्स अपवित्रम्

7 *b* पयत्थपरिघोलणु पदार्थानां जीवानां या परिघोलन प्रवृत्तिर्यास्मिन् 8 *a* °णेवच्छउ मण्डनम् 10 *a* परमाणुयेत्यादि– परमाणुमात्रमपि ससारिणां सुख न

12 1 *a* सारमेयवुड्ढिंगय प्रचुरमेदसा वृद्धिं गतम्, *b* सारमेयसिवजोग्गय श्वानशिवादियोग्यम् 2 *a* एसो जीव, कम्मकले संसारे, *b* कलेवर शरीरम् 3 *a* °कुड्डयल कुड्यतल°, *b* °णाउ स्नायु° 4 *a* पासुलिया° पार्श्वास्थिसंघात 5 *b* समोड्डियथूणउ भग्नस्तम्भवत् 7 *b* छिरतुदाहिजाल° शिरा एव गण्डूपदास्तेषां समूहैर्भृतम् 8 *b* °वीसदु बीभत्समपवित्रम् 10 *b* रोइ सरोगम्

सँभपिसमाहमवासायरु मूपगामवेदिहि वेडु वि पद।
रँभपीजमपपरहसुम्मणु मसुर वि मपपार मसुरसमुम्मणु।

घत्ता—करिमवरहिं माणिउ गंगाणाणिउ ण्हाविउ ण्हाविउ सुम्भइ॥
मयकाम काइँ मायामाहिँ माह्मिउ वेडु ण सुम्भइ॥१२॥

13

दुवई—तुमिहलचम्मि सुमीचप जइ करेइ अप्पाणयं।
असुइमिणं मणुयत्तणं ता हो हाइ पवित्तयं॥१॥

पंचिंदियसुहि मणु चोयंतहु तहु भामवइ कम्मु भवंतहु।
मोणावरविउ पंचपयारउ हाँसिपयडपंगुरुणवियारउ।
सवविहसंमणु गुणविणिवारउ ते मिच्छिपमिसिद्धिपसिवारउ।
मुणिवि वि वेसवीउ गमसपणु प मणु समणु जमिपाराविणु म।
माहवीउ मरा हम मोहर असुरवीसमेरे विपु देहर।
मणविणु पउमपमासिहि सुकर मारसु हरि म पिरंमिपि मकर।
दोसवीसमामु मासंकउ विसवस्सपरिमासासंकउ।
दोषिणु मासमसुजमकीविउ गाणु कुमाकमाप्पमावाकउ।
अंतराउ पउपन्नविहसयउ कम्माइ कारिहिँ वारिमहावउ।
पमहिमुणिमिपुमंतापरमाहिँ पज्जार मापिपि पंपिपिसेसहिँ।

११ M (मपिरमणु उमराणुम्मा B °राणुमउ, P °राणुमर but gloss वतन

13 १ MBP णाणमारपउ २ T दमिप° ३ MBP भेद M मणुमाम° ५ M पत्तउपम्मि

11 *b* मूवगामं° मुम्मिमुत्तमणुमिमुत्तमह एव देहे मिलो मम 12 *a* °उप्पणु मामम: 13 देमा-णा मि इ मणामी

13 2 *a* मणुयत्तं मनुष्यत्वम्; *b* हो हे मद 4 *b* हामि वेणामि-हनि: सम्मारम्भ एव विसवो वेस मोव पोय अप्पत्वेन कम्मादमोर्मावविहस्तमानो विसवो मदी तथा मागवपे प्रमवदे. 5 *b* मि मि के-वामी मिविविमिवेवररामिहरतदम् 6 *a* मइमगमणु म पमिमुहार समवीवमि 8 *b* मारमु मामुमर्म; इहि व सोहम एव 9 *b* मि सी त्तामि-विमवपविवविवभमरसवा पइमो 10 *a* मइ तत्तहुम मणोमव मवि मणुगममर वेमि विमवसम्; *b* कुमार मम भागानाम मुणाकाम तुम्मवाम मानामं मरकदवे मामीर-सम्मारमाणिवियाम उम मावव मामव 11 *a* पउपमणिहरवत पवमेस्; *b* कारिहि मारमम; वारिवहावव मिमामितनाम मुहमायामविस. 12 *b* पंपिपि इमत.

घत्ता—गुणवंतु अणाइउ सुहुमु विवेइउ तिगइ दुअंगाणिवद्धउ ॥
जिउ कत्तउ भोत्तउ भवतणुमेत्तउ उड्ढगामि ससिद्धउ ॥ १३ ॥

14

खडय—एंतहु पावहु णिब्भरं जे विरयंति ण संवरं ॥
ताण दुक्खदंवक्कडी पडिही सीसे णं तडी ॥ १ ॥

रुज्झइ चित्तु झाणवित्थारें फासविलास धरणिसथारें ।
रसु पसुपिंडग्गहणायारें दिट्ठि ण घेप्पइ कहिं मि वियारें ।
सवणु सुसरि दुसरेसु वि सरिसउ कीरइ पयलियरइआमरिसउ ।
णासारंधु गधेअविहत्तिइ मणवयकायदुरीह तिगुत्तिइ ।
दुरियहु सुयरिउ रक्खणु दिज्जइ रोसु खमाइ होंतु णियमिज्जइ ।
अविणयगारउ माणु मउत्तें मायाभाउ समुज्जुयचित्तें ।
लोहु सुपत्तदाणपविहाए अहवा सव्वसगपरिचाए ।
मयविब्भमु परगुणसभरणें जिप्पइ हरिसु होंतु सुथिरमणें ।
देप्पु वि घोरवीरतवचरणें राउ रंसियरामापरिहरणें ।

घत्ता—पिहियासवद्दारहु जुत्तायारहु अहिणउ कम्मु ण पइसइ ॥
ज चिरु जीवासिउ तं पि अपोसिउ कायकिलेसें णासइ ॥ १४ ॥

15

खंडयं—मणमेत्ते वावारए पसो कीस ण कीरए ।
सासयसुहओ सवरो होह होमि दियंवरो ॥ १ ॥

६ MBP उद्धगामि

14 १ P ए तहु and gloss ए आगमे प्रसिद्ध , तहु पावहु तस्य पापस्य २ P °दुवक्कडी ३ MBP °विलासु ४ MB रसवसु, P रस पसु° ५ MBP गधु अ° ६ MBP एतु ७ M समुज्जल° ८ P मइविब्भमु ९ B omits this foot १० MBP रसिउ रामा°

15 १ मणमेत्तए

13 दुअगणिवद्धउ तेजसकार्मणशरीरवद्ध 14 भवतणुमेत्तउ यद्भवे यच्छरीर गृहीत तन्मात्र

14 1 *a* एतहु आगच्छत , 2 *a* °दवक्कडी असह्याशानिपात , *b* तडी विद्युत् 4 *a* रसु जिह्वा, पसुपिंडग्गहणायारें पशुवत्पिण्डग्रहणेन मुन्याचारेण 5 *b* पयलियरइआमरिसउ नष्टरागद्वेषम् 6 *a* गध अविहत्तिइ सुरभिरसुरभिरिति गन्धविभागाकरणेन, *b* °दुरीह दुष्टेच्छा 9 *a* °दाणपविहाए अतिथिसविभागेन 10 *a* मय° मद 13 अपोसिउ अपुष्टम्

15 1 *a* मणमेत्ते मनोमात्रे 2 *a* °सुहओ सुखद

पुणु परमेसरु सयरु सुधार कामें अहव वयाई पियारे।
जिह परतीरहहु तिह पुढिउ कामाकामिणावियारतहिउ।
तवयणाई सुसरोवें सोसमई वयक्खारकमारयगम्मई।
दूसहदुक्खममाणमयमरियउ होइ मकाम विचार तिरियइ।
विरइयार वेरग्गपहोमहिं कामें विचार रिसिसंतावहिं।
सिसिरपवासणिवासायरणहिं रयणमूमणावणकरणहिं।
पियपणिपंकपित्तमहिसंतहिं मेरुयुहभासणेहिं गयणेतहिं।
पक्खमासचरियसंतुणवासहिं देवविसिसंयाविग्गासहिं।

घत्ता—घोरयवीसासहि मुणितणुमूलहि परमबम्भसमें सतउ॥
जीविउ देसुजसु णवर केवलु णट्ठकम्ममलें चत्तउ॥१५॥

16

जंबूद्वयो—कुंथरु जलं समय णावंकुसिय विसुमए।
वयपायवाविहूयं खाइ पियमणपारयं॥१॥

पंकगामसागासाहारहिं विविहावम्महरसपरिहारहिं।
सीहमणुमोमहिं मकवरणहिं आयंविलवंदायणचरणहिं।
वासईगमुहपरंमहिं पक्खियपरपुरवेसपसंमहिं।
सुण्णावासमसाणागारहिं इयजइहिं भीमियस्तिविहारहिं।
एसमसपमुहरण्णमासहिं रसमकपकम्मकहुयणाकोमहिं।
णावयरणुमंपियकारहिं सीउण्हहि परपाइयविहारहिं।

२ P णवर ३ MBP वयणें ४ BP वोमए ५ MBP °पहणए ६ M सिरिपमाह, BP रिसिवतमं
७ MBP °परिणुर° MB देस° ९ कम्मवसें पहि
16 १MBP कुणो २ P दरम्मायुपणा° ३ M अविमहि°

3 b सिवह् दर्द मरुणि 4 b वापाकामिवेसवरि कामो मुनिपूर्णो मावासरमागोऽमामो निवेवरवा ना तदविचा निर्जत तर्किगा वसिता वेव तातरम् 7 b रिवियवत्तवरि मुनिरूपौ 10 b देवोति देवालया इति तथा तथा निमाय विनमारतमाने 11 मुनिवमुद्ववरि मुनिवरैरेव मृत तन्वम् 12 बीरिवरस्यारि बीतरागर देव देव मुख्य उज्ज्वलं निवम्। मुख्ये हि विमार्जितकर्मणामपिनतादुरम्यम्। बीतरागर तु इमानस्वमेवकरणाय प्रदेनत्यादिति

16 1 b सिर्तुबट्टं पार्श्व चरेरिति 2 a विमूर्तं °निर्मुक्तम् 5 बीणं अं° निवाय° मानीतनं 6 b अमिवतिविहारैः अमिवतिहारैः 8 b नरयपरिमिताव्रतैः अपारमिति

केसालुंचणणिच्चेलत्तहिं कंचणतणसुहिरिउसमचित्तहिं।
विसमपरीसहसहणब्भासहिं रोयातंकहिं कासहिं सासहिं।
जम्मणमरणणिबंधुद्धाइउ एम खविज्जइ कम्मु पुराइउ।

घत्ता—जिह हयँणिज्झरणें वद्धें वरणें रविकरेहिं सरु सोसइ॥
तिह णियमियकरणें रिसितवचरणें भवकिउ कम्मु पणासइ॥१६॥

17

खडय—इय काऊण णिज्जरं जे हणंति भवपंजरं।
णीरोय अजरामर ते लहति सोक्खं वरं॥१॥

जेण मोक्खफलु त पाविज्जइ सो धम्मविउ एहउ गिज्जइ।
खेमसमायलतुग्गयदेहउ मद्दवपल्लउ अज्जवसाहउ।
सच्चसउच्चमूलु सजमदलु दुविहमहातवणवकुसुमाउलु।
चउविहचायपसारियपरिमलु पीणियभव्वलोयछप्पयउलु।
दियसदोहसद्दकयकलयलु सुरवरणरखेयरसुहसयफलु।
दीणाणाहदीहसमाणिग्गहु सुद्धु सोम्मुँ तणुमेत्तपरिग्गहु।
वंभचेरछायाइ सुहासिउ रायहंसाणियरेहिं समासिउ।
एहउ धम्मरुक्खु लक्खिज्जइ जीवदयावइइ रक्खिज्जइ।
झाँणु ठाणु भल्लारउ किज्जइ मिच्छामयहु पवेसु ण दिज्जइ।
सीलसलिलधारइ सिंचिज्जइ एम पयत्तें वड्ढारिज्जइ।

४ MBP° तिण° ५ MB णिदंधे आइउ, P °णियधइ आइउ ६ K हर° and gloss हत°

17 १ BPK पर २ M खमरामायलतग्गयदेहउ, B खमन्नमायलु तुगयदेहउ, P खमखमायलु-तुगयदेहउ ३ MBP सुरणरवर° ४ MBP सोमु ५ MP झाणठाणु, B झाणट्ठाणु ६ B पवत्ते ७ M पद्दारिज्जइ, B वड्ढारिज्जइ

11 *a* णियधुद्धाइउ जन्ममरणप्रबन्धकरणे उद्धाइउ प्रवृत्तम् 12 हयणिज्झरणें हतनिर्झरणेन वरणें पालिबन्धनेन

17 1 *b* भवपजर ससार एव मन्दिगृह ससारसपानथ 3 *b* धम्मविउ धर्मवृक्ष, गिज्जइ प्रतिपाद्यते 4 *a* खमसमायलतुग्गयदेहउ क्षमैव क्षमातल पृथ्वीतल तदन्तान्मध्यादुद्गत प्रादुर्भूतो देहो यस्य 6 *a* चउविहचाय° अणुव्रत महाव्रत श्रुतदानमभयदान च 7 *a* दियसदोह° मुनिसमूह पक्षिसंपातश्च 8 *a* °दीहसम° दीर्घश्रम 9 *a* सुहासिउ सुष्ठु शोभित 11 झाणु ठाणु ध्यानमेव स्थाणुम्, *b* मिच्छामयहु मिथ्यात्वमृगाणाम्

पुणु परमेसरु सयलु सुहारउ कालें मइउ णवंतु णिवारउ ।
जिह धरणीसरासु तिह मुणिउ कामायामियाणिब्भरतणिउ ।
तवयपाइं सुसेहाव सारमइं वंभणवारवमारवपम्मइं ।
पूसहुवपमाणमयमरियइं होइ मकामें णिव्वर तिरियइं ।
णियकाल वेरवमणहोमहिं कालें णिव्वर रिसिसंताणहिं ।
सिसिरपपासविवासायरणहिं पवणमूणमलाणकरणहिं ।
णियपमिणिंकमिलमीरिंदहिं गोउरवासपहिं गवसोरहिं ।
पवणमासवीरिसंतुवणासहिं वणविरिसिरसंपाविण्णासहिं ।

घत्ता—होरपणीसासहिं मुणितपुमूसहिं परतवजलण तवउ ।
जीविउ हेमुज्जलु पवर केवलु बद्धेकम्ममलें बवउ ॥ १५ ॥

16

दुवई—दुवइ अंतें संयम पालंतुणिय णियसुंमय ।
णयपायणपितूरणं सनु णियमगणारणं ॥ १ ॥

पेडमासखोमामाहारहिं णिणिहाणमाहारसपारिहारहिं ।
धीरमसुक्खेमहिं मकमरवहिं मायपविकलंपायणचरणहिं ।
बोसहगमुहपरंपहिं पडिमपरपुरपोसपसंपहिं ।
सुण्णावासमसाणागारहिं दुवमेहहिं मेलियपरिविहारहिं ।
ंसमसयमुहलगदामोसहिं [illegible]काकोसहिं ।
णायवरसुर्वपियकामहिं सीउण्हहिं परपहरणिहारहिं ।

१ P मवर. ३ MBP वणहँ ४ BP धीमंत ५ MBP "पमाय. ६ M णिरिसंताण; BP रिसिसंताण
७ MBP "वरिसहुय" MB णेम" ९ बम्मणे वरि"
16 १ MBP दुवई २ P पवणयपुण्णा" ३ M णमिनिह

8 ऽ णिवइ एक करोति. 4 ऽ कामाकामिणेत्तानि कामी मुनिपूर्वी [illegible] निर्मित [illegible] तथानिया निर्मित तर्मिता वमिता केन तावत् 7 ऽ रिसिसंताणहिं मुनिसमूहैः 10 ऽ रेवेति- [illegible] इति [illegible] तस्मा निष्पाद्य [illegible] 11 मुणितपुपूसहिं मुनिमार्गेण शुभ [illegible] 12 णिवइसाणि [illegible] तत्र हेम सुवर्ण उज्ज्वल निर्मलम्। सुवर्णं हि [illegible] [illegible] [illegible]

16 1 ऽ णिवुंजए एक करोति 2 ऽ "णिवूरणं णिर्मूलनम् 5 णीवईय" णिवाय" [illegible] 6 ऽ अमिवर्ति णिहारहिं [illegible] 8 ऽ परपहरणिहारहिं [illegible]

केसालुंचणणिच्चेलत्तहिं कंचणतणसुहिरिउसमचित्तहिं ।
विसमपरीसहम्महणब्भासहिं रोयालंकहिं कासहिं सासहिं ।
जम्मणमरणणिबंधुद्धाढउ एम खविज्जइ कम्मु पुराइउ ।

घत्ता—जिह दुर्यणिज्झरणें वड्ढें वरणें रविकरेहिं सरु सोसइ ॥
तिह णियमियकरणें रिसितवचरणें भवकिउ कम्मु पणासइ ॥ १६ ॥

17

रड्डयं—इय काऊण णिज्जरं जे हणंति भवपंजरं ।
णीरोय अजरामर ते लहंति सोक्खं वरं ॥ १ ॥

जेण मोक्खफलु तं पाविज्जइ सो धम्मधिउ पहउ गिज्जइ ।
खेमरमायलंतुग्गयदेहउ महव्वपल्लउ अज्जवसाहउ ।
सच्चसउच्चमूलु संजमदलु दुविहमहातवणवकुसुमाउलु ।
चउविहचायपसाग्गियपरिमलु पीणियभव्वलोयछप्पयउलु ।
किंयसंदोहनहकयकलयलु सुरवरणरखेयरसुहसयफलु ।
दीणाणाहदीहसमणिग्गहु सुद्धु सोमुं तणुमेत्तपरिग्गहु ।
बंभचेरछायाइ सुहासिउ रायहंसणियरेहिं समासिउ ।
पहउ धम्मरुक्खु लक्खिज्जइ जीवदयावइइ रक्खिज्जइ ।
झाणु ठाणु भल्लारउ किज्जइ मिच्छामयहुं पवेसु ण दिज्जइ ।
सीलसलिलधारइ सिंचिज्जइ एम पयत्तें वड्ढारिज्जइ ।

४ MBP° निण° ५ MB णिबंधे बाढउ, P °णिबंधइ बाढउ ६ K दुर° and gloss दुत°

17 १ BPK पर. २ M गमरामायलतगयदेहउ, B भमरामायलु तुगयदेहउ, P गमखमायलु-तुगयदेहउ ३ MBP सुरणरखेयर° ४ MBP सोमु ५ MP झाणठाणु, B झाणट्ठाणु ६ B पवत्ते ७ M पहारिज्जइ, B पट्टारिज्जइ

11 a णिबंधुद्धाढउ जन्ममरणप्रबन्धकरणे उद्यत्तः प्रगल्भः 12 दयणिज्झरणें द्रुतनिर्झरणेन वरणे पातिपथेन

17 1 b भवपंजरं संसारपंजरं संसारसंसारम्, 3 b धम्मंधिउ धर्मांघ्रिपः ; गिज्जइ प्रतिपाद्यते 4 a खमरमायलं तुग्गयदेहउ क्षमैव रमा, तले पुष्टोतमं गदेन्नान्नमथाद्युन्नत प्रादुर्भूतो देहो यस्य 6 a चउविहचाय° चतुर्विध महादानं भुक्तानभयदान च 7 a किंयसंदोह° मुनिसमूह परिपालन 8 a दीणाहम° दीनजन, 9 a सुहासिउ सुखं शोभित. 11 झाणु ठाणु ध्यानमेव स्थानं, b मिच्छामयहु मिथ्यामतानाम्

घत्ता—कोवाणलजुत्तउ होइ गुरुक्कउ जाइं रिसिसवहिं सिहरं ।
जगि ताइं सुहंकर धम्ममहातरु वेर पसमाइं सुमिहुइं ॥ १७ ॥

18

दुवई—जहिं होहिमि भवे भवे तहिं वेहमि भवे भव ।
दुक्खक्खयकम्मविप्पासवे होउ माणि जिणसासणे ॥ १ ॥

भवह विरत्तउ कलिसयमण्णे इयं मणोयर मणुयं मण्णे ।
जिणु पुत्तसिरिकंतपरंमुहु भवि भवि होउ जिणागमि संमुहु ।
पंचिंदियपरिभमउ मणउ भवि भवि विमलबुद्धि उप्पज्जउ ।
विसयकसायरायपरिचत्तउ भवि भवि होउ तिगुत्तिपउत्तउ ।
मायापासविवंचणु गुरुउ भवि भवि मोहजालु ओहट्टउ ।
संजमसाहुसंगसोहियमइ भवि भवि होउ जम्मु सावयकुलि ।
रेयमूढ संबोहणगाय भवि भवि रिसि गुरु होंतु महारा ।
दीसि करउ उप्पेलउ दयंतउ भवि भवि एउ बहुउ गुणवंतउ ।
उपसोमइ सपीउ सेंपज्जउ भवि भवि तवसिरिनाहें सिज्जउ ।
मणु परिपमु पुर पर मा बुज्झउ भवि भवि भरि वयसमासिरि पज्जउ ।
म पमउ भारिझवि तिमरजउ भवि भवि इंदिय पिसहु बीसहउ ।
बीसारियदइएबपमायं भवि भवि दिवह जंतु सज्झायं ।
दंसणणाणचरित्तपयासें भवि भवि मरणु होउ संणासें ।

घत्ता—कम्मरय समाहिए भवि भवि बोहिए कोयउ कोउ विरत्तउ ॥
संसारसमुत्तारें जिणवरचरणें भवि भवि मणि सुमरंतउ ॥ १८ ॥

18 १ MBP होहमि २ B होइ ३ P इउ ४ MBP °पभउ ५ B °साहुसंगि ६ MBP जम्मु होउ ७ MBP एहुमहु, T एमुहरो MBP उप्पज्जउ ९ M भविए १ MBP होउ ११ MK भवण

18 6 a [illegible]
9 a [illegible] 10 a [illegible] 11 b [illegible]
[illegible] 13 b [illegible] 16 a [illegible]
[illegible]

19

खंडय—इय जो चिंतइ णियमणे　　अणुवेक्खाओ थिउ वणे ।
मोत्तूणं भवसपयं　　सो पावइ परमं[1] पयं ॥ १ ॥

मह्वु पुणु सरणउ सिद्ध भडारा　　दढ[2]किम्मीरकम्मविणिवारा ।
अक्खसोक्खपक्खे[3] णिरु णिच्छिहँ[4]　　भवसिप्पीरभारहुयवहसिह ।
इयँ चिंतंति[5] वहति समत्तणु　　पउणंती रइभूमिणियत्तणु ।
सक्के जिणमइ जाणिय जावहिं　　लोयंतिय संपाइय[6] तावहिं ।
बंभसग्गलोयंतकयालय　　देहकंतिदीवियदिप्पालय[7] ।
पुव्वजम्मकयधम्मपहावण　　अणुदिणु संभाविय सुहभावण ।
घलियकुसुमजलिकेसररय[8]-　　रयमहुयरउलसवलियपहुपय ।
ते भणंति भावें मउलियकर　　जय देवाहिदेव परमेसर ।
पइं ण मुणिउ ज तं किर केहउ　　किं गिरि किं परमाणुउ[9] जेहउ ।
सुसिरु अणतु तिलोयणिवासउ　　किं आयासु अलक्खपएसउ ।
जीउ कम्मु पोग्गल[10]वित्थिण्णउ　　भणु तुह णाणें काइं ण भिण्णउ ।
तुहु सइंभु[11] ससमाहि[12]विसुद्धउ　　चारु चारु जं सइं पडिबुद्धउ ।
इंदियपाणासजमु छंडिवि　　अप्पउ सीलगुणोहें मंडिवि ।

घत्ता—उप्पाइवि केवलु अवियलु गयमलु तच्चु सुसच्चउ अक्खहि ॥
पायालि पडंतउ पलयहु जंतउ भुवणु भडारा रक्खहि ॥ १९ ॥

19　१ B परमप्पयं　२ P दिढ°　३ MBP °पक्खइ　४ M णिप्पिह　५ MBPT चित्तंति, gloss in MT हृदयमध्ये, but in P चिन्तयति सति　६ B सपावियभाविहिं; P सपाइय ताविहिं. ७ MBP °दिव्वालय and gloss in MP दीप्तविमाना , but T दिप्पालय दशदिक्पाला　८ P °केसरिरय°　९ MBP परिमाणुउ　१० BP पोग्गलु. ११ MBP सयभु　१२ MBP सुसमाहि°.

19　3 *b* °किम्मीर° विचित्रम्　4 *a* अक्खसोक्खपक्खे इन्द्रियजनितसौख्यवर्गे, णिच्छिह निःस्पृहा, *b* °सिप्पीरभार° पलालसघात　5 *a* चिंतति चिन्तयति सति, *b* पउणती प्रकुर्वती, रइभूमिणियत्तणु रतेर्भूमेश्च निवर्तनम्　9 *a b* केसररये त्यादि–केसररजसि मकरन्दे रतानि यानि मधुकरकुलानि तै कृत्वा शबलितानि प्रभुपदानि यैर्लौकान्तिकैर्देवै　12 *a* सुसिरु अलोकाकाशम्, *b* आयासु लोकाकाशम्

20

जंभेट्टिया—गुरु वयणंसुयसासिय जगजमणे संबोहिय ।
कुसुमयसरणसोपया होंति देव इव तेपया ॥ १ ॥

मोहकम्मपासपसिंह भिरसहि पेम्मासवमंबुहर पयरिसहि ।
पावकलेसेपंतविहित्तई अरहंतस्स इव केइवि सुतहं ।
केतापहि परमप्पय भूयहं गंगायणा इव आयारूवहं ।
एम भयम्पिणु गव आयंतिय देवें परहियबुद्धि विचिंतिय ।
तहिं अवसरि कुरुपत्थिहिं मम्मित्थिय भरहु महीसरेण मम्मरिथउ ।
पुत्त पुत्त अरु पायहि वसुमइ मई पुणु साहेवी पंचम गइ ।
तं णिसुणेवि कुमारें वुत्तउं देव देव किं मेलहि भयुत्तउं ।
जं तुहुं भुयुजियपयाहारें तं ण सोक्खु मायणवित्थारें ।
जं तुह जियवाससार णिबिड्ढु तं ण सोक्खु हरिपीढि णिसण्णु ।
जं मइं तुह भमार णायंतहु तं ण सोक्खु मयपउपहिं जंतहु ।
जं पायहिमउ तुह पयउमहिं तं ण सोक्खु मइ छत्तहु ओहरि ।
मेविमहाउप्पवायुज्ज पर्इ रहियउ ताय किं रज्जें ।

घत्ता—जंपियउ जिणेसें आउ विसेसें जइ परमपहिं ण दुक्किउ ।
तो ओउ रज्ज दुक्खपि मइ भण्णेंमि भण्णु ण पज्जइ ॥ २ ॥

21

दंडयं—कुरु कुरु परणीपालणं णायाणायविडालणं ।
धरि धरि महिमाहासणं मणि णिय मइ पेसणं ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि चिक्कसउ जायउ णिउ तणुरुहु संमुयविणायउ ।

20 १ MBP कम्मपासणसमण्हर परिसहि. २ MBP °कलेसहं° ३ MBP कइवि; ४ MBP गणिव ५ B पुरु पुत्तु वणियम° ६ P वसुमइ. P भइं. K भुम्म

20 1 [illegible] 2 a कुसुमसरसहणखोसया मिच्छामलणुक्कमलवोसप 4 [illegible] 11 b हरिपीढि [illegible] 15 [illegible] 16 मई [illegible]

21 8 b संमुयविणायउ [illegible]

सोणंदेयहु दिण्णु सुहंकरु　　पोयणपुरु पविहिण्णवसुधरु।
अण्णेक्कहु अण्णण्णाइं दिण्णइं　　मंडलाइं ढोइयधणधण्णइं।
एत्थंतरि संपेसिय राणा　　देवें जे पक्केक्क पहाणा।
छक्खंडावणिपसरियतेयहु　　लग्गा रायमहाअहिसेयहु।
णरकरकोणाहयहिं गहीरहिं　　वज्जंतहिं चामरियरतूरहिं।
धवलिहिं मंगलेहिं गिज्जंतिहिं　　खुज्जयवावणेहिं णच्चंतिहिं।
कामिणिमित्तगत्तरोमंचहिं　　होमदाणपारंभपवंचहिं।
ससहरमणिमएहिं णिक्कलुसिहिं　　मयलतित्थजलभरियहिं कलसहिं।
जय रायाहिराय पभणंतहिं　　थहिंम्मिंचियउ भग्गहु सामंतिहिं।
हाससरिसंककाससकासइं　　परिहाविउ सुइंसुब्भइं वासइं।
कण्णहिं कुंडलाइं आइद्धइं　　चंदाइच्चह तेयसमिद्धइं।
करि कंकणु गलि हारु विलंबिउ　　सिरि सेहरु महुयरमुहचुंबिउ।
कडियलि रयणकिरणविप्फुरियइं　　वद्धउ कडिसुत्तउ सहुं छुरियइं।
वंभसुत्तु उरि चारु चडाविउ　　तिलए तइयउ णयणु व दाविउ।
हरिकरिससिरविरूवणिबद्धइं　　उब्भियाइं विमलइं कुलचिंधइं।
परिमुक्कमलइं धवलइं छत्तइं　　ण जिणकित्तिभिसिणिसयवत्तइं।
मय मायंग तुरंग सलक्खण　　पुज्जिय गह काणीण वियक्खण।

घत्ता—उच्चाइउ आयहिं पइअणुरायहिं आसीवायणिघोसहिं॥
सिरिभरहकुमारहु महिभत्तारहु बद्धउ पट्टु णरेसहिं॥२१॥

22

खडय—सीहासणसिहरासिओ　　सोहइ भुअणपसंसिओ।
गिरिकडए धुयकेसरो　　केसरि व्व भरहेसरो॥१॥

21 १ MBP °वावणेहिं २ BMK कामिणिसित्त° ३ MBP पहिराविउ ४ MBP °विच्छुरियइं ५ B पट्टु°

4 *a* सोणदेयहु सुनन्दापुत्रस्य बाहुबले 5 *b* मंडलाइं देशा 8 *a* कोण° वादनकाष्ठम् 10 *a* °मित्त मित्र°, *b* °पवंचहिं विस्तारैः 11 *a* णिक्कलुसिहिं निर्मलैः 16 *b* भिसिणिसयवत्तहिं कमलिनीकमलैः, 21 आयहिं एतैः, पइअणुरायहिं पत्यनुरागैः
22 2 *b* केसरिव्व सिंह इव

दमवियसिवंदसमोइयसुरवरु तहिं अवसरि दीसइ विरइंबरु ।
बहुविमाणमाणें णं जणियउ चंपयवर्डाहं णावइ पल्लवियउ ।
आयवत्तें पुप्फहिं णं पुप्फिउ तरुणीयणहसणहिं मोत्तफलिउ ।
पियपणइणिसासाससहाइयगयणु णावइ जिणवरपुण्णमहावणु ।
णं गुरुपहिं णाचंतहिं णावइ संखेवेहिं एविभरियउ णावइ ।
कुंजरेहिं णं मेहहिं छइयउ ससिपंगहिं णं विज्जुलसाहयउ ।
हरियारुणरायं णं सुरधणु णं भवसंभवु णवपीउसगुणु ।
विदुमविच्छायपप्पासयपाणइ एम पराणउ सुरयणु दीसइ ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ रंजियंसउ रिसहणाहु विण्णाहु महागउ ।

घत्ता—कमलासणु केसेसु ससहरु वासणु सिरु कुंतु इय विमयउ ।
णाणीपरमावियउ एयभाहि जणियउ पहि णिसण्णउ जिणयरु ॥ २२ ॥

23

दुवई—केण वि गीरुं गाइयं केण वि महुरु गाइयं ।
केण वि सरसं णच्चियं पहुपयपंकयं अंचियं ॥ १ ॥

अमरविलासिणिकरसंमदियहिं ण्हविउ देउ सिंधुजलहिं एंतिहिं ।
रयणकणयमणिसरियघडहिं पवणकुमारविसेसुहरसेंहिं ।
चलियअंदुणारंभहिं वंदहिं संठायंदरिपिहिं णरिंदहिं ।

22 १ B °सिसिरइ° २ MBP छणाइय ३ M चवरेण ४ MBP वासणउ ५ M तरुणीयणहसणहिं मोत्तफलिउ, B तरुणेहिं मोत्तफलिउ P तरुणेहिं मुत्ताफलिउ but T मोत्तफलिउ ६ B माणइ ७ P °पल्लव M एविमरिउ. ९ MBP केवर
23 १ MBP देउ K देउ but corrects it to देउ २ M पय° ३ T सिंधुजलेहिं ४ M °णरेहिं

8 a °सिसिरइ° सिसु मार्गा b विवरअंबरं विस्तीर्णमाकाशम् 9 °वडइ पीडितम् 11 तविअवड एविहयन b विण्णाहु विज्ञोव जयमेव जीवों नाम स्वर्णं 12 कमलासणु कमलासना ब्रह्मा विशालत्वान् त्वम्, केसेसु हिरोनामनर्धकत्वेन व्यभो एकतोऽसात नयइक वासणु वासेनवासनावस्तुकरणावपौष्करयान गासणु सरसहिरणसिंहनाम्नुसिंहमौलिवासिलाम सिंह इव्यवरण, कुंतु हेतोरिवविपिकस्मनवरणाम इव वर्णा नवत्वमेवाजरत्व अवसावविपाकस्वात्, विमयउ अवापरमीवस्त्रलरमलीविधनकस्ततम
23 4 b सिंधुजलहु ईशान 5 a चलियदंतु चालिता b संठायंदर° वहमानन्द

वयणुग्गीरियथोत्तवमालहिं　　णिग्गयखीरवारिधारालहिं ।
कंचणकुंभसहासहिं सित्तउ　　दहसयट्ठलक्खणसंजुत्तउ ।
सण्हउ तिहुयणसामिहि जोग्गउ　　किं वण्णिज्जइ अंगि वि लग्गउ ।
ढोइउ णिवसणु पुणु पंगुरणउ　　तणुतावइ णं णाणावरणउं ।
भूसणाइ दिण्णाइ ण मण्णइ　　मोहणिबंधणाइं अवगण्णइ ।
सतहु किंह रुच्चति रसोल्लइं　　वम्महपहरणाइं फुडु फुल्लइं ।
होउ पहुच्चइ संभावइ जिणु　　मलविलेवसारिच्छु विलेवणु ।

घत्ता—पज्जलियपईवहु ससिरविभावहु धूयगारयधूमउ ॥
णिग्गतउ दीसइ सुकइ समासइ णं मलपडलविलेवउ ॥ २३ ॥

24

खडयं—दहिदूवंकुरचंदणं　　सियसिद्धत्थयचंदणं ।
वंदिवि मयणवियारओ　　सिवियारूढु भडारओ ॥ १ ॥

सत्त पयाइं जाम जयवंदहिं　　पढमुच्चाइय सिविय णरिंदहिं ।
तेत्तियइं जि भावेण णवंतहिं　　वरविज्जाहरेहिं विहसंतहिं ।
उट्ठियदेवमहाकुलकलयलि　　पुणु चंदारएहिं णिय णहयलि ।
चल्लिउ अणुमग्गे सियसेविइ　　णाहिणराहिउ सहुं मरुएविइ ।
आरणालणवदलललियंगउ　　जसवइणंदउ पच्छइ लग्गउ ।
दोण्णि वि णावइ मोहणवेल्लिउ　　णं कामेण विमुक्कउ भल्लिउ ।
पियविच्छोयसोयखिज्जंतउ　　णयणजणमलमइलिज्जंतउ ।
वरकंचीकलावगुप्पंतउ　　तणुपासेयबिंदुथिप्पंतउ ।
तुरिउ चलंतु खलंतु विसट्ठुलु　　णीससंतु चलमोक्कलकोंतलु ।
घणथणजुयलणिवेसियकरयलु　　णिवडमाणअणिहालियमेहलु ।

५ MBP दह° ६ P विलग्गउ ७ MBP किं ८ M °विलेविउ

24 M दूवंकुरु चंदण, BPK दूवंकुरचंदण २ M चलतु च खलुलु, B खलतु च सठुलु ३ M णिवड-माणु, P णिविडमाणु

6 *a* °वमाल° कोलाहल 13 ससिरविभावहु शशिरवीणा भां दीप्तिमावहन्ति अनुकुर्वन्ति ये तेषाम्

24 1 *a* °चंदण रक्तचन्दनम् 7 *a* आरणाल° कमलम् 9 *a* विच्छोय° वियोग 11 *a* विसठुलु शिथिलम्

पयथाउणमोक्कारियखेडउ धाइउ विरहसंसु मंतेउउ ।
पडपार विउ पिम्भरमावर्हि मंदरि व्हामिवि आविउ देवर्हि ।
पुणु तेण वि कमेण आवेसइ जंरवइ पत्तु वि पुरि पिवमेसइ ।

घत्ता—पउरयणे बुत्तउ मुणिउ णिरुत्तउ एवहिं जुवइ आवइ ॥
वेसमाहकुवेसी धरणिमोक्की बाले विलु किह लीवइ ॥ २४ ॥

25

दुवई—मरहणाहुणमिसंधिहं गमिमसुवणपायमुहं ।
वाम्मियं वोरपहयगयं पडूणं पंचमसयं ॥ १ ॥

पयाइणो विमसरे पयंपमाणयं सुपोमसंपयावसोयणं वणासयं ।
विसोवयेहिवाखमरमाणुमावयं महामुणिंदयोग्गयं सपावमावयं ।
फणोयवंनपुमरंतवाममावयं पियाविवसियाण कामुपाल वाजरं ।
कमाहपत्थविंणयोसुरत्तमावयं असीवयंपयाहसमरकयमावयं ।
पकवपाणकंपकंपयहि कोसयं पेसुणरेणुपिंपपक्खरंतकोमयं ।
सिदुष्पसंतयंविसावधारिवासयं पसंतवायरायपक्खवारिवासयं ।
महहि पिष्पिरे पसोमिसावमीरयं समाविपरमरिदबंदमाविवीरयं ।
महीरहमासीविसण्पमोरसायरं पयहिं दप्पिअयहिं मोयविण्णसायरं ।
परंतमंडगेयवाइकंपमायरं असम्मि पामिपीण जत्थ कं पमायरं ।

४ MP मरमइ इव मयरि, B मरमइव मयरे. ५ MP वङ° B वर°
25 १ P °पमोहण २ P विमसमोहि ३ MB पमूय° ४ MB °पम्मरउ° ५ P पडमिमा°

14 a तिय थीत
25 3 a प य प य मा च य मा गिरन्तरा भाषा पकम्पय दयाविसा यत्र b सुपोपेता रि—सौमनस्य परमा सम्पत्तिथा यत्र अमावेनया मय अथवा सुपी मनेप माय धो इय जुगलकर्मानी सोममत् यता य च यत्र अमावसत्ता कमाव यत्र 4 a तामुमा य तु आविस्वप्रमानयम् b प या य मा य तु स्वपरमव- यतम 5 b या य र वामीयस् 6 b °यम मा य य °राजा मा कमीया मन प्रस्तम् 7 b य तु मि- लाधि प्रसुपरेणुमा पुष्पसकरन्देम सि पीतत्वं प्राप्तं कौमलं यतीव यत्र 8 य ा य मा रि या म य ममजोव पुष्पित b °या य मा रि या स य रामयनमाटीवा य माणिवेव 9 a °य य मी र य सुमिमुदि b त या मि य° मुदम् °मा ति मी र य मीरम् 10 b मा र स माधीरयम्, यस्य यर सर स्यम् 11 °प य या इ कं प- याय य पदुम कम्पमानम् b य स्मी ता रि—यत्र यस्ये यमाने पतितीर्थं य (रि) प्रमायन मलित प्रमावमितयं यस्य क यस्य पमायन परिमितमित्यर्थ

अलीहिं चचलेहिं छण्णकजकेसरे तरति णो सुरासुरा वि जत्थ के सरे।
पलोइऊण त सरीतुसारसीयलं णहंगणावइण्णओ रिसी वसी यलं।

घत्ता—तहिं हियइ पसण्णउ सिलहि णिसण्णउ णिव्विण्णउ णरजोणिहे ॥
ससिविंवसमाणहि मलपरिहीणहि सिद्धु व सिवपयखोणिहे ॥ २५ ॥

26

खंडयं—विविहच्चणविहिकारिणा विप्फुरतपविधारिणा।
अइरावयकरिगामिणा पुणु पुज्जिउ सुरसामिणा ॥ १ ॥

परमसिद्ध णियचित्ति धरेप्पिणु मुट्ठिउ पंच झडत्ति भरेविणु।
जाइ ताइं ससहावें कुडिलइं धुत्तविलासिणिकुलइ व कुडिलइं।
आलुंचेविणु घित्तइ केसइ एम मुणति धम्मु जगि के सइ।
चिहुर लुक्क[१] जे हयतमपडलें लेवि पुरंदरेण मणिपडलें।
जणवयसंदरिसियझसमुद्दइ घित्त तुरंतें खीरसमुद्दइ।
परिसेसियउ मउडु रइरंगउ णं वम्महसिहरेहि सिहरग्गउ[२]।
मुक्कइं कुंडलाइं मणिजडियइ रविससिविंवइं णं णिव्वडियइं[३]।
कंकणु मुक्कउ मोत्तियहारें सहुं णिज्जिय मियर्कु[४] णीहारें।
मुक्कउ कडिसुत्तउ सहुं छुरियइ विज्जुलेया[५] इव णहविप्फुरियइ[६]।
अंवराइं मुक्काइ अमोल्लइ जाइ सरीरहु सुट्ठु[७] सुहिल्लइं।
ससारासारत्तु मुणेप्पिणु पचमहव्वय चित्ति धरेप्पिणु।
किमलंकारें देहहु भारें अप्पउ भूसिउ वयपब्भारें।
मोहजालु जिह मेल्लिवि अवरु झत्ति महामुणि हुवउ वियवरु।

26 १ MBP मुक्क २ MB सिहरगउ ३ BP णिव्विडियइ ४ MB मियक ५ BP विज्जुलदा ६ MB अइविप्फुरियइ ७ M सुद्ध

12 *a* छण्णकजकेसरे प्रच्छादितपद्मकेसरे, *b* तरतीत्यादि–यत्र वनालये सुरासुरा के न तरन्ति, सर्वेऽपि तरन्त्येव, सरे सरोवरे 13 सरीतुसारसीयल नदीजलविप्रुषा शीतलम्, *b* रिसी ऋषि, वसी जितेन्द्रिय, यल च+अल अत्यर्थम् 14 णिव्विण्णउ विरक्त 15 सिवपयखोणिहे मोक्षस्थानपृथिव्याम्

26 1 *b* °पविधारिणा इन्द्रेण 5 *b* केसइ के स्वयम् 6 *a* लुक्क लुप्ता 7 *a* जणवयेत्यादि–लोकानामसदर्शितमत्स्यमुद्रके, लवणकालोदाभ्यामन्यसमुद्रेपु मत्स्यादयो न सन्तीत्यागमात्, अथवा झसकुमत्स्यमुक्त उदक यत्र

रत्तरसाहरिल्लिय वेल्लिहिं पिवि महुमासहं पच्चासि सिपवेसिविं ।
दुरियहु वि माणि पवित्थरउ संजमु गउ जिणवासहु हरि हुयवहु जमु ।
परिपंचिवि सामिउ जियमत्थउ भवउ वि जणु जामियपियमत्थउ ।
यायइं येहाछोडयवइयइं जणि काढीससयइं पीवइयइं ।
भजयमलु महुमयह पयाइउ जियपुरवरु बाहुबलि पराइउ ।
गय जियगेहहु जयवासंपय भवर बसहसंघाइय मंदय ।
पियविरहाचालन सादेंतउ कारीयणु मसेसु परियत्तउ ।
यो बम्भई सहिउ बालीसें समउं तेम तावं पाढीस ।

घत्ता—रयवरहहु केरउ जगमपगाएउ हिंदु सिसहिं भरहे सउ ॥
पिउ पंपि अउज्झहि पेरिवुमज्झहि पुप्फयंतु मरहेसउ ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणनिक्खमणकल्लाणं णाम
सत्तमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ७ ॥
॥ संधि ॥ ७ ॥

MBP जयइ १ MBP सवरिणि and gloss in P दुम्मे १ MBP समरइं ११ MBK भाइयउ ११ M वइरिवुमेज्झहि

16 b जिण थे रिसि येतमरके हुम्मारी हारवें 18 a वरिं थे पिसि सपविपेरपय 19 a पेहायोइय. यद्य (पेहयोपिनारिवापि b ताबहवई प्रतिमारि a बहरतवद सपीप का 23 a बाहीं पे वोएइन कर्णिहरूपम हरवें, b का ही पि गामिताहिम. 24 भरहे भरतमेरे तद पेत्त

VIII

सीहासणु णरवइसासणु महियलु तेणु अवियप्पिवि ॥
गुणवंतहे तवसिरिकंतहे थिउ अप्पाणु समप्पिवि ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

I

आवली—धरिऊणं इसी सुणिग्गथवेसय
दूरविमुक्कसंगयं जणियतोसयं ।
तिस्सा रइकएण परिसेसियगओ
एयत्त भरेण झाणालय गओ ॥ १ ॥

चिरु चरियइ चरियइं संभरेवि जगसामिणि गोमिणि परिहरेवि ।
मणमारहु मारहु करिवि छेउ अइसच्चहु तच्चहु मुणिवि भेउ ।
तणुभरणइं करणइ णिज्जिणेवि मयासिमिरइं तिमिरइ णिद्धुणेवि ।
घरवासहु पासहु णीसरेवि विहडंतउ जंतउ मणु धरेवि ।
सहुं लोहें मोहें वहिवि खेरि णियजणणि व वहिणि व गणिवि णारि ।
संकुज्झिवि वुज्झिवि सद्दं जि सिक्ख सुइवइणी जइणी लेवि दिक्ख ।

GK give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

एको दिव्यकथाविचारचतुर श्रोता बुधोऽन्य प्रिय
एक काव्यपदार्थसगतमतिश्चान्य परार्थोद्यत ।
एक सत्कविरन्य एप महतामाधारभूतो विदां
द्वावेतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

MBP, however, give this stanza at the beginning of IX with variants जना' for विदाम् and भूषणौ for भूषणम् At the commencement of this Samdhi they read the following —

मालवेंद्रुधरि कुतूहलिनो ममैत-
दापृच्छत कथय सत्यमपास्य साव्यम् (शाठ्यम् ?) ।
त्यागी गुणी प्रियतम सुभगोऽतिमानी
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतार्यतुल्य ॥

1 १ MBP सिंहासणु २ MBP तणु व वियप्पिवि and gloss तृणमिव गणयित्वा ३ P गुणवतहो ४ P °कंतहो ५ M तस्सा ६ MBP एयर्त and gloss in P एकान्तम् ७ MB जयणी

1 1 तणु अवियप्पिवि शरीरमाविगणय्य 5 तिस्सा रइकएण तस्यास्तप कान्ताया समोगार्थम्, परिसेसियगओ त्यक्तकाय 6 एयत्त एकत्वम्, 7 b जगसामिणि लक्ष्मी, गोमिणि पृथ्वी 9 b मयसिमिरइं मदस्य सैन्यानि 11 a खेरि वैरम् 12 a संकुज्झिवि शङ्कामुज्झित्वा, b जइणी जैनी

धम्मामयमेहु मुणि मेरुधीरु मयसत्तु णयसत्तु णेमिहि महीरु ।
धम्मगुणणिहि पवणमाणि विहत्थियमेहु परंतरु अंतरु कपिथि कुरु ।
मोहंधपमिरिउदप्पंकुरिसपयणु भासासियभासियधिसिसियमयणु ।
मुमंगारंभपसंगरहिउ धयरिसिवधरिणिवरिसमहिउ ।
णिरंधु णिबंधु णिमुक्कसंगु संकिपमुरु सुरणुरु विचरिंगु ।

घत्ता—धरणुसिरि व्व कंचणगिरि णयगुरु सुकियसंपउ ॥
थिउ समाइ णवि चयणाइ मं भावोइयथंपउ ॥ १ ॥

2

भायवी—विसयवसा तिसाछुहातावसोसिया
भीसणवग्घसिंघसप्पोहिं तासिया ।
जे समयं चलम्मि सम्मा महारया
ते मग्गा पियंति मिसहियपरीसहा ॥ १ ॥

केमप्पवयसत्या महारंभमोहा पर्यपंति पवं संमोहमोहा ।
ण णाणं ण पुज्जं ण मूसा ण वासं णइ पाणियं केर आहारणासं ।
ण पीउज्जलाएण विच्छो मईतो ण णिद्दाइ भुक्खाइ तण्हाइ संतो ।
ण जंपेइ णाहो वि एवं वि सिवं णिमम्मो णिरंदो संठिमो एम णिच्चं ।
ण याणामि किं चितए चित्तमज्झे मई कम्मि संजोयए संधुसज्झे ।
ण बुज्झंति णाणा कुडं चकूरमाणो ण भोमिणं वेम पवासियाणो ।

---

८ MBP मोहुग्गमिमिर° ९ MB सुरिच° १ MBP णिर्वु
2 १ MBP विवीरं व्वहरिव° २ GK have before this line सुवण्णमाले णाम छंदो MB have सुवंणमाली णाम छंदो, P सुवण्णमालाणाम छंदो. ३ MBPT सम्मं महारा. ४ MBP ण वि णिव्वं. ५ T संधुसज्झे ६ MB णमिणप, P णमिणरं

---

13 a [illegible] b [illegible] 14 a [illegible] 15 a [illegible] b [illegible] 16 a [illegible] 17 [illegible]

2. 1 [illegible] 3 [illegible] 5 [illegible] b [illegible] 6 a [illegible] 7 b [illegible] 8 b [illegible] 10 b [illegible]

अहो हो किमेयस्स एएण होही घणते कहं वा णिसाहाइं णीही।
पुणो पट्टणं किं च जाही ण जाही मणोहारि रज्जं पि काही ण काही।
ण कंताकुडुंबेण मोहं विणीओ ण सद्दूलपंचाणणाणं पि भीओ।
जडाजालधारी सपारोहसोहो घुलंतंगसप्पो चडो णं कुरोहो।
मणूमण्णणिज्जो णियारी णिसुंभो इमो देवदेवो परो आइवभो।
इमस्सेरिसो धीरधीरावहारो परं दुव्वहो चारुचारित्तभारो।

घत्ता—जं धवलें अइअतुलवलें दुग्गु खुरेहिं णिभिण्णउ॥
तेहिं कसरहिं विहुणियसिरहिं एक्कु वि पउ णउ दिण्णउं॥२॥

3

आवली—उब्भियधवलचिंधमहिमावसारओ
करिवरजूहणाहपल्लाणभारओ।
परजम्मंतरे वि परिरूढतेयओ
पियसहि रासहाण कह होइ णेयओ॥१॥

गयगंडकंडुकडुयणवाह को वि सहइ किडिदाढावलेह।
को वि सहइ फणिमुहचुंवियाइं ताण चिय कंठोलवियाइं।
को वि सहइ दूसह दंस मसय पोसियकसाय दुव्वार विसय।
को वि सहइ णग्गत्तणु णिरासु णिच्च णिरसणु गिरिदुग्गवासु।
पाउसजलधाराविप्पियाइं को वि सहइ विज्जुझडप्पियाइं।
को वि सहइ सिसिरि पडंतु सिसिरु उण्हालइ दिणयरकिरणपसरु।

७ B णीही ८ MBT धीरवीरावहारो, but gloss in T धीराणा धैर्यापहारक, P वीरधीरावराहो, but gloss धीराणामपि धैर्यापहार ९ MB जें १० MB खुरहिं णिब्भिण्णउ ११ P जरकसरहिं १२ M °सुसिरहिं १३ MBP ण वि

3 १ P किह २ MBP °चड° ३ B कठालवियाइ ४ MB ससिरि but gloss in M शीतकाले

11 *b* णिसाहाइ अहोरात्राणि 13 *a* विणीओ विनीत प्रापित 14 *b* कुरोहो वृक्ष 15 *a* मणूमण्णिज्जो मनुभिरपि पूज्य 16 *a* धीरधीरावहारो धीराणामपि धैर्यापहार 17 धवलें धुर्यवृषभेण 18 कसरहिं वत्सतरैः

3 3 परिरूढतेयओ प्रख्यातप्रभाव 4 रासहाण गर्दभानाम् 8 *a* वाह बाधा, *b* किडिदाढावलेह सूकरदंष्ट्राविदारणम् 8 *a* णिरासु फलानपेक्षम् 9 *b* °झडप्पियाइ पतनानि 10 *a* सिसिरि शीतकाले, सिसिरु शीतम्.

परमेसरुकहाणी केम विद्रु | का पि लहइ मयरद्धु तणिय विद्रु ।
मज्झेण वसु किं पसु भणमि | परु आइवि तं पियरज्जु करमि ।
मज्झेण उत्तु समरंमि पुत्तु | परु आइवि भामिगामि कलत्तु ।
मज्झेण उत्तु मणिवुहियारं | सक्खिमरं मयरंदरइवियारं ।
सरणारि पदसप्पिणु रिपमि ताम | उज्झाइ ण पेच्छइ जीउ जाम ।

घत्ता—मज्झेवें माणगुरुक्कें विरहिमिपि पइठ पुयइ ॥
परमसर मारुवियवइ पकहंउ पपि किह सुपइ ॥ १ ॥

4

आवली—मिसेंत समिम्मि मिमाइ रामा सवं
मइंतम्मि आइ पुहिपयं पियं ।
मज्झमो पणम्मि सहिऊण दंडयं
वरवइयरियमय मिथाण मंडयं ॥ १ ॥

विसेसे विपज | तवगिरिगइयं ।
परब्भयेरई | मोतूण पई ।
गंतूण पुरे | तं विविहयरे ।
मरहस्स मुई | पेच्छंमु कई ।
समेहि पवं | पडिवज्जमिवं ।
पुरजविययपं | बहुपंचमयं ।
वत्तुंगतवुं | पवसंति महुं ।
गंभिपमसिहिं | कुसुमंजलिहिं ।

१ B पवर ६ MB मिमिसि ७ MBP पुत्तु मि

4 १ MB मिसेंदि, K मिसरुं but corrects it to मिसेंतं २ MBP have before this line वसिमवणा णाम पयो GK have वसिमा णाम वयो ३ MBPT °पइ ४ MBP पेच्छामि ५ MBP °वमिव° ६ M adds this foot in the margin and MB read after it णवीसहम पवुलवइं वी पिप्पमवं after इवयवयं P read वरिपमिवयम मदुलवणं

11 b विद्रु मनुष्यस्वरूपाम्

4 1 मसौ वाक. 2 पुही पवयवी नरम् 3 दंडन सुवर्णादिकम्, 4 निवये निजे 6 b पदं पतिम्.

गयजम्मरिण पुज्जंति जिणं ।
जंपंति इमं धीरो सि तुमं ।
ण मुयसि कमं गहियं णियमं ।
अम्हे चवला पविलीणवला ।
तुह मग्गचुया हा किं ण मुया ।
मणंधरियगई इय भणिवि जई ।
अज्जवसवणा णिम्मियभवणा ।
थियहरिणगणे णिवसंति वणे ।
कंदं पवरं मूलं महुरं ।
मालूरदलं भक्खंति फलं ।
सीयं विमलं पपियंति जलं ।
सिरघुलियजडा वियरंति जडा ।
किर ते वि मुणी ता दिव्वझुणी ।
ससिरविसयणे उग्गय गयणे ।
मा लुणह तरुं मा धुणह मरुं ।
मा खणह महिं मा कुणह सिहिं ।
मा विसह सरं मा हणह परं ।
एसो ण विही जइ णत्थि दिही ।
ता णिवसणयं तणुभूसणयं ।
गेण्हह तुरियं दुट्ठ दुरियं ।
असुविद्दवणे भवसंकमणे ।
जं आसि कयं तं जाइ खयं ।

घत्ता—जिणलिंगें उज्झियसग्गें जं किउ पाउ दुरासें ॥
तं तुट्टइ कंह वि ण फिट्टइ जीवहु जम्मसहासें ॥ ४ ॥

७ P मणि ८ MBP °हरिणयणे ९ MP विरयति १० MBP कह व

19 *b* °भवणा गृहाणि 20 *a* थियहरिणगणे स्थिता हरिणानां गणा यत्र 23 *a* मालूरदलं बिल्वपत्रम् 26 *a* ससिरविसयणे आकाशे 27 *b* मरुं पवनम् 29 *a* सरं सरोवरं पानीयम् 35 पाउ पापम् 36 जम्मसहासें जन्मसहस्रेण

5

मागधी—ता सम्मा कराहिवा मासियपणरे
पुमरसम्मोरपिम्मंपकदम्पए पर।
पियाविभवपरियहपिमुहसपट्ठिया
णामाविहपियारवेसेहिं संठिया ॥ १ ॥

तो[1] कम्ममहारूपमर्द्द समूप परिहूसपिसुयसिरसूम्भूय।
कामियकामिणिपियकामकील मयमत्तचंदसोंतासमीय।
परवसवसणोसहत्यवसमत्य दोण्णि वि मायर करवायहत्य।
णापा तहिं अहिं पिम्मुप्पवंसु पिउ परिमाणेपै ता सयंभु।
पासहिं परिभमिवि महाजिणूर णं जंबूदीवहु चंदसूर।
णामें णमि विणमि विषयमोह णं सिहरिहिं णिग्गयपियमाण मेह।
पंचपरिपि तेहिं पणुसु पण पियमुपई विहिंसिपि पुहर देव।
तिण्णी मम्हाई दिण्णउ ण किं पि महिमंडलु गोप्पयमेत्तु जं पि।
पई पाविपवपियसासवेण वेसवयरवेसियपेसवेण।
एयहिं पहुत्तण किं ण देसि मणु कवणु दोसु गुणरयणरासि।
परमेट्ठि पियामह तिहुयणाय अम्हारउ दुक्खु ण होइ राय।

घत्ता—तुह चलणाइं जे पणविज्जाई मणमहुयर पहुपंकय॥
कम्मेताहि काई ण घोलहिं णाम ण दिण्णउ तुहर ॥ ५ ॥

6

मागधी—पुणु पुणु पहुपत्तापयाबुज्जमे एवा
पायसुं पडंति णाई कुमारया।

5 १ MBP °सिय° २ M°पिहुलयसुय; B पिहुलयसिया ३ MBP ता ४ M °मयमाण B °मय-माण° ५ P °पियुय° ६ MBP पियासपिहु. MBP पणमेपिहु ७ M विषमाण

5 3 सिवेवाहि त्रिभुवन कियन्त लोकोपदेशा मिकाससिद्धिविद्यमा इव विस्ता त्याज मेघा ते 6 4 तपयुग पुत्री 6 5 "जाणाव" एतौ. 8 5 कवलु पालिपम 16 8 पुत्र दद अनुपम करोति 17 अम्मोहपि कालोभिन

6 1 एवा एता

सोहइ गुरुयणम्मि कयमाणवज्जणं
गिरिवरदारणम्मि करिदसणभंजण ॥ १ ॥

रयणमयमहंदासणसमेउ पोमावइपरमाणंदहेउ ।
जिणपुण्णपवणपरिछित्तकाउ तहिं अवसरि कंपिउ णायराउ ।
णियणाणु पउंजिवि तेण मुणिउ जं सालएहिं जिणु पुरउ भणिउं ।
मग्गंति बाल किं भुअणभाणु जइ देइ देर्इ ता तिजगदाणु ।
पर तेण विमुक्कु घरत्थकम्मु पारद्धउ विमलु मुणिंदधम्मु ।
सामंतमतिसेविउ णरेसु महिवइ संतोसिउ देइ देसु ।
देसवइ गामु गामवइ छेत्तुं छेत्तवइ किं पि कुडेएण भत्तु ।
घरवइ पुणु ढोवइ कूरमुट्ठि तिहुयणवइ पाडइ पयहिं सिट्ठि ।
जइ पत्थिज्जइ ता को वि गरुउ लहुपत्थणाइ पर होइ चरुउ ।
लइ कयउ कुमारहिं जुत्तु साहु सो पत्थिउ जो तेलोक्कणाहु ।
सो पत्थिउ जसु जसु जगपयासु सो पत्थिउ जसु सुरवइ वि दासु ।

घत्ता—णिच्चलमणु समतणकंचणु जेण वित्तु पढिवण्णउ ॥
मोक्खत्थिउ सो ज पत्थिउ तं हउं करमि असुण्णउं ॥ ६ ॥

7

आवली—णरलोयम्मि ते हमिह खोहकारणं
जाय किं भणामि सुकयावयारणं ।
अचवंता वि देंति तरुणो महाहल
सुपुरिसदसणं पि ण हु होइ णिप्फल ॥ १ ॥

6 १ MBP सुदरेहिं जिणपुरउ २ MBP देउ ३ P खेत्तु ४ P खेत्तवइ ५ MB कुलएण, P कुटएण in second hand ६ MB तहलोय° ७ MBP ण सुण्णउं
7 १ MBP भणेमि

6 *b* णायराउ नागराजो धरणेन्द्र 10 *a* णरेसु नराणामीश, अथवा, पुरुषेषु 11 *b* कुडएण प्रस्थेन 12 *b* सिट्ठि जीवसृष्टि त्रिभुवनम् 13 *b* चरुउ हितकर
7 1 णरेत्यादि- नरलोके तौ नमिविनमी तिष्ठत, हमिह अह तु पाताले तिष्ठामि, तथापि एतौ मम क्षोभकारण जातौ

दुवई—तो पिमामणमेव धरणेय कयं संमरियजिमवरं ।
पवरपवरकप्पकुम्मजालोसिपसमहिमहिहरं ॥ १ ॥
महिहरलंबकंपरावणपमिग्गपकूरहरिवरं ।
हरिमोरासिराहविताभिमपासियमत्तकुंजरं ॥ २ ॥
कुंजरबाहुसवरपेवेडिपिहुमपाडियपपवमूरुरं ।
मूरुरपंधुंपपरपविहमजलपमविपहुमवरं ॥ ३ ॥
दुमवलविप्फुल्लिगजालासविजलियसंमत्तकामणं ।
काणमसंमिसप्पमुक्ताविसंकियसपक्खसुरपणं ॥ ४ ॥
सुरपणमरियजम्मजमपारारियसुविरलंबरं ।
अंबरपवकुंरततरिविसरंजलपकमुरं ॥ ५ ॥
कमुरयिम्मवत्पवितिपम्गुत्तावयछायवसंकुमं ।
संकुमकविंडेमविसहरमुहमाविमविसजवयं ॥ ६ ॥
चंदणकुसुमधुलिपकमरसमसंकुमकमिपयवं ।
मयंमकामसामफणिरामपमियसरसमवयं ॥ ७ ॥
मयणमिसिमिपक्खिपमीमसमरमकपालुरिपमेहलं ।
मेहलिमाविलंभिवकविकिणिकमसरपसमुपेसणं ॥ ८ ॥
इय वरविवरकुहरलरमहपसज्जपवकंपकारिणा ।
विपवफणाहिवचूडामणिकुवलयमारधारिणा ॥ ९ ॥
पहुक्कमकमणामिपणमिविवमिवरारिवमीअपाएणा ।
मणि समागमण दिट्ठि रिसही गरुअसरराएणा ॥ १० ॥

---

१ P तो. ३ MBP °वरं° ४ P °जपामिय° ५ MBP °वरिलेव° ६ MBP °वतेत° M °तम-वातिय°, B °तमसरवतिय°; P °तमवतिय° and gloss तमवहित K °तमवतिय° but in second hand °तमवतिय° MBP °हलिरक° ६ MBP °वमम° ७ MBP वंवरं°

---

6 °कवर्ण° चेयव 7 °आवंपव °भासम्मम्, 8 हरि मो रा सि सिंहपरिवार तैल पोवाहय 10 °मरमिहवबहर° महामिवर्मयमहुर्दा 12 °ता वा प ति व° तामतितो 13 °महिवववर° फुलेच 14 °कमुरं विलग्नं वथा भवति 15 °कमेवव° कमोमवत् °मरवदेवीमाय् 16 °काफि-व° कुमिता 18 °काम° स्मात. 21 °कुर° पर्वत 22 °कहिवव° मिता 23 °मोक° भाववर्ष 24 मरवहरपरवा मामरोव वरमेव

घत्ता—आवेप्पिणु कर मउलेप्पिणु थुउ मुणिंदु थुइलक्खहिं ॥
मुहँ[11]घुलियहिं अक्खरलें[12]लियहिं जीहहिं दसें[13]सयसंखहिं ॥ ७ ॥

8

[1]आवली—कंतामुहपलोइरं भोयलालसं
भुवणवणं डहेइ मोहो मलीमसं ।
जइ तुह वयणवारिणा णेय सित्तयं
ता कह जियइ मयणसिहिणा पलित्तयं ॥ १ ॥

दूसियघरासमो भूसियणियागमो ।
सोसियमईमलो पोसियमहीयलो ।
मयगयणियत्तओ कयवयपयत्तओ ।
भावियजयत्तओ तावियसं[2]यत्तओ ।
खंचियाविसायओ संचियाविरायओ ।
लुंचियासिरोरुहो वंचियदुरग्गहो ।
कुंचियगईवहो अंचियजसावहो ।
मावईखोहओ आवईरोहओ ।
छडियकुसंगओ खंडियअणंगओ ।
दडियसईदिओ पंडियपवंदिओ ।
तवयरणपरियरो जमकरणभयहरो ।
समसरणजोयओ भवतरणपोयओ ।
सज्जणाणग्गणी सिद्धचिंतामणी ।
सपयासगमो धम्म[3]कप्पद्दुमो ।

११ P मुहि १२ MBP °वलियहिं १३ P दुसहससखहिं
8 १ GK have before this line —अमरपुरी छदो, MBP have अमरपुरी नाम छंदो, २ M °सगत्तओ ३ B omits this foot

8 1 लालस लम्पटम् 4 मयणसिहिणा पलित्तय कामाग्निना प्रदीप्तम् 5 b °घरासमो गृहस्थाश्रम 7 b °पयत्तओ प्रयत्न 8 b °सयत्तओ °स्वगात्र 11 a °गईवहो °गतिमार्ग , b अंचियजसावहो श्लाघितयशोधारक 12 a मावई° लक्ष्मीपति 15 a °परियरो सामग्री, b जमकरण° मरण रोगो वा 16 a समसरण °उपशमगृहम्, b °पोयओ प्रवहणम्

मवविणासी भवो   सिवपयासी सिवो ।
विरुत्तमहो हणो   वोसविर्याई जिणो ।
पावहारी हरा   तं पराणं पया ।
देवदेवो तुमं   तादि वीर्य मर्म ।
णिग्गुणो णिद्धणो   दुम्मई णिम्मिणो ।
परहरावासमो   पहियपरमाससो । ।
माणमो मच्छमो   रोहिमो रिठमो ।
जायमो इं मवे   आरमो रठरव ।
तुम्ह पडिकूलिमा   जा कया सा कमा ।
एम मुत्ता भए   जासि कासे भए ।

घत्ता—जिणु वंदिवि भण्णइ विदिदि मार्ए तमु पच्छाविउ ।
णमिरायषु णिपमिसरायषु मुहससिरिंदु णिहालिउ ॥ ८ ॥

9

मावसी—दंहिं पर्यपिदं सवा सुहावणं
मविमाहि दाढिरूण पत्तो सि किं वणं ।
कस्स तुमं सुसील अम्हाण सेमुहं
मणिमिसखेमकोहिं किं पेच्छसे मुहं ॥ १ ॥

भीयरदेत्तासिपासिपणरिंदु   तं णिसुणिवि पडिजंपइ फणिंदु ।
हउं भुवणि पसिद्धउ णायराउ   कंमारिमणंगिउ तिजगताउ ।
कारणहु कुसुमसरवणासु   यइ देउ भडारउ सामिसासु ।
तायहुं णिम्माउ मुणेरहु   तायहुं वि एम महु कहिउ वत्तु ।
त पेसिंय देव वि कारणेण   णिहणिमणकण्णीरवहारणेण ।

४ MB णिदुणो ५ MP add after this, पोमवासाधरो परमवमोक्खो B adds only पोमवासावमो.
9 १ MBP भीमा° २ B णिसुणवि ३ MB सुहु रसु MBP णरेसिव

20 a णिरुत्तमहो निरूत्तमोत्सवः हणो कातिव वचन निराकृत तमोऽन्धकारसमूहः 22 b तादि एव 27 b कथा कमान, 29 यादृ सर्वमेव
9 1 सवा सुहावणं सदा सुखकरम् 2 मविमहि वाढिरूण हे भद्रे, मही निगर्य. 5 "भणिया" कथित° 6 b कमारि° इत्य. 7 कुसुमसरस्य मारस्य कामस्य. 8 a णिमेदत्व देवेभ्य वणा

एहिंति वे वि णमिविणमिणाम महु मग्गिहिंति सिरिसोक्खकाम।
तुहुं देज्जसु ताहं णयासणाउ खगसेढिउ उत्तरदाहिणाउ।
आसणथरहरणें ढलिउ संचु मइं जाणिउ तुम्हारउ पवंचु।
पायालु मुएवि अवयरिउ एत्थु हउं अरुहदेवपेसणसमत्थु।
जो खंडइ लिंपइ सुरहिएण देवें णिज्झाइयणियहिएण।
एयहिं सो दीसइ धुंधु समाणु परिचत्तउ पुव्विल्लउ विहाणु।

घत्ता—लहु आवह काइं चिरावहं जोइ सुणवि सखयरइं।
मइं सिट्ठइं पहुउवइट्ठइं भुंजह णाणाणयरइं ॥ ९ ॥

10

आवली—इय वयणं कुमारवीरेहिं इच्छियं
णवर णहयले विमाण णियच्छियं।
मारुयधावमाणधुयधयवडंचियं
गुणिणा झत्ति णायणाहेण णिम्मियं ॥ १ ॥

णविऊण सदोसारंभहरं सुरवरभवणेण सरंभहरं।
जुज्झियहिंडियविसहरिणउलं दूवकुरपीणियहरिणउलं।
गयणंगणलग्गसिरं गरुयं ओसहिहयसत्तसिरगरुयं।
उक्खयपुलिंदकदारुणयं हरिणहहयकरिकदारुणयं।
सीहाणुलग्गभीयरसरहं सुररमणीवाहियहंसरहं।

५ MBP अरुहदासपेसण° ६ MBP धुउ

10 १ All Mss have before this line मात्रासमकं २ MBP जुज्झिरहिंडिर° ३ MBP दुव्वकुर°

11 *a* णयासणाउ नगाश्रिते द्वे श्रेण्यौ, *b* खगसेढिउ विद्याधरश्रेण्यौ 12 *a* °थरहरणें कम्पनेन, संचु शरीरबन्ध 14 *b* °णियहिएण मोक्षेण 16 चिरावहं चिरं कुरुताम्, सखयरइं विद्याधरसहितानि

10 5 *a* सदोसारंभहरं स्वदोषारम्भविनाशकम्, *b* सुरवरभवणेण विमानेन, सरंभहरं सरोवरजलधारकं विजयार्धं रम्भायुक्तगृहं वा 6 *a* °विसहरिणउलं धृपसिंहनकुलम्, *b* °हरिणउलं मृगसंघातम् 7 *a* गरुयं महान्तम् *b* सत्तसिरगरुयं सत्त्वानां शिरसि शरीरे च रुजं व्याधिम् 8 *a* °कदारुणयं कन्दैर्मूलैररुणं रक्तम्, *b* कदारुणयं मस्तके कृत्वा दारुणं रौद्रम् 9 *a* °सरहं अष्टापदम्, *b* °वाहियहंसरहं वाहितो हंसयुक्तो रथो यस्मिन्

तीरासियपयरीवादम्मयं तुमसहुमहुयहुपपाइम्मयं ।
मउररवमरियवंसाहरयं वरसयरपीमपिम्मोहरयं ।
संदेसियबहुरत्तामरसं रपियपवियसावियतामरसं ।
कीसारियहारमारियमहियं झियपरिमाकपमहिमामहियं ।
चारणमुणिमंसियपम्मसुहं हयमरिपणिन्दयपवाहसुहं ।
फणिवयणविमुक्कविसम्मिवहं वणिहोविपयपिविहविसम्मिवहं ।
परणुयकममम्मतिपयासवयं कीयं सहं मपिप्पामवयं ।
पुण्णायरजलहिपिहम्मासिये कयरमुहेहिं वणयरगामिये ।

घत्ता—मउमीसहिं णमिविणमीसहिं गिरि वयड्ढु पमाइउ ॥
एयवासम्म सायरवेलप तुम्मेंड्ढु व संजोइउ ॥ १० ॥

11

मायवी—पियसियपिरपिङ्गुमपिञ्जरपिंजरा
मणिमयकडयमंडिमो व्व महीहरो ।
रयणायरपसारिओ सहइ सोहणो
रयणायरपिसुहमो हवइ पीयणो ॥ १ ॥

वं कणसिरियहायारवंसु महदा गोणाइसरीरवंसु ।
पंमासिपूरिं विहिम्मयदु परिगयपसंकिरमपामिहणमेदु ।
रम्मवइं णामइ रम्मवारमेउ पेमइं वसइ वं सम्मसार ।

४ M °कमाहरय ५ M °मिमहरय ६ P सरहमिम° MBP हरिमामिम°

10 [illegible]
11 [illegible] 12 [illegible]
13 [illegible]
15 [illegible]
16 [illegible]
17 [illegible] 19 [illegible]

11 1 °पिञ्जर° [illegible] 2 [illegible] 4 [illegible]
[illegible] 6 [illegible]
7 [illegible]

उवलोसहिरससिहिजोयवण्णु ग्सवाइ व सइ णिवडियसुवण्णु ।
णिसि चदयतसलिलेहि गलइ वासरि रविमणिजलणेण जलइ ।
माणिक्कपहादिण्णावलोउ जहि चक्कवाय ण मुणंति सोउ ।
रययमउ सव्वु रयणियरभासु पण्णास मूलि वित्थारु जासु ।
गैयणगणलग्गविचित्तसिंगु जो पचवीसजोयणइं तुंगु ।
दोवासहि तासु थियाउ ताम दीहत्ते लवणसमुद्दु जाम ।
उत्तरदाहिणियउ मणहराउ सेढीउ दोण्णि विज्जाहराउ ।

घत्ता—महि मोइवि दह वरि जाइवि दहजोयणवित्थिण्णी ॥
एक्केकी चिहवगुरुकी णाणारयणरवण्णी ॥ ११ ॥

12

आवली—तत्थ चउत्थकालटिठिसविहाणयं
पत्तधणूसयाइ मुणिरयणिमाणय ।
णीण कम्मभूमिपरिणामजोयओ
परविज्जाहलेण अहिओ विहोयओ ॥ १ ॥

कुलजाइकमेण समागयाउ दूसहतवताववसंगयाउ ।
पुव्वाउ ताउ णिम्घ हियाउ अवराउ पयत्तें साहियाउ ।
सहिउवसग्गें धीरें समेण सुइदेहें होमें संजमेण ।
पारभियमुद्दामडलेण चरुगंधधूवफुल्लच्चणेण ।
विज्जाहराहं णियमें वएण विज्जाउ होंति ससहावएण ।

11 १ MBP गयणग्गलग्गसुविचित्त° २ B °सेंगु ३ MB सेढिउ दोण्णि वि, P सेढिउ वेण्णि वि ४ MBP णाणाणयर°

12 १ P °कालट्ठिदि° २ T भयराणिमाणय, but notes a p मुणिरयणीति पाठेऽप्ययमेवार्थः. ३ MBP कम्मभूमिणाम° ४ MBP महिओवसग्गधीरें ५ MP °पुप्फच्चणेण, B पुप्फचणेण ६ MBP कमेण

8 *a* उवल° धातुपाषाण 11 *a* रयणियरभासु चन्द्रकान्ति 13 *a* दोवासहिं द्वयोः पार्श्वयोः 15 मोइवि मुक्त्वा, वरि उपरि

12 1 चउत्थेत्यादि—चतुर्थकालस्थिते शरीरोत्सेधादिलक्षणाया सम्यग्विधानम् २ मुणिरयणिमाणय सप्तहस्तप्रमाणम् 3 णीण नृणां मनुष्याणाम्, कम्मभूमिपरिणामजोयओ कृष्यादिकर्मयोगज 7 *a* सहिउवसग्गें सोढोपसर्गेण 9 *a* वएण व्रतेन

सिहरउ पल्लवियपहरपाउ भावणु करिणि परोहयाउ ।
जहिं घम्मा इव सीरिम्मकाम खीरंतरसीमारम गाम ।
जहिं दक्खामंडवयलि सुयंति पहि पंथिय दक्खारसु पियंति ।
पवणुद्धयछेत्तपरिट्ठियमाणु पुंडुच्छुरसंदरेंसु पवहमाणु ।
कारकुच्चरसु व सयु पियइ ताम सिसीर हारु सिरकेंसु जाम ।
जहिं पिक्ककलमकणिसइ चरंति सुय सूयसत्थु हसिमिमिरि करंति ।

घत्ता—खिरिसपत्तहिं मं पत्तुयपत्तहिं विमंसंती दिणि रायइ ॥
जहिं पोमिणि कमलसुपरमुणि ण माणुहि गुण गायइ ॥ १२ ॥

13

मायली—कंकणहारदोरकडिसुत्तभूसिया
णिच्चं पंचपूयमहोववासिया ।
जम्मि भुंजिउं जया देवयाणिणे
सोवण्णं जं करंति तं केण माणिणं ॥ १ ॥

कुसुमियवंजयवणसंकडाइं कीलागिरिसिहरम्मडाइं ।
परिहासियर्वि परिपंकियाइं पवणुल्लुयधयमालंकियाइं ।
बहुदारमंडवपत्तमयाइं सोवण्णारयणपरिचयाइं ।
मुहसालातोरणसोहियाइं वाहिकुसेहिर जसाहियाइं ।
बीहाणसूहमेलियसुराइं एयइ पण्णास जि पुरवराइं ।
परिहत्ति किण्णर वरवीर वीरु बहुकेउ पुत्तु वि पुरु पुंडरीरु ।
हरिकेउ सेयंकेउ वि सखेणु सण्णारिकेउ गीहारवण्णु ।
सिरिचिंधु सिरिहरु लोयमालु अण्णेक्कु मरिकज्ज सम्पदीसु ।

---

७ MBP सुहरयाउ MBP भेवरु° ९ M जहिं १ MBP एत्तरमाणु ११ M °कणकणव; BP कणणरीण १२ MBPK सियमरी.

13 १ MBP °कोडि वासिया T °मोर° and gloss पुष्पमूर २ P °पीताएमाण. ३ MBP देवयेम ४ MB सोमणवाङ्घ P सोवण्णवाङ्घ and gloss सोवर्णवाङ्घम्.

---

10 पल्लविपहरपाउ प्रकटितप्रकरः; ७ भावणु भावनम् 12 ७ पहि मार्गे 13 पवहउ° इक्षुरसेविस्तारिणी 15 ७ सुय शुकाः; हसिमिमिरि कलकलिता 16 सिरिहि चणहिं पत्रैः; रायइ शोभते.

13 3 मगोर° पुष्पमूर 5 देवयाणिणे दिव्यासनितिम्. 6 ४ परिहत्ति नाम वरीणिकानि.

वज्जग्गलु वज्जविमोउ अवरु महिसारु पुरं जयपुरं वि पवरु ।
सोलहमी पुरि सयडमुहि होइ चउमुहि वहुमुहि जाणंति जोइ ।
रयविरयपउरखगजम्मखोणि आहंडलणयरि विलासजोणि ।
अपराजिउ कंचीदामु दोण्णि सविणय णहु खेमंयरीउ तिण्णि ।
झसइंध कुसुमपुरि संजयंति सुक्कउरु जयंती वइजयति ।
विजया खेमंकरु चंदभासु रविभासु सत्तभूयलणिवासु ।
सुविचित्त महाघण चित्तकूडु अण्णु वि तिकूडु वइसवणकूडु ।
ससिरविपुरि विमुही वाहिणी वि सुमुहीपुरि णिच्चुज्जोइणी वि ।
मज्झइ रहणेउरचक्कवालु तहिं सयलखयरकुलसामिसालु ।
जायउ जयमंगलजयरवेण णमि फणिणा णिहिउ कउच्छवेण ।

घत्ता—एक्केक्की पुरहिं विरिक्की गामकोडिपडिवद्धी ॥
णमिरायहु थुयणाहेयहु धम्में संपय सिद्धी ॥ १३ ॥

14

आवली—पुरिसा भूयलम्मि विरला सुधीरया
परउवयारवावडा होंति धीरया ।
एक्को अहव दोण्णि पायालराइणा
सरिसा णत्थि भद्द धरणिंदमोइणा ॥ १ ॥

वारुणासामुहाओ फुडं जाणिमो वामसेढीपुराणावलिं भाणिमो ।
अज्जुणी वारुणी वइरिसंघारिणी अवि य केलासपुव्विल्लया वारुणी ।
विज्जुदित्त पुरं गिलिगिलं पट्टणं चारुचूडामणी चंदभाभूसणं ।
वंसवत्त पुरं कुसुमचूलं पुरं हंसगब्भं पुरं मेहणाम पुरं ।

५ B जटपुरु ६ B सयडमुहि ७ M खेपुरीउ, BP खेमपुरीउ ८ MBP सुक्कउरि ९ P वइरसगा°. १० P णेउरु चक्कवालु ११ MBP जोयउ १२ M विहवगुरुक्की, BP पुरहिं गुरुक्की

14 १ M सरसा २ MBP भद्द णत्थि ३ MBP पुराणावली ४ P विज्जदत्त ५ MBP किलि-किल ६ MP वसवत, B वसवस

23 पुरहिं विरिक्की पुरै विभक्ता

14 1 सुधीरया सुबुद्धिरता 2 वावडा व्याप्रृता 5 a वारुणासामुहाओ पश्चिमदिशामुखात् प्रारभ्य

संकरं सम्मिइम्मं पुरं चामरं — विमलमसुमरुयं णिवसमं मंदिरं ।
वसुमईणामयं सव्वसिद्धत्थयं — सत्तुंजयं केउमालं कयं ।
ईसकंतं णहाणंदणामालयं — सीयमायं पिसायं सुहालायणं ।
भद्दपासियं च महाविजय मंदिरं — कुमुयकुंदं च गयणतलं सुंदरं ।
संतिविजयमइणियविसयं समंधम्मय — सुरवरं पुरं मणिणिसं विप्फयं ।
अभिआसमापुरं गइंदासमापुरं — सिरिणिकेयं च जयसिरिणिवासं पुं
रयणकुलिसं वरिट्ठं विसिद्धासयं — दविणजयमवि समरं च महासयं ।
एयसिहरं वि मायीरयणसिहरयं — वरिमअग्गासिहरं च गिरिसिहरयं
अयवि धारवि सुदंसणपुरं दुंदुभं — दुग्गयं दुद्धरं हारिमाहिंदयं ।
विजयणामं पुरं पुणु सुगंधिणिपुरं — सुरवइणामपुरं रयणपुरमवि पुरं ।
सट्ठिगामाण कालीहिं सहुं हारिया — ईहि तरुण सुविसिद्धसुरवारिया ।

घत्ता—इय णयरइं णिवसियपवरइं धणकणजणपरिपुण्णइं ॥२०॥
अणुरायं रिसहपसायं णायं विज्जमिहि दिण्णइं ॥१४॥

15

भामरि—आमो सो णहयराणं पहू णिमी
चेइयविणमी संठिया सम विणमी ।
सुपउरमारमारभयुअंगमा
ते माउच्छिऊण घरओ घरं गमा ॥१॥

सुवणइ मंडणु भरहहु देउ — णाणिविसुद्धमंडणु मयरकेउ ।
देसहि मंडणु णरसिरि णिरत्तु — घरदारहु मंडणु धीयचित्तु ।
कुलमंडणु सीलु सुयस्स सुद्धि — तवचरणहु मंडणु मणविसुद्धि ।

७ MBP सुपइहं ८ MBP मह° ९ MBP कुमुकुद न ९ M गुणसिरिव णामि P गुणसिरि समिविर ११ MBP अयवणामाहुर. १२ P दद्दं १३ M सुरवणाम° १४ MBP हु १५ P ठविय but gloss ठविय.
15 १ B हुठिया. २ P सयुअमम्मो but gloss भयुअरे ३ BP णामिग gloss in P स्वपरिचिन्तनम्

19 a हारियाः कन्यकाः 21 णा ए स्त्रोभेन
15 6 a णरसिरा वैश्या वेस्यादि

कुलवहुमंडणु भत्तारभत्ति असि रायहु मंडणु मंतसत्ति।
माणहु मंडणु अदीणवयणु भवणहु मंडणु वरणारियणु।
कइमंडणु णिव्वाहियणिबंधु गयणहु मंडणु ससि कमलबंधु।
पियपेम्महु मंडणु पणयकोउ आरंभहु मंडणु खलविओउ।
किंकरमंडणु पहुकज्जकरणु णरवइमंडणु पाइक्कभरणु।
सिरिमंडणु पंडियंयणु णिरुत्तु पडियमंडणु णिम्मच्छरत्तु।
पुरिसहु मंडणउ परोवयारु धरणिंदेँ पालिउ णिव्वियारु।
उद्धरिय वे वि णमि विणमि भाय को पावइ पयहु तणिय छाय।
अहवा किं होसइ किर परेण परिणवइ दइउ सव्वायरेण।

घत्ता—किं किज्जइ अण्णेँ दिज्जइ सव्वहु पुण्णु जि सामिउ॥
तेँ कित्तणु भरहपहुत्तणु पुप्फयंतगयगामिउ॥ १९॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णमिविणमिरज्जलभो णाम अट्ठमो परिच्छेओ सम्मत्तो॥ ८॥

॥ संधि॥ ८॥

४ M सोहइ ५ MBP होइ ६ MBP °गइ°

10 *a* °णिबंधु काव्यम्, *b* कमलबंधु सूर्य 18 तेँ पुण्येन, कित्तणु कीर्तिर्यश, पुप्फयंतगयगामिउ आकाशगामि सर्वलोकाकाशव्यापि कीर्तनम्

IX

ता णाइउ जिणेंदु जिणमयपेसय परिकिउ ।
पुण्णइ यदुर मासि णाइँ चोउ विसरिउ ॥ १ ॥

I

हेलो—परिचिंतइ जिणेसरो कुविपं करंतो ।
महिमापारमासिमो सुरेहरी मउंतो ॥ १ ॥

जिह तेहेण दीसु तव धीरें   तिह माणुससरीर णाहरें ।
णाहारेण वि जो पत्र जिमिरें   सिरइ बमर कोक मेवेंहि ।
वरिसर णाहारुमुरेसहि   पुण्णे पण्णम संपुरमासहि ।
जम्मोयम्मरि पुंरुम्महि   देवयचरपरि विवसियसम्महि ।
किरियोवयरसँगुणारहि   कोर्दमपरिम्पारवियारहि ।
दीवणहारमरंजममीसहि   परेमयवसम्पारवणासहि ।
पयहरमणियरहि सयासीसहि   वरिसर मयरहि मि बहुसोसहि ।
बीएहु सयहु ण कि पि मवेवउ   रसणु एसँ मेंसु बिहवेवउ ।
कयवेयवरमविवामतउ   संजमवपामेंहि समत्तउ ।

MBP give at th beginning of this Samdhi, the stanza एहो जिणवरपरिचएउ etc for which see notes on page 121

1 १ BP °यरपरिकिउ २ GK call this couplet हेलादुवई only at this place; throughout the rest of the Samdhi they call it हेला ३ MBP पुरवी ४ MBP णाहि ५ P यवहि ६ B सुरसयरहि ७ M °पणुमारहि B वणुरमारहि P वणुमारहि ८ MP °वसरे ९ M °वसरे १० MBP एवे एमइ. ११ MBPT °विपयसत्तउ

1 1 णाइउ णाउ, पराजित परामितो जितः 2 चोउ भवणसमयमोहं 4 पुरउ पुरतयि 6 b ताव पुण्णे सम्यम् 7 a णाहारण मुरेसहि तेन दर्भे पीन कर्मे लनंचनक्रियम् पोलिये वर्ण पुण्ण-धुरेण पाचनरम् 8 a जम्मोयम्महि मुनि एतय वरियमरे भविवयमरस पंदुपरम पर किर्णे 9 a मोहजि लो गरि; b मोइ इत्यादि °मनुरैसमरणियायियारेसंजिरम् है त तत —मरेरिजामनागुरियपुण्ण-पुणमरिरेसरुम्मानि । मवपुण्णेवस्सुपुरुमरण मता वदरव मानि 11 a णाण मो हणि बोसय परयोमा बोसय यवसयमोमा तव एवनोपा मयोकरोमा एमनोव कवीरेण समायरोतेमेहि एयूपवारिव होमा 18 b वयणमत्ता मेहु मयरयमाविम

सुक्खु लुक्खु सउवीरब्भुक्खिउ[12] णवकोडीविसुद्धु सुपरिक्खिउ[13]।
पाणिपत्ति सइं मइं भुंजेवउ चरियाचरणु जगहु दरिसेवउ।

घत्ता—जइ हउं अच्छमि अज्जु केम वि ण करमि भोयणु ॥
तो जिह ए णर भग्गा[14] तिह भज्जिहइ तवोवणु ॥ १ ॥

2

हेला—आहारें वओ तिणा तवो तिणा[1] जियक्खो।
अक्खाणं जए समो होइ तेण मोक्खो ॥ १ ॥

इय हियइ घेत्तूण जोयं पमोत्तूण।
सिद्धत्थणामाउ तम्हा वणंताउ।
विहरेइ परमेट्ठि जुयमेत्ति[2] गयदिट्ठि।
जीवे[3] ण दुम्मेइ पेच्छतु पउ देइ।
रमणीयथामेसु णयरेसु गामेसु।
तं विणयणयभरिय पणमंति णायरिय।
अब्भुवरसालीण जोयंति[4] गामीण।
भइयाइ कंपंति अण्णे पयंपंति।
एसो महीराउ एसो महादेउ।
धणकणयधण्णाइं एएण दिण्णाइं।
मंडलिय[5] महियलइं काऊण बहुहलइं।
एयस्स पडिवत्ति उवयरह सहस त्ति।
इय भणिवि सद्दलइं विविहाइ फलदलइं।

१२ MBP सउवीरें भुक्खिउ, K सउवीरब्भायिक्खिउ १३ M परिक्खिउ १४ MBP भग्ग
2 १ MBP तवें २ MBP जुयमेत्तु ३ MB जीव ण दूसेइ, PT जीव ण दूमेइ ४ MBP जोयत ५ MBP मडलइ

14 *a* सउवीरब्भुक्खिउ काञ्जिकेनाभ्युक्षितम्, *b* णवकोडीविसुद्धु मनोवाकाये कृतकारितानुमतसंयुक्तैर्वि शुद्धम् 17 तवोवणु तपोवन मुनिसंघात
2 1 वओ वपु, तिणा तेन, जियक्खो जितेन्द्रिय 2 समो कर्मक्षय 5 *b* जुयमेत्ति चतुर्हस्त- मात्रे 10 *a* भइयाइ भयेन 15 *a* सद्दलइ आर्द्राणि

ममगयीरयमाई मयइसुनयामाई ।
ईइमई मेयनई मायमई मायमई ।
सुपरियई मन्मियई मिमारपरजरइ ।
मसिन्न गइकम पंममिम सिहिकम ।
पाइम्न व इंग्नि बाला प पार्पति ।
मन्न पमम्माई इपंगमम्माई ।
मीविसुलकमन मौंनिहाय मंजीव ।
कंकणई कुंडलई पं सुगमक्कमई ।
गमिमायवमम्म उवणेनि मुक्स ।
मन्न कुसौमाउ मलमि मीमाउ ।
सापन्नपुन्नाउ झायंनि बन्नाउ ।
पटरमुगिमाई मायमेइंगाई ।
निमिरेगई पटमेई उवणई पट्टमेई ।
वाइमुमाई बमलायमणाइ ।
सेमिसंमर्गइरई विपाई मीइरई ।
मन्न ममर्गति कम्मे पंमामति ।
मा मणममयबाइ मा पामजलबाइ ।
मा तरुणमिदिरिइ मो मलमिरीपाइ ।
मो हिमइम मा परम परमेम ।
मिलमपावमय निर्मरमोमय ।
पावरमि कि मेरामि पउ इगमि पउ रमपि ।
एप मनिवि बसाई बाइपेमिमपसाइ ।

[illegible] MB [illegible], P [illegible]. [illegible] MBP [illegible]. Mp [illegible] [illegible] MBPT [illegible] and gloss in T [illegible] [illegible] B omits [illegible]; P adds it in the margin in second hand [illegible] M adds after this [illegible]; P adds it in the margin in second hand. [illegible] MBP add after this [illegible] [illegible] MBP [illegible] [illegible] MBP [illegible] [illegible] MBPT [illegible] [illegible] B [illegible] [illegible] MBP [illegible] [illegible] M [illegible]

[illegible] 3 [illegible] 29 [illegible]
37 [illegible]

घोल्लाविओ जइ वि पहु चवइ णाउ तइ वि।
परणिहियणियाचित्तु महिवीढु विहरंतु।

घत्ता—हिंडइ जाम जिणिंदु चरियामग्गि पइट्ठउ ॥
ता सेयसणिवेण गयउरि सिविणंउं दिट्ठउ ॥ २ ॥

3

हेला—पल्लकासिएण मउलतणेत्तएणं।
रयणिविरामजामए संपसुत्तएण ॥ १ ॥

ससिप्पहाणुजम्मिणा भवाणुवद्धधम्मिणा।
णिसायरो दिवायरो करीसरो सरोवरो।
महण्णवो सुरधिओ वेलुद्धरो मयाहिओ।
सवाहुजित्तसंगरो रिऊण छेयणकरो।
भेरक्खमेक्ककंधरो महामडो धणुद्धरो।
घुलंतपुंछपच्छलो विसो विसाणउज्जलो।
णियच्छिओ सकद्दरो घरे विसंतु मद्दरो।
इमो सुदंसणोहओ पणट्ठदिट्ठिमोहओ।
णिसंतए पलोइओ समाणसे विवेइओ।
पहायए महाउणो समासिओ समाउणो।

घत्ता—तं णिसुणिवि कुरुणाहु सिविणयहँलु आहासइ ॥
को वि जगुत्तमु देउ तुह मंदिरु आवेसइ ॥ ३ ॥

१९ BP सुइणउ

3 १ M मलद्धुरो २ MBP भरेक्कमेक्ककधरो ३ MPK °पुछ ४ MBP °फलु

3 3a ससिप्पहाणुजम्मिणा सोमप्रभस्य लघुभ्रात्रा 5b वलुद्धरो मदोत्कट, मयाहिओ मृगाधिप 7a भरक्खमेक्ककंधरो भरक्षमैकस्कन्धप्रदेश 9b विसइ प्रविशन् 10a सुदसणो हओ शोभनस्याम सघात 12a पहायए प्रभाते, महाउणो महायुष 13 कुरुणाहु सोमप्रभ

4

हेला—ससिरविसुरहरमीहसरसरपीणोगुणाले ।
चंपमसंवय व्व गहसियपीसुकीले ॥ १ ॥

णीलमरगयकायमीमालिउ सिहरि व जलहरमालए कालिउ ।
वरीयपयसरसणिहवाहउ कमोहु व उक्कंठपयोहरु ।
तावण्णहिं सिंभि वयरि पाडुइ णावीयरहिं णिरंतरु सिहुइ ।
बाणमागयजणपयमंसइँ पविउ कम्पइ जलसमसइँ ।
को वि भणइ मयमोरपहि पवाहि हउं पंजलिपउ जम्मसमि केवहि ।
को वि भणइ सामिय वय किंकर पडवार पगुणय सिवर ।
को वि भणइ मेरउ मउ मावहि सिवमग्गि पहु किं न णिहालहि ।
बंधु व रिणिव रिणिव पियरंतउ जाव भेति गेहि णासंतउ ।
वरिविहि मरेंगगु संभावउ ताउ म माउ म हेउ पलोयउ ।
विम्मयाउ मणि तोसु वहंतिउ एम भणंति ताउ पणवंतिउ ।
मज्झु मज्झयहि संजायउ पोत्ति देहु माहपु वि पहोयउ ।
धणहि धाए धण तणुरुहवरवइँ बंधउ पोडिउ हेमाहरणइँ ।
णरवहि पहि सुसिरसमसमाउ भुंजहि मोयगु मुहु वि पोम्मउ ।
पोक्खणियउ ण किं पि वि मासहि मुद्धमुद्ध किं अप्पउ सोसहि ।

घत्ता—पुणि कच्छमहु णिसुणेवि ससिमाउ महिचारिउ ॥
चेयमाईउविरत्तु पुण्णिकन पियपउमारिउ ॥ ४ ॥

4 १ M °सरसुपणलो B सरवेवि गुणालो; P ससरविणा गुणाले; T सवी पहुरा २ MBP पीसुकीलो ३ MBP बाएणा° ४ M °मी° ५ M वरपगु लपाउ B वरिविभरलगु संभउ P वर लगु लपाउ ६ MBP हरिउ ७ M सरु इलइमग B इला सहुरमा M हुलमगु

4 1 "स र हि" रत्युः; "मी" रत्न... 8 ... 9 ... 16 ... 17 ... 19 ...

5

हेला—ता पडिहारएण भाणियं[1] भवावहारो ।
जो लच्छीकडक्खविक्खेवे[2] वि णिव्वियारो ॥ १ ॥

सिरेण णवेवि सुरायलि ठवियउ जो तियसेसरेण सइं ण्हवियउ ।
जेण पयासियाइं मइगम्मइं बहुभेयइं जणजीवणकम्मइं ।
भरहहु तुम्हहु मेइणि दिण्णी जेण णवल्लवित्ति पडिवण्णी ।
सो आयउ तेलोक्कपियामहु तं णिसुणिवि उट्ठिउ सोमप्पहु ।
सहुं सेयंसकुमारें णिग्गउ ताम पलवपाणि ण दिग्गउ ।
संमुहु एतु णिहालिउ जिणवरु णं वसुहगणाए पसरिउ[3] करु ।
णहसरि रवि सररुहहु कयग्गहु णं जगभवणखंभु भयमयमहु[4] ।
सामि सणेहँभरेण[5] भरेप्पिणु कर मउलेवि पणामु करेप्पिणु ।
सोमप्पहेण पलद्धपससे देवि पयाहिण तहु सेयसे ।
मुहु जोइयउ णेत्तसयवत्तहिं हरिससुयओसाकणसित्तहिं ।

घत्ता—अइपसण्णमुहु[6] होइ संभासणु पडिवज्जइ ॥
पुव्वभवंतरणेहु जणदिट्ठिए[7] जाणिज्जइ ॥ ५ ॥

6

हेला—जिणमवलोइऊण कुंयरेण[1] लोयसारो ।
सिरिमइवज्जजंघजम्मंतराधयारो ॥ १ ॥

पउद्धो[2] असेसो सवासो देसेसो[3] ।
मुणीणं पहाणं वराहारदाणं ।

5 १ MBP भणिय २ MBP °विक्खेवणिव्वियारो ३ MBP पसरियकरु ४ MBP भयमयवहु ५ MB सणेहु भरेण ६ BP अइपसण्णु ७ P जणदिट्ठें
6 १ MBP कुमरेण २ M has before this line सोमराई छंद, BPGK have सोमराई, MBPK पवुद्धो ३ MBP सदेसो

5 3 *a* सुरायलि मेरौ 4 *a* मइगम्मइ मतिगम्यानि लोकजीवनकर्माणि. 9 *b* भयमयमहु भयानां मदानां च विनाशक 12 हरिससुयओसाकणसित्तहिं हर्षाश्रुमिहिकाकणासिक्ते
6 3 *a* पउद्धो प्रबुद्ध

मवे वं वित्थवं कयाणंतपुण्णं ।
समाहूयसवं मवे तं पि पावं ।
पुणो देव वत्तं महो हो विवत्तं ।
दुयं मज्झ णावे पयायं पुराणं ।
महारं भणाइ ममारं भणाइं ।
भमाणो ममोहो मकोहो मलोहो ।
मछेमी ममेमो पमेमो वि वेमो ।
विसुद्धंभयारे मणंगावहारे ।
पवित्तो महंतो मणंतो महंतो ।
मसंगा पसंगो महाणायणिग्गो ।
पुराणं विराम्रो सुराणं रमामो ।
महाणं विणासो महाणं विणासो ।
धमामो ममामो रमो देवदेवो ।
कयत्थो वियत्थो समत्थो पसत्थो ।
सया वंदणिज्जो रमो पुज्जणिज्जो ।
पयो मोक्खगामी रमो मज्झ सामी ।
सुराहिवपूमो रमो पत्तभूमो ।

घत्ता—जगगुरु गुरुयणगुरु मोक्खयर णिष्णासउ ।
पेंडु माहारणिमित्तु ममेइ सम्मयपमासउ ॥ ६ ॥

---

७ M मणारं मणारं and adds मणारं, B reads मणारं मणारं ९ P मि एसो and gloss एवं
९ M मणाणो ममाणो and adds मणाणो मणोमी P मणाणो ममाणो मणाणो ममाणो, ७ M सया
८ MBP पडु ९ B मणइ

---

8 a पयायं महापुराणं; पुराणं शास्त्रम् 9 a भट्ठं भट्टारकः; b ममारं मारो रतिस्तेन रहितः 11 b मछेमी मि वेमो मुक्तलक्ष्मीकामोऽपि प्राप्तमोक्षलक्ष्मीकः, 14 b महाणायणिग्गो यया 15 a विरा-मो विरामः 16 a महाणं पयामाणं b महाणं तेजसाम् 17 a धमामो मोक्षपदिवसतोऽपि, ममामो ममदहितः 21 b पत्तभूमो पात्रभूत 22 चित्तंमच्छत्तलक्षरः विचारसमर्थो वा 23 पडु प्रथा; पडु पश्य यत्र क्षेत्रं चक्रवर्तिनां प्रसादात्

7

हेला—अवरमणिपसंडिद्धणाइं देंति लोया ।
णाइ इमे ण लेंति परिमुक्कामभोया ॥ १ ॥

कण्ण लेइ जो कामें गंधउ　　भूमि लेइ जो लोहें घत्थउ ।
मंचयसेज्जायलइ समवणइं　　गेण्हइ जो माणइ रइरमणइं ।
गाइ देहि देहि त्ति पजोग्गइ　　जो घएण अप्पाणउ पोसइ ।
वित्तु लेइ जो इंदिय पुज्जइ　　मंसु खाइ जो पुट्ठि समज्जइ ।
पंभण तायस सेवसणभग्गा　　पावयस्म ससारहु लग्गा ।
दुद्धरजीहोवत्थहिं दंडिय　　अप्पउ परु वि इणिवि पामंडिय ।
दुविधयभरपरिघट्टणदीणा　　सइमुद्धि णिवडंति अयाणा ।
जे लेंता ते विड विड देंता　　णउ जाणहु के गुणहिं महंता ।
पत्थरणाव ण पत्थर तारइ　　अवस कुपत्तु भवण्णवि मारइ ।
जासु अवभारंभपरिग्गहु　　सगइ कया वि ण इंदियणिग्गहु ।
धम्माभासु पाउ जो भावइ　　अण्णु वि अण्णाणिय कारावइ ।
कत्थइ मिच्छामग्गि पइट्ठउ　　कुच्छियपत्त रिसीसहिं सिट्ठउ ।
सीलें सम्मत्तेण वि उज्झिउ　　हवइ अवत्तु सइ जि मइ बुज्झिउ ।
सद्दहणु णव पंचहु सत्तहु　　करइ पयाहु जिणेसपवुत्तहु ।
ईसीसि वि वउ जेण ण पालिउ　　त जहण्णु[11] मइ पत्तु णिहालिउ ।
मज्झिमु देसचरित्तालंकिउ　　सम्मइंसणि कहिं मि ण संकिउ ।
दूरुद्धुयसदप्पकदप्पहिं[12]　　णाणचरियसम्मत्तवियप्पहिं ।
भूसिउ सचियसासयसोक्खहिं　　सीलगुणहिं चउरासीलक्खहिं ।
उत्तमु पत्तु एउ पणविज्जइ　　पयहु पासुयभोयणु[13] दिज्जइ ।

7　१ MBP घत्थउ　२ MB गुत्थउ, P गत्थउ　३ P पेय खाइ　४ MBT अवसण°　५ MBP परु हणेवि　६ M °परियट्टण°, P °परिवड्ढण° but gloss परिवर्तन°　७ B ण जाणहु　८ MBP हिं　९ MB °रंभु परिग्गहु　१० MP दिट्ठउ　११ MBP जहण्णु　१२ MBP दूरुज्झिय　१३ MB फासुय.

7.　1 °पसंडि सुवर्णम्. 3 b घत्थउ ग्रस्त　6 a पुज्जइ पोषयति　7 a सवसणभग्गा सव्यसनभग्ना　10 a विडे त्यादि— विटा ये ददति तेऽपि विटाः　15 b अवत्तु अपात्रम्, 16 a णव नवानि, पंचहु पञ्चास्तिकायानाम्, सत्तहु सप्तानां पदार्थानाम्　b पयाहु पदार्थानाम्　19 a दूरुद्धुय° दूरोद्धृत°.

घत्ता—पुंछियउ पवित्ति कुमारउ रिच्चु मयत्त पामर ।
तेहिं पवहिं पसु गिण्हिउ एव सुरद माहामर ॥ ७ ॥

8

दुवई—महिलसु मज्झिमण महमो महमय चंभो ।
उवसु उवमय हामय हार मामो ॥ १ ॥

गिहाहरे वार्य मति र — अंभयविम्मवे सुमर मर्हिरे ।
पहिं गुणहिं जुगु ग्राणाउ — मग्गाग्गरु मर्थमायर हारउ ।
मउत्तिपकरएसु भरमपेमसउ — मच्छर गिपिहुपत्तगपवितर ।
गुणरंगउ परमेपामसउ — सा पडिमाइट मर्पेमरत्तर ।
हारे ममिवि पत्तरियमिक मामर — उववावि मउरपिर पिपसर ।
पएर पाइ मेनई पम्मर्ड जगु — परमगुणगु जणगु गुणु पपमगु ।
मणममगुणुपिर सुहामगु — देर मगंनु किंपिहुदु मामगु ।
ममगु मग्गु ममपत्तावें मर्दु — देह मज्झीनिउ वागु मणिमणि मद्दु ।
परिर्दपत्तयरं मूपरं मत्तरं — काणपुंरमंदर पादितरं ।
सन्तमूर्णादिमणिरमें गम्में — अमगु वमगु दीमइं काम्मे ।
परमाउ पाविउ मर्णमिणु — मिपत्थपागुणाव सुपरेमिणु ।
देह म जो मरम्मु मो देदउ — मरपाउ मिहराउ महउ ।
मिर्पेहियउ मिपराहु त्रि पामर — मुणउ म आमगुं पहिं आएगर ।

घत्ता—मामगु जं पिदमीउ तहिं उमोमग रहाउ ॥
हुंपियमि मगुरेण गुणमेगउ वम्णिहार ॥ ८ ॥

15 MB पुच्छियस्स. 16 MBP [illegible]

8 1 M [illegible] BP [illegible] 2 MBP [illegible] 3 MBP add after this [illegible] 4 MBP [illegible] 5 T [illegible] 6 MP [illegible] B [illegible] 7 MBP [illegible] MBP [illegible] MP [illegible] 9 MBP [illegible] 11 MBP [illegible] 1 MBPK [illegible]

[illegible]

8 1 [illegible] 6 [illegible] 10 [illegible] 12 [illegible] 13 [illegible] 14 [illegible] 15 [illegible]

9

हेला—इय कहिऊण तेण जुवराइणा समग्गं ।
दाययदेज्जपत्तववहारसारमग्गं ॥ १ ॥

सुइधोयदेवंगणिवसणणियत्थेण जलभरियढलपिहियभिंगारहत्थेण ।
परिदिण्णधाराजलुप्फुसतावेण सद्धम्मसंद्धावसुप्पण्णभावेण ।
भवंभरणसंभरियमुणिदाणंयम्मेण वरचरमदेहेण विच्छिण्णजम्मेण ।
पियजपणालोयणुब्भूयणेहेण धरणीसतोसेण गुणरयणगेहेण ।
इसिकहियसुंयसूइसभिण्णसोत्तेण चंदकचारित्तचेंचइयगत्तेण ।
कुरुजगलावंणिवइलद्धुयभाएण मउमहुरणाएण सेयसराएण ।
आओ गुरू सो ज्जि णंतेण सीसेण ठाभणिउ जिणु णमिउ पणवंतसीसेण ।
ता सरइ हिययम्मि रइकुमुइणीजूरु तूसविय जगणालिणु इयमलिणु रिसिसूरु
असणेण तणु ताइ णिव्वहइ तवयरणु तवयरणतावेण खंतीइ मलहरणु ।
मलहरणि संभवइ केवलु महाणाणु लयविरमु सुद्धुं परमु जइ जाइ णिव्वाणु ।

घत्ता—इय चिंतिवि सो थक्कु पत्तु तवेण विसुद्धउ ॥
चिरु सेयसवसेण सेयसें पर लद्धउ ॥ ९ ॥

10

हेला—एव कस्स ठाइ भवणम्मि भुअणणाहो ।
केण भवतरम्मि चिण्णो तवो अमोहो ॥ १ ॥

णवकलहोयकुंभगब्भाणिउ कुरुणाहें पल्हत्थिउ पाणिउ ।

9 १ BP °सब्भावसुपसण्ण° २ MBP भवदिण्ण° ३ P °दाणधम्मेण ४ MBP °सुइसूइ° ५ MB °गोत्तेण but gloss in M भूपित गात्रम् ६ MBP °वणिवणिव° ७ M सुइपरमु

9 3 *a* °णियत्थेण नेपथ्येन 5 *a* भवभरण° भवस्मरणम् 6 *b* धरणीस° राजान 7 *a* °सुयसूइ° श्रुतज्ञानसूचि 9 *a* णंतेण नम्रेण 10 *a* °जूरु सकोचक 11 *a* ताइ तया तन्वा, *b* खंतीइ मलहरणु क्षमया पापनाशो भवति 12 *b* लयविरमु अविनश्वरम् 14 सेयसवसेण पुण्यविशेषवशेन, सेयसें श्रेयसा, पर मोक्ष

10, 2 अमोहो सफल परिपूर्णम्

जससससिपरपवलियकुरुवंसें पेय पक्खालिय सिरिसेयंसें ।
पंडिउ पायतोउ सुहगारउ जम्मजरामरणावहारउ ।
रंदवंदणाइयपियारउ उवासणि संणिहिउ भडारउ ।
कुसुमायहिं उप्फुल्लियकुमारयहिं चंपयतिलयहिं मंदारयहिं ।
कुरुइं कुंकुमपुप्फसंभारइं मल्लियमालिहिं बहुपंचपयारहिं ।
दंतियचरयहिं पूयणारहिं करमरमाहुलिंगमालूरहिं ।
मयमत्तहिं कंपुजंबीरहिं पक्कहिं पूयफलखज्जूरहिं ।
कउरणिरुपुवसम्महपियवडउ पुज्जिउ परमेट्ठिहि पयजुयलउ ।
पुणु पणिवाउ करेप्पिणु भाव जा पंडिउ पं धम्मसहायें ।
जावयत्तयमंदारिसियसंग जो पुणु कणुहि व जिविउ मग्गें ।
सो दप्पुरसु पियारियदोसहु जं सेम्मइ चिरु सुत्तपुरासहु ।
सुवपावें महल करि होएउ कारवार जिणवाहें जोएउ ।

घत्ता—बहाइय मम्मुंडे रसु पिउँतर माणियउ ॥
मयणसरासणसार हरिभणि पं हुणियउ ॥ १० ॥

11

हेला—ता कुरुरिंदेण भणियं दिसावसाणं ।
भेगियं सुरवरेहिं मो साहु साहु दाणं ॥ १ ॥

पंचवण्णमणिकयविसिट्ठी पंचंगणि वसुहार वरिट्ठी ।
पं रोमर समिरपिविंवपिच्छिहि कंठमइ कंडिय णहमच्छिहि ।

10 १ P सम्म २ M reads after this line कंदलुपवेहिं चम्पाउहिं पवणसियरं तेहिं चआइहिं; B also read कंदलुपुरिंहि चम्पाउहिं पवणमणियरं तेहिं कुआउहिं; P reads कंदलुंपुरेण चम्पाउहिं, कंबलिउहिं बीरउहिं कुवहिं कुम्कुमवाउहिं पव मणमणियरं तेहिं कुमारहिं ३ MBT कुकुंम°, P कुकुंम° ४ MBP कम्मएहिं, ५ P चरहिं देवर° ६ MP कहिय पं चम्मु, B कहिय पं चम्मु, ७ MB संपुरं; P संपुरु P मालये but gloss फलमालो

11 १ M भणियं २ MBP करणेणि

6 a पादत्रौच पन्दलम् 7 a कुंकुमपादौर्वरपुष्पि 8 a कुंकुम बकुल 10 b जम्बीर फलैः 12 a "पिए" मध्येन, 12 b यो जन 13 a स्वर्ग सखि-वरिततन्म कारणेन यो दान देन 14 b इव इव पिब स्वरप्तं दीन

मोहेंवद्धणवपेम्महिरी विव सगसरोयहु णालसिरी विव ।
रयणसमुज्जलवरगयपति व दाणमहातरुहलसंपत्ति व ।
सेयसहु धणएण णिउंजिय एक्कहिं उडुमाला इव पुंजिय ।
पूरियसवच्छरउववासें अक्खयदाणु भणिउ परमेसें ।
तहु दिवसहु अत्थेण समायउ अक्खयतइय णाउ संजायउ ।
घरु जायवि भरहें अहिणंदिउ पढमु दाणतित्थंकरु वंदिउ ।
पइं मुएवि को गुरु संमाणइ पत्तविसेसदाणविहि जाणइ ।
पइ मुएवि को चित्तहुं सक्कइ परमप्पउ कहु मंदिरि थक्कइ ।
पइं मुएवि दिसिपसरियजसंयरु अण्णु कवणु कुरुकुलणहदिणयरु ।
जय सेयसदेव पभणंतहिं सथुउ सुरणरवरसामंतहिं ।

घत्ता—महियलि धम्मरहासु एयइ तोसियमक्कइ ॥
जिणसेयसकयाइ वयदाणइं वरचक्कइं ॥ ११ ॥

12

हेला—धम्ममहारहो विलंवियदयावडाओ ।
एयहिं विहिं मि वहइ णिहयंगयारिराओ ॥ १ ॥

एम भणेप्पिणु गउ भरहेसरु एत्तहि महि विहरंतु जिणेसरु ।
तिहिं णाणिहिं सुद्धें परिणामें अचलचित्तु मणपज्जवणामें ।
अड्ढाइज्जहिं दीवहिं ज ज माणसु चिंतइ जाणइ त तं ।
उज्जुयवकहियमुणियत्थउ देउ पराइउ णाणु चउत्थउ ।
पंचवीसवयमायउ भावइ तिहिं गुत्तिहिं अप्पाणउ गोवइ ।

३ MBPT मोहणिद्ध° ४ M adds after this line –अहिय पक्ख तिण्ण सविसेसें । किंचूणे दिण कहिय जिणेसें । भोयणवित्ती लहीय तमणासें । दाणतित्थु घोसिउ देवीसें ५ MBP पढम° ६ MBP पत्तविसेसु ७ MB °जयसरु ८ MBP तवदाणइ

12 १ M माणस, BP माणुसु

11 5 *a* मोहे त्या दि–मोहेन यद्धा नवप्रेमणि सति स्वपतौ ह्रीरिव लज्जेव 9 *a* अ त्थे ण स मा य उ अन्वर्थकम्, *b* णा उ नाम 15 ध म्म र हा सु धर्मरथस्य

12 1 वि लं वि य द या व डा ओ अवलम्बदयापताक 2 णि ह य ग या रि रा ओ निहताङ्गारिराज, 7 *a* पं च वी से त्या दि–एकैकस्य हि व्रतस्य स्थैर्यार्थं पञ्च पञ्च भावना पञ्चविंशतिव्रतमातर

हरिपायाणु किं पि णिरवेक्खु करइ कहिं मि कमसुक्कपाओपगु।
पेसु खेसु मउ हासु पलासउ संगे विवज्जइ सुत्तु वि मासउ।
मिउ ओमाउ अणुभावउ पेच्छइ भावि पावि संतोसु जि मच्छइ।
णारीकहसंसग्गसंसग्गु करइ णिविवित्ति पुप्फरएयगु।
भुंजइ कहिं मि सुणिविवविहियउ दंसणउ पिउ घरइ गुणिगुरउ।

घत्ता—इंदियजयइं णिसंगु परमजोइ मेरुधीरउ।
पुप्फयंतउ भयवंतु रिसि झाणे बोहमाइ ॥ १२ ॥

13

हेला—तो है णिच्चहिम मा एमत्तु णारिहयं।
रेमिऊणं इइ त्ति पवित्तीहि मोहहूये ॥ १ ॥

कीयोंजीयवग्गुमेयारउ करणपोसजायि णिरसारउ।
संजमभावणुज्जमेसिहिविसु णिव्वेयसु णिवासहु णिप्पिहु।
णिरिक्खमहाव्वओणकवयंगु वीसहुर्दसणपरीसहमरणगु।
दंसण णाण चरिय तव वीरिय आयारे वि के पंच समीरिय।
तेहिं महारउ मणुविसु मगइ छिपवेसु सिम्पि वि सहइं मज्ज़।
मणेसण इंसिकुंभ ओमोयर रसपरिचाउ कायक्खोपायर।
इय बाहिरवहु करइ सुयारउ अंतरंगसुहिहि सो कारउ।
वेयावचि विणउ सज्झायउ तणुविसग्गि पच्छित्तविभेयउ।
मज्झंतरलवि भप्पउ झोपेइ धम्मझाणु करविहु विज्झाएइ।

१ MBP चउ २ B मेभमर. ४ BP वीसमर

13 १ MBB मणिहण २ MBP वीयायोग° ३ MBP °वमहिं चउ ४ P णिहमलु; T णिहणु and gloss णिमारिण ५ P हिवमहि ६ P नयणु ७ MBP विसिलध वोमोयर MP तव ९ MBP वीसमर

9 ३ सुगु णिच्चाग इ भावमैत्र्याद्यर्थेन पराहुकरी 10 a मिउ मिउ परिमितम्, अणुभाव अनुभाव 12 a सु णि भि व हिय सु सु विविधप्रकारम् 18 मेभाव इ पसमे मेरुसमी

13 8 a मेयार इ °मेदाः; ३ करण° इन्द्रियसमितिप्रतिपालने; णिरसार इ कुत्सितविलो एको णिरव कटोलके णिरुपसरितमः 4 a वेयवे त्यादि-अन्यमतेन एवा पुणि भेदा बलविशेषिता मणि-भ्याला केन ३ णिवमणु णिरपेक्षः 8 ३ कायकोयाव णिरमदीनतर 10 ३ तणुविच णि कायोत्सर्ग

आणाविचउ णामणिग्गंथउ पुणु अवायविचयं पि महत्थउ।
अवरु विवायविचउ वित्थारइ थिरु सठाणविचउ अवहारइ।

घत्ता—इय विहरंतु धरग्गि सिद्धिवरंगणरत्तउ ॥
वरिससहासें णाहु पुरिमतालु संपत्तउ ॥ १५ ॥

14

हेला—तो दिट्ठं लवंगलवलीलयाहरालं।
अलियाल पियालमालूरसायसालं ॥ १ ॥

वणु विडगणेवेत्थहिं छइयउ पियमाणुसु व सरसकटइयउ।
णिग्घोसोयउ कंचणवंतउ बंधुपुत्तजीवेहिं महंतउ।
रेहइ कुलु व समुण्णइपत्तउ रक्खसपुरु व पलासणिउत्तउ।
सुरभवणु व रमाइ पसाहिउ उज्झाउ व सुयसत्थहिं सोहिउ।
सुहवयणु व चंगउ णिच्चप्फलु संगामु व वणवियसियउप्पलु।
णयणु व अंजणेण सोहिल्लउ थणजुयलु व चंदणिण पियल्लउ।
रमणिणिडालु व तिलयालंकिउ बहुबाहु व करवंदहिं संकिउ।
तालें तूरु व सज्जें गेउ व मद्दें सोहइ णिवइणिकेउ व।

१० B अवायविरय
14 १ B तो २ M विडगणे कत्थहिं, B विणगणेवच्छहि ३ MBP °माणुसु ४ P सरसु ५ MB णिग्घासोय ५ P समुण्णय° ६ MBP सुयसत्थें ७ MP रमणिणिलाडु ८ P मद्दें

12 *a* आणाविचउ आज्ञाया द्वादशाङ्गायागमस्य विचयस्तदर्थाना चेतसि स्वरूपपरिभावनम्, णामणिग्गंथउ शब्दोच्चारणरहितम्, *b* अवायविचय मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्रेभ्य कथं जीवस्यापाय स्यादिति चिन्तनमपायविचय, महत्थउ सवरनिर्जरालक्षणमहाप्रयोजनप्रसाधकम् 13 *a* विवायविचउ कर्मविपाकपरिचिन्तनम्, *b* सठाणविचउ लोकसस्थानपरिचिन्तनम् 14 धरग्गि धराग्रे

14 2 अलियाल भ्रमरयुक्तम् 3 *a* विडगणेवत्थहिं वनपक्षे, विडङ्गवृक्षा एव नेपथ्य आभरणानि ते, प्रियमनुष्यपक्षे, विटानां कामुकानामङ्गनेपथ्यैराभरणैर्नखादिव्रणैर्वा 6 *b* सुयसत्थहिं शुकसमूहैराकर्णित शास्त्रेश्च, अथवा, श्रुतानि शास्त्राणि यैश्छात्रैस्तै 7 *b* वणवियसियउप्पलु जले विकासित पद्म, अन्यत्र व्रणे विकासितमूर्ध्वमुच्छ्वासितं पल मास यत्र 9 *b* बहुबाहु सहस्रबाहु, करवंदें हस्तवृन्देन करवदीवृक्षैर्वा, सकिउ सकीर्ण सेवितम् 10 *a* सज्जें सर्जरसवृक्षेण षड्जेन च, *b* मद्दें बलात्काररणेन

आयवेढिउच्छउ पावासु व एरावयदाणिउ विपासु व ।
भवसु व करेंवि सुक्कउ असि व सुधीरें जेम विमुक्कउ ।
महिमाणिणिमुहु व मसिकिउ सरवरममियभुयंगहिं भुत्तउ ।

घत्ता—कुसुमामोयमिसेण जो संमुहुं पर्चवइ ॥
णाणापत्तिसहेहिं पहुहि पोत्तु जं सुवइ ॥ १४ ॥

15

हेला—तहिं वेडणवणम्मि पम्मोयरकलमुहे ।
मासीणो सिवमग्गे णिम्मले विसाले ॥ १ ॥

णवकविसालु सुमरणवज्जउ सुमरउ पहु परियंकणिसण्णउ ।
णत्थि सोक्खु संसारि विसिट्ठउ सोक्खाणाउ दुक्खु मईं दिट्ठउ ।
देहु अणिच्चमाणु भड वंभउ माइल्लें मारिज्जइ भंभउ ।
कालु देहपईणु रोवंतणु गेयमिसेण रुयइ मुरउ जणु ।
तं सिवसाय किं पि माणिज्जइ जेण ण वीउ गम्भि रुप्पज्जइ ।
सोयंगाहु वीरिज सुहुमत्तणु खुदु पणवें णासु सुहुंसणु ।
अर्थवत्तसुपरु मणाताहरु णायर वसुविहु सिवसुहुणेहउ ।
पम सामि संमाणियमम्मउ अप्पमतिवि गुणठाणि व समाउ ।
तहिं दहपयडिहिं सुक्कउ जावहिं खवि भडउ मारडउ तावहिं ।
छच्चउ सुहुमाणि पडियारउ मपवंति सहुए सविवारउ ।
एसिणा संठियउ सविहत्तउ खविपीहिहिं छत्तीस ति विरत्तउ ।

---

९ MBP कराली १ MBP °हुर एए ११ M वसुहर १२ B करवर

15 १ MP सुमरउ २ M बहु व विण्ण° B बहु अविण्ण° ३ MBP °णाय° ४ MBP एस ५ P वीसरम्मु ६ MBP वसुहर° ७ MP खविपवीहिं

---

18 b °सुवंवाहि सर्गरित

15 4 b सोक्खणाण सौख्यस्थानम् 9 a बहु अविण्णवासु भार्या बहुविधम् बालकम् 7 a सिवसाय सौख्यस्थानम् 9 b वसुविहु सिवसुहमोहउ अष्टविधं शिवसुखवान् लक्षणा सौख्य सुखावहम् स्वल्पम्, सम्यग् दर्शनम् अपूर्वकरणम् अनन्तानन्तः इति. 10 a संमाणियमम्मउ समवसरणमिस्थितधर्म्मकरणम् एव 11 a दहपयडिहिं अनन्तानुबन्धिकषायादिदशप्रकृतिभिः 12 b छत्तीसतिविरत्तउ षट्त्रिंशद्भेदेन.

सुहुमसंपरायउ पावेप्पिणु   तेण जि झाणें लोहु हणेप्पिणु ।
पुणु जायउ उवसंतकसायउ   कययहलेण जलु व मुणिरायउ ।
खीणकसायचरिउ पडिवण्णउं   थियउ सुझाणु अवइण्णउं ।
तं सवियक्कु एक्कु संवियारउ   सोलहपयइरयक्खयगारउ ।

घत्ता—इय तेसट्ठिपयइहिं पहयहिं णाणसमुज्जलउ ॥
परमप्पयहु सहाउ अमणु अणिंदिउ हुयउ ॥ १५ ॥

16

हेला—ता दिट्ठ जिणेण तिजगं पि पयडसंधं ।
तिमिरुज्जोयवज्जियं गयणममियरंधं ॥ १ ॥

कमसाहणपडिखलणविहीणें   एक्कें भावाभावपमाणें ।
सुहुमइं दूरंतरियइं दव्वइं   पेक्खइ जाणइ सहसा सव्वइं ।
भाणु व भूरिकिरणसंताणें   सोहइ केवलि केवलणाणें ।
तहिं अवसरि जिणणाहभवण व   वीस तिण्णि अवरइं भणियइं णव ।
खसहंताइं व गव्वु अणिंदइं   आसणाइं कंपियइं सुरिंदहं ।
सुरतरु साहाकर णच्चंति व   कुसुमइं संतोसेण मुयंति व ।
संजायहिं दसदिसिवहपूरहिं   कप्पि कप्पि घंटाटंकारहिं ।
कण्णवडिउ णउ काइ वि सुम्मइ   जोइसवासहिं विणिहयदुम्मइ ।
णिग्गय सीहणाय गयदिग्गय   वंतरेहिं पडुपडह समाहय ।
सत्तझुणीहिं णाय संखोहिय   अण्णें अण्ण देव संबोहिय ।

८ P छंडिवि ९ MBP °चडिउ १० MBP अवियारउ

16 १ MBP तिजय २ MBP add after this फग्गुणमासि किण्हएयारसि, उत्तरासाढरिक्खि (P उत्तरसाढि रिक्खि) जइ जाणसि । तहिं उप्पण्णु णाणु परमेट्ठिहि, लोयालोयपयासणसेट्ठिहि ३ MBP जाणइ पेच्छइ ४ MB जिणु णाह° ५ MB गव्व ६ MB मइ जायहिं P सइजायहिं ७ P विणिहिय° but gloss विनिहत° ८ MBP वितरेहिं ९ MBP अण्णहिं

15 *b* कययहलेण कतकफलेन; मुणिरायउ मुनिराज 17 *a* सवियक्कु सवितर्कम्, *b* सोलहेत्यादि-षोडशप्रकृतिरज क्षयकारकम्

16 2 अमियरंध अलोकाकाशम् 5 *a* कमेति—क्रमेणार्थसाधनानीन्द्रियाणि तै प्रतिस्खलन् शा पदशेपार्थपरिच्छित्तिप्रतिबन्धस्तेन विहीनेन रहितेन 6 *b* वीसेत्यादि—द्वात्रिंशदिन्द्रा इत्यर्थ

घत्ता—उप्पाइ णाणसउंणि मैमिण्णुणेहिं पडंसिउ ।
पहुचिंतपूरएणेण जगगुरु णं णाझिउ ॥ १६ ॥

17

हेला—ता सोहेण थिविमो पीयिपाझिरिंसा ।
संपत्तो कोण्ण परामओ गरंदो ॥ १ ॥

हारणीहारसुरसरिसुसारप्पहो मअंसंघायविदुमविहायविरप्पहो ।
गस्थिपरसयपेसमपवकसपगंधप्पमो वमरगिरिसिहरसंकासकुंभत्यलो ।
कामवित्तागर्इ कामवणी वलो पवलपरिवणवकणवणुमासयणे ।
करणंदणपमसम्मि परिणुओ रसमणुपमेहिं ममणहिं महुपियणे ।
तंपतसुमुहो वाणुग्गीयपवे पीईरकरंगुच्छि संरो ण वरगुणवरे ।
पीइवरमेयपो पीइजुगसमो पीइपरणास्मी पीइणीसायमो ।
सरिणरद्धुमपवणपरियमपुमिवरसमे पवमपरिपंवणवणवणझिणपणसंपणे ।
णायपंसो महापवपुपुरिसपे पुरिमपंवमपुणो तसिपसिरिसंकंसपे ।
मुवसिद्धारकणासितसुपेकमो मपवणसुपत्तिणपिरसमपुणाकमो ।
पित्तसिंदूरपूणीरणास्मोदिमो कवणवणवणतपेआणवीसोरिमो ।
कमवसोपवमहायवहिंमायहिमो दिसिपायहिं वंसिहिं परिपहिमा ।
सरिस वहसाणपयरं ससुवारमो णत्थ संकेलणो णत्थ संसीरमो ।

घत्ता—मणविम्हयरण हरेंतु णमराइंसकुंसमहंसव ।
णं मावंणामिसेण णामउ पीणउ मेरउ ॥ १७ ॥

१ MBP णमस°

17 १ P णवणेस° २ P °परवणवणम° ३ MB पीईरपुंछि ४ MBP णरो ण वरगुणवरे. ५ MBPT °पेतुणो ६ M सरणपणपरणाटिमपुसिवणो B सरणपरिवणपवणपवि°, P णवणपणाहण पाविणपु° ७ B °पडिवणणणमिव° M °सिरिसुवरे ८ MP हसिणा°, B °पुसेवन° १ MBP णराइस्सो

15 णमि य हु वे रि णरुपुयेपणुवेन

17 2 पवेन मेन 5 b मिरम मिहामिदणहो मिपुणणवणसवणव 4 b °तंणास° °णवण 7 b °पुमणर° णवणमपु 6 a °मेहणो मिमसु °रहू ण वो णीणाभवविपुण्णु b °णाव हो पुणणु 14 b देवत्यो एणा सहारवो पयज

18

हेला—चत्तीसवरवयणसोहिल्लओ रसतो ।
वयणविवरविणिग्गयंट्ठट्ठदंतवतो ॥ १ ॥

दंति दंति सरु सरि सरि पोमिणि   पोमिणि जा तूसावियगोमिणि ।
पोमिणियहि पोमिणियहि पोमइ   तीस दोण्णि छंडयणरवरम्मइं ।
णालिणि णालिणि तेत्तियइं जि पत्तइं   णावइ जिणवरलच्छिहि णेत्तइं ।
पत्ति पत्ति एक्केक्की अच्छर   णच्चइ हावभावरसकोच्छैर ।
तं पेच्छिवि सुच्छायउ सैंधुरु   सच्छर सामरु चडिउ पुरंदरु ।
इंदैंसमिंदसमाण जि साहिय   तायतिंस किर मंति पुरोहिय ।
परिसदेव देवेसकुमारा   आदरक्ख पुणु असिवरधारा ।
चलिय अणीयतियसर्सेणा इव   लोयवाल दुग्गंतणिवैंा इव ।
खिब्भिससुर पाडहिय पियारा   अभिओय वि चलिय कम्मारा ।
अवर पइण्णय पउर पयाणिह   रिक्ख मियंर्क सूर तारा गह ।
जक्ख रक्ख गधव्व महोरय   किंणर किंपुरिसा वि पिसायय ।
भूयगरुडदीवुवहिकुमार वि   अग्गिवाउतडिथणियकुमार वि ।
दिक्कुमार तवणीयकुमार वि   णायकुमार वि असुरकुमार वि ।
आइय आवेंतह सविमाणहुं   पेल्लावेल्लि जाय णहि जाणहुं ।

घत्ता—सदाणियउ गयहिं हरिणकलंकु अजुत्तउ ॥
ससि करडयलणिहट्ठु मयंचिक्खिल्लें लित्तउ ॥ १८ ॥

18 १ MBP °ट्ठट्ठदतो २ MB छडयणरविं रम्मइ ३ MB °कुच्छर ४ MBP सिंधुरु ५ MB इदमहिंदसमाण ६ MBP °सेणावइ ७ MB णिवावइ, P णिवासइ ८ MBP मयक ९ MB आवतें, P आवेंतहु and gloss आगच्छताम् १० K °चिक्खल्लें

18 3 *b* °गोमिणि लक्ष्मी 4 *b* छडयण° पट्चरणो भ्रमर 6 *b* °कोच्छर दक्षा मनोज्ञा वा 8 *a* इंदसम इन्द्रसमा, इदसमाण इन्द्रस्य सामानिका 9 *b* आदरक्ख आत्मरक्षका 14 *a* उवहिकुमारा, उदधिकुमारा *b* थणियकुमारा मेघकुमारा 16 *a* पेल्लावेल्लि ठेलाठेलीति देशी, *b* जाणहुं यानानाम् 17 सदाणियउ सघट्टित

19

हेला—भणिओ वि णा सुहाइ तेयं व कामिणीयणो।
जिणवयणामेय मलियो वि को ण तुंगो ॥ १ ॥

को वि भणइ मुणु किं णहि दीवहि
वप्पु महारउ पंतु ण जोयहि।
का वि भणइ मा हत्थि म बोयहि
अंगउ सीसु किं मुंडु मयसेयहि।
को वि भणइ मह मण्णमि कमाउ
हंसडु पप्पडु चमरें मणाउ।
को वि भणइ किं मूसउ चासहि
महु मज्जारु पंतु ण विहसहि।
का वि भणइ मा पाहहि विसहर
पंकयहि किं ण कउसु करसहरु।
को वि भणइ मा सप्पिपउ वासहि
पवेउ रिंपु गमपल म पेलहि।
का वि भणइ संचहि किं परसहि
सरडँ महुं पायंगु म भासहि।
को वि भणइ भावहि रुसिमच्छउ
पूसउ पूसपल सहुं मच्छउ।
मोरें मोव सयक्खीहूये
भाउ वसूयउ समउ वसूयें।
को वि भणइ वेसायरहूरें
वहउ पडणु किं पत्थ वियारें।
को वि भणइ मादय हुउं मोसउ
मा मंजहि मेरउ कलहंसउ।
को वि भणइ मोक्खउ भाईसणु
पविरलविमणु होउ महमंडणु।
पच्चार पुंपु कमाई जायसइं
जिणवरणाहपिपु पच्चवेसइं।

घत्ता—काइ वि देविर मरयउ करि कीलुप्पलु दीसइ ॥
मणुम्णयहिं सिप्पहिं ससिमणिकिरणहिं विहसइ ॥ १९ ॥

20

हेला—भवण सुपविसमासिणी गहियकुसुममाला।
पं वाणासेवविणी मयणसरयसाला ॥ १ ॥

19 १ MBP कम २ MB हेवेल. ३ MBP सिगु MB वग्गु. ५ M मुं. ६ MBP कम-
टर ७ MBP चरउ ८ MB समुपन्न P सहुप्पन्न but gloss समनिपतामि ९ MBP कमाई पुं
20 १ MBP सुसमि

19 1 देव व हेम मज्जरीणे. 8 तमिवद वी 16 वमिचवर वई वमनिकालि
17 सिएहिं सिते सुमी.

अवरेक्का वि सचंदण दीसइ णं मलयइरिणियवच्चणासइ।
सोहइ अवर वि कुंकुमपिंडें पुव्वदिसा इव सिसुमचंडें।
अवर सदप्पण णं मुणिवरमइ अवर मयरचिंधें सरि णं रइ।
अक्खयधारिणि ण मोक्खइ सहि थणदुहडी णं सुहधणणिहि महि।
अवर सुसेयदेह णं सुरसरि अवर सहंसमोर ण गिरिदरि।
मलविरहिय अवर वि विज्जा इव अवर सुरहि पप्फुल्लियजाइ व।
णच्चइ अवर सरसु भावालउ गायइ अवर कूडताणालउ।
वायइ अवर ततिवज्जतरु वण्णइ अवर परमतित्थंकरु।
एम पसण्णपसाहियवयणहि अच्छरकोडिहिं चलमिगणयणहिं।
सोहम्माहिउ सत्तावीसहि ईसाणु वि परिमिउ चउवीसहिं।
एम देव संचलिय जावहिं घणयं समवसरणु किउ तावहिं।
इंदाणइ त णिम्मिउं जेहउ मइं जडेण किं सीसइ तेहउ।

घत्ता—बारहजोयणरुंदु हरिणीलें तलु बद्धउ ॥
परिवट्टलउ विसुध्दु धूलीसालउ णद्धउ ॥ २० ॥

21

हेला—मोत्तियदसणहसियसुरणाहचावलीलो।
रयणपंसुविणिम्मिओ सहइ धूलिसालो ॥ १ ॥

सुयपिच्छच्छवि कहिं मि विरेहइ कत्थइ अंजणपुंजु व सोहइ।
कत्थइ लोहिउं संझाराउ व कत्थइ पंडुरु कुंदणिहाउ व।
अब्भतरि जगईउ पहाणउ ताउ होंति सोलह सोवाणउ।

२ MB मलयगिरि° ३ MBPT add after this line का वि गहियकत्थूरय (P कत्थूरिभ) वरइ, सामलगि णावइ घणघणतइ (B घणवणतइ); T also notes a *p* घणघणतइ ति पाठे निबिडमेघपंक्ति. ४ MP °तालालउ ५ MBP °मिग° ६ B णद्धउ

21 १ P पसुणिम्मिओ २ MB °पिंछ, P पुछ ३ MBP सोहइ

20 3 *b* °वणासइ वनस्पति 6 *b* थणदुहडी उन्नतस्तनी 8 *b* सुरहि सुरभि 9 *b* कूड ताणालउ कूटतानालय विस्मृततानमाना 10 *a* वज्जतरु वाद्यविशेष 14 *a* इंदाणइ इन्द्रादेशेन 16 °सालउ प्राकार, णद्धउ वेष्टित

21 2 रयणपसु° रत्नधूलि.. 4 *b* °णिहाउ निवहः 5 *a* जगईउ उपर्युपरि त्रीणि पीठानि.

चउगोउरमूसियउ विसालउ पसरियणाणामणियरजालउ ।
माणथंभ ताहुप्परि संमय संथय सोवामर सपंकय थं मय ।
चउहुं मि दिसहिं चयारि सपुण्णय हंसगमेसण जि इयवममय ।
भयहणाइपडिमापरियारिय फलिहयणगमाणयजयकारिय ।
पुणु चंवीउ सकमल ससलिलउ जगमाणियउ णाइं जगमरिलउ ।
तीरंरयणकरंभमणिदित्तउ चउपइपायरिपम्मणिविण्णउ ।
कुवलयधारिउ णं विमलपिउ भमियपईगउ णं पउहुंसिउ ।
विसधाइयपाणियचल्लोलउ पुणु खाइयउ एमियहससमाउउ ।

घत्ता—पडमियसरउप्पांहिं णाउण्णयतिणिणिहिं ॥
परियउ णाइं णियंति देवागमणु चउदिसिहिं ॥ २१ ॥

22

हेला—जहिं महिय रहंग हंसीहिं मउहंसो ।
सुरणाहुंपिणियाहिं सुरदारियहरपसंसो ॥ १ ॥

पुणरवि वंतरि णवकुसुमेपिहिउ कुसुमालउ णं वम्महमहिउ ।
पंतिहिं रयउ णं चउत्तेसउ फलमणिमयउ णं सुहिपरिहाणउ ।
कंकवयउ णं पियणमणिसिहरउ णच्चंति व माणवसंचरिपउ ।
णं णरकरवालउ कोमाकिंयउ णरवालाणइ पासिउ धम्मिउ ।
वित्थरियउ आहिणवरससारउ णं कामुयमाइउ सविसारउ ।
का वि वेवि तहिं वेवर कंचणु समउ वि णारि समीयरु कंचणु ।
कम्पी का वि सवंति मसोणइ जिहे तुव सिहु विरु एमइ अणोणइ ।

४ B णम ५ MBK णयार. ६ MBP वनिमउ ७ M णिउगुणिउ; B °चीरिउ ८ M विसिणिहिं; B विसिविसिहिं; P विसिणिहिं

22. १ P वलिं and gloss वासु वलिविसु २ M इयहिं ३ MBP वरणियाहिं ४ MBP णत्तहिं ५ MB णिहु विहु विरु; P विरु विव विहु and gloss यथा वा; K तुव but corrects it to विव

10 a चवीय वाय 11 °परमवाहि° विरमणवान ; b णवणइयाहि° नहुप्परिम नहुविसोलना 12 b °रइयवरयाउयक नवनयलक्ष, रइयुतिव रयनुवव 15 विय हि नइणि.

22. 1 महिय नहिनो रहंग एनिमिसितम् 6 b णाणाणावइ नावास्वननयवनिम f b क-विनय विनारसहिता नमया धनिकया 8 कवण नमनलया

लच्छी घर वि गपि पुण्णागहु   होई णियंबिणि कुड पुण्णायहु ।
कः वि मायदहुं मग्गु ण गच्छेइ   णियकोहिणिहि लोए ण मच्चइ ।

घत्ता—किसलयफुल्लफलगोंछुं चलचलइ णिहुय ॥
अमर परियेसेण तेरु को वि ए पूरइ ॥ २२ ॥

23

दोला—विलिगंधयअधारिणो जणियकामभाया ।
घल्लीवणलयाहरे जहि रमंति देवा ॥ १ ॥

पुणु हिरण्णरइयउ गरिल्लउ   ण जिणेण ययणगियरु घसउ ।
अण्णेरसु ण कामकडक्खहु   गुरुणायारु णारु ण दुक्खहु ।
जहि घउगोउराइं रयिणिहियइं   जहि घहुमगल्लदव्वइ णिहियइं ।
अट्ठोत्तरसयकणासइं   णाय वि णिहाणइ रयणालिदइं ।
तहि चिंतर पडिहारसमण्या   भीयरपुलियगयागणिरुण्या ।
पुणु पेच्छिउ उदयम्मि विसालउ   चउदिसु दो दो णाडयसालउ ।
ताउ निभूमिउ णयरसजुत्तउ   णाइ णउच्चिउ सुंदरणउत्तउ ।
घहुरजउ घररायरभूमिउ   आयउ णं जोण्हयहु सामिउ ।

घत्ता—उदयविम्गहि कुहिणीहि पुणु वि फया वि ण णिट्ठिय ॥
दो दो दिण्णसंधूय तहि धूयघडेइ परिट्ठिय ॥ २३ ॥

६ MBP अग्गे णारि होइ पुण्णायहु ७ BP गव्वइ ८ M अच्चइ ९ B णाजूं १० MBP अमर वि धीरमिसेण

23. १ B घल्लीवण° २ MT पणिही, BP पणहीउ ३ MBP गुरुणिहाउ ४ MB धुधूय, P धुधूरा ५ M धूयहरण.

10 *b* पुण्णायहु पुरुषप्रधानस्य 11 *a* मायंदहु पाथिकी आसाणाम्, अन्यत्र मा रसनीवन्दय तयो; *b* णिय° चन्द्र .

23 4*a* अण्णेयेसु आरोहा 8 *a* पणिहिउ मार्गी 9 *a* निभूमिउ निभूमिका 10 *a* बहु-घरजउ बहुवादिका बहुदीरकाय 11 कुहिणीहि मार्गेषु 12 दिण्णसंधूय दासधूपा, धूयघडेइ धूपघटा

24

हेला—दीसइ गयणमंडले णीलधूमरेहा ।
णं जिणकम्मकाणिया भमइ मुक्करेहा ॥ १ ॥

पुणु जयरामरणमारमियइं वरमंडवबारइं परिभमियइं ।
वणि वणि विमलइं सरिसरपुलियइं कीडागिरिवरकेलीभवणइं ।
वरगोउरविसालपरिपरियउ पीढु तिमेहलु मणिविप्फुरियउ ।
तिलु असोउ असोयपवणंतरि तहु परिमाउ बयारि शिरंतरि ।
कोहमोहभयमायँ चत्तउ सीहासणछत्तत्तयजुत्तउ ।
मणिय मवेपवेसरूवपुराउ णिहयपिरंगउ जिद णिरंजणु ।
संसार इव सुवण्णवरपोरय पुणरवि वरदुवारचयवेरय ।
पुणु दिसि दिसि दह धय सुरसंजुय पिप पवणयसहल पचधुणय ।
मसमवत्पमोरकमलंकरि हंसमवरहरिचिसकरिवारि ।
मूसियरविरवचवरपाणिंदु महोवर सउ सउ पोरहु ।

घत्ता—मज्झहु काहु तिबोए सोहइ भारि पोसंतउ ।
कुसुममाकपउ ताहु कुसुमाउहु जे जित्तउ ॥ २४ ॥

25

हेला—कहइ व किंकिणीण सोहेण धोखमाणो ।
अहमिह सकुसुमो वि ण हु होमि कुसुमबाणो ॥ १ ॥

देव देव मा महु रूसेजहु कुसुमचावहु करुण करेज्जहु ।
जो अंवर तववरणि ण मावइ अंबरपिंडु ताहु ढुंढु भावइ ।
जो सिहिवेसु कया वि ण इच्छइ सिहिअपेति सो जवयं पेच्छइ ।
जो मिच्छमकरि होइ परंमुहु तहु चमकव्वउ मिच्छउ संमुहु ।

24. १ MBPT add after this ‥‥‥, ‥‥ ‥‥ ‥‥ २ MBP एमउ ३ MBP चेउ
25 १ MBP पुर

24. 12 a °वहरिवहु मणुयत्तस
25 5 a सिहिवेहु विना वेर 6 °यवंति जाला जाला

परमहसु जो सच्चउ बुज्झइ हंसु तासु धइ केम विरुज्झइ ।
अमयवभपउ जो जइ दावइ विणयासुयधडाय सो पावइ ।
सीहेणेव जेण वणु सेविउ सीहचिंधु तहु केण ण भाविउ ।
जेण ण पसु घाइउ णियमग्गइ तासु जि वसहु थाइ चिंधग्गइ ।
पसुवइ सो जि भडारउ बुच्चइ दुट्ठ अवरु किं अप्पउ सुच्चइ ।
जो पंचिंदिय दुद्दम पीलइ पीलु तासु धयवडु अणुसीलइ ।
मोहचक्कु जें चप्पिवि चूरिउ चक्कु चिंधु तहु होइ अवारिउ ।

घत्ता—पुणु पायारु विचित्तु चउदुवार सुपसत्थ ॥
जहिं थिय णायकुमार मरगयदंडविहत्थ ॥ २५ ॥

26

हेला—पुणु वि धूवदोहडी पवरणट्टसाला ।
अहिणवभावसोहिया ताउ णवरसाला ॥ १ ॥

उव्वसिरंभतिलोत्तिमणामउ जहिं णडंति तियसाहिवरामउ ।
पुणु दीहर दहविह कप्पदुम दरिसियभोयसार णिरु णिरुवम ।
पुणु वेइय कलहोयहु केरी पियकंता इव सुहइं जणेरी ।
पुणु वि दुवारइं पुण्णपवित्तइं दरिसावियवहुमंगलवत्तइं ।
णिच्चु जि कीलियसुरसंघायहं भंभाभेरिपडहणिणायहं ।
पुणु पओलि लंघिवि पासायहं पंति हारतारासुच्छायहं ।
पुणु थूहइं मणितोरणमालउ पुणु फलिहमउ सालु सुविसालउ ।
मणुउत्तरगिरि व्व गरुयारउ कप्पदेवपरिरक्खियदारउ ।
सुद्धायासफलिहसपत्तिउ तहु आलग्गिवि सोलह भित्तिउ ।

२ MBP चक्कचिंधु
26 १ MBP पुणरवि धूयदोउटी २ B कलहोइय ३ MBP णिण्णायहं ४ MBP पुणु तोरण°. ५ B तित्तिउ

8 *b* विणयासुय° गरुड 11 *a* पसुवइ पशुपति शिव
26 1 °दोहटी द्विघटी घटद्वयम् 2 अहिणवेत्यादि उव्वसिरंभादीना विशेषणम् 5 *a* कलहोयहु सुवर्णस्य 9 *a* थूहइ रत्नस्तूपा ,

घत्ता—तहिं मंडवमज्झत्थु वेवइथिप्पहिं समारिउ ॥
सोसमइपयडवण्णेहिं पीढु सुहाइ विराइउ ॥ २६ ॥

27

हेला—चउदिसु तासु उवरि कड्ढावद्वियसोवा ।
जक्खसुराहिवा वि सिरिधम्मचक्कभारा ॥ १ ॥

भवइ हिरण्णपीढु तहु उप्परि — भहुकेउपरिमिउ पयडियसिरि ।
रयणदंडणुरयणोमारिहिं — भारंभाडसुंसियमहरियारिहिं ।
करयवारिवामयतणुकंकहिं — सोहइ धयहिं गडियमसर्पंकहिं ।
पुणु वि तितीय रइउ पीढुल्लउ — तासुप्परि सीहासणु भल्लउ ।
कंचुण्णयचामीयरपविमउ — विमेलु समंतमइमणिविरइयउ ।
मरगयमणिमियवीढपविग्गहिं — सहइ कहि कंतेपयपयग्गहिं ।
छत्तइं तिण्णि ताइं जसरियइं — विम्भवाइं व णाहहु चरियइं ।
ससिसयपंडुरपविरइयाइं — तिण्णि वि भावइ सासयविमाइं ।
मामंडलु मंडलु व भाणुहि — भइ माइंतेप्पिणु संभाणुहि ।
मिच्छावियधुद्धसणविड्डिहिं — सरलु पयडुण व परमेट्ठिहि ।
रत्तपुप्फपयडहिं पसाहिउ — झियमकयविभाउ रउ व गहिउ ।
कंकेल्लि व पल्लवसोहिल्लउ — मयवंसदुमसिहरु रमियफलउ ।
जिह जिह देवहुं दुंदुहि वज्जइ — तिह तिह सम्मत्तदि व गज्जइ ।

घत्ता—वं भासाहर पम्म दुंदुहिसरेण महीरें ॥
पबोहतो तिहुयणणाहु वं सुणइ संसारें ॥ २७ ॥

27 १ M दुरियर°, B बसियर° २ MPK सिंहासणु; B सिंहासणु ३ MB सित° ४ B पुण्णाणुहि ५ B रत्त पुप्फ ६ MBP विम्भव° ७ MBPT रहिउ MBP हि. ९ M मयवंदुम-सिहु कमियफल; BP मयवंसदुमसिहरु रमियफल but T बहुवा पठिय १ MBP गज्जइ.

19 ववारि व एतद्

27 4 रयवरदंड रत्नमयदण्ड ; तरय हस्ती; पेयारि पयन्ति; b भारंभाउ भारम्भक; पुलियय वीणावल्लक 5 वरयवहरि वररं ; पापय पुष्पमाला 6 a तितीयवसुंपरि विमिवाईदुंपम. 7 a बहुसयनाय° पुरपतम्; चामीयर° स्वर्णम् 8 b कंकेयव° स्फटिक 11 b भइ साक्षात् वैपितृ सहीय मीयत; सम्माणुहि सम्मानी एते 13 b एरइय दीप्तिमान. 14 b मयवंसदुमसिहुरु हस्तितुमसमू रमियफलउ पीरमुखम्

28

हेला—अविरलकुदकुडयमंदारपंकयाइं ।
सभसलसिंदुवारकणियारचंपयाइं ॥ १ ॥

जिह जिह कुसुमइं पडियइ गयणहु तिह तिह करसरणिवडियमयणहु ।
णवपसंडिदंडइं सपसंसइं पीयपासपडियाइं व हंसइं ।
जक्खकरयलंदोलणचवलइं गुणठाणारुहणाइं व विमलइं ।
खीरतरंगा इव परिघुलियइ कित्तिहि अंगा इव संचलियइं ।
पंडुराइं चमरइ सुविसिट्ठइं दयवेल्लिहि फुल्लाइं व दिट्ठइं ।
ज जं सुंदरु लच्छिहि अंगउ जं जं कोइं मि तिहुयणि चंगउ ।
तं तं सयलु वि तहिं जि समप्पिउ को वण्णइ जंमारिवियप्पिउ ।
णियपहणिच्चेइयचंदकउ समवसरणु गयणंगणि थक्कउ ।
पंचसहसधणुउच्छयमाणइं सेणियं कहियउ जिणवरणाणइ ।

घत्ता—जो उच्छेहु जिणिंदें धणुपंचसयहिं घल्लिउ ॥
तरुघरगिरिसभाह सो वारहगुणु चोल्लिउ ॥ २८ ॥

29

हेला—अट्ठगुणेण रुंदभावेण संपउत्तो ।
गाढं थूहवेइयाणं पि सो पउत्तो ॥ १ ॥

इय धणयं वेउव्विउ जायहिं इंदें णविउ भडारउ तावहिं ।
जय जिण कण्ह रुद्द चउराणण जय तवरामारइसुहमाणण ।

28 १ MB पियपायसपाडियाइ P पियपासपाडियाइ २ MBP तिहुयणि काइ मि ३ MBP उण्णयमाणें. ४ MP add after this विंससहससोवाणविहाणें, चउदिसविरइयहत्थपमाणें, B adds those after सेणिय कहियउ जिणवरणाणइ ५ MBP सेणिय कहिउ जिणें वरणाणें ६ MBP पघल्लिउ, T पघुल्लिउ ७ P पच्चुल्लिउ and gloss कथितम्

29. MBPK अट्ठउणेण

28 4 *a* °पसडिदंडइ कनकमया दण्डा, *b* पीयपासपडियाइं पीतपाशवन्धकनकदण्डै पाशस्य उपमा धृता 12 उच्छेहु उत्सेध, घल्लिउ कथित

जय कम्मिकण्हिउससिलमासमरवि जय वासवईसरदेहप्पहवि ।
जय मयणतिमिरमारहरणसम तियसकिरीडमउडमंडियकम ।
जय णिस्सेसवत्थविणासियम जय कंदप्पदप्पमहमहण ।
कोहकसायपंकमामारण जय माणइरिसिहरसुसमूरण ।
मायाणायमाणविद्दावण जय लोहपयोरउज्झावण ।
णिद्दारयणीयरिसंघारण जय सत्तमयकुरंगावियारण ।
जय भयमयणउक्कुमरुद्दारण जय जयवंदण मोहियविमारण ।
परमपुरिस परमप्पय संकर जय जय रिसहणाह तित्थंकर ।

घत्ता—वंदिउ एम जिणिंदु तहिं बत्तीसहिं सक्कहिं ।
उज्जोइयमयणहिं पुप्फयंतणामंकहिं ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे रिसहकेवलणाणुप्पत्ती णाम
णवमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ९ ॥

॥ संधि ॥ ९ ॥

१ M वयरविम ३ M णिम्मसरी ४ MBP णयरकुमर MBP णरपरियरण; P मोहवणि
विरयण

29 5 a "रविकिरणं" [illegible] 6 b [illegible] 10 a [illegible] 11 b [illegible]

X

परमेसरु थुणिउ पुरंदरेण परिसेसियभवभयमरणरिण ॥
परमप्पय महु पसीय सुसम समवसरणपरियरिय जिण ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

I

दुवई—तुह पहु वदणाइ संतोसु ण णिंदइ वहमि मच्छर ।
तह वि हु कुणसि अणयपणयाण दुहोहसुहोहवित्थरं ॥ १ ॥

तुह वीयराउ णिद्धूयकम्मु तुहुं हिंसावज्जिउ परमधम्मु ।
जो पइं सेवइ तहु होइ सोक्खु तुह पडिकूलहु संभवइ दुक्खु ।
तुहु पुणु दोहिं मि मज्झत्थभाउ इह पयडउ फुडु वत्थुहि सहाउ ।
णिंदिज्जइ रवि पित्ताहिएहिं चंदु वि वाएण णिवाइएहिं ।
ते दोण्णि वि पयह किं करंति ससहावें णहयलि संचरंति ।
ससिसूरोसहिसंघाउ जेम भुवणोवयारि जिण तुहुं मि तेम ।
सरु दूसिवि जो ण वि पियइ वारि तहु तण्हइ णिवडइ तिव्वमारि ।
जो रसइ तासु तिसणासु सज्जु सरवरहु ण पुण णं तेण कज्जु ।
जिह गरुलमंतु गरलंतयारि तिह तुहु वि सहावें दुरियहारि ।
अणवरउ भडारा भूयसामि जहिं तुम्हइं तहिं हउं समउ जामि ।

All Mss have, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

जग रम्म हम्म दीवओ चंदबिंब
धरत्ती पाळको दो वि हत्था सुवत्था ।
पिया णिद्दा णिच्च कव्वकीला विणोओ
अदीणत्त निस ईसरो पुप्फयतो ॥

MBP however read धरित्ती for धरत्ती, सुवत्थं for सुवत्था, and पुप्फदंतो for पुप्फयतो in the above stanza

1 १ MB ° भवभवणरिण, P °भवममणरिण. २ MBP सिद्ध महामइ पढम जिण ३ MBP पडिकूलहं ४ M इय ५ K ण तेण ६ B तुम्हइ तहिं हउ सउ, P तुम्हइ हउ समउ

1 4 अणयपणयाण अनताना प्रणतानां च 8 *a* पित्ताहिएहिं पित्ताधिकैर्नरै, *b* णिवाइएहिं पीडितै 12 *a* रसइ आस्वादयति, तिसणासु तृषानाश, सज्जु सद्य 13 *a* गरुलमंतु गरुडमन्त्र, गरलंतयारि विषविनाशक

जहिं तुहुं तहिं सासय सम्म सम्मु तेहिं हवें तहिं मयिमउ मुणिमम्मु ।

घत्ता—जहिं समवसरणि कुमारिवए पंचंदियसुहियरु लेवरउ ।
सुरेयरतिरियहं सुहयरु धम्मु भडारउ वज्जरउ ॥ १ ॥

2

दुवई—भारहो धरम्मि खयपहिसियम्मि व हरियवंकयो ।
सोहइ कंपुरंतरियम्मि मिहहियकम्मयंकयो ॥ १ ॥

भारसम हूह जाया एह भवेण चउवीस भयर मोयुम्मवेण ।
आगि भरहेउ पर संभवति जे ते पहा गणहर कहंति ।
गण्हसेणाई चयारि णाम णित्यपर सुहिम्मु सुबेह णाम ।
ण वि चासु वि भोमिहि भावणासु पयपयाहि गमसु परमेसरासु ।
कंड सुरिह पयरह बोवसम्मु भरहमहिपरसंपरसोह मम्मु ।
जाहियर विवसिय हार पगु भवह वि भसहं विसेसरासु ।
परिमिय चिय काचह पीड वेह मूणसु भेसि पिहुण वि ण बेह ।
भास वि मीसेमसरीरिणम्म णाणामासहिं परिणवह रम्म ।
मह तित्त कडय परियारवसेहिं जलवाउ हव बहुमेरसेहिं ।

---

१ MBP जहिं तुहं तहिं; B जहं हवें but corrects it to जहिं; ४ MBP add after this the following line: पर्ं दिस्माचर् नरसएवि जाहि हउ वरचमर् तिति ण जाहि। १ MBPT परिमिति सुमिहरतु and gloss in T सर्वेसिन्निरसमानिष बोमजी निवास समस्तो सम्म बोमर्म निवार जा बसे (सभो य ए सबोस but P records in the margin a p पतिसुरेहि वणए। १ MBP चर देविंदासहिं (M °विदवाह) परिवरिय चरणकमलिय सिद्ध वण, but P records in the margin a p सुरवरतिरियहं सुहयरु धम्मु भडारउ वज्जरइ।

2. १ MBP सिंधुपरि° १ B चक्कवट्टेण. १ L °चयारि चयारि ४ MBP सुमिम्मु ५ MBP चमिसि पाम° १ M च च MBP °विसेस MBPT कसिय° १ P °सुमसेहिं

---

15 a सबुह देवें वर

2. 1 खयपहिसियम्मि हरगतिरिक्खे. 2 कंपुरंतरियम्मि विहरणे; मिहहिय° विनाशित° 4 a भरहेसर 5 a चमूह° चमूहि 7 b °गणवाणीय गणधरा संबेव सेसोमेसरा 8 b चरेह सिरेसरतु परिपूर्णं विविहरण देवतामरतो च. 9 b देन देव्या 10 a °मम परिमेय

छप्पाउन्नमयन्नपयवरेण — महिरुह णमंति गुरुफलभरेण ।
आदंसणसणिह महि विहाइ — परमाणुं अणु जगि ण माइ ।
मंथरु सीयलु तरुसुरहिसारु — जोयणपमाणु पियरइ समीरु ।
अणुगेच्छउतउ णाहहु मुहाइ — पच्छइ लग्गउ गंधेण णाइ ।

घत्ता—जलें दुप्पु पडंति तरुगिणिउ मालिउ पिउरइ जहिं जि जहिं ॥
तणें कंटय कीडय पत्थर वि धूलि पणासइ तहिं जि तहिं ॥ २ ॥

3

दुवई—सुरवइपेसणेण परिमलमिलियालिउलेहिं माणियं ।
थणियकुमार मेह वरिसंति मंदायरगंधपाणियं ॥ १ ॥

पहुअग्गइ पच्छइ परिघुलंति — गलिणाइ सत्त सत्त जि चलंति ।
जहिं देइ पाउ तहिं कणयकमलु — सुरसंजोइउ सचरइ विमलु ।
पंचइ पहुत्तणु भुवणि काणु — हरि कुलिसधारि हरि जंगु सगु ।
अट्ठारह वरधण्णइं धरति — रोमंचिय णाइ ण धरित्ति ।
णहु सरिसु वि सेवइ मलविहीणु — धोयंवणीलमाणिकभाणु ।
दिव्वझुणि पथियभइ पवित्ति — यसुत्तमसत्तासयणुमाणछेत्ति ।
जक्खिंदसिरारूढउ विचित्तु — रयणावरसु रविबिंबु दित्तु ।
लीलासयोहियभव्वचंगु — तहु अग्गाइ गच्छइ धम्मचक्कु ।
जो पेच्छइ दूरहु मोणु भग्गु — तहु विहडइ माणकसायखंभु ।
णिज्जियबहुसमयणयतराइं — परवाइ वि देंति ण उत्तराइं ।

१० MBP अणुगच्छंतए ११ MB जइ दुप्पु १२ B तिण
3 १ P परिगल २ MBP मडारव° ३ P गच्छइ ४ B एवड्ड° ५ MBP काणु ६ MBP रयणायरंतरदिप्पदित्तु ७ MB °चक्कु ८ MBP अग्गइ ९ MB माणगभु

12 a छ प्पा स° षट्पदनयः 14 a मंथरु मन्दः, तरुसुरहिसारु तरूणां सुरभि सौरभं तेन सारं मारुतः
16 a मुहाइ सुखायते.

3 3 a परिघुलंति विलगन्ति 6 a अट्ठारह वरधण्णइं गोधूमशालियवमाषमुद्गादि सामान्य कङ्गुतिलकोद्रवराजमाषा । कानाशनालमथ यैणवमाढकी न शिम्बा कुलत्थचणकादि गुणीजधान्यम्. 7 a सरिसु दिशाउदितम्, b °भाणु भाजनम्. 9 b रयणायरसु रत्नमयैररै सहितं अत एव रक्तम्; 12 a णिज्जियबहु-समयणयतराइं निर्जितानि बहुसमयानामनेकमतानां नयान्तराणि युक्तिविशेषा ये

पंडियावय मंदिरा धरहरंति मणिदित्तिउ मोयम्मउ करंति।
अभिमीय पहाणुसियमप्पिंदु वीणा करइसरि सुहारविंदु।
वारवकोट्टेसु वि जे वसंति ते ते मुहुं महु संमुह भणंति।

घत्ता—मउलियकरयंह पणविवसिरउ सव्वहिं भव्वविमुद्धियउ ॥
परिवीलिउ काहिं जिविहिंपिं तहिं पयाउ इच्छुद्धियउ ॥ ३ ॥

4

दुवई—पवहर कप्पवासिसुरअमियउ भवियसंभे गारवें।
देविउ कम्मविवासरेवाय वि मायव्वइविसंतरं ॥ १ ॥

पुणु वर कुमार वेंतरसुरिंद पुणु जोइस कप्पामर णरिंद।
पुणु तिरिय विपंकयाबावारम केसरि कुंजर सरहु कोल।
वइसंति गवेसाइ व कमेण विक्कमसिरिवंत मुसिय समेण।
जब जब पंचविहहिं करप्पहिं सव्वहिं सविमाणावरपहिं।
सीहासणु मेहिवि अरहमाउ महमिंदहिं थुउ विसहरराउ।
असरविलोसियअणपंकप्पहिं कप्पोसियकुसुमामरप्पहिं।
मरराणविकुंडियमालियवेहिं घोसंतकुसुममालावलेहिं।
दयगीयगाहावलिपहिं अप्पारियकलियपुलइपहिं।
संथुउ सोहम्मीसाणपहिं अवरेहिं मि तियसपहाणपहिं।

१ MBP चकिमा°; T परिहा° and gloss प्रतिमा. ११ B मएए. १२ MB अभिसरणा°; B अरि इमरिमा° १३ MBP महु महु समुह १४ MBP °करय १५ BP सम्पत्र १६ MP परिफरिए. १७ MB भिभिहुय

4 १ MBPK °सेणु २ MBP कुविय ३ M वइसंत ४ MBP गवेसाए ५ M संथुय ६ P °मम्मकिपहिं

13 a पंडिहारा इव भाणुमणिपति प्रतिमा वा इता वैचाह; b मणिदंडिय परिपूर्णम् 14 a भविताय अरिसार 17 परिवालिद परिपालिक्या प्रमेन; पयार प्रजा

4. 1 वइदर्द ज्योतिष्कदी 2 देवाभिवाय° भक्तया देवा; मायव° मत्यकान्तिदेवाः; वेरा°. 5 a मवेसाद मवसरत्त 6 a करनवहि प्रबिरे 7 a बहसमाय सामिनमादी मिवेवार 10 a °पेंदहरि स्वन्यहरी

घत्ता—जय दुम्महचम्महणिम्महण दोसरोसपसुपासमिसिहि ॥
जय सयलविमलकेवलणिलय हरणकरणउद्धरणविहि ॥ ४ ॥

5

दुवई—जय कंकालसूलणरकंदलविमहरविलयनिरहिया।
जय भगवंत संत सिव सकिव णिवचियचरण परहिया ॥ १ ॥

जय सुकइकहियणीसेसणाम　भीमियण णियरिउयमभीम।
वामाविमुक्क ससारवाम　जय तिउरहारि हर हीरधाम।
जय पयडियधुयससयंभुभाव　जय जय सयभु परिगणियभाव।
जय संकर संकर विहियसति　जय ससहर कुवलयदिण्णकंति।
जय रुद्द रउद्दतवग्गगामि　जय जय भवसामि भवोवसामि।
महएव महागुणगणविसाल　महकाल पलयकालग्गिकाल।
जय जय गणेस गणवइजणेर　जय बंभ पसाहियबंभचेर।
वेयंगवाइ जय कमलजोणि　आइवराह उद्धरियखोणि।
सहिरण्णविट्ठिपडिवण्णगब्भ　जय दुण्णयणिहणण हिरण्णगब्भ।
जय परमाणंतचउक्कसोह　भावधयारहर दिवसणाह।
जय जण्णपुरिस पसुजण्णणासि　रिसिसस्सहिंसाधम्मभासि।

5　१ MBP वलय°　२ P सुकय°　३ MBT हीरवाम and gloss in T धीरप्रधान, अथवा हीरो रत्नविशेषस्तद्वन्मनोज्ञ　४ MBP °ससइंभु°　५ B परिगलिय°　६ P °गणविसाल　७ M पावधयारहर, BP पावधयारहर　८ M रिससस अहिंसा°, BP रिसिमस अहिंसा°

12 °पसुपासमिसिहि पशुप्राश पलाल तस्य शिखी अग्नि　13 हरणकरणउद्धरणविहि हरणं मिथ्यादर्शनादे, करण सम्यग्दर्शनादीनाम्, उद्धरण दुर्गतिकूपे पततामुध्दृत्य स्वर्गापवर्गप्रापणं तेषां विधिर्विधानं यस्मात्,

5　1 °कदल° कपालम्, °विलय° विलया वनिता स्त्री　3 b भीमयण भयहारक　4 a वामाविमुक्क स्त्रीविमुक्त, ससारवाम ससारप्रतिकूल, b तिउरहारि जातिजरामरणस्य मिथ्यादर्शनादेर्वा त्रिपुरस्य विनाशक, हीरधाम धैर्यस्य धाम　5 b परिगणियभाव ज्ञातपदार्थ　6 a सकर शकर सुखकर　7 a रउद्दतवग्गगामि उग्रतपसामग्रगामी, b भवोवसामि ससारोपशमक　9 b गणवइजणेर वृषभसेनादीनां शिष्याणा जनक　10 a वेयंगवाइ सिद्धान्तवादिन्　12 a °अणतचउक्क° अनन्तचतुष्टयम्, b भावधयार° अज्ञानम्　13 b रिसिसस + अहिंसाधम्मभासि ऋषिभि प्रशस्य अहिंसाधर्मस्य च प्रतिपादक

जय माहव विहुणियमाहवास महुसूयण दूसियमहुविसेस ।
जय कंतिणिम्मियपरमहंस णायमय कमल परमहंस ।
जगि सो केसउ जो रायवंतु तुहुं वीयरायु कहिं केसवंतु ।
के सय ते सय जे पर हसंति कह पावपिंड ण्हरापि वसंति ।
जय कासव का सचिवि तुमम्मि केवल चिरि चिरोहु कम्मि ।

घत्ता—जय गयण वुयासण चंद रवि सव्विय माहि मारुय सलिल ॥
महुंगमहेसर जय सयल पच्चामियकम्मिमलकलिल ॥ ५ ॥

6

दुवई—जय जय सिद्ध बुद्ध सुद्धोयणि सुगय कुमग्गणासणा ।
जय गउडंड पिदु दामोयर इयपरवाइवासणा ॥ १ ॥

भामाइं पसियाइं जाइं जाइं तुह देव भवंझाइं ताइं ताइं ।
एहिं वंदि उप्पाइयाण तुह णामहु कस्सिव छेउ केण ।
मेहविहवविहीणहिं मारिसेहिं किं वुच्चसि तुहुं अम्हारिसेहिं ।
संविग्गहिं पंजरत्थसामग्गिहिं पंचुग्गमम्माइयवंगग्गिहिं ।
पक्कहिं जवि भरहु भरिय भय भुंजहि महि महियर पोक्खर ।
सयरायरजणुप्पिणणाणु परमेट्ठिहि भवणु भवंतु णाणु ।
रामियहि पुणु पच्छुण्णवणु आयड्डियविहि वरणउप्पणु ।
उप्पण्णु मउत्त पुप्फयंतु तुहुं जासु वसणु भवंतु धंतु ।
ता राणं भणरेहिं मि परेहिं पणविउ जिणवरु सिरकयकरेहिं ।

१ MBP चिरुचिरोहु. २ MBP कोव महि.

6 १ MBP मह विमय° २ MBP ता एत्थि ३ P गय° ४ MB °भाखहि, P °पक्कवि
५ MBP एणगह. ६ MBP °पाखा.

14 b दूमिय ववु सिहिन मधु मय सीई परमय 15 b गोवयन हासम्बक 16 a सो केसव जो राय
वंतु च केसेवु उप्पाद व केसव b के सय तु केसवम् 17 a के पदे ता रि— के सवा । ते सवा केसव
इत्यादि. 18 a सव विदि प्रत्यकार 19 वीयय अममाः 20 महुं य मदेसर समाप्तास्थिमलाक्लिष्टो
महेसर स य स पर्यामिमिदक्कतिरपूष

6 3 b यय वडद सत्कवि 4 b केद प्रण्व 5 a मारिसेहि अस्मादृक्षैः 8 a सयराय
र तु यि व स° सचराचरस्य सचिदाधिनिविशर केवलज्ञानस्य च ज्ञानो विष्णुः देवाः

पुणु चिंतिउ किं जोयमि रहंगु किं तणयतोंडुं दरियारिभंगु ।
मज्झत्थु सच्छु णिम्मुक्कसंगु किं वंदमि मुणि सुद्धतरंगु ।
धम्मेण सुरत्तु कलत्तु पुत्तु पहरणु वि होइ णिद्दलियसत्तु ।
धम्में संपज्जइ पुहविरज्जु कराणिज्जु पहिल्लउं धम्मकज्जु ।
गंभीरणायणिम्महियवेरि देवाविय लहु आणंदभेरि ।

घत्ता—मायंगतुरंगहिं णरवरहिं रहधयचमरहिं परियरिउ ॥
वेयालियकयकलयलमुहलु भरहणराहिवु णीसरिउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—पत्तो समवसरणमसुहहरणं खयकालवारणं ।
मयराणणविणिग्गयमुत्ताहलमालालुलियतोरणं ॥ १ ॥

हरिणाहिवासणासीणगत्तु तिउणियससिसमसेयायवत्तु ।
पउलोमीपियसेविज्जमाणु चउसट्ठिचमरविज्जिज्जमाणु ।
जिणणाहु दिट्ठु भरहेसरेण णं णेसरु णवपंकयसरेण ।
णं मत्तमऊरें वारिवाहु णं वाइएण रससिद्धिलाहु ।
णं सिद्धें संभावियउ मोक्खु णं हंसें माणसु जणियसोक्खु ।
कंपावियदिग्चक्काहिवेण पारद्धु थुणहुं चक्काहिवेण ।
जय भुवणभवणतिमिरहरदीव जय सुइसवोहियभव्वजीव ।
जय भासियपयाणेयभेय जय णग्ग णिरंजण णिरुवमेय ।
सकयत्थइं कमकमलाइं ताइं तुह तित्थु पसत्थु गयाइं जाइं ।
णयणाइं ताइं दिट्ठो सि जेहिं सो कंठु जेण गायउ सरेहिं ।
ते धण्ण कण्ण जे पइं सुणंति ते कर जे तुहं पेसणु करंति ।

७ MBP °तुंडु ८ MP भरहु णराहिउ, B भरहणराहिउ

7 १ MBP °सरण असुहहरण, KT °सरणमसुहरसरण २ B °विलित्त° ३ BK °ललिय° ४ M तुव

12 *b* दरियारि° दृप्ता शत्रव 16 *a* °णाय° नाद 18 वेयालिय° भट्टचारणादिका

7 1 असुहहरणं अशुभनाशकम् 2 °विणित्त° विनिर्गत 3 *b* तिउणिय° त्रिगुणित 4 *a* पउलोमी° इन्द्राणी 5 *b* णेसरु सूर्य 6 *a* वारिवाहु मेघ, *b* वाइएण रसायनकारकेण 8 *a* दिक्चक्राधिप लोकपाला 9 *b* सुइ° श्रुतिरागम 11 *b* तित्थु समवसरण निष्क्रमणादिस्थानं वा

ते णाणवंत जे पर्इं मुणंति | ते सुकइ सुयण जे पइं थुणंति ।
ते धम्मु देव जं तुज्झु रइउ | सा कित्ति जाइ तुह थोत्ति कइउ ।
तं मणु जं तुह पयपोमलीणु | तं वयणु जं तुह गुणइं लीणु ।
तं सीसु जेण तुहुं पणविओ सि | ते णयण जेहिं तुहुं णाणिओ सि ।
तं सुहुं जं तुह संमुहउं णाह | विवरंमुहुं कुच्छियगुरुहुं णाह ।
वेसोवक्खाण तुहुं मज्झु ताउ | पच्चेविं कहिं मि कउ कउ ण जाउ ।
विहुणियपंचविहसंसारसिद्ध | दुक्खेवसमावियदेवसिद्ध ।

घत्ता—पंचायणकुंजरजमजमकसविसविसहरदंसणपसुवणियसंका ॥
पइं संभरियइ जि परमजिण उवसमंति कयभवभय संका ॥ ७ ॥

८

दुवई—जय भरंसमवयमरणवेयणसमसुरासुरपवंसिया ।
सुरगुरुसुरसहुसमसमाणपणाइणसरसमसिया ॥ १ ॥

भरणाइं तेरहगरुमाविराइं | जयणाइं पंच पहराविराइं ।
पयारह सिंगाइं चलयणाइं | चविहरयं सिलिल किर णिम्मयाइं ।
सीसाइं पंच णइ मणमि णउ | वरहुं मि वेरिवरियउ तं वि णउ ।
बारह जोइस देवारियाइं | मंचेर इह विरइतिमारिवाइं ।
चोमई चउरासीकस्स णासु | दुम्मीयाकुस संजविय तासु ।

५ MBP णासु ६ MBP पहीण° BPKT °मदुमस्सु ८ MB °विवरएण° T सत्त ठेवा ९ MBPK °विसम १ MBPK वर

8 १ MBP णहगण° २ MBP °णहतेण° K वैरेण ३ MB वरिवरिउ ४ MPK णवगह ५ MBP वणहर.

19 a °ताव एकव ताव मिया 20 a मिहु है चेह 21 °क ण° ठेवा

8 1 °णमरकेठेवण° णमरवैरेण्मी बमुरेमी 3 a देरहणई पामणाणि पच समितयविसो हमय ; 3 णदवाइ पंच मविकुगाणविमप स्वार्मिनेणापि 4 एवारह सिंगई हम्मरालायवैयवणुवणाणि णयरणि 5 सिरिम्मि चिम्ममाई मायामिणासिजणि सन्नाणि विभारावेमणारणायाणि या वांणि विमाणि एवमस्मो लरम्मतुवीमताणि मिवणि 5 सीसाइ णण सामानिकपंचेतत्वासमीसिहजणिनुमिपुसरथंववर्ग- वणामतताणि णव वानिवाणि पच महामणाणि वा णहणम मि एकु अवच एवं वदिगमाह वर्षवणवोम सिगोमीति वामानिक वा 6 a वारह इस्तव वापसि जोइस णहरेव पूर्वनि वा; देवारिवा ई सम्पाः; 3 वेमाइ दइ वरसमायमसिवणामणे वर्ष 7 a दुम्मीवइ पुत्र मीसतका वर्णवैकमपरमीन

जो कामधेणु सेविउ सुधामु जें तोडिवि घल्लिउ मोहदामु ।
दुद्धरवयभारधुरग्गु धरिवि अपवत्तियातित्थवहेण चरिवि ।
णित्थरिवि पराइउ णाणतीरु वीसमिउ असोयहु मूलि धीरु ।
जें लंघिउ भवदुप्पहु दुलंघु जो धवलु धवँलवृंदहु महग्घु ।
तहु वसहहु कयपणिवाँउ भाउ णियणिलइ णिसण्णउ भरहराउ ।

घत्ता—कयपंजलियरु पणमंतसिरु भत्तिहरिसवियसियवयणु ॥
संसारदुक्खणिव्वेइयउ जोयँवि मिलियउ भव्वयणु ॥ ८ ॥

9

दुवई—ता णिग्गतधीरदिव्वझुणितोसिँयफणिणरामरो ।
जीवाजीवणामकयभेयइं तच्चइं कहइ जिणवरो ॥ १ ॥

सभँवाभव जीव दुभेय होंति ते सभव सकम्में परिणँमंति ।
चउँरासीजोणिहिं परिभमति अण्णण्णदेहराएं रमति ।
वियलिंदिय सयलिंदिय अणेय एक्किंदिय भासिय पंचभेय ।
आहारसरीरिंदियमणाहं आणामासापरमाणुयाहं ।
जं कारणु णिव्वत्तणसमत्थु तं पज्जत्ति त्ति भणंति एत्थु ।
तं छव्विहु परमेसें पउत्तु अहमेण ठाइ अंतोमुहुत्तु ।
जिह णारएसु तिह सुरवरेसु दसँवरिससहासइं वसइ तेसु ।
परमें तितीस सायरसमाइं मणुएसु तिण्णि पलिओवमाइं ।
एइंदिएसु चत्तारि होंति वियलिंदिएसु पंच जि कहंति ।
ता जाम असण्णिउ पंचकरणु सण्णिउ पज्जत्तीछक्कधरणु ।

६ MB ° दुप्पउ ७ M धवलचदहु, B धवलवदहु, P धवलविंदहु and gloss समूहस्य ८ MBPK कयपणिवायभाउ ९ MB जाएवि

9 १ B °तासिय° २ M भव वाभव ३ MBP परिणवति ४ MBP चउरासिलक्खजोणिहिं भमति ५ BP दहवरिम°

8 *b* °दामु बन्धनम् 9 *b* अपवत्तियतित्थवहेण अवसर्पिणीचतुर्थकाले केनाप्यप्रवर्तिततीर्थमार्गेण 11 *a* °दुप्पहु दुर्मार्गे 14 जोयवि दृष्ट्वा

9. 11 *a* चत्तारि आहारशरीरेन्द्रियोच्छ्वासनिश्वासलक्षणा पर्याप्तय

पयडिं जे पज्जत्तिं तेय   ते वेंति अपज्जत्ता अणेय ।
पंचिंदिउ असण्णि सणालु   जाणि सच्चु मिच्छमुहुत्तु कालु ।

घत्ता—मोयाविय तिरियइं माणवइं सुरणारयइं विरोलियउ ॥
आहारभंगु कासु वि मुणिवि कम्मु तेण सयलइं वि पिंडियउ ॥ ९ ॥

10

दुवई—तिरिय हवंति दुविह तस थावर थावर पंचभेयया ॥
पुहवी आउ तेय वाऊ वि य बहुविह हरियकायया ॥ १ ॥

मसुरिय कुसग्ग सूइकलाव   परिणामविरयसंठाण भाव ।
तोरणतलमेहणगिरिपएसु   सुरहरणहसंभाममहिपएसु ।
णाणाविहसोयरि सरिसरेसु   पच्चारइ विसमणभूपएसु ।
अवरेसु वि बहुभेयंतरेसु   घणंतपरिट्ठियणइयसेसु ।
णइसरसरसातोयाणएसु   पयाण करेय वि होइ जासु ।
करकंकिय व मिसार वालुयाइ   सच्छी सिलियं कणि वंजु तेइ ।
दुविह वि महिय किर पंचवण्ण   जइ होइ होउ संकिण्ण वण्ण ।

घत्ता—कसिणारुण हरिय सुपीयलिय पंडुर अवर वि धूसरिय ॥
पेंढी महिकायइं मउय महि पंचवण्ण मइं वज्जरिय ॥ १ ॥

11

दुवई—वेंचणु तेउंब तंब मणि वम्मय वरपुहई पयासिया ।
बाणयिवोरखारयमसुसम बउकाउं वि भासिया ॥ १ ॥

---

६ MBP पज्जत्तु अण्णइ इव जप्पु ७ MBP विरोलिय ८ MBP पिंड
10 १ K दुहई २ MBP थावर° ३ MBP विसमणमहिपएसु. ४ MB सिलिय; P सिलिय.
५ MBP कसणारुण ६ P महिकायइं मोयइं मउय महि
11 १ MBP तउंब

---

14 b मिच्छमुहुत्तु कालमुहूर्तं 15 मोयाविय मोचापित
10 4 तोरण° इत्यादि; b बहु... 6 b घणंत° ...
8 b सच्छी ... b संकिण्ण मिश्र.

दूरट्ठु दरिसावियधूममलिणु असणी तडि रवि मणि जोइ जलणु ।
उक्कलि मंडलि गुंजाणिणाउ दिसविदिसाभेयं भिण्णु वाउ ।
गुच्छेसु गुम्मवल्लीतणेसु पव्वेसु रुक्खसाहाघणेसु ।
सुपसिद्धु वणासइकाउ एसु उप्पज्जइ जइ घोसइ जईसु ।
पज्जत्तेयर सुहुमेयरा वि दुमसाहारण पत्तेय के वि ।
साहारणाहं साहारणाइं आणापाणइं आहारणाइं ।
पत्तेयहुं पत्तेयइं गयाइं छिंदणभिंदणणिहृण गयाइं ।
बारहसहाससंवच्छराहुं सुहुमाहु दह जि दह दो खराहुं ।
आउहि परमाउसु सत्त भुणइ अहरत्तइं चिंधिहि तिण्णि भणइ ।
तइयइसहासइं गंधवाहु दहसहसाइं जि वणसइसमूहु ।
परमेण जि अइअवरेण उत्तु सव्वह जीविउ अंतोमुहुत्तु ।
तुंदाहि कुक्खि किमि खुल्ल संख वीइंदियं मइं भासिय असंख ।
तीइंदियं गोभिपिपीलियाइ चउरिंदिय मच्छियमहुयराइं ।

घत्ता—परिवाडिए किं पि णाणभवणु एयह जुत्तिइ सावडइ ।
रसु गंधु णयणु फासहु उवरि एक्केक्कउ इंदिउ चडइ ॥ ११ ॥

12

दुवई—पज्जत्तीउ पंच कमसंठिय छह सत्तट्ठ प्राणया ।
तेसिं होंति एम पभणंति महामुणि विमलणाणया ॥ १ ॥

पंचिंदिय सण्णि असण्णि दोण्णि मणवज्जिय जे ते धुवु असण्णि ।

---

२ MB °मणिजाइ ३ MBP दिमि° ४ M दिण्णु, P भिण्णवाउ, ५ M सुवासिद्ध°, BP सुपसिद्ध°
६ M जिइ, P जिउ ७ MBPT पत्तेयगयाइ ८ MBP णिहणइ ९ M रुदाहि सुक्खि, रुंदाहि कुक्खि,
T तुदाहि गण्डूपद १० MBM वेइंदिय ११ MBP तेइंदिय
12 १ M मणि

---

11 4 *a* °गुंजाणिणाउ घोषशब्दयुक्त 6 *b* जइ जगति 9 *b* णिहण विनाशम् 10 *b* दह जि-दह दो द्वाविंशतिसहस्राणि, 11 *a* आउहि अपाम्, *b* चिंधिहि अग्ने 12 *a* तइयइसहासइ त्रीणि वर्षसहस्राणि. 13 *a* अइअवरेण अतिजघन्येन 14 *a* तुदाहि गण्डूपद 16 णाणभवणु ज्ञानाश्रयम्, सावडइ सपद्यते

सिक्खासावारं च भैवि पाव | मज्जावगुरुदेवसमूहमाव ।
मह पय ति समाविय पंच ताइं | बंभरए सिणिदु महासियाइं ।
मंदि पत्रासिहिं पञ्चत्तपहिं | संकमसयमावयमसासप्पहिं ।
मयवयपवत्रपरासमाषप्पहिं | माणामीवार बमासिपहिं ।
पहहिं मि विवंति सण्णिय तिरिक्ख | मक्खामि पावाविह दुक्खिरिक्ख ।
बम्मर हसार पंचप्पयार | कप्पय मयपोहर सुसुवार ।
पोहयर समुण्ण कुंडवियरपक्ख | मण्णेक बम्मसयकोमपक्ख ।
पक्खयर वरपय वरपिह समेय | पक्कसुर तुहुर करिसुणहपाय ।
वरसप्प महोरय मजगर | पिं ताइं गइहु वि कमसु होर ।
मुयसिप्प वि मरुवाविय समेय | सरडुंदुरणायाधामधेय ।

घत्ता—बम्मर बेहेसु वाण तयपरिसु पक्खयर गामपुरेसु वण ॥
बीवोपविसंवक्खामिय वहिं पंसु दीसु मासंति केवे ॥ १२ ॥

13

दुवई—जोयणलक्खु मलव मंदुपविरक पुणु गयपणिवमेएणा ।
भत्थि मसंखदीवसायरखण्णापारपारया ॥ १ ॥

जंबूदीवो धाईसंडो | पुक्खरवरदीवो पुंमधंडो ।
माहपे वीपे मयमाहुम्मिपो | मंदिसा मरुबोरखापोमो ।
कुंडलसरभो संको रुअगो | भुअगवरे मवरे वि हु कुसपो ।

१ MB यूह समूहमाव K मूह समूहमाव but corrects it to गूह समूहमाव ३ MBP °मावाव ४ MBP मसामएहिं ५ M भाइयर. ६ M पह°; BP पह ७ MBP पुमपुर. M महोसर. ९ MBP सिर १० MBP बरिलय ११ MBP पामतेज १२ M सिसे K सिसे but corrects it to सहि

13 १ MBP लह. २ P बारसतो ३ MBP सियसरो ४ MBP बासे ५ MBP वासे

12. 4 b अज्झा पेक्खा दि—ते विरते बाल बक्खाणदाणं तेन मूह प्रकाशन एवमादु एता नुवमाय बेमामू. 5 a समसिथ बर्धन 6 a पचास एहिं परिपूर्ण 9 b ककर बलपरिमित

13 1 बबबविबसे एला अप्रमिहिवर्णोया 4 b अरबमबासी एकमसि 5 a एबको एककः

कोंचो एव दीवसमुद्दा दूणपिहु दावियणियमुद्दा ।
एएसुं तिरियाणं ठाणं जलयरथलयरणहयरयाणं ।
वियलिंदियपंचिंदियणं एण्हि घोच्छं कायपमाणं ।
साहियजोयणसहसुच्छेहं पउम दीसइ वड्ढियदेहं ।
अवि य दुकरणो को वि वरिट्ठो बारहजोयणदीहो दिट्ठो ।
होइ तिकोसो तिकरणवंतो चउकरणिल्लो जोयणमेत्तो ।

घत्ता—लवणण्णवि कालण्णवि विउले होंति सयंभूरमणि झस ॥
सेसेसु णत्थि जिणभासियउ सेणिय णउ चुक्कइ अवस ॥ १३ ॥

14

दुवई—जाणसु जोयणाइं अट्ठारह लवणसमुद्दमच्छया ।
णव वरसरीमुहेसु छत्तीस जि कालेए दिसच्छया ॥ १ ॥

अवसाणमहण्णवि जे वहंति ते जोयण पंचसयाइ होंति ।
गयणगणचरहं थलंभचरह समुच्छिमगब्भसरीरधरहं ।
कइवयचावइ काइं मि गणंति तणुमाणु एम मुणिवर भणंति ।
कासु वि संमुच्छिमजलयरासु पज्जत्तिलहु जोयणसहासु ।
जलगब्भजम्मि मवियाइ ताइं पंचे जि जोयणइं सयाहयाइ ।
पयह ताहिं मि समुच्छिमाह परिवज्जियपज्जत्तीकमाहं ।
अक्खिउ जिणेण दीसइ विअत्थि परमेणोगाहण णरविहत्थि ।
थलगब्भयदेहि तिगाउयाइ परमेण माणभावहु गयाइं ।
सुहुमहु वायरहु मि ध्रुउं पवण्णु अगुलअसंखभायउ जहण्णु ।

६ MBP दूण पि हु ७ MB add after this लवणोवहि कालोवहि सामें, सेस समुद (B सो समुद्द वि) वि दीवहु णामें

14 १ M णवर सरी°, BP णव जि सरी° २ BP वसति ३ P काहिं ४ MBP पच वि ५ M विहत्थि, BP वियत्थि ६ MPT विअत्थि ७ MB धुउ, P धुव°; K धुवु

6 दूण पि हू द्विगुणपृथव , दा वि य णि य मु द्दा दर्शितनिजाकारा' 10 *a* दु क र णो को वि दीर्घ 11 *a* ति॰ क र ण व तो खज्जरक , *b* च उ क र णि ल्लो भ्रमर

14 1 स री मु हे सु गङ्गादीना समुद्रप्रवेशस्थानेषु 2 दि स च्छ या दिशां प्रच्छादकाः 5 *a* का इ मि केपांचित. 7 *b* स या ह या इ शतगुणितानि. 9 *a* वि अ त्थि विगतास्थि 10 *a* ति गा उ या इ तिस्रो गव्यूतय ,

घत्ता—जगि सुहुमणिगोयसमुब्भवइं णवि पत्तमणुउ ण वि पहिउ ॥
सिरिहिं कुसुमयंत पहुणा जेहिउ जम्मयाइं कहिउ ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सिरिपभोमाइंवो णाम
दसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १० ॥
॥ संधि ॥ १ ॥

८ M सिरिंपुसुमयंते ९ M मम्मं; P मम्मु १ MBP सिरिपभोमाइणा.

12 जलमलइं म +अमलाइं भव्वंगणाय 13 सिरिंग वंदवम्म

XI

पुणु इंदियभेउ वम्महुपसरणिवारएण ॥
भासियउ असेसु लोयहु रिसहभडारएण ॥ ध्रुवक ॥

1

जाणइ सण्णिउ जो पच्चत्तउ पुट्टउ सुणइ सद्दु गयसोत्तिउ ।
णिल्लोयणतिउ पुट्ठपविट्ठउ रूवुँ णियच्छइ अप्परिमट्ठउ ।
फासु गंधु रसु णवहि जि भावइ बारहजोयणेहिँ सुइ पावइ ।
सत्तेतालसहस्सइं दिट्ठिहिइं अवरु वि दोण्णि सयइं तेसट्ठइं ।
चक्खिंदियहु विसउ वक्खाणिउ जेहउ केवलणाणें जाणिउ ।
गंधगहणु अइवत्तसमाणउ सवणु वि जवणालीसंठाणउ ।
दिट्ठिहिं पडिम णिपज्ज मसूरी अक्खिगय जीहें खुरुप्पायारी ।
संहरियतसदेहेसु पयासउ फासु अणेयरूवविण्णायउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

सूर्यात्तेज गभीरिमा जलनिधे स्थैर्यं सुराद्रेर्विधो
सौम्यत्व कुसुमायुधाच्च सुभग त्याग बले सम्भ्रमात् ।
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सत्ये साप्रत
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशस खण्डकवेर्वल्लभ ॥

M reads विधौ for विधो , MB read कुसुमायुधात्सुभगता for कुसुमायुधाच्च सुभग, and खण्ड कवेर्वल्लभ for खण्डकवेर्वल्लभ

GK do not give it

1 १ MP गयसुत्तउ, B गयसोत्तउ २ MB णिल्लोयणु ३ B तिउपुट्ठ ४ MBP रूउ ५ MBP सत्तेचालीससहसइ ६ MBP विण्णि ७ MBP अइमुत्त° ८ MBP दिट्ठिहि ९ M जीय १० BT सुहरिय° ११ MB तसदेवेसु

1 3 *a* सण्णिउ समनस्क , *b* पुट्ठउ स्पृष्ट , गयसोत्तिउ श्रोत्रगत 4 *a* णिल्लोयणतिउ नेत्र विना त्रीणि स्पर्शनरसनघ्राणानि, पुट्ठपविट्ठउ नासिकादौ प्रविष्टमतिमुक्तकायाकारघ्राणेन्द्रियप्रदेशे स्पृष्ट गन्धादिक जानाति, *b* अप्परिमट्ठउ अस्पृष्टम् 5 *a* णवहिं जि भावइ नवयोजनात् स्पर्श गन्ध रस जानाति 6 *a* दिट्ठिहिइं चक्षुर्दर्शनस्येष्टानि 8 *a* अइमत्तसमाणउ अतिमुक्तकपुष्पाकारम्, *b* जवणालीसठाणउ यवकणस्तम्भ नालिकासदृशम् 10 *a* °हरिय° वनस्पतिकाय

समवसरणु ठाणु सुरसत्थहु इंदु वि णरयमयहु महत्थहु ।
मणुयतिरिक्खहु ते वि पवुत्तउं भोयभूमिविसयहु पभणंतउं ।
सुंदरु वायवेगु मणोहरु पम्मासिउ सिरिणिवरणोहरु ।
एईरिय णाउंय सुसंपुर- जोणिहिं होंति सकम्मसमुब्भव ।
सिपरिसिरि वि विमलजोणीहव संपुड विमल होंति गम्भुब्भव ।
पाडिपजोणि देवणारयहं मीसा गम्भणिवासें णरवइं ।
सीयल्लुण्ह उण्हेण हुयासह ताई तिरि मि तिविहा पुणु सेसई ।
मेघणाभग्गह ससहरवयणइं संवावत्तजोणि णीरयणइं ।

घत्ता—तहिं जीव मवेय पर लहंति संपुण्ण तणु ॥
जिणकम्मवसेण होंति मरेप्पिणु जंति पुणु ॥ १ ॥

2

होंति मणुय कुम्मुण्णयजोणिहिं कमल राम चक्कि सुरजोणिहिं ।
मणरहि जोणिहि हरियरहि पायडअवयवसावयरहि ।
पेसियहुपह जियंति सहरिसइं मरं विण्णास्य णवदहरिसइं ।
वीसंविग्गु मि णटमिमीसइं कैतुलपवमास ति विण्ण दिवसई ।
वरयिरिवहु माय कम्मासिउ भिमुमहि पंचिरिवहु वि मासिउ ।
मण्णमु पुण्णकोडि वयागुरि कम्मभूमिभूयणं मि विट्ठि ।
वासइं वायाळीससहासइं वरय जियंति आयजीपीसइं ।
पक्खिणहिं ताई पुसवारि मणियईं पक्खिमायणमई तिणि परिगणियई ।

१२ MB °णरउ° १३ MBP ण मि ण वत्तउं १४ K reads this line before line 13 १५ MBP णरयहुरवुह १६ MBP पवुत्त°

2. १ P °कमल, २ MBP पउम° ३ P °पोमास ४ M °जोणम्मा

11 b अइल्लह सभोअंजलसि 12 b भोयभूमिविसयहु पभणउं यत्र भवत्यरपयं भोगभूमिजायां अर्थ वत्तहुउडलयम्भ विशेषिविसयासम्बन्धं वुक्तव्यम् 14 a–b सुसंपुर जोणिहिं सहजोनी 16 a पाडुप जाणिहि b मीसा सर्चितावित्ता 17 a सीयलुण्ह वेसाविसयोसा वेसपरिपुण्ण वणेण हुयासह देवलाभियलतुषेण योनि b ताइ मि हि मि देवलक्षणम्; तिविहा सीदा उष्णा मिश्रा च वेदह देवनारदेवकानैम्योत्सभोगम्

2. 3 a इरियहुपह जीविया 4 पदमिमीसह उटितितिमिलामि. 6 b भूयणइं भुवनानाम्
7 b वायवीसाय भाषा कल्पिताया वेसु तामि

सेत्तावेक्खइ कहि मि तिरिक्खहं
मायाविय कुपत्तदाणेण वि

एहउ उत्तमाउ पंचक्खहं ।
एए होंति अट्टझाणेण वि ।

घत्ता—इय कहिय तिरिक्ख णवहिं माणव वज्जरमि ॥
पण्णारह तीस णवइ छ भेय वि संभरमि ॥ २ ॥

3

तिरियलोयमज्झत्थु सुहासिउ
जोयणाह णरलोउ रवण्णउ
जंबूदीउ सव्वदीवेसरु
छावीसाइ पंच अहियअरइ
दाहिणभरहु तेत्थु वित्थारें
उत्तरदाहिणाइ वेयड्ढइ
पचवीस उच्छेहु समासिउ
सहु जायण्णहु वित्थरु साहिउ
पचुत्तरसएण सहुं लक्खिय
अवरहिरण्णवतु तम्माणउ
होइ महाहिमवहु संदत्तणु
दोण्णि दहोत्तराइ धुंवु सिट्ठउ

मणुउत्तरगिरिवलयविहूसिउ ।
पणयालीसलक्खवित्थिण्णउ ।
एक्कु लक्खु जोयणपरिवित्थरु ।
जोयणसयइ विहियणरणयरइं ।
एरावउ भणु तेणायारें ।
पण्णास जि पिहुलत्तु गुणड्ढह ।
एक्कु सहसु हिमवतहु भासिउ ।
सउ तुंगत्तें सिहरि वि साहिउ ।
दोण्णि सहस हिमवइयहु अक्खिय ।
साहिउ दोहिं मि एक्कु पमाणउ ।
चउसहासअहियउ उद्धत्तणु ।
रुम्मियगिरिंदि वि तेत्तिउ दिट्ठउ ।

घत्ता—खेत्तहुं गुरु खेत्तु गिरि गरुयारउ गिरिवरहो ॥
मा भति करेज्ज वयणु ण चुक्कइ जिणवरहो ॥ ३ ॥

3 १ MBP तिरियलोउ २ MBP एक्कलक्खु जोयणह पवित्थरु ३ MBP छव्वीसाइ ४ MBP अहरायउ ५ MB तेणुपयारें, P तेण पयारें ६ MB पयासिउ, T पसाहिउ ७ MB हइमवयहु ८ MBP अवरु ९ MBP एय° १० MBP धुउ ११ MBP रुम्मिहि दुविहु वि १२ P खेत्तहु चउगुणु खेत्तु गिरि वि चउगुणु गिरिवरहो, T seems to have the same reading खेत्तेत्यादि– क्षेत्राद्गुरु गुण (?) क्षेत्र गिरेर्गिरिश्चतुर्गुण

12 णवइ छ पण्णवति , तथाहि– लवणोदकस्योभयोस्तटयोश्चतुर्विंशतिश्चतुर्विंशतिरन्तरद्वीपास्तथा कालोदस्यापि
3 4 *a* अहियअरइ अधिकतराणि. 5 *b* तेणायारें तेन आकारेण 6 *a* वेयड्ढह विजयार्धानाम् 8 *a* साहिउ साधिक , *b* साहिउ कथित 10 *a* तम्माणउ तत्प्रमाणम्, *b* दोहिंमि द्वयोरपि हैमवत-हिरण्यवतो

4

चउसयाइं तिरिंतिसहासइं पडवीस बोयणइं पयासइं।
सरियइं किं पि होंति हरिवरिसहु तं कि माणु देमयहु सहरिसहु।
महसयाइं सोलहसहसायइं ताइं कि जाणहि चोप्पयाइं।
सावियाइं चिंसिइंहु पिहुत्तणु सापरधयाइं भणिउं हुंयत्तणु।
सीविहि तं कि च कीर सिवाएर मिहि मि सिहेहवें केविम रेएह।
पटमेघड देवसिसहामाइं उहुसयाइं चउरपमीमीसइं।
पहुसयाइं सयायालीसइं मण्णु मि मणु दसारहसहसइं।
उत्तरकुरुसुप्पकुरुवहं परत्तउ पड माणु भउ भासइ जिपत्तउ।

घत्ता—एम ठेलाइं एम मीयभुत्तिसंतोसियइं ॥
इह जंबूदीवि तिण्णि जि कम्मविहूसियइं ॥४॥

5

पासु धाम हिमवंतसरोवरु पंचसयाइं तासु परिवित्थरु।
पक्कु धवलु दीहत्तणु सुपर सहसोयणइं गहीरिम सुंदर।
पवहु सत्थिउ मागमि चेडिउ सिहरिमहापुंडरिवहु देतिउ।
धवइ महाहिमवंतु वरिट्ठउ मोडउहु विच्छारउ महउ।
तिगिंहेच पि दुपेच उलंकसिवउ जासु महापोमु कि मरं चविषउ।
तिगिंछेसरु वि सिसहासीयइं होउ महापोमेपवहु विउणइं।

4. १ MBP होंति कि वि. २ MB सम्मयहु. ३ MBP जाणलाइं. ४ MBP सिवरहु. ५ MBP चोसहु. ६ BP देवेभ°.

5. १ MBP वेम्मयहु. २ MBP हिमवंते. ३ MBP रुयरिहु. ४ MBP बोलसिवउ. ५ MB तिगिंछिउ सि वरु; P तिगिंछउ सि वरु. ६ MBP महापउमयणहु.

4. 1 a दिरुसितचत्तारि सहस्राणि 2 a सरितः तयोभागमध्ये... 3 b चतुर-नदीविस्तारः. 4 a सरितः... b सप्तदश... 6 b दक्षिणोत्तरे सरसी... 8 a "दुर्दुर" देवकुरु; b उत्तरकुरु...

5 4 b सौधर्म... 5 a तिगिंछेन तिगिंछहृदेन...

णिहुणीलणयरायणिविट्ठउ तेयट्ठु जि केसरिसरु दिट्ठउ।
सोहइ रम्मरुम्मिकयठाणें पुंडरीउ तहु अद्धपमाणें।

घत्ता—सिरिहिरिदिहिकंतिकित्तिलच्छिणामालियउ ॥
देवीउ वसंति सरवरि सुहकयकीलियउ ॥ ५ ॥

6

पोममहापोमइं तिगिंछइं केसरिदोपुंडरियइं सच्छइं।
जलपूरियगिरिकंदरदरियउ सुणसु महाणइउ णीसरियउ।
गंगा सिंधु रोहि भंगाली रोहियास मयरगाइ लीली।
हरि हरिकंत सीय सीओयय णारी णरकंता वि महोयय।
कणयकूल रुप्पयकूलाली रत्ता रत्तोया वि भमाली।
एयउ भणियउ चोद्दह सरियउ वयगुणियउ सत्तरि वित्थरियउ।
अड्ढाइज्जइं पंच जि मंदर बहुवेयड्ढरययकुलसुंदर।

घत्ता—वक्खारगिरिंद कुंडलरुजगिरि सुकारगिरि ॥
खेत्तंतहि अत्थि बहुविहसिहरुद्धरियसिरि ॥ ६ ॥

7

जंबूदीवहु बाहिरि थक्कइं ठाणइं जाइं सहावामुक्कइं।
पढम सुसंकिण्णइं पुणु रुदइं ताइं होंति मेल्लयपडिछंदइं।
कयतिहेयगुणणें संजुत्तइं कम्मभोयभावेण विहत्तइं।

७ P महापुंडरीउ तहु अद्द°. ८ MK °दिहिकित्तिबुद्धिलच्छि° ९ M मुहकयकीलउ, BP मुहकयकीलियउ

6 १ MBP तिगिंछइ २ B omits this line ३ B omits this line ४ P कसयकूल. ५ MP चउदह

7 १ M साळइपडि° २ B कयतिहेण गुणणे, P कयतिभेयगुणण्णे

7 a °णयराय° नगराजः पर्वत

6 3 a भंगाली कल्लोलयुक्ता 9 खेत्ततहि क्षेत्राभ्यन्तरेषु

7 1 b ठाणइं अन्तर्द्वीपा, सहावामुक्कइं अपरित्यक्तस्वरूपाणि 2 b मल्लयपडिछंदइं शरावाकाराणि 3 a °तिहेय° उत्तममध्यमजघन्या, अधोमध्योर्ध्वविस्तारविभिन्नानि वा, b कम्मभोयभावेण कर्मभूमिभाव स्वचेष्टया फलाहारादिग्रहण तेन

जयपसमुहि मडुवालीसई कालोयइ तेत्तियई वि देसई।
पहुखोयणसपमाणविसेसई मेति कुभोयमूमिमाषासई।
पीपुरिसई यो यो रत्तई मरसहासई मणहरगत्तई।
तिगमाहरणई णिवेसवारे कोन्दई पवकई हरियई सार्द।
रम्मई सोमई णियपरिहिय जिर्यमाहोर्हि णिवागमि सिहई।

घत्ता—पत्तो ययधारि पुंधारि तहि सिमयर॥
पुण्णारिसु होति मणररिसि णिग्गास पर॥ ७॥

8

पमुत्तिकव्व कव्वपावरण वि मेवकव्व ससकव्व कुमसुव वि।
हरिमुह करिमुह मसहामअमुह आयंसमसुह मेहहर कममुह।
सकूमायव मेसविसायव ससायहतवरकरसमायय।
सयल वि रखाय पंकयमोयण पक्कोयव गिरिमहियमोयण।
मधुपवासहिं रवन्ना कव्ववरहिं बेवेहिं चिरिव्वा।
पक्क वि पैकिमोयमु जीवेप्पिणु होंति मयणपवणापि मरेप्पिणु।
हरितिमकोडियपीमकवच्चा तीससुमोयमूमिमितियव्वा।
हारडोरकंकणकुंडलधर दिव्ववत्थ सिरवसायसेहर।
महरंगहिं वीणापडगोगहिं विविहविहूसणंगाहूरंगहिं।
माणवैमोयणंपमवपंगहिं भेवरदीवकुसममालंगहिं।
दसहिं कप्पयरुहहि मणि कमीर मौह विरंतय मणुयहिं मुवैहर।
बहममरिहिसुहिमसुहयंपइ कप्पिसहासई चिर कप्पियई।

१ MBP विणई ४ MBP मिमवोर्य ५ MBB रिहर ६ MBP पुप्फारि.
8 १ P कमरसुर कर° २ MPK पमियबोसु. ३ MBP °कव्वव ४ P °बोर° ५ MBP कोणवकव्वर° ६ MBP पहि ७ MBP रमद B मास ९ P मुमर १ BBP °सुरव°

6 b मरवहापई समायकोसमिमुण्णि 7 b चवरं रमणहि
8 3 b वसारहतवरवरवमानन सायसायतवकरसमाणा 4 b पक्कोयव रमाया.
9 a महरंगहिं मवाहि

एक्कु जि तिण्णि पल्ल ओविण्णिणु होंति कम्मभोगेसु मैरण्णिणु ।

घत्ता—तीसेंधि पढम भोगभूमि पुत्र मणुय जिह ॥
नहं कालग्गमेण अंज्जुय एहाविह होंति तिह ॥ ८ ॥

9

गुरुपच्चयहि कम्ममूमाणुस अज्ज मेच्छ इच्छाणाणियरस ।
मेच्छ णाण पुण पावम धम्मेयर भोगाराहिय णिरुहि णिरक्खर ।
इड्ढिअणिड्ढिवंत अज्जाणर इड्ढिवंत जिणवर चक्केसर ।
वासुएव बलएव महाबल चारण विज्जाहर उज्जलकुल ।
होंति अणिड्ढियंत णाणाविह तिरियसंगसमापसण गुण ।
जिणु अट्ठमेण जियइ वासत्तरि अंउंउं मासु घणमेहिं ओलिय एरि ।
तहु अहियमंड चीरि पउत्तउ सत्तसयाइं बहीहि णिरुभुवउ ।
पुव्वह चउरासीलक्खायाह परमाउसु जिणहरिणीलकायइ ।
पुव्वकोडिपमाणु वि थिरयरु जीवइ कम्मभूमिजायउ णरु ।
पच्छइ मासु अयणइं संवच्छर पे वि जियंति कहंपय वासर ।
णर णिसिट्ठवियलयकउग्गाम ते मज्झे मरंति समुच्छिम ।
गब्भेसु वि गच्छंति तणु लेप्पिणु अवर वि कायय ब्रियइ जिएप्पिणु ।
उसोमेण भणुत्थइ णिरीहा पच सेयायइ सयाइं पदीहा ।
सत्तहत्थ चउहत्थ तिहत्थ वि णिणिट्ठेण पउत्त मुहत्थ वि ।
तम्हाओ वि होंति लहुययरा अइराहस्स सामण सुज्जयरा ।

घत्ता—मणुयत्तु ण होंति सत्तममहिणीरय विसम ॥
जिह ण तिह ते उ वाउकायफयभावतम ॥ ९ ॥

---

११ MBP मरेप्पिणु. १२ P धीय ति इह उस. १३ MBP अज्जुय.

9 १ P धम्हर, but it records a p गम्मर. २ M अहउ ३ M परिणई ४ MBP °म्म एवइं ५ B णियर°; P विमइ° ६ M भणुण्णवइ ७ MB मराइ सयाइं, P सयाइं मराइं ८ MB णारह

---

9 2 b णिरुहइ परस्परविवादरहिता निर्विचारा. 7 b णिरुयउ सउ निषिद्धम्. 8 a एयाइ एतानि 11 a णिसहददवियगयकउगाम निसृष्ट प्रस्वेदाविद्वयं तस्मादुत्पन्ना. 13 a णिरीहा उगिरा, b पदीहा प्रदीर्घा 15 b अइरइइस्स अतिलघवः

10

होंति के वि दूसहुप्पिहूयवस | जोइसपवणभवणंतहिं तावस |
चरयपरिव्वायय बभामर | आजीव वि सहसारामर सुर |
जंति तिरिक्ख वि ते जि जि वयहर | पर सम्मत्ताराहणतप्पर |
सावयवयपहेण सोहम्मउ | सम्मु चडइ माणुसु दुरियसमउ |
रिसिवयहिं विणु पुणु ताहु उप्परि | का वि ण भुंजइ सहमिंदहं सिरि |
सगुणिगुणमम्मभिसमाविय | सेकमेण सुरु वारिव |
णिग्गंथजोय होंति णवमरप्पर | अमणिय उवरिमगेवज्जामर |
आ सव्वत्थसिद्धि णिम्मणहं | हार सुह सम्मत्तपसत्यहं |
णारउ मरिवि ण णारउ जायइ | सुरु वि ण सुरु सुणिणाहु णिवेयइ |
अमरु ण णरयहु णारउ समाइ | णवर सविहिविहिसियमम्मइ |
होइ तिरिक्खु वि णरउपएगामिउ | किह विह माणउ दुक्खाणेमिउ |
पमियाउइं तिरियइं तिरियत्तणु | भविकल्वइ मणुयइं मणुयत्तणु |

घत्ता—तिहिं णरहिं ण होंति मणुय तिरिक्ख लोयणुपहिं ‖
पल्लिओवमआवि सम्मु कहंति सहुपुणहिं ‖ १० ‖

11

सेलाउस के जीवाहारिय | अण्णोण्णेण वियारिय मारिय |
सैरिसव जंति पढम जीवावणि | पक्खि तइय वेलुप्पह दुहखणि |
पुरइ चउत्थी जंति महोरय | पंचमियहि केसरि मयमारय |

10 १ MBPT णारउ २ MP जत तिरिक्ख उ जि जि ३ MBP समर. ४ MBP सम्मु° T दुक्खाणबिउ ५ MT णवमपि

11 १ P मिमवय लउ पढम° २ K वसुमत्य ३ P महोसर. ४ MP मियमारय B मियमारय

10 2 a चरकपरिव्राजक आजीविकमतिस्थिता: 3 b आजीव यतिविशेषाः । 8 b सुह सुखोत्पत्तिः । 10 b क्वचित् किमपि निमज्जू लब्ध्वा किल दिव्यविधानेन निमीलित सर्वत्र यात्रो मोक्षपदे सर्वे भवति सैद्धि मनुष्यत्वमर्वाच्यमाणवैश्वितियोगेन नरकगामी तिर्यक्। 11 b आ या पिच गीत 13 पमियाउ प्रमिताउप 14 तइमुणहिं लोयणुपहिं

महिलउ छट्ठहि वि दुरक्खमियहि होंति मणुय मेच्छ वि सत्तमियहि ।
आयउ मघविहि लहइ णरत्तणु को वि अरिट्ठहि देसंवयत्तणु ।
णिग्गउ अंजणाहि किर णिव्वुइ को वि कहिं मि पावइ पंचमगइ ।
सेलहि वंसहि घम्महि आइउ होइ को वि तित्थयरु महाइउ ।
णर तिरिया सलायपुरिसत्तणु णउ लहति णिम्मलु जसकित्तणु ।
सव्वत्थ वि माणुंसु उप्पज्जइ एम पउत्तइ सुत्ति पउज्जइ ।
राम उड्ढगइ सोक्खहु सामिय केसव सव्व अहोगइगामिय ।

घत्ता—पडिसत्तु कयंत णउ णारायण पीणकर ॥
णरयहु णिग्गिवि होंति ण हलहर चक्कहर ॥ ११ ॥

12

तिहिं कायहिं णरत्तु ण विरुद्धउ तिरियत्तु वि जिणवुद्धं बुद्धउ ।
वायरपुहइ तोय पत्तेयहं देवें चवेवि होंति किर एयहं ।
णउ लहति सुरणियर सतामस पुंण्णसिलोयत्तणु आजोइस ।
अक्खमि णरयवासु भीसावणु णाणादुक्खलक्खदरिसावणु ।
पढमासीयहिं सिद्धुं सहासहिं पुणु वत्तीसहिं अट्ठावीसहिं ।
चउवीसहिं वीसहिं विहिं अट्ठहिं अट्ठहिं णाणसहाउवइट्ठहिं ।
एम सहससखाहिउ घणु भणु खरपंकयलक्खु जि मढत्तणुं ।
आयामु वि असंखु संखेवें पुहइहि पुहइहि अक्खिउ देवें ।
रयणसक्करप्पह वालुयपह पकप्पह धूमप्पह तमपह ।

५ MBP छट्ठिहि ६ MP हुरक्खिमयहि ७ K देसवइत्तणु, P सव्वइवइत्तणु ८ P महावउ ९ K माणउ मु

12 १ B पत्तेय वि २ M देवत्तणु वि होइ किर एयहु, B होति समागय देवत्तहु कि वि, P देवत्तणु ण होइ किर एयह ३ MBPT पुण्णसलायत्तणु ४ B सिद्धु समासहिं ५ MB केवलणाण°, M records a p अट्ठहिं for केवल° ६ B omits this foot, P reads it after 8 b, MBP add after this मोलह चोरासी सहस जि गुण, एक्केक्कउ जि लक्खु रुंदत्तणु ८ MBP रयणप्पह सक्कर वालुप्पह

11 4 a दुरक्खमियहि दु स्वव्यासायाम् 5 a मघविहि पष्ठ्या, b अरिट्ठहि पञ्चम्या 6 a अजणाहि चतुर्थ्या 7 a सेलहि तृतीयाया, वसहि द्वितीयाया, घम्महि प्रथमस्या

12 1 a तिहिं कायहिं पृथिव्यब्वनस्पतिभि 2 a पत्तेयह प्रत्येकवनस्पतिकायानाम् 3 b पुण्णसिलोयत्तणु पुण्यश्लोकत्व शलाकापुरुपत्वं च 6 a विहिं अट्ठहिं पोडशभि 7 a घणु पिण्ड, b खरपंकय लक्खु खरभागे पोडश सहस्राणि पङ्कभागे चतुरशीतिसहस्राणि, मढत्तणु पिण्डत्वम्

भवर वि कंतिमिए तमतमपह णियपडिमियबुमारपयह ।
एयउ घयतमआमाणिम्मउ सत्त णरयधरणीउ पसिद्धउ ।

घत्ता—पुढविसु णिवाइं होंति सहायमसंकरइं ॥
पणणिमिणइयाइं भमणियआयभपित्थेरइं ॥ १२ ॥

13

तीस पुणु वि पणवीस जि लक्खइं पुणु पण्णारह दाणियदुक्खइं ।
दह पुणु तिण्णि पयु पंचूणइं लक्खु विमाइं पंच भेरियणइं ।
णोरयणइं तहिं मत्थायरइं ईसिमंदरिअरिअवविपारइं ।
महिमयाइं परिमउमिपमत्तइं देहमुहमामोयियमत्तइं ।
माहप्पीमकंटामिकपउइं दुग्गंधइं दुग्गामतिमिपउइं ।
पसु सरिणयमीमसेमायस पण्णडंति तिरिप मह माणुस ।
कंति पड् सहसचि मुहुत्ते मेडम्मिउ णिरउ हुंडत्ते ।
दवर विदंपणाण तहिं मेप्पइं अवहिसहावें णियमयपच्छइं ।
कालिंगाखुंजसंणिहपर पपडियदंतपंति दुहाहर ।
णिरइपमीमभिउडि पेंसुम्भउ कविलकेस परमारणकक्कउ ।
जिह जिह ते मुयंति अप्पाणउं तिह तिह तं तं संमिवसणउं ।
दाडामीसणु मुहुं णिम्मायर महला पाउ किं जि किर बायर ।

घत्ता—देहमुह धाणि ते पवंति माणिपसपण ॥
सरं मणेण हयंति मण्णहिं पणिहम्मीति रणे ॥ १३ ॥

१ B °क्लकरह १ MB णिरवरं

13 १ P णिवाइ २ MPT णाइणय, B णरिइयइं ३ M णरयह, BP णेरइयहि ४ B omits this foot ५ B omits this line. ६ P °णयउ° ७ P दुग्गह अवइं P के थ ९MB थण

18 णिवाइं णिवासाः

13. 2 b मणिमयबहु कालमप्ट 3 a मलापाइइ मलानाचि 4 a मदिदवाइं पाणिकारि, 5 °णयारि° णवरयणि 8 a णिदंपणाण णिवारणम्; b णियमयसबवाड णिजावधेक्षणम्, 9 कालिंगाख° कृष्णानार 10 b कवलकेस पिङ्गकेशा

14

णउ मज्झत्थु मित्तु उवयारिउ जो जो दीसइ सो सो वइरिउ ।
खेत्तसहाउ तेत्थु किं भण्णइ जं सुयकेवलिसमु वि ण वण्णइ ।
सूइणिह तणु दुत्तरु भूयलु उण्हु सीउ दुद्धरु चंडाणिलु ।
जं करेण लेंतहुं जि मरिज्जइ वइतरणीविसु विसु किं पिज्जइ ।
खंडियकरचरणाणणगत्तइं पडन्ति खग्गसमाणइं पत्तइं ।
फलइं वज्जमुट्ठि व्व कढोरइं उवरि पडंति णिद्दलियसरीरइं ।
महिहरकुहरहिं विप्फुरियाणण गसंति णिउव्वयणाइं पंचाणण ।
कुहिणिउ जलणजालपज्जलियउ जहिं वच्चइ तहिं खलयणु मिलियउ ।
ण्हाइ जहिं जि तहिं दुमियपिंडइं पूयरुहिरकिमिभरियइं कोंडइं ।
बिहिं तिहिं पंचहिं पडिवि धरियउ ण्हायउ पूयदहहु णीसरियउ ।

घत्ता—उक्कत्तिवि तासु दिज्जइ कत्ति णियासणउ ॥
आयसवलयाइं सिहितावियइं णिहसणउ ॥ १४ ॥

15

पेच्छइ जहिं जि तहिं जि जमसासणु बइसइ जहिं जि तहिं जि सूलासणु ।
भुंजइ जहिं जि तहिं जि दुग्गंधइं णीरसाइं फरुसाइं विरुद्धइं ।
आहरियइं पुग्गलइं अकामहु असुहत्तेण जंति परिणामहु ।
णिसुणइ जहिं जि तहिं जि दुव्वयणइं फंसइ जहिं जि तहिं जि खरसयणइं ।
जं चक्खइ तं तं विरसिल्लउ जं चिंतइ तं तं मणसल्लउ ।
जं अग्घायइ तं कुणिमगउ णारयगेत्ति णउ काइं मि चंगउ ।
उद्धसासु अइसासु जलोयरु अच्छिकुच्छिसिरवियण महाजरु ।

14 १ P दुत्तरु २ MBP जें ३ MBP कठोरइं ४ M वर, P उवरि ५ MBP महिकुहरवी ६ MBPT दुम्मिय° ७ MBP कुढइं ८ MBP किंत्ति ९ MBP °तावियउ
15 १ P जहिं तहिं जि २ MBP कुणियगउ ३ MB णरयखेत्ति ४ MBP उद्धसासु

14 8 *a* सूइणिह सूचीसदृशम् 8 *a* कुहिणिउ मार्गा 9 *a* दुमियपिंडइं पीडितस्य शरीराणि 11 कत्ति चर्म, णियासणउं परिधानम् 12 सिहितावियइं अग्निना तापितानि
15 7 *b* °वियण वेदना

संमयंति तुम्हिपरमगोहर सम्मद णाहिउ णारयणाहर ।

घत्ता—भणुमीसणु काम्रु सोक्खु ण सम्मइ किं पि णहिं ॥
साहीरउ तुम्हु काइ कहिजइ णय तहिं ॥ १५ ॥

16

हउं णारायणु पडिणारायणु हउं महिवइ ढोयउ सुहमायणु ।
पेम मयंतु कयंतु व कुप्पइ मामिएं तुम्हहं संतप्पइ ।
सामन्तमिवइहिं पडिचोइज्जइ कुसुममालु मा एम मणिज्जइ ।
तुहुं णवण विरएवि णरणारिउ वरमहिमहिसासारणि मारिउ ।
विममहागिरिगिरिकम्पपिंजरु सीहें एण हणउ तुहुं कुंजरु ।
परिव एण गिरिहिं तुहुं विसहरु महिसें जम महिय तुहुं हयवरु ।
जविरमगरमहरहिं विसहरु कम्मपेण हरिणु तुहुं गयवरु ।
इणु इणु एणु पम पयारिउ पं णायवम उमणु संचारिउ ।
कुम्मर णारउ णारय णारयहि जिणवरमाणु कोलोमयि सम्मवि ।

घत्ता—कंपेमकम्मपहिं मंगलमुसयहिं रिउ वणइ ॥
णियवइ जि ताई पइरयवहिं परिणेमइ ॥ १६ ॥

17

अण्णें अण्णु सुसरें सहिउ अण्णें अण्णु मुसुंढिए पेल्लिउ ।
अण्णें अण्णु णिसरिं भिण्णउ अण्णें अण्णु रहिं छिण्णउ ।
अण्णें अण्णु कुमासवि भिण्णउ अण्णें अण्णु पहु म णिद्दिणउ ।
अण्णें अण्णु सुरग्गें खंडिउ अण्णें अण्णु वियारिवि दंडिउ ।

---

१ BP अणुमीसणकामु २ MBP साहीरउ

16 १ MBP कुसुमावि २ MBPK कम्प° but GT कम्म° ३ MP परिणवइ

17 १ MBP सुसरें २ MBP मुसंडिए ३ MBP read this line as अण्णें अण्णु रहें छिण्णउ अण्णें अण्णु णिसूलें भण्णउ ४ MBP भिण्णउ

---

16 8 a सामन्तमिवइहिं दैवज्ञैः; पडिचोइज्जइ प्रेर्यते 8 b कुसुमालिव वदन्ति. 9 a पीडयन्ति रणमध्ये मेलकस्य च b सम्मवि सर्वोत्कृष्टवती यस्यां (?) तत्राम्

अण्णहु अण्णं खग्गु विहाइउ तहु फेरउ जि मासु तहु ढोइउ ।
लेइ लइ एवहिं फाइ णिरिक्खहि मृग वराय मारिवि किं भक्खहि ।
तउ अउ तंबउ सीसउ ताविउ अण्णहु मज्जु भणेप्पिणु दाविउ ।
पिवसु पिवसु अरहतु ण याणइ चगउ कउलु तुज्झु वक्खाणइ ।

घत्ता—उम्मग्गें जंति ण णिवारिय णिद्धम्ममइ ॥
परघरिणि रमंति जिह पइं रमिय णिवद्धरइ ॥ १७ ॥

18

अग्गिवण्ण तत्तिय अइरत्ती लोहविणिम्मिय ण तुह रत्ती ।
तिह एवहिं आलिंगहि माणिणि एह करिंदकुंभपीणत्थणि ।
मण्णिवि णवजोव्वण परवाली अवरुंडहि सामरि कंटाली ।
खेत्तुब्भउ माणसु तणुजायउ असुरोईरिउ अण्णोण्णायउ ।
एउ एम पावेंहिं लइयहं पंचपयारु दुक्खु णारइयह ।
तेत्थु ण णारि ण पुरिसु सुयंसउ णग्गउ णिंदु असेसु णउंसउ ।
पढमहि पुढविहि णारयगत्तइं भयधणुतिरयणिछंगुलमेत्तइं ।
बीयहि पण्णारस दोवारहं धणुरयणिउ अंगुलइं वियारहं ।

घत्ता—भवहरदेहाउ पहरतहु राणि रणरणइ ॥
गरुयारउ होइ णारयदेहु विउव्वणइ ॥ १८ ॥

19

तइयहि एक्कतीसधणुतुंगइं एक्करयणि भणु कयदुरियंगइं ।
चोत्थियाहि रयणीदुयजुत्तइं धुउ चावइं वासट्ठि पउत्तइ ।
पंचामियहि धणुसउ पणवीसउ वड्ढिउ वउ आवइ आभीसउ ।

५ MP लइ तइ एवहिं ६ MBP मिग
18 १ MBP तत्ती २ MBP माणुस. ३ MBP पुहरहि ४ MBP पण्णारह
19 १ B रयणीअजुत्तइ

17 5 *a* विहाइउ विभक्तः 8 *b* कउलु चार्वाकः
18 3 *a* परवाली परस्त्री, *b* सामलि कूटशाल्मलीतरु 4 *a* माणसु मानासिकम् 6 *b* सुयंसउ शोभनशरीरावयव 9 रणरणइ अरतिजनके

अट्ठियाहि चालीसं तिमममियउं | होन्ति समउं पण्णास वि गणियउं ।
बेहुण्णेहु पुहोहुसममियाहि | पंचसयाइं हाति सत्तमियाहि ।
एह परिमाउ पुक्किणुकाउ | अक्खिपमाणाउं तिण्णि धुरकाउ ।
तिकाउ परउ सत्त चाल्वार वह | छायराउं पंचासि सत्तारउ ।
छहर पुणु चालीस म दंडियउं | सत्तमि तीस तिमहियउं कहियउं ।

घत्ता—पंचंत कप्पंत माहिंदि पुर्वत सुहंतरिय ॥
औवंति इयास चारय विसु तिसु कप्पहिय ॥ १९ ॥

20

ते णिवसंति महंमेव भरम्मि | फुड सायरगिरसहासइं धम्महि ।
जं धम्महि वण्णिउ तं वंसहि | णाउ सहसाइं दविणसुअंसहि ।
जं वंसहि वण्णिउ तं सेलहि | णाउ सहसाइं दहवेयवेलहि ।
जं सेलहि वण्णिउ णिरिहुउ | अंजणाहि तं चिर णिसिहुउ ।
जं अंजणाहि भरउ पविणण्णिउ | तं वि अरिहुहि भासु णिवेणिउ ।
जं वि अरिहुहि चिर परमाउसु | तं मघविहि वेसिउ अविराउसु ।
जं पूरउ मघविहि दुहलविसहि | तं जासण्णु भरउ माघविसहि ।
पिहिरिवासतीसविण्णासउं | होंति अहोहो पौदावस्सउं ।
होंति अहोहो मंदउं विमरउं | होंति अहोहो मंदउं तिमिरउं ।
होंति अहोहो एणउं दुक्केणउं | होंति अहोहो तिम्मउं दुम्मउं ।

घत्ता—सुरसंतउं ताउं पहरणकोडिहिं विहडियउं ॥
तणुभय कमोति दीवकम्मा एव संमिलियउं ॥ २ ॥

---

१ MBP चालइ २ B °दुममियाहि ४ PK तेह.

20 १ MBP धम्मु and also elsewhere in this kadavaka २ P °वेलहि ३ MBP, चविउ ४ B omits this foot. ५ B omits this line ६ MBP दुक्केणउं. P वरुमा.

---

19 9 सुहंतरिय सुखान्तरिता

20 9b °दहवेय °दशवलवाम् 8b पौदावस्सइं घोरांणि आयूंषि. 12 दीवकम्मा कर्मवश

21

अक्खमि सुर दहपसुपंचविह वि सोलह दु णव पंचविह पुणरवि।
पयहिं रयणप्पहहि धरित्तिहि विवरंतरि बहुरहरसथत्तिहि।
असुरवरहं चउसट्ठि समक्खइं णायवरहं चउरासीलक्खइं।
बाहत्तरि लक्खाइं सुवण्णहं भवणहं भूरिभासमाइण्णहं।
दीवसमुद्दथणियतडिणामहं आसाणलकुमारवरधामहं।
एक्केक्कहु लक्खाइं छहत्तरि अक्खइ एम मयणमयकेसरि।
लक्ख णवइ लेसाहिय धीरहं आवासाहं समीरकुमारहं।
कोडिउ सत्त दुहत्तरि लक्खइं पिंडीकयइं होंति पच्चक्खइं।
भावणभवणइं एम पउत्तइं चउदह सोलह सहस णिरुत्तइं।
भूयरक्खसावासविसेसइं वीणावेणुपणवणिग्घोसइं।
अवराइं मि पविमलसिरिहारइं घणगयणयलजलहिसरितीरइं।
वेंतरणयरइं अंयरमणीयइं होंति गणतह सखाईयइं।

घत्ता—जोयण सय सत्त अण्णु वि णवइ मुएवि धर॥
णहि जोइसवास ते णरलोयहु उवरिचर॥ २१॥

22

अड्ढकविट्ठसरिससट्ठाणइं संपाराहियइं होंति विमाणइं।
पंचवण्णरयणावलिखइयइं बाहलत्तें पुणरवि रइयइं।
जोयणसेइ खेत्तम्मि दहोत्तरि अयलइ माणुसलोयहु बाहिरि।

21 १ MBP घरत्तिहि २ MBP असुरघरह ३ MBP °भाइण्णह ४ M बहत्तरि ५ K चोद्दह ६ K णिउत्तइ ७ MB परिमल° ८ MBP सरितीरइ ९ MBP वितर° १० MBP अइ°, K अय° but corrects it to अइ°

22 १ MBPT बाहालत्तें पर ण वि and gloss in T परेण न विरचितानि केनापि २ MBP जोयणसय°

21 3 *a* समक्खइ सर्वज्ञस्यावधिज्ञानिनां वा प्रत्यक्षाणि 4 *a* सुवण्णह सुपर्णकुमाराणाम्, *b* भूरिभासमाइण्णह प्रचुरप्रभासमाकीर्णानाम् 5 *b* आसाणलकुमार° दिक्कुमाराणामग्निकुमाराणां च 7 *a* लेसाहिय पडधिकाः 10 *b* °पणव° पटह 11 *a* पविमलसिरिहारइ प्रविमलश्रीधारके

22. 3 *a* जोयणसइ खेत्तम्मि योजनशतक्षेत्रे

मणेहिं अविपसंठापरि पियाइं असंखदीववित्थारे।
बत्तीस वि लक्खइं सोहम्मए अट्ठवीसाणि पुरम्मए।
पुणु सणकुमारि माहिंदए अट्ठलक्ख परिमाणियसुरिंदए।
जाणि विमाणइं बणियलोयगइं बंभि वंभुत्तरि चउलक्खइं।
पण्णास वि अंतवि काविट्ठए सहसइं होंति विमाणविसिट्ठए।
सुक्कमहासुक्कए चालीस वि छह सयारसहसारहिं सहस वि।
आणय पाणय आरण अच्चुय चउकप्पहिं सत्तसय संजुय।
हेट्ठिमगेवज्जए पयारह सयउ वि सउ सुरपवरभाराइं।
सत्तुत्तर मज्झिमहिं भाविभइ अवर एक्कु उवरिमहिं गणियइं।
णव वि अणुत्तरि पंचाणुत्तरि पंच विमाणइं लोयणिरंतरि।
चउरासीलक्खाइं णिवेयइं सत्ताणवइसहसाइं पयइं।
एक्कोणाइं म लेमि विभत्तइं अंगु वि तेवीसइं णउ कवइं।

घत्ता—मेरुहि तुंगु थिहि कप्पहिं कयबेय थियु॥
जोयणइं सयाइं वइमाणइं पयंतु थियु॥२२॥

23

पंचसयाइं थिहि मि उवरिल्लहिं चउ णउ वि थिहि ताइं पेरिल्लहिं।
कप्पहि थिहि चत्तारि सउणइं घरइं घरइं आणयमिणिवाइं।
पण्णासयाइं तिण्णि थिहि पवरमि सयाइं तिण्णि पुणु थिहि वि थिविरमि।
पुणु चउकप्पाइं हम्मुच्छेयउ अट्ठारहसयाइं सैरिहउ।
पुणु दुइ दुइं दियो पुणरवि सउ पुणु पण्णास समीरिउ उच्चउ।
पुणु अरणें उवरि विमाणइं पंचवीसजोयणइं पमाणइं।

१ K चर्ते. ४ MBP योसर एयपुरणि. ५ MBP तुम्भोतरि. ६ P कविठ्ठए ७ MBP ठवणइं
८ MP वणमणि° ९ MBP बेयक्खीसइं १ P चउ वि पुणु तेणिण अवर ११ K तेणेव सि णउ.
१२ K उवरिल
23 १ MBP चउ २ MBP चउगि ३ MBP दुरिश K दुरिश but corrects it to
चौरह. ४ MBP पुणु MBP थियु

6 a दुइइ इणव
23. 2 a चत्तारि चउदसं गह सतोर्थानि. 4 दम्मुच्छेदेव सहस्रोच्छ्रयः, 5 बरे देव बहोचः

सव्वट्ठहु चूलिय लंघेप्पिणु   बारहजोयणाइं जाएप्पिणु ।
तम्मि तिलोयहु सिहरि णिसण्णी   पणयालीसलक्खवित्थिण्णी ।
ससहरहिमणिहछत्तायारी   सिद्धत्थत्ति भव्वयणपियारी ।
जोयणाइं जोइय णीसल्लें   अट्ठमपुहइ अट्ठ बहल्लें ।

घत्ता—सविमाणहु मज्झि सयणि महारुहि समयमणु ॥
उववादसहावें भिण्णमुहुत्तें लेंति तणु ॥ २३ ॥

24

मउडेहिं हारेहिं   केऊरदोरेहिं ।
कंचीकलावेहिं   मंजीररावेहिं ।
भूसापसाहेहिं   अइसुरहिसासेहिं ।
वेउव्वियंगेहिं   लक्खणपसंगेहिं ।
चउरंसठाणेहिं   माणवणिवाणेहिं ।
अणमिसहिं णयणेहिं   ससिसोम्मवयणेहिं ।
विच्छिण्णतावेण   पुण्णप्पहावेण ।
कणयं व गयलेव   जायंति खणि देव ।
णक्खाइं चम्माइं   ण सिराउ रोमाइं ।
रत्ताइं पित्ताइं   ण पुरीसमुत्ताइं ।
मीसियउ मासाइं   ण वलासकेसाइं ।
मत्थिक्कसुक्काइं   णउ अत्थि वोक्काइं ।
सोहग्गगेहम्मि   देवाण देहम्मि ।

६ MBP वाहुल्लें ७ MPT सयणु

24 १ P °डोरेहिं २ P °पसाहेहिं ३ MBP अणिमिसहिं ४ MBP °सोम° ५ MBP °तावेहिं. ६ MBP °प्पहावेहिं ७ MK जायत

11 सयणि महारुहि शयने चित्रशालिकायां महार्हे, समयमणु समयमनुकृत्य प्रतिसमय समयमारभ्य भिन्न मुहूर्तं यावत्तावत्कालेन परिपूर्णं शरीरं गृह्णातीत्यर्थ

24 5 *a* चउरंसठाणेहिं समचतुरस्रसंस्थाने , *b* माणवणिवाणेहिं मानवाकारे 8 *a* कणयंव सुवर्णमिव 11 *a* मीसियउ श्मश्रु दाढिका, *b* वलास श्लेष्मा 12 *b* वोक्काइं कालिजा (?)

उवहरकमाहाइं सइं होंति वियडाइं ।
हरिसेण णच्चंति सहस त्ति णिग्गंति ।
सुग्गामसंपुण्णु मणिकिरणपायडु ।
जय देव हरिविंद जय णाह जिण चंद ।
एवं पघोसंति परिपमइं तूसंति ।
सम्मइ मि वसुमाणु रविकु जिणणाणु ।

घत्ता—समुदइं पणवीस वर सहाइं सवंतरइं ॥
देवहु दीहरु सत्त जि मणु बोहसमुद्दइं ॥ २४ ॥

25

णिहि रयणाइ सत्त णिहि सत्त मणु पुणु णिहि पंच समुप्पण्ण सुरयणु ।
पुणु चउदह मि चत्तारि जि णीयइ पुणरवि माणुसु जि णिहि णीयइ ।
णिम्मेय य रयणिउ सवियप्पहिं दसपंचमसोलहसमयकप्पहिं ।
ते पुण मणु परमभेयजाहि मग्गारियणहि बोल्लि जंगमुहाहि ।
घोर दिणु रयणि उवरिल्लाहि अमरलोयविमाणउ सुणिलाहि ।
णव पंचाणुत्तरइं मि सारउ एक्कु वि रयणि णयरु सरीरउ ।
अणिमामहिमाइमिमापत्तिहि ईसत्तवसित्तगरेसरिसिहिं ।
भुवणमरणमउ कामारउ बीसक्कोडकोडि सयरंगमर ।
पउ सुरय वामिज वह पुंडय भाणी पुरिस वि णर ते पंडय ।
भारसाणकप्पसंतसवभइं आयमुउ ता देविहिं णमइं ।
भावणाइ भाणणमुवाए भासाव कप्पपाडियाए ।

M छिन्न.

25 १ MBP पुणु चउ, T पुणु णिहि २ MBP णवि पुणवि ३ MBP णयणु ४ MBP एव ५ MB °मइतरहिं ६ MBP णयणमार ७ MBP णयण M तेरह ९ MBP कामारसि°

14 a उवहर° समुद्रात्. 19 b रविकु ति रवा णु प्रवीन किमाचीन.

25 1 b पुणु निधि पंच नवमशोलनबोध्यनामित्रिबोधियो समुत्पन्नाः पत्र ततः 2 a च उदह मि सुकमहागुमाभरणनयेषु सन्तु, b माणुसु मनुष्यक्षेत्र 7 b बह्र महाम्बर 8 b कामार° तस्कामार 9 a पउ वर वासीयसन्ताणः; हुंड बिकवासनाः; b पंडय नपुंसका 10 a °पसवन्तइ° हातवर्ध्या.

घत्ता—फासें पडिचारु सणकुमारमाहिंदरुह ॥
रूवेण करंति उवरिम चउकप्पय विबुह ॥ २५ ॥

26

पुणु चउकप्पसमुब्भव सुरवर होंति सद्दपडिचार सुहंकर ।
वरि चउकप्पहिं मणपडियारा एत्तो उवरिम णिप्पडियारा ।
सप्पडियार णिएवि अणिंदहु अतुलसोक्खु णिहिलहु अहमिंदहु ।
अहमिंदहु पासाउ जिणिंदहु गयरायहं तिरायवइवंदहु ।
कहमि आउ तियसहं सुहसगमु असुर जियंति एक्कु सायरसमु ।
णायहुं पल्लइं तिण्णि वियाणसु वणदेवहुं पल्लु जि परमाउसु ।
अड्ढाइज्ज पल्ल सोवण्णहं दीवहं दोण्णि पुण्णपरिपुण्णहं ।
सेसहं होइ दिवड्ढु णिरुत्तउ चंदु जियइ लक्खें संजुत्तउ ।
एक्कु पल्लु सहुं सहसें वरिसहुं जीवइ दिणयरु वड्ढियहरिसहु ।
एक्कु जि सुक्कु सएण समेयउ तारारिक्खहु ऊणउ णेयउ ।
पंच सत्त पुणु णव एयारह तेरह पण्णारह सत्तारह ।
एक्कुण एक्कवीस तेवीस वि पंचवीस भणु सत्तावीस वि ।
चउंत्तीसेक्कताल अडदाल वि पंचावण्ण जि पल्लइ जगरवि ।
सोहम्माइहिं भणइ सतिलयहं आउ अच्चुयंतहं सुरविलयहं ।

घत्ता—बे सत्त दसेव चोद्दहठारह वि ॥
वीस जि बावीस उड्डु एक्कु वड्ढिमु केह वि ॥ २६ ॥

26 १ MBPK अट्ठलु २ MB णिराय° ३ MBP पल्ल परिपुण्णहं ४ MBP चउतीसे° ५ MBP अडताल ६ P सच्चुयतह ७ MBP चउदह छद्दह अट्ठारह ८ MBP उड्डु एक्कु ९ K कहमि

26 2 *a* वरि उपरि 4 *b* तिरायवइवंदहु त्रिभुवनपतिवन्द्यानाम्, त्रिराज्यपतिवन्द्यानाम् 8 *a* सेसहं विद्युदग्निवातस्तनितोदधिदिक्कुमाराणाम् 10 *a* सएण समेयउ शतवर्षाधिकपल्यमेकं शुक्रो जीवति, *b* ऊणउं किंचिदूनम् 13 *b* जगरवि जगद्भास्कर 14 *a* सतिलयहं सतिलकानां देवीनाम्, *b* सुरविलयहं सुरवनितानाम्

27

तम तम तेत्तीससमुद्दइं सव्वट्ठमि माउ कयमद्दइं ।
कप्पइं कप्पातीयइं पवर भवणमि णामविसेसु वि जेहउ ।
सक्कीसाणइं जणहि पयावर णाम पडममेहिमेतु विहावर ।
पुणु पासमा देव जीयहि तचु पेच्छंति वि जाणंति वि णिम्मलु ।
मधु चउकप्प तिपस तहतावहि चउसंमूय चउत्थी महणि ।
माणपयाणय सुर पंचमियहि आरणअच्चुयामर छट्ठमियहि ।
णव गेवज मुणंति महतउ तम तम सत्तमणरयंतउ ।
छवर णोहिर अणुदिस सुंदर तिजगणाडि पेच्छंति अणुत्तर ।
उप्परि णियविमाणधूयामणि जा ता देव मुणंति महामुणि ।
पंचवीस जोयणइं भवेसइं संखातुतइं जोयणवासइं ।
मंदर वि हवेइ माणि कयसमउं घणियउ जोयणकोडिउ असुरउं ।
सिर असुरइं तिह रिक्खइं ताराइं जोइस सुरइं गुरुसंमाराइं ।
सुणइ पुणु मेरु अभियउ मणुय संखेज्जिउ जोइसियक्कहर ।

घत्ता—णारय वि मुणंति जोयणेक्कें एयणप्पहहि ॥
णाइय महउ होइ हणि सेसेहि महिहि ॥ २१ ॥

28

कम्माहार मसेसइं जीवइं णोकम्माहार वि भवमाणइं ।
लेप्पाहार वि दीसइ रुक्खइं कवलाहार मणोहरतिरिक्खइं ।

---

27 १ MBP तेत्तीस° २ MBPT सव्वट्ठमि. ३ MBP °मणियउ. ४ K जणियहि ५ P तेत्तिपसणी. ६ MBP भवर ७ P भार MB तियउ ९ MBP पइं १० MP तयाइं जोइसियक्कहर; B संखइंत जोइसियक्कहर ११ MBP जीयजेणु १२ M णोसेहरि
28. १ B लेप्पाहार.

---

27 1 b सव्वट्ठसिद्धि सर्वार्थसिद्धौ; कयमद्दइं इन्द्रस्थानानि कृतमर्यादानि वा 8 a छवरर अरिष्टे; b °महिमेतु पृथिव्या अन्तः; विहावर विभावयन्ति जानन्ति 8 अणुदिस नव अनुदिशान् b अणुत्तर पञ्च अनुत्तरोक्ताः 10 a पवेसइं अन्तरगमनम् 11 कयसमरउं यावत्पृथ्वीतलम् 13 b जोइसियक्कहर ज्योतिष्कचक्रम्
28 1 b णोकम्माहार नोकर्माहाराः; भवमाणइं भवान्तरानुगामिनः; वरिरुक्खानाम्

ओज्जाहारु पक्खिसंघायहं मणभोयणु चउदेवणिकायहं ।
अहमिंद वि करंति तेत्तीसहिं वोलीणहिं वरवरिससहासहिं ।
बत्तीसेक्कत्तीस पुणु तीसहिं एक्कुणतीसहिं अट्ठावीसहिं ।
एक्केक्कउ जि एम पडिहम्मइ सोलहमे बावीसहिं जिम्मइ ।
आउणिबध महोवहिसंखहिं णीससंति तेत्तियहिं जि पक्खहिं ।
पल्लजीवि पुणु भिण्णमुहुत्तें णीससंति अह ताहं पुहत्तें ।
ऊससंति केई वि पक्खेण जि असुर असंति अहिय सहसेणं जि ।
सरसइं सुरहियाइं अइमिट्ठइं सुहुमइं सुद्धइं णिद्धइं इट्ठइं ।
आहरंति दवियाइं सइत्तें परिणमंति सहस त्ति तणुत्तें ।

घत्ता—ससारिय जीव चउविह चउगइभिण्ण जिह ॥
इंदियभेएण पंचपयार पउत्त तिह ॥ २८ ॥

29

काए छव्विह चवलथिरेण वि तिविह तिविहजोएं वेएण वि ।
जलणिहिविहे वि कसाए जाया अट्ठभेय णाणें विण्णाया ।
संजमदंसणेण तिचउव्विह लेसापरिणामेण वि छव्विह ।
भव्वत्तेण विविह सम्मत्तें सण्णि असण्णी दो सण्णित्तें ।
आहारें आहारिय जे जे चउसु वि गइसु परिट्ठिय ते ते ।

२ MBPK ओजाहारु ३ MBP तेतीसहिं ४ MBP °सेक्कतीस ५ MBP पविहम्मइ ६ MBPK सोलहमइ ७ MBP आउ णिवद्धु ८ MBP पुणु ९ MBP केइ जि पक्खेण वि १० MBP सहसेण त्रि

29 १ MBP छव्विह थिरेण तसेण वि, T चवलछिरेण चपलस्वभावाना स्थिरपृथिव्यादीनाम् २ MBP °विह व ३ MB कसाय ४ MBP असण्णि दोण्णि

3 *b* मणभोयणु मानसाहार 4 *b* वोलीणहिं व्यतिकान्ते 6 *a* पडिहम्मइ प्रतिहन्यते 8 *b* अह ताहं पुहत्तें अथवा तेषां भिन्नमुहूर्तानां पृथक्त्वेन आगमभाषया त्रयाणामुपरि नवानामध निश्वसान्ति 9 *b* असंति अश्नन्ति भोजनं कुर्वन्ति 11 *a* दवियाइं पुद्गलद्रव्याणि, सइत्तें स्वचित्तेन, *b* तणुत्तें तनुरूपेण

29 1 *a* काए छव्विह पड्जीवनिकायेन, चवलथिरेण चपलस्वभावेन पृथिव्यादिस्थिरस्वभावेन च 2 *a* जलणिहिविह चतुर्विधा, *b* अट्ठभेय णाणें पञ्चज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि तैरष्टभेद 3 *a* संजमेत्यादि—त्रय संयमासंयमसंयमासंयमा, तथा चत्वारः क्षायिकौपशमिकासंयमा अथवा सामायिकच्छेदोपस्थापनसूक्ष्मसंपरायथाख्याता परिहारविशुद्धेरभावात्, दंसणेत्यादि त्रीणि दर्शनानि क्षायिकौपशमिकक्षायोपशमिकानि, तथा चत्वारि चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानि 4 *a* भव्वत्तेण विविह भव्याभव्यौ द्विविधौ.

केवलिमिच्छुहय विमाइयराय भयइ भडोइ सिद्ध परमप्पय ।
ते च मेंति आहार विमारिय सेस जीव आयहि आहारिय ।
ममाणभर्या योगेसंयी मिच्छुपदि गुणठाणाई मि पयर्ड ।
मिच्छुपदिष्ठि पढिग्ड भीयर्ड सासणु बीयर्ड मीसु वि तीयर्ड ।
अविरयसम्माइट्ठि चउत्थर्ड पंचमु विरयाविरउ पसत्थर ।
छट्ठउ पुणु पमत्तसंजमधर सत्तमु अप्पमत्तु गुणसुंदर ।
अट्ठमु होइ अउव्व करणउं अणियट्टिकरु णवमु मणरमणउं ।
दहमउं सुहुमसंपराउ जाणिज्जइ एयारहमुवसंतु भणिज्जइ ।
बारहमउ परिखीणकसायउ तेरहमउ सजोगिजिणु जायउ ।
उप्पियविविहसरीरमरंतउ चउदहमउं अजोइ पउ भण्णइ ।

घत्ता—पारस चत्तारि चत्तारि वि पुणु सुरवर ॥
तिरियंच वि पंच चोद्दहसु वि वसंति णर ॥ २९ ॥

30

कम्मविहम्ममाण ससरीय सासयकरणुजाय [illegible] ।
पंचभावसहावपहाण होंति जीव भव्वियअभव्विय ।
ताइं वेइ जा होइ समासम सा तइलोयगाहमासणाम ।
जेम वेइ सिहिसिहपरिणामइ तेम कम्मपोग्गलु वि णिणामइ ।
जीवें कारयउ जोइ विपत्तइ तिण्णकसायरसेहिं पमत्तइ ।

१ MBPK [illegible] २ MBPK [illegible] ३ MBP [illegible] ४ MBP [illegible]
५ MBP [illegible] ६ MBP [illegible] मि
30 १ MBP कम्मु पोग्गलु २ MB [illegible], P [illegible]

6 a केवलीत्यादि—केवलिनो यथा समुद्घाते कुर्वन्ति [illegible] [illegible] एव 10 b विरयाविरउ विरताविरतो देशव्रतः 12 a अट्ठमउं [illegible]; b अणियट्टि [illegible] 13 a सुहुमसंपराउ सूक्ष्मसांपरायम्; b [illegible] 15 a [illegible] [illegible]

30 1 a [illegible]; b [illegible]; [illegible] 3 [illegible] b [illegible] 5 a [illegible]

जिह सिहिभावहु यधइ इंधणु तिह कम्मेण जि कम्महु यधणु ।
असुहें असुहु सुहें सुहु संधइ सिद्धभडारउ किं पि ण यंधइ ।
अभव जीव जिणणाहें इच्छिय एकु ण ते वि अणत णियच्छिय ।
मइसुओहिमणपज्जव केवल णाणावरणविमुक्क सुणिम्मल ।
णिद्दाणिद्दा पयलापयला थीणगिद्धि णिद्दा पुणु पयला ।
चक्खुअचक्खुदंसणावरणउ अवही केवलदंसणवरणउ ।
तेहिं विणासिउ णवसंखायउ वेयणीयदुगु सायासायउं ।
दंसणमोहणीउ सम्मत्तु वि मिच्छत्तु वि सम्मामिच्छत्तु वि ।
दुविहु चरित्तमोहु विक्खायउ णोकसाउ णामेण कसायउ ।
तं कसायजायउ सोलहविहु इयरु भणेसमि पच्छइ णवविहु ।
पढमकसायचउक्कु सुभीसणु सत्तमणरयगामि दिहिदूसणु ।

घत्ता—अइकोहु समाणु माया लोहु वि दुत्थयरु ॥
उवसमहुं ण जाइ जइ वि पवोहइ तित्थयरु ॥ ३० ॥

31

अवरु अपच्चक्खाणु गुरुक्कउ पच्चक्खाणु चउक्कु विमुक्कउ ।
संजलणु वि जलंतु उल्हाविउ थीपुंसंढराउ उड्डाविउ ।
भयरइयरइदुगुंछउ जित्तउ हासु वि सहुं सोएण णिहित्तउ ।
सुर णर णरय तिरिय चउआउ वि वायालीसविहेयउं णाउं वि ।
गइणामउ वि जाइणामु वि भणु तणुणामउं पुणु तणुहि णिवंधणु ।
तणुसंघाउ तणुहि सठाणउं तणुअगोअंगु वि णामाणउ ।

३ MBP सिद्धु भडारउ, K सिद्धभडारउ but corrects it to सिद्धु ४ MBP °सुइओहि° ५ MBP सुणिम्मल. ६ MBP °दसणहरणउ ७ K दुक्खयरु but corrects it to दुत्थयरु
31 १ MBP चउक्क २ P उण्हाविउ ३ MBPT उड्डाविउ ४ MBP भइरइअरइ° ५ MBP सह. ६ P विहित्तउ ७ P णिरय ८ MBP जाइणाउ. ९ MBP तणुअगोवगु वि णिम्माणउ

7 a स धइ उपार्जयति 17 दु त्थ य रु दु स्तर
31 1 b विमुक्कउ विमुक्तं सिद्धे 2b °रा उ उ ड्डा वि उ °भाववेद क्षपित 3 b णि हि त्त उ विनिक्षिप्त 4 b वा या ली से त्या दि—पिण्डत्वेन द्वाचत्वारिंशन्नामप्रकृतय . 5 a ग इ णा म उ नरकतिर्यङ्मनुष्यादिगतिनाम 6b णा मा ण उ निर्माणम्

तणुसंपेसणु वम्मंगधिङउं रसणामउं भवइ वि फासिङउं ।
मीणुलिंग मगुस्सणु अकिवह अवयाह वि परघाउ वि भाविवइ ।
ऊसासु वि आयवुज्जोयह अप्पु विहायगइ वि तसवायह ।
थावर सुहुमसुहुम पज्जत्तह अप्पु वि सण्णिउं अपज्जत्तउ ।
पत्तेयंगणामउं साहारणु थिरु अथिरु वि सुहणामउं सकारणु ।
असुहु सुभगु दुभगु सुसरिल्लउ दुस्सरु आदेज्जउ आगि भल्लउ ।
णाउं अणादेज्जउ जसकित्ति वि तित्थयरत्तु णिमिणु अजसकित्ति वि ।

घत्ता—चउणवइपमेय णामउं अहुद्दविहु ॥
इंदियइं पमेवि आउयासु सणु पंचविहु ॥ ३१ ॥

32

इणिवि पंच णामइं पंचविहइं एक्कु सिमेयउ दो दो दुविहइं ।
दो एक्कु पुणु दो चउ मयुविहइं उच्चारइयइं चारइं एक्कविहइं ।
समउणमसउं दोण्णि आणि गोत्तइं ताइं मि तेहिं धुरि परिवत्तइं ।
दाणमोयउवभोयवियारउ वीरियकाहु देजपधारउ ।
अंतराउ पंचविहु भुणेप्पिणु अट्टयाळीसउं सउ णिहुणेप्पिणु ।

---

१ K [illegible] ११ P [illegible] १२ MBP [illegible]. १३ MBP [illegible]. १४ MB [illegible]

32 १ M दो पुण दुविहइं २ MBP "[illegible]"; K [illegible] but corrects it to [illegible]. ३ MBP [illegible].

---

9 [illegible] 12 [illegible] 13 [illegible] 14 [illegible] 15 [illegible]

32. 1 [illegible] 2 [illegible]

पयडिहिं माणवंगु मेल्लेप्पिणु　　सुद्धसहाउ सइंभु लहेप्पिणु ।
जे गय जीव परमणिव्वाणहु　　दुंहविरहिहु सासयठाणहु ।
चरमसरीरमाण किंचूणा　　ववगयरोयसोय अविलीणा ।
णिम्मल णिरुवम णिरहंकारा　　जीवदव्वघण णाणसरीरा ।
उड्ढंगमणसहावें गपिणु　　उड्ढलोउ सयलु वि लंघेप्पिणु ।
अट्ठमपुहईवट्टि णिविट्ठा　　अमव जीव जिणदेवें दिट्ठा ।

घत्ता—ते साइ अणाइ दुविह अणंत जि विविहदुहे ॥
ते पुणु ण मरंति णउ पडंति ससारमुहे ॥ ३२ ॥

33

णउ बाल णउ वुड्ढ　　णउ मुक्ख सुवियड्ढ ।
णीसाव णित्ताव　　णिग्गाव णिप्पाव ।
णाणंग णिम्मेह　　णिण्णेह णिद्देह ।
णिक्कोह णिल्लोह　　णिम्माण णिम्मोह ।
णिव्वेय णिज्जोय　　णीराय णिब्मोय ।
णिद्धम्म णिक्कम्म　　णिच्छम्म णिज्जम्म ।
णीराम णिक्काम　　णिव्वाह णिद्धाम ।
णिव्वेस णिल्लेस　　णिग्गंध णिप्फास ।
णीरस महाभाव　　णीसद्द णीरूव ।
अव्वत्त चिम्मेत्त　　णिच्चित णिव्वित्त ।
ण छुहाइ घेप्पंति　　ण तिसाइ छिप्पंति ।
ण रुयाइ झिज्जंति　　ण रईइ सिज्जंति ।

४ B सिद्धसहाउ　५ MBP सयभु　६ MB गय परम जीव　७ MBP दुक्खविमुक्कहु　८ K उड्ढं गमणु　९ K अट्ठमि
33　१ P णीसास　२ MBP णीताव　३ MBP रुवाइ

6 *a* माणवगु नरशरीरम्, *b* सइंभु सहज　8 *b* अविलीणा कदाप्यपरित्यक्तसिद्धस्वरूपा　11 *a* °वट्टि °पृष्ठे　12 साइअणाइ अनादिसादिकालद्वयापेक्षया पर्यायार्थिकद्रव्यार्थिकनयापेक्षया वा

33　3*a* णिम्मेह निर्मेधस पञ्चेन्द्रियज्ञानरहिता केवलज्ञानिन　8*a* णिव्वेस निर्द्वेषा. 12 *b* सिज्जंति पीड्यन्ते.

णाहार भुंजंति	भोसहु ण भुंजंति ।
ण मयंग किण्णंति	ण खलेण भुण्णंति ।
णिद्दं ण गच्छंति	णयणपत्ता वि पेच्छंति ।
ममणा वि जाणंति	सपरापरं हरंति ।
सिद्धाण जं सोक्खु	तं कहइ कमगरत्तु ।
किं माणवो को वि	सुरु खयरु देवो वि ।

घत्ता—पंचिंदियसुहु परमप्पइ दुर्जेउ विमले ॥
जं सिद्धहं सोक्खु तं णं वि कासु वि भुवणयले ॥ ११ ॥

34

एहा सुणिवि जीव मणं भाविणय	कहमि मजीव वि जेम विगि
धम्मु अधम्मु दो वि संगुणिय	आयासें कालें सहुं सुणिय ।
गइठाणोगाहवत्तणलक्खण	के वि भणंति सुणाण वियक्ख
संखु अणाइ समय वेईहर	तीहं कम्मु अणमि अणंतर ।
तासु अणु भण्णइ परखोपर	धम्माधम्माइं सव्वलिलोपर ।
णिरि मि सोपमाइलोय वियप्पर	जाणासु वि मणंतु सुसिरप्पर
तं णि भलोय लोएपज्जत्तर	पोग्गलु होइ पंचगुणवंतर ।
सरे गंधे रसें फासें	दुल्लइ णिब्भरण्णाविण्णासें ।
खंधु देसु भलेयपएसु वि	परमाणुर अविहार असेसु वि

घत्ता—तं सुहुमु वि थूलु थूलसुहुमु सुणु थूलु मणु ॥
सुहुमु वि थूलु थूलपयार मई सुणइ मणु ॥ १२ ॥

४ B भुंजंति P भुंजंति and gloss भीजन्ति ५ MBP जलाण कि ६ MBP सुर ७ MB
८ MBP वर

34, १ MBP णरणिहार २ P थूंउर ३ MB तीवड; P कसाड ४ MBP णग्गलुप्प
५ MBPK णासु मि बप्पर T लोअमग्गाणु ६ MBP कहड. ७ M सुहुमथूलु णं सुहुमु मि थूलु;
थ्पार सुहु सुणइ मणु; P सुहुमु सुहु णं सुहुम थूलु

19 परम पद परमश्रो मोक्षस्थाने

34 4 गइ गमन; अ णाइ अनादि; समय वर्तना वर्तमान काल समय 5 ...
प्रमाणहसमस्त. 6 ... लोकाकाशमित्यर्थः 8 सुस्थिर सुस्थिरतरम् 9 ...
अविभाज्य

35

गंधु वण्णु रसु फासु ससद्दउ सुहुमु थूलु वज्जरइ समद्दउ ।
थूलसुहुमु जोण्हाछायाइउ थूलु सलिलु वीरेण णिवेइउ ।
थूलथूलु पुणु धरणीमंडलु सग्गविमाणपडलु मणिणिम्मलु ।
सुहुमइं कम्माइयइं सणामइं मणभासावग्गणपरिणामइं ।
वण्णाइयहिं रसेहिं अणेयहिं परिणमंति संजोयविओयहिं ।
पूरणगलणसहावाणिउत्तइं पोग्गलाइं विविहाइं पउत्तइं ।
भासिज्जंतउ परमजिणिंदें णिसुणिवि धम्मु सुधम्माणंदें ।
वसहसेणु सुहभावें लइयउ पुरिमतालपुरवइ पावइयउ ।
सोमप्पहु सेयंसणरेसरु थिउ पव्वज्ज लेवि हयमयजरु ।
इय रिसहहु परिमुक्कविसाया णिव चउरासी गणहर जाया ।
बंम्ही सुंदरि अज्जिय संघहु कतियाउ जायाउ महग्घहु ।
दंसणमोहणीयपडिरुद्धउ एक्कु मरीइ णेय पडिवुद्धउ ।
तावस कंदाहारु मुएप्पिणु थिय कच्छाइय रिसिल्वउ लेप्पिणु ।
मोक्खमग्गगामिहि परमेसरु हुयउ अणंतवीरु अग्गेसरु ।

घत्ता—सावउ सुयकित्ति सावइ देवि पियंवइय ॥
भरहेण वि पुज्ज पुप्फयंत पइं जिणि रइय ॥ ३५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महावत्थुणिद्देसो णाम
एयारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ११ ॥
॥ संधि ॥ ११ ॥

---

35 १ M सुसद्दउ २ MBP add after this सुहुमसुहुमु परिमाणुविसेसइ, लग्गहिं णिवडवि अप्पपएसइ ३ P पव्वइयउ ४ MBP सेयसु णरेसरु ५ MBP बमी ६ K °परिरुद्धउ ७ MBP पइ, K पइ but corrects it to एह and gloss एतास्मिन् जिने

---

35 1 *b* समद्दउ मार्दवयुक्त उपशमार्द्रो वा 4 *a* सणामइ ज्ञानावरणादिनामयुक्तानि 12 *b* एक्कु मरीइ एको भरतपुत्रो मरीचिनामा प्रतिबोधं न प्राप्त, 16 एह जिणि एतस्मिन् जिने

XII

मरिवरथिहारपि परंसारपि तिजगवप्पिअधियपायर्ड ॥
थिहसिपसाहारपि मेहथिकारपि मरवॅं रिम्मे पयायव ॥ १ ॥

1

घुइ घुइ सरयागमि मप्पमाणु	मडू पाईं पोयहरिप्पीसभाणु ।
पं दीसइ भोमेंत्थिउ मपप	सरयम्भहरियपंकडु कपम ।
पं जगहरि भीरुसोर घडु	तापमारिपर्यहुकामिडु ।
मर इसे वि रिसा सर गपरयाइं	पं जारियाइं सम्मकपाइं ।
ससिकुंभगाभिपओपहारजसम	पम्मगालिपाइं पं थिम्मसेव ।
थिद्धरोइ कमसु सरप ससेउ	तु तम जि कमाउ पिउपंकु ।
सो मज्ञ वि दीसइ मइविरसु	थियरिसपरायवि को प कुडु ।
तेम जि तोसें पवि तिम्मु ववइ	सरपहसुरि किं विसिप्पलु लवइ ।
पंकस्वर सुंकर वसिमपासु	माडमपप्पु बंपवइ कासु ।
कुवलयतिरिगिगिय भाईं सउ	कपर्यपुञीवसुप्पआपमाइ ।
तरु कुसुमामोपें मइमइंति	रपकविमई ससिवाईं वमि बाइंति ।
सवि रणुवन्नवि पींवारसिह	मडुमत्ता पं गायंति सोइ ।

घत्ता—सारयमयरहरु ससरपसपजणु वीर मयमसिणु प हारउ ॥
सो हिंडं कपसोतिहि जिमजसपंतिहि पछु जि कप्पइं दीसइ ॥ १ ॥

---

1. १ MPT सेगुणपवि but gloss [illegible] २ MBP सिणु ३ P सोमत्थिउ ४ P वारिय° ५ MBP थिरइद. ६ MBP सिमि पहु ७ MBP कुसर T [illegible]. ९ MBP °पयासम° १ P पसोर°; T पसोर° ११ MP बहण १२ MBP ई

---

1 1 मरिवरथिहारपि [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 4 [illegible]. 6 [illegible] 10 [illegible] [illegible]. 12 [illegible] 14 [illegible] [illegible]. 16 [illegible].

2

पणवेप्पिणु लेप्पिणु सिद्ध सेस अवठंभिवि रुंभिवि सयल देस ।
आवेप्पिणु पइसेप्पिणु अउज्झ परचक्कमुक्कपहरणदुगेज्झ ।
मणु ढोयवि जोयवि तणयवयणु परियंचिवि अंचिवि चक्करयणु ।
दालिद्दु रउद्दु पवासियाहं काणीणहं दीणहं देसियाहं ।
णिहणिवि वरेण चामीयरेण णाणाविलासतोसायरेण ।
मंतिवि अहगु पंचगु मतु को सत्तु मित्तु को तव्विरत्तु ।
परियाणिवि माणिवि वुड्ढ चारु ओहारिवि धारिवि रज्जभारु ।
अइवग्गिउ मग्गिउ को ण कप्पु भणु केण ण केण वि मुक्कु दप्पु ।
भुयदंडचंडविक्कमभएण छक्खंडमंडलावणिकएण ।
गंभीरतूरलक्खइं हयाइं दुप्पेक्खइं रक्खइं हयमयाइं ।
कयसमरहं अमरहं थरहरंति गत्तइं सोत्तइं बहिरत्तु जंति ।
असुरिंदहं णाइंदह पियाइं पायालइ विउलइं कंपियाइं ।
तुट्टइं फुट्टइं गिरिमहियलाइं झलझलियइं चलियइं सरिजलाइं ।
थिरभावहं देवहं जाय संक रवपेल्लिय डोल्लिय रवि ससंक ।

घत्ता—तहु तिजगविमद्दहु तूरणिणद्दहु मिलिउ दुग्गणिव्वाहणु ॥
परमंडलसाहणु गहियपसाहणु खणि चउरंगु वि साहणु ॥ २ ॥

3

णिग्गयं णिवबलं धरियहलसव्वलं
कणयकुंतुज्जलं चंदणसुपरिमलं ।

2 १ MBP भयगयाइ २ MB झलिझलियइ ३ MBP चलियइ ४ MBP रह° ५ MP जेल्लिय ६ M परमंडलु
3, १ MB °कंतुज्जल

2 1 *b* अवठंभिवि हठादाक्रम्य, रुंभिवि प्रतिग्राहयित्वा 4 *d* देसियाह परदेशजनानाम् 6 *a* अहगु अभक्तोऽविकल, पचगु मतु सहाया साधनोपायो देशकालबलाबलौ। विपत्तेश्च प्रतीकार पञ्चाङ्गो मन्त्र इष्यते 7 *b* ओहारिवि अवधार्य 8 *a* अइवग्गिउ अतिगर्वित 15 दुग्गणिव्वाहणु दुस्तरे प्रदेशे निस्तारणसमर्थम्
3 1 *b* °सव्वल तिलपीडनायुध घाणी

XII

भरिवरणिहायवि गहिरायवि तिजगमणिट्ठपियायवं ॥
विहसियवसाहायणि मेहणिहायणि मयाँ दिण्णे पयाणउ ॥ १ ॥

1

पुरु पुरु सरयागमि अप्पमाणु
मगु णाइ पोमहरिणीणमाणु ।
जे दीसइ माणेसिउ मयणु
सरयम्मयहियपणइहइ कपणु ।
जे जगहरि णीणुहोइ वसु
तावमाणिपणुंसुवणिसु ।
भए हसे वि दिसा सई मयरयाइं
जं णारिहाइं सुभणकयाइं ।
ससिकुंभगाहिपडाणहाउसण
पक्कणाहिणाइं जे णिम्मलेण ।
णिइरेह कमलु सरए समेंकु
तहु तण जि समाउ पियपंकु ।
सो कज्ज वि दीसइ मउणिरत्तु
णियपडिमपराहणि को ण कुडु ।
तेण जि रोसें णवि तिस्सु वणर
सरवरछुहि किं णिम्मिलु लवइ ।
पंकयणइ सुंदर भसियवाणु
सरउमाहणु पंचवइ कासु ।
कुसमयणिहिर्मीलइ भाइं सउ
कमर्वपुजीवसुंप्पउवमाउ ।
वर कुसुमामार्यं मयमर्हति
रयकणिवहिं ससिकरे वणि सहंति ।
मसि रजुयंति पींणाहरिव
महुमणा जे गाणंति सोरु ।

घत्ता—साणयमणवंछणु सरंविमयजणु जेँ मयमहिणु ण होंतउ ॥
सो हँरे कमर्ससिहि णिवजसर्मसिहि पहु वि पण्णई देंतउ ॥ १ ॥

1. १ MPT पेंपुआरवि but gloss भरिवरणिप्रतने २ MBP सिणु ३ P भीमसिय ४ P भरिय° ५ MBP णिहरु ६ MBP णिणि पंकु ७ MBP कुणार T णिवेहसम लोगक्करी सरव ९ MBP °रुणार° १ P पलोर°; T पलोर° ११ MP मरुण १२ MBP ६.

1. 1 करिवरनिहायमि प्रत्यसमृद्धमे वनुसारमि पुष्पिसवसिवमिति-वनककरनिवर्ज- प्रदवे °कपिलभिववानच सरसीनिवयो मानव 4 a सदन जवेन माना 5 a मेधुलोम कोल- गनीकम 10 b सरसदगुरि मुर्च समयम्नान ; सरद लड़े गिरसवनि प 12 a दल राजा सनो। 14 a पापाद सिक समस्तयपदेन जनमर्तो सनो ; b कोंत अनया 16 b पर्व सना

2

पणवेप्पिणु लेप्पिणु सिद्ध सेस अवठंभिवि रुंभिवि सयल देस ।
आवेप्पिणु पइसेप्पिणु अउज्झ परचक्कमुक्कपहरणदुगेज्झ ।
मणु ढोयवि जोयवि तणयवयणु परियंचिवि अंचिवि चक्करयणु ।
दालिद्दु रउद्दु पवासियाहं कार्णीणहं दीणहं देसियाहं ।
णिहणिवि वरेण चामीयरेण णाणाविलासंतोसायरेण ।
मंतिवि अहगु पचगु मंतु को सत्तु मित्तु को तव्विरत्तु ।
परियाणिवि माणिवि बुद्धु चारु ओहारिवि धारिवि रज्जभारु ।
अइवग्गिउ मग्गिउ को ण कप्पु भणु केण ण केण वि मुक्कु दप्पु ।
भुयदंडचंडविक्कममप्पण छक्खंडमंडलावणिकप्पण ।
गंभीरतूरलक्खइं हयाइं दुप्पेक्खइं रक्खइं हयमयाइं ।
कयसमरहं अमरहं थरहरंति गत्तइं सोत्तइं बहिरत्तु जंति ।
असुरिंदहं णाइंदहं पियाइं पायालइं विउलइं कंपियाइं ।
तुट्टइं फुट्टइं गिरिमहियलाइं झलझलियइं वेलियइं सरिजलाइं ।
थिरभावहं देवहं जाय संक रवपेल्लिय डोल्लिय रवि ससंक ।

घत्ता—तहु तिजगविमद्दहु तूरणिणद्दहु मिलिउ दुग्गणिव्वाहणु ॥
परमंडलसाहणु गहियपसाहणु आणि चउरंगु वि साहणु ॥ २ ॥

3

णिग्गय णिचवल धरियहलसव्वल
कणयकुंतुज्जलं चंदणसुपरिमल ।

2 १ MBP भयगयाइं २ MB झलिझलियइं ३ MBP चलियइं ४ MBP रहं° ५ MP जेल्लिय ६ M परमंडलु
3, १ MB °कंतुज्जल

2 1 *b* अवठंभिवि हठादाक्रम्य, रुंभिवि प्रतिग्राहयित्वा 4 *d* देसियाहं परदेशजनानाम् 6 *a* अहगु अभग्नोऽविकल, पचगु मंतु सहाया साधनोपायो देशकालबलाबलौ। विपत्तेश्च प्रतीकार पञ्चाङ्गो मन्त्र इष्यते 7 *b* ओहारिवि अवधार्य 8 *a* अइवग्गिउ अतिगर्वित 15 दुग्गणिव्वाहणु दुस्तरे प्रदेशे निस्तारणसमर्थम्
3 1 *b* °सव्वल तिलपीडनायुध घाणी

सरसघुसिणारुणं पयंतरपिसारुणं ।
गुग्गुरियकाहलं घुहरूकोमाहलं ।
मुरबडुक्कारवं फुंसियमसिधारवं ।
मउयोमीरयं माहिमपामीरयं ।
माहियसंगाहयं ममिपमियनाहयं ।
बराणपघरासण परिहिपपिहुसणं ।
कूरपावयं पोहपविमाणयं ।
कंठमम्पामरं पाडिमपकचामरं ।
घुडिपमाणामियं आणियपमगुप्परुं ।
कामिणीसुसमियं किंकिणीसुहसियं ।
परियणाहियरं छत्तजापणई ।
संहिमम्पियगुणं दिण्णमणिकडियं ।
पवसुपपयवरं गिरिमकरगपयमइं ।
माहिमसपगारवं पवियमंडारवं ।
परिममिपमगुयरं मुसकसारं ।
मक्खियफसिसेहरं कामीकाहरं ।
पडियसुररणरवं पडुमसयवरपवं ।
पडमपभीरयं मुसियममिहारयं ।

यथा—कमरिउगुरिपों वगासंमरवें पाडिवएन पर्यारु ॥
परपोमायंपाहिं मसहिं सुरंमहिं सेण्णु ण कत्थइ मारिउ ॥ १ ॥

4

मणी कागणी कामिणी कंडरण्णं पिसीसकमाविकमामापभिण्णं ।
सरेण वरिवंमतुरं पहारं अजेयं सुमेयं करारं किवारं ।

१ MBP कमलवणि° २ MP कुरिय° ४ M मन° ५ MBP °कवण ६ MBP °हरसमर्द. ७ MBP °कमयरें परुतेण T कमयरपहें, but records ० कमकोडि पडे कंपि कोमोकणिडी सयरेण ८ P पफसर ९ MBP गरहणरणभंपरी १ P कासर

§ ३ कमपदन्तविदाहणे अवकमापूर्णसम्बन्धन् ६ °री भीरयं दूपीरा; ३ कामिमदी भीरयं वसूपमानम्.
4. १ ३ मिपीमापि—मणकामगुणकामणयनिवन्ताय पायताणो मादेव मिय मर्दुगितमम्. ३ ४ कतिदमदीनं कमर्भिकोरणमान्

पियं छत्तचम्मं सुरम्मं महंतं । महावीरखंधारवित्थारवंतं ।
हरीकीरपिंछोह[1]कतिलकाओ । करी णिज्जियाणिंददेविंदणाओ ।
पुरोहो णिरोहो व्व भीमावयाणं । णिवासो पयासो पयासंपयाणं ।
समे वेसमे वेसमे सामकारी । चमूपुंगवो दुग्गमग्गावहारी ।
गिही[2] को वि देवो महिड्ढी[3]समिद्धो । महंतेण पुण्णेण रायस्स सिद्धो ।
सुरागारकिम्मीरकम्मावयारो । परो को वि अण्णो णिकेऊहकारो ।

घत्ता—इय साहियभुवणहिं चोद्दह[4]रयणहिं सहुं णरणाहहु इच्छइ ॥
हयगयरहवाहणु चलिउ साहणु सयलु रहंगहु पच्छइ ॥ ४ ॥

5

मणिरहवरे चडिउ ण इंदु णहि[1] वडिउ ।
दढकढिणभुयजुयलु अइवियडवच्छयलु ।
किं भणमि पुरिसहरि वलतुलियकुलसिहरि ।
सद्दूलवरखंधु वहिरंधजणवधु ।
अलिणीलधम्मेल्लु[2] तेलोक्कपडिमल्लु ।
दुव्वंकुरालेण दहिचंदणालेण ।
उक्खित्तसेसेण मंगलणिघोसेण ।
संचलिउ भरहेसु ण मयणु णरवेसु ।
धउ धइण पडिखलिउ णरु हरिहिं [3]दरमलिउ ।
भेसिउ अहद्देण करहस्स सद्देण ।
करि घुणइ णियकंठु महि णिवडिओ मेंठु[4] ।
भरओ रउद्देण घित्तो वलद्देण ।
मग्गाइं भायणइं चुण्णाइं गोहणइं ।

4 १ B °पिच्छोह° २ M गिरी ३ MBP महद्धी. ४ MP वट्टदह°
5 १ MB णहवडिउ २ MBP °धम्मिल्लु ३ P दलमलिउ ४ MBP मेंट्ठु

3 *b* देविंदणाओ ऐरावणो हस्ती 5 *a* भीमावयाण भीमानामापदाम्, *b* पयासो प्रकटम्, पयासपयाणं प्रजाना संपदाम् 6 *a* वेसम विषमम् 7 *a* गिही गृही भाण्डागारिक 8 *a* °किम्मीर° विचित्रम्; *b* णिकेऊहकारो सूत्रधार स्थपति .
5 10 *a* भेसिउ भय नीत , अहद्देण अभद्रेण.

सरसमुसियारयं कयंतरपियारयं ।
गुरुमुरियकारयं सुहयकोसारयं ।
सुमहुकारयं फुंसियमसियारयं ।
महलोपीरयं माहियपामीरयं ।
गाहियसंजारयं कवियजियचारयं ।
बकायचरायसणं परिहियविहूसणं ।
मूर्छपायणं चोइयविमाणयं ।
अंतरफयामरं चक्कियवकवामरं ।
सुहियपायामियं जाणियगमगुम्मयं ।
कामिणीसुहमियं किंकिणीमुहसियं ।
परियवाहियवहं छत्तयायमवहं ।
वंदियजिणपगुणं दिव्वमावियकयं ।
पवणुच्चयपयवहं मिरिगसवययवयहं ।
पहियपमयगारयं पयिवयंसारयं ।
परिमसिणमुहयरं सुहरवासरं ।
महियपरामिसोहरं कासमीयारयं ।
पवियमुंदयरवयं बहुमयपवरयं ।
महरफूमीरयं सुहियममियारयं ।

घत्ता—कमरियकुसुमियपों जगजसमपों वासियपय पयरिउ ॥
वरसोमायंपहिं मवहिं सुरपहिं सेण्णु व कस्यर मरिउ ॥ ३ ॥

4

मणी कागणी कामिणी दंडरयणं मिसीसमवमामिज्जमामारयमिन्नं ।
रयंयं वरियंपतुंगं पयारं मजीयं सुसेणं कराकं किवाणं ।

१ MBP कयराणि° २ MP मुरिय° ४ M बब° ५ MBP °कयवं ६ MBP °मुसरयणं ७ MBP °वरमरयं कवोण T कयमवमरयं, but records ८ कवलीहि पाठे क्वचित् कवोलेसणभिति मवयरेण P पवहयर ९ MBP वरतमरयमपहिं १ P मादयर

8 b ववरहरमिताहव मसकामपूर्वसावत् 6 °सो यो र न पूर्णेः 8 a दि न यो यो र न मधुमुयानकम्.
4. 1 b मिणी त्यादि—चक्रकामपूर्वकामपापतिम्नसा मातमायां मरेण मिह कर्तुमिद्युत् 2 a वहिद न ह यं चक्रतीयरत्नमाचम्

पियं छत्तचम्मं सुरम्मं महंतं   महावीरखंधारवित्थारवंतं ।
हरीकीरपिंछो[1]हकंतिल्लकाओ   करी णिज्जियाणिंददेविंदणाओ ।
पुरोहो णिरोहो व्व भीमावयाणं   णिवासो पयासो पयासंपयाणं ।
समे वेसम वेसमे सामकारी   चमूपुंगवो दुग्गमग्गावहारी ।
गिही[2] को वि देवो म[3]हिड्ढीसमिद्धो   महंतेण पुण्णेण रायस्स सिद्धो ।
सुरागारकिम्मीरकम्मावयारो   परो को वि अण्णो णिकेऊहकारो ।

घत्ता—इय साहियभुवणहिं चो[4]हहरयणहिं सहुं णरणाहहु इच्छइ ॥
हयगयरहवाहणु चल्लिउ साहणु सयलु रहंगहु पच्छइ ॥ ४ ॥

5

मणिरहवरे चडिउ   ण इदु [1]णहि वडिउ ।
दढकढिणभुयजुयलु   अइवियडवच्छयलु ।
किं भणमि पुरिसहरि   वलतुलियकुलसिहरि ।
सद्दूलवरखंधु   वहिरंधजणवंधु ।
अलिणीलध[2]म्मेल्लु   तेलोक्कपडिमल्लु ।
दूवंकुरालेण   दहिचंदणालेण ।
उक्खित्तसेसेण   मंगलणिघोसेण ।
संचलिउ भरहेसु   णं मयणु णरवेसु ।
धउ घइण पडिखलिउ   णरु हरिहिं द[3]रमालिउ ।
भेसिउ अहद्देण   करहस्स सद्देण ।
करि घुणइ णियकंठु   महि णिवडिओ मेंठु[4] ।
भरओ रउद्देण   घित्तो घलद्देण ।
भग्गाइं भायणइं   चुण्णाइं गोहणइं ।

4 १ B °पिच्छोह° २ M गिरी ३ MBP महद्धी. ४ MP चउदह°
5 १ MB णहवडिउ २ MBP °धम्मिल्लु ३ P दलमालिउ ४ MBP मेंठु.

3 *b* देविंदणाओ ऐरावणो हस्ती 5 *a* भीमावयाण भीमानामापदाम्, *b* पयासो प्रकटम्, पयासपयाणं प्रजानां संपदाम् 6 *a* वेसम विषमम् 7 *a* गिही गृही भाण्डागारिक 8 *a* °किम्मीर° विचित्रम्, *b* णिकेऊहकारो सूत्रधार स्थपति
5 10 *a* भेसिउ भय नीत , अहद्देण अभद्रेण.

जयमसिणवेयाइ वेसेरि पिहियाइ ।
परिगलियचेलाइ हा भणिय बालाइ ।
घरवडणपडियाइ महुसीहुयडियाइ ।
रसवसिय धूर्यति कइ कइ व विघटंति ।
मयवंतपाहेण तेल्लोक्कखोहेण ।
थिरथोरवाहेण सेणाविणाहेण ।
पप्फुल्लवयणेण हयवइरपवणेण ।
गिरिसो दुहिकंति मम्मा पव[illegible]ति ।
दूरं समंतेण बाहाधुमंतेण ।
संताणपुण्णाइं पच्छंति सेण्णाइं ।
जयणाहिरामाइं गामाइं सीमाइं ।
विसमाइं मंठाइं विहीवभंडाइं ।
हककारमिबासाइं अंजंतु वेसाइं ।
पविसहु रोहंमि भरिहो विरोहंतु ।
विप्फुरियवियसियसहु सुरवरमरि पहु ।

घत्ता—पंडर पंगणवर मदिवाठि पोरुण विमलसस्सुहसंतरो ॥
अवमेरप पापं पुडु पुडु भारं साठी मं हिमवंतहो ॥ ५ ॥

6

जं सिहरियरापेहणविसेषि जं रिसहणाहजसरपणपचारि ।
विम्पक चावर विवणाइणाय मपरीपेप जं वम्पोहयराय ।
जं विसमविडेप्पमडतसंवि धरणीपाडि सीसी वंदकंति ।
जं विरंथोपकसणोपकुहिपि जं किलिहि केरी कदुप वहिपि ।

---

५ MBPK वेस° ६ MBPT भरतुय° MBP add after this [illegible]. ८ MP add after this पसेय वरिएण ९ MBP [illegible] १ MB पेड़. ११ P °भासी
6 १ MBP [illegible] २ P विवयर भर छविं ३ G विर° but gloss विरय.

---

16 a वट° नर्मन. 20 a देवार सिरोवत्पनि 27 b कदियो नि रोवाद्व पन्नार् निरोचनर. 30 साठी परिपत्तपद्
6 3 a °भिवनमरत वनि छहमबाहुलस्सरवी 4 a °मोचरकनहीय° अनिमिर्ष स्पष्ट

गिरिरायसिहरपीवरथणाहि णं हारावलि वसुहंगणाहि ।
विर्यलियकदरदरिवडिय सच्छ धरणिहरकरिंदहु णाइ कच्छ ।
सिय कुडिल तहु जि णं भूइरेह णं चक्कवट्टिजयविजयलीह ।
आयासहु पडिय धरित्तियाइ सुपडिच्छिय णं पियसहि पियाइ ।
पक्खलइ वलइ परिभमइ ठाइ णियठाणभंससंचिताइ णाइं ।
णिग्गय णयवम्मीयहु सवेय विसपउर णाइं णाइणि सुसेय ।
हंसावलिवलयविइण्णसोह उत्तँरदिसिणारिहि णाइं बाह ।

घत्ता—बहुरयणणिहाणहु सुट्ठु सुलोणहु धवलविमलमंथरगइ ॥
सायरभत्तारहु सइ गंभीरहु मिलिय गंपि गंगाणइ ॥ ६ ॥

7

जहिं मच्छपुच्छपरियत्तियाइं सिप्पिउडुच्छलियइं मोत्तियाइं ।
घेप्पंति तिसाहयगीयएहिं जलबिंदु भणिवि बप्पीहएहिं ।
जलरिट्ठहिं पिज्जइ जलु सुसेउ तमपुंजहिं णावइ चंदतेउ ।
सोहइ रत्तुप्पलदलरुईइ पुणु सो ज्जि णाइं संझारुईइ ।
जहिं फीरउलइ कीलारयाइ दहिकुट्टिमि णावइ मरगयाइं ।
जहिं कंकहारणीहारछाय कल्लोल हंसपक्ख वि ण णाय ।
जहिं पाणिइ पंडुरु अच्छराइ उप्परियणु दिट्ठु ण जंतु जाइ ।
परिहाणु सहत्थें धरिउ ताइ जंपिउ हो ण्हाणें एत्थु माइ ।
मायगहुं दाणें वहइ णेहु जा तहु घिवति तवसि वि सुदेहु ।
जडसंगें विउसु वि जडु जि होइ कमलावासेसु सुयति भोइ ।

४ MBP विवरिय° ५ MBP उत्तरदिस° ६ MBP सलोणहु
7 १ MBPK °पुछ° २ B °उडच्छलियइ ३ MBP बव्वीहएहिं ४ MBP जहु ण दिट्ठु
५ MBPK सदेहु

6 *b* कच्छ कक्षा 7 *a* भूइरेह भस्मरेखा 10 *a* णयवम्मीयहु पर्वतवल्मीकात्, *b* विसपउर नदीपक्षे जलप्रचुरा, नागिणीपक्षे विषप्रचुरा 11 *b* बाह बाहु
7 1 *a* परियत्तियाइं अभिहतानि 2 *a* तिसाहयगीयएहिं तृषया शुष्ककण्ठै, *b* बप्पीहएहिं चातकै 8 *a* जलरिट्ठहिं जलकाकै 9 *a* मायगहुं हस्तिनां चाण्डालानां च, णेहु चिक्कणत्वं रागश्च 10 *b* भोइ सर्पा

सिररयण पभासइ पयइ ते वि पयवंत वसुंधिय सविस जावि।
हिमवयवयवयतुयपयचिय सिवयवयणाएमविणम्मि गविय।
वयपडियवहलसीयलजुसार वं धीरमहोवहिपीरपार।

घत्ता—पईंमि मविणारिहि भुवणयमेहिति ससिमविउयपधुजव॥
सायरगिरिणयरहिं धरिवि सयरहिं णाई णिवद्धो मेहव॥७॥

८

सरि पेच्छियवि मयिपक्षेसरेण पुच्छिय सारहि मंदोमरेण।
सुसवपणी विम्भमणाहिगहिर वणकुसुमविमीसियममरविहुर।
मयवडुमिउंमत्वणाउ सेवालचीरसयेलवसाउ।
वडविवणिगसिमयमहुसिवपिण वणमत्तमयंगावलिवलितरंग।
सिवपोरमणामयिडीरचीर पवपुंजयपताउसाउहार।
विरियसमपोहरपुलिवउमय पद जाई णिवालिवि मंदगमय।
कुणपेह मयसु खिपवोमलंगि रत जणर णिहगाई वं णिहीमि।
तं णिसुणिवि पहिर्य सुरु पम वणमेघीपहुणामिणिकामयव।
घरचीसमवरमविविरणराउ सुरदियपयरवयमरेवराइ।
हाविइपंकसोधणविविस सुयणजकपाविपविहुपवेस।
पवाईपवपपवियपरमपवय विसुणसु वरिद् णाइयरायव।
सुमरायरिदमेयवधमत्य वं मंतिति केरी मद महत्य।
पंकीर पसल्ल सुकस्वपाल वं सुकइहि केरी कम्मोवीस।
पावरसिरि व्व हरिसियपयंग किं ण णियाणहि णामम गंग।
हिमवंतपोममरविम्मायेयि वं मोहपहुपहि परिर्पीतमंगि।

---

१ MBPT णुमिण २ MBP पणि
८ १ M परमेसरेण २ MBP पणुदुर° ३ MBP वणवीमवामिणी° ४ MB सपव° ५ MBP वलयालव ६ MBPK वरिहाव° and gloss in PK परिवाण

---

11 a सिररयण स्थाने b वसुंधिय वसूर्णा मिवा अथवा वसूर्णा मिवा
8 2 a "मिमलव" वचार्णा 5 a "हिवेर" वेण 9 b ववेणवाइ वरेयणाविरि प्रत्यवक- वालिवर्ण 12 a सुवरायरिद° यपरा: पबीना रायवाथ वीतराव हे वरवला लेपसिल मवम 14 a °र्हेव वसवाल 15 b वरिवाम पंखि वववायर

घत्ता—गिरिणइधयणियलहिं जलणिहिविन्भेगहिं वहइ छाय मसिरिहित्तिहि ॥
भुवणत्तयगामिणि जणमणरामिणि णाइ मरिम्म तुह कित्तिहि ॥ ८ ॥

९

घणे जम्मिणी जम्मकोलाविधारे तओ नाभि गंगाणईन्नारतीरे ।
पधावतमायगदाणलुगध घुल्लतुलपालिद्धय चारुचिंधं ।
विसंध जेसंफ फयारिंद्गंफ चलं गयम्भेणाहिराणाइ थघ ।
पफीरंति दूरं ममा भूमि पत्ता तहिज्जति दुम्माइं चंदोवहासा ।
गवक्खतणिग्गतधूमोहवासा गरज्जति मत्तारिमा भूरिवासा ।
विमुच्चति पल्लाणभाग हयाण गयाणं पि ढक्कारवेणागयाणं ।
भरम्मुक्कदेहा जहिच्छं घलंहा गया रासहा गम्महीदिण्णगद्दा ।
तरुणं तणाण पधावंति दासा पलिप्पंति चुल्लीणिहित्ता हुयासा ।
पहज्जति णाणाविहा भक्खभेया णरा के वि भुंजेवि णित्तगसेया ।
सरिच्छेण दीहेण पधेण भग्गा पसुत्ता मुहं गेहिणीकंठलग्गा ।
वलिज्जति दिज्जंति गासा करीण तण भोयण सोंणलोणं हरीण ।
पपेच्छंति अण्णे धयं साहिणाणं पयंपंति अण्णे परं पयाणं ।
णं ससंति अण्णे णरिंदस्स काम भमामो कह णिच्च गामाउ गामं ।
इमो वेसगे वेसरी लेउ चार परेणेव धुत्तो परो वारवार ।
कंउद्धुद्धगीवा वणंते पयट्टा लयापल्लवं पाणियं लेंति उट्टा ।
हले होउ जत्ताइ पत्ता णिविग्घ पिए पेच्छ दूराइ आगच्छ सिग्घ ।
इणं जत्थ केणावि गेणेण वुत्त मनेसाणिवास सचिंधोवउत्तं ।
सहट्टं सटंट सदेव समिद्धं इम पच गएण ठाण णिरुद्धं ।

७ MBPT °पियलहिं

9 १ MBP झसंकं २ MB णिग्गति ३ MB वलिहा ४ MBP पधघति ५ M गाणपाण ६ K ण पेच्छति ७ ययंसाहिणाणं ८ M णममति ९ MBP णरिंद मकाम १० MB कओउद्दगीवा, P कओवुद्ध° ११ PK टंटा १२ MBP इम १३ BP विघद्द

16 वहइ छाय शोभां धरति

9 2 b °पालिद्धय वघावेष्टितपताका 4 b चंदोवहासा मण्डपिका 5 a °वासा गन्धा 9 b णित्तगसेया निर्गताङ्गस्वेदा 11 a वलिज्जंति वलिदानेन तोष्यन्ते 13 a कामं पद्गाण्डपृथ्वीप्रभावना भिलापम् 14 a चार जीवन तृण घा 17 b सवेसाणिवास वेश्यागृहसहितम्

घत्ता—णियपयइ विरयइ मणिपज्जलायइ सरं समाणु धवरुज्जउ ।
जं सुरवरसुंदर वेउ पुरंदर पहु सम्मइवसि णिसिज्जउ ॥ ९ ॥

10

सामंत महासामंत वेवि मंडलिय महामंडलिय देवि ।
सज्जाहिवसिहूरेसलिया पिय पायपसायविरप्पपुरय ।
हुय रयणि पुणु वि सण्णामिउ माणु समपमाणिपजासजलजाणमाणु ।
पयमपमलेय माहिअमाणु हरिकाकाणीरें जुप्पमाणु ।
पर्छभयारपारक्कमाणु पहरणविप्फुरणहिं दीसमाणु ।
सहुरिमेरीरमणमाणु मणहरकामिणियणमिजमाणु ।
णम्मारेणुमयलिजमाणु वेयपुडिपाउ कयलिजमाणु ।
मरणयपयाउ णीसिलेमाणु सोमेंदु सविजमु साहिमाणु ।
मेसहंतिए मडयपमय महंतु जं बहुवाबणियइ णिरो वंतु ।
मणिहरणजारणरमाणियम जरणियरकरासेवाणियम ।
णायाणाहयपरहसंकलेण णतिपड भुरिउ गंगातडेण ।
णडीसयमूवारेपेरिपंगु णकड पष्फर मगु णारपंगु ।
मासहिवि णिजमपमिरिणरकरिंदि केसरिकिसोर जं गिरिणिरिंदि ।
संपोणमलोणीरजुपलु करविहिपिणावगुणरायमुयलु ।
संचलिउ णिजपयंतुहिणियाउ सुरणारिसाउ रायाहिराउ ।

घत्ता—उट्ठिणिवि णीपउ णवरयणायउ पुणु पणममों माउउ ॥
महिहरवेरिणामउं मोहणपोसउं पहु गीसमउ पयाउउ ॥ १० ॥

१४ MBP हुपय हुयइ वेय पुरउ १५ MP णिसण्णिउ

10 १ MBP ण° २ B omits णीसिलमाणु ३ B omits this foot. ४ B omits this line ५ MP णिरु वंतु. ६ B omits णणुइ ७ MBP णयलेण MP केसरिकिसोर ९ MB करि णिरिंद° १ MBPT °रायाहर

10 8 b चमरमिणिजमाण विजयिरित्तमाणा 7 a णमोर° करूर 9 b बहुवावणियइ बहुमालिया निरु बद्ध णिय मातम् 10 "णवर" वेयरोअवार 13 a मिवमिरि हस्तिनेश 16 b सुरणारिसाउ पूर्णिदी 16 वणरवणायउ वणायुह

11

जहिं मंथिज्जइ अइघयहु दहिउं　　थंकत्तणु कामु वि होइ ण हिउं ।
जहिं कड्ढिउ मघउ गोवियाइ　　दीहें गुणेण ण पिउ पियाइ ।
कप्पेवि धरिउ मंदीरएण　　परिभमइ णाइं घणथणकएण ।
हो हो हलि गोविणि मइं जि रमइ　　मयणु ण तुह कामग्गि समइ ।
मा कड्ढहि केयाकड्ढणीइ　　इय गज्जिउ जहिं णं मंथणीइ ।
अइमहणें सिढिलीहूउं देहु　　किं दहिउ ण अण्णु वि मुयइ णेहु ।
तक्काइं पमेव जि जहिं पियंति　　गामीणय तक्कहिं किं करंति ।
घयदुद्धइं जहिं पंथिय पियंति　　गयपहसम मूढ णिद्द सुयंति ।
जहिं गोविइ पेच्छिवि णरपहाणु　　पच्छुल्लउ मेल्लिवि घयहु साणु ।
मूरंविउ तणु अवियिचित्तियाइ　　घिउ छड्डिउं तग्गयणेत्तियाइ ।
महिवइसुहपंकयरमणतण्ह　　जहिं णडिय णीसासुण्ह सुण्ह ।
जहिं कुणरिंदह रिद्धीउ जेम　　मंहिसिउ गलेहिं ढुंज्झंति तेम ।
कालियवसहइ सुणंति　　ण करइ घरकम्मु वि सिरु धुणंति ।
वम्मइ सकेयहु गोवि का वि　　मज्झण्हपासि वडुडिभया वि ।
जहिं देंति तालु कीलापयासु　　मउलिय गोव गायंति रासु ।
जहिं सिंगसमुक्खयतरुवरेहिं　　ढेक्कारिउ धीरधुरंधरेहिं ।

घत्ता—त गोट्ठु मुयंतें गहणि चरंतें हरिणासिंगखयकंदहिं ॥
मयमासाहारइ कुहरागारइ दिट्ठइ सवरपुलिंदहिं ॥ ११ ॥

11 १ MBP अइघट्ट २ MBP थट्टत्तणु ३ B मीदीरएण ४ MBP गोमिणि ५ MBP सिढिलीहूय ६ B गामीणय ७ MBP पंथिय जहिं ८ B मुहाणिद्द ९ MBP मग्गिवि १० MBP सूरविउ ११ MBP अयचित्तियाइ १२ M छंडिउ १३ MBP महिसीउ गलहिं १४ MBPK दुब्भंति १५ M घरकम्मु वि सिर, BP घरकम्मु सिर १६ MBP कीलानयासु १७ M गोय १८ MBP ढेक्कारिउ चार. १९ M समरपुरिंदहिं

11 1 *a* अइघट्ठ आतिघनम् 2 *a* मघउ रविका, *b* ण पिउ पियाइ प्रिय प्रियया इव 3 *a* मदीरएण रविकानिरोधकलोहवलयादिना, प्रियपक्षे, मन्दरतेन 5 *a* केयाकड्ढणीइ परस्याकर्षिण्या 7 *b* तक्कहिं तत्त्वविचारणे तर्के 9 *b* साणु श्वा 10 *a* मूरविउ उत्कालितं तापितम् 11 *b* णीसासुण्ह निश्वासैरुष्णा, सुण्ह वधू 16 *b* धुरधरेहिं वृषभैः 18 मयमासाहारहिं मृगमांसाहारैः

12

दुवई—पोमपयपंकयपायपेल्लणमियकमवरमंथियंपया ।
करियणिकंदपंकयाउदकमागयमयमयपसहणा ॥ १ ॥
सुमरहयपुप्फयरमरमणुममरमिहिपिघउमियसेला ।
पयमपयउरयंकवेणिकियगुंजारावभूगया ॥ २ ॥
हंसपक्कविमलमयहिरावणराजमतवमयपया ।
णिवगुणपयहरणपिवरिसमाणियमाणहरिणया ॥ ३ ॥
पहुरयवेणिरंतरपमरिएसोपियपारवारया ।
तसेलयवयरलणीजुण्णमविरहयकणमयूरया ॥ ४ ॥
सिसिपसरंगपिमममसिवरमिहणरए णममपंगया ।
पसरविमलआयसुहाहमयमरीसदरसमाया ॥ ५ ॥
पीणसुमीणपुसुमरणसुरहियमहिहरकंदरेमया ।
समएपयणकमलणसमेपरलपुव्वरियठिंमया ॥ ६ ॥
हरणसगरममसिपयणश्रमहरउपिमारिएउणयपा ।
भाया पहुममौयि मउभिपकर पिनिहकिरयपयपया ॥ ७ ॥
गुरुमपयममिपिहिसमिर्पहरमदीममजमामामया ।
ह मयसोरमण कयमेण ववंतयवंतपाठया ॥ ८ ॥
गईततरंतश्रकिरयममुसिपामावमिसेममदुपरं ।
पंचसमंममंतमजोमगमसियपसमपरणुपरं ॥ ९ ॥
कप्पावसुगुपारमपरोहरपुपुप्फामियपीरप ।
पत्तो परियपाय सह महिवर सुरवरसरिउपारयं ॥ १० ॥

घत्ता—मायासिउ साहणु पवि सुपसाहणु भिसि पयविपि पसयह ॥
जं किंपु विभसाससि पिठं कम्मासपि बयवासेण भरेसह ॥ ११ ॥

12 १ M has before this वह पढरिया २ MBP णु ३ MBP °पहरमिय° ४ MBP णिर° ५ P °विविहय° ६ MBP °भरियविमिसरमेय° ७ M णिवाय ; T णिवाय but gloss on पुष° MBP णिर

12. 2 °ममम° णिवा; °कुमरहमा कुवमा 8 तकदहवत° तक्कातमय् 11 °करटंसवा °कम्पराका 14 °विदाव° णिवा 20 °दुवारवं पाताल कमासुतजेलवम्

13

अहियासिउ राएं चक्करयणु		जिह तिह अवर वि दंडरयणु ।
सुयवण्णु अहगु तुरंगरयणु		करिरयणु लोहियवलयंसरयणु ।
उग्गमिउ णहंगणि दुमणिरयणु		आरूढउ मंदिरि पुरिसरयणु ।
कइवयणरेहिं सहुं सुरवंसु		ण माणसपंथइ गयहंसु ।
पहरणपरिपुण्णु महामहंतु		परिभमियचक्कचिक्कारवंतु ।
चलपवणधयवडलल्लंतु		णाणामणिकिरणहिं पज्जलंतु ।
ओलंबियकिंकिणिरणझणंतु		तियसिंदहं माणि घिवंतु जंतु ।
सलिलणिहिमग्गिं धोरेयएहिं		मुहमुहचुल्लियतरंगएहिं ।
तरणिरहसमलट्ठीहएहिं		रहु कड्ढिउ मारुयजवएहिं ।
छक्खंडपुहइवल्लहाहिवेण		अवलोइउ जलणिहि पत्थिवेण ।

घत्ता—हरिसेण व गज्जइ भरहु ण भज्जइ पहु ण कासु किर गणइ ॥
मयरयकल्लोलहिं चलभुयडालहिं रयणायरु ण णच्चइ ॥ १३ ॥

14

उच्छलवइं व मोत्तियतंदुलाइं		तोयइं ण अग्घंजलिजलाइं ।
भत्तिए व रायहु लहइ वेल		दावइ व विउलसलिलुव्वेल ।
ण ढोयइ जलमयगल संरत्त		जलणरकिंकरयरकरपुरंत ।
माणिक्कइं पवरपवालयाइं		ण दरिसइ तीरलयालयाइं ।
णं घोहइ वडवाणलपईवु		ण थुढिवि रक्खइ जंबुदीवु ।
सगराउरेउ जिह सगु धरइ		पहुआणइ किंकरु किं ण करइ ।
उम्मुक्कविविहजलयरसणेहिं		ण जयइ पायालाणणेहिं ।

13 १ P °वरियंक° २ MP °परिपुण्ण° ३ MBP विंभउ ४ MBP °सलिलगुणिहिमपएहिं.
14 १ P ढोयइ २ MBP रसन, K गरत but corrects it to रगंत. ३ BP दरसइ ४ MBP °पईउ ५ MBP जयुदीउ ६ MBP सगराकरिउ

13 1 *a* अहियासिउ पूजितम् 2 *a* सुयवण्णु शुकवर्णम्, अहगु अभग्नम, *b* लोहवलयरयणु लोहवलयबद्धदन्तम 3 *a* दुमणि° आदित्य 9 *a* तरणि सारथि ; समलट्ठी° कषा
14 7 *a* °सणेहिं शब्दैः, *b* पायालाणणेहिं वडवामुखैः

12

दुवई—चंदमयवक्कपोरचंकमसिपककेसरसंभियंगणा ।
करिमविक्कवंदकोरकमागयममणकुसहरा ॥ १ ॥
सुमवहपूमविरकसकुमकसुहसिहिपिच्छमिवमणा ।
ममममपकरपंकचेपिदिमगुंजासममूसणा ॥ २ ॥
संपककमिकेसकहिपरवक्करयणतंममममा ।
विमकमुकणपहरपविसीरिपमारिपमोरडरिंगिमपा ॥ ३ ॥
रहुमवंतिवेतकपमंदिरसंचिपमारवोरवा ।
तसंतरवचरंतपीसुप्फविरइयकणपूरया ॥ ४ ॥
विसिपसरंतविमलसमिमरणिहपरवारसमपंगया ।
वंसविसेसवावमुत्ताहलमपीवरकरमाया ॥ ५ ॥
पीयसुधीयकुसुमरससुपीयमहिहरकंदरंमया ।
सवरीवयणकमलरससंपरचंचुसुरियारिंमया ॥ ६ ॥
दरमकगारकमसिणवकमरवविसारिपकायया ।
माया पहुसमीवि मरुडिमपकर विविहविरायरायया ॥ ७ ॥
गुरुमयवलसिविरिचिपिपवेहमहीयरकम्पमासया ।
ते मयकोरदुम करयेव ममरवणंतवासया ॥ ८ ॥
चंवतरंतमविरयपमुसियासोयमियंतमहुयरं ।
वेयमसंगमंतकओकयमस्थियकरवहुयरं ॥ ९ ॥
कम्पसंसुचारमयपोदरमुंपुप्फमियमीरयं ।
पत्ता परिवमेव सह महिवह सुरवरसरिदुवारयं ॥ १० ॥

घत्ता—मागाहिव साहसु वम्मि सुपसाहसु विसि पयाविवि परमेसर ॥
पं विसु विपसामवि पिर्व कम्मासवि ववलासेव मारसह ॥ ११ ॥

12 १ M has before this का पयडिया २ MBP चु ३ MBP °चममिम° ४ MBP °मिव° ५ P °पिंमिहद° ६ MBP °मरियरिदिसियमोर° ७ M विकरद T विकरद but gloss रास रस° MBP मिव

12. 2 °कमल° सिता; कुसदया कुशला 8 तवतवकरत° तावताडनाम् 11 °कदरंमया °कन्दराः 14 °किराय° किरा 20 °सुपारय° सडला प्रयागमुपेत्यावस्थाम्

16

धणुवेयजाणु परिछिण्णमाणु वधेप्पिणु णिरुवमु किं पि ठाणु ।
णं कालें भासुरु कालदंडु णरणाहें पेसिउ वज्जकंडु ।
धम्मुज्झिउ पलयहुयासलीलु गुणकोडिविमुक्कउ णं कुसीलु ।
पिच्छंचिउ चंचलु ण विहंगु उज्जेयगइ ण सुयणतरंगु ।
अइदूरगामि णं परमणाणु अईसुद्धिवंतु ण सुक्कझाणु ।
अइदीहायारउ ण भुयंगु अइप्राणहारि णं खलपसंगु ।
अइगुणिहि परंमुहु होवि गयउं णं माणुसु कुसमयर्मत्तिहयउ ।
अइलोहघडिउ णं लुद्धचित्तु अइगयणगमणु णं खेयरत्तु ।
अइमोक्खगामि ण चरमदेहु अइकढिणभेइ ण णइपवाहु ।
णावालउ ण तच्चिय महंतु हुंकारें चोइउ णं सुमंतु ।

घत्ता—मागहहु णिहेलणि हरिणीलंगणि खुत्तु कणयपुंखुज्जलु ॥
रइणिज्जियकज्जलि जउणाणइजलि णं पप्फुल्लिउ सयदलु ॥ १६ ॥

17

भूभंगभीसभिउडीहरेण विप्फुरियदसणडसियाहरेण ।
सुरसमरसहासमयकरेण दुणिरिक्खविवक्खखयंकरेण ।
देवेण समुद्दपरिग्गहेण तं पेक्खिवि गज्जिउं मागहेण ।
भणु केणुप्पाडिय जमहु जीह भणु केण लुहिय खयकाललीह ।
णायउलवलयविलुलंतु गीढु भणु केण णिसुंभिउ धरणिवीढु ।
भणु केण कलिउ मंदरु करेण उट्ठाविउ सुत्तउ सीहु केण ।
भणु केण खलिउ णहि भाणु जंतु णिव्विण्णउ प्राणह को जियंतु ।
भणु कासु करोडिहि रिट्ठु रसिउ भणु को कयंतदंतंति वसिउ ।

16 १ MB °जाण २ MBP उज्जुय° ३ MBP अइसिद्धिवंतु ४ MBP °पाण° ५ MBP होइ ६ MBP °भत्ति° ७ B लुद्धरत्तु
17 १ MBP विलुलंत २ M धरणिपीढु ३ MBP पाणहं ४ B रिट्ठु ५ P दंततवसिउ

16 4 *b* उज्जयगइ सरलगति 7 *a* गुणिहि शरासनान्मुनेश्च 10 *a* णावालउ नौयुक्त, पक्षे नमनशील तच्चिय नदीप्रवाह तात्त्विकश्च, *b* सुमंतु परममन्त्र 12 जउणाणइ° यमुनानदी
17 4*b* लुहिय प्रोञ्छिता 5 *a* गीढु गृहीतम् 8 करोडिहि शिरोस्थनि, रिट्ठु काक,

किं विदुमरायं तुहुं जि पउ तेलोक्कपियामहु जासु ताउ।
मा कोपहि मरिवर तिक्खसत्ति तउ तणिय पाय मज्झायवेक्खि।
दोप्पिणु मच्छरु परसु ताम पइ कंपमि महियलि वसमि जाम।
तुह सुहर थंकिर हउ घमुहु मा किं पि करहि मच्छर रउहु।

घत्ता—पारद्धु ण मेहइ अप्पु किं बोल्लइ णत्थि सहावु जोसहु॥
जसु जासु जि सायर मयउ सायर सो संमासइ णियपयहु॥ १४॥

15

तरुणीयणमारं व सजणयारं महिहिसिखियतीरप्पावणारं।
कंपेप्पिणु रयणायरवणारं पइसप्पिणु णायजोयणारं।
उप्पप्पिणु पुणु वेसिवहिं ताहिं तेवेहिं सरोसहिं जोयणेहिं।
रिउमयणु पलोयवि णियकरेण मप्फालिउ धणुहुं धणुहरेण।
अंदोलिय वायणाइपयंग महि चलिय विवरणिग्गयभुयंग।
मप्फोडिवर्वधण विवसियंग णिल्लासिय तासिय रवितुरंग।
थरहरिय बरावइ घरण वरुण मासंकियं जम वासवन पवण।
संचालिय सरिसरसायरंभ गय मयगल मुहियालाणखंभ।
विघडिय पुरवर पायार गेह सुय कायर णर भयंमंतदेह।
वरवीरहिं कम्गडु तिन्ह सिद्धि भवर वि कंपति हा बड्ड सिद्धि।
दप्पिट्ठु तुहु भुयवलविमद्दु महसीयरु मायरु मीसु सद्दु।
किं मेरसिहरु सउवलसिउ किं णग्गु कणकिवि कालेण हसिउ।

घत्ता—पायालि फणिवहिं महिहि णरिंदहिं सग्गि सुरिंदहिं कंपिउं॥
धणुगुणटंकारें महगंभीरें कासु ण हियउं विप्पिउं॥ १५॥

७ MBP तेलोक्क° ८ MBP दोप्पिणु मच्छरमि ९ ण हु

15 १ MBP कउणर २ M मासयण BP मासयर ३ P बरवेह ४ MBP मुहि ५ MBP वीसणु ६ B °णविउ ७ MBP ण वहु PK कणिउ ९ P विप्पिउ

18 चक्र साणरा चक्र साणर

15 2 °णमाह वयमणि 8 b मुहियं भय 11 भावह मवाकसौवि 14 सि प्पिउ बसनु.

16

धणुवेयजाणु परिछिण्णमाणु वधेप्पिणु णिरुवमु किं पि ठाणु ।
णं कालें भासुरु कालदंडु णरणाहें पेसिउ वज्जकंडु ।
धम्मुज्झिउ पलयदुयासलीलु गुणकोडिविमुक्कउ ण कुसीलु ।
पिच्छंचिउ चवलु ण विहंगु उज्जयगइ ण सुयणंतरंगु ।
अइदूरगामि ण परमणाणु अइसुद्धिवंतु ण सुक्कझाणु ।
अइदीहायारउ ण भुयंगु अइप्राणहारि ण खलपसंगु ।
अइगुणिहि परंमुहुं होवि गयउ ण माणुसु कुसमयभत्तिहयउ ।
अइलोहघडिउ ण लुद्धचित्तु अइगयणगमणु ण खेयरत्तु ।
अइमोक्खगामि णं चरमदेहु अइकढिणभेइ ण णइपवाहु ।
णावालउ ण तच्चिय महंतु हुंकारें चोइउ णं सुमंतु ।

घत्ता—मागहहु णिहेलाणि हरिणीलंगाणि खुत्तु कणयपुंखुज्जलु ॥
रुइणिज्जियकज्जलि जउंणाणइजलि णं पप्फुल्लिउ सयदलु ॥ १६ ॥

17

भूभंगभीसभिउडीहरेण विप्फुरियदसणडसियाहरेण ।
सुरसमरसहासभयकरेण दुणिरिक्खविवक्खखयंकरेण ।
देवेण समुद्दपरिग्गहेण तं पेक्खिवि गज्जिउं मागहेण ।
भणु केणुप्पाडिय जमहु जीह भणु केण लुहिय खयकाललीह ।
णायउलवलयविलुलंतु गीढु भणु केण णिसुंभिउ धरणिवीढु ।
भणु केण कलिउ मंदरु करेण उट्ठाविउ सुत्तउ सीहु केण ।
भणु केण खलिउ णहि भाणु जंतु णिव्विण्णउ प्राणहं को जियंतु ।
भणु कासु करोडिहि रिट्ठु रसिउ भणु को कयंतदंतंति वसिउ ।

---

16 १ MB °जाण २ MBP उज्जुय° ३ MBP अइसिद्धिवंतु ४ MBP °पाण° ५ MBP होइ ६ MBP °भति° ७ B लुद्धरत्तु
17 १ MBP विलुलंत २ M धरणिपीढु ३ MBP पाणहं ४ B रिद्धु ५ P दंततवसिउ

---

16 4 *b* उज्जयगइ सरलगति 7 *a* गुणिहि शरासनान्मुनेश्च 10 *a* णावालउ नौयुक्त, पक्षे नमनशील तच्चिय नदीप्रवाह तात्त्विकश्च, *b* सुमंतु परममन्त्र 12 जउणाणइ° यमुनानदी
17 4*b* लुहिय प्रोञ्छिता 5 *a* गीढु गृहीतम् 8 करोडिहि शिरोस्थनि, रिट्ठु काक,

मज्झु कव्व विरइविउ मज्झु माणु केणेहु विसविउ कुलिसघाणु।

घत्ता—जेपेरंड विउंमिउं एड्ड पाउंभिउं सो मइ भयु ण पुवार ॥
णिम्मंगु समाणु भीयउ कामु विहिं वि पक्ख हुई पुवार ॥ १७ ॥

18

एम भणिवि तेण काहिउ कयणु भायणउ वाचइ मेहजालु।
पडुतारणवंविपमरवेमाल मसि वारिकरिमाणिवरंतुरासु।
रइसुहिपियमीविड वहइ वारि हासु व विहारि व वंसधारि।
वसुपंयरु ससिसंकमसरिच्छु करि कप्पिवि उहिउ फेरिपच्छु।
पइ परिकमवि केण वि कउउ कोंतु भाउहु को वि हत्थु हत्थु मयंतु।
मोग्गरु मुसुंढि फेवहु वि विसद्ध केण वि करि करयल सिरिमालु।
चावेकु घेतु मत्त घत्ति सुसग्गु हत्थु सव्वाणु कंपेतु सुमक्कुसग्गु।
केण वि मुयंगु केण वि पिहंगु केण वि तुरंगु केण वि मयंगु।
केण वि मल्लिवहि मुक्कतजीहु केण वि वारणदसकेरु सीहु।
केण वि ढंकोरउ कउहु सद्दु कु वि वाहवि वाइउ काम सद्दु।

घत्ता—ता मागहमेंहिं कपकुसमीमिहिं पयवेप्पिणु अवाइउ ॥
कमसससवपवहिं तावहिं पवणहिं रायसिसिरिमुह गोरउ ॥ १८ ॥

19

तहिं खिहियरें विडुर्ग भमरावर्ग सुरमहुपववरदेसंतयर्ग।
णिवतपवहु विविहणिहीसरासु णिवकालमहसंपिपसरासु।
पायहु भरहहु ण मयंति गोरें णिप्पाउ पोहाउं मरंति गोरें।

१ MBP पुर

18 १ MBP °कसागु २ MBP हुयु ३ MBPK पहिय विप्पु ४ P णिवमागु ५ MBP पाणल ६ MBP कप्पु

19 १ P विहि and gloss पावें २ MBP वेहिवह ३ M °कालमहि. ४ M वे हि. ५ M वे हि.

11 णिम्मंगु अलिम्

18 4 b चोरिहव पहु एवकोमण 6 b सिरिमालु मौवमोक्खी (1). 7 b चंवयु सर्वाभिरणा कुमा. 9 a व सिवधि भाग

19 2 b काळ व इ° कममहु नाम भगु 8 b घोहाई हितजानि.

मणु रंजिवि जुंजिवि अवहिणाणु दक्खविउ ससामिहि णपि वाणु ।
पुणु अक्खिउ खलयणमइयवट्टि उप्पण्णउ महियलि चक्कवट्टि ।
भो मागह किं जुज्झग्गहेण मुइ पहरणु किं विणडिउ गहेण ।
जइ अज्जु ण इच्छहि तासु सेव तो तुम्हइं णउ अम्हइं मि देव ।
तुहुं एक्कु ण अवरइ सुरसयाइं तहु मंदिरि दासत्तणु गयाइं ।
लिहियहु किं किरं कीरइ विसाउ दीसइ पणविवि रायाहिराउ ।
तें वयणें सो पैंरिमुक्कदप्पु थिउ मंतपहावें णाइं सप्पु ।
अवलोयवि सैरलिविपंतियाउ भावेप्पिणु मंतिपउत्तियाउं ।

घत्ता—मागहिण अगावें सविणॅयभावें चक्केण व दिवसेसरु ॥
पणविवि थुइवयणहिं णाणारयणहिं पूइवि दिट्ठु णरेसरु ॥ १९ ॥

20

सविहवविम्हाँवियसयमहेण विहसेप्पिणु बोल्लिउ मागहेण ।
जय भरह महागयलीलगामि तुहुं इह जम्महु महु परमसामि ।
तुहुं इंदु इंदरिद्धीसणाहु तुहुं हुयवहु अरिवरदिण्णडाँहु ।
तुहुं जमु जमकरणु ण का वि भंति तुहुं वरुणु सयलजणविहियसंति ।
तुहुं धणउ धँणउ सुहिणिहियकामु तुहुं पवणु पवलवलदलणथामु ।
ईसाणु मँहेसरणवियपाउ तुहुं एक्कु जि जगि रायाहिराउ ।
तुँह असिजलधारइ हरियछाय अरिँणरवइ तरु के के ण जाय ।
तुँह असिजलधारइ उद्धँसासु वड्ढारिउ भुवणंतरि ण कासु ।

६ B किंकर ७ K पविमुक्क° ८ MBP सरलियपतियाउ ९ MP add after this भरहेसरायणामकियाउ, सुरणरखेयरभय(M सय)गारियाउ, ता तेण वि चित्ति चमक्कियाउ, वाएप्पिणु अक्खरपंतियाउ, B adds भरहेसरायणामकियाउ, जुइणिज्जियरवियरकंतियाउ, ता तेण वि चित्ति चमक्कियाउ, चक्कवइभरहणामंकियाउ १० M अकुडिल°

20 १ MBP °विंभाविय° २ MBP °दाहु ३ MBP धणउ ४ MBP महीसर° ५ B omits this line ६ MPK अहिणरवइ ७ B omits this line ८ MP उद्धसासु

5 *a* °मइयवट्टि संचूरक 6 *b* मुइ मुञ्च, गहेण पिशाचेन 9 *a* लिहियहु भवितव्यताया 11 *a* सरलिविपतियाउ बाणलिखिताक्षरपङ्क्तय

20 5 *a* धणउ लक्ष्मीदायक कुबेर 7 *a* हरियछाय हृतमहातमस, अन्यत्र नीलवर्णा 8 *a* °सासु उच्छ्वास सस्य च

तुह भत्तिब्भरभारए परिमइंति   महुसरिम वि रयणायर तरंति ।
तुह भत्तिब्भरभारए महुपाइं   रिउसइदुक्खपवसुपरिचुयाइं ।
तुह भत्तिब्भरभारए कुणि भसोउ   हूयउ णिरु णिय भुत्तभोउ ।

घत्ता—तुहुं भरह पयावइ पढममहीवइ मइ भावि भाविउ ॥
तारायणरवतहिं पय पयवतहिं पुप्फयंतु जिह सेविउ ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहपसाहणं णाम
बारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १२ ॥
॥ संधि ॥ १२ ॥

१ MBP णमु । १ M पुप्फयंत; BP पुप्फयंत

9 a परिरक्खंति एवं सुवन्ति 10 महुपाइं ... 18 पुप्फयंतु जिणवरपंक्ती व

XIII

साहिवि मागहु गहविसमु णविवि पसिद्धसिद्धिणेयारहो ॥
रुंजिवि सीहु व वरतणुहि भरहराउ गउ दाहिणदारहो ॥ ध्रुवक ॥

1

धरणीसरो चलइ गरुडद्धओ घुलइ ।
सिमिरं समुल्ललइ धूली णहे मिलइ ।
सुरसिरिहर कमइ पडिवलइं उवसमइ ।
हरिवयणलालाइ करिदाणवेलाइ ।
जणजणियसक्केण तंबोलपंकेण ।
चरणाइ लिप्पंति हारेहिं गुप्पंति ।
अइगरुयभारेण सामंतचारेण ।
दसदिसिवहं भमइ पुहईयलं णमइ ।
णाइणिहिं णउ रमइ विसवाणिय वमइ ।
कह कँह व भरु सहइ मउ मुयइ गइ महइ ।
फणिपुंगमो तसइ लवणणवो रसइ ।
णरवइभुए वसइ रणजयसिरी हसइ ।
पराणिवंगल गसइ विसमत्थलिं कसइ ।
वरवाहिणी चरइ दुग्गं पि पइसरइ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

तीमापद्दिवसेपु पन्धुरहितेनैकेन तेजास्विना
सतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभो सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवय सौजन्यसत्याम्पद
सोऽय श्रीभरतो जयत्यनुपम काले कलौ साप्रतम् ॥

GK do not give it

1 १ P साहेप्पिणु २ MB गहिवि समु, P महिवि समु ३ P सुरसिहरि संकमइ ४ MBP कह वि ५ M दुग्गे पि

1 1 गहविसमु ग्रहे आक्रमणे विपम , °णेयारहो° प्रापकस्य 5 *b* पडियलइ शत्रुसैन्यानि, 6 *b* °वेलाइ प्रवाहेण 11 *b* वाणिय जलम् 12 *b* गइ महइ कुत्रापि गन्तुं वाञ्छति 15 *b* कसइ चूर्णीकरोति,

जच्छुमामं हरइ तच्छुम्मर्म हरइ।
गिरिजुमाम समइ गयमंगर्य कमइ।
मजयपहरि हुरप्पहि संप्पहि हुरप्पहि।
घमरेहि गयरेहि रिउपमायवरहि।
छम्मिह वि संकमइ मंरिपत्थिवे कमइ।
रामस्स पासि कय अवसी मिसे रमइ।

घत्ता—काणणि वरजयंतिणिपरे वसु मायासिउ परगहणायरु ॥
गयइ गयंतहि मयहि पलयपसरि णं खुहियउ सायरु ॥ १ ॥

2

उवअमतिरिमणिसीरापर गिरिणेरेमेरुसुयपायर।
सायायर पंकयसामसहिउ तामायर दूरतालमहिउ।
संतुंगमहि कयमेहयउ दंसासोयंकि असोयमउ।
कंचणवतर कंचणपुरिउ पुण्णायपवरि पुण्णायरिउ।
ससिपीसि सिरीसपसाहियउ बहुवंसि णिवंसविपायउ।
संक्षियसुवेसि वेसामयणु समुयंपर भामियमुयंगमणु।
खिहिणकयवि मंगलयमाहिउ संरिवहरिसु कुरंगहरियमहिउ।
सविसायर भविसायउ सविहु मारेमयर मायंगविहु।

१ MBP पयरिसी. MBP मरए, K रमइ, but writes above it मरए MPT घम्मंत°, B वहमंते

2. १ M मेरुय° but records a p °येरुय° २ P °गुमिरायर ३ दूरतालं° ४ MB वउंब मंहि ५ MB °मयुयर P मयवर ६ P दायलेअमिसंतीय° ७ MP सविस MBP सविसरिसि; K °सहिरिसु but corrects it to सविरिसु.

19 a °यकहि समुहे 21 a जमिहु मईयेव वैरूपम् 22 b अवसी मिस रमइ मो ब्व मरूमूमि पोरवसे प्रतीसुख्वे 23 गइजाणि णिय ति वीकमत्सुकुमैतायरत्रणेति

2. 3 a ववमहुयय ब्रह्मरामसरे अतम् 4 b पुण्णायरिउ पुन्नागवृक्षि श्रेष्ठ. 5 a ससिपीसि सिरोषपुष्पसुरे सिरीससाहिययु सिरीषकुसुमसं प्रमाधितमण्डनम् 7 b संरिवहरिहु संपित सरिकं कुरंगहरिएहि कुरंगहरिपहि हरिणीरहिय मृगसमूह बहूना मसे नाशनी 8 a सविसायर सविस सामान्येन सविरि, सविहु मधुसहितम् b मारेमयर आम्रवाणि मायंगविहु अश्वकीर्णताडनम् सन्ना मादि मत्तो माहमरा सम्म पूर्वपरपर्येव बदनम्

कइलुक्कइ कइहिं पसंसियउ थिय हेरिवरि हरिवरभूसियउ ।
परलच्छीगहणुक्कंठियउ घणि साहणु सयलु वि संठियउ ।
अत्थमिउ सूरु तमभरियदिसि थिउ णिसि उववासें रायरिसि ।

घत्ता—महिणाहेण समच्चियइं णियकुलचिंधइं चावइं चक्कइं ॥
झाइउ मंतु महारिहरु दीवकेवाडइं विहडिवि थक्कइं ॥ २ ॥

3

तहिं अवसरि दिणयरु उग्गमिउ भरहेसें जिणवरिंदु णमिउ ।
रहु वाहिउ सहसा तेण किह सपुण्णमणोहरु पुण्ण जिह ।
कसपहरतुरियपेरियतुरउ मरुफसफारफरहरियधउ ।
विरसियरहगरोसियउरउ पहरणपरिपुण्णसुवण्णमउ ।
मणिघंटाजालहिं झणझणइ भडभारक्कंतउ णं कणइ ।
कइवयजोयणइं महासरहो जलु लंघिवि पुणरवि सायरहो ।
पव्वालंकरियउ णं वरिसु फोडीसरु किं ण जणइ हरिसु ।
सुविसुद्धवंसु गुणणामियतणु सुकलत्तु व पहुणा लइउ धणु ।
गुणु कड्ढिवि लीलइ जे णियउ करु सवणि ससि व्व सहइ थियउ ।
रेहइ सरु दिणयरणिम्मलहो णवणालु व कुंडलसयदलहो ।

घत्ता—कहइ व जाइवि णरवरहिं महु संगेण वि वहइ खलत्तणु ॥
गुणथिरकरपरियड्ढियउ कण्णालग्गु चावकुडिलत्तणु ॥ ३ ॥

4

जीयाविमुक्कु जीवियहरणु ण दिणयरु खरपसरियकिरणु ।
बहुलक्खगाहि सो मग्गणउ ण पेसिउ दूयउ अप्पणउ ।

९ MBP हरिवरेहिं हरि भूसियउ १० MBP दो वि
3 १ MBP ° मणोरह २ MBP जोजियउ ३ MBP °लग्गचाव°
4 १ MBP जीयाइ मुक्क २ MBP दूवउ

18 दीवकवाडइं जम्बूद्वीपकपाटानि
3 8 *a* कस° चर्मयष्टिका, *b* मरुफस° वातस्पर्श 6 *a* महासरहो महान् सर शब्दो जलं च यस्य स समुद्र 7 *a* पव्वालकरियउ पर्वभिरमाबास्यादिभि ग्रन्थिभिश्च अलकृतम् 9 *a* णियउ नीत, सवणि कर्णे श्रवणनक्षत्रे च
4 1 *a* जीयाविमुक्कु प्रत्यञ्चया विमुक्त 2 *a* मग्गणउ मार्गणो बाणो याचकश्च

थिमाविउ सहमंडवि वरतणुहि कर कर व य कमाउ तेहु तणुहि ।
कंचणपुंखबेणुबाणयउ सो तेण कप्पवि पवारयउ ।
सुरतणुपणपणीवाहयं सिहुरे वरपहणामपवाउं ।
सरविंदयंदविमलाणणहो महु आइविसेसरवंदणहो ।
भरहु जो जो ण सेव करइ सो सो मदि मद भमइ वि मरइ ।
ता तेण जि तं वि समिच्छियउ पीवरु विपपुण्णु पुंगुंछियउ ।
गउ तहिं जहिं सई भण्णइ भयहु मयरहरमासि पविसियहु ।

घत्ता—पभिप्पिवि माउं सगोत्तु कुसु पणाविउ सो महिवेलमहारहु ।
दुंदुहं मि तुम्हपममफासिय कम्मइ सिरि कय परपविहारहु ॥ ४ ॥

5

पंचीवरठोयणु सप्पमणु पममणइ वरतणुमहिउखियवणु ।
तुह विम्मणु थिमाणु विमाणहो तुह सेणाणु वि कारणु महहो ।
पई सामिय संपिउं जासु सव वेरसंधिउ भवकइ तहु पणइ ।
पिउ जासु मणिच्छु जिणिंदु सई पुण्णाहिं विणु पडु को लहइ पई ।
कर कर पयउ हारावलिउ जं महिपुखियउ तारावलिउ ।
कर सुरवरवीसहसंभवइं कुसुमइं विणे विणु जणणवइं ।
कर वेरपइं कर कंकणइं कर दिम्मइं सत्थइं पणयणइं ।
कर दिव्वंगइं वत्थइं वरइं कर पीवरतरइं चामरइं ।
पस्सु ण जीवइ मप्पुसरणु परमेसर तुहुं जि मज्झु सरणु ।
तं णिसुणिवि मणें वोहियउ पउ वि भवइ वि मोक्खोखियउ ।
कज्जाहि कप्पिणु णियपयउ भण्णहि महु होइवि आवयउ ।

१ M तउ ४ MP °पुंडेहु° ५ MBP महिवेलमहारहु ६ MBP दुइहमि कम्मउवरयाविय
5 १ MBP तुहु २ B धणिय ३ M भरउसिरि ४ MBP वेसिर्ण ५ MP मोक्खलिउ

8 b तरहु साहय 11 तुरह मि वेरामणि.

5 9 विमाणहो अधिपस्य ; महदो पूजायाः. 8 b वरसंधिउ मनुर्ध कपरिण संपदा संपि-
मयपानि व ब र एस।

घत्ता—पूरइ मह्हु महिवइ जसेण दविणविलासु वासु किं वण्णिउ ॥
उत्तमु जगि अहिमाणु धणु एउ वयणु किं पइं णायण्णिउ ॥ ५ ॥

6

पप्फुल्लियदुमरसदावणिय　　सुयपिंछरिंछकोड्डावणिय ।
वरतणु सुरु जिणिवि सुहावणिय　　वेइय धरेवि दीवहु तणिय ।
पुणु जयदुंदुहिसद्दहु मिलिउ　　सहु राएं साहणु संचलिउ ।
पच्छिमदिसि संमुहु धाइयउ　　सव्वत्थ जि कहिं मि ण माइयउ ।
हयमुहपयलियफेणुज्जलउ　　सव्वत्थ जि भंडथडसंकुलउ ।
सव्वत्थ जि गयमयसिंचियउ　　सव्वत्थ जि धयमालंचियउ ।
सव्वत्थ जि गेज्जावलिरणिउ　　सव्वत्थ जि वंदिविंदझुणिउ ।
सव्वत्थ जि छत्तणिरुद्धदिसु　　सव्वत्थ जि सुराहिगंधसरसु ।
सव्वत्थ जि भमियभमिरभमरु　　सव्वत्थ जि चलियचवलचमरु ।
सव्वत्थ जि परिधाइयअमरु　　सव्वत्थ जि सचरंतखयरु ।
सव्वत्थ जि कामिणिगीयसरु　　सव्वत्थ जि विलसियकुसुमसरु ।

घत्ता—रुक्ख मलंतु दलंतु गिरि जलु सोसंतु णिवेण णिवेइउ ॥
साहणु एम चलंतु पहे सिंधुमहाणइदारु पराइउ ॥ ६ ॥

7

अवलोइय राएं सिंधु किह　　विब्भमधारिणि वरवेस जिह ।
दावियमय णावइ हत्थिहड　　विबुहासिया वि सगहियजड ।
गिरितवसिहिं णं परिघुलियजड　　रणवित्ति व सोहइ झसपयड ।

६ M विलास ७ MBP अहिमाण° ८ MBP पइ किं
6 १ MP सुयरिच्छपिच्छ°, B सुयरिंछपिंछ° २ B °दिससमुहु ३ B णडथड° ४ M वंदविंद° ५ MBP °गधरसु ६ MBP °भमरिभमरु ७ M परिघाविय° ८ B विगोइउ, P णिवोइउ
7 १ B हत्थिघड

12 वा सु व्यासो विस्तर
6 1 *a* प प्फु ल्लि ये त्या दि—प्रफुल्लितैर्द्रुमैरुपलक्षिता रसाया पृथिव्या दा व णि या वेदिका, *b* °को ड्डा व णि य कौतुकोत्पादिका 8 *b* °स र सु शृङ्गारादियुक्तम् 9 *a* °भ मि र° भ्रमणशीला,
7 1 *b* व र वे स वरा वेश्या

मउकुडिल णाई सुरधणुतिमिर मज्झीसणि वं पंचमिय णाइ।
मणुयहिं व दीसइ सुकसर बहुरायहंसपिय णाई सर।
कमलेण कोसंवस्थिउ व घणु जा महिवासखिविहि मणुहरइ।
वणसारसहुमवपयोहरिय कणयाहपरिणपंतिहिं हरिय।
एतिवमयावमिपहरिय पयर्हतकुसुमरयपिंजरिय।
जं णाहियविविवयवरोसरिय माहवा पं मंडणकम्मुरिय।
गयदपयवंसणरसपरिमलिय वंकवपकलावसुकोवलिय।
जा मिलिय गंपि रयणायरहो रत्ती भुत्ति व रय णायरहो।

घत्ता—ताहि तीरि सुवड सिमिरु तामत्पइरिसिरें संपत्तउ।
णं बीयणिहिसिकामिणिहि पियहिउ मिलु पियरिउ रत्तउ॥ ७॥

8

मत्यमिह दिणेसरि जिह संझ्या तिह पंचिय पिय माणियसज्जा।
जिह कुरियउ दीवयरिसिमउ तिह पंताहरणहरिसियउ।
जिह संझारायें रंजियउ तिह वसारायें रंजियउ।
जिह भुवणयलु संतावियउ तिहं मयणेण वि संतावियउ।
जिह दिसि दिसि तिमिरई मिलियाई तिह दिसि दिसि जारई मिलियाई।
जिह रयणिहि कमलई मउलियाई तिह विरहिणिवयणई मउलियाई।
जिह घरई कवाडई दिण्णाई तिह णहरुखेवई दिण्णाई।
जिह वरि णियकरपसर किउ तिह पियकेसहिं करपसरु किउ।
जिह कुवलयकुसुमई वियसियाई तिह कोमियमिहुणई वियसियाई।
जिह पीयाई पाणई महुराई तिह मंदरई महुरसमहुराई।

१ P कुसुमत्तर २ MP ॰णाहिणि तणिय॰ ४ MBP पोइ. ५ P ॰महुत्तरिय ६ MBP पेरह॰ ७ MBP ॰किरि. MBP ॰तरुवरिसि॰

8 १ P दीवह २ B omits this foot. ३ MBP॰ वेलह ४ MB जारइ मरई. M¹ records a p महुरइ for मरई. P मारइ महुरइ

7 b कयवइमं॰ सुमम 8 a ॰णवाणहिं॰ णवघणि 10 b कइकणक णवसुरीरशणिय मयूरणिजणुलाय. 11 a रयणायरहो समुदस्य b णायरहो नागपुरुष मति 18 पित्तु पुर्व पितरिव ताविकेन.
8 1 b ॰सरवा सिमितानि. 7 b ॰णैयद नाविकानि

जिह जिह गलंति जामिणिपहर तिह तिह विहुणण मउरइपहर ।
जिह णहि सुकुंग्गमु दरिसियउ तिह विडि सुकुंग्गमु दरिसियउ ।

घत्ता—ता चक्कउलहं पंकयहं तवकिरणपूरियभुवणोयरु ॥
विरयहं णरणारीयणहं जीविउ देंतु समुग्गउ दिणयरु ॥ ८ ॥

9

सिंधूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे
कोइलकुलकलयालि वियसियसयदलि रंभवणे ।
उववासु करेप्पिणु जिणु पणवेप्पिणु पीणभुउ
णरवइ जयमायरु कयणियमायरु रिसहसुउ ।
जमेंभउहाभावइं चक्कइ चावइं जियरणइं
अहिअचिवि दिव्वइं हयरिउगव्वइ पहरणइं ।
णं भूरिपहायरु चंडु दिवायरु णहवडिउ
मणिगणवेयडियइ कचणघडियइ रहि चडिउ ।
पेरिय जोत्तारें हरि हुंकारें तियंसमइ
मणपवणमहाजव अमुणियखुररव गयणगइ ।
कयभडकडवंदेणु वाहियसदणु चैवलधउ
करिमयररउद्दहु लेंवणसमुद्दहु मज्झि गउ ।
ता खंचिउँ रहवरु भेसियजलयरु सलिलवहे
जोयंति सुरासुर किंणर खेयर जक्ख णहे ।
राएं सुइसोक्खर णियणामक्खरभूसियउ
थिरु ठाणु णिबंधिवि सरु गुंणि संधिवि पेसियउ ।
अवरण्णवणाहहु लच्छिसणाहहु पडिउ घरे
तडिदंडु व भीसणु काणणणासणु गिरिसिहरे ।

५ MP सुक्कग्गमु ६ MP सुक्कग्गमु

9 १ M चिकमइ, B चिंकमइ २ P °मद्दणु ३ MBP धवल° ४ MBP मज्झि समुद्दहु सो जि गउ ५ MBP खंचिय° ६ MBP थक्क ७ P गुणु

12 *b* वि डि विटे

9 4 जयमायरु विजयलक्ष्मीकर 8 °वेयडियइ खचिते 9 जोत्तारें सारथिना 15 सुइसोक्खर श्रुतिसुखदानि 17 अवरण्णव° पश्चिमसमुद्र

माउलिंग कार्य सुयंधतिमिर मउलीसवि व पंचमिय गइ ।
पयपुरसि व दीसइ मुक्कसर महुरायसंसिय कार्य भर ।
कमलेण कोसेंलक्खि व भरइ जा महियरसत्तिहि अणुहरइ ।
कमसारसहुयबहपपाहरिय कणयहुपक्खिपंतिहिं हरिय ।
दंतिंतवपायक्खिविहरिय पवइंतकुसुमरयपिंजरिय ।
पं महियविविक्खवदेवरिय भहुवा वं मेहयक्कमुरिय ।
गयहयपवंधयरसपरिमसिय अंबयवककायसुकोलसिय ।
ता मिक्खिय मंपि रयवायपयो एत्ती मुत्ति व रय वावरयो ।

घत्ता—ताहि तीरि सुक्कइ सिमिर वामत्पहरिसिहिंद संपत्तउ ॥
पं वीवनिविसिक्कामिणिहि पिबहिउ मित्तु विराविउ रत्तउ ॥ ७ ॥

8

पत्थमिउ दिणेसरि जिह सरज्जा तिह पंपिय पिय माणिपसरज्जा ।
जिह फुरियउ दीवपरिसिपउ तिह कंताहरयवदसिसिवउ ।
जिह संझायएं रंजियउ तिह वेसायएं रंजियउ ।
जिह मुपगुपुलउ संतावियउ तिह चक्कवड्ड वि संतावियउ ।
जिह तिमि दिसि तिमिरइं मिलियाइं तिह विसि विसि जायइं मिलियाइं ।
जिह रयणिहि कमलइं मउलियाइं तिह विरहिणिवयणइं मउलियाइं ।
जिह घरइं कवाडइं दिण्णाइं तिह थणहरचेलइं दिण्णाइं ।
जिह थर्णे सियकरपसरु किउ तिह पियकेसाहिं करपसरु किउ ।
जिह कुवलयकुसुमइं वियसियाइं तिह कामिणिमिहुणइं वियसियाइं ।
जिह पीयइं पाणइं मुहुयाइं तिह मंदइं महुरसमहुराइं ।

१ P सुयमयर २ MP °कासिमि पवमिय° ४ MBP कोहु. ५ P °मुपरिय ६ MBP °वश° ७ MBP °विहरि. MBP पाडलिपि°

8 १ P दीवर २ B omits this foot. ३ MBP° वेसाए ४ MB थणहरं महरा. M records a p मुहुरं for महुरा, P महरइं मुहुरइं

7 b कमयहर° सुका 8 a °घवावर्हि° तरुणि: 10 b अंबकवककायाइ कोलसिय सहकारजातिकपुरुषाः.
11 a रयवायरहो समुद्रम् b वावरहो सम्पूर्ण इति 13 मित्तु सूर्य; विराविउ क्षरिभनेः.
8. 1 b °रवपा मिमिपाणि. 7 b °केसाहिं आकिरणानि

जिह जिह गलति जामिणिपहर तिह तिह विहुण्ण मउरइपहर।
जिह णहि सुकुंग्गमु दरिसियउ तिह विडि सुकुंग्गमु दरिसियउ।

घत्ता—ता चक्कउलहं पंकयहं तंवकिरणपूरियभुवणोयरु ॥
विरयहं णरणारीयणहं जीविउ देंतु समुग्गउ दिणयरु ॥ ८ ॥

9

सिंधूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे
कोइलकुलकलयलि वियसियसयदलि रंभवणे।
उववासु करेप्पिणु जिणु पणवेप्पिणु पीणभुउ
णरवइ जयमायरु कयणियमायरु रिसहसुउ।
जमभउहाभावइं चक्कइं चावइं जियरणइं
अहिअचिवि दिव्वइं हयरिउगव्वइं पहरणइं।
णं भूरिपहायरु चंडु दिवायरु णहवडिउ
मणिगणवेयडियइ कंचणघडियइ रहि चडिउ।
पेरिय जोत्तारें हरि हुंकारें तिक्कमइ
मणपवणमहाजव असुणियखुररव गयणगइ।
कयभडकडवंदणु वाहियसंदणु चंवलधउ
करिमयररउद्दहु लवणसमुद्दहु मज्झि गउ।
ता खंचिउं रहवरु भेसियजलयरु सलिलवहे
जोयंति सुरासुर किंणर खेयर जक्ख णहे।
राएं सुइसोक्खर णियणामक्खरभूसियउ
थिरु ठाणु णिबंधिवि सरु गुंणि संधिवि पेसियउ।
अवरण्णवणाहहु लच्छिसणाहहु पडिउ घरे
तडिदंडु व भीसणु काणणणासणु गिरिसिहरे।

५ MP सुक्कग्गमु ६ MP सुक्कग्गमु

9 १ M चिक्कमइ, B चिंकमइ २ P °मद्दणु ३ MBP धवल° ४ MBP मज्झि समुद्दहु सो जि गउ ५ MBP खचिय° ६ MBP थक्क ७ P गुणु

12 *b* विडि विटे.

9. 4 जयमायरु विजयलक्ष्मीकर 8 °वेयडियइ खचिते 9 जोत्तारें सारथिना 15 सुइसोक्खर श्रुतिसुखदानि. 17 अवरण्णव° पश्चिमसमुद्र

ता णियच्छिउ महियलि गइमग्ग चरमाणि बालयउ
सुरवरसंकासें णाणु पहासें जायउ ।
ता तम्मि विणिग्गए सिसिरए विमुक्कए भयगारए
किं मत्ताणिमाए मत्तागुत्ताए कायरए ।
हउं रायपयासु कायरयंतु पवरयर
महु मागहु कवि जणमयणाहि मय जर ।
तुहुं करहि णियारी परिहयणारी ता जियहि
जे ता भणियावियउ जणणिग्गमावियउ पुंमु णियहि ।
इय णेम पयाएउ वज्जु णिपाएउ गयउ तहिं
ममरिंगणमायउ पुराहि रायउ णियउ जहिं ।
पविमुक्कवहासें विंधु पहासें मग्गु किह
मणिगण मरणामें सुहपरिणामें भरेंदु जिह ।

घत्ता—कुसुमइं कामवसणसारइं पाडियइं मि परवाइयवाइहो ।
रयणइं वरणइं भूसणइं दिण्णइं तेण पडुपरिणाइहो ॥ ९ ॥

10

सुरसिंधुमारिहिं दंडेलिय परिधि पासरणु करिवि ।
पुप्पायरणु परिमंडियाइं करयट्ठियाइं ।
वयकुणिपिहि माणायाइं सुपेच्छियाइं ।
कंसार मच्छकंठाइं ताइं तासाहियाइं ।
करयामें णिमिउ मणहरु पडुविवि देहु ।

---

८ MBPK मुरवं° ९ MBP वा १ MBP वुउ ११ MBP °ब्बाणें and T लोहरासेन समागतमेन वा ११ MBP वसु ११ P वइणाम वर°
10 १ M देहु BPT देहि २ MBP सुपेच्छियाइं

---

20 णहाणें प्रभावकारा इति. 22 मत्तामितरं मायारयणि भाजविणि वत्तागुरुइं वावा पुरापु गणभारवंदियविरलय
10 1 सुरसिंधुवरिसि मरणीयुक्तो ; देहलिय वर्णालाहः ; पासरणु करिवि पुष्पयस्त पूर्ण रियाणि प्रेक्षणं कृत्वा 2 करयट्ठियाइं हेयामोनि हिलानि

माल्व मागह अंगंग वंग कालिंग कोंग ।
पारस बब्बर गुज्जर वराड कण्णाड लाड ।
आहीर कीर गंधार गउड णेवाल चोड ।
चेइस चेर मरु कुरुजंगल पंचाल पंडि ।
कोंकण केरल कुरु कामरूव सिंहल पारय ।
जालंधर जायव पारियाय णिज्झिणिवि राय ।
चउदहतासि णारिंदण लेवि णियमुद्द देवि ।
हेलाइ तिमंडावणि दुगेवि अग्गि कवि कणेवि ।
विजयलहु समुह चलिउ राउ मणासहाउ ।
दिसहिहि पत्तु तं सिहरि वेम मणि मोक्खु जेम ।
दिट्ठउ महिहर सुंदरेण सुमण कुहरेण कुहरु ।
सगहण विहडिय भीमसरु समहेण समहु ।
कडयविपण कडयविसरु तुंगेण तुंगु ।
गुणवसु गरुयवसुंभयेण थावर थिरेण ।
गज्जियगउ पडिगज्जियगणेण उब्भियभएण ।
हिंसियतुरंगु सतुरंगएण सरओरएण ।
अपंतससावउ सावएण पालियजणेण ।
आलंबिउ पव्विउ पव्वियएण विजयह कएण ।

घत्ता—गिरि सोहइ दीहत्तणेण पुव्वावरसमुद्द सपत्तउ ॥
तिहिं तिहिं गंडहिं महणिहि मेरादंडु व दइवें थित्तउ ॥ १० ॥

३ MBP कुरु ४ MBP कुरुंदि ५ M हेलाइ तिमंडावणि ६ MBP तहु ७ MBP मुनि, K मनि but corrects it to मुणि ८ MB समुरेण समुह ९ B पडिवियविसरु १० GK add after it सम्भुयथउ ११ MBPT सतुरंगवगणु १२ MB समुह°

16 *a* सुमरेण शोभास्वरेण; सुसह शोभन सर पार्नाग मरोयरो वा यत्र, *b* कुहरेण पृथिवीधरेण पर्वतेन, कुहरु रूप 17 *b* समहेण पूजाया सहितेन, समहु महुयुक्त 21 *b* सरओरएण सरजो गिरि तन्नानुरक्तेन 22 *a* सावएण श्वापदेन; *b* पालियजणेण पालितप्रतिशेन 23 *a* पव्विउ पूर्वदिशा, 25 मेरादंडु मर्यादाकरणो दण्ड

11

तहिं मंदसरि गुरुहारइ दूरें | सुरवरवरकरअहिसेयतूरें ।
आवासिउ गहणि सैलगु वसु | करिसिसलपहुकसुसियउ वसु ।
महिसरमसहरलेहिउ सरु | कम्मवरकुडारहिं छिण्णु तरु ।
मालूंणियाइं पिडइं फलइं | णिठुरियाइं सदलइं ।
गोमंडलेहिं चिण्णइं तणइं | मुसुमूरियाइं अंबवणइं ।
वहुणियाइ कोरकुलइं | मयतसियइं रसियइं जाइफलइं ।
थिकुलइं मुकइं सपसरइं | वसविसु पयाइं सउणयकुलइं ।
मयवंतइं संतइं पिम्मयइं | पत्तहि तेत्तहि तँहसा मयाइं ।
सुरइं रत्ताइं सीहरहिं | परमिठुकइं वणवेल्लीहरहिं ।
विवरहिविहिं विमारिय विसहरि | सुहरहिं विसम संभोति हरि ।

घत्ता—वणसिरि उम्मासिय सुरव पवरहिं जणवएण थिरु णिवसइ ॥
पेच्छिवि सयाहिवणिवइ कुसुंपुप्फयंतहिं णं विहसइ ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे तित्थंकरसुंदरपत्थाणं णाम
तेरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १३ ॥
॥ संधि ॥ १३ ॥

11 १ MBP वसहपयारगु पयडि. २ MBP °वसिवइ पुरि ३ MB वर्ड° ४ MBP कहमिउ ५ MBPK हुवइं ६ MBP वासई. ७ MBP ताणोहि. ८ MBP °वाणोहि ९ MB ठेल P थालि. १० BPK पुप्फवइ

11. 4 a आलुंचियाइं आसफलानि; 4 b सदल° सदलानि 5 a °मंडलेहिं गवाली 7 a थि-हुकइं कोकिलानि.

धरिणिवसुपत्तुमरगयमहरियउ णाणाफलपविफलाइं भरियउ।
वरमरगयगरपहरणपोढउ वारुसुरंगमि आरूढउ।
आयवि पड्डि देवि गिरिद्वारहु परिपि तुरउ संमुहुं संभारहु।

घत्ता—मयहत्थिणि छमेण चियसुपवक्केम हुंकारिवि पिउ रत्तच्छें॥
परमरपेविक्खणु महिहरखलु रम्मुह देइ परिहच्छें॥ १॥

2

दुवई—भुवइ पहरणमि हरि णिम्मउ सुरहरमणिमयपायवो।
वणपुंगमु वि चविउ परणिवहिं जमसमपणहसियाणवो॥ १॥

ता पंडरयणभिउरणाहरविहरियकणारकिकाणरहसंमरसुरविहविपसप्पसुह-
मुहफाएफुमारजोवियविसेसिसिरिजाई।
आयसमाकाकसाबोहसापलिठवासंवमत्तकरिवरजपेहपुलकिणमाविसिलाववेक-
कुयकंजंतसपूरक्केम्मीमे।
मीहुमायमाहमरियकुहरपंतणिम्मपारिहरहुरपंमुसासिवयपपहिरपमोटक्किरिवं
हियवरपसियवानसुरहरिरवरिमभारहारं।
हंपसमुपंतसवपीपुक्तिससिसुसीसमाणकेसरिकिसोरणाहकुंमिससकोडियारिय
कुरंगदरिसमाहरुम्मी जायं गुहागुहारं।

घत्ता—उन्नंतहं णगाहं महिहरमुंगाहं धोसिसप्पावइ णिवरु॥
मसुमियपवेयणु वि णियेणु वि वं एवं तारिउ केदरु॥ २॥

१ M परियर्ण ११ MB °रयणाकर १२ P °परिवक्खु महिहरखम्मणु

2. १ MBP °चविय° २ M णिवणिवहिं° ३ MBP °रयणसुरसव (P दल) वणसूर° ४ MBP संमुखा° ५ B °सिरिसर° ६ B °रियमार° ७ P हमर° ८ G °दुर्. ९ MBP °णिवई.

16 a परिणयसुरवरु° रयणसुवण्णरयणोज्ज 18 a पड्डि देवि द्वारं दत्त्वा 19 a केवल छलेनैवातड्डा-केन 20 परिहच्छें हेलया

2. 3 °मयर° मीनमकर; 4 °णिहसिय° घर्षित 5 °हिमवकिय° पुष्पमञ्जरीस. 7 मोगुम्म मयमनाम 8 °पवणिवेयालिरियनिरीयो नदी मोहरी सन्नासुहितिं निराई हरय मेघ है, रहरति न एपिरिवयमः °परिगमणरहार माणिमयहल हयो हरय मन

3

दुवई—ता मंजीरहारकेऊरकिरीडफुरंतभूसणो।
अमरो अमरसमरसंघट्टविहट्टियवइरिसासणो॥ १॥

छड्डियावलेवो इच्छियंघिसेवो।
रिद्धिवुद्धिवंतो आगओ तुरंतो।
भूयभत्तिकामो तग्गिरिंदणामो।
सेलसिंगवासो सुद्धसेयवासो।
वंदिओ णरिंदो तेण वीरचंदो।
हारमिंदुधामं दिव्वपुप्फदामं।
कंकणं किरीडं कुंभमभणीडं।
पंडुरं पसत्थं चारु हारि वत्थं।
कुंजरारिवूढं हेमरण्णवीढं।
हित्तकंजलीलं भम्मदंडणालं।
सव्वलोयमोल्लं कित्तिवेल्लिफुल्लं।
चामरेण जुत्तं णिम्मलायवत्तं।
हासहंसवण्णं राइणो विइण्णं।
मंगलं पहाणं तित्थतोयण्हाणं।
रुक्खरोहियासे तम्मि भूपएसे।
अच्छिओ छमासं देवदारुवासं।
वल्लरीललंतं माणियं घणंतं।
णिग्गयग्गिजाल मंदधूममालं।

3 १ MB °सहट्ट° २ MB छडिया° ३ P भूप° ४ MB वीरवदो ५ MB °भडणीड ६ MBP हेमवण्ण°

3 1 °केयूर° बाहुरक्ष 2 °संघट्ट° मेलापक संमर्दो वा, °सासणो सा लक्ष्मीस्तस्या स्वन आज्ञावचन वा 3 *b* इच्छियघिसेवो इष्टा पादसेवा यस्य स 5 *a* भूय° भूप, *b* तग्गिरिंदणामो विजयार्धनामा, 9 *b* अभणीडं जलभृतम् 11 *b* हेमरण्णवीढ हेमरत्नपीठम् 12 *a* हित्तकंजलील हृता अनुकृता कञ्जस्य पद्मस्य लीला शोभा येन, *b* भम्म° सुवर्णम् 17 *a* °रोहियासे °प्रच्छादितदिशि 19 *a* वल्लरी° वल्ली,

सुमरीहमासं जं महीहपासं ।
हासिर्यपयारं तं गुहाणुसारं ।
पट्टणाणपयं सिट्ठमग्गमयं ।
मग्गमीपपासं मीयसं च आयं ।

घत्ता—यंदणचच्चियउ कुसुमंचियउ तं पसिउ पासियगत्ते ॥
भायसपलुरियउ सुरपरियरिउ संचालियउ चक्कु पयत्ते ॥ ३ ॥

4

दुवई—पुणु चक्काणुमग्गसंमंतमहामहकरिसुरंगयं ।
चलियं साहणं पि रहमसियरहगाहपमुयंमयं ॥ १ ॥

चमहकरहमेरयरयमरयमग हरिगुरुमियमसियचमलमलतव ।
मयमयमयमयउग्गयमसिययमाणु इमसिमिमिमियमणुयरयपउमयणु ।
कसमसमुमलकुसिससरकरयमु अजयपयमयरयंयविसमहियणु ।
धसियरसस्मियपवाहउंगपरिह्लु सगिसयविसयवयसमलमयपयणु ।
मसियगुसियरसमुगुमियगरयमु पयपयपहयपयंयचपविपणहयसु ।
चयसचमरयविपंसमपमरियचद परिमसमुसियकसियमहुसिहसद ।
महपहपिगमगमरसुरपरमद अमरिसकसमपिसुणमपसिपिड ।
सहपरिमिमिपसिमिपसुयमियमहु पंडुमुहअममकडियमणहरकडु ।
पहरपिट्टड सुमरिपि मयमपयद मियचसु गिहड व गुरुसुहमिरिवड ।

घत्ता—तम जि रिजमहहा ममिगपरहहो पेव आयहु फलियहुमाकिउ ॥
मरहहु मयचमय सगुहामिसेय सिपहियंचई हरयाकिउ ॥ ४ ॥

---

२ MBP सिहमयं°

4. १ B °ममकम्मं महा° २ B °चरगुरयकरह° ३ MBP °चमसिय ४ B °गुमरी° ५ M चरचमरियमहु; P °चमगुमियमहगु ६ P °सियविय ७ MBP परहुड° ८ MBP °सिहर. ९ MBP चर. १ MBP हिमरहं व हरयाकिउ

---

21 b महीहपासं पर्वतमुखम् 25 b सिद्धमार्गमेव सिद्धमार्गमेव
4. 7 a °सिव प्रकाशितम् 9 a मरहह° चमसमार्गे आकाशम्, °तुरगरथ सैन्यम्
10 a °हहु चम.

5

दुवई—कज्जलणीलबहलतमपडलविणासियणयणमग्गए।
वच्चइ वाहिणीह ण सुहेण महीहरकुहरदुग्गए ॥ १ ॥

इय चिंतिवि करि ढोइवि कागणि चमुपमुहेण लिहिय ससि दिणमणि।
ते सोहति विवरघरभित्तिहि णावइं णयणइं णरवइकित्तिहि।
करणियरेण ताहं तमु सारिउ णिसि दिवसइं सोहति णिरारिउ।
वहइ सेण्णु जयदुंदुहि वज्जइ पलयकालि ण जलणिहि गज्जइ।
उग्गमंतपडिरवगंभीरहिं दुरयघडाघटाटंकारहिं।
संदणमुक्कचक्कचिक्कारहिं धाविरवीरधीरहुंकारहिं।
महिहरविवरमग्गु ण फुट्टइ रोलें तिहुयणु णाइं विसट्टइ।
इंदु वरुणु वइसवणु विसूरइ मेइणि कह व भारु साहारइ।
सायरु कह व ण महीयलु रेल्लइ मंदरु कह व ण ठाणहु चल्लइ।
चंदाइच्चजुयलु णहि झुल्लइ णीलु णिसहु केलासु वि हल्लइ।
एम सेण्णु गच्छंतउ दिट्ठउ अद्दगुहाधरणियलि पइट्ठउ।

घत्ता—रायहु केरएण परिवारएण पहि जंतें परमयसाडें ॥
मणि आसंकियउ मुहु वंकियउ फणिसखकुलियकंकोडें ॥ ५ ॥

6

दुवई—किंणरगरुडभूयकिंपुरिसमहोरयजक्खरक्खसा।
पहुणो तण्णिवासि संजाया वेंतर के ण के वसा ॥ १ ॥

तओ दोण्णि भूमीहरंते णईओ सुकारंडभेरुंडलीलारईओ।
समुम्मग्गणिम्मग्गणामालियाओ जलावत्तकीलंतमीणालियाओ।
तडालग्गडिंडीरपिंडुग्गयाओ गिरिंदस्स गुज्झंतरा णिग्गयाओ।

5 १ MBP °धीरवीर° २ MBP वि जूरइ ३ B णीलि णिसहु, K णीलणिसहु ४ K धरणियलु ५ P ककोडें
6 १ MBP विंतर

5 2 वाहिणीह सेनासनाह 12 *a* झुल्लइ कम्पते 14 परमयसाडें शत्रुमदविध्वंसकेन
6 2 के ण के के न के, अपि तु सर्वे 3 *a* भूमीहरंते पर्वतमध्ये

विद्दुमोल्लेवावलीविक्कियामो पोमसंतर पारणो पविकिपामो ।
महापायपायस्स वं मारणीयो हंसुप्पिच्छसिंधुस्सपीसाहरमीयो ।
ममम्मारं पुमारं मित्यारएत्वं सविच्छायिया संकमेणं कयत्वं ।
सपीमारसीणारं संसाविकयं पुरा मिपसंचारयं वाविकयं ।
हरीमाणियं पाणियं संपिहत्थं परं पोरमापारम्मासंपिहत्थं ।

घत्ता—पिविकुहरंतरहा पमिगामरहो मिम्मंतिउ सामंतयहं ।
सहर महाउहहा विणलिउ सुहहा मणु कम्मु व सुक्करहिं केरउ ॥ १ ॥

7

दुवई—ता पिम्मंति सरहि भेरीरवकंपियमेहमंडलं ।
परबलसवणपीरकोलाहलमिम्भिमसमरगोंदलं ॥ १ ॥

जं गुमुगुमंतघोरघमघंगपपमूरिमारमारिबमाममूलपंपमिपमारंसुक पुसोरसायपोरं ।

जं हिंसिहिमंतवाहिपतुरंगपरखुरैसपावपीयरिमपुक्तिमासंवलिपसवल्ली विविहपोमंतचेरुबिलं ।

जं हेंधुमर्पतपककपहुकपारकमुकम्पसेवारसरिसहुरसविरहकुणमुप्पेमकुरंत पयममापं ।

जं रहियमुकपमाहविसेसरंपलंपहरसावकमपरिपगुवसिहरिपिसिहरिसुप्पमजाप संपमकुमंतपमोह ।

२ M [illegible], B [illegible] ३ MB [illegible]°, P [illegible]°, T [illegible]
४ BP [illegible]°

7 १ MBPK °[illegible]° २ MP °[illegible]°; B [illegible]; K °[illegible]° ३ MP °[illegible]°
४ MBP [illegible]° ५ MBP °[illegible]° ६ P °[illegible]° ७ MP °[illegible]°; B °[illegible] [illegible]° MBP °[illegible]°

6 a [illegible]° [illegible] 7 b [illegible]° [illegible] [illegible] °[illegible] °[illegible] 8 b [illegible] [illegible]; [illegible] 9 [illegible] 12 [illegible]

7 3 °[illegible] [illegible] 2 °[illegible]° [illegible]; °[illegible]° [illegible] 6 °[illegible]° [illegible], °[illegible]° [illegible]

जं हारदोरकेऊरकडयकंचीकलावमउडावलंबिमदारदामसोभंतजक्खजक्खीविमाणछण्णं ।

ज भीयेरं वराराकरालचक्काणुगामिमंडलियसूरसामंतकोंतकरवालचावसंघायसंकडिल्लं ।

जं दंतिदाणधारापवाहपम्मंतरेणुदीसंतदसदिसाणणभरंतसेणाणरुद्धरियविविहछत्तचिंधं ।

जं भिच्चदेहपरियलियसेयणीसंदविंदुहयफेणसलिलचिक्खल्लुतल्लखुप्पंतसंयडसंकिण्णकुहिणिदेसं ।

घत्ता—त पेच्छिवि पवलु उत्थरिउ बलु चोहिज्जइ मेच्छकुलेसहिं ॥
पवहिं को सरणु दुक्कउ मरणु रिउ धाइय चउहुं मि पासहिं ॥ ७ ॥

8

दुवई—गिरिदरिसरिसुहाइ जो लंघइ पहु सामन्यवंतओ ।
सो अम्हारिसेहिं किं जिप्पइ णिज्जियदहदियंतओ ॥ १ ॥

घहुकालहु दइवेण णिवेइउ हा हा पलयकालु संपाइउ ।
वयणु सुणिवि आवत्तचिलायहं मेच्छमहामंडलमहिरायहं ।
धीरें मंतं पउ पवुच्चइ आवइकालइ धाह ण मुच्चइ ।
सव्वु सहिज्जइ जं जिह ढुक्कइ हयविहिविहियहु को वि ण चुक्कइ ।
जहिं मंडणु तहिं अवसें खंडणु धीरत्तणु जि मणूसहु मंडणु ।
विसहर परणरसेण्णवियारा ते तुम्हहं कुलदेव भडारा ।
सुमरहु सामिसाल सब्भावें किं मएण किं किर बलगावें ।
तेहिं मि ए आलाव विवेइय णाय मेहमुह मणि णिज्झाइय ।

९ MB भीयरवदाढाकराल°, P भीयरावदाढाकराल° १० MBP °चिक्खिल्ल° ११ MBP चोइज्जइ
8 १ MBP °दहदिहतओ २ MBP संपाइउ. ३ MBP आवइकालि धाह मउ मुच्चइ. ४ MBP णिवेइय ५ °मेहमुह

8 वराग° भेड्डा आरा 10 °णीसंद° निष्यन्द
8. 4 a आवत्तचिलायहं आवर्तकिरातनाम्नो: म्लेच्छराजयो 9 b बलगावें बलगर्वेण

विपरफलाफलप्पसुम्मा — गरलायलपविखित्तगिरिवरवड ।
वसुसंतर्दसुमभीमस — सिरमणिगणमंडलदीवियदिस ।
भगकुसुमरसवासुराय — वर्णवर्ण ते कणि पराइय ।

घत्ता—णोछिउ उरगाइया विसहरवाइया किं पावसि गरुयत्त्वउं ।
कीलियसुरवरो माणससरवो पिहुरमि किं समत्तउं ॥ ८ ॥

9

दुवई—ता मेप्पमाहिवेण भणिया फणिणो गयंतगयवई ।
पिडणइ वेरिसेप्पमिममो तरुणीकरचलियचामरं ॥ १ ॥

कंपायाउ उप्परि भइणिसु — ता णायहिं वणभिरु पायसु ।
मयरसु तसइ रसइ वरिसइ घणु — पीयसु सामलु विलसइ सुरधणु ।
महिप्पीहरिय हरिउ बहुर तणु — पवसियपियहि पियहि तप्पइ मणु ।
कुडवकंदलु पीसइ घणु — तिम्मइ तम्मइ मणि चूरइ वणु ।
तहि तरुपवर पवर संचर हरि — तव वरणवइ कुसइ विरहर गिरि ।
वसु परिणवइ सुअइ पुम्मइ वरि — वाइरय सरइ मरइ पूरें घरि ।
वसु पसु सणसु जसु वि संजायउ — मगु मणेमु ण किं पि वि भावइ ।
सव कुसुमसरु विणारिउ संपइ — पिरखें मंपिय पंपिय विपइ ।

घत्ता—पाणिउ पीयगइ पिसु वि तरइ धणु णिम्मुणु कुडिलु दुरियहो ।
पावसु दयमवहो सयु दुजगहो को वरिसइ ववरि करिवहो ॥ ९ ॥

---

१ MBP °वाकेसुम° ; K °कसाळ

9 १ MB मिहमिनि २ MBP तव ३ BP °कंडु तंडु ४ MBP कारगु मि किं मि ण भावइ

---

12 *a* °तकूयवलीवव कालकसुमुणपूलणवलिना 18 *a* °पातुदाइव °फणेण तसरवणा 14 वर वहणा सीन.

9 2 दणमी दसमू 8 *a* बदणिहु आणीमणु 5 पाउदु मेघ 6 *b* तिमदतमद बनसी- मानि विनश्रे च. 8 *b* वद्दरव वीभत्सं वरद मति 11 नीववद विन पपाति

10

दुवई—सलिलुत्थल्लरेल्लपडिपेल्लणहयदुमविगयरिंछओ।
णवघणरावमुइयचंदक्कफलावुद्धसियपिंछओ॥ १॥

दीसइ लग्गउ वासारत्तउ सेणामहिलहि णावइ रत्तउ।
असिजलि णिवडिवि जलु पुणु धावइ भडभुयदंडहु संमुहु आवइ।
तहिं तं ण मिलइ गमणु जि मग्गइ लोहें गिलियहु को किर लग्गइ।
धुवइ किं पि अलिपिंछहिं दलियउ वहुमुहलिहियउ पत्तावलियउ।
को मंडणु विसहइ रिउघरिणिहि ढालइ सिरसिंदूरइं करिणिहिं।
वंस घस तुहु मइ वड्डारिउ पवहिं परचिंधें वेयारिउ।
महु सरु प्राणहारि णावइ सरु इय गज्जंतु व पभणइ जलहरु।
धोयइ मयमायंगहं दाणइं दुम्मेहहं रुच्चंति ण दाणइं।
थक्क सचक्कवाय गह णं सर तोइ तरंति ण के के किर णर।
तौ पभणइ णरणाहपुरोहिउ लोउ देव उवसग्गें रोहिउ।
पयहु पडिविहाणु लहु किज्जइ अइणु वारिवारणु चिंतिज्जइ।
ता राएं चलवइमुहु जोइउ तेण वि पेसणु झत्ति विवेइउ।

घत्ता—णियमणि चिंतियउ तेलि घित्तियउ तं चम्मरयणु जणभरधरु॥
उप्परि पुणु थविउ जगगउरविउ धवलायवत्तु जियससहरु॥ १०॥

11

दुवई—बारहजोयणाइं वित्थारें सिविरु कुलीरमाणिए।
पविउलछत्तचम्मकयसपुडि थिउ वरिसंतु पाणिए॥ १॥

---

10 १ K सलिलुच्छल्ल° २ MB पाणहारि, P पाणिहारि ३ MBP ताम भणइ ४ M अयणु. ५ MBP घत्तियउ ६ K °आयपत्तु जिह ससहरु

11 १ MBP वरिसत

---

10 1 सलिलुत्थल्ल° जलेनोत्पाटित, रेल्ल° चालित २ °चंदक्कफलावुद्धसियपिंछओ मुक्तचन्द्रकाणा मयूराणां कलापा उद्ध्वासिता 3 *a* वासारत्तउ वर्षाकाल 6 *a* धुवइ क्षालयति 8 *a* वंस वंस हे ध्वजदण्ड 10 *b* दुम्मेहहं दुष्टमेघानां दुर्मेधसां च 13 *b* अइणु चर्मरत्नम्, वारिवारणु छत्ररत्नम् 16 जियससहरु निर्जित चन्द्र येन तादृशम

11 1 कुलीरमाणिए मत्स्याना प्रीतिकरे.

गयणयलु भरंतिवलु गिरिसिहरु रेल्लियउ परिसरु पडरेण तोएण पेल्लियउ।
मरमायवरोहिं राए समुमासिम थिपसंति वरपरुच धारं समासिम।
ते दोण परिसंति ते भेय बाणंति पुरइं मिलइं सोकखाइं माणंति।
एयणोसरे साहणं जाम संवरइ संपत्तिपगण्मासिम मकिवलु ण दर करइ।
वावणवडपेयाव रिपयमिम संमरइ कमगणिकमाइवसासिपणइं बावरइ।
सत्ताहरले गए पवर कुंवेहिं पूरामणिहेहिं मारणविंवेहिं।
रंगारवहरिणीणकाणिविकारेहिं मुरुकुहरविसुकगएमिजारेहिं।
रत्तुंगमूसंपसंगुरियमावेहिं सिसुसरसहरयवारहावारवलेहिं।
णिकुंथिपपरंवजमरंवरीहेहिं माएलकोसंवकजमपमाणिहिं।
गवयाहिमाणेहिं परिमायिपमेहेहिं कवतीरवकुप्पेवकलोसारुवकोहिं।
बीसासविसवपमकोकिलपवहिं मद मद मरुतहिं मयगीसिविसिहिं।
हरिकरिमहाघोसामंतपम्माव विवपयर तिरमवर बेहिपड संघाव।
पमाहिरामण संगामसुहेण हसेवि देवाहिदेवस्स पुत्तेण।

घत्ता—परपरदुवखवो राय ववो वीरपट्टु सो वद्धउ।
सो विसहरमेणइं णयणवहरेंहिं पूरीवयवयंतु णं कुद्धउ॥ ११॥

12

दुवई—ता सोमेससहाससरवामरविरइयणंपवाहिणं।
मग्गा सकिसयाइ पीसइ थिय वयमयसहरिणयाहिवं॥ १॥

वमें वाररिमहासमउ खिम्मा वरवें वारं रिसामाकि रिम्मा।
सं वमकोयावि पय मयवस फणि पय मवमय गय सा सोतामवि।
मेषणरिसहिं सकरसु सम्मतं दोसीयेंहु कि किरं परिवमतं।

१ MBP °मिहुहेहिं २ B °सविहसनार° ४ MBPK °मोल्ल° ५ MBP °मणकिलेहिं ६ MBP मवमाहिमोहेहिं P °वेसुहेण MBP लई वीरपट्टु सिरि वद्धउ १ MB °वयु, P °मयु १ °एयं GK omit वनमावयु ११ MBP कुमवर वमउ.

12. १ MBP दोमण° २ MBP दोनोवहिं ३ MB किवर.

4 a मरमायवरोहिं सर्वोत्तमान्याम्; पहुत्त मिच पहुरे 5 a दोण द्रोणमेव 7 b वावणवडरोमाप पुराणो बवासहारिव बमवाल. 13 b मर मद मि° सर्वो 14 b मिवमवर मिपुर्वरत्

विसँभरियहं[4] किं किर सुयणत्तणु वंकगइल्लहं किं गुणकित्तणु।
छिदॆण्णेसिहिं[5] को रंजिज्जइ अणिलासिहिं किं परु पोसिज्जइ।
चरणविवज्जिउ को जसु पावइ णिच्चभुयंगहं णिच्चु जि आवइ।
रणजइ जउ गज्जिउ घणणाएं घणणाउ जि सो[6] कोक्किउ राएं।
सिरचूलाचुंबियभूभायहिं दूरंतरहु णमंसियपायहिं।
दिण्णहिरण्णवत्थसंघायहिं दिट्ठु राउ आवत्तचिलायहिं।
साहिवि मेच्छराउ गंजोल्लिउ अणुतीरें सिंधुहि पुणु चल्लिउ।
पहु हिमवंतु पराइउ जावहिं आइय सिंधु भडारी तावहिं।
देवय दिव्वदेह णउ सा सरि सिंधुकूडवासिणि परमेसरि।
राउ णिहालिवि कलसविहत्थइ लहु भद्दासणि णिहिउ पसत्थइ।

घत्ता—सिंधूदेवयए[7] जलयरधयए अहिसिंचिवि थुउ मउलिवि कर॥
दिण्णी माल तहो भरहाहिवहो णवपुप्फयंतथियमहुयर[8] ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे आवत्तचिलायपसाहणं णाम
चोद्दहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १४ ॥
॥ संधि ॥ १४ ॥

४ P विसहरियहं ५ P छिद्दाणेसिहिं ६ MBP कोक्किउ सो ७ P सिंधुवदेवए ८ B °पियमहुयर

12 7 *b* अणिलासिहिं वायुभक्षैः सर्पैः 8 *a* चरण° चारित्रं पादाश्च 12 *a* गंजोल्लिउ रोमाञ्चित उल्लसित प्रभुः 17 णवपुप्फयंत° नवानि पुष्पाणि कान्तानि यस्याम्, नवपुष्पाणां वा अन्तो मध्यम्

XV

मेहिणि सिंधुसरि पयवेप्पिणु रिसहजिणिन्दहो ।
पुणु संचलिउ पहु भयरसु जयंतु अमरिंदहो ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

I

सेणासेण्णाहिवपरिपरिय हिमवंतु पवेप्पिणु सचलिय ।
सोहइ पच्चंती पुण्णमुह कुवलयसणाहपरिपिवपमुह ।
दीसइ सेसत्थसि कणयउ महिसीउरु व सालायवरे ।
मालोमहीरहरूसरसहरउं कत्थइ खिखिणिखिणियउं वायरउं ।
कत्थइ तरत्तउं सारसउं कत्थइ तवतउं तावसउं ।
कत्थइ मयहरियउं णिज्झरउं कत्थइ जलमरियउं कंदरउं ।
कत्थइ णीणियवेल्लीहरउं णिद्दउं मजोतउं णाहरउं ।
कत्थइ हरियउं वत्तसियाउं पुणु गोरीयेयहु दसियाउं ।
कत्थइ हरियहवकसियउं करिकुंभुच्छलियउं मोत्तियउं ।
कत्थइ सुम्मइ णिकणिमुणियउं णयपीकरवीणारवपियउं ।
कत्थइ मसलसवसरि चडुमियउं कत्थइ सुयण कि किं भणियउं ।

घत्ता—कत्थइ किण्णरिहि गाइज्जइ सयणपियारउ ॥
रिसहणाहचरिउ फणिणरसुरलोयहु सारउ ॥ १ ॥

MBP give at the commencement of this Samdhi, the following stanza—

लच्छी यस्स करोति रायकमलसु च्छायारविंदे

क्रीडनमक्षेरिव सिचुरे देवरणं यहः ।
येनमं ... यस्य ...

... कृतिना ॥

MB read ... for .... G does not give it.

UK give it at the commencement of Samdhi XCV

1. १ MB "..."; P "..." but records a p "...". 4 MBP ... । MBP "...".

1. 5 ... 11 ... "..." ...

2

णिक्खित्तसुरासुररइणियले हिमवंतकूडतलधरणियले ।
णवचंपयकुसुमावासियउ साहणु सडंगु आवासियउ ।
बहुदोरहिं दूसइं ताडियइं रणवडहसहासइं ताडियइं ।
करिसालाणडसालाहरइं उब्भियइं पउरसालाहरइं ।
हरिवरमंदुरउ समुंडियउ णं घडदासीउ सुमुंडियउ ।
ठवियइं मणिमडवियासयइं अवराइ मि दिव्वइं आसयइं ।
दुव्वारवइरिमयपहरणइं अहिवासिवि भूसिवि पहरणइं ।
दक्खालियसंसहररयणियहि पोसहु पडिवज्जिवि रयणियहि ।
कुससयणि पसुत्तउ सइ भरहु उग्गमिउ दिणाहिवु णहि भरहु ।
करि धरिउ सरासणु राणएण बहु विहरिउ मंडलराणएण ।
आरुहिवि रहंगि ण सकियउ वइसाहठाणु सइं सकियउ ।
जो लोहवंतु परमग्गणउ सो गुणि संणिहियउ मग्गणउ ।
किं अच्छइ णवर उवेंदु गयउ हिमवंतकुमारहु णं गयउ ।

घत्ता—पडिउ सपगणए उप्पुंखु वाणु अवलोइउ ॥
चिंतिउ तेण मणे को एहउ कालें चोइउ ॥ २ ॥

3

किं पाणि पसारिउ फणिमणिहे तडयडिहे णहि सोदामणिहे ।
दीहरजालामालाजलिउ पलयाणलु केण पडिक्खलिउ ।
केसरिकेसरु उल्लूरियउ कालाणिलु केण वियारियउ ।

2 १ P reads after this मिहुणइं रमंति रत्तासयइं, अवराइ मि दिव्वइं आसयइं, णियपहणिज्जियदेवासयहिं २ MB read after this मिहुणइं रमंति रत्तासयइं, णियपहणिज्जियदेवासयइं ३ BP ससिहररयणियहि ४ P रहंगि ५ MBP उद्धगयउ ६ M पपगणए, B पसगणए ७ MB उप्पखु
3 १ MBPK पडिखलिउ २ MBP कालाणलु

2 5 *a* समुंडियउ मन्दुरोभयपार्श्वनिखातकाष्ठद्वयेन सहिता 6 *b* आसयइं आश्रया गृहाणि 8 *a* दक्खालियेत्यादि–दर्शित शशधरश्चन्द्र एव रत्न चूडामणिरत्न यया रजन्या, *b* रयणियहि रजन्याम् 9 *b* भरहु नक्षत्रप्रच्छादक 10 *a* राणएण रा द्रव्यं तस्य आनयनग्रहणकारिणा राज्ञा 11 *b* वइसाहठाणु धामपदजानु भुवि मुक्त्वा अपरमूर्ध्वीकृत्य वैशाखस्थानमुच्यते, सकियउं सम्यक् कृतम् 13 *b* गयउ गदो रोग
3 8 *b* कालाणिलु प्रलयवात

XV

मेल्लिवि सिंधुसरि पणवेप्पिणु रिसहजिणिंदहो ।
पुणु संचल्लिउ पहु भयरसु वयंतु भमरिंदहो ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

1

सेणासेण्णाहिवपरियरिउ विमलंबु थवेप्पिणु सत्तखिव ।
सोहइ गच्छंती पुण्णमुह कुसुमसमागमपत्थियपमुह ।
दीसइ सेवालय कामयरं महिसीउलु व लाहाभयरं ।
पाणीमहिरसफरसहरं कत्थइ किलिकिलिगिरिमिंधं वावरं ।
कत्थइ दरदरं सारसं कत्थइ रुवरवं तावसं ।
कत्थइ सप्फुरियं विसहरं कत्थइ कलसरियं कंदरं ।
कत्थइ वीणियपत्तीहरं विद्धं मऊरं माइदं ।
कत्थइ हरिणं कत्थिमारं पुणु गोरीयेवडु वसिमारं ।
कत्थइ हरिणाइकणियारं करिकुंभुब्भसियं मोत्तियं ।
कत्थइ सुम्मइ बणिवणिभुकिउ सवरीकरवीणारवरविउ ।
कत्थइ मत्तकरुग्गि वयुक्कउ कत्थइ सुव्वइ कि कि भणिउ ।

घत्ता—कत्थइ किण्णरि गायइ सवणपियारउ ।
रिसहणाहचरिउ कलिमलपुप्फयंतु सारउ ॥ १ ॥

MBP give at the commencement of this Samdhi, the following stanza.

सालो यत्र करोति वाचकमनःप्रत्यग्रकेलीवन
कौतिंगेन मनोहरा विघुणे ऐरावणं नृ ।
पौरस्त्यं पुरुषेषु यस्य कुसुमो मिथ्यात्व निर्दि
काव्यौघो जगतः प्रमुखं मोक्षपरिमित सूरिमिः ॥

MB read [illegible] for मिथ्यात्व G does not give it

UK give it at the commencement of Samdhi XCV

1. १ MB °महिसरसरउ; P °परिसरसरउ but records p °महिसरसरउ ४ MBP किलिकिलिमिरं ६ MBP °कुमरलिमिरं

1 5 b [illegible] 9 b [illegible] 11 a [illegible]

2

णिक्खित्तसुरासुररइणियले हिमवंतकूडतलधरणियले ।
णवचंपयकुसुमावासियउ साहणु सडंगु आवासियउ ।
वहुदोरहिं दूसइं ताडियइं रणवडहसहासइ ताडियइं ।
करिसालाणडसालाहरइ उब्भियइं पउरसालाहरइं ।
हरिवरमदुरउ समुडियउ णं घडदासीउ सुमुडियउ ।
ठवियइं मणिमडवियासयइं अवराइ मि दिव्वइं आसयइ ।
दुव्वारवइरिमयपहरणइं अहिवासिवि भूसिवि पहरणइं ।
दक्खालियससहररयणियहि पोसहु पडिवज्जिवि रयणियहि ।
कुससयणि पसुत्तउ सइं भरहु उग्गमिउ दिणाहिवु णहि भरहु ।
करि धरिउ सरासणु राणएण वहु विहरिउ मडलराणएण ।
आरुहिवि रहंगि ण संकियउ वइसाहठाणु सइं सकियउ ।
जो लोहवतु परमग्गणउ सो गुणि संणिहियउ मग्गणउ ।
किं अच्छइ णवर उद्धु गयउ हिमवतकुमारहु णं गयउ ।

घत्ता—पडिउ सपंगणए उप्पुंखु वाणु अवलोइउ ॥
चिंतिउ तेण मणे को पहउ कालें चोइउ ॥ २ ॥

3

किं पाणि पसारिउ फणिमणिहे तडयडिहे णहि सोदामणिहे ।
दीहरजालामालाजलिउ पलयाणलु केण पडिक्खलिउ ।
केसरिकेसरु उक्खूरियउ कालाणिलु केण वियारियउ ।

---

2 १ P reads after this मिहुणइ रमति रत्तासयइ, अवराइ मि दिव्वइ आसयइ, णियपहणिज्जियदेवासयहिं २ MB read after this मिहुणइ रमति रत्तासयइ, णियपहणिज्जियदेवासयइ ३ BP ससिहररयणियहि ४ P रहगि ५ MBP उद्धगयउ ६ M पपगणए, B पसगणए ७ MB उप्पखु

3 १ MBPK पडिखलिउ २ MBP कालाणलु

---

2 5 *a* समुडियउ मन्दुरोभयपार्श्वनिखातकाष्ठद्वयेन सहिता 6 *b* आसयइ आश्रया गृहाणि 8 *a* दक्खालियेत्यादि—दर्शित शशधरश्चन्द्र एव रत्न चूडामणिरत्न यया रजन्या, *b* रयणियहि रजन्याम् 9 *b* भरहु नक्षत्रप्रच्छादक 10 *a* राणएण रा द्रव्य तस्य आनयनग्रहणकारिणा राज्ञा 11 *b* वइसाहठाणु वामपदजानु भुवि मुक्त्वा अपरमूर्ध्वीकृत्य वैशाखस्थानमुच्यते, सकियउ सम्यक् कृतम् 13 *b* गयउ गदो रोग

3 3 *b* कालाणिलु प्रलयवात

किउ केण णरवपक्खाहरणु मणु केण विसुंभिउ वम्महरणु ।
दम्माहिउ माणु पुरंदरहो किं सिहउ पओहिउ मेयरहो ।
णियहत्थें विम्मेविउ जमि परिकुविउ केण हणेवि विहि ।
सिहिविसिसमयणु सिरिकिययरु कें हायकालु विसु भक्खियउ ।
कागि केण माणु णिरोहवउ महु केण रोसु उप्पाइयउ ।
को पाव पयाउ णहयरहो को हणइ एउ खियभुयबलहो ।
किं ण मरइ करवालेण हउ ण वियाणइँ किं सो मयमउ ।
सच मज्जु वि केण विसज्जियउ वंधविणु काउ पवज्जियउ ।

घत्ता—जेण विसुंक सर मारीइ समाणु फणिंदहो ॥
सो महु मरइ रणे जइ पइसइ सरणु सुरिंदहो ॥ ३ ॥

4

इय तेण गज्जियउं पुणु कम्मु साज्जियउं ।
णिरोहिं पत्तियउ विरीह विरियउ ।
विसुत्त विसियेउ मंतेण मंतियउ ।
हियवम्मि चिंतियउ रापण पत्तियउ ।
मंभेरिं वाइयउ पुणेहिं भंतियेउ ।
पुण्णहिं सेवियउ केण वि ण वंचियउ ।
इयमेरिसीताणु णवमीरमो वाणु ।
ता तम्मि खिविदयाइं सुरपक्खियमहियाइं ।
णिरिक्खियरियताइं परिक्खेमसंताइं ।
चारंभियसंगाइं कंपागुपसाइं ।
विबुहहिं चप्पियाइं मणहियपप्पियाइं ।

---

३ M विसरिथउ BP विम्मविउ ४ P हणइ ५ MBP किं ६ MBP वंधविणु ७ M विसुक सर.
4. १ MK विरोह २ M भवियउ ३ MP परिक्खेमसंताइं

---

5 a दसवदिय सरीहि 9 b सुयलुपय अतीव वर्लेत 11 सचरिवणु बद्धत्वा
4. 1 b चरियवई प्रसुणीकरणम्. 6 a संचियव प्रताणीत 10 a चारंभि° तदारभ्य 11 b ताविसम्पियइं मनआर्पितानि.

वेल्लीहिं थल्लियाइं अच्छरइ ललियाइं ।
गाढं विमिट्टाइं मम्माइं मिट्ठाइं ।
इट्ठाइं दिट्ठाइं पियए पयट्टाइं ।
अग्गिंदिरगयस्स आणाइं भरहस्स ।
जो जियइ सो जियइ इयरस्स रायणियइ ।
अइरेण अवयरइ धइवसु वि धुवुं मरइ ।
पुणु पुणु वि जोएवि इय तेण वाएवि ।
सह समियसमरेहिं अवरेहिं मि अमरेहिं ।

घत्ता—दिट्ठउ चक्कधरु चमरहिं चामीयरदंडहिं ॥
रयणहिं मोत्तियहिं पणवंतें णियभुयदंडहिं ॥ ४ ॥

5

णरणाहें रयणहिं पुज्जियउ हिमवंतु कुमारु विसज्जियउ ।
सो किंकरत्तु मणि धरिवि गउ राणउ पुणु तिहुयणरूवउ ।
हरिसद्दसुभीमगुहाहरहो सइं आयउ वसहमहीहरहो ।
दीसइ गिरिमेहलघुलियवणु ण धरणिहि केरउ एक्कु थणु ।
णिज्झरजलदुद्धपवाहधरु णिरु णाहलडिंभहुं सोक्खयरु ।
रायारउ णावइ कुसुमसरु मयवंतु णाइ कुपुरिसपसरु ।
रसवंतु णाइं णच्चणु पवरु बहुणायालंकिउ बहुविवरु ।
बहुविदुमोहु ण मयरहरु बहुफलपयासि ण पुण्णभरु ।
बहुककणु णं महिमहिलियरु बहुओसहिल्लु ण भिसयवरु ।
हरिसेविउ ण जिणु परमपरु ।

४ MBP पइट्टाइं ५ MBP धुउ ६ MBP अवरेहिं अमरेहिं ७ MBP पणवंतहिं
5 १ MBP हिमवंत° २ B किं करत्त ३ MBP आयउ ४ M एक्क ५ MBP णच्चण°.
६ MBP महिलयरु

12 *a* वेल्लीहिं आवलीभि 16 *b* रायणियइ क्षयकाल 17 *a* अइरेण अचिरेण, शीघ्रम् 18 *b* वाएवि घातयित्वा
5 7 *b* बहुविवरु बहुच्छिद्र बहुपक्षी च 8 *a* विदुमोहु प्रवालौघ, मयरहरु समुद्र 9 *a* महिमहिलियरु पृथ्वीमहिलाया कर, *b* भिसय° वैद्य 10 *a* हरिसेविउ इन्द्रेण सिंहेश्च सेवित,

करिदसणमुसलसमिप्पिणयतणु जं को वि महाभडु रयरणु ।
सुरणायणरमणीमीणपिउ जं णिवरससासणयंसु थिउ ।

घत्ता—तहु मरिएण तहु पच्छइउ चगहुं मि पासहिं ॥
णरमिहिणयवरहिं मणपत्थियवामसहासहिं ॥ ५ ॥

6

जहिं दीसइ तहिं मच्छरसहिउ मोक्खु ण पिरिंदु मुणिगणमहिउ ।
णिवइ मरहाहिउ बहुगुणउ जहिं जाम्रु णिहिणाह महु तणउ ।
अण्णण्णहिं रयणहिं भुसियइ देइ पवरु वसुमइभुत्तियइ ।
वोक्कारिय के के णउ णिवर मोहंधहु मुक्कइ दो वि मर ।
मण्णउ परमेसरु पढ़ु पर जो हुउ पम्मायरु मुयवि वर ।
बहुणरवरकरयलमलियर हउ णिप्पहिउ सिरिपुण्णाखियर ।
सरंगरंगमारेण हुव मयमत्तउ मत्ती मुण्ण धय ।
मायापवंचसीलापयहिं वरिहिंसिय मंयमणगणपहिं ।
जा णिसिय चक्कमपहिं णिया जा हरे हमारु णउ णियर ।
मंसिपाणियचक्कहसु महइ संकुसवरी वंकिम वहइ ।
चवकउ कुडयणपंकयो पुणु भेछिवि धमणु पासि सैणो ।
णिग्गिणयउ जाइ तहिं गोमिणिहिं मासउंपुरिस करणामुणिहिं ।
णिवसंति महंत वि हणि थिर वारिहिं करिणीरव पीसु थिर ।

घत्ता—तारं भुत्त णिद पुणु पुणे साहुं हुउं अप्पइ ॥
वसुमइ हसुंसिय जयि केण वि समउ ण गम्मइ ॥ ६ ॥

MBP °पणरिह.

6 १ MBP एव २ MB °रगहारेन. ३ MBP वडिरापविय° ४ MBP °वरवरो. ५ MBP वरो ६ MP भायणु पुरिस; B भायरणुरिह. ७ MBPT णिहुणिय

6 4 a णीला णिव ऋतिणमिणा जयाण. 6 b पुण्णा णिवद पुंजण्णा. 8 a °यो कारवर्द °अोकार- यणेहि 9 णिणिय वीजिण 10 a महइ धम्मवरि 11 b पुवैसणि—पुर्णं तुरय णयाणि पर णार्दि. 12 b णरवाणणिहि णरकमुहेः 13 b वारिहि णजलामनमनर्विम् 15 हंसुसि णं पुंजपी वेसमाणि॥

7

णक्खत्तु वि ण लब्भइ थत्ति जहिं किं णाउ लिहिज्जइ पत्थु तहिं ।
मइ जेहा परियर को गणइ जे जे गय ते पुरिस भणइ ।
परमेसरु सामिउ जेण गउ सो पहु जयम्मि ण केण कउ ।
पर फेडवि जिह घेप्पइ पुहइ तिह णामु वि फेडिज्जइ णियइ ।
ता धवलमहल्लउल्लगइणा थीलज्जामलमलिणेण वि पहुणा ।
साएं सायरु ओहारियउ अण्णाइं कासु वि उत्तारियउ ।
करवालगणिन्हालियउ णियणाउ गिरिंदि चडावियउ ।
रिसहहु रहसमणरायकरो हउं पुत्तु पढमतित्थकरहो ।
णामेण भरहु भरहाहिवइ गोत्तउ पर महियलि अत्थि जइ ।
हिमवंतजलहिपेरंत मइ छक्खंड वि णिज्जिय वसुह मइं ।
ता तियसहिं साहुकारियउ भरहेसरु जयजयकारियउ ।
पइं जेहउ को वि ण चक्कवइ को एम मणइ कि णाउं थवइ ।
केहु अग्गइ धावइ कमलकरि कमलालय कमलाणणिय सिरि ।
दालिद्दहारि किर कासु घरु तिजगंतगामि किर कासु जसु ।
अत्थि कासु धवलियवियंभयरु पइं मेल्लिवि को किर कप्पयरु ।
पइं मेल्लिवि णाणहु कवणु घरु परमेप्पु कासु देउ पियरु ।

घत्ता—कुलें विक्कमेण गोत्तें चलेण णयजुयत्तें ॥
तुज्झु समाणु तुहुं कि अण्णु माणुसमेत्तें ॥ ७ ॥

8

सरवरजलकीलियसारसय दरिसावियचंपयसारसयं ।

7. १ P किउ २ MB °मलिणाणण वि पहुणा, P ° मलिणाणणपहुणा ३ MBP णियणामु. ४ MB पढमु ५ P पहुअग्गइ ६ M दारिद्दहरि ७ MBP तिजगत° ८ MBP धवलियवीरतयरु ९ MBP परमप्पु १० MB कुलेण ११ MBP णयजुत्तें.

7 5 *b* थीलेत्यादि—लज्जामलमलिनेन स्वामिना. 6 *a* ओहारियउ निसे अवधारितम् 10 *a* °पेरंत पर्यन्ता.
8 1 *b* °चंपयसारसय चम्पकवृक्षाणां मध्ये सारास्तेषां शतानि, चम्पकलक्ष्म्या रसो वा यत्र.

कामम्मपरिहिंडियकुंजरयं गयमंगलविगयवियकुंजरयं ।
फलमारोणयपहुलफविडव रायपंथिमयहि सयदविडवं ।
भासहियासारियविसहरयं पणसुपीहसमीरियविसहरयं ।
मारेप्पि समग्गउ परपिहरे सवयं सेप्पि परंपरपिहरे ।
चक्किणे मइ पहुणा पयरयं सारविकरकसणोरयरयं ।
महिमायवंतु वीसंकमइ पुव्वविसमायं संकमइ ।
हिमवंतसयम वि विक्कमइ विपसेहिं अंतु चसुई कमइ ।
णागरहरिकरिमहिसपस भयउंभिवि वंभिवि महि सयल ।
विपमइहि विहाविवि पंहवहु मंथारयिपुलिपइ पिपउ वहु ।
जगसंसियमसिपासिपहिं मेगुयहिं विपयंपारुसिपहिं ।

घत्ता—दीसइ पंडुरउ हिमवंतसिहरि सिगणाउं ॥
पं भरहहु तणउं जसचिमसिउं ससि विलग्गाउं ॥ ८ ॥

9

समिरयपमय परिममियमय ।
उपपणगहिरे ववविहुयहरे ।
पगयियपहरे सुरसरियिहरे ।
विपसइ गुणिणी अमरेवरपमणी ।
पसहारमणी जणमणरमणी ।
उवसमिवपणा गुपमयवपणा ।

8. १ MBPT °विलएहि २ MP add after this: विमलयरु पुवमिरयं चं वहर चवि चवंतरहरयं सरं वेविवमिजरलोहरयं महिगुमिरि चं मचिवेरयं D adds after this. तं वेविवमिरर वेहरयं विमलयरु पुवमिहरयं पं वहर चविबमविमहरयं महिगुमिरि चं मविवेरयं ३ MBP वेगुपं हपमसवगोरर. ४ MP मयरपिहर. ५ MBP मगुयहि

9 १ MK अमरवरमणी but T अमरवरमणी

2b मिहु परत पवहगुवरर 3a °विवर्द चाप b हरवरेत्यादि-एचिरमणे हरूखेवरीरवर 4 b चचेत्यादि-चउगदिवंवणीयेन चर्टीन पचमानी एव सुरते पव 6 b पर वर मिर हरूवरेरवर 7 a चौदहरू विरवसि b नंदहर सप्पामवरमार पर्व 8 b पवहर महपर्वि 11 a पक्षि पारसि वरि वचिवरविसे, b चगुयहि पगु ; विपा पसि वहि एपणवरणे

वरगयगमणा कयजिणण्हवणा ।
पविउलरमणा पीवरसिहिणा[2] ।
पंकयचलणा[3] सिरकयसुमणा ।
पसरियपुलया वणसुरकुलया ।
विरइयतिलया मणसियणिलया ।
णरणावियपया चलमयरधया ।
मुणिमइविमला हिमकरधवला ।

घत्ता—गंगा णाम सइ सुरसुंदरि णयणपियारी ॥
रूवें जोव्वणेण देवाह मि विम्हयगारी[4] ॥ ९ ॥

10

णरवइचरियं गुणविप्फुरियं ।
हियए[1] धरियं चलिया तुरियं ।
तिवलितरंगा देवी गंगा ।
णिवसामीवं पीणियभावं ।
पत्ता धीरा सालंकारा ।
भुवणपसत्था मंगलहत्था ।
दुत्थियमित्तो परहियजुत्तो ।
जगगुरुपुत्तो पंकयणेत्तो ।
उत्तमसत्तो गुरुयणभत्तो[2] ।
जायविवेओ भावियभेओ ।
ढोइयदाणो कयसमाणो ।
खलकुलचंडो दावियदंडो ।

२ K omits पीवरसिहिणा ३ K omits पंकयचलणा ४ MBP विंभय°
10 १ MBP हियवइ २ K गुणयणभत्तो

9 9 *b* °सुमणा पुष्पाणि 10 *a* °पुलया पुलको रोमाञ्च, *b* वणसुरकुलया व्यन्तरदेवकुले जाता 11 मणसिय° मदन
10 4 *a* °सामीवं °समीपम्, *b* पीणियभावं हृष्टचित्तम्

मासियपसामो सखिपियमासो।
पमाकामो पायरकामा।
हयसिरिविरहो विद्धो मयहो।
भत्तिमराए कुसुमकराए।
पोत्तगिराए नवियसिराए।
दिन्नासीए पुणरवि तीए।

घत्ता—णयणविसालसियहा पं पुण्णिमाइ ससिकंदहो ॥
णमयभरिउ कण्णसु पल्लवियउ सीसि णरिंदहो ॥१०॥

11

कडयलउ कडयोवंदु कर कर मउलिवि मेरुसु वि सिहिर सिरे।
मयंहार हार णीहारविंदु करयसु चंदु माणिक्कासिंदु।
हिमवंतसिंहरिसिहरेसरिए सिन्धउ पविरु सुरसरसरिए।
जिह चंमसुणु तिह चंमसुए ण सहइ पउमि जायाउसुए।
रसणा महुरसणा पेरिपहिं माखेम अलिमालाबेंदियहिं।
मोहंती दिव्वी करयाहि पहुंमिपवडसायरयाहि।
पंतीई विरच्चउ सुरयणाई पंजिउ हिययउ सुरयणाई।
छत्तई सयवत्तई सिरिकयहे वत्थाई णेवत्थाई मयमि वहे।

घत्ता—इय गेण्हवि णिवेण मणहरमरगयमीणागरु ॥
पुज्जिवि पहुविय णियमणयणहु मय गंगायरु ॥११॥

11, १ MBP णयणाणंद. २ B मउलिवि ३ MB मयहार. ४ MB °सिहरम्मि° ५ B करयहि
६ B पतीउ

16 b सखिरसियामो सौभाग्यवती ख. 19 णयणविसालसियहो पविमसियलसितस; पुण्णिमाइ पूर्णिमया कन्या 20 णमय भिउ तो सि कन्धोपरि स्थापित

11 1 b मउलु मुकुट 2 b इरवंयुवयु मरीचमाल मधुसुदन कन्न.. 4 a णवमहरए हरवाद-पुणे आमय ममस्थे 5 a महुरसणा मधुरवाण्या, b °हसिवपि पन्न 6 b इन्द्रणिरेसारि— सर्वाणि यसायाभ्यः या यह भावाय बहु प्रमुख हुम्हो तस्या पद्मि तवी. 7 a पंतीउ माला; सुरयणई सौभाग्य- मन b सुरयणई देवनामानम् 8 b वहे बराया

12

पहु विजयलच्छिआलिंगियउ भणु केण ण दंसणु मग्गियउ ।
सुरसरि साहेप्पिणु णीसरइ वलु दिण्णदाणु कयणीसरइ ।
सरितीरेण जि पुणु संचरइ हा हरिणवदु तहिं किं चरइ ।
जहिं धूलि होंति गिरि तरुवर वि उल्ललियरओहें रहिउ रवि ।
सरि छज्जइ उग्गयपंकयहिं वलु छज्जइ चिंधछत्तसयहिं ।
सरि छज्जइ हंसहिं जलयरहिं वलु छज्जइ धवलहिं चामरहिं ।
सरि छज्जइ सचरतझसहिं वलु छज्जइ करवालहिं झसहिं ।
सरि छज्जइ चक्कहिं संगयहिं वलु छज्जइ रहचक्कहिं गयहिं ।
सरि छज्जइ सरतरंगभरहिं वलु छज्जइ जलतुरगवरहिं ।
सरि छज्जइ कीलियजलकरिहिं वलु छज्जइ चल्लियमयकरिहिं ।
सरि छज्जइ बहुजलमाणुसहिं वलु छज्जइ किंकरमाणुसहिं ।
सरि छज्जइ सयडहिं सोहियहिं वलु छज्जइ सयडहिं वाहियहिं ।

घत्ता—जिह जलवाहिणिय तिह महिवइवाहिणि सोहइ ॥
महिहरमेयणिहिं एयहिं किं फिर को णउ मोहइ ॥ १२ ॥

13

अक्खिउ णिग्गमणपवेसु जहिं पत्तउ णरणाहु दिणेहिं तहिं ।
वेयड्ढगिरिंदहु पच्छिमहे जिह आसि तिमीसहि दुग्गमहे ।
मृगमग्गलग्गअलियल्लियहि कडयगुहाहि पुव्विल्लियहि ।

12 १ MBP °आलिंगियउ २ MBP दिण्णदाण ३ MBP हरिणविंदु किं तहिं ४ MBP गय ५ MBP चिंधछत्त° ६ M चक्कहिं हसगयहिं ७ P °तरगतरहिं, but gloss तरङ्गसमूहे ८ M adds after this यलु छज्जइ कीलियजलकरिहिं, which obviously is the scribe's mistake ९ MB किं किर. १० MBP णिवधर° ११ M महिहरभोयणिहिं १२ MBP एयह किर
13 १ M णिग्गमणु २ MBP मिग°

12 2 *b* कयणीसरइ कृता निःस्वानां दरिद्राणां रतिर्येन 4 *b* उल्ललियेत्यादि—उच्छलितो यो रजःसंघातस्तेन रहिओ आच्छादितो रविः 9 *a* सरतरङ्ग° जलस्य तरङ्गा 12 *a* सयडहिं स्वतटे, *b* सयडहिं शकटैः 13 जलवाहिणिय जलवाहिनी नदी, °वाहिणि सेना 14 महिहर° पर्वता राजानश्च,
13 2 *b* तिमीसहि तिमीससंज्ञायां सिन्धुगुहायाम् 3 *a* अलियल्लि° व्याघ्र,

तहिं जिणवरसेण्णु णिसण्णु जिह ण णिसण्णइ गिरिकंदरम्मि जिह ।
णिहिणाहें भणिउ पहाणियाउ गुरु वोल्लइ पेसणु दिण्णु तउ ।
तणु एँवँ पुणु वि कयाइ तिह णिरवेक्खिउ वयइ हरि जिह ।
पत्तउ पसाहिवि पहिं तउ जमलइ सुरपसरणेण सहुं ।
छम्मास पसेवउ मज्झु मई आएसमि पडिमाएण पहं ।
भणिउ सुरपालपुरपइणमरेण ता जमुणसुरेण महामरेण ।

घत्ता—पुप्फवंतेण पुणु हरिसिय करेवि पवरें ॥
माहविवि हयउ गिरिगुहकवाड पविवरें ॥ १३ ॥

14

णियवइसवि जिह दुहियपडहु जिह रिवसयरम्मिम तिमिरसहु ।
जिह सुयसहावें भणयसउ जिह पिसुणें दूसिउ भेहमउ ।
सुकइरसमायमि कुकइ जिह विहडिउ कवाडु फुडु हरि तिह ।
तहिं तहु भीसु जो णीहरिउ तहु महपरु कहिं वि ण पवसरिउ ।
पेल्लु वि णिहरत्पसि एयपुरु णिरिण्हइसाकि णामेण सुरु ।
पडिहारें राणउ परिसिपउ कणकमकमसोमेणालिसिपउ ।
वहवाइणा साहिउ मेच्छमहि वासि दुई तहु जमणम्भिणहि ।
णाविवि पवंसिय पहुहि पय तहिं णिवसेवहु छम्मास गय ।

घत्ता—ण वर गुरुकूडउ भरहामरोणोउ जायउ ॥
सम्माइं सीयलउ णं दीयर करुणु पयायउ ॥ १४ ॥

---

१ MBPK णिह ४ MB °कुमरम P कुमरणु K कुमरण ५ MBP पुप्फवंतहु ६ P करवी MBP हरिय पेल्लेव MBP हरिरवि

14 १ MBP णीहरिउ २ MBP को ण ण. ३ MBP °णेनाणि ४ MBP णिवसवहि ५ P °णोम्म

---

6 b गिरि कुहर म गिरिकुहरलोण्ण.

14. 6 b पयसेणा रि- महरकमोरालोजेन हरिद 7 b ववव णिव वरि समरम्म णवी

15

ता मतिहिं गुज्झु ण रक्खियउ परमप्पयतणयहु अक्खियउ ।
तुह माउयाहि मयरगइहि ते दोण्णि वि भायर जसवइहि ।
णामें णमि विणमि कुमारवर गभीर धीर रणभारधर ।
णहयरवइ हुया अवियलहे णिवसंति एत्थु गिरिमेहलहे ।
हलियसाहाफुल्लियवणइं पण्णास सट्ठि खगपट्टणइं ।
उद्दामहं गामहं तेत्तियउ कोडिउ धरणेण विहत्तियउ ।
भुंजति रमति गमति दिणु पणवति तुहारउ जणणु जिणु ।
त णिसुणिवि भूसियसमरधुर पहुणा पेसिय गणवद्ध सुर ।
गय तेहिं भणिय खयराहिवइ छक्खडमंडलावणिविजइ ।
महियलि उप्पण्णउ चक्कवइ जो रिसहणाहु भुवणाहिवइ ।
तहु पुत्तु भरहु लहु अणुसरहो अहिमाणु मडप्फरु परिहरहो ।

घत्ता—पत्थिववित्ति जइ णउ सयणवित्ति पडिवज्जइ ॥
गुरुहुं सडिंभेहं मि दोसिलहं दंडु पउंजइ ॥ १५ ॥

16

तो बंधुणेहभउ भावियउ खयरिंदहिं कज्जु विहावियउ ।
हियउल्लउ धीरु वि कंपियउ पणप्पण णप्पण पयंपियउ ।
तणुतेयपूरपिंगलियणहु जिह देवदेउ तिह पुणु भरहु ।
अम्हहं आराहणिज्जु हवइ भणु तवणहु उप्परि को तवइ ।
भणु जलणहु उप्परि को जलइ भणु पवणहु उप्परि को चलइ ।
भणु मोक्खहु उप्परि कवण गइ भणु भरहहु उप्परि को णिवइ ।
इय घोसिवि ताइ विसज्जियइ आयइ अमरउलइं पुज्जियइं ।

15 १ MBP गुज्झु २ P सडिंभरह
16 १ MBP ता २ MBP णिवइ

15 2 *a b* माउयाइ भायर तव मातुर्यशोमत्या भ्रातरौ 5 *a* हलियसाहा° वलितशाखा . 8 *b* गणवद्ध सुर अङ्गरक्षका देवा 11 *b* मडप्फरु मिथ्यागर्व

16 3 *a* तणुतेयेत्यादि–तनुतेजसो देहप्रभाया भरेण पिङ्गलित नभो येन

तूरइं गुरुरवइं सिर्पमियइं कुसुमविपसरइं समुम्भियइं ।
माएय दरिकरिवरमंदेवइं भाइयइं मियमियपरियगइं ।
कवि वे पि सहायर मीईरिय दिम्मिंसिविसताआर्हि भरिय ।

घत्ता—पयपक्किकदीहे परिसारिय देप समाणहिं ॥
जाहिं मियसर थियउ तहिं भाएय रयणविमाणहिं ॥ १६ ॥

17

मउसियकोरीहिं पणमियमिरहिं पहु बोल्लिउ णमिविणमीसरेहिं ।
भग्गहारउ मिव कुसमामि तुहुं पइं दिट्ठर पयणइं हार हुइं ।
पइं दिट्ठउ धायह भोमरह पइं दिट्ठउं घरि सिरि परमरह ।
गुरु तायदु दयवम्मीसरहा आएसें परमजिणेसरहो ।
चामीयरमणिविम्मियघरइं भरहम्मइं रोयरपुरवरइं ।
अहिरायइं भासि विरुल्लाइं जइ पइहिं पइं पविकल्लाइं ।
ता भुंजहुं धे ता गुरु जि भर अम्हइं पुणु वेरंबरिय गर ।
तं सिणुणिवि पइं भासियउ अण्णायउं जं ण पियासियउ ।
मंदु माणपयतु ण विरमियउ तं तुम्हहिं चंपउ बवसियउ ।
सिह मउडम्मयपूरामिविसा विरत्तालि महापरुख कमिया ।
गिह पवहिं मह वि णमण्णियइं पाणिहिं दयरणयरइं पियइं ।

घत्ता—क्षियमरभंगणहा वसवंतउ रिद्धिमणाहहो ॥
णमिविणमीसरहिं पडिपण्ण सेप भरणाहहो ॥ १७ ॥

18

गयगु कंतोपियणिद्रुमणहा पणयणिगु गय णसिहेमवहो ।

१ P रम्मइं. MDP दोमरिय M सिरिविणिदिस°, B सिंहविसेसि, P सिविणीरे २ MBP भमरविलासी
17 १ M भणय २ MDP तुहुं जि भर ३ MB वरंबरिय ४ B गु ५ B वु°
18 १ P वंदणिह

10 ♭ दि निविनि मिनराणदि रिय एव विणय स दर नरवरणि वे॰
17 6 ॰ अ दिहदं मोहोवेव वसोदेव 7 ॰ दददवददय सिवाणं भी

ते पेच्छइ सिरिसिय पट्टविवि | सणेर्मग्गइं पवरइ णिट्ठविवि ।
मग्गलइ ढोयइ भमणियत्तु | उरगियसहलकप्पालत्तु ।
मरगयपियलुलियचल्लंबिधयत्तु | गुरुआरि उदीरि ण माइ पत्तु ।
णउ जणइ कणइ फणिणियरु | पहु थमइ णाइ णियसयरु ।
पउ गुणइ विप्पइ माहप्पु | परिगोलइ लोलइ पगुरप्पु ।
अहमन्दइ गोयइ मदु धरि | रहु थक्कइ पक्कइ पंथें हरि ।
तहु छायें गेयें गमिय रय | थिरसाहेंा गोवइ गुत्त पय ।

घत्ता—थंगिण पढिणहिं जयणहिंदुणिग्घोसहिं ॥
गंभीर गिरिगियय पडूसहिं पढारसहासहिं ॥ १८ ॥

19

जणु जूरइ पूरइ मग्गु ण वि | णरणिहियउ णिहियउ चंदु रवि ।
खोणिणियइ मणियइ मट्टियइ | अभारविपयारवियट्टियइ ।
उज्झायउ जायउ उज्झरउ | गयणउ पीलु धाग्यिपल्लउ ।
संकमेण पमेण जि गयउरउ | मेरुभरियउ सरियउ उवसरु ।
तहु कुहरहु कुहरहु णिग्गयउ | कैलासगिरीसहु लहु गयउ ।
सुरणियरहिं सयरहिं परियरिउ | णिज्झरयरसरवारिहिं भरिउ ।
गयवल्लहिं भल्लहिं सेवियउ | सिहिजालहिं चवलहिं तावियउ ।
तरुजालहिं णीलहिं छाइयउ | फरसुकारेहिं णिणाइयउ ।

घत्ता—सो महिहरपवरु दीसइ गयणंगणि लग्गउ ॥
ण महिकामिणिहि भुयदडु पहसियमग्गउ ॥ १९ ॥

२ MBP सणीरइ ३ P °णिपइए ४ MBT उयारि, P उमरि, ५ B थंभइ थभइ. ६ M गंधु, BP कणु ७ MBP णियगमइ ८ MBP गद्द ९ P णिमइ

19. १ MBP फाणणियइ मणिमइ. २ MB गवमेण ३ MBP जलभरियउ. ४ MB णिग्गाइयउ.

18 2 *a* सिरि पव लक्ष्म्या भर्तारो 7 *a* अइ म ल्द इ मन्दगमने करोति

19 1 *a* पूरइ मग्गु ण वि परिपूर्णो मार्गो दृष्टिविषयो न भवति 2 *a* मणियइ स्फटिका 4 *a* संक मेण सेतुबन्धेन, *b* सरभरियउ जलपूर्णो 5 *a* कुहरहु पर्वतस्य, कुहरहु गुहाया

20

जो मज्जणपिच्छाविहियपसिद्धु विसइपसिद्धरयणायणिचिंधु ।
जो हरिसिंघसीहासिविसमेदु घडुब्भमाहिपवेसणु ।
जहिं दिट्ठें कुसलाहागमणं किंणरवीणारियहरसणं ।
भवि संवरिवि ण रवि भुयइ जहिं णाहकरिमउ सहुं भुयइ ।
जहिं सयणिवणि मैमयकरहिं सयरीरमाउं वि मयणरहिं ।
जहिं मणिमिणिहि पेच्छिवि सवणु महिसिहिं कीरउ परिवयणमणु ।
जहिं रोलंबीहु मच्छिवि तरणु मरणपयणहु णाणउ हरिणु ।
जहिं बद्धमहिसिहु परिहरिवि णहयरणहु सुत्ती चेमरिवि ।
सुहसाहसमहु विसहरु पियर मयरहु वि भुयंगहु पहु मर ।

घत्ता—पेच्छिवि अममहिसु जहिं अच्छिवणिसीहु ण रसह ॥
जिणमाहप्पएण परिवयणपसिच्छ णम दीसह ॥ २० ॥

21

जहिं रंदुणीकददरंसियउ किरि मंजारें ण विसंसियउ ।
किं मोत्तिउ किं णं तुसारकणु जहिं वेयरु संजउ सीयरणु ।
जहिं ओससिसीयरु पवणउ रयणिहिं पुलिंदु सहुं संचरउ ।
जहिं वायउ धुअपयणवियउ मुणिपवरो सुवणउ पवियउ ।
जिणणाहें पोसियं चीवरउ जहिं पसु वि विसउ वि चम्मरउ ।
सुरवरिंयवि सेवउ जाहु तहु जहिं दिवउ धम्मोसरिमउ ।

20 १ MBP धुधु २ MBP रोसहिं सुर° ३ M °करणेण ण रवि; B °करणेण ण रवि; P °करणेण ण रवि ४ MB मयणपमरहिं ५ MBP °मयर णरयमरहिं ६ MBP रोसमेव. MBP °जहिंसु.
21. १ B मजरेण २ MBPT सिहरिवर and gloss in T सिहरिवरा. ३ P च ४ MBP रोसिम.

20. 2 a "सीहसिहिविसमेहु" सिंहसमुद्र. 4 a ण रवि भुयइ ण रवेण मुयति माणसेन करेणैव भक्ति-सिद्धैः 6 a पवणु तपरहित् b परिवयणमणु स्वल्पयुक्ति 7 रोमगीहु पर्यात्मा; b णहु एक-वनस्पालम् 8 b वमरिवि चाला 9 b भुवणहु विसह. 11 परिवयणपसिच्छ णव दीवह अतिशयो यस्मिन् अपि कथा रसते

21. 1 b च भिवसियउ न हता 2 b वकर चरते कणय पसरो तुषि 4 b सुवणहु सुच-मुच्यम्.

पोमावइहसु कडक्खियउ जहिँ वरुणहु मयरु णिरिक्खियउ ।
जसु तीरइ पवणहु तणउ मउ सिहि मेसेँ सहु कीलाणिरउ ।
बारहकोट्ठेहिँ अहिट्ठियउ जहिँ समवसरणु सइ संठियउ ।

घत्ता—तहु गिरिवरहु तले धरणीसेँ सिबिरु विमुक्कउं ॥
णावइ मंदरहो चउदिसु तारायणु थक्कउं ॥ २१ ॥

22

मणिमउडपट्टभूसणहरिहिँ सुरवरकरिकरदीहरकरहिँ ।
कंठोलवियमुत्तावलिहिँ उब्भाइयणवकुसुमजलिहिँ ।
तणुतेउज्जालियवणत्थलिहिँ उवसमवंतहिँ पसमियकलिहिँ ।
कइवयणिवेहिँ सहुं सुद्धमइ पहु गिरिसिहरारोहणु करइ ।
आवतहु रायहु सो सिहरि णिज्झरजलधाराभरियदरि ।
सीहासणचमरीचामरइं छायादुमछत्तइं सुंदरइं ।
मयणिब्भर वर गज्जंत गय वणयर किंकर गउय गवय ।
णं दरिसणु अग्गगइ ठवइ ण कोइल कलरवेण लवइ ।

घत्ता—तरुवत्तेँ गिरिणा फलु फुल्लु पत्तु ण दिण्णउं ॥
महिहरु महिहरहु अवसेँ पालइ पडिवण्णउं ॥ २२ ॥

23

आरुहिवि धराहरवरसिहरु अइरुद्दचंदकररासिहरु ।
परमप्पय पयपइ पइसरइ जिणसमवसरणि तहिँ पइसरइ ।

५ P सिमिरु ६ MBP पमुक्कउ ७ B थक्कइ
22 १ MBP °हरहिँ २ B °णउकुसुम° ३ MBP सह ४ MBP सिंहासण° ५ MB तरुवंतेँ
23 १ MBP धराधर° २ MB परमप्पय पइपइ पयसरइ, T पयपइ प्रजापति , P परमप्पय पयवइ पइसरइ and gloss परमात्मपादौ प्रजापतिर्भरत स्मरति

9 *a* अहिट्ठियउ सहितम्
22 8 *a* दरिसणु प्राभृतम् 9 तरुवत्तेँ तरुपात्रेण, वृक्षभाजनेन 10 महिहरु पर्वत , महिहरहु नृपस्य
23 1 *b* °कररासिहरु किरणसमूहाभिभावकम् 2 *a* परमप्पय परमात्मानम्, पयपइ प्रजापति-र्भरत

विहुर परमेसर मिहियसर तिसिपल म हरिवँ समकसर ।
मरवेँ बहुसंदपसंगिरए सुर सुहु संकमणाइ गिरए ।
मरणंत मपंत भम्मभवर हुइ सेवर सोक्खु समुम्पवा ।
विमुसरितीव पराइपउ हुई काम पर म पराइपउ ।
पई रोसैजकु बवसामियउ हुई पिसि मुवणतपसामियउ ।
पई पेम्मिकवि देउ वर्हिसवउ म हुवर देवेम मर्हि सवउ ।
जं वि भक्खर तं कपा वि मरलु महिसंतमारि बम्मद्दे म बहु ।

घत्ता—पई संबोहियई केवलसावसिवउ लाविणु ॥
पमहँ बेपरहँ केवलसवास मेहेप्पिणु ॥ २३ ॥

24

हुउ बबु विबीसिउ काणवए विहुवेप्पिणु हइ गिरिकाणवए ।
म पवतइ कत्थ वि जीवबह जय संदरिसिपपरजीवपह ।
सीहु वि सरहु वि पत्तहिँ वसइ सिहिभुवपिच्छेंर सवरी वसइ ।
कम्मु गेउ म गापइ सावपहो सोसिय पई कायए सा वपहो ।
पई मंतपिसिहि मज्जरिपई सोंडवणु मुहुमज्जारपई ।

१ BP मिहियउ. ४ MBP सुमणवणाइ ५ K रोसु बद्धु ६ K मब MBP °भवाइ
24 १ MBP हइ १ K जीवउ. MBPK °सिवर्द ४ MBP कम्मेउ ५ B सा मिव P
सा मिय T साविय सामिए, अथवा सावि सारिका K सा मिय and gloss सा सवरी. ६ P मज्जरपई

8 a मिहुयपर मिहियसम 4 a °बहुपसंगिरए अन्योन्यप्रियस मामान्यतया तेन वर्हिसिरए सम्मणवणाए गाणा. 5 a मरणभवइ मया एव माणि मरणानि तेभ्यः परिमुक्तः 6 a हिं पूरणा. 8 a म हिंसवइ अहिंसा पर वक्ष; b जहिं हवर जहिं हर्म सत्ती स्लोके न हमित कपाकजमेण्य; न कोऽपि विजाति प्रमाणि हत्वेत्यर्थ 9 a तं कमुँ वधलु गलुकः; b महिसंतमारि महिषासमस्यकारि न माहामर्म इत्यर्थ सम्मुहो मतौ 10 केवलशपस है वित केवलज्ञानतानामिव, मह केपिणु मर्तं वहिरुत 11 केवलवाय केवलमिपु केवल मनमार्गं अथ नाणों मन तव कपाला केवल अथवा केपहो एकापीपि केवला केवला: पाणो मम दारि पुस्तका

24 1 a विवीसिउ विमिनितर कामवए है मरणु; b गिरिकाणवए कल्याणम् 3 b सिहि मुवसिहदवपिच्छदर सवरी मुकिमती परिधानं करोति मयूरपिच्छसिखिडरमलाभरणसनी 4 a साप- वदो सासकस्य मर्कस् b सा सवरी दवहो कारुण मद मारिता

परयारु वि वारिउ जारयहं तुहुं णाहु सुट्ठु विज्जारयहं ।
जं अणुहरियउ अलियंजणहो तं गाढु पाउ अलिय जणहो ।
मुहणिग्गंतउ पइं खचियउ तुह सभवि देवहिं खं चियउ ।

घत्ता—इय भरहेण थुउ परमेसरु जियपचिंदिउ ॥
अमरासुरमणुयखगपुप्फदंतफणिवंदिउ ॥ २४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे उत्तरभरहपसाहणं णाम
पण्णरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १५ ॥
॥ संधि ॥ १५ ॥

---

७ MBP परदारु णिवारिउ ८ B जिउ पचिं° ९ MBP °पुप्फयत°

6 *b* विज्जारयह रत्नत्रयविचारतानाम् 7 *a* अणुहरियउ अलियजणहो भ्रमरस्य ५ सदृशमित्यर्थः, *b* अलिय मिथ्या 8 *b* ख चियउ आकाश व्याप्तम्

XVI

पणवेप्पिणु जिणवरकमकमलु भोयणेवि कालासहो ॥
साकेयहु संघुइं संचलिउ भरहेसरहु जिणवासहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

मारणार्ह—पविविहरूपकुंडला एयणमेहम मजलपहमाए ।
चक्षिया मंडलेसरा वेयरसुरत्थए कंठपडाए ॥ १ ॥

घोर गिरिदप्पणु णिसिविसे समग्गु
किं ण किं ण किर केहरिफरं खग्गु ।
किं ण किं ण किर संचूरिउ वणु
किं ण किं ण पुणी वासउ तणु ।
किं ण किं ण वेसंतर वंचिउ
किं ण किं ण कुसु वि वासंचिउ ।
किं ण किं ण पहरणु भयकोरउ
किं ण किं ण पडिसेण्णु णिवारउ ।
किं ण किं ण वरवाहणु वाहिउ
किं ण किं ण परमंडलु साहिउ ।
कणयमयंदमंडियपरिहारें
मोत्तिउ पडुकंपावारें ।
पुरणारिहिं माहप्पु करंतर
मउ वेयंभवणु परिहिउ ।
कुंकुमेण छडउत्तउ दिण्णउ
कप्पूरें रंगावलि किण्णउ ।
विण्णउ कुसुमवरेहि ससेसणु
कच्छउ सुरहरपडमणोहरु ।
घरि घरि तोरणाइ विरयंतहु
तोरणदिवसिवातपवंतहु ।
दप्पेंहु कणणु धरिउ भव्वहिं
कण्णोसिउ मंगलु सुरजणहिं ।
सवालिउ मउड झुणियहिं
साहु वणिवडपणिमणरियहिं ।
करिवरकंपरतु मयंगारिहिं
विलिविलंतउ णामरदोरिहिं ।

GMBP give at the commencement of this Samdhi, the following stanza—

भरियनुवपि मणो वगियमे लोयम्म सदि ।
मउलइ कामा वा कीर्तिलयोद विनयम् ॥

MBP read लोयम्म for लोयम्मा and मउली for कामा वा. K does not give it.

1 १ MBP कणयमयपुष्प. २ M कप्पें; B गिरि. P गिरि and gloss गिरिणा. T गिरि. ३ B वरणिउं. ४ M पयुणिय. ५ MBP कालें. ६ M वेयडु वडु. ७ P तरवरेणु but gloss तरुवरा. MBP भावमार. ९ MB पुण्णं; P दोस्सं. १० MP एणय. ११ M धणिहारिहिं. १२ MBP °भावहिं.

1. 2 जिनपादपद्मे मिलितं भवि. 5 a गिरिणि वशिवितिलिप्समाजेन 6 b तनु पुष्पं 18 a विणयं किमपि इत्यादि कुसुमवरेषु समागतंकुसुमानां प्रचुरं; वदनवनु प्रत्यक्षेण विनीतः.

घत्ता—महि सयल वि खग्गें णिज्जिणिवि कयदिव्विजयविलासहिं ॥
उज्झहि भरहाहिउ पइसरइ सट्ठिहिं वरिससहासहिं ॥ १ ॥

2

आरणाल—णउ पइसरइ पुरवरे रयणमयहरे जयसिरीवरंग ॥
भगुरभासुरारयं णिसियधारयं राइणो रहंग ॥ १ ॥

थक्कउ चक्कु ण पुरि परिसक्कइ कुकइहि कव्वु व णउ चिम्मक्कइ ।
णं कोवाणलजालामंडलु णं पुरलच्छिइ परिहिउ कुंडलु ।
भरहपयावें कायरिजायउ भाणुबिंबु ण छज्जइ आयउ ।
इंदचदपडिकूलणसीलउ धगधगंतु खयहुयवहलीलउ ।
एहु जि चक्कवट्टि अवलोयहु णयरें दीवुं धरिउ ण लोयहु ।
मणिमऊहमालावेलोउलु रायदिवायरपुण्णयरुज्जलु ।
सुरहिगंधु सिरिसेविउ समसलु णं णहसरि विहसिउ रत्तुप्पलु ।
वलयायारहु णिरु सच्छायहु अवसें देइ धरणि करु आयहु ।

घत्ता—त चक्कु ण णयरिहि पइसरइ वेसहि जणियवियारउ ॥
हियउल्लउ कवडसयहं भरिउ णावइ धुत्तहं केरउ ॥ २ ॥

१३ MBP विलासिहिं १४ MBP भरहेसरु

2 १ MBP ° मयहरे २ MB भासुरायय ३ MBP कायरु जायउ. ४ MBP धरिउ दीउ. ५ K °वेलाजलु ६ MBP वियसिउ ७ MBPKT करु ८ M हियडुल्लउ

19 पइसरइ प्रतिसरति

2 3 *b* चिम्मक्कइ चमत्कृतिं करोति 5 *a* कायरिजायउ कातरीभूतम्, *b* आयउ आगतम् 6 *a* °पडिकूलणसीलउ आभिभव कर्तुं समर्थम् 7 *b* दीवु दीपो दिव्यं वा 8 *b* रायेत्यादि—रक्तोत्पल राजमाने-दिवाकरस्य पुण्ये प्रगस्ते करैरुज्ज्वल विकसित भवति, चक्रं तु राजदिवाकरस्य चक्रवर्तिन पुण्यान्येव करास्तै-रुज्ज्वल भवति 10 *a* वलयायारहु वृत्ताकारस्य चूडाकरस्य च, *b* धरणि भूमि स्त्री च, कर दण्डो हस्तश्च, आयहु अस्य चक्रस्य 11-12 जणियेत्यादि—यथा धूर्तस्य हृदय वेश्याया न प्रविशति तथा चक्र नगर्यां न प्रविशति

3

आरणालं—कमिकरतुरयमंभिसं अमयसिहुसियं गुणगणाहरियं।
जं कुवियसीयमोयम पिसुणमोसुमे सुपसमच्छविसं[1] ॥ १ ॥

मकमिर्यकड बाहिरि पकड जायइ सहँवें पीसिवि सुकड।
भउ परमइ पुरि थक्कु विदत्तउ सुईयवि जं अण्णाणपिइत्तउ।
परपुरिसाणुराइ माइणिहु व परहामलमासि मयसिहु व।
मायापरयिर्वपवि सिहु व पसराणि पाविहु सिहु व।
भुयपविसीयइ रिच्छउ मसु व रहरमतुरियइ पवउ कमसु व।
सुरमिहमंडवि समवरणु व पत्यविमविरि समवित्थरणु व।
मिर्मसमंसाखमिहमवि मरणु व कुरियममियममवि पंडियमरणु व।
वैयममिवि मामरिमायरणु व मिमिपाविरि तवुसूमीपरणु व।
मिसिमममपागमि रविकमायणु व सुरुवणि गरुवीयवरमणु व।
पुप्फदीवि जिणगुणसंभरणु व मिडवि विमुणि विरसुवरणु व।

घत्ता—पिउ बहु म पुरवरि परमरइ जायइ केय वि धरियइ ॥
सतिविंसु म मादि तीरपमहि सुरमरहि परिमरियउ ॥ २ ॥

4

आरणालं—ता ममियं मियाहमा मकरहमा कंठवाउपेयं।
किं वियममिह रुंमम वियमंमयं हरमतरमिवेयं ॥ १ ॥

सं मिसुवेप्पिणु भणइ पुरोहिउ केवेयसु महपसव मिरावि।
भण्णामि सं मिसुणहि परमेसर देवदेव सुवय मयहसर।

3. १ M °णाणुे. २ B सिसु मासुवे. ३ M °सिद. ४ B °मिंकवो ५ MP मिरवर. ६ M सुरवमि. ७ M मिवव° BP मिवव° B reads this foot after 11a. ८ K सुवमयउ ९ MBP कपमवरि हरमेरि.

3 2 कुमिसीय मयहिएणकिबम; सुवस्स मिरी महामुणिर्पस एव वरिमइ अथवा तमक्कवा: कामावसूयमत मिरी वमार्यम् 5 a वव मिव हव वाक्कमार्वर, वसिमूतवि. 6 b सवर रविमहे. 5 b वसिमु मवविमं रवरमम् 7 a सुवव मिवाव मवसविमे 8 b समिवसु रेवसिवार. 9 a "भोस" रवि:

4. 1 मिउ कमरमें मरउ कवा में गवि यता मर्सेवं पमे.

घत्ता—सो मच्छरु कवसमु मरिवि मओ कहु एवि कह वि पिपंभरु ॥
तो साहु कहे साहु साहुवेण पहं मि मरिवि णिसुंभरु ॥ ५ ॥

6

आरणालं—जो विप्पह ण हारिवा कुक्खिपारिवा पवरसुरदरीहें ।
सो णिम्महइ माणवे विणइ हावणे हेम कलकलोहें ॥ १ ॥

रिउभिण्णमहिवइसामंतें पसरियविसपेसियसामंतें ।
रुहरविधिरिमिषधमोहें माइपरिवड्ढियमहुमयमोहें ।
णिवमुहसमुप्पयणिवमरहें तं णिसुणेवि पयंपिउ भरहें ।
जमु कमतणु को हरिसावइ मई मुएवि फिर कवणु रसावइ ।
पम को वि किं जगि संतावइ को फिर सिहिसिहाहि सं तावइ ।
कहु महु तणउं पहुत्तु ण भावइ कें पडिवक्खिउ कंठु धरहि भावइ ।
केर महारी को णावज्जइ एह पुहइ को फिर पावज्जइ ।
आसण्णुरमहविकरवालहु का आसंकइ महु करवालहु ।
को फिर णिय महारा माणइ को विविमाएइ मज्झु वि माणइ ।
किं किरे वक्खिपण कंवप्पें मयवंतहु णिवयइ कं दप्पे ।

घत्ता—इय जंपिवि रण्णे णिबद्धउ मणिमयविहियमणोहरें ॥
सयलं मि सयणसंपयपयहं देहु विच्छु दारउरें ॥ ६ ॥

MBP कव ण

6 १ MB °वेहुदी २ MBP मि ३ P णहुं ४ MBP फिर को. ५ M करी. ६ MBP कंवहुणं

6 1 हारिया वत्तमेव 8 a ष्रिसेत्ता सि—रिउभि सामंती भिन्नो भग्नास्ते महीपतयः सामंताः यस्मात् करत्राण वेन तादृवेन भरतेन. 4 b तुषरामौ हे लोमकया पूरितया येषेन. 5 a बरि है समापेतेन. 6 b दत्वानंद प्रसिपति 7 b सिहिसिहाहि ते तावइ वह्निज्वालाभिः समानत्वं तापयति; 8 b कहु आरोप 9 a भाणवद्द मयनमति; b भावद्द मज्जयति 10 a पिहुजिणवरानरी मेखिलोकमाननस्य 12 b णिवयइ पे दप्पे न मरतस्य दर्पेण वद् निपतति 18 a णिवणणि ठियमणो ह ई मणिरचितैः निलयकरैः मनोहरैः इत्यादम्

7

आरणालं—ता विगया वहुयरा जणमणोहरा णिवकुमारवासं ।
दुमदललेलियतोरणं रसियवारणं छिण्णभूमिदेसं ॥ १ ॥

तेहिं भणिय ते विणउ करेप्पिणु सामिसालतणुरुह पणवेप्पिणु ।
सुरणरविसहरभयइं जणेरी करहु केर णरणाहहु केरी ।
पणवहु किं वहुवेण पलावें पुहइ ण लब्भइ मिच्छागावें ।
तं णिसुणेवि कुमारगणु घोसइ तो पणवहुं जइ वाहि ण दीसइ ।
तो पणवहु जइ सुसुइ कलेवरु तो पणवहु जइ जीविउ सुंदरु ।
तो पणवहु जइ जरइ ण झिज्जइ तो पणवहु जइ पुट्ठि ण भज्जइ ।
तो पणवहु जइ वलु णोहट्टइ तो पणवहु जइ सुइ ण विहट्टइ ।
तो पणवहु जइ मयणु ण तुट्टई तो पणवहु जइ कालु ण खुट्टइ ।
कंठि कयंतवासु ण चुहुट्टइ तो पणवहु जइ रिद्धि ण तुट्टइ ।

घत्ता—जइ जम्मजरामरणइं हरइ चउगइदुक्खु णिवारइ ॥
तो पणवहु तासु णरेसहो जइ संसारहु तारइ ॥ ७ ॥

8

आरणालं—पुणरवि तेहिं गहिरयं सवणमहुरयं परिसं पउत्त ।
आणापसरधारणे धरणिकारणे पणविउ ण जुत्तं ॥ १ ॥

पिंडिखहु महिखंडहु महेप्पिणु किह पणविज्जइ माणु मुएप्पिणु ।
वक्कलणिवसणु कंदरमंदिरु वणहलमोयणु वरं तं सुंदरु ।

7 १ MBP वओहरा, T वउहरा दूता २ BPK °लुलिय° ३ MBP वहुएण ४ MBP तइ and throughout elsewhere in this Kadavaka ५ MBP सुयिरु but T सुसुइ ६ MBP फिट्टइ ७ MBP आउ ८ MBP कयतपासु ९ MBP चहुट्टइ १० MPB °दुक्खइं वारइ ११ MP ता, B तहो १२ MBPK णरेसरहो

8 १ B omits धरणिकारणे, P महिहि कारणे २ MBP वरि

7 1 वहुयरा वहुतरा वचोधरा दूता 7 *a* सुसुइ सुष्ठु शुचि 9 *b* विहट्टइ विनश्यति, 11 *a* चुहुट्टइ लगति, *b* कालु आयु

8. 1 गहिरय गभीरम् 3 *a* पिंडिखडु खलखण्डम्, महेप्पिणु अभिलष्य

वेर वोलिवि धरेप्पिणु रंगड चेव पुरिसह आहिलासविरंगउ ।
परपयरयणुसर किंकरवेरिं अहिमाणिवि जं पावसरिसिरिं ।
णिवपडिहारदंडसंबद्धहु को विसहइ करण उवमोहहु ।
को जोयइ मुहुं भूभंगालउ किं हरिसिउ किं रोसें कालउ ।
पहु चावसण्णु भद्द णिहुयत्तु पवियप्पसंपसु विभोयत्तु ।
मोयें जइ भउ जंपिउ कायरु बंभणु पसु पंडिपठ पमाविउ ।
बहुविवाइयवायाभरसयरें कवडसीलु भण्णइ सुयरें ।
महुरपयंपिउ चाडुयपारउ केम वि गुणि ण होइ सेवारउ ।

घत्ता—भरहिंधउं धम्मगुणुज्झियउं धम्मंविवारयपसमउं ।
का वायउं संमुहुं पाउ एम को महियलपरि णिसुणउं ॥ ८ ॥

9

जाणवालं—अहवा रोहिं किं इयं जं समागयं तुज्झ जय्यं ।
तं को विसयविसरसे विवर पत्तेसि तस्स किं सुत्तं ॥ १ ॥

कवणवकेते अंकुस विहाउ मोत्तियदामें भिंकइ लंघाउ ।
चीअसयवंतएहि रेगुहु भोयइ सुहणिमित्तु रिहे माणि फोयइ ।
कण्णूसंधवरकत्तु णिसुंभइ फोडवसेवहु कह पारंभइ ।
तिस्ससतु पयइ हसिवि वंसणवड णिसु गेण्हइ अप्पहु होंतिवि कड ।
पीणइ कसणउं अंतेरियसुहउं सउं विवरइ सो माणियउं ।

१ MBP वरि. ४ M धरिउ ५ MBP णरि ६ MBP °सिरि and a long note in M कथा यदी चक्रवर्ती पर कन्याहित्यकाय क्रियात्मिकीः (1) महिमे रयणेमि पूतरिता माहिमा प्रवाहि सिरि महिमायावतिरेकी, तथा विपरणी सोमा पाठ्यरयोमिः पूतरितु. ७ MBP भद्दयण्णि ८ MBP °सिरि, K °सिरि but corrects it to°सिरि. ९ P सुहण° १ MBP धरमे ११ MBP कवड १२ KBP कणं°
9 १ P °रसो, २ P पत्तमो ३ MBP बग्गु ४ MBP सितवपि ५ MBP कण्णसमवरकत्त.
६ MBP कण्ण वर.

8 a-b यदि आदि-गत्वा सर्वांत्मपातिणी यदो दरवरस्य कवचिता अनुग्राह्यता बदति एक किं करदसि किंवत एव यदो परस्य पारमिताः परस्य पूरप महिमा मयदि 10 °च च प इ °सीअसयम् 14 सि हु च इ धायाधो यायकी च.
9 1 हे रिं वाले निद्दवेच 3 a अंदु स कुनाल 5 a क म दू त च च र तु कपूँरयो व्यवस्था च) 6 वद हवि

जो मणुयत्तणु भोएं णासइ तेण समाणु हीणु को सीसइ ।
चित्तु समत्तणि णेय णियत्तइ पुत्तु फलत्तु वित्तु संचिंतइ ।
मरइ रसणफंसणरसदड्ढउ मे मे मे करंतु जिह मेंढउ ।
खज्जइ पलयकालसद्दूलें दज्झइ दुम्मइदुयासणजालें ।
मंजरु कुंजरु मक्खिसउ मंढलु होइ जीउ मेयाह माहुडलु ।

घत्ता—केलासहु जाइवि तवयरणु ताए भासिउ किज्जइ ॥
जेणेह सुदूसहतावयरि ससारिणि तिस छिज्जइ ॥ ९ ॥

10

आरणाल—इय भणियं कुमारया मारमारया समरंमा पसण्णा ।
दरिवियरियवराहयं सवररोहय काणण पवण्णा ॥ १ ॥

दिट्ठु तेहिं केलासि जिणेसरु सधुउ रिसहणाहु परमेसरु ।
जय रिसिणाह वसह वसहद्धय जय तियसिंदमउलिलालियपय ।
जय जाणियपरमक्खरकारण जय जिण मोहमहातरुधारण ।
जय सुहवास दुरासायारण जय ससहरसियवारिणिवारण ।
पुणु वि पंच परमेट्ठि णवेप्पिणु पंचमुट्ठि सिरि लोउ करेप्पिणु ।
पंचमहारिसिवयइं लेएप्पिणु पंचासवदारांइं पिहेप्पिणु ।
पंचिंदियपमाउ वज्जेप्पिणु पंच वि सर मयणहु तज्जेप्पिणु ।
पचायारसारु पावेप्पिणु पंचपंचविहु धम्मु धरेप्पिणु ।

७ M मिंढउ, BP मेढउ. ८ MBP मकडु

10 १ MBP भणिओ २ MBP समरमापवण्णा and gloss in MP उपशमलक्ष्मीं प्राप्ता ३ MP सवररायह, but T सवरराहय शबराणां भामो भा यत्र ४ MP फेलास° ५ B लहेप्पिणु ६ B °दारइ रुंभेप्पिणु

9 *a* णेय णियत्तइ नैव नियन्त्रयति 12 *b* माहुडलु सर्पविशेष. 14 ससारिणि तिस ससारतृष्णा विपयाकांक्षा.

10 1 समरमा उपशमलक्ष्मीका , पसण्णा प्रसन्ना 2 °वियरिय° विचरिता , सवरराहयं शबराणां राहा शोभा यत्र 5 *a* परमक्खर° मोक्ष 6 *a* सुहवास शुभस्य सुखस्य वा गृहरूप 6 *b* ससहरेत्यादि—शशधरश्चन्द्र तत्तुल्य सितं शुक्ल वारिणिवारण छत्र यस्य 8 *b* पंचासवदाराइं मिथ्यात्वाविरति-प्रमादकषाययोगा 10 *b* पचपचविहु दशविध

घत्ता—दइगुणि मणमणणु संचिंतिउ माणवणु संमुहुं पसरिउं ॥
संतहिं मयवंतहु तणुरुहहिं अप्पउ चरिएं मूसिउं ॥ १० ॥

11

आरणालं—ता पत्तो बरा पुरे चिंधपंखा भिरे भणइ सुणसु राया ।
दरिसियो मुह सरोयपा संतिसायरा भणु देव आया ॥ १ ॥

एक्कु वि पर बाहुबलि खेदुम्मरु जउ तउ करइ ण तुम्हइं पणवइ ।
तं णिसुणेवि पुराहि दसउं महसामंतमंतिसंजुत्तउं ।
कोसु देसु परियणु पणमंतउ मणहरु अंतउरु मणुरत्तउ ।
कुलु छत्तु बलु सामत्थु सुरत्तणु णिहिलमणाणुराउ जसकित्तणु ।
विणउ विवाहारि गुरुदंसणु पारिसु पुंवि रिवि वइरुग्गमु ।
कुंजर वाहर महिहर जंगमु अत्थि तासु रह करइ तुरंगमु ।
अरयसत्थु आवइ वि ण सरइ णाम सहायसहासइं ण करइ ।
णाम ण कम्मइ पसरसंसमो पत्तपणमिमिमइगुम्मगो ।

घत्ता—आवइ वि बाउ ण करि भरइ तोमरुसुपहु ण भंपइ ॥
णिम्मीलिय मारुसयमवहि णाम ण तुयि सइ संपइ ॥ ११ ॥

12

आरणालं—ण हु भरह महाहवे जा महाहवे दाइओ समत्था ।
जा ण हरइ णिराउलं तुह महीयलं तिक्खखग्गहत्थो ॥ १ ॥
ताम तासु दूवें पेसियउ जइ पइं पणवइ ता पालियउ ।
जं ता पुणु बाहुबलि भणियउ बंधिवि कारागारि णिहियउ ।
एम मंतु जं देव पबंधियउ ता पयं तहु दूउ विसज्जियउ ।

७ MBP पेसिरउ. ८ MBP वुसियउ.
11. १ MBP दर. २ MBP ण तुम्हइं ३ MBP वुत्तउं ४ MBP कोसु ५ MB णत्थु ६ MBP हर° ७ M रिसि गुणिरइरुग्गमु. ८ MBP णिम्मलिय°
12. १ MBP दूउ

11. 6 b बहुफलितहु बाहुबलिनः; 7 a गुरुदंसणु गुरुवचनम् 11 बाउ बाणम्.
12. 1 महाहवे महासंग्रामे; महाहवे महातपस्ये, महासंग्रामे.

णियवइरत्तु सत्तुविद्धंसणु सुहडु सुलक्खणु सोमु सुदंसणु ।
देसजाइकुलसुध्दु पसिद्धउ पंडिउ पडु पहुलच्छिसमिद्धउ ।
विविहविसयभासाभासिल्लउ दिट्ठत्तरु महिमाइ महल्लउ ।
तेयवंतु रक्खियपहुतेयउ महुरवाणि आदेउ अजेयउ ।
गउ दूयउ परिचोइयपत्तउ पोयणपुरु बहुदिवसहिं पत्तउ ।
जहिं वणतरुसाहहिं महु वियलइ चलकंकेल्लीपल्लवु विलुलइ ।
अद्धदीहरपवाससममहियहिं पइसतहिं वि समंतहिं पहियहिं ।
रसविसेसधारामहमहियइं जहिं रखति फलाइं सुरहियइं ।
पुप्फहिं गुप्फइ माल विहिंडिरं चउदिसु रुणुरुणति इंदिंदिर ।

घत्ता—सरु मेल्लिवि करेण णियट्ठियउ रत्तु पवट्टुलु रसियउ ।
बिंबीफलु अहरु व वणसिरिहे जहिं कणइल्लें डसियउ ॥ १२ ॥

13

आरणाल—चरकेदारदारए सालिसारए कसणधवलपिच्छा ।
अणुमणहणियघणकणं कणिसमणुदिणं जहिं चुणंति रिंछा ॥ १ ॥

णिद्धणत्तु जहिं चदें दाविउ माणुसि कत्थइ णेय विहाविउ ।
जहिं विहारु पासाउ पियारउ णउ णारियणहु रइगारउ ।
उववासु वि चडपण रइज्जइ णउ रोए दुकालिं किज्जइ ।
जहिं केण वि पीरइ ण सुरागमु होइ गुणीण गुणेहिं सुरागमु ।

२ M पत्तु विद्दसणु ३ MBP आदेय ४ MBP गयउ दूउ ५ MBP °दियदहिं ६ MBP पल्लउ ७ MBP समत्तहिं ८ MP add after this ण कामिणिवयणइ अइमरसइ, पुणु पिज्जहिं जलाइ सरिसरसहिं ९ MBP गुफइ १० MBP विहंडिर ११ MBP पवट्टलु १२ MBP बिंबीहलु

13 १ MBP चरु, T केयार° २ MBP °पिंछा ३ MBP चरति ४ MBP णारियणदेहु

6 *a* णियवइरत्तु निजस्वाम्यनुरक्त 9 *b* आदेउ आदरवान् 10 *a* परिचोइयपत्तउ चोदितवाहन, 12 *b* समंतहिं समन्तात् 13 *b* सुरहियइ देवहितानि सुगन्धानि वा 14 *a* विहिंडिर पर्यटनशीला, *b* इंदिंदिर भ्रमरा 15 सरु मेल्लिवि शब्द कृत्वा 16 कणइल्लें शुकेन

13 1 केदारदारए वप्रमार्गे 2 अणु स्तोकम् 3 *a-b* णिद्धणत्तु स्निग्ध ज्योत्स्नायुक्त नक्तं रात्रि, न पुनर्मनुष्ये निर्धनत्वम् 4 *a-b* विहारु पासाउ विहारशब्दवाच्य प्रासाद', अथवा वीना पक्षिणा धारक प्रासाद, न तु नारीजनो विगतहार 5 *a* उववासु गृहमध्ये वास आहारत्यागश्च, चडएण चटकेन पक्षिणा, 6 *a* सुरागमु मद्यागम मद्यपानम्, *b* सुरागमु देवागमनम्

रिद्धि सिहाछंद वि रिसिविस्थाहि | पउ माणिक्कमऊहपरिच्छाहि ।
मंसिकमहपोरुड जहिं केप्पइ | जउ विसिट्ठमारत्तसंकप्पइ ।
णहइ खणा जणहु चंगु कोपंगु | जउ णियजइउ णियसंतउ जणु ।
खेल्लु कुसासूसंगु णीसंभो | णामधारि जउ रायवर्ष णइ ।
पंथरज्जु णियरज्जु पणरज्जइ | परज्जु णियरीज्जु जहिं महरज्जइ ।

घत्ता—पुप्फपरिधिहिं कीलागिरिवरहिं बहुपारयपायाहिं ॥
जं सोहइ मोत्तियतोरणहिं मंदिरु जरहुं मि ताहिं ॥ ११ ॥

14

आरणालं—तहिं सुरगुरुसुंदरमो रायरूमी पहूवे पड्डे ।
रायाउंपवुतएय हियवहाएय आवरेहिं थिड्डे ॥ १ ॥

कणयपरंसंपद महुर भाविउ | तहिं परिहाउ देव बोल्लाविउ ।
पुरिवंतु मयणमुणमूणउ | मणु मण्णइ हुवारि पहुदूणउ ।
तं णिसुणिवि गउ कड्डिविहत्थउ | कहइ कुमारहु पंचमिममत्थउ ।
मण्णइ देवरि अरिदमणीयउ | अलिय पलिय मणु सामिय मयसउ ।
ता कंदप्पें भणिउं म जाणहि | मायरचिदउ खडु परसायहि ।
ता कड्डिमहरेण जसविम्मसु | परसारिउ पलम्बभुयमंडसु ।
पाहुणसीसु देउ कणमंडसु | दूरें थिउउ कं आसंडसु ।
संगुड मउडिमणिकिरणोहें | को वसि ण किमउ गुरु परिवामें ।

घत्ता—गुरु बहुगुणपरंकारेपण केवं ण माणु णिसित्तउ ॥
परं जम्माद पेयाहिं मम्मणहिं सयलु मि तिहुयणु जित्तउ ॥ १४ ॥

१ MBP °हस्सउ K °हस्सउ but corrects it to °सं ६ MBPT णु. MBP खेल्लु
८ MT कुसासूसं. ९ P मोसवइ. १ MBP णहसु
14. MBPT सरसओ १ MB एमाहर. ३ MBP °हेउस. ४ MBP सवसिय° ५ MBP
मसि. ६ M °वंकरोण MBP पेमहियनु ण जउ T सिहितउ तस्स

8 a बनिकायदयकव नविकामण समनु 9 a वइर्हेतारि-नहि नहि नवणु नलिलनसे नर्वरीमा न इ डु वनो ननर्व मिलनमनतारयान नहि 10 कुबनूनवणु कुम पुण्ण; ना ननसोमसोरिमणु; नीवनइ कुमी; 8 नव एननर्वनइ एम्मनसे नहो न नयवना रि नननारिकि न
14. 1 °हुइनवजो नतन 4 a ननवणुननूयव नसर्वहुण 8 a नरिवारेण दरसोन. 9 a कनबंगहु एसिनम

15

आरणालं—पियवयणं पि भासियं सुइसुहासियं भुत्तकामभोया।
तुह जयवडहसद्देणं जगविमद्देणं णउ सुणंति लोया ॥ १ ॥

जय कुसुमाउह रइरमणीवर अलिमालाजीयासंधियसर।
पइं पेच्छिवि थोलइ उप्परियणु वियलइ णारिहि णीवीबंधणु।
चिहुरभारु दढबंधु वि पसिढिलु हवइ रयंबु सवइ सोणीयलु।
चलइ वलइ लोयणजुयलुल्लउ दीसइ अंगु वूढसेउल्लउ।
रंभा णवरंभा इव डोल्लइ रइवाएं आहल्ल वि हल्लइ।
देवें तिलोत्तिम तिलु तिलु खिज्जइ विरहें उव्वसि उव्वेइज्जइ।
मेणइँ मीणि व थोवइ पाणिइ पिय संतप्पइ रवियरमाणिइ।
एम थुणंतहु दिण्णउं आसणु णिवसणु भूसणु किउ संभासणु।
हिमइरिजलहिमज्झि महिरायहु कुसलु खेउं भरहहु महु भायहु।
कुसलु खेउ कुरुवंसणरेसहु कुसलु खेमु जलहरणिग्घोसहु।
कुसलु खेमु णमिविणमिकुमारहु कुसलु खेउं पत्थिवपरिवारहु।
दूवें वुत्तउ कुसलु णरिंदहु कुसलु णाह णिहिलहु णिवविंदहु।
एक्कु जि अकुसलु सुहिउक्कंठिउ जं तुहुं देवँ दूरि परिसंठिउ।

घत्ता—दूरत्थहं बंधुहुं णेहु जइ णासइ पिसुणकयंतरु ॥
रवि मेल्लइ किरणइं पंकयहं ताइं णिवारइ जलहरु ॥ १५ ॥

16

आरणालं—भो भो दणुयणिम्महा सुणसु वम्महा कुणसु चारु चित्त।
सह गुरुएण भाइणा तिजगताइणा रूसिउं ण जुत्त ॥ १ ॥

15 १ MB जयवडसद्देण २ B सिढिलु ३ P देवि ४ MBP उव्वस ५ MBP ०ए, ६ MBP दूरि देव
16 १ M °णिम्मुहा २ MBP गरुएण

15 5 *b* रयवु शुक्रम् 6 *b* वूढसेउल्लउ उत्पन्नस्वेदार्द्रम् 9 *b* पिय प्रमो, रविकर[illegible] करसंतापेन 16 पिसुणकयतरु पिशुनकृतचित्तभेद.
16 2 ° ताइणा रक्षकेन.

को ससहरु को फिर करमेकरु को समुदु को वडवाणोयरु ।
को तुहुँ मरइ कवणु फिर मुवरु पहउ तुहुँ पिपण्णु य रुवारु ।
कप्पतरुवरु कि कुसुमहिं अंचमि रयणायरु करसलिलें सिंचमि ।
सरइ अम्मह दीवउ बोहमि हउं पिहतु कि पईं संबोहमि ।
तापहु पच्चक्ख मरइ जि राणउ तुहुं सुयणउ सगोत्तपहाणउ ।
मायें मरइ पिउहु मुयपिप्पु सीयलु पडमेउ मणुवेप्पिणु ।
तरुपिंडकंदरयपसूहिं भरियपरंतिसंतपरिवुहिं ।
भायाहिपरिवरियपउरहिं भासिमिगियउ वेहिं भुयपरंतहिं ।
तेहिं य पुरपवि रवि सुविसाल गुरुवार्णि भविपरव भविसाल ।

घत्ता—कुरुसामि महापहु सुपयणु पुष्पि पउ पणवंति वे रायउ ।
धरि तारं होइ सालिहरउ भइ समपुरिहि पयाणउ ॥ १६ ॥

17

आर्यार्ध—जो वरवरमउडमयरे पडमभिवयरो पंकयमिक्कमाए ।
जिणयंसो पयासिमो पेच्छ मूसिमो रायसम्मिक्कमाए ॥ १ ॥

जासु चक्कु रिउचक्कु विहुंसरु जासु घर पयडिउ मिवंमरु ।
जासु पुरोहु पुयाउ पेच्छरु सुरउ सुरिउ तिवर्य साईं गम्भरु ।
जागपि हिमपि ससि वि पुरंभरु पयइ पयइ तिहुयणु वाइ हम्मइ ।
जयह कउ होंतु विवरेरउ भसि भसु कङ्गइ सलग्गु केरउ ।
चम्मु चमु धरंतु मेरमालउ सेवायर सेवायर बालउ ।
मागहु वरतणु वेय पहासु वि सिंधिउ सुर वेयदृविवासु वि ।
वेय तिमीसरुवाह विहडिउ सिंधुवेयियहिमासु पणोयिउ ।

१ MB हवं मि होइ ४ MP पयेतु पाणउ ५ MBPK बाणु मरइ पिउ ६ P परिवहिं and gloss परितो. ७ MBP °पयरं° ८ MBP हुसयं°
17 १ MBP भारयारा

8 a वरइ सर्व ; पिवहु पितरेर 9 b भयुवेण्पिणु मनुष्यं कृत्वा 13 घत्ता पइ प्रणयं कथना
17 3 b पिउ वइ प्रतिपत्ति. 4 a पुरउ पयादानि पदइ 5 b वचइ इत्याटि. 6 a जाबइ आपक्षनयमि; b जइ सु माया 7 जइ मइ वइ जिविस बोमति; b सेवा वइ केप्या वालए

दिण्ण केर हिमवंतकुमारहु पुणु आइउ वसहंइरिसुतीरहु ।
तहिं अप्पणउं णाउं सणिहियउ छाहिच्छलेण व ससिणा गहियउ ।
तं तहिं दीसइ ण उण कलंकउ णिवणामकिउ भमइ ससंकउ ।
विसहरउलइं सविसहरवरिसइं जित्तइं मेच्छउलइं सामरिसइं ।
णं पालेययसेलकिरीडहु पुणु भउ जणियउं गंगाकूडहु ।

घत्ता—ढुक्की मंदाइणि कलसकर लोएं दीसइ केही ॥
थिय ण्हाणकरणमणणिवणियडि मज्जणवालिणि जेही ॥ १७ ॥

18

आरणालं—जस्सायासगामिणो खयरसामिणो विहियहियसल्ला ।
णमिविणमीसणामया णिरह णिम्मया जायया वसिल्ला ॥ १ ॥

पुणु वेयड्ढहु कुलिसें ताडिउ पुव्वंकवाडु जेण उग्घाडिउ ।
णट्टमालि साहिउ मालायरु पयजुइ पाडिउ णं पायडणरु ।
असमु वइरु किं तेण समाणउ जं माणुसु रित्तउ उत्ताणउं ।
पिंछकमंडलुमंडियहत्थहु रोसु जणइ त मुणिवरसत्थहु ।
चक्कवट्टि गुणमणिरयणायरु आउ जाहुं अवलोयहि भायरु ।
मा पज्जलउ तासु कोवाणलु मा णिड्डहउ तुहारउ भुयवलु ।
हा मा दुरयरएहिं विहिज्जउ पोयणपुरपायारु दलिज्जउ ।
मा उच्छलउ छइयदिसमेरउ हरिखुरखयखोणीधूलीरउ ।
मा धावंतु महंत महारह मा पिसुणहं पूरंतु मणोरह ।

२ MPB वसहइरिउ तीरहु ३ MBP °णामकउ ४ MBP मिच्छाउलइं ५ M records a p राए for लोएं

18 १ MB विहय° २ M पुव्विकवाडु ३ MP ण माणसु, B माणुसु ४ MBP °कमंडल° ५ MBP णिद्दलउ ६ B वहिज्जउ ७ BP हयखुर°

10 *a* केर आज्ञा 11 *b* छाहिछलेण छायाव्याजेन 13 *a* सविसहरवरिसइं विसहरा मेघास्तेषां वर्षणेन सहितानि 14 *a* पालेययसेल° हिमपर्वतो हिमवान्. 16 मज्जणवालिणि स्नानपालिका दासी

18 2 णिरह निष्पापा, णिम्मया निर्मदा 4 *b* पायडणरु सामान्यमनुष्यसदृश 9 *a* दुरयरएहिं हस्तिनां दन्तैः, विहिज्जउ विभज्यताम् 10 *a* छइयदिसमेरउ आच्छादितदिङ्मर्यादम्

काइ कंतामयकिहि म विरत्तउ पञ्चक्खाणु तोसिउ मा कीरिसउ ।
देहि कण्णु विरम्मुं हवेप्पिणु पंगणु मरहु माणें पणवेप्पिणु ।
तं विसुणेप्पिणु णाहुवमीसें परिवीपिउ मुमंगविहीसें ।

घत्ता—कंमणु अमणु ण होमि हउं पुत्थयकउ विचारिउ ॥
संक्खे सो महु केरएण महु बसिसइ विरारिउ ॥ १८ ॥

19

आरणालं—वं दिवंणं मोहसिया सुरिपयासिया कमलेहमेत्तं ।
तं मैइ विविपसालणं कुसविहुसणं हरउ को पहुत्तं ॥ १ ॥

केसरिकेसरु वरैसायणयलु सुहडहु सच्छु मच्छु यच्छेलहु ।
को हत्येण छिवइ सो केहउ किं कप्पेतु कयंतागउ केहउ ।
हवं सो पर्वयमि को सो मम्मइ महिवंतेण कवण पच्चुम्मइ ।
किं कम्मवि देवहिं महिसिविर किं मंदरविरिसिहरि समविर ।
किं तहु मम्मइ सुरवइ पविर सिरिखोरिविषय किं रोमंचिय ।
महु पंसु तं तासु वि सारउ मह पुत्र पं कुमारहु केरउ ।
करिघुसरदहयविंभपरौ भर विसुणामि रवि जे वि मारउ ।
मणहु हरहं कि मम्मु सुरपीमर वो सुकर का तुंवरत किवइ ।

घत्ता—वहु महवि महु पोयणवइ माहमिपिये दिव्वई ॥
मम्मिसउ पहर मसि सिहिसिहाहिं जाह ण सरह पहिपविण्णउं ॥ १९ ॥

MBP वरिवह १ MBP विमयणु हरेप्पिणु

19 १ MBP दिव्वई २ B omits ण मह विविपसालण ३ M सारउ, but records a p सारउ ४ MBP पयरउ ५ MBP °करिपियड़ तो ऐसविय ६ BP add after this. हरिसहिरिक-केसमविड ७ MBPT मरह M सुपरव T सुमहुर पाहुडमप्पेंसु ८ MBP ca. ९ M सुमरु. ११ MBP पविवण्णउ

18 a केवलवधविहिंसु सनुमच्छसाध्वी विरतजन दव्व, b व विरक्त कृत. 14 b पुत्र करिगहीलें सुराप्रभजनिक.

19 8 a वरदरदरमणरधु वरम्यः करी सकलमुनः 6 a किम् धरा छायी 7 b °वहदिविधद सैरिया पुंस्कर 9 b बहुरदह महाराज 10 a सुकर म इ पुज्रहजनीय

20

आरणाल—ता दूएण जंपियं किं सुविप्पियं भणसि भो कुमारा ।
याणा भरहपेसिया पिंछभूसिया होंति दुण्णिवारा ॥ १ ॥

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ किं खरेण मायंगु खलिज्जइ ।
खज्जोएं रवि णित्तेइज्जइ किं घुट्टेण जलहि सोसिज्जइ ।
गोप्पएण किं णहु माणिज्जइ अण्णाणें किं जिणु जाणिज्जइ ।
वायसेण किं गरुडु णिरुज्झइ णवकमलेण कुलिसु किं विज्झइ ।
करिणा किं मयारि मारिज्जइ किं वसहेण वग्घु दारिज्जइ ।
किं हंसें ससंकु धवलिज्जइ किं मणुएण कालु कवलिज्जइ ।
डेंडुहेण किं सप्पु डसिज्जइ किं कम्मेण सिद्धु वसि किज्जइ ।
किं णीसासें लोउ णिहिप्पइ किं पइं भरहणराहिउ जिप्पइ ।

घत्ता—हो होउ पहुप्पइ जंपिएण राउ तुहुप्परि वग्गइ ॥
करवालहिं सूलहिं सव्वलहिं परइ रणंगणि लग्गइ ॥ २० ॥

21

आरणालं—ता भणियं सहेउणा मयरकेउणा एत्थ कहिं मि जाया ।
जे परदविणहारिणो कलहकारिणो ते जयम्मि राया ॥ १ ॥

घुड्डुउ जंबुउ सिवं सद्दिज्जइ एण णाइं महु हासउ दिज्जइ ।
जो वलवंतु चोरु सो राणउ णिव्वलु पुणु किज्जइ णिप्पाणउ ।
हिप्पइ मृगहु मृगेण जि आमिसु हिप्पइ मणुयहु मणुएण जि वसु ।
रक्खाकंखइ जूहु रएप्पिणु एक्कहु केरी आण लएप्पिणु ।

20 १ MBPK किं खज्जोए २ P सोखिज्जइ ३ P मण्णिज्जइ ४ MBP डिंडुहेण. ५ MBP भरहु ६ MBP पहुप्पइ ७ K रणगणु मग्गइ
21 १ MBP सिउ २ M णिव्वल ३ MBP णिप्पाणउ ४ MBP मिगहु मिगेण ५ P वुहु

20 5 *a* माणिज्जइ उपमीयते 10 *a* णिहिप्पइ निक्षिप्यते 11 वग्गइ विग्रहाय चेष्टते 12 परइ प्रभाते
21 1 सहेउणा सयुक्तिकेन 3 *b* एण णाइ अनेन न्यायेन 5 *b* वसु धनम्

ते विसहंति तिक्खोरगविट्ठउ सीहहु केरउ मंडु व दिट्ठउ।
मारुममि वरि मरणु व जीविउ भइउ दूय सहु मई भाविउं।
भायर माई भाउ लहु दंसमि संगाराउ व पावि विदंसमि।
सिहिसिहितावें वेयिंदु वि न सहइ महु मणासिमहु विसिहि को विसहइ।
एक्कु वि पर उम्माय परिट्ठहु अर परसरइ सरणु जिणेसरहु।

घत्ता—संपहरमि सुहमि गयणयहु हसमि सुहड रणमग्गर।
पहु भायर सायर बाहुबलु महु बाहुबलिहि अमार॥ २१॥

22

आरणार्थ—ता दूर्ते भिभिम्ममो विसपुरं गया तम्मि पियविसासे।
सो बिम्बपइ सायरं सारसायरं पणविउं महीसं॥ १॥

विसमु देव बाहुबलि णरेसरु अहु व संधइ संधइ गुणि सरु।
वग्गु व बंधइ बंधइ परियरु सीमि व इच्छइ इच्छइ संगरु।
पई भउ पेच्छइ पेच्छइ सुयवसु माण व पावइ पावइ विवसु।
मायु व छंडइ छंडइ भयरसु दुवेवु व चिंतइ चिंतइ पोरिसु।
संधि व भज्जइ भज्जइ कुलबलि पुरउ व देइ देइ वामावलि।
गुज्झु व खवइ खवइ मुणिवंदर अंगु व कहइ कहइ पंदरु।
देव व देइ मार गुरु पोमणु पर आण्णमि देसइ रणभीसणु।
दोणइ रणभरि भउ करिपसर दायसइ कुंडे भरउररववरे।

घत्ता— संताणु कुलकसु गुरुकहिउ परणम्मु भउ दुग्गह।
मज्झायपविणहिउ सामरिसु भवसें दाइय दुम्मह॥ २२॥

६ B सिवोस° ७ MBP मिंदु ८ MBP वरि. ९ M मामिउ १ MBPK एउ; G माउ but writes above १ एउ in second hand. ११ M सिहसिहहिं वेयिंदु व वि ण सहइ १२ MT विमउ १३ MBPK विसहइ

22. १ MBP दूएग २ MB णवउ; P णवमिओ ३ MBP दइउ ४ BPP मग्गइ मग्गइ. ५ MBP गुरु

10 b शिखिशिखा 11 a परउन्मादं परिस्थितं सन्नम्।
22. 1 पायदं सायरम्; सारतायरं ता क्षणे रज्ञा पृथिवी तदौ भाषयम् 8 a गुप्तिंदर गुप्तिसमूह 10 b भरत रववरं भरतसमासेवितपदान्वि 12 दाइ दायादः व्यक्तिसदा

23

आरणालं—ता परिल्हसिउ दिणमणी ण सिरोमणी गयणकामिणीए ।
अत्थं पडि णिवेइओ रुइविराइओ णाइ जामिणीए ॥ १ ॥

मावेसहि भणेवि अइरत्तउ दिवसहु दिण्णु दीउँ सिहितत्तउ ।
णं चउपहरहिं वणु अहिकतिहि जायउ लोहियहु णहदंतिहि ।
णाइं पवालकुंभु दिसणारिइ धरिवि मुकुं दिक्करिगणियारिइ ।
पउलिवि तलिवि दैलिवि दलवट्टिवि जीवरासि जगभायणि घट्टिवि ।
दंडरहियजणलोहियलित्ती कालेंडॉ विव दिसिवहि घित्ती ।
उग्घाडिवि ससहरमुद्द णिद्धहि संमुदियहि तियसासामुद्धहि ।
णं सिंदूरकरंडु असच्छिदइ दाविउ लवणजलहिजललच्छिइ ।
मयरंदुल्लोलु व जगकमलहु णिउ चाएण वरुणमुहकमलहु ।
गोमिणीइ हरिरइरसभंरिउं पोमरायवत्तु व वीसंरिउ ।
अत्थमियउ जाइवि अवरासइ रत्तु मित्तु णं गिलियउ वेसइ ।

घत्ता—पुणु दीसइ संझारायएण भुवणु असेसु वि रत्तउ ॥
सहुं गिरिदरिसरिणदणवणहिं लक्खारासि णं घित्तउ ॥ २३ ॥

24

आरणालं—आसोसियखमारसो खवियतावसो तरुणिदंसणाओ ।
ण णरमणि ण माइओ दिसहिं धाइओ सहइ मयणराओ ॥ १ ॥

संझारायजलणु जो भमियउ सो तमजलकल्लोलहिं समियउ ।
संझारायघुसिणु ज सकिउ तं तमोहमयणाहँ ढकिउ ।

23 १ MBP दीउ २ MBP कुंभ ३ MBP मुक्क ४ MBP मलिवि ५ B कालिं दाविय ६ MB दिसवहि, P दिवसहि ७ MBP °भरियउ ८ MBP °पत्तु ९ MBP वीसरियउ १० MBP गिरिसरसरि°

23 2 अत्थं पडि णिवेइओ अस्तपर्वत प्रति समर्पित, रुइविराइओ दीप्तिविराजित, णाइ तया यामिन्या 3 *a* मावेसहि मा आवेसहि मा प्रवेशं कुरु 5 *b* दिक्करिगणियारिइ दिक्करिहस्तिन्या 7 *b* कालेंडा विव दिसिवहि घित्ती कालेन अण्डमिव दिक्षु क्षिप्तम् 11 *a* हरिरइरस° कृष्णक्रीडारस ; *b* पोमरायवत्तु पद्मरागभाजनम् 12 *a* अवरासइ अपरदिशा
24 3 *b* समियउ पीडित 4 *b* °मयणाहें मृगेन्द्रेण

संझायवविरइयि सो फुल्लिउ सो तमतंबेरमवारपेल्लिउ ।
अंसमाहिं तमकरि मम्मउ किं जाणइं सो तासु वि कम्मउ ।
ममपियेण वसिउ सुहयारउ तप्फोडु वोरिरिं मज्झारउ ।
विसइ गयक्खहिं घणपडिघोसउ वजुहाव व सैसिसेउ पिहाकउ ।
दंभायारें पियउ अंधारउ दुजसंक पयणइ मज्झारउ ।
रयपासेवयिगु वेणुवासु मिंग्रु सुयंगहि पं सुवासु ।
रिसुउ करयउ दीवावारए परि पत्संतउ किरणुकेरउ ।
मोरें पंडउ सप्पु विसम्पिवि सुवें कइ प प गहिउ झडप्पिवि ।

घत्ता—पंगासहिं हसपक्खयरइं पिंपवरीहिमिगवयणइं ॥
जायइं ससियरपसवाहिम्मइं भवणाई वि पिय मवणइं ॥ २४ ॥

25

आरणाल—मम्मयमयियवंपिरं मवणकंपिरं पवणविवमवंत ।
रयरसपल्लवरंसियं पियममा पियं रमइ मिसि रमिंत ॥ १ ॥

केम वि पयपवि चिहियउ करयसु कयवकयासि चावइ रसम्मसु ।
काइ वि कोवे वि छोइउ आरिठियउ मेहमयमयवंवसु मणिउ ।
पीहरंथि परिवहुपेडुम्माविं केम वि का वि धरिय करयसिं ।
पयवकयहि रमणीचरणंगउ को वि सउंकुमेण परं इउ ।
सोहइ विंदु भरए रिय संविउ मं मयणजयपसुरह अंविउ ।
हारें वरइ का वि सयपाउह वाविय आहें अंवसमाउह ।
पियाहरएसपवविसिवउ काई वि मवणमुपसु पजिसउ ।
कसायिउ रायसिकयपाहें काइ वि किविकिंकिय जम्महे ।

24. १ MBP ण २ P वेरिहि ३ M सिसरोउ ४ B omits this foot. ५ M रसमाए. ६ M मिमिरहिय.
25 १ B °पवयरामिय २ MBPK सुरय ३ MBP मयमय ४ MBP कड.

5 b °दंवेरम° हस्ती. 7 a मयमाहिन प्रमत्तेन. 9 a रंभाचारे पिंधकार ; b ववमद मनसि.
11 a पीत्तमारय कपीमार b °कदेरय स्मृत 18 °पक्षदलह व्यायुम्मापि.
25 6 a °परमपक पथमो पदिउ 7 a मदपउ आनिपुत.

का वि रयावँसाणसमरीणी चंदणकद्दमवाविहि लीणी ।
को वि का वि सवहहिं रंजइ गुणि अक्कसमाण मज्झु परपणइणि ।
जाम एहु वेसाणरु अच्छइ तावण्णहि को वयणु णियच्छइ ।
जणणि महेली मणि अवहारमि गुरुपय छिवमि ण पइं अवहेरमि ।

घत्ता—इय कवडकूडमउजपियहिं दाणेण वँ वसिहूयउ ॥
णारीयणु रमिउ विडाहिवहिं वेढिवि णिरुवमरूवउ ॥ २५ ॥

26

आरणाल—दीहा वि रयमिहुणह चक्कवियणहं पहियवंदयाणं ।
मडहा हवइ रयणिया चंदवयणिया रैयविडिंदयाणं ॥ १ ॥

ता उग्गमिउ सूरु पुव्वासइ रइरंगु व दरिसिउ कामासइ ।
किंसुयकुसुमपुंजु ण सोहिउ ण जगभवणि पईवुं पवोहिउ ।
चारु सूँरु वसहु ण कदउ लोहिउ ससि रोसेण दिणिदँउ ।
मज्झु परोक्खइ आवइ पाविय कमलिणि वेल्लि भणिवि संताविय ।
एम भणंतु व गयणि व लग्गउ णं रयणियरहु पच्छइ लग्गउ ।
तवुँ करोहउ रुँहिरु णिसाडें चिंतिउ एंतु सछिद्दकवाडें ।
कुंकुमलोलु व मण्णिउ घरिणिइ रत्तु दुवंकुरु कंदरहरिणिइ ।
मिलियउ सोहइ विद्दुममहियलि मिलियउ सोहइ ककेल्लीदँलि ।
मिलियउ सोहइ रत्तइ सयदलि मिलियउ सोहइ रमणीकरयलि ।
मिलियउ सोहइ जण अहरुल्लइ महिहरतीर धाउ जलरेल्लइ ।
राउ मुयतु जि गुणसजुत्तउ अरहंतु व रवि उण्णइ पत्तउ ।

५ P °रयावसाणि ६ MBP वि

26 १ MBP रइ° २ MBP पईवउ बोहिउ ३ MBP सूर° ४ MBP दिणदउ ५ MB तव ६ M रुहिर. ७ MBP ककेल्लिहि दलि

11 *a* °समरीणी °श्रमेण क्रान्ता 12 *b* अक्कसमाण मातृतुल्या 14 *b* गुरुपय छिवमि गुरुपादौ स्पृशामि, ण पइ अवहेरमि त्वां न वञ्चयामि 16 वेढिवि आलिङ्ग्य

26 1 दीहा वि दीर्घापि, चक्कवियणहं चक्रवाकाना एव विगणाना पक्षिगणानाम् 2 मडहा लघ्वी, रयविडिंदियाण रतानां विटेन्द्राणाम् 8 *a* णिसाडें निशाचरेण

XVII

दूवागमि रविउग्गमि चलकरवालललावियजीहहो ॥
जाइवि णदाणंदणहो भिडिउ भरहु रणि सीहु व सीहहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

ता समरविन्तु विसरिसु विरुद्धु   विप्फुरियदसणडसियाहरुद्धु ।
कढिणयरपाणिपीडियकिवाणु   उद्धुयभीसियहयभउहकोणु ।
तिवलीतरंगभंगुरियभालु   ण सीहु कुडिलदाढाकरालु ।
अरुणच्छिछोहरंजियदियंतु   ण पलयजलणु धगधगधगंतु ।
दूययवयणहिं वड्ढियकसाउ   जपइ सरोसु रायाहिराउ ।
सुंयरेप्पिणु तायहु तणउ चारु   जइ कहँ व ण मारमि रणि कुमारु ।
तो धरिवि णिरुभैवि करमि तेम   अच्छइ करि जिह णियलत्थु जेम ।
महु कुद्धहु रणि देव वि अदेव   सो ण करइ किं महु तणिय सेव ।
इय गज्जिवि असितासियसुरिंदु   जा उट्ठिउ भरहु महाणरिंदु ।
तो मउडवद्ध मडलिय चलय   केऊरसकंठाहरणघुलिय ।
महिवडियकणयकच्चीकलाव   अइभीसण थिय णं कालभाव ।
एकेक्क पहाण गिरिंदधीर   सहु राएं लहु संणद्ध वीरें ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza –

वलिभङ्गकम्पिततनु भरतयश सकलपाण्डुरितकेशम् ।
अत्यन्तवृद्धगतमपि भुवन वम्भ्रमति तच्चित्रम् ॥

M reads °तनुवरं and B reads कम्पितवर for कम्पिततनु, MP read विभ्रमति for वम्भ्रमति GK do not give it

1 १ MBP दूयागमि रविउग्गमणे २ MBP विप्फुरियडसणु डसिया° ३ M recods a *p* for this foot धणुगुणे रोवि दिढवज्जबाणु ४ MBP दूयहि वयणें ५ MBP सुमरेप्पिणु ६ P कह वि ७ MB णिरुभिवि, B णिरुजिवि ८ P करिवरु णियलत्थु ९ MBP तो १० MBP चलिय ११ MBP णरिंद १२ B धीर

1 3 *a* विसरिसु अद्वितीयम्, *b* अहरुद्धु अधरोपरितनभाग 6 *a* °छोह° विक्षेप 8 *a* चारु आचार 12 *a* चलय उत्थिता 13 *b* कालभाव यमस्वरूपा

घत्ता—सेविलोवउ तहु मउयपणु का वि णारि पमणइ जइ णावहि ।
किं पि महारउ सवर्येरिउ तो पियमम सुरएमणि म णावहि ॥ १ ॥

2

महु का वि भणइ इत्थायपय	किं कीरइ मणिकेकयसएण ।
मरिकारिकुम्भउ पहु जइ वि	मवगलउ सोहइ हत्थि तइ वि ।
तं पवमउ तुह पोरिसअसेण	मायेवउ पिय महु एवसेण ।
महु का वि भणइ पहु वि सुताव	किं तुम्ह पसाएं णत्थि ताव ।
तुह करणिसिसुकणिप्पहिं	पेरकुंभिकुमधुपमाविप्पहिं ।
हउं विचित्तया एव कुसुमिपगि	छेज्जमि ताविकेसु पइ संगि ।
महु का वि भणइ महिमाहरेण	मइं विज्जहि किं वीरें करेण ।
रिउवामेव पिय जयवारकारि	मायेवउ एयसमसेयहारि ।
महु का वि भणइ अहिमाणगाहि	अभियउ पिय पडिवक्खपाहि ।
कंपेण हएण वि णत्थि कज्जु	अइरावणु ण कला तेण रज्जु ।
जिम मिहउं जिम हिमवइ मिहइ	वीहिम्मा हएण जसु वीरि वहइ ।
महु का वि भणइ णीसंकयारं	ताविपाविसुवाइं पाविवसयारं ।

घत्ता—कइया कोवें मणोहरए जेण भवेण महामउयेत्तिकि ॥
रिज्जइं पयइ सुरसुयइं तासु किंपि भमीं महिमंडलि ॥ २ ॥

११ MBP कलमोवउ मारवणु १४ K सरिउ but gloss पवयण

2. १ MBP करिकुंभि° २ P करिकुंभि वाणिय एव पवि, but records a p विज्जमि पवि वडु. ३ MBP कामिजमि B वीरे करेण ५ MBP रिउवामर. ६ MBP कि करेण हएण ७ MBP मिहिवउ ८ MBP हय वाहएण but M records a p in the margin. वहिणा हएण. ९ M कणेण १ MBP हिंगर

16 वयवरिय वयणाद

2. 5 a करणिसिसुकणिप्पहिं करणीनिशितकर्तेः 6 b छज्जमि शोभे. 7 a महिमाहरेण आहत्मलोकेन; b विज्जहि वीजय 8 a जयवारकारि आहतमनस्क 9 b पवि वक्खपाहि प्रतिपक्षे मार्गे 10 a कंपेण चालितपुत्रेण

3

ता रायवयणेण रणतूरलक्खाइं   किंकर[1]राहयइं तासियविवक्खाइं ।
सुरदंतिखयजलयजलणिहिणिणायाइं   थं[2]गिथगिगिदुगिदुगिगि संदिण्णघायाइं ।
पडुपडहमद्दलमहारावरोलाइं   किंकर[3]रुब्भमियसल[4]लियतालाइं ।
मुहप[5]वणतुरुतुरियकाहलवमालाइं   गज्जंतभेरीहिं हल[6]मुहलवोलाइं ।
तडिवडणतडयडियगुं[7]रुकरडटिविलाइं   विरसतझल्लरिसरोसरियसेलाइं ।
णीसासभरेण पूरियइं विमलाइं   हूहूहुयंताइं वरसंखजमलाइं[8] ।
अवरेइं[9] वि पहयाइं परियलियसंखाइं   जयविजयसिरिकामिणीसोक्खकंखाइं ।
रुंजतरुजाइं भंभंतंभंभाइं[10]   हल्लावियाहिंदमहिसायरब्भाइं[11] ।
चलियाइं सेण्णाइं सणाहसोहाइं   वरकुंजरारूढरणरूढजोहाइं ।
णरकरविमुक्कासखुरखयधरग्गाइं   चलधूलिकविलाइं[12] विप्फु[13]रियखग्गाइं ।
परिमिलियमडलियबलसारवताइं   धाँ[14]वितपाइक्ककरधरियकोंताइं[15] ।
रहचक्कचिक्कारभेसियभुयगाइं   णिवछत्तछाहीहिं छाइयपयगाइं ।
जक्खिदखयरिंदभूमिंदभीमाइं   खयकाल[16]कीलाहि कीलाविरामाइं[17] ।

घत्ता—इय भर[18]हाहिउ णीसरिउ जाम समउ मतिहिं सामंतहिं ॥
ता वेयालियचरणहिं विण्णवियउ बाहुबलि णवंतहिं ॥ ३ ॥

4

परियणजलेण णंहु[1] महि पिहतु   उत्तुंगतुरगतरंगवंतु ।
करिमयरपसारियचंडसोंडु   सियपुंडरीयडिंडीरपिंडु ।
लायण्णपउरगंभीरघोसु   दु[2]ग्गउ चोद्दं[3]हरयणाहिवासु ।

3 १ B °करहयइं २ MBP ठगिदुगिगिठगिदुगिगि ३ MBP °करब्भमिय° ४ B °सललिय° ५ MBP °पवणहयकुहर (P कुहय) तुरुतुरियकाहलइं ६ P °हलमुसल° ७ MBP °खरकरड° ८ MBP °जुयलाइं ९ MBP अवराइं पहयाइं १० MBP भमंतभंमाहिं ११ MBP °सायरभाइं १२ BP °कवलाइं १३ MBP विप्फरिय° K विप्फरिय° but corrects it to विप्फुरिय° १४ P धावति १५ MBP °कुंताइं १६ MBK °कालकालाहि १७ B कीराहिरामाइं १८ भरहणराहिउ
4 १ MB महि णहु २ MB दुग्गमु ३ MBP चउदह°

3 5 *b* सरोसरियसेलाइं °शब्देनोत्सारितपर्वतानि 8 *a* °रुंजाइं वादित्रविशेषा , *b* सायरब्भाइं सागरा अभ्राणि मेघाश्च 10 *a* °विमुक्कास विमुक्ता अश्वा 15 वेयालिय° वैतालिकाः

संदणयोदिच्चपमूहवाणु पंचंगमंतपावाकविसणु ।
असमोचियमंडिपविकतीउ मार्गमियपियपुक्के कुरडीउ ।
पयपरयमल्यरपरिपुंछियगु दूरयरमिहिरयमकोवरसंगु ।
दुम्मुयरि देव अखिसुसरउए कर्पाहित करवार बलसमुदु ।
सुविचित्तपंचपडिपसरेण ता वुत्तर मउवलोसरेण ।
हर्ठे एक्कु बहरि किं पउर भणहि किं कालु भण्णइ जीव मेवहि ।
किं करमइ दुमउ तवमोहिं किं कमइ नयमड विसहरेहिं ।
किं कुसुमवाव भिसमउ हरंति गोमाउ मरंतु किं कांपति ।
धाइज्ज किं मयमोहिं माउ पउर वि रिउ महु ण मर्कति माइ ।

घत्ता—एक्कु वि पर ण समोसरमि भावाभावहिं चंगु विकेमीमि ।
मार्गतहु भिवसापंयहो सरवरपंतिहिं वरंधु भिमांगिम ॥ ४ ॥

5

गवीतु एम पउमवतेउ संभजाइ सिरिमउपकिरेउ ।
बोल्पंतहु भियपुरपामसंधु कामु वि वाहि यमंतु बंधु ।
दिणवाइ संपाइ ण माइ केम वाहुकोहरंतु कारसिह केम ।
केम वि वही अवधाममाण मसिपेमुप रमणारायमण ।
केम वि इचिम्प संगाममित्र सम्मोचमइ केरी परमसित्त ।
केम वि गुरु वड्डरउ कहिं वि नाथि कोप्पिवि पं बाहयवि कुलिसमारि ।
केम वि पिवट्ठ तोणीरपुप्पयु पं पक्को दावित पच्चक्खमदु ।
केम वि कहिर करवाउ चंडु पं मेवें दरिसिउ विज्जुदंडु ।

४ P पकडि. ५ MB °कुम्कुरहीर; P °कुमु कुरहीर K °कुमकुरहीर but corrects it to °कुरहीर T यरहीर पीतासुरगमन् ६ MBP °पुढिमउ K दमाउ ८ MBP °भावरिय ९ MBP भमहि १ BP भिरहिमि ११ MBP °भावरवामी १२ MB पसु १३ B भिवभिमि; K भिवंसमि
5 १ G चंद K मामरु २ MP वसु ३ MBP भविमेसुप ४ MBP भाविउ ५ MBP भमेसिगु बाससपुरिभमाधि ६ M पवमहुमर; BP पवासुमसु ७ P दाविउ

4. 4 a 'पोहित्त' पीः 5 कुरहीर यम 6 b 'मसोहरन्ह मप्ससमहर्न 11 b गोमाव सृगाल 12 a मयमेहिं मदमधुरे 13 भावाभावहिं सर्वथा 14 वरध्वं दर्हं वैष्यसुरल
5 1 a पउमवतेउ प्रभावितेजः 2 a भियपुरु सामर्थ्यसंपन्न 4 b भसिपेसुप कुसिक.

भडु को वि भणइ परु हणमि अज्जु णिक्कंटउ सामिहि देमि रज्जु ।
पहु तुच्छु पउर रिउ हउं वि धीरु भणु सुंदरि किं कीरइ वियारु ।
अवरुंडहि लहु दे देहि हत्थु को जाणइ पुणु संजोउ केत्थु ।
आयड्डिउ पहुहि पसाउ जेहिं रणि जुज्झमि अज्जु भुएहिं तेहिं ।

घत्ता— भासइ को वि महासुहडु मुइ मुइ कंति ण पवहिं मंज्झमि ॥
णिग्गवि रायहु तणउ रिणु अज्जु सीसदाणेण विसुज्झमि ॥ ५ ॥

6

भडु को वि भणइ कयवणमुहेहिं जइ भिज्जइ उरु करिमुहरुहेहिं ।
जइ खज्जइ आमिसु रक्खसेहिं जइ पिज्जइ सोणिउं वायसेहिं ।
जइ अंतइं गिद्धइं लइवि जंति तो मरणमणोरह मेहु सरंति ।
भडु को वि भणइ हलि हत्थु देमि गयदंतमुसलु कड्ढेवि लेमि ।
कंढवि णरकण अवर वि करेणु उड्डावमि अयसतुसोहरेणु ।
भडु को वि भणइ हुइ खंडखंडि महु करु पेक्खेज्जसु पंक्खितोंडि ।
सुंदरि गयणंगणि लंबमाणु अविमुक्कवेरि दावियकिवाणु ।
भइ धरणिघुलिउ लइ रिउ विहत्तु तुह मंगलंसुकज्जलविलित्तु ।
जं पेच्छहि वहुरुहिरें किलिण्णु परिमुक्कदीहणारायभिण्णु ।
पच्छयलु महारउ तं जि लेहि सघुसिणु करयलु अंहिणाणु देहि ।
हलि सामलंगि उप्फुल्लवयणु जइ णिवडिउं पेच्छहि तवणयणु ।

घत्ता—तो[10] मेरउ सिरु तरुणि तुहुं चित्ततुलारोहेण विवेयहि ॥
सहुं पत्थिव[11]परिवालिएण सरिसउ किं व ण सरिसउ जोयहि ॥ ६ ॥

---

८ K हणिवि ९ MBP करमि १० MBP मुज्झमि and gloss in MP मोह करोमि, K मज्झमि but मुज्झमि in second hand

6 १ MBP गिद्ध २ B मय ३ K °मुसल ४ M पेक्खिज्जहि ५ MBP पक्खितुंडि ६ MBP परमुक्क°, M records a p सरु मुक्क° ७ M अहिणाहु ८ MBP ओफुल्ल° ९ M ज णियडउ, BP अ णियडिउ १० MBP सो ११ MBP परिपालिएण

---

18 म ज्झ मि मनोहर करोमि

6 5 *a* कं ढ वि चूर्णीकृत्य, *b* अ य स° अपयश

7

घुइ गज्जिय गुरु संगामभेरि जं मुक्किय तिहुयणु गिमिवि मा
घुइ धिमाइ भुयबलि साहिमाणि घुइ पत्तहि पत्तउ चक्कपाणि ।
घुइ कालें कोविय वीद वीद पत्तरिय माणुसमंसासणीह ।
पिय कायपाल कीलियपिसीय डालिय गिरि कंपिय मेहणि सीह ।
घुइ मरुमारें खरखडिय धरणि घुइ पइरजकुएँ हसिउ तरणि ।
घुइ वरिवकाई पसोइयाइं घुइ चइयणसाई पयावियाई ।
घुइ मच्छरवरियई वड्डियाइं घुइ कामइ गमाई वड्डियाइं ।
घुइ चक्कई हत्थुग्गामियाई घुइ सेत्तई भिष्णहि मामियाई ।
घुइ कोंतई धरियइं समुहाई पुंखेयई बाणई विम्मुहाई ।
घुइ मुट्ठिणिवेसिय खग्गविरंइं घुइ पुंखुज्जल गुणि थिरियँ करेँ ।
घुइ पय कायर पच्चारियमाणें घुइ डोरिय संदण धय विमाण ।
घुइ मेंडंबरयच्चाइयमयंग घुइ भासचारवाहियतुरंग ।

घत्ता—घुइ घुइ चाएवि वसुमाहि सेण्णई जाम हणंति परोप्परु ॥
मंतरि ताम पराइ तहिं मंति भणंति समुग्गिमवि विसहरु ॥ ७ ॥

8

पिहिं बलई भणिय जो सुयेर ताय मरु होसइ रिसहहु तणिय णाय ।
तं णिसुणिवि सेण्णई सारियाई वडियाई बाणाई वच्चारियाई ।
तं णिसुणिवि वहसाउरियाई पडंतई तुरई वारियाई ।
तं णिसुणिवि घायपहरियाई करेवाकई कोसि णिवेसियाई ।
तं णिसुणिवि णिरुंधेई पचार विम्मुकई कवयणिबंधणाई ।

7 १ MB °मच्छ वीर. २ MBP माणसवीर ३ MBP हत्थाविय MBP पा° ५ MBP पत्त° ६ MBP °वलियई. MB पुत्तरा M °णिणिणि ९ M °घु १ MBP पहुमहु. ११ M णिविर. १२ M पडु १३ MBP °भास १४ P डोमर १५ MBP मेहु° १६ M सारवा BP सरवर
8 १ MBP सुयर २ MBP बलाइ पडिवारि. ३ MBP बलणिं. T विसर्पई तीक्ष्णिपि ण्यपि न पवणि

7 1 a युद्ध वीरम् 8 b °मध्य तणी ह मातामयेण 4 b नह मि सो.
8 5 a गिरंघर ई सन्नाहानि

तं णिसुणिवि मय मायंग रुद्ध पडिगयवरगंधालुद्ध कुद्ध ।
तं णिसुणिवि मच्छरभावभरिय हरि फुरुहुरंत धावत धरिय ।
रह खचिय कड्ढिय पग्गहोह वारिय विंधंत अणेय जोह ।

घत्ता—परिसेसियरणपरियरइं गुरुयणचरणसवहसणिहियइं ॥
सेण्णइं उज्झियकलयलइं थक्कइं कुड्डि णाइं आलिहियइं ॥ ८ ॥

9

पणमियसिरेहिं मउलियकरेहिं वाहुवलि भरहु महुरक्खरेहिं ।
उग्गमियरोसपसमतएहिं विण्णि वि विण्णविय महंतएहिं ।
तुम्हइ विण्णि वि जण चरमदेह तुम्हइ विण्णि वि जयलच्छिगेह ।
तुम्हइं विण्णि वि अखलियपयाव तुम्हइ विण्णि वि गंभीरराव ।
तुम्हइं विण्णि वि जगधरणथाम तुम्हइं विण्णि वि रामाहिराम ।
तुम्हइं विण्णि वि सुरहं मि पयड महिमहिलहि केरा वाहुदंड ।
तुम्हइं विण्णि वि णिवणायकुसल णियतायपायपंकरुहभसल ।
तुम्हइं विण्णि वि जण जणहु चक्खु इच्छहु अम्हारउ धम्मपक्खु ।
खरपहरणधारादारिएण किं किंकरणियरें मारिएण ।
फिर काइं वराएं दंडिएण सीमंतिणिसत्थें रंडिएण ।
दोहं मि केरा मज्झत्थ होवि आउहु मेल्लिवि खममाउ लेवि ।

घत्ता—अवलोयंतु धराहिवइ पत्तिउ किज्जउ सुत्तु सुजुत्तउ ॥
तुम्हह दोहं मि होउ रणु तिविहु धम्मणाएण णिउत्तउ ॥ ९ ॥

४ MB मच्छरभावरहिय, P मच्छरभारभरिय ५ MB फुरफुरत ६ MB अणंत ७ M चरणसवहसाहिहियइं, B °चरणवसहसणिहियइ, T सवहसंणिहियइ ८ P कोड्डि

9 १ MBP उग्गमिउ रोसु २ MBP read तुम्हइ विण्णि वि जयलच्छिगेह, तुम्हइ विण्णि वि जण चरमदेह ३ MB महियल केरा ४ MBP आउह ५ MBP किज्जइ सुट्ठु ६ MBP धम्मु णाएण

8 *a* पग्गहोह रश्मिसमूह 9 °सवहसणिहियइ शपथधृतानि 10 कुड्डि कुड्ये भित्तौ

9 2 *b* महंतएहिं मन्त्रिभि 7 *a* णिवणायकुसल राजनीतिकुशलौ 10 *b* सीमंतिणिसत्थें स्त्रीसमूहेन 12 सुत्तु सुभाषितम् 18 धम्मणाएण धर्मन्यायेन

10

परिभमइ भवरोप्पर दिट्ठि भराइ मा पंतसपसवसमु करइ।
थीमइ हंसावमिमाणिएण भवरोप्पर सिवइ पाणिएण।
तरपउ पुपु मदि ओपंतु देव कोइ करि मिपंतें सुरवंति सेव।
मुणइ विन्नि वि विसमतु ताम पक्केण हुविभइ पकु जाम।
भवरोप्पर जिणिवि पराक्कमेण पेंगइ कुम्मरपसिरि विक्कमेण।
तणुसोहाहसियपुरंदरेहिं ता भिडिउ दोहिं मि सुंदरेहिं।
किं गुहभिणहि भवमात्थवेण किं फलिमएण वि कडुएं भवण।
किं धम्मिमें बंधावंकिएण किं धासें पेतबसंकिएण।
किं रायं गुरुपरिकुलमएण सुपिपीयमुसपसिरसलमएण।

घत्ता—जे ण करंति सुहासियई मंतिहिं भासियाई पयपयाई।
ताई भरिसई रिसि कैमा करहिं सीहोसबछत्तई रयणई॥ १०॥

11

इय चिंतिवि हरिसिउ मंतिमंतु सुद्धाउगामि भीसेसु संतु।
मवकंमिउ पेसु ण परिपचेहिं मार्यबकसपसिबलेपचेहिं।
सकसायपमाय मासंण्णु झुक दोहिं मि मयकोउ पकेमेक।
कलावणु पहु सुपवसिहि लोइ पेच्छई रविविंबु व किरणवंतु।
देहिन्ति विट्ठि दवरिहिभार मिच्छिय विद्धिय नवियलिभार।
मं होंति कुमार पंचमेगाइ विसपासा ईव मुणिवरमेरे।

10 १ MP पत्तमवणु मम्हु B पत्तमवणु मम्हु T वत्तमवणु २ B करी वा ३ MBP मिवइ. ४ MBP वणुयमु मेहणि ५ T वारवणुिएण ६ MBP करी करी MB मिचाहं° P मिहाहं°

11 १ MBP मालण्ण दुर २ MBP पइकेव ३ MBP दंतु ४ MBP वेमिवमि ५ P पेच्छ-मपइ ६ MBP मिर. ७ P °मवाह

10. 1 b पत्तवपत्तवपबणु पतकमसमरकम् 8 बंधार्ध किएण बाबाकस्वीकेन 9 a इत्यपरिवृत्तएण मणिपुरोहितत्रमितेन. 10 सुहासियइ सुभाषितानि ययणयवई मौक्तिकानि

11. 1 b सुद्धाउगामि स्वामितम् भीसेसु संतु सर्वगुणमय 5 b णविद्धीभार नविनीत्तवा सिरणा

ण तावसि भग्गी विडरईइ णं सेलभित्ति गंगाणईइ ।
णं कमलपंति ससियरतईइ कुमुओलि व मउलिय रविरुईइ ।

घत्ता—ठिउ हेट्ठामुहु चक्कवइ णिज्जिउ पडिभडदिट्ठिपहावहिं ॥
घल्लियणवकुसुमंजलिहिं णंदातणुरुहु संथुउ देवहिं ॥ ११ ॥

12

मओमत्तमायंगलीलावहारा रमावासवच्छत्थलोलंतहारा ।
फणिंदेण चंदेण इंदेण दिट्ठा पुणो दो वि राया सरंते पइट्ठा ।
सरंतेहिं आलोइयं सच्छणीरं विसालं गहीरं तुसारोहतारं ।
महापोमसुत्ताहिमाणिक्कदित्तं मरुघुव्वंततिगिच्छिधूलीविलित्तं ।
महीरंगरंगंतकल्लोलमालं मरालीपहालग्गलीलामरालं ।
सिरीणेउरालावणच्चंतमोरं भिसाहारपूरंतचंचूचऊरं ।
तरंतामरं रोयरारद्धकीलं जलुव्भंतमीणं लयापत्तणीलं ।
ससीछाहिसारंगढेवंतसीहं समुत्तुंगफेणावलीछण्णतूहं ।
झुणंतालिकोलाहलं सारसिल्लं इणुम्मुक्कपायावलीफुल्लफुल्लं ।
सुयाणेयपक्खिंदजक्खिंदसद्दं पमज्जंतहत्थिंदसोंडाविमद्दं ।

घत्ता—तहिं विण्णि वि जण ओयरिय पहुणा चित्त जलंजलि भायहु ॥
वियलइ उप्परि मेहलहे णं मंदाइणि हिमइरिरायहु ॥ १२ ॥

---

८ P °रुईइ ९ M ण कुमुउलि वररवियररुईइ, B ण कुमुउण्णिव णवरवि°, P ण कुमुउलिव णवरवि°

12 १ MBP वच्छत्थलोलवि° २ M °तिगिच्छ°; B तिगिंछि°, P तिगिंगछ° ३ MB गेयपारद्ध° P खेयरारद्ध°, T रोयर चक्कवालं ४ MBP °सिंह. ५ M सारिसिल्ल ६ MP °पेम्मत° ७ MBP णिमज्जत° ८ MBP सुडा° ९ MBP वियरइ

---

7 *a* विडरईइ विटरत्या 8 *a* °तईइ °संतत्या, *b* कुमुओलि कुमुदपंक्ति 9 पडिभड° बाहुबलि.
12. 1 *b* रमावास° लक्ष्मीनिवासम् 2 *b* सरंते सरोवरमध्ये 8 *b* °तारं शुभ्रम् 7 *a* रोयर° रुचिरम् 8 *a* ससीछाहिसारंग° चन्द्रप्रतिबिम्बे स्थितं हरिणमुद्दिश्य, °ढेवंत° धावन्, *b* °तूहं तटम् 9 *b* इणुम्मुक्कपायावली° आदित्येन मुक्ताना किरणाना समूहे

13

पच्छण्णसु पावेवि पुणु वि चलिय छेहाणुइ जम्मभत्ति व घुलिय ।
कडियम्मि धावंती सुरयासु दीसइ तारोलि व मंदरासु ।
ण मरगयमहिहरि चंदकंति णं णीलमहीयहि हंसपंति ।
वहंती दीसइ सलिलपवाह णं फेणमइ कंठिय सुणार ।
ण सुरसरि चवलतरंगफार गयणुल्लंघण मसमुंसुमार ।
आलिंगिवि पुणु मयरद्ध मिसुन्न पंडुरथणं गुरुजलसमुद्द ।
पच्छाइउ जलरिसु ताइ धाउ पवमइ णिमीकिसिय णं थिरोत ।
कलयहरि ण सरयब्भावमीर णं रुप्पपसिहरि ससहरसरीर ।
सलिल णवसोत्तइं पूरियाइं बहुपरियणसयणइं पूरियाइं ।
उम्मोसिउ णिवइ महासरेहिं बाहुबलिणरवाहिवकिंकरेहिं ।

घत्ता—सीसु पुर्णगु मुंयंतु उब्भु सरवरवारिपवाहें सित्तउ ॥
पडिमासीहरियउ पुहइवइ भाई करिउ करिंदें जित्तउ ॥ १३ ॥

14

जसभरियसुणासापंसएण बहियपडिमऊवलकंसएण ।
चंचियवभंजलियकुरंमएण परिहरणी सरतीरंगएण ।
एसारवणिग्गयविवरिमेण सप्पेण व भरभासीविसेण ।
सीरेण व रउपकसरण विष्फाप्पिउ माइ भरेसरेण ।
पीडिज्जइ वेरउ रज्जुवाउ एहु पिययर चलइ पुणु सुवाउ ।
पुरुसर वि चययेम्मलसोह पर भेड कहिं उप्पत्ति जोह ।
भवियाविपवरिपवम्मसार माहिणाह यावहो मोहियार ।
किं विरं चयवेण पच्चोएण जीवंतइं सलिलें घोरएण ।

13. १ MB पुणु चलिया २ MBP मुणिमा ३ MBP तारावलि मरगउ. ४ MP णविणि; B णविहरि. ५ MBP णक्क° ६ MBPK मुणंतु. ७ MBP °णोवरियउ
14. १ MBPK दच्चिय° २ MBP °भंगिमा° ३ MB भिमयरसएण

13 2 b ताराऽऽलि तारावली 8 b °महीधरमिव ददृशे
14. 1 b नवियैत्वा रि—भविन अविमरजातुनविना उच्चपाठके वनसी मनमिते बस 2 b नरि रयणे भैरत

ए एहि देहि भुयजुज्झु तेम अज्जु जि एयंतरु होइ जेम ।
ता भणइ जइणि णिप्फलु जि भसहि धणुवाण महारा काइं हसहि ।
जाणंतु वि देवि[५] णिरत्थु भणहि पियविरहुव्वेइउ किं ण कुणहि ।
महिलाण गोहुं हुउं सयणमग्गि गोहाण गोहु कड्ढियइ खग्गि ।

घत्ता—जइ सयणत्तणु मण्णियउं तो किं मग्गहि पुहइ भडारा ॥
णियधणकणमयकयविवस पत्थिव सयल होंति विवेरेरा ॥ १४ ॥

15

तओ भुयभंडणि भायर लग्ग णरिंदसिरोमणि घट्ठपयग्ग ।
कुलीण कुकारणि माणमहल्ल पहाण महावल विण्णि वि मल्ल ।
सुकंचणकुंडलमंडियगंड पसारियबाहु सरोस पयंड ।
चिराउस चंदचडावियणाम सुविक्कमवंत णराहिवकाम ।
समत्थ सिरीण रईण णिकेय महारह भारह भक्खरतेय ।
असंक खगंक ससंक विपंक जसंसुपसाहियपुण्णससंक ।
मिलंति मिलेप्पिणु हत्थि धरंति धरेप्पिणु देह धडेवि पडंति ।
पडंत जि गाहणिबंधणु देंति कडीयलु कंठु णिरुंभिवि ठंति ।
विरुद्ध वि गाह बलेण मुयंति मुएप्पिणु उड्डिवि झत्ति वलंति ।
अलंभुयजुज्झविहाणसयाइं पचेप्पणकड्ढणवेढणयाइं ।
करंति वि धीर अविहवियंग णिरंकुस णाइं मयंध मयंग ।
पयाणभरस्स धरित्ति ण तिण्ण विमुक्क रवेण दिसाकरि धुण्ण ।
फलोणयपायवपिट्ठु व छुण्ण णहे गय पक्खि वणेयर रुण्ण ।
ण चल्लिय कुंचिय कूर फणिंद दरीकुहरेसु णिलीण पुलिंद ।
तओ हयमाणिणिमाणमएण णरामरसंगरलद्धजएण ।

४ P भुयजुयलु ५ BK देव ६ MBP कुणइ ७ M मोहु, but records a *p* गोहु ८ P कणयमय°
15 १ K °घुट्ठ° and gloss घृष्ट २ P सकंचण° ३ MBP वारहभक्खर° ४ MBP घडेण ५ MBP पडंति जि गाढ° ६ MBP णिरुद्ध वि बाहु, K णिरुद्ध वि गाह ७ MBP जंति ८ MBP पचपण° ९ PK चुण्ण

10 *a* जइणि जिनपुत्र , भसहि असमद्ध प्रलपसि
15 2 *a* कुकारणि पृथ्वीनिमित्तम् 4*b* णराहिवकाम देवौ 5 *b* भक्खर° आदित्य 6 *b* जसंसु° यश किरणा 12 *b* धुण्ण सकुपिता 13 *b* वणेयर मृगा

सुरिंदकरीकरपोरभुएण मणिदसिविसिवसुपवंसुएण ।
पहुस्स करेण करा पराविं परप्प विरेण भरेवि कमावि ।

घत्ता—कुंभिरि पाउ समुच्छरिउ णायविपिविपिसेविपकंदरु ॥
कयरप्फसकोठहएण किं पि पुरंदरेण गिरि मंदरु ॥ १५ ॥

16

वत्तरिउ सुपुत्ते णं सुवंसु कमसमपरेण णं पयांसु ।
णं सुहपरिणामें सीलं भग्गु णं सुपणसमूहें सुक्करग्गु ।
णं मुणिवरणारें णवविसेसु णं णरवरिंदवापण देसु ।
णं गमेजवियारें णाणमाणु णं णायें कंपयकुसुमरेणु ।
णं कामुपसत्यें कामभाव णं सो जि तेण संसारभाव ।
णपयसमप्पाणविमइएण पहमेण पहमजिणणंदणेण ।
माउर्वे बहुमेल्लिवपपेण कुर्वे भवणव्विपयसअयेण ।
परिपाविसमससमसुंपरेण ता विहिउ वाहु सुकंपरेण ।
णमयारसमल्लाहु पहुरवंहु णठारु कंपलु पिलुरंहु ।
पविविंविय ण सिवसिरसमेउ तें परिपेसिउ बाहुबलिवेरें ।
पिउ हारिवसुपरहु समीर कें पहउ किर पिवकुमारोंउ ।
को सुरमुपितिपिवापुनहिं को पम णिमर जागि चक्कवहिं ।

घत्ता—विंमिउ भरहणराहिवइ बाहुबलीहु जमेण पसंसिउ ॥
ससमारउ सुरमुक्किपहिं पुप्फयंतपंतिहिं णं पहसिउ ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहबाहुबलिजुज्झवण्णणं णाम
सत्तारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १७ ॥

॥ संधि ॥ १७ ॥

१ P करेमि ११ MBP कुमरें १२ M णार्ह, but T कि पिरिवरो पुरवेण मोत्तूण
16 १ MBP णीर २ MBP पमाण° ३ BP बहुपाविय° ४ K °विसमेर ५ K बाहुबली पेउ. ६ MBP पुप्फयं°

16 4 a पणयणिवारें पणमसिवया णाणमोल ग; b णा एं नारोग 5 b सोसि मराग) देव बाहुबलिय. 14 पुप्फदंतपंतिहिं पुप्फदंत पंक्तिभिः दामि

XVIII

णहु लंघिउ सुरगिरि चालियउ धीरें सायरु मवियउ ॥
करडिंभु व वंभहु तणउ सुउ उब्बोइवि[1] पुणु थवियउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

णं कमलसरु हिमोहय[2]कायउ दवदड्ढुउ[3] रुक्खु व विच्छायउ ।
जं ओहुल्लियमुहु[4] पहु दिट्ठउ तं बलि भणइ हउं जि णिकिट्ठउ ।
चक्कवट्टि णियगोत्तहु सामिउ जेण महंत[5] भाइ ओहामिउ ।
हा किं किज्जइ भुयबलु मेरउ जं[6] जायउ सुहिदुण्णयगारउ ।
महि पुण्णालि व केण ण भुत्ती रज्जहु पडउ वज्जु समसुत्ती ।
रज्जहु कारणि पिउ मारिज्जइ बंधवहुं[7] मि विसु संचारिज्जइ ।
जिह अलि गंधें गउ संघारहु तिह रज्जेण जीउ तंवारहु ।
भडसामंतमंतिकयमायउ चिंतिज्जंतउ सव्वु परायउ ।
तंदुलपसयहु कारणि राणा णरइ पडंति काइं अवियाणा ।
डज्झउ रज्जु जि दुक्खु[8] गुरुक्कउ जइ सुहु तो किं ताए मुक्कउ ।
सुहणिहि भोयभूमि सपयेयर[9] कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर ।

घत्ता—दुल्लंघहु[10] दुकियलच्छणहो दूसह[11]दुक्खदुरंतहो ॥
भणु दाढापंजरि पडिउ णरु को उव्वरिउ कयंतहो ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

शशधरविम्बात्कान्ति तेजस्तपनाद्गभीरतामुदधे ।
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरत कृतो विधिना ॥

GK do not give it

1 १ P उच्चाविवि २ P हिमहय° but gloss हिमाहत ३ P दवदट्ठु व ४ B ओहुल्लिय महु ५ MBP महहु ६ P हा ज जायउ ७ P बधवाहु विसु ८ B दुक्खगुरुक्कउ ९ P सपयधर १० B दुल्लंघिय-दुक्किय° ११ MB दूसहो

1. 2 करडिंभु हस्ते बाल इव, थवियउ भूमौ मुक्त 4 *b* बलि बाहुबलि 5 *b* ओहामिउ अभिभूत तिरस्कृत 6 *b* °दुण्णय° अविनय. 9 *b* तंवारहु नरकम्

2

कालभुयंगहु को वि ण चुक्कइ भुवणत्तए वि एक्कु पर थक्कइ ।
मइं पर केत्तउ कालु वियाणिय पुव्वइं पुव्वयाइं वोलाविय ।
पयडि मइमहिरासु ण गम्मइ वणवि कम्मु भावइ किह हम्मइ ।
पडिवण्णउं ण केम पालिज्जइ किह हियवउ कम्मुखें मइलिज्जइ ।
जं माणुसु धम्मेण ण भिज्जइ सो सिविणु तेण किं किज्जइ ।
तेण मज्झु जम्मयरु करेवउ जं पडिऊलिउ तं म करेवउ ।
अप्पउ अप्पिमविसयासें रंजहि मह मरि तुहुं वि भरहहिव भुंजहि ।
णाहपियगिरिपयपीसुप्पमविद्धिरि हउं पुणु सरणु जामि परमेट्ठिहि ।
तं णिसुणिवि भरहसें वुत्तउ परिहवपूसिउ रज्जु ण जुत्तउ ।

घत्ता—मंतिउरहयपयाइं परियणाइं कोसेसाइं मि णिवंताइं ।
हउं जिणवर पइं तुहुं सह कोविर पाम सूयसु गुणवंताइं ॥ २ ॥

3

तह पइं जियमुणिहिं मंतोरिउ भूमंडलि वरचि अप्फालिउ ।
ता किं भइं एयसु मइं रक्खइ पुहुं कीलंतु कोइ वि किं पेक्खइ ।
पइं जिन्ती रामा वि पसमाणें पइं तोसिउ केउखिउ सयणें ।
पइं जिह हेयपंतु ण वियाणउ तउ गंभीरु धीरु रयणायरु ।
पइं दुक्खसयपंकु पक्खालिउ णाहियरियवंसु उज्जालिउ ।
पुरिसरयणु तुहुं जगि पयडउ भेम कवउ महु मज्झु वेयडउ ।
को समत्थु णयसमु परिणवइ जणि वासरक्ख काइं किर वणइ ।
पइं मुणवि तिहुयणि को चंगउ भणु वणगु पणवइ गरुवउ ।

2 १ MBP सिविण करउं तेण किर किज्जइ; K सिविणु तेण करउं किर किज्जइ, but corrects it to सो सिविणु तेण किं किज्जइ. २ MBP वणिउ

3 १ MBP महिमंडलि २ MBP णयरयणु ३ MB पुणु वि जलंतु; PK पुणु वि मिलंतु ४ MB तोसिउ ५ M पोसिउ B केसिउ

2. 2 a केत्तलि न मनितः, b यो न मित न सिम्मसिला वलिता 5 न मित न रं न मनुष्यत्वे
3 8 न मानि पृथिव्यामि b न न सिव एवा. 6 b ने न तन वैकल्यम्

अण्णु कवणु जिणपयकयपेसणु अण्णु कवणु रक्खियणिवसासणु ।

घत्ता—ससि सूरहो मंदरु मंदरहो इंदहु इंदु अणीयउ ॥
पर पक्कहु णट्ठापविसुय तुह ण णिहालमि बीयउ ॥ ३ ॥

4

जं तुहुं दुव्वयणेहिं णिब्भच्छिउ ज दिट्ठीइ सरोसु णियच्छिउ ।
जं सरवाणिएण णिरु सित्तउ जं जुज्झंतें पेल्लिवि घित्तउ ।
तं एवहिं खेम करि महु वधव जिणवरतणय तिजगमणसंभव ।
आउ जाहु उज्झाउरि पइसहि अज्जु जि तुहु सिंहासणि वइसहि ।
पट्टु णिवंधमि भालि तुहारइ अक्ककित्ति जीवउ तुह केरइ ।
एवहिं रज्जु करंतउ लज्जमि एवहिं परमदिक्ख पडिवज्जमि ।
एवहिं इदियछदु विवज्जमि एवहिं पुण्णु ण पाउ समज्जमि ।
एवहिं कम्मणियधेण भजमि एवहिं जोए प्राणे विसज्जमि ।

घत्ता—वधव वणवासहु पट्ठविवि धरणिमोहरसभंतें ॥
मइ एवहिं दुज्जसभायणेण भायर काइ जियंतें ॥ ४ ॥

5

सज्जणकरुणें सज्जणु कंपइ तं णिसुणिवि भरहाणुउ जंपइ ।
जइयहु हउं सिसुत्ति सइकीलिउ तइयहु पेइ वि किं ण परितोलिउ ।
मज्झु वि तुज्झु वि कवणु पराहउ मज्झु वि तुज्झु वि कवणु महाहउं ।
जे गय ते सयल वि मग्गिवि मिसु भावइ भोउ ताह णावइ विसु ।
तेत्थु ण काइं वि दोसु तुहारउ वंदणिज्जु तुहु जगि गरुयारउ ।
जइ एवहिं धरित्ति ण समिच्छहि तो जें दिण्णी तहु जि पयच्छहि ।

4 १ MBP ज दुव्वयणेहिं २ M महु खम करि ३ MBPK °णिवधणु ४ MBP पाण
5 १ MBP किं ण पइ मि २ P adds after this तुहु जि जेट्ठु महु सामि महारउ ३ MPK तो.

10 अणीयउ प्रतीन्द्र, उपमां प्रापितो वा
4 7 *a* °छदु °वशत्वम्
5 1 *b* भरहाणुउ भरतानुजो बाहुबलि 4 *b* भावईत्यादि—भोगस्तेषा विषमिव प्रतिभासते.

तहिं अवसरि वयणेहिं विराइउ मंतिहिं भूमिणाहु संबोहिउ ।
सुर संताणि पवेवि महाबलि पउ कमागु परमपउ भुवबलि ।

घत्ता—पणु अंतु सुयंतु करिकरसिरि महि महंतु अहिमाणिउ ॥
साकेयहु राउ विसण्णमणु मंतिहिं मेहर माणिउ ॥५॥

6

एत्तहि गिरिमरि बाहुबलीस महरूवउ पेच्छविमसीसे ।
थिरुथिरु महुमहुरु थिरु महुमहुरुम्महुरु ।
भरहुक्कोहुम्महुणाविमुहिं वेहुक्कोहुमणहिं दप्पिमुहिं ।
सो पउ पीसर कुंठिपेच्छावहिं मसासिहिं मञ्जणहिं सवायहिं ।
पयणुमायणहिंरज्जपयारें सा भिणु संथुउ तेण कुमारें ।
रोसु तुम्हु रोसत्त ण भिण्णउ पउ ण पावइं संसारि भम्मउ ।
पर मेत्तिवि रोसु वि रोसावरि पिययउ कलंकमिसेण व ससहरि ।
तुह सामणिमयण ण पहुर मोहु मोहणोसंसिरिहिं पाहुर ।
पर तासिउ बहुरिपसमाउ भेउ वि समेउ सिमावें गउ ।
केरप्पहु वि वप्पु पर साहिउ काबहु उप्परि काणु ममाहिउ ।
तुहुं विमोहु भणीहियपंयउ तवणियेम पउ दाविपपंयउ ।
विक्षा भावें पर धम्मपुरि वहुभिउ तुहुं रवि हरि हर सिरि ।
पम देउ गउ मरिह पंतिवि मिच्छापुरिउ पेच्छवि सिरिसि ।
भावइ भयवम्महुप्पाउहु करिवि संसिरवरि भिहुरप्पाउहु ।

---

४ MBP मेरु

6 १ MBP पचाणिय° २ G हुमुर° ३ P रोसु रोसमरि. ४ MP मोहणोसरि. ५ MB पन्तु मोह° ६ MBT °मणाउ T record ७ देव भिणवरु इमो गाहे शमावरणकिलवह. MB करेवि P सिरिहिं सि MBP करवि करभिहुर°

---

9 कडिवासियं अभिमाणपर, 10 म हु र पवरकरेण

6 2 थिरु थिरु र परमहुसे स्थित ; म हु म हु र मधुरं 3 b देहुक्कोहु° कोपेन सह 4 a कुंठिपयावहि प्रमाणाधिक्यवचनैः b म ज ण हिं वचनैः ; सवायहिं सवागैः 9 b मोहणोसंसिरि मोहोत्पत्ति कर्मसिद्धानि हरणसेविमि तत्त्वकाल कर 11 b तवणियम पउ दावि नियमे व दाता 14 b करिवि परि कामदेवे

घत्ता—सर पंच वि दलिय वम्महेण धणु रइ विण्णि वि मुक्काइं ॥
पडिवण्णइं पंच महव्वयइं पयजुयपाडियसक्कइं ॥ ६ ॥

7

णत्थि उवाणहाउ सयणासणु मुक्कउं छत्तु असेसु विहूसणु ।
विसहइ दंसमसयसीउण्हइं छुहजणदुव्वयणाइं सयण्हइं ।
चरिय णिसेज्ज सेज्ज रइ अरइ वि वहबंधणु गयजण वणवसइ वि ।
सीह सरह तणु लग्ग ण वारइ मुणि जच्चिण्णहि चित्तु ण पेरइ ।
जल्लमलेहिं मि लित्तउ अच्छइ वउसक्कारु किं पि ण समिच्छइ ।
असुहसुहेसु समत्तणु मण्णइ विविहातंक रोय अवगण्णइ ।
लोयकप्पहिं ण मुज्झइ दोहिं मि सक्कारेहिं पुरक्कारेहिं मि ।
अइंसेण अलाहु रिसिसारउ पण्णपरीसह सहइ भडारउ ।
वयसमिदिंदियरुंभणु लोउ वि अंचेलकावासयजोउ वि ।
ण्हाणविवज्जणु महिसंसोवणु दंतांधोवणु कयठिदिभोयणु ।

घत्ता—वणि णिवसइ दुक्खसयइं सहइ ण चवइ थोवउ जेंवइ ॥
परमित्ति करइ णिद्द वि जिणइ मणु वेरग्गें भावइ ॥ ७ ॥

8

एम चरंतु चरित्तु सुदुंद्धरु महि विहरंतु पइट्ठु वणतरु ।
तहिं थिउ एक्कु वरिसु लंबियकरु वेल्लीवलयहिं वेढिउं णं तरु ।
जासु अंगि पयघट्टियसिंगहं कंडुविणोउ सरइ सारंगहं ।
जासु वच्छि फणिमणि पविराइउ बहुसो विसहरेहिं हाराइउ ।

7 १ MBP सतण्हइ, T सयण्हइ २ B जच्चिहे ३ MBP अद्दसणु ४ M अचेलक्क आवासयजोइ वि, B अचेलक्क पवासयजोउ वि ५ MP दताधोयणु, B दताभोयणु
8 १ BP सुदुद्धरु २ MBP ण वेढिउ

7 1 *a* उवाणहाउ उपानहौ 2 *b* सयण्हइ सतृष्णानि 4 जच्चिण्णहि याच्ञायाम् 5 *b* वउसक्कारु शरीरसस्कार 8 *b* पण्ण° प्रज्ञा 9 *a* लोउ केशलोच , *b* °आवासय° आवश्यकानि 10 *a* °ससोवणु सस्वपन शयनम्
8. 4 *b* हाराइउ हार इवाचरितम्

तहिं अवसरि बप्पेहिं णिरोहिउ मंतिहिं भूमिणाहु संबोहिउ ।
हुउ संतावि चवेवि महाबलि गउ केलासु पराणउ भुयबलि ।

घत्ता—अणु जंतु सुयंतु परिवाधिरि महि माणंतु णाहिमाणिउ ॥
साकेयहु पउ विसज्जमणु मंतिहिं मंदिरु आणिउ ॥ ५ ॥

6

पत्ताहिं गिरिवरि णाहुबलीस भरहूपउ पैमाणियसीसें ।
णिहुणिहुउ बहुलहुउ रिहुउ महुहुरूमहुरू ।
भरहकोडुमहुमाणिकुहिं केहकोडुमणाहिं दप्पिकुहिं ।
जो णउ दीसइ कुंडिमैवायहिं मंसासिहिं मज्जणहिं सणायहिं ।
भवणुमायमहीरुअणकारें सो जिणु संथुउ तेण कुमारें ।
पेसु तुम्हु पेसेण ण भिम्मउ पउ ण णावाउं संहारि कम्मउ ।
पई मेल्लिवि णाहु वि दोसापरि पिसउ कम्मंकमिसेण ण सयहारि ।
तुह हाणमिमणप ण बहुउ मोहु माहपीवहिहिं पाढुरु ।
पई तासिउ बहुरिपसमउ कोहु वि सबेकोहमाणं गउ ।
कैवल्णु पि एग्गु पई साविउ कामहु उप्परि कामु ममाविउ ।
तुहुं णिमोहु भणीरियमंडउ तवसिरिपमं थउ वाविपरंपउ ।
णिच्चा वासं पई कम्मंगुरि गहणिउ तुहुं पवि हरि हर णिहि ।
पम देव मण मणिउ वीसिवि मिच्छमपुमिउ मैपवि मिसिवि ।
णाणइ मयमयसुरुप्पाइगु करिविण सीभिरवरि णिहुलप्पाइगु ।

४ MBP मंतई
6 १ MBP स्थाविय° २ G कुडिय° ३ P सेवु पेसलहि, ४ MP कोहपोहरहि, ५ MB जणु मोहु° ६ MBT °मासर T records p° देम मितावर पुणि पारें इमतालिमाव ७ MB णरोणि; P णिरिहि णि ८ MBP करिहि णरिकुर°

७ णरि ता मि च अभिमानेन, 10 य हु इ भक्ततरेण
6 १ a णिहु मिहुउ परमागुणे रिपा ; बहुाबहुउ भव्वगं ३ a केहुाकोहु° कषायरण ४ a कुडिमयाणहिं डाकवणियिएलहिं ६ बणहरि हए वत्तावहिं एत्तवि... ९ a बोहे लाए दीमेहि सर्वहिं इत्पंतिमि पण्णानं च ११ a दवमिचमं चम चामि भिक्षो च यिन १४ a करिवर वरि भवकरे

10

इदचंदवंदारयवंदें तहिं अवसरि बाहुवलिमुणिंदें ।
एक्कहु जीवहु गुण मणि भाविय राय रोस दोण्णि वि उड्डाविय ।
तिण्णि वि सल्लइं हियउद्धरियइं तिण्णि वि रयणइं लहु संभवियइं ।
तिण्णि वि डंभै मुक्क सखेवें गारव तिण्णि विवज्जिय देवें ।
चउगइकम्मणिवंधणरमियेंउ सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ ।
पंचमहव्वयाइं अविहंडइ पंचासवदारइं णिच्छंइइ ।
पंचिंदियइं कयाइं णिरत्थइं पंच वि णाणावरणइं गंथइं ।
छावासयउज्जमु सुविसेसिउ छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ ।
छह लेसहं परिणामु वइट्ठइं छ वि दव्वइं पच्चक्खइं दिट्ठइं ।
सत्त भयाइं हयाइं गहीरें सत्त वि तच्चइं णायइं धीरें ।
अट्ठ वि मय णिट्ठविय अदुट्ठें अट्ठ सिद्धगुण भरिय वरिट्ठें ।
णवविहु वंभचेरु परिपालिउ णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ ।

घत्ता—दसविहु जिणधम्मु वियाणियउ पयारह हयजडिमउ ॥
अवियारह धीरहं सावयहं वारह भिक्खुहुं पडिमउ ॥ १० ॥

11

तेरह किरियाठाणइं मुणियइं तेरहभेय चरित्तइ गणियइं ।
चोद्दह गंथमला वि समुज्झिय चोद्दह भूयगाम सइं वुज्झिय ।
पण्णारह पमाय मेल्लंतें पुण्णपावभूमिउ जाणंतें ।
सोलहविह कसाय पसमंतें सोलहविहवेयणेसु रमंतें ।

10 १ BP राय दोस २ MBP समरियइ, K सभवियइ but corrects it to समरियइ ३ MBP वेय ४ P रसियउ ५ BP णिच्छंडइ ६ B छावासउ ७ PK सुविसेसिउ ८ B उपट्ठइ ९ MBP परिणामु १० MB दहविहु ११ MP वियारियउ १२ M अवि यारह, but records a *p* अवियारह
11 १ B चउदह २ MBP °वयणें सुमरंतें

10 1 *a* °वदें वन्येन 7 *b* गथइ परिग्रहरूपाणि 9 *a* वइट्ठइ उपदिष्टानि सर्वज्ञेन
11 4 *a* सोलहविह कसाय कषाया क्रोधमानमायालोभा प्रत्येकमनन्तानुवन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसज्वलनविकल्पा सन्त षोडशविधा भवन्ति

जासु मत्तु कयमयजलपवयरं   जासउ करिहिं करडकंडुयणउं ।
करवंगुलुमवाविल विहिकाव   सरहसु बवसरजर्रहिं भिसिसाव ।
देहि करंति जासु सुरमरिधिरिहिं   उक्कुरिय सय पहयरतरणिहिं ।
तणुकेतीए जासु हयसमा   हस वि हरियवल्ल संजाया ।
जासु रत्तकंदोसिर महइ   पण्हिय सूमत वोर्यर परेइ ।

घत्ता—मासण्णउं जासु मुणीसरहो तवपहावजवसंतउं ॥
करि केसरि मक्कउं फणिउरउं सह हिंडंति रमंतउं ॥८॥

9

पक्कहिं दियहिं पवगु सपथिर   तासु मरहु मउ गंधवहाथिर ।
पुच्छइ करहिर पयपरियमहउ   पई मुणवि जगि को वि ण महउ ।
पई काम अकामु पारद्धउ   पई दप्प मयाउ कउ भिद्दउ ।
पई चाउँ अवालयउ जोइय   पई अपरेण वि वेरि मए हीरए ।
पई पियभुपणखेम हउं जोणियउ   पई वि पुणु वि कारणें दसियउ ।
पई मुह विण्णी पुरइ संसत्थें   तर्जु परमेसरउ जगि परमत्थें ।
परवयगोरि मीर समवंता   महि मुणवि कियमेपुवसंता ।
पई केरा जगगुरुणा केरा   पहु देविम जइ तिहुयणि तेरा ।
मरिव रसपर्फसपरसभारुस   जम्हारिस वरि वरि कि कुमाणुस ।
पासवंत हियपर विस्सभर   पावगुण परवस अप्पंमर ।

घत्ता—हा मइं बहुकम्मपरव्वसेण विसयवमाइं ण मरियाइं ॥
पडहो वियवीयउ कारविय सीयसयाइं वि धरियाइं ॥९॥

१ MBPK कमालए ४ MB गेमें P वोमिहि ५ B वरह

9 १ BP °भमिर २ B जो मए ३ M समत्थें but records a p पाएमें ४ MB अप्पेण ५ MBP °वयार°

8 b तरइडु मरमकउ मिसिया इ तीत्थमिसीदे 9 a इस्तंपादिति एकम्मताक्का b वहिय या मिक्त वीय इ कुमकेन

9 1 सवस्थिइ समर्थाथिय 2 °णविय इव मतेव 3 अक्कावु मैराम्सु, b बरइव मीराणा विहरइ बोरुव पुरीया 4 a अयाण वइ मितमिर्विनाथि b वरि अहसिवसाने वरमामनि 11 महिवइ मवियमि.

को किर भणइ तुज्झ समाणउ तुहुं जि मुंडकेवलिहिं पहाणउ।
एम थुणंतें बुद्धिसमिद्धें इंदें वेउव्वियउ खणद्धें।

घत्ता— पेउमासणु चवलु चमरजुयलु एक्कु जि छत्तु मणोहरु॥
दीसइ पप्फुल्लिउ पंडुरउ णं तवसरि इंदीवरु॥ १२॥

13

पयणियजणणमरणविडुमरइं संसमंतु भाउग्गयतिमिरइं।
देंतु देसजइजइवरचरियइं सवोहंतु भव्वपुंडरियइं।
पायपोमपाडियसंकंदणु भूमि भमंतु सुणंदाणंदणु।
गउ केलासहु पावपरंमुहु समवसरणि णियतायहु संमुहु।
आसीणउ पसण्णु पसमियकलि देउ समाहि वोहि महु भुयवलि।
भायरणाणलंभसंतुट्ठउ पत्तहि णरणारीयणदिट्ठउ।
उज्झाणयरिहि भरहु पइट्ठउ उरपमाणि हरिवीढि वइट्ठउ।
वज्जंतहिं जयवज्जणिहायहिं गाइयणारयतुंवुरुगेयहिं।
दरिसियमेइणिरिद्धिविहोयहिं उव्वसिरंभाणट्टविणोयहिं।
मंडलियहिं मंडियणियवक्खहिं अहिसिंचिउ मंगलघडलक्खहिं।

घत्ता—चउसट्ठि सरीरइ लक्खणइं वहुंवजणइं अणिंदहो॥
जं णिहिलहं भारहणरवइहिं तं वलु भरहणरिंदहो॥ १३॥

14

घण्णु तत्ततवणीयपहायरु सासणु जासु चक्कलच्छीहरु।
वज्जरिसहणारायणिवधेउ समचउरंसु ठाणु रुइरिद्धउ।

---

८ K भण्णउ and gloss भणामि ९ MBP हरियासणु धवलु
13 १ MBPT सक्कदणु २ MBP णाणलंभि ३ MBP °णारीयणि ४ MBP खडियसविवक्खहिं ५ M बहुवेंजणइ, BP वहुविंजणइ ६ M °णरवरहिं
14 १ MBP चक्कु २ MBP °णिवद्धउ

---

13 1 *a* विड्डुमर° भयम्, *b* संसमंतु उपशमयन् 3 *a* संकंदणु इन्द्र 8 *a* णिहायहिं समूहे. 9 *a* °विहोयहिं विभोगे 11 लक्खणइ शखकुलिशादीनि
14 1 *b* चक्कलच्छीहरु चक्रशोभाधरम्

मणि व अणंतमोह सत्तावह आसिवि संपराय अणुराए ।
एउणवीस वि णाहज्झयणइं वीसविहइं असमाहिठाणइं ।
एक्कवीस सबल वि जिह णीसइं बाहिरि दुवीस दुसह परीसह ।
तेवीस वि सुत्तयडइं सुणेंतें चउवीस वि जिणतित्थइं होंतइं ।
पंचवीस भावणउ मुणेंतें छव्वीस वि पुढवीउ णियंतें ।
सत्तवीस अणगुण सुमरंतें ।
अट्ठवीस णियविहि समप्पिवि पवरायारकप्प पवियप्पिवि ।
एउणतीस वि कुसियसुत्तइं तीस मोहठाणइं वज्जंतें ।
एक्कतीस मलठाय मुणंतें सिद्धगुणपय बत्तीस मुणंतें ।

घत्ता—थिरु सुक्कझाणु आऊरियउ घाइचउक्कु पणट्ठउ ।
उप्पाइउ केवलु मुणिवरेण लोयालोउ वि दिट्ठउ ॥ ११ ॥

12

तो सुर चलिय समउ सुरिंदें तारायणु चलियउ सहुं चंदें ।
णरवर णायर समउ णरिंदें गयण समागय सहुं धरणिंदें ।
तेहिं कसायविसायवियारउ संथुउ सिरिबाहुबलि भडारउ ।
रायचक्कु पइं तणु परिगणियउ कम्मचक्कु झाणानलि हुणियउ ।
देवचक्कु तुह अग्गइ आयउ चक्कु वि चक्किहि रयणु ण भायउ ।
पइं णिहुरं रिसिं धरउ ण महुर पइं मुणिवि को अरणु महुर ।
जीवदयाइ विमल विहरंती णिहुरमोहिविचारि णिवेइंती ।
मोक्खसुहेण पुइंसव णिम्मल लेवि णिसीड धम्मीसव ।

१ P दुज्झय पुणेत. ४ MBP सार ५ P सुमरंतें ६ MBP add after this: सु वि तेय मुणिय मुणंतें. ७ P एव ण भावण. MBP णियकप्पउ ९ P लोयालोय

12. १ MBP read the first two lines as: तो सुर चलिय समउ सुरिंदें णरय समागय सहुं णरिंदें णरवर णायर समउ णरिंदें तारायणु चलिय सहुं चंदें. २ MB समउ; P समउ; T समउ रणवेग. ३ MBP णिट्ठियउ ४ MBP णिव जणि दिट्ठी ५ MBK णिवडती ६ P दुट्ठेय. BPK णिविर

6 एउणवीस वि णाहज्झयणइं उक्खेव-णाय-कुम्म-अंड-रोहिणि-सेल-तुंब-संघाडिय । मायंदी-चंदिमा-दावद्दवे-उदग-मंडूके-तेयली-णंदिफले-(अवर)-कंका-सुसुमे-पुंडरीय इति एऊणवीसणायज्झयणाणि

12 5 b रणणु रणवेग.

अत्थइं मत्थइ मेंणणु मुंतउ मग्गु ण थाइ सुवण्णु महंतउ ।
सव्वरयणणिहि सव्वइं रयणइं देइ णिरंतरु उग्घाडियणयणइं ।

घत्ता—अण्णि चम्मु दंडु छत्तु वि पयडु पहरणसालहिं जायइं ॥
कागणि मणि चम्मु वि सिरिभवणें मइं णरणाहहु आयइं ॥ १५ ॥

16

रुप्पयमहिहरि सेढियरयणाइं संभउ हरिकरिणारिरयणाइं ।
पच्छइ पुणु संपत्तइं णरवइ घरवइ थवइ पुरोहिउ बलवइ ।
चत्तारि वि हूयइं साकेयइ घरसिरिधयधारियरविसेयइ ।
णव णिहि ते वि तहिं जि समभूया सपाडिहेरदिव्वपहल्लकया ।
णिच्चमेय तणुरक्खालुद्धइं सोलहसहस सुरइं गणबद्धइं ।
विविहइं घरइं कणयघरणियलइं विविहासणइं विचित्तसयणयलइं ।
विविहइं छत्तइं मुत्तादामइं विविहइं आहरणाइं सकामइं ।
विविहइं वत्थइं कयवउसोक्खइं विविहइं सरसइं भोयणभक्खइं ।
को सो वंभु वासु सुकइत्तणु को वण्णइ चक्कवइपहुत्तणु ।
णारी रयणत्तणविक्खायइ खेयररायवंससंजायइ ।
रूवें सोहग्गें लायण्णें णेहें रइयसुरयणिउण्णें ।
अब्भुयभूयइ जणमणमहइ सुहु भुंजंतउ समउ सुहद्दइ ।

घत्ता—सिरिरमणीवरथणजुयलसिहरफंसिहियउरयलु ॥
थिउ उज्झहिं भरहणराहिवइ पुप्फयंततेउज्जलु ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहविलासवण्णणं णाम
अट्ठारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १८ ॥

॥ संधि ॥ १८ ॥

१२ MBP माणउ १३ M °भुवणे

16 १ MB घर घर २ MBP विविहइं घरइं ३ P सोसिय°. ४ MP सकामइ ५ MB कय-उवसोक्खइं ६ M राइ ७ MBP रयणत्तणि ८ M समुद्दइ ९ MB °रमणी° १० M °जुयलु ११ MB पुप्फयत°; P पुप्फयतु

18 सिरिभवणे भाण्डागारे

16 2 *b* घरवइ भाण्डागारिक ; थवइ स्थपति 7 *b* सकामइं सामिलाषाणि चित्तानुरागजनकानि वा 8 *a* कयवउसोक्खइं कृतवपु सौख्यानि.

पुण्णपहावें मणुसु वि कवउ छक्केड वि महिमंडलु सिज्झउ ।
दोण्णि तीस एहसाइं सुवेसइं दोसत्तरि पुरवरइं पयासइं ।
णवर णव वि दोणामुहसहसइं पईणाइं अइदाह सहरिसइं ।
खेडइं साअइ ठाइ पहताइं दोहइ संघाहेणइं णिरुत्तइं ।
कम्मयकबिसमरमारियधीमइं छण्णवइ वि कोडिउ वरगामइं ।
सत्तसयाइं कुकुच्छिणिवासइं पंच तइं मि धरियपरियासइं ।
अट्ठवीस पट्टणाइं रिद्धइं छप्पण्णोतररीवाइं सिद्धइं ।
सहसजुयल मेच्छणरेसइं बत्तीस वि मंडलियमहीसइं ।

घत्ता—देवीहिं दुतीस बत्तीस पुणु मेच्छेणराहिवदिण्णइं ॥
बत्तीससहस भेंदलियइं जिह विहवमसावण्णइं ॥ १४ ॥

15

परि माणाणुषिमाणपयासइं कइइं भंडेति दुतीससहासइं ।
चउरासीसहर्सेई मायंगह तेत्तीयं वि रहाइं सवंगइं ।
तोरकोडिउ किंकराइं महंयइं अट्ठारह मणिवाउ तुरंगइं ।
तुरिहिं कोडि रसायणपसियइं संडुइं तिण्णि सयइं माणसियइं ।
करिसणि मंगलकोडि पवाइउ पउमारेण पंडिवि विसाहउ ।
कालण्णासु णिहि देव विभित्तउ दीणावेणुपणवणारत्तउ ।
णिवदु महाकालु वि संजोयउ पंडे देव णाणाविहवण्णाइं ।
लौहिवीरिपमुहाइं बहुवण्णइं असिमसिकिसिसिप्पवणयलाइं होयइं ।
णेसप्पु वि सयणासणभवणाइं वत्थाइं पोमु णिहु माहरयीइं ।

१ MBP °णादोर ४ MP धणाद ३ ५ MBP °णइवई ६ MBP °णोड ७ M °डिय° ८ P °छाइ
९ M °डिय° १ MBP °कप्पइ ११ MP णयसुदियइं.

15 १ M कसिउ B कसिणु २ MBP °णवई ३ MBP °तेतिसइं ४ MBP °वाणग ५ M °तोमरकोडिउ ६ B सुइ. MBP °णढ° M °कडि° ९ MBP omit this foot. १ MBP omit this foot. ११ MBP add after this पवर वत्थाइं रयणदीवाइं, णंदु वि णिहि वि देव करिवेयइं.

8 a मुकुटमिव निरयइं तस्योपरिस्थितानाम्

15 4 b आयधविषयइं रत्नौषधसुरसान्न 5 b विशाइ सुवर्ण 9 वेवणु वैसीं निधि

सामराणु णेहपणु णरिंदि मणे झाणि धीरो गरुय वि ठिएँ ।
रिणु मग्गमाण हिंडंति पुरे आणकंसणु पणु पोसंति णरे ।
णिब्बहेयण धूमकेउ वि गिरि ठंठ्ठ वि रवि बेण्णायइ णिरु ।
परिविदियोंसु सुहं भणियहं सुहंजहिं भण्णायउ भणियउ ।
जउलीतरणियासण फलाणणिर ण्णुन्निग्गय मच्छर वि णिरिणिर णर ।
ण वियाणइ सुवंणी णियइ णियाणायइ रत्तु ण पणियइ ।
पंचइ मेलइ पुणु पुणु मगइ पम्इ गुरुमीरयेम्मांड पुणु टवइ ।
मा मेंट्टि ण पूरइ किठ भरंम भणि जुगइ धम्म वसय फलणि ।
णेहिट्टु पुट्टु पाविट्टु पट्टु पाडूणयइ उवाय णेइ मग्गु ।

घत्ता—णोणिणि गय गामहो हक्किउपत्तामहो मेंगु ण भणिइ णिज्झइ ॥
मज्झा पि सुक्कइ णियगुरुं आयउ घम भणु णयहिं पि णिज्झइ ॥ २ ॥

3

किं णिज्झइ धोरें कापुरुण किं मग्गें पोयपुरिसगुणण ।
गुलेपुसपण्ण किं णिच्छयेण मसपुण पि किं णिर णिसगेण ।
मणि विज्झाणस्यणरविणोणण णिम्मिणायं मरण किं पंरेण ।
धरणिपलवणपेदिपूरणण पि जुगवपिणणणयारणण ।
सा गोई जा मणिरिविणकुणिय मा पंसा जा छिगगइ भोंणिय ।
सा विज्झा जा मरगंग पि णिगइ ण मग्गु जम्मि गुरुयणु जिगइ ।
ते गुण जे पुंछइं ण भज्जइणिय ते मित्त जे जे विगुरत्तणिय ।

६ P दीण ७ M णिम्मइ पूणाणु, BP णिम्मइ पूणणु ८ MP पवेण वि, B पवण वि. ९ MBP भणमइ. १० MBP °हियइ° ११ MB गुज्झणाणहिं परिमइ, P गुज्झण्णहिं परिहूथ १२ M णिट्टु १३ MBP मइ मणु भणिइ

3 १ MBP पालणंणिणण २ MBPK गुणगणण ३ MBP °पविपूरणण ४ B सणी. ५ B हरिय ६ MBP गाइ ७ M पहाहिं ण मज्झतणिय, BP पुहाहिं ण मणतणिय ८ P जे वि

4 *a* सामराणु मनुष्य, *b* धने पतंति महोत्सवे गीर्वाणेर्वा 6 *a* णिब्बहेयण निर्वेदनार्थं धीर्नि०, 8 *a* °णियाणण अभिवरम् 10 *b* गुज्झपरोणहिं गुप्तप्रदेशदेहे 11 *a* मट्टि ण पूरइ पट्टी पूर्वं.

3 1 *b* मग्गे याञ्चेन, °गुण भुवन 2 *a* णिच्छयेण निश्चेन मनरहितेन वा, *b* मसइ ण सम्यक्गतेन, णिसगेण गर्वारहितेन 8 *b* गमणे गमनेन. 5 *a* गोई गति 6 *a* मगइ विणिमइ पुरा मणि पश्यति. 7 *b* विगुरत्तणिय दुर्गे अन्तरिता .

XII

सिउर मणोहर महिपरमेसर दविणें कि किर किज्जइ ।
जइ जिणमियविसर्हे पडे सुपत्तहं दिमदि विमदि जइ दिज्जइ ॥ ध्रुवकं ॥

1

पणवेवि जिणे परमप्पाविमदिवर | वर्हुयादिइ जिमनवि सितवइ ।
किं जम्मइ दिनु धंदेपयपु | कि जम्मइ ठिज्जैवासु मण्यु ।
किं जम्मइ वासु विस्वसमते | किं जम्मइ रज्जु भौमिवमते ।
किं जम्मइ तवोपमिरउि कुलु | कि जम्मइ पिवैवें मइवफलु ।
किं जम्मइ मीसवि गदिमर्य | किं जम्मइ मउयवालसिमर्य ।
किं जम्मइ मयवइ भूमव्वे | किं जम्मइ मौविविमरूसपर्वे ।
किं जम्मइ दिमइयकमलवसु | किं जम्मइ दीक्षिमविरदिउ मसु ।
किं जम्मइ परवसजीवें मणु | किं जम्मइ ठिमुरुगुमरविद्धु ।

घत्ता—जं दिज्जइ न पत्तहु गुणगणवंतहु पहवें पुरवगु पेज्जइ ॥
मणुयहु मकरवंतहु तं संचिविं मणु मुंपदो पउ वि जइ गज्जइ ॥ १ ॥

2

जइ भणइ विसेवगु परिहुनई | दंमविदु ज मणिउ बलमवदं ।
जमपेसवलंबसित्वा वरहं | सारं वि सीसवसमाउपरहं ।
पैसीरसु दोविम कुमरपवहे | जम्मइ वंदिउ माविदि सेयय ।

MBP give at the commencement of this Samdhi, the following stanza—

सामदर्शि ममानुमत कलम्यामसनुमातम ।
मागपकीन वादि नम कमानुमितुरेपा ॥ १ ॥

1 १ MBP °वामिव° २ MBP वगुणवीउ ३ M कि ज तणु, ४ MBP विविसवडे ५ MBP ठवर् ठविउ ६ MBP वहुवर्ड सिद्धगु MBP विविसवरवणर MBP वविडे ठविउ ९ MBPK वोविं, १ B वसिमवगु ११ P दुमदु पउ वि न पव्वह्

2. १ MBP विमविंदु २ MB बलमानेन ३ M एरनविदु, ४ MBP °वगु ५ MBP वणु

1 १ b मन व वर्ण° पुलको 12 व व मि मदमानमवि

2. 1 b पुन मिदु संमान्य 2 b सीतव° एतनं उवस, 3 एवो र ह अवतीवैन्य

गयणरि णिरुणिय मेलिग्न सा
पोमदयंगइ णग्गारि सा
अणिमासोयणि उड्डुमाण सा
आमलियाइ असु सा
अणुमोग्गसुकइ सा णि सा
उदिहलापयाणिणि ठिंवद
तंणु पंग जेण णासंति ख्य

घत्ता—चिरु सयु हि माणुस ... ॥
जिणपुज्जायारइं धम्मविय्यारइं ... ॥

[illegible]

6

धणि धाणिज्जारइ भणियउ
सो सोत्तिउ जो जिणयरु भरइ
सो सोत्तिउ जो ण सुट्ठु भणइ
सो सोत्तिउ जो दिवयण सुणइ
सो सोत्तिउ जो ण मासु गसइ
सो सोत्तिउ जो जणु धिउ धयइ
सो सोत्तिउ जो सत्तु पावइ
सो सोत्तिउ जो ण मज्जु पियइ
सो सोत्तिउ जो जिणदिक्खियउ

[illegible]

5 १ MB उड्डुमाण २ P °णि धरि ३ MBP ... ४ MBP ... ५ MB ... यउ ६ MBPK धम्मवियारउ

6 १ M सुणय २ P पसु णउ ३ MBP दिवयणु सुणइ. ४ M ... P ... मुणइ ५ B मासु ण

9 *a* तणु धंम तपो द्वादशविधं मतानुष्ठानं ... परमात्मस्वरूपम्, ...

6 9 *b* पञ्चाणुव्रतानि ... गुणव्रतानि त्रीणि, शिक्षाव्रतानि चत्वारि, अनस्तमित-संयम-जिनपूजा-... बाह्यं तपः, षड्विधं प्रायश्चित्तम्, चतुर्विधो विनयः, नवविधं वैयावृत्त्यम्, पञ्चविधः स्वाध्यायः, ... इति त्रिपञ्चाशत् क्रिया

तं मणु वं सुरवरं सिवि जि सिवि — वं पुप्फदंवि दिव्वउं विहसयावि।

घत्ता—सा सिरि वा गुणयत्र गुण ते वे गय गुंभिहिं विम्मु दमगुरियउ॥
गुंभि ते हउं मम्मामि पुणु पुणु वम्मामि वेहिं बीणु उच्चरियउ॥३॥

4

इय चिंतिवि राएं दविणयरु — दक्काराविय आप्पा विवरु।
ते आएप धेवियपयमयय — वे वोपफिरणगणहुहमय।
तम्मुणपरिक्खसुयवासिरयं — सक्कीसबीयपिर्तकुरयं।
तवपक्कयपिहिये पंमपयं — वं ववसिरिविग्याविसपवयं।
वप्पंतिव हे तिरपा मिहिवो — परिपाविक्तयसावपवयपविहिवो।
कय वेहिं तसंतइं तसइं इय — परिंतापिरि अखिवयायविरयं।
जाविज्जइं कहिं वि समिच्छियइं — पउ अण्णु कवलु विवपिच्छियइं।
परसंगपमाणु वेहिं गहिउ — एयवीमोयणविरइसहिउ।
विसिविसिसागमेवमायवरणु — भोगोवभोयसंखायवरणु।
विणमु मवत्थइंसासियइं — भाविवइं वेहिं जिणभासियइं।

घत्ता—सामाइउं पोसहु अतिहिपरिमाणु कामकोहपरिहरणें॥
किउ वोहिं पसंतहिं पयरयरत्तहिं सहुं सल्लासणमरणें॥४॥

5

ते मग्गें जिण्ण परिठ्ठविय — कर मउलिवि सहं सिरेण थविय।
दयवीसहु केरउ चिवपवरु — हेसायरि पविउ पवरु सरु।

1 MBP जुयहिं १ M हउ हुय ते मण्णमि B हुय हउं ते मण्णमि P हुमि हउ ते मण्णमि
4 १ MB ते हुय° २ MBP पयासिए° K °हासिरि but corrects it to हासिरि. ३ MP add after this परण्णु परणु मुउज्जिय ४ MBP add after this चिण्णइं चिरवोसु (P °वोसु) परिपिच्छियइं हूयवयड विवाहिउ धम्मिय ५ B °पमयवरणु ६ MBP °भोय° ७ MBP पमत्तहिं

8 b °सिरिए° हु सिव 9 हूययय हुवेय ना
4 2 b °वोह° व्रता. 8 b °सित हुरव सिरकारस्तु 6 व ए प ए हु परमणम् पपहुं सल्लेखनाम्
5 2 a ययवीयहु वर्णावपूवक मोक्षपीठसैन्यं

तुहुं कामधेणु अक्खीणणिहि तुहुं पुरिसुत्तमु जणदिण्णदिहि ।
तुहुं सिद्धमंतु सिद्धोसहि वि तुह णामें णउ भक्खइ अहि वि ।
तुह णामें णासइ मत्तकरि कउं दंतु वि थक्कइ णरहु हरि ।
तुह णामें हुयवहु णउ डहइ परवलु गयपहरणु भउ वहइ ।
तुह णामें संतोसियखलउ तुट्टेवि जंति पयसंखलउ ।
तुह णामें सायरि तरइ णरु ओसरइ कोहकंदप्पजरु ।
तुह णामें केवलकिरणरवि णीरोय होंति रोयाउर वि ।

घत्ता—ण फलइ दुस्सिविणउं जणि अवसवणउं तिहुवणभवणुक्किट्ठइ ॥
पूरंति मणोरह गह साणुग्गह होंति देव पइ दिट्ठइ ॥ ८ ॥

9

इय वंदिवि पुच्छइ भरहवइ मइं दियवर णिम्मिय परमजइ ।
होहिंति अहिंसपवित्तियर कालेण किं णं भणु तित्थयर ।
किं अक्खमि हउं तुह केवलिहि णिसि दिट्ठहिं मइं सिविणावलिहिं ।
फलु काइं भडारा वज्जरहि संदेहु महारउ अवहरहि ।
परमेसर णाहिणरिंदसुउ पुण्णेण केण तुहुं अरुहु हुउ ।
पुण्णेण केण हउं चक्कवइ जायउ भारहभूयलविजइ ।
कंपावियसिहरिणियथलि पुण्णेण केण वाहुवलि वलि ।
उप्पण्णु पवट्टियदाणरहु पुण्णेण केण सेयंसपहु ।
पुण्णेण केण सोमप्पहहो हूयउ सभंवु सोमप्पहहो ।
पुण्णेण केण पालियविणय सभूया सयल वि तुह तणय ।

६ M कमु देंतु, B कउ देंतउ, P कमु देंतउ ७ BP °सकलउ ८ P सायरु ९ MB तिहुयणु भुयणुक्किट्ठइ

9 १ P पुछइ २ MB °पवत्तियर° ३ MBP णु ४ P अरहतु हुउ ५ MB °भूयल°, P °भूअल°. ६ MBP केण हुउ माहुबलि ७ MBP सेयसु. ८ MBP सभउ ९ MBPK add after this मइ पइ जेहा होहिंति कइ (P पइ मइ), कइ हलहर हरि पडिसत्तु (B पत्तिसत्तु) कइ, MBP add further तवभट्ठकामिणिहिं यद्धमइ (P तवभट्ठ य कामिणिचद्धरइ), कइ होसहिं रुद्द रउद्दमइ, कामु वि किर होसइ कवण गइ, भो मयणकारिंदमयाहिवइ, एउ (P इहु) सयलु वि अक्खहि परम जइ

8 10 *a* संतोसियखलइ संतोपिता खला याभि', *b* °संखलउ शृखला 18 तिहुवणभवणुक्किट्ठइ त्रिभुवनोत्कृष्टे.

9 4 *b* अवहरहि अपनय.

घत्ता—जो तिसकण्णाहइ दिव्वविसेसइ हुणिवि देव पइ पीणइ ।
पसु जीव ण मारइ मारय वारइ पर अप्पु वि समु जाणइ ॥ ६ ॥

7

सो सोहिउ बाप्पसु पढ़ जिह   अक्खाइं दियवरहं तेण तिह ।
बम्हासमकोविदवाविपरं   गुणपवणासमरं भाविपरं ।
दिण्णाइं ताइं सुवासयरं   भूसेप्पिणु वरकण्णासयइं ।
दिण्णाइं ताइं परवीरयइं   खिपसुसुमइं सिचयइं चीरयइं ।
दिण्णाइं ताइं मणिराइयइं   करिसुरवरवमरवारयइं ।
दिण्णाइं ताइं मणमोहणइं   मउपूरणपुरइं मोहणइं ।
दिण्णाइं ताइं देसंतरइं   हयगयवरवत्तइं पेहरइं ।
दिण्णाइं ताइं जिणभवणहरइं   धणकणसमिद्धइं विविहइं घरइं ।
दिण्णाइं ताइं करमरधरइं   सासणजिणदिण्णजाराउरइं ।
गायगगामसीमइं घरइं   दिण्णाइं ताइं जयरायरइं ।

घत्ता—महि चक्कवइणी पेक्खवि दिण्णी विप्पहं णिवडपुसार्थे ॥
तिह जिह पर थिराइ णेक्खि वि थिराइ णिहिसें णियरणियार्थे ॥ ७ ॥

8

मण्णहिं दियि हुँसें सयवहरे   अरणाहें णिसि पच्छिमपहरे ।
णिद्दि दुक्खिय खिखियायखिय   णाणामिहावहुत्ति ण मिलिय ।
सुपहायकालि गेंवे सखियउ   केलासु गंपि जिणु पुखियउ ।
संपुरु परमपरु परमपरु   जिण तुहुं चिंतामणि समयरु ।
तुहुं संपसु रयणापसु समसमरु   तुहुं मयरकेउ रोंधि कयावरु ।

---

१ MBP सम्मणियड

7 १ B सोहिउ २ MBPK वक्क वि ३ MBP भउ

8 १ MBP सुवइ २ MBP णिद्दि ३ MP वसु. ४ MBP समय. ५ MB रव

---

11 माराय वारयन्.

7 1 b दियवरहं द्विजेभ्यः 2 a "कोवि" पण्डितरूपम् 5 मणिराइयइं रत्नरचितानि. 10 b "णयरइं" नगराणि 11 चक्कवइणी चक्रिणा दत्तैया भूम्या दत्तेया च 12 "णिहाएं" समूहेन.

जो दिट्ठु मयगलु मंदगइ मेरुगिरिसिंगु णउ उण्णमइ ।
सो अतुलिउ जिणु होसइ णामुसरूविणिवसत्तहरू ।
जे दिट्ठा हरि करि मारुत्तय मउणापंतिहिं पर पत्तं घ णय ।
ते अतिमहिमि मयणमइय धणिहिंति वं ते णाणिणयग ।
जं दिट्ठउ णिम्मलपण्णयइत्तु तं पाविसु होही धम्मणियत्तु ।
जे दिट्ठा कुसुमारूढ कर ते णिय होहिंति सु कुलु सुमर ।
जं दिट्ठु उल्लियइं इयरउ णणु स मेरिसइ पमुणमत्थाणु जणु ।
जं दिट्ठउ भूयाइं णगणाइं फरिसी त पुसुपमममणाइं ।

घत्ता—ज मज्झि अतुलय पइ सुवेणउ मरु दिट्ठउ जलु मीणेहिं ॥
तं धम्मु महारउ उवसमगारउ भाही महिपव्वणहिं ॥ ११ ॥

12

जं दिट्ठइं रयणइं रयणधरइं स मुणिउल्लाइ मल्लगाराइं ।
पवमसुणि गिरिसिपिपडिगयइ होहिंति सहरिययिवियेइं ।
जा दिट्ठा पुंजिय पइ कलिल तं जे पिइ मइंम्पद पुहिल ।
जं गुरु आमत्ता तरुणियणं पुण्णाउइ ते होहिंति जणे ।
सिरिपणंतरि णिरगुण्णकुसुमयमरि पइ अयणोरय भो णयणिमि ।
जे तरुण धवलइ फलंफंटमुणि ते तरुणतणुय होहिंति मुणि ।
जिह जिह जराइ तणु परिणविही तिह तिह धणाण्ण सुंदरी हरिही ।
कुसुमगणालइ तिट्ठाइ साहु भरिहिंति घेर धंतु पयणुं महुं ।

घत्ता—जं ससिपरिवेसउ दिट्ठु दुगारउ त पलिकालि खग्गीसइ ॥
पाउ णिय मणपज्जउ अयहिदुरज्जउ होही णाणु रिम्मीसइ ॥ १२ ॥

१ MBP णट्ठगउ, ३ MBP धोतिमिहु, ४ P °पुहि ५ P फइ णि, ६ MBP णहिंणि ७ MBP क्रिणनारित्ति° ८ MBP कुस्स, ९ P ता १० MBP सुरते ११ P तारराहि.

12 १ K पणामि जुणि, २ MBP °णिदिवदइं, ३ MBP पई पुंजिय ४ MBP पुहइ जेण, ५ MB जिणे, ६ P फल्यंठ°, ७ MBP मरुी ८ MBP पुर ९ MB पवण.

11 5 *a* सजमुउ अयूकरालित' 10 *a* फइपपग 12 *b* कुसुर° कुलिगनदेवा .
12 1 *a* रयणधरइं रत्नाम्यादिस्तानि मतिमानि. 8 दुरारउ दुःखफलदायी, गरीराइं दिव्यशरीराणि च,

घत्ता—ती नवजम्मरुहाणि मयहर महामुणि सुवेंसु पुत्त वं पुच्छिउ ॥
पई किंउ दियवासत्यु नरपरिवसम्यु काइँ होसइ कुँच्छिउ ॥ ९ ॥

10

हा पुत्त काइँ किउ पावमलु मारेप्पिणु मय खाहिंति पसु ।
रमिहिंति वेंभि कोलउ सुरेव पिविहिंति सोमपाणउं महुव ।
ढोहिंति सुवस्थियकि परमरियि मण्णहु देहिंति वि विप्परुवि ।
चउ दूसिहिंति पिसहु महु न वि दूसिहिंति देवि मोक्खिणहु ।
कहिहिंति धम्मु जो वं करइ सो तेण वि कम्में वउलइ ।
सुणागारएँ वेसासवड अवर वि पावयाइँ पाउसाइँ ।
मारिहिंति कुक्कमु पुण्णे कहिं किं बम्भणि कुडिउ पुत्त तहिं ।
मारिहिंति गाइ देवय कज्जु मारिहिंति पुरउ देवय पवरु ।
गच्छेसइ देवय कज देवयाइं मारिहिंति वणिगीतामयहयाइं ।
मारहइं मज्जइ परवायउं वि खिविहिंति पुरावउं सवउं वि ।
ऐसइं पावइं देहिंति किपाइं जइ पाविहिंति जइ दुक्खियइं ।

घत्ता—ताइं सकुकसु बंधिवि अयरु दुगुंछिवि जमि कीचरिवरिपुत्तइं ॥
देहिंति पहूवसु परमरिसिसत्तु कयपच्चयनामयुत्तइं ॥ १० ॥

11

पत्ता वंमण होहिंति सुव किं कियउ धम्म पइं पीरमुव ।
पुच्छ अमरू महारउ भरह रायमि खिविपीोखिपसु वि विसुमहिं रमामि ।
पेमालय वे देवीस पई विहुा ते छिन्नयर सुविय मईं ।
परिवयकुसमयकुसमयसभयाविय सुपसाहियपम्मासिसपुखिय ।

१ PK ती ११ P विनुमि १२ MB पुच्छिया; P पुच्छि १३ P किं° १४ MB पुच्छिसय
10. १ MB बभु; P बसु २ MBP कुरय ३ MBP किं ४ MBP पाविणु ५ PK पुत्त ६ MBP नयवल ७ M किंत° MBP एवइं किंद.
11. १ MBP खिविन्नमसु यह पिहुमहि

10 २ a च मिम वहो 5 सु च स्थि य वि सुवर्णनी 4 b व मि घो 10 न र वा र इ इ पवहाए.
12 भी च रि च रि पुत इ भोमपुत्री माता मयौवनिको दुर्वेष

XX

रिसहँ भग्गहु भासियइं चिरु एवहिं हउं गुज्झु ण रक्खमि ॥
भासइ गोत्तमु सेणियहो सुणि तिसट्ठिपुराणइं अक्खमि ॥ ध्रुवकं ॥

1

तहिं तइया देवें वुत्तु एम — णिसुणहि णउण हो मणुयदेव ।
तेल्लोक्कु देसु पुरु रज्जु तित्थु — तवु दाणु गइहलु सुहपसत्थु ।
अट्ठ वि पारंभियपुण्णठाणि — साहेवा होंति महापुराणि ।
लोलंति पलोइज्जंति जेत्थु — दव्वइं तं लोउ भणंति एत्थु ।
सो केण वि किउ ण कया वि धरिउ — जीवाजीवहं णिक्खुब्भु भरिउ ।
चलु णिच्चलु सो ससहावघडिउ — आयासणिवासु वि णेय पडिउ ।
चालिस कहंति जडयणहं हेउ — देवें सिट्ठारें कियउ लोउ ।
दव्वाइं लोयउप्पायणाइं — महिमारुयवेसाणरवणाइं ।
जइ णत्थि ताइं तो लहइ केत्थु — णीरूवहु होइ णिरु वि घत्थु ।
किं गयणि होइ पकयपवित्ति — दीवाउ दीवि पज्जलइ वत्ति ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza –

फणिनि रिमुञ्चतीव मेचकरुचि कचनिचयेषु गोपिता-
मलकिषु मूर्च्छतीव हसनीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।
मदशुचि माधतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले
दिशि दिशि लिम्पतीव पियतीव निमीलयतीव खङ्गणे ॥

P reads खण्डणे for खङ्गणे GK do not give it

1 १ P भासियए २ MBP तेलोव ३ MBP तवदाणगईहलु ४ MP सहु ५ MBP त लोउ ६ P तेत्थु ७ MBP किउ केण वि ण धरिउ ८ MB णिक्खुत्तु, P णिखुत्तु, T णिक्खुब्भा निरंतरम् ९ K कयउ १० MBP ण रुवि घत्थु, K ण णरु वि घत्थु and gloss नरोऽपि यत्र पि न भवति.

1 1 चिरु पूर्वम 3 a तहिं समवसरणे 5 a b त्रैलोक्यादयोऽष्टौ पदार्था महापुराणे साधयितव्या भवन्ति 6 b तें तेन कारणेन 7 b णिक्खुब्भु निरन्तरम् 8 a चलु णिचलु चलो जीव पुद्गलापेक्षया, निश्चलो धर्माधर्माकाशकालापेक्षया 9 a चालिस अज्ञा, हेउ कर्ता, b सिट्ठारें विधात्रा 10 b °वणाइं जलानि. 11 b णिरु वि अपि निश्चयेन

13

जं सिढिलु मयवसइ तण्हइ मणु
तं करिही कउ पढु वि सवंधु।
समासपत्त भमितिति चार
पावप्पिणु दुस्समकालगर।
जं परं सिपिगुत्तर वक्किपडं
जं विपयरअरसु ढंकियडं।
जं मेरहिं वगु संपारियउ
तं केयमु पुरउ विचारियउ।
जो सिढिलु सुचरउ दंसोहउ
सो नरपारिहिं दुचरिसमउ।
पुत्तहं पसंपिपपिउवयरं
होहिंति कलत्तइं परयरइं।
किउ कारं मि पर सहिहिंति परे
कालीण दीण वण धरि ति घरे।
होहिंति मित्त कंडुपवरर
पिप्पलपलूकपापेव वयर।
होहिंति पिर्डवि पिप्पल विरस
होहिंति मुणि वि वरामरिस।

घत्ता—जिह जिह विदु संपर वयउ समप्पइ मयदी मुवैसपंकवयवि॥
तिह तिह तमु पहरइ दंसिसिह पधवइ कुंथुपुप्फतवप्पवि॥ ११॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महामव्वमरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहसिविणवसंसपाडप्पणं
णाम एकूणवीसमो परिच्छेओ समत्तो॥ १९॥

॥ संधि॥ १९॥

13 १ MBP णयणु २ MHT वड° ३ P दुचरिउ ४ MBPT कंडुर° ५ MB °पवर
६ MDP तिस ७ MB मुणु ८ P समरिसि MBP महाभव्वभरहाणुमण्णिए

13 1 b व R ही वरिसाहि. 5 a तं व ण त संघु पनुकम्मनीन्तो ह्मा 8 a व द्विसनरर स्तोऐप
11 दुंरदु पुवदंत पवित्ति हुसदुसमय. पुप्त पवरन्ते नमिर्ति

परियाणिउं होंतउ जइ हरेण तो दाणव णिम्मिय काइं तेण ।
जइ वच्छल्लेण जि कियउ लोउ तो किं ण कियउ सव्वहु विहोउ ।

घत्ता—जिणणाहेण ण दिट्ठाइं मिच्छाविसविंदुयणीसंदइं ॥
किं वण्णियइ कुवाइयहं सिवगयणारविंदमयरंदइं ॥ २ ॥

3

अण्णाणु ण याणइ सइं जि मग्गु णिव णरयविवरु सग्गापवग्गु ।
जइ जाइ जीउ सिवपेरणाइ तो किं कयायइ तवभावणाइ ।
को जाणइ केही हरहु चेट्ठ होसइ भीसण णिट्ठवियइट्ठ ।
कम्माणुय सा जइ भणसि एम ता पलइ सुयण संहरइ केम ।
माहेसर किं गोवइ थवंति जड मत्त पिसल्लय किं चवंति ।
अणिवद्धउं महु णरजम्मयारि पिउ बंभयारि जणणि वि कुमारि ।
जिह सिवु तिह बंभु ण विण्हु अत्थि विणु हत्थिउलेण ण होइ हत्थि ।
विणु णरसंताणें मणुउ केम अणिहणु अणाइ जगु सिद्धु एम ।
सत्तेक्कपणेक्कसुरज्जुपिहुलि अहमज्झउड्ढभुवणग्गकुयलि ।
वेत्तासणझल्लरिमुरयरूवि चोद्दहकेयाउच्छेहभावि ।
तहु मज्झि परिट्ठिउ तिरियलोउ गयसंखदीवजलणिहिसमेउ ।
एक्केण एक्कु वेढियेउ ताम छेइंल्लु सयंभूरमणु जाम ।

घत्ता—तहिं लवणण्णवमेहलइ मंदरमउडें मंडिउँ भावइ ॥
जंवूदीउ पसिद्धुं जगि सयलहु दीवहु राणउ णावइ ॥ ३ ॥

१० MBP जिणणाहेण वि ११ P दिट्ठियइ

3 १ MBP कयाइ २ MBP होही ३ MBPT कम्माणुवसा ४ MPK अणिवद्धइ ५ MBP बंभणु विण्हु ७ MBP °भुयणतकुयलि ७ M °मरवरूवि, BP मुरवरूवि ८ BP चउदह° ९ MB वेढियउ १० MBP छेयल्लु ११ MBP लवणवुहि° १२ MP मंदिर° १३ P वेढिउ १४ MBP पसत्थु

12 *b* विहोउ विशिष्टो भोग 13 मिच्छेत्यादि—मिथ्यात्वजलविन्दूनां निष्यन्दो येषु गगनारविन्दमकरन्देषु

3 1 *b* णिव हे भरत, अथवा, हे श्रेणिक 2 *b* कयायइ कृतया 3 *b* णिट्ठवियइट्ठ निष्ठापित ध्वस्त इष्ट प्राणिना वाञ्छित यया 4 *a* कम्माणुय कर्मानुसारिणी 5 *a* माहेसर शैवा, गोवइ शकर 9 *a* सत्तेकेत्यादि—यथासख्य सप्तैकपञ्चैकशोभनरज्जुके विस्तीर्णे, *b* °कुयलि भूतले 10 *b* °केया° रज्जव, °उच्छेहभावि दीर्घत्वम्

धम्मत्थकाम पउ अत्थि जासु कहिं कम्मइ रज्जपएसउ तासु।
णिक्किरियहु कहिं किरियाविसेसु णिक्कलुसहु होइ ण हरिसु रोसु।
विणु तिहुयणें जउ फलंति किह वरणहरुद्धवीउ होंति।
विणु छत्तें किं सोहेइ छत्ति छिवि छंभी किं कप्परुक्खहि।

घत्ता—कुमइहु मिच्छत्त कुंभयण करउ कुंमु तें महु मणि भावइ॥
सिद्धिं मग्गेहिं जगु मग्गउं जि करिमि कवं पुप्फयंतं सावइ॥१॥

2

विणु परोवयारेण सरीर केर णिप्फलउ जइ सर्व कत्तसु होइ।
तो एकु कम्मु कत्तार भणमि जं तो पुणु भेयविभिण्णु भणमि।
जइ ईसरु भुवणयलहु णिमित्तु तो तासु कवणु संजोयविचित्तु।
जइ णिच्च ण तो परिणामरिद्धि णिप्परिणामहु कहिं कम्मसिद्धि।
णिरवयविणु संधइ भुवणकोसु जइ मही दीसइ कोव तासु।
जइ सयल वि पसु णिक्किरिय कत्तु संसारसमह ससरीरि भत्तु।
पुणु पासु वाइं संजोयमाणु पावेण ण छिप्पइ किं अयाणु।
जइ छिप्पइ जड दुरियमल सिणु तो किं अवसिरखुंवमि असणु।
जइ पसवइ ण सिवु सिवंसु एह तो कारं होइ किं हेमवंइ।
पुरवाइ णारिवइ खीरपाणु थणेथण किं सेणहु णिवाणु।

११ MBP णिक्कलसें T कुष्णा करणहरणाभिमान हैम तम्मस् ११ MBKT वगराग्, P करसत ११ P कम्मह १४ MBP विर १५ P कपाणु

2 १ K विण १ MB परमारेण १ MBP सवण ४ MBP मिरमिकर ६ MTऽहु भिणिं ६ MBP कम्मह ७ M का सवव K का सवव ८ P सवतिरि कुणमि ९ MBP विर

14 a णिक्किरियहु निष्क्रियस्य, किरियाविसेसु कर्मोत्पत्तिविशेष णिक्कलुसहु कलुषरहितस्य. 15 a तिहुयलि-कुष्णा करणहरणाभिमान हैम तन्त करणमिव नि हेव विना वर्ण करणहरणचिह्नो वर्तते तथा कैसा फलति 16 a छत्तं कर् छत्रपते b कप्पराश्च कल्पवृक्षादि 17 मम कर् बधे 18 कर् कम्मा स्तति

2. 8 b तहुवणिमित्तु कर्तृत्वदुष्कर्मनिमित्त 5 b कोव कोपः 6 यह सर्वस्या पोता: सर्वं सदा सन्ताने b ससरीरि भरह सारतम्यां वसति 7 a पासु सर्वमवर्ग को पातो य 8 b अवसिरं मायापरम सिर, अणु अरहत्वायुष 9 a सिवंसु शिववंशा b कारं शोभन कारणं हेमवंइ कर्णकरण

जो रुंदचंदकिरणाहिरामसामारमंतगोवालगोवियागीयगेयरसवसविसण्ण-सुण्हाणिहित्तणीसासतावविहडंतगोट्ठिसोहंतगोट्ठो[9] ॥ ५ ॥

जो वसहसिंगखयखोल्लमहियलुच्छलियसरसथलकमलमंदमंयरंदपुंजपिंजरिय-[10]तुंगणग्गोहरोहपारोहडालडोल्लीयमाणजक्खीविलुंपियासण्णपामरोहो[11] ॥ ६ ॥

जो खयरचंचुहयपडियपिक्कमायंदगोच्छधावंतवाणरोमुक्कधीरवुक्कारतसिय-णासंतरायरमणीपयग्गपविलुलियणेउरालग्गहेमरयणंसुफुरियवेल्लीहरंतो ॥ ७ ॥

जो रत्तचूलकीलावियंमणुड्डाणमेत्तणिवसंतगामपुरणयरखेडकव्वडमडंवसंवाह णाइरमणीयभूपएसो ॥ ८ ॥

जो हीरणारसीहारणालसंभवकुवाइकयंयसमयविरहिओ[12] वीयरायणयतोयधोय-लोयंतरंगसुद्धो सहावसोम्मो[13] ॥ ९ ॥

जो घोरवीरतवचरणकरणपरिणयमुणिंदपायारविंदवंदणपसत्तणरमिहुणगरुअ-चारित्तभत्तिविद्धवियविसमपावावलेवो[14] ॥ १० ॥

घत्ता—जहिं[15] वेयड्ढमहासिहरि मज्झि परिट्ठिउ दीसइ केहउ ॥
रुप्पयदंडउ घल्लियउ पुहइ मवंतें विहिणा जेहउ ॥ ५ ॥

6

तहिं उत्तरसेढिहि[1] रमियखयरि　　　　अलयाउरि णामें अत्थि णयरि ।
पप्फुल्लियसयदलपरिमलेण[2]　　　　परिवेढिय जा परिहाजलेण ।
पडिवक्खचित्तकयदूसणेण　　　　जा सोहइ णाइ णियासणेण ।
आवद्धें रयणविचित्तएण　　　　पायारकणयकडिसुत्तएण ।
णाणादुवारमणितोरणेहिं　　　　णं छज्जइ कंठविहूसणेहिं ।
दीसइ णंदणवणणीलकेस　　　　पुरि णं अवेयरिय[3] अउव्व वेस ।
चूलामणिचुंवियणहयलाइं　　　　जहिं घरइं सत्तभूमीयलाइं ।

९ M °गोहो　१० MP °मयरंदपुंजरिय°.　११ MBP °डोलायमाण°　१२ M °कयमय°　१३ M सहाव-सोमो　१४ All Mss add'- इमी विसमसीसयछदजाई कहिया　१५ MBPK तहिं
6　१ MB उत्तरे सेढिहि　२ MBP पप्फुलिय　३ K अवयरियउव्व वेस

5 °सा मा° रात्रिः 9 हीर° शंकर, °णा र सी ह° नरसिंह, आ र णा ल स भ व° ब्रह्मा. 10 °प रि ण य °प्रवृत्त'.
6　3 *b* णिया स णे ण परिधानवस्त्रेण. 6 *b* वे स वेश्या.

4

पहचेतमाय बहिं तिरिबंत छम्मरिसपारि बरसांगुमंत।
पहकुमिसक्मोवंपियपहारं बजयारं चोहह पायमुहारं।
सम्पुरिसचित्तु जिह तिह विसालु परिपतिुयमरगयपयवालु।
फलिहमयकुसुममंजरिसुसेड पपरिछ्चीकम्मयेहकपिफेड।
चंपुतर सपुरेवरणु जसु देवहिं निफुक्त मुणे विसालु।
पं बगकपिकिहि मूसमपियार जसुवरि मर्मति ची चंदसूर।
पम्बवतहं सेव च मुणि मयंति जम्मारिम जर कर फि मुणंति।
वहिं दीवि मेरुपच्छिमदिसाहि सीओपहि जम्बदीविपहसाहि।

घत्ता—दीविजमतीरि रमिम विरजे मीकासिरि वच्छविसि मंसिवि।
मंपिउं पामें विसपविह पिउ महिवइ पायह भवसंसिवि ॥ ४ ॥

5

सो पारिमायवंपपवंकवमुगुकुवकुरमेंतरसारसेरियंमयगुमुगुमिपमेहमपपमी-
मिकेवपमोरकोरकवईसकुररकरंडकोहलपवरम्मो ॥ १ ॥

सो मयवंतिगंवपवलगकिमयमंयगुप्पविुपिवतकिपवाविविपरंतगंतविवमिर-
कामिपीसिहिष्पुसिपपिंगकिमफेपवलोहिपसरंतो ॥ २ ॥

मा विविहपण्णपक्कमोवियकेवहममुरविपरिमकमोयपुलिपसरणरज्ञकुवा
हविपीमविमुक्कछेकरवमककरवोहिण्यकप्पपियवरपहरिसहंयप्पसोममम्मो ॥ ३ ॥

सो कलवकंपुजमगुमामासरंतुग्मंयपंदेमंयमायणामीहिसोहपुंमोवुरमपमहिक-
वाविसंमंतपंपिपसमूहो ॥ ४ ॥

---

4. १ T तानुन्त. २ PT "पयाहर विमपाहर ३ MBP "पेहमणिफेड ४ MBP में ५ MBP पुउ ६ MBP कलकप्पिजहि व ७ MBP वत्तवीसि. ८ MBP दविसमरिसि; T सीओपमा वत्तसिवि इति केलम ; दविपसारि वीकादरी इति वक्षमा ९ MBPK बविपु

5 १ MBP "वकर" २ MBP "मायरोहो" ३ MB "पुरव"; P पुरव" ४ B "यवरम्मीमुं"; P "यवरोमविपुं but gloss विरम ५ MBP "मरिय" ६ M "बवरोमय"; BP "यवरोमय" ७ K "मायरीमं" MBP "मजवकमपीय"

---

4 बहचेतमाय जत्थलीमम्मवहरिम्मवीरम्मसीरमवकोमपि पुरीमीरो कसारीसेर इत्य वयम्म इत्यसम; 5 मलपरिवयारि मट्टमुणपंतिया 4 8 "दल" "दल" 5 8 मिवागु मिसिय मेयर्णं दा. 10 मि महमिहु देव एव मिहा.

5 3 "विद्रिव" इत्यी. 8 मिवमहं मिला त्यथ यत्ते मदम मर्थ मे.

घत्ता—अइबलु णामें तेत्थु पहु सो जइ वि हु ण होइ दोसायरु ॥
तइ वि हु कुवलयतोसयरु सोम्मु वि चंडपयाव पहायरु ॥ ७ ॥

8

कुलणहसवियारु वि णिव्वियारु सुहसीलु वि धरियधरित्तिभारु ।
इहलोयत्थु वि परलोयभत्तु गोवालु वि जाणियरायवित्तु ।
जयगहियगुणु वि अक्खयगुणोहु णिव्वाहु वि करिकरदीहबाहु ।
बलवंतु वि अबलासयहं गम्मु अविडप्पु वि लंघियसूरहम्मु ।
णीसु वि लक्खणलक्खियसरीरु ससहावें धीरु वि पावभीरु ।
दूरत्थु वि णियडत्थु वि हयारि रइवंतु वि परबहुबंभयारि ।
सुयभिण्णमणु वि दढचित्तवित्ति बहुपालिरो वि दिसधित्तकित्ति ।
अइसच्छु वि रहियसमंतचारु गुरुओ वि गुरुहुं लहु विणयसारु ।
संगरु वि जिणइ संगरि दुजेय लच्छीवासु वि खरदड णेय ।
सुपसुत्तु वि चलणयणेहिं णियइ ठाणत्थु वि तच्चरणेहिं भमइ ।

घत्ता—जो महिमाहरु पुरिसहरि महिमावंतु भुवणि विक्खायउ ॥
जो अहिमाणवंतु सुयणु जो रिउमाणवंतु संजायउ ॥ ८ ॥

---

६ MB होय ७ MBP सोमु ८ MBP चडपयाउ.

8 १ MBPK जग° २ P °गुणि ३ K लक्खियलक्खणसरीरु ४ P णिवडत्थु ५ M वि ६ P रइय° ७ MB गरुवो, P गरुओ ८ M खरदडु, BP खरदड्ड ९ MBP चर°, T चल°. १० M थाणत्थु, MP थाणत्थु ११ MBP तच्चरणिहिं भमइ

---

15 चडपयाव चण्डप्रताप , पहायरु प्रभाकर .

8, 1 *a* कुलणहेत्यादि— यः कुलाकाशे सविकारः स कथं निर्विकार इति विरुद्धम्, अन्यत्र कुलाकाशे सवियारु सविता, *b* सुहसीलु सुखशील उत्तमशीलश्च 2 *a* परलोयभत्तु मोक्षश्रद्धालु गोवालु पशुपाल ; अन्यत्र गौ पृथ्वी ज्ञानं च तत्पालयतीति गोपालो ज्ञातराजवृत्तिश्च 3 *b* णिव्वाहु निर्बाध प्रलम्बबाहुश्च 4 *b* अविडप्पु विदर्पो राहु स अभवन्नपि विलंघितसूर्यतेजा , अन्यत्र विटात्मा न भवति 6 *a* णियडत्थु निकटस्थ , आसन्नधनश्च 7*b* बहुपालिरो बहुपुरुषान् पाति पुष्णातीति बहुपा पुंश्चली तां आलिं सखीं राति आदत्ते य स कथं दिक्षु प्रवृत्तकीर्तिः, अन्यत्र बहुपालक प्रख्यातकीर्तिश्च 9 *a* संगरु स्वाङ्गे स्वशरीरे रुग् व्याधिर्यस्य स स्वाङ्गरुक् 10 *a* सुपसुत्तु य सुष्ठु प्रसुप्त स कथं चलनयने पश्यति, अन्यत्र, सुष्ठु प्रकृष्ट सूत्र नीतिर्यस्य स चारलोचनैश्च कृत्वा पश्यति; *b* वयइ व्रजति गच्छति 11 महिमाहरु पृथ्वीलक्ष्म्या गृहम्

जं सूर्वे सुपमें णीससंति जं मुत्ताहलदंतेहिं हसंति।
जं मणिझंकारें सरं गुणंति जं गुरुगावक्खक्खहिं सुणंति।
घवघव जं णिवडरवेण भुणंति जं सिहिरवेहिं के के भणंति।
भमेइ सारिच्छा रिसमेह जहिं खिइ पडंति पयपीलणेह।
पयखिवपियहिं पेल्लियकरेहिं संतावयार तरुवरेहिं।

घत्ता—मणिखेवणकरणु सुयमणु विरहिणीह मणिसिरिसिरि दिट्ठउं।
संखेइ सुत्तविउविरिय जहिं अप्पउं मण्णिउ णिविट्ठउं॥६॥

7

जहिं पोमरायपहणिरसियाइं बहुपायाखत्तयविसवियाइं।
घड हरियमणी णीलियउ धाम सारिच्छमु केरी सोह णाम।
णवणइं ण कहंति णयाणणार जहिं णम जहिं मि बुरिय णणार।
विवेप्पिणु रंगायाखिपयाव जहिं कुक्कडु णंपइ कंठि हार।
जहिं रिखि वि रेहइ णवर का वि जहिं गंमावि गंमावि तोरणाइं।
रम्मयक्खियावरसंकयाइं जहिं णाविहि णाविहि पंकयाइं।
जहिं पंकर पंकर हंसु णाइ जहिं हंसि हंसि कलेरव णिनाइ।
जहिं कलरवि कलरवि रायणिमाय कामेण समप्पिय कामणाय।
जहिं वणवणाउ णंदि सिरि ण जंति पुणु विणिंद परिस वणवणि पडंति।
रयणुरुयेण्णहिं कुंजरमण्णहिं संयोवहिं मालपमुरुचुयहिं।
संजवियपंक जहिं रायमग्ग पवेसवालामंपाणुगा।
जहिं णिपुण्णम मेयणपसत्थ मसिमसिसिसिसिसिबोलसियत्थ।
सिरिकुसुमालंकिय सुरसमेय णिरुत्तरण जहिं णिवसंति कोय।

¤ MBP पूर पडूसे ५ MBP रेसिहिं ६ MBP वर MP णमाउ, B णमाउ, K णमउं but gloss णमस्करोमि P °रणेहिं. ९ MBPT जहिं कुसुमियतुरियहिं

7 १ MBPK धोरइ. २ MBP कवरइ K कवरइ but corrects it to कवरइ. ३ MBP करिहिं. ४ MP °कुसुमहि, ५ MB वेस°

12 [illegible] मेघा. 14 [illegible]

7 1 [illegible] 2 [illegible] 8 [illegible] [illegible] 5 [illegible]

लालाविट्टलु अंतहं पोट्टलु ।
पिउवणमोयणु पक्खिहिं भोयणु ।
सोलहकंदरु णवदारंतरु ।
कामें जिप्पइ लोहें घिप्पइ ।
कोहें तप्पइ छम्में लिप्पइ ।
कम्में वज्झइ मोहें मुज्झइ ।
सत्थें भिज्जइ रोएं झिज्जइ ।
जरइ कुढिज्जइ कालें खिज्जइ ।

घत्ता—भणिउ सणंदणु पत्थिवेण सति करेज्जसु णियसंताणहो ॥
तुहुं अणुहुंजहि रायसिरि मइ पुणु जाएवउ णिव्वाणहो ॥ १० ॥

11

चवलयर कुसासणवस चरंति महुं वाइ कुवाइहिं अणुहरंति ।
जरमरणहं किंकर किं करंति मायंग अंग किं मोक्खु देंति ।
णिम्मलमइ रायहु रह रहंति ए अवर वि जगि असुवह हवंति ।
अंतेउरु अंते उरु जि हणइ रोवइ वइवसहु ण रक्ख कुणइ ।
भवपासबंधु सुहिबंधुणियरु खणधंसि णयरु गंधव्वणयरु ।
धणु इंधणु लोहहुयासणासु घरु विग्घरु केवलदंसणासु ।
फणिभोउ व भोउ ण भुंजणिज्जु आकोसु वि कोसु वि वज्जणिज्जु ।
दुक्कियणिदेसु व देसु भणमि खयरवइपहुत्तणु तणु व गणमि ।
सीहासणु हासणु मेल्लमाणु किं रक्खइ खइ गच्छंतु प्राणु ।

५ M °भावणु ६ B reads this line as पिउवणभायणु, गुणगणमोयणु and adds further सोयकोयणु, पक्खिहिं भोयणु ७ MB add after this गुणगणमोयणु, सोयकोयणु ८ MBPT °कढरु ९ MBP छिप्पइ १० B कामें ११ MBP खज्जइ

11 १ MBP वहति २ MB केवलु दसणासु ३ P खज्जंतु ४ MBP पाणु

13 *a* पिउवण° श्मशानम् 16 *b* छम्में मायया

11 1 *a* कुसासणवस कुशायास्तर्जनकस्य असनवशास्ताडनवशा, पक्षे कुशासनवशाश्चार्वाकादय, *b* वाइ वाजिनोऽश्वा. 2 *b* अंग संबोधनेऽव्ययम् 3 *b* असुवह प्राणघातका 4 *a* अंते विनाशे, उरु हृदयम् 6 *b* विग्घरु विघ्नकरम् 8 *a* °णिद्देसु उपदेश 9 *a* हासणु हा इति स्वन शब्द.

9

जं पेम्मसलिलपक्खालियमाल जं मयणहु केरी परमसील।
जं चिंतामणि संचिंतकाम जं तिहुयणजणसोहग्गसीम।
जं रूवरयणसंभवखोणि जं हिययहारि लायण्णजोणि।
जं परसुहसंसिणि णत्तुमेत्ति जं परमविसहसंबंधपेत्ति।
जं परवम्महपय दुरियसंति जं परमसुहसहयरियकंति।
जं परगिरिवासिणि अवयरंति जं कोयणसंकरि मंतसत्ति।
महएवि तासु वरकमलवत्ति णामेण मणोहर पंकयच्छि।
तहि जणिउ तणउ अणुराइएण अणुरायरिवद्धताएण तेण।

घत्ता—जाएं जेण धम्मयम्म दुअयवंदु सयलु संताविउ॥
णरिउ व णवविकसतिएण मियणयणोहु हरिसें विहसाविउ॥९॥

10

कुसुमण्णयणामु दुण्णयणिवासु।
केसरिकडयंसु विप्फुरियकमु।
मायंदविगामु कणयसमण्णु।
णयणबद्धरयणि कुवलयदामणि।
सुरकरिकरयर तरुणीमणहर।
विसयारंभर रोमंचुद्धरु।
गुणरंजियजणु णहिमयरोमणु।
कम्मणयमायर पेम्मियवि यायर।
अहिमिच्छयोगेसु चिरतुरयणज्जु।
मणुपयकोयर कंदुप्पयर।
पिमिकुमयसुय णहिरयविमयणु।

9 १ MBP °णोणि २ P लोणिरि. ३ MBP पुरुसवइ ४ MBP °सरणीय. ५ MBP पुरुसयणु ६ MBP सिरमणिर
10 १ MBP °णिरस K सरसु but corrects it to णरिसु २ P दर ३ MBP कुसम. ४ K omits वहियवय

9 4 a रइसुहे वि एदिगुणसुप्त. 6 a वामयापति दुरियसंवदी. 9 णववइणदुलेय.
10 11 b °पि सि पिसु योजणत्

13

जिहँ णामा करकदुंसणेण   सभावसपरिसमुहदंसणेण।
तिह जिणें णाणु मेयविण्णाणु   णिम्मइ होइ आणप्पमाणु।
पहुइ मोहेण मोहेण मोहु   पहुइ रोसेण तिरोह पोहु।
पहुइ णोयरणेण णिग्गयि माणु   परवंचणेण मायाविहाणु।
पहुइ गइ अंगुअंधेण मोहु   इय जीउ कोंणिसु धम्मदोहु।
महिणाहु होवि पुणु होइ माणु   संसारि कयमु गयाहिमाणु।
उप्पज्जइ जा कंठगयाहि   मरणे मणइ गाइ देहि।
मा देण वि कम्मइ आणियाइ   पवसिज्जइ जाइ सुमाणियाइ।
मा णारि महावदुगंध मक्कुल   अण्णाससत्ती मणणस्स कुडिल।
घत्ता—शुक्ल मग्गंरि ससुम्मरइ ण जि मरइ मा मणि पल्लिसो॥
अत्थि ण देसि गंगिट्ठ मइ ताहि उवसमविहि परवस उत्ती॥ १३॥

14

फासरसयसंगय महि भमेमि।
गायंति के वि णच्चंति के वि   वायंति के वि वण्णंति के वि।
सीयंति के वि तुण्णंति के वि   धणकज्जि पढंति लिहंति के वि।
करिसणु करंति पहरणु धरंति   माहुयम्माहि परछियधड हणंति।
आयंतु विसिट्ठु ण संगहंति   ससहइ गुणवंता मइं कहंति।
कम्मोहिं धणाइं समज्जिऊण   आणेवि णिहेलणि पुंजिऊण।
दियसावसाणि समसंत होंति   णिव्वाइयमुह माणय सुयंति।
अह उक्कमग्ग घट्टियणिणाय   धायंति ससच्चइ के वि पाय।

13 १ P जहिं २ P जिणु ३ MBP °णंतु ४ MBP जिणु ५ MBPK णियदोसु ६ MP °वंचणेण मणि मायठाणु, B °वंचणेण मणि माय ठाणु ७ MBP, अनुबंधेण ८ BP इयइ. ९ M गविट्ठु १० MBP गुत्ती.
14 १ MB भमेमि. २ G पुंजिऊण ३ B पाय.

13 6 *a* अनुबंधेन गंतव्या प्रकर्षेण 8 *a* आणियाइ आनायिता स्त्रिया 11 गविट्ठ गवेषिता, उवसमविहि परवस उत्ती उपशमविधिर्न दृष्टा शरीरे किंतु अन्येन भोजनादिना इत्या शाम्यति, तेन परवश एव उपशमविधिर्दृष्टः

14. 7 *a* समसंत श्रमश्रान्ता, *b* णिव्वाइयमुह प्रगालितमुखाः. 8 *b* के वि पाय अपोगात कर्णपाय,

किं छज्जहिं छत्तायारभूमि पाविज्जइ जिणवरु जहिं ण कामि ।
चामरु मरु होइ ण भरणहारि ण समेति केउ झयकेउधारि ।
पडिपंकियपसीहु ण सीहु होइ जो मुणिहिं मरु सो कुणइ बाइ ।

घत्ता—एम पयंपिवि रायहंसु मेहहिं णायाजलरिसहिं ।
णवइ पहु महाचलहो णहिसिंचिवि सिरेहिं सिरिकलसहिं ॥ ११ ॥

12

जं जयजयसहें वसु पहु तं पुण मेल्लिवि परवइ पयहु ।
मणिभूसणु जिणवसु परिहरेवि पिउ पियमवि वणि जिणदिक्ख लेवि ।
जो छिंदइ छिंदइ वंसमेव णियइ सरेण सण्णाइ मणेण ।
जो पुच्छइ जो वि गुणवयु देइ दोहिं मि समाणु हुउ परमजोइ ।
सामंतमंतिमउसेणणिसु पत्तहिं वि ताहु पुर कण्ण रसु ।
वेणगहिं विविहहिं परिहवेहिं मोहहलें मणिकंचणमएहिं ।
कामिणिपणविहराविम्मवेहिं णच्चावहिं जालहिं वाइवेहिं ।
तंतीपुप्फरयजाइएहिं स रि ग म प ध णी सरणाइएहिं ।
वच्छाकिंपयइयमहिपारवालु मोक्खासरहु तहु जाइ कालु ।
पेहमिहु महामइ णिरुवमंति णीयउ संतिमिच्चमउ त्ति भंति ।
तिजउ सयमइ णाहुरिहिरिट्ठ सहेपुणु णउरचउ जणपसिट्ठ ।

घत्ता— तेण भंगालिहु चिच्चिविउ हुयवह् तक्कवेहिं कि पावेउ ॥
सायरु णहसरियहिं विप्पहिं विसयसुहेहिं मि जीउ सयउ ॥१२॥

५ MBP सोहे.

12 १ MBPK णाहरणहिं २ M सामंत. ३ MBP पयरिव ४ MBP कि तवेहिं. ५ P सामंत-६ M समर. ७ MBP परिमाहिं

10 छत्तायारभूमि मुक्तिशिला. 11 b चवकेउधारि कामः 12 a सो हु सिंह 14 सिरेहिं वचनभेदः.
12. 8 b सण्णाइ अनुमति ददाति 10 a णिरुवमंति नि रोह 12 णायण तुला.

13

जिहँ पामा कररुहफंसणेण संभासणपियमुहदंसणेण ।
तिह णिच्चे कामु सेविज्जमाणु वित्थरइ होइ अइअप्पमाणु ।
वड्ढइ लोहेण मँहंतु लोहु वड्ढइ हंकारें तिव्वं कोहु ।
वड्ढइ णँयहीणु णिप्पवि माणु परवंचणेणं मायाविहाणु ।
वड्ढइ रइ अँणुबंधेण मोहु इय जीउ करेप्पिणु धम्मदोहु ।
महिणाहु होवि पुणु होइ साणु संसारि कवणु रायाहिमाणु ।
उप्पज्जइ जा कंदप्पवाहि संकप्पें तप्पइ ताइ देहि ।
सा केण वि कत्थइ आणियाइ पसमिज्जइ जाइ सुमाणियाइ ।
सा णारि सहावदुगंध चडुल अण्णासत्ती घणगम्म कुडिल ।
घत्ता—भुक्ख सरीरि समुब्भवइ तं जि दहइ सा झत्ति पलित्ती ॥
अत्थि ण देहि गँविट्ठ मइं तहि उवसमविहि परवस उँत्ती ॥ १३ ॥

14

फासरसवसंगय महि भँमेवि ।
गायंति के वि णच्चंति के वि वायंति के वि वण्णंति के वि ।
सीवंति के वि तुण्णंति के वि घणकज्जि पढंति लिहंति के वि ।
करिसणु करंति पहरणु धरंति चडुयम्मर्हि परहियवउ हरंति ।
आवंतु विसिट्ठु ण संसहंति अम्हइं गुणवंता सइं कहंति ।
कम्मेर्हि धणाइं समज्जिऊण आणेवि णिहेलणि पुंजिऊँण ।
दिवसावसाणि समसंत होंति णिव्वाइयमुह माणव सुयंति ।
अह उड्ढमग्ग वड्ढियाणिणाय धावंति सइच्छइ ये वि वाँय ।

13 १ P जहिं २ P णिच्चु ३ MBP अणतु ४ MBP तिव्वु ५ MBPK णियहीणु ६ MP °वंचणेण मणि मायठाणु, B °वचणेण मणि माइ ठाणु ७ MBP अणुबंधेण ८ BP डहइ ९ M गव्विट्ठु १० MBP वुत्ती.
14 १ MB भमेमि २ G पुञ्जिऊण ३ B पाय.

13 5 *a* अणुबंधेण सततया प्रवर्धनेन 8 *a* आणियाइ आनातया स्त्रिया 11 गविट्ठु गवेपिता, उवसमविहि परवस उत्ती उपशमविधिर्न दृष्टा शरीरे किं तु अन्येन भोजनादिना कृत्वा शाम्यति, तेन परवश एव उपशमविधिर्दृष्टा

14, 7 *a* समसंत श्रमश्रान्ता, *b* णिव्वाइयमुह प्रसारितमुखा. 8 *b* ये वि वाय अधोवात ऊर्ध्ववातश्च,

णियइ णीसत्तु अप्पु बालु जसु छिण्णउ छिण्णउ एहु वि वालु।
आहारु भुत्तु परिचत्तु जीवि पडिंभउ पिउ दुसेंभेसेवि।
छड्डुंति पोसि पुत्तु जोव्वणत्तु णिउ एक्कहिं पत्तु पयडमि मवंत।

घत्ता—मयणमोहवस परहरिय होंति केर कासु वि बालंतहो ॥
जीवमेत्तुमरसयसिय बंधि जीव मरणहु दुरुंतहो ॥ १४ ॥

15

पयविवरविहीणें किं कुलेण णियणाहविहीणें किं बलेण।
बरतक्किविहीणें किं सरेण सुकइत्तविहीणें किं मरेण।
सुविमइविहीणें किं पुरेण परबहुपहवणिएं किं करेण।
चारित्तविमुक्कें किं सुएण णियपयपरिहूएं किं सुएण।
किं वाएं मयणंधोविरेण किं माणें णियमुद्दोविरेण।
किं करिणा भवणीवंकुसेण किं हरिणा मयगब्भिणकुसेण।
किं पुरिसें पसरियदुव्वसेण किं वणिएण णियकिमरसेण।
किं मुणिणा पंचिंदियवसेण किं मुहें पेम्मपरव्वसेण।
किं मंति कयदुव्वारएण किं परियणेण एत्थारएण।
किं गुरुणा मोहंधारएण किं लोएं मणियपगारएण।
किं दुक्खमहुपव्वीविएण किं धम्मविहीणें जीविएण।

घत्ता—पुंणु सयलु पलम्ममत जगाव रम्मा मम्मा माणइ ॥
धम्मु पवित्त हाव जिंण जं पव अप्पउमाणउ दीसइ ॥ १५ ॥

४ MBP पंसार. ५ MBP बिय°

15 १ MBP °संतगएण, MB °पामिएण २ B वणियविर्य° ४ MP कों; B वर्ते ५ P बहु° मसारएण. ६ MP मोर्ते चारएण MBP °बारएण MBP धम्मविहीर्ते. ९ MP जोरएण १ MBP धम्मविहीणें महिलइ सयलइ एमु.

8 b बहु छिण्णउ छिण्णउ परिचत्तपरिणामिता तनु एतौ पुत्रं जनाति तथा मिरया मनो बच्चति. 10 b एवं बे अपि पेम्पवणे होते मति णियमुहमको 11 को कि मणो 13 केर आत्मन्

15 4 a सुएण श्रुतेन b सुएण सुतेन. 6 b हरिणा मयेण °कुसेण °पादुकेन (पदाधेन). 9 a मंति मंत्रीन बद्धुपेन, b एरएण° परगाति

16

सच्चेण दयादाणेण धम्मु अलिएण जीयहिंसइ अहम्मु ।
तेणेत्थु कुणर णारय तिरिक्ख कुच्छिय सुर होंति तिसल्लतिक्ख ।
धम्मेण होंति कण्णामरिंद अरहंत चक्कि चारण मुणिंद ।
अहमिंद चंदचंदाहजोण्ह धम्मेण होंति जगि राम कण्ह ।
मणिमउडफुरियहरिवीढसीह मंडलियमहामंडलियवीस ।
पडिवासुएव कुसुमसर रुद्द धम्मेण होंति णाणाणरिंद ।
कइगमयवम्मिवाइत्तणाइं धम्मेण हवंति गुरुत्तणाइं ।
सोहग्ग रूवु कुलु सीलु कंति पोरिसं जसु भुयबलु विमल खंति ।
जं दीसइ चंगउ गुणविसेसु तं धम्महु केरउ फलु असेसु ।
घत्ता—धवलीहूयउ सिरकमलु भाउ देव केसिउ भुंजिज्जइ ॥
धम्मु जिणागमभासियउ मणवयकायविसुद्धिइ किज्जइ ॥ १६ ॥

17

पइ भाविज्जइ सग्गापवग्गु ता दिण्णइ महामइ णाहु कुमग्गु ।
अणिहणइं अणाइअहेउयाइं महिमारुयवेस्साणरउयाइं ।
भूयइं चयारि जहिं जहिं मिलंति तहिं तहिं चेयणाविंघाइं चलंति ।
गुलजलपिट्ठहिं मयसत्ति जेम भूयहु जीउ संभवइ तेम ।
ण सरीरिसरीरहुं भेउ अत्थि कारु काणेणु हत्तु को कवणु हत्थि ।
जम्माउ ण घघ्घइ अण्णु जम्मु जणु जेण जियइ त करइ कम्मु ।
जो परहरु पुच्छिवि परहु पासि गच्छइ पइवियगुज्झपयासि ।
विणु तेहिं केम सो सग्गे जाइ पुज्जिउ पत्थरु किं पुण्णभाइ ।
जासुयरि मुयइ गलु जीवलोउ परजम्मि तेण कहिं कियउ पाउ ।
जलबुब्बुय जाइं कम्मेण होंति तो जीव वि राय म करहि भंति ।

16 १ K अरिहत २ P सोहग्गु सीलु एण रूउ. ३ MB रूउ ४ MBPK पोरिसु जसु

17. १ MBP °जलधाइहिं. २ M जीव ३ MBP कण्ण दस. ४ MB अण्णजम्मु. ५ MB सग्गु, P सग्गि, K सग्ग but corrects it to सग्गु. ६ K मुयइ.

16. 4 *a* °जोण्ह °कान्ति 7 *a* कइगमय° सैद्धान्तिकः सिद्धान्तवेत्ता, °वम्मि° वाग्मी.

17. 2 *b* °उयाइ उदकानि. 7 *a* परहरु परगृहम्, *b* °पयासि °प्रकाशेन. 10 *b* राय हे राजन्.

घत्ता—कहिं किर छुहियवुहियहं पिसु मूयंगहं वीरु कहिं थिरु ॥
जो णाहिउ पासंडियहिं सो हउं मण्णमि चोरहिं मुहु ॥ १७ ॥

18

तं णिसुणिवि भणिउं चउत्थएण मंतिहिं पहुपयविणमत्थएण ।
परिपालियसमहिंसावएण सुयबुद्धिं परिमियसावएण ।
जणि भरहहिं दीसइ विण्णु राउ चउदसपसूयहि पढु साउ ।
वेउ भावेण वि भिण्णु जोउ किह धवल हुहाएउ मूढलोउ ।
चरणकमारएंसि वेसमासु सोमेण णिवेछु कत्थइ पयासु ।
एक्केहिं तेहिं वेरउ वि होइ णरवित्तु कहिं संजोपचाइ ।
छिहि उज्झोविणइ पामियए पयमिउ साहिजइ हत्थि तेम ।
णवकम्म पवणु थिरु जड परिति असहयाइं कहिं भेयवजुत्ति ।
एमेव करिवि मण्णविय कत्ति किं जंपसि परवंचरिय विति ।
विणु जीवें कहिं मूयाइं मिलंति कायाकारेण ण परिवलंति ।
जइ परिवेलंति मासहि कुडेउ तो कायपिंडहि सरीरु होउ ।

घत्ता—पंचिंदियहिं विवज्जियउ मणविरहिउ णिम्मेहुं भयावउ ॥
जीउ भाइ किह भयसि तुहुं सम्मि होइ किह सुरवरराणउ ॥ १८ ॥

19

दीसइ पवसु जमि सहुं सुएण पाहावेण वि विवेयणेण ।
कट्टिजइ भावसु कदुएण किह तिह सो कम्मवियप्पणेण ।

---

७ MBP मुहं ८ MBP भीरु.

18. १ MB णिम्म एव M मिणिम्मओव BP °णिरिम्मओव २ MBP °ए. ४ MBP चणति करि मच्चु मिणइ. ५ M वजणिणइ. ६ MB एमेहि P एमेव. ७ MBP मूयइं भरि. MBP परिवलहि ९ MBP परिवलहि १ M णिम्मिउ B णिम्मिउ

19 १ B कट्टिएण P कडुएण.

---

18. 1 a चउत्थएण तृतीयेन b मंतिहिं मन्त्रिणा 2 a °समहिंसावएण समताभाव—अहिंसाभाव परिमित श्रावका; b परिमियसावएण परिमितश्रावकेण. 3 b साउ स्वादः 5 a "चरण" चरणे. 6 b संजोपचाइ संयोगादिः 9 परवंचरिय वि ति परवंचनम् 11 b कायपिंड कायः. 12 णिम्मेहु निर्मेहाः

19 1 a पवसु प्रवासः. 2 a कडुएण दुःखप्रकारेण.

जंपिउ पइ बहुपुण्णादरेण — ति फिउ तुंमिउ मयि पच्चयेण।
णउ सुमरइ सो कयणिग्गहेण — णउ सुणइ भोयपरिग्गहेण।
णिज्जीउ ण याणइ सोक्खु दुक्खु — जहिं जीउ तहिं जि सुहु ताइ पेक्खु।
भो भूयवाइ भूणहि मुत्तु — तुहु तुज्झ णत्थि जिणवयणमंतु।
घडतंडिय पंडिय कव्वु कयहि — अणिबद्धु असंबद्धउ काइं चवहि।
तहिं अवसरि सभिण्णें पउत्तु — उप्पज्जइ खणि खणभंगचित्तु।
दुस्सियच्छिद्दरमियकयासणाइ — परियाणइ सुइरु वि वासणाइ।
जो दीसइ सो गुणवट्टि खंधु — णउ अण्णउ णउ णिरु पारमधु।

घत्ता—ता दिसिमयहु भत्तएण उत्तरु दिण्णु तेण गुणवाइहिं॥
वत्थु णिरण्णउ णत्थि जगि तणजलणु जि मुद्धु धूमें गाइहिं॥ १९॥

20

ज णत्थि मण्ण त कुम्मरोमु — त वसाइभु नं गयणपोमु।
तं ण हवइ भणु को खणु वि थाइ — अत्थिल्लउ किं पुणु गयहु जाइ।
को जाणइ जिणवरु मुयवि सच्चु — वज्जिवि अरूवि परिणामि तच्चु।
जइ छिण्णउं मणु मणमाउ चेइ — तो अण्णें थवियउ अण्णु लेइ।
जइ दव्वइं तुह खणभंगुराइं — तो खणथामिणि वासण ण काइ।
किं सा खधइ घाडिरिय दिट्ठ — अणणुहवु गणिउ किं भेणिउं धिट्ठ।
ता सयमइ चवइ मइविसालु — मायण्हिय सिविणय इंदजालु।
जिह पवहु केरी सव्व माय — दीसंतु वि तिह जगु णत्थि राय।
गुरुं सीसु धम्मु ववहारु पहु — परमत्थें णउ परु णउ सदेहु।

१ MBP भवि मुणिउ २ MBP तह तुज्झु ४ MBP असुद्धउ. ५ MBP खणि भगचित्तु ६ MB खणपहि, P खणि थाहि ७ MBP तेण दिण्णु ८ MB गुणवाइहो ९ B अत्थि १० MBP मुउ. ११ MB गाइहो.
20. १ MBP भणहि २ MBP माइण्हिय. ३ P गुरुसीसधम्मु

7 *a* कयहि काव्य करोषि, *b* असंबद्धउ अश्रद्ध अप्रतीतिजनकम् 8 *b* खणभंगचित्तु क्षणविनश्वरो जीव, 9 *b* वासणाइ चित्तसंस्कारेण. 10 *a* खंधु रूपविज्ञानवेदनासंज्ञासंस्कारा पञ्च स्कन्धा, *b* पारमधु धर्म, 12 णिरण्णउ निरन्वयम्

20 2 *b* अत्थिल्लउ अस्तित्वयुक्तम् 3 *b* वज्जिवी त्यादि—अरूपि जीवादि वर्जयित्वा 4 *b* चेइ जानाति 6 *b* अणणुहवु अननुभूतम् 7 *b* मायण्हिय मृगतृष्णिका

घत्ता—अंकुर मासअंतु सुरवि मायउ सक्किमुणवपावीलहो ॥
भामिसु गिन्ह मारि मियउ मीचु विसमिवि पउ मिर्यमयहो ॥ २ ॥

21

जिह सोयरि तिह पर संदमहु । परलोयहु कमिवि को न महु ।
मक्खियाई जि विसुमिवि मुयइ मीडे । मियतणु इंदर कि भरपमीड ।
मयपासु पवेसइ मणिवि तसइ । दिहिहुँ वत्ताभिवचरणु वसइ ॥
इसिपायपयामवियीसयव । ता गुरुणा भविउं तुर्दीपयव ।
जइ नत्थि किं पि कारणु न कज्जु । तो किं पीडहि जइ पउर मज्जु ।
जइ होइ मसंसउ भत्थकारि । तो आयहि सिरिमैतरि भमारि ।
मिच्छोसहि सेमारियकरिंद । किं थवहि मसवउ विरंसर्वद ।
जइ सत्तु न हुई जइ हउं न कत्तु । मणु होइ सुपरिवसि कत्तु ।
सुणि पाव विपागैमहासिपाउं । सुम्मंति न अहवमभासियाउं ।

घत्ता—जाविं सुरापउ वसि हुउ पाडु भरविंड जाम विवज्जायउ ॥
पढमेपुरु हरिवंतु तहो पुणु सुरविंदु रहेसमु जायउ ॥ २१ ॥

22

तहि अवरविदि सुविकमावकारि । रिउमरिविसहारकरवमहारि ।
गयमंगयहत्थि मयकमनूप । पडिहत्थविमुमसिरसहमूप ।
ते तिण्णि वि हुईं मण्डंति जाम । कच्चाउ हाहवउ पियमि ताम ।

---

४ MBP वड्. ५ MBP धम्मिच्चडु. ६ MB मिच्छामहो.

21 १ MBP जम्म° २ K थीर but corrects it to भीर and gloss वर्य ३ K मिहि॰. ४ MB मिमिच्छर° ५ MMB मिच्छलिय. ६ MBP मिरवद्द. ७ MBPK °मज्जुमिवार. K करिंसि ९ MBP पम्मु पुण १ M सुव्वम B ससमु

---

10 °भा वी व हो सक्कयव

21, 1 a पी व रि कुपायः, 4 b सुत्तम अनिवाः, 7 व हि क क रि व अहिकरणेन्ना आमिकालियें वा b मि द व थं द मिहदम

णिद्दहइ दाग मलयरुहपंकु घगधगइ पल्लवसरु व ससंकु।
जलजलिउ जालजलणु व जलद्द आयइकायइ आवइ ण णिद्द।
उवसमइ ण कम वि अगदाहु थिउ कायरमुहुं परगयरणाहु।
तहिं अवसरि पंकयचेत्तणेत्तु पिउणा कोक्काविउ पढमपुत्तु।
सो भणिउ तेण एयरघियगाइ जहिं घणइं घणइ पेल्लहिंगाइ।
जहिं सुरहिउ कंपिउ रुयदारु सीयलु संचारिउं हिमतुसारु।
जहिं थाइ धाउ णीवइ सरीरु तं णयवयहि सीओयतीरु।
आइसहि सविज्जाहियवाउ मइं णेतु तुरिउ मारुयरयाउ।
ता तेण भणिवि पेसणपसाउ आयाहिउ खगदेवीणिहाउ।
घत्ता—सुपण संविज्जउ पेसियउ ताउ तासु जोयंति ण समुहु॥
मतु देउ अण्णहु सयणु पुण्णि परंमुहि होइ परंमुहुं॥ २२॥

23

पाविट्ठहु काए व ण जाइ पाणु आढत्तउ तेण रउद्दु झाणु।
लोएहिं भणिज्जइ देव जोय संपयसुहि सुहियह सेवणीय।
फदइ फरेहिं तासतु तोंदु दुंदिदेसंपण संणिहु णरिंदु।
सुज्झतहं कप्पिउ कायदंदु पल्लीदेहंतहु रुहिरबिंदु।
णिविडिउ आसासिउ सो रविंदु सीयलु घणरुहलं णु ण सणिंदु।
त पेच्छिउवि हरियदाणुयासु आणु दिण्णु ताए सुयासु।
जइ रत्तद्दहि जलकील करमि तो पुत्त णियत्तउ णउ मरमि।

22 MBPK णिड्डहइ. २ MBP जलजलइ जलिउ जलणु ३ MB °पत्त°. ४ MBP फग्गु पुण ५ P खद्दीहराइ. ६ MBP संचारिउ ७ MBP सुविज्जउ.

23 १ MBP पाणु २ MBP तुंदु, T तोंदु उदरम्, K तोंदु, but records तोंद in second hand ३ M reads this foot as 4 a. ४ P °देसिणहि ५ M reads this foot as 8 b ६ MBP हियवथिउ आसासिउ णरिंदु ७ MBP °लउ. ८ MBP रत्तद्दहि ९ MBP णेय

22 4 a मलयरुह° चन्दनम. 5 a जलद्द जलार्द्र पत्रम् 11 b मारुयरयाउ वायुवेगा 12 b आयाहिउ आकारित, °णिहाउ गमूह.

23 1 b आढत्तउ प्रारब्धम् 2 b संपयसुहि लक्ष्मीसुन्दार्थेम् 3 a तोंदु उदरम्, b कायदंदु शरीरद्वयम् 4 b पल्लीदेहंतहु विश्वंभरदेहमध्यात् 5 b घणरुह° रुधिरम्, सणिंदु पूर्णिमाचन्द्र. 6 a हरियदाणुयासु कुरुविन्दस्य, b सुयासु सुतस्य

किंकरकरसिरमउडाणियएण | ससमेसमहिसमुंसेणियएण ।
वणि बोल्ल ववेप्पिणु मरहि तेम | सुविहाणइ हउं वहि ण्हामि जेम ।

घत्ता—णिसुणिवि हिंसावयणविहि गय कुसविंसु णियडि मउरिणि कर ॥
कारिमकीसमज्जु मरिवि विरइय णावि विहाणइ कुसर ॥ २३ ॥

24

तूसेप्पिणु देत्तु पयडु पउ | अंतमु तम कुक्किपउ साउ ।
णउ कोहिउं कमलाएसु मिरागु | माणारउ णिहणमि एवु पुणु ।
मणि पसरिउ तहु कुकम्मरेणु | णायहिय मोसणु कम्मपेणु ।
णाणुवियंतु पउविणमाणु | हिउ कुसविंतु एकापमाणु ।
तं करिवि णिरूवउ वाररेणु | णरवर तहु एक्का मायमाणु ।
पक्कमिणि पडिउ गिरिणमहिंसु | णियकरखुरियाणिणाहिंसंगु ।
सुउ गउ णरणाहु सुहिसोयभामि | हाहारउ पडिउ बंधुयणमि ।
णवर वि णिहंमवि तहु वंसकेर | रूवेण णाई सई मयरकेउ ।
णिय होतउ णरणा भंडयारि | ईसउ णामि वंडिणविचारि ।
तहु तणउ तणउ णत्तिपउंपालि | मणिमालि सउणमणवंसुमालि ।
तों देव पीढकाळेण णउ | भवणाणिहि कम्पारि देउ हउ ।

घत्ता—पुणु णत्तु णिसि मरिवि पुंजियविविहकमसमारउ ॥
णहुणहाणें पिउ मरिवि मओवण हुयण णिययमेडारउ ॥ २४ ॥

१ MBP °मिय° ११ GK मरिय णवि

24. १ MBP तहु णिहुणवि. २ P णामेण णि वंडिणारि. ३ MBP °पुणाणि ४ MBP ण. ५ MBP णवर.

9 a वणि भर्ते. 11 कारिमकोसमज्जु हतिमयविरय; विहाणइ प्रभाते.

24. 1 b समलात 9 b णिच्चइण्डवित्रविया 10 °पुणाणि आचार; b ...
...

25

माणुसु दाढहिं दलहिं मलइ जं घरि पइसइ त त गिलइ ।
सगिरिणिजलकयसिहरग्गणच्चणि पुणु रयणमालि पइसंतु भवणि ।
संभरियपुव्वजम्मंतरेण ओलक्खिउ णियमिसु विसहरेण ।
मंच्छीसिउ भोयाहोयणेण ता त्रिसिउ खगवइजायएण ।
महु एहु को वि चिरजम्मबंधु णं तो किं णउ भक्खइ मयंधु ।
पुणु गपि तेण पुच्छिउ मुणिंदु भासियउ तेण वंदियणरिंदु ।
इयउ असमाहिइ मरिवि सप्पु किं ण वियाणहि अप्पणउ बप्पु ।
तं सुणिवि तेण णिचणवणेण पिउणेहकरुणकंपियमणेण ।
पडिबोहिवि पियरु खमियकम्मु जिणणाहहु केरउ कहिउ धम्मु ।
बुज्झिवि फणिणा सणासु कयउ मुउ जायउ सुरु उवयत्तु गयउ ।
देवेण तेण जाणियभवेण पय गुरुपुज्ज सुमहुच्छवेण ।
आविवि मणिमालिहि दिण्णु हारु जाणइ पुरु देसु कहावयारु ।
इहु अज्ज वि अच्छइ तुज्झ कंठि ताराणियरु व णं मेरुकंठि ।

घत्ता—त णिसुणेवि महाबलेण भरहमोत्तियावलि जोएप्पिणु ॥
इयतमु पुप्फदंतसरिसु आलिंगियउ मति विहसेप्पिणु ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे विंतडापडियपडाविहडण णाम वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २० ॥

॥ संधि ॥ २० ॥

---

25 १ MBP दलेइ २ MBP गिलेइ ३ MBP रयणिमालि ४ MBP म भीसिउ. ५ MB भोया भोयणेण, PT भोयाभोयएण ६ B चिरधम्मबंधु ७ MBP °करण° ८ M °कंपिय° ९ T कहावयारु कथावतार १० MBP व मेरुकंठि ११ MBP पुप्फयंत°

---

25 4 *a* मच्छीसिउ मा भैषीस्त्वम्, भोयाहोयणेण फणामण्डपाभ फणेन फटाटोपेन 10 *b* गयउ नष्टम् 12 *b* कहावयारु कथावतार.

XXI

सुंदरु मरउ पईवदा बहुमम्मियमवठवद्दको ।
सर्वुद्धे मायविसुद भिज्जइ हयु महावक्को । धुवकं ।

1

पुणु तेण पईपिडे सुरमडुर मयसयपईविपमयमाउइ ।
हुउ तायपियामहु इक्कपडु आमेय पसिअइ सइसबउ ।
तप्पाइवि केवेलु आय धुणि गउ मोक्खाविवासहु परमगुणि ।
हुउ तावताउ सयबहु भिवरु परिपालिवि सावयधम्मपरु ।
मारिंदसम्भि हुवउ अमरु सर्वसुहिंआउपमाणवरु ।
गउ मेवहि तइवा माविपउ हुई मई सहुं तें बोहाविपउ ।
अरवहु हुइ पिउ मयहुउ वसि गउ बमवासहु होप्पिणु रिसि ।
पपविमपासई अवबोझोपई सिरि मप्पिवि मिवविपवंद्धमें ।
हुउ एम पिपामहपिपंपहुर सुम्मीवि देव साहियसुगइ ।
वरदइदायमायरदुर संपत्ता बरवसिरिविमाणइ ।

घत्ता—इयवसे जिणवरणमस्ते बवरि बवरि रंकु वि बवर ।
कपगावें परियय पावें देमुग्रुडं राउ वि पवर ॥ १ ॥

MBP give at the commencement of this Samdhi, the following stanza

वस बम्मपडिमतरसमटवदयास वासमि
प्रतिहयणपणपवमडिसउवि वया सिराक्के ।
बवरि वरसदी य वामवसमाविवारवप्पहृये
एवमि बमहु बमवि मडिमवसमवमसमत्मइ ॥

MP read सिराक्के for सिराक्के "ममाविद्व" for ममाविद्व" य बवरि बमहु for एवमि बमहु M reads "बपहुबमपमाव"; P reads "बरमममवमम" for "बरवसमम" GK do not give it.

1 १ MBP वविरु २ MBP केवलमणु हुणि ३ MBP °मव ४ P °बोहणमं ५ P °अंक-बयु, ६ MBP °मिउ°

1. 6 a मिमव मूमर 11 a °मिम° मिवा

2

तं सुणिवि पवुत्तउ भरहराणु । अइयलंमुउ हुउ उवसंतमणु ।
संकाकंखाहिं विवज्जियउ । गुरु तेण सुवण्णहिं पुज्जियउ ।
अण्णहिं दिणि उडुगणमेहलहो । झलझलझलंतणिज्झरजलहो ।
कंचणधूलीरयपिंगलहो । करिदंतथिहिण्णसिलायलहो ।
मणियरफुरियणहतरहो । सिद्धकयाइयसयमहघरहो ।
आसीणसुरासुरसुंदरहो । गउ वंदणहत्तिए मंदरहो ।
सिरिभद्दसालसुणंदणइं । सउमणसससरसपंडुयवणइं ।
घज्जियफणिकामिणिणेउरइं । चालियचंदुज्जलचामरइं ।
किंणरपारद्धथोत्तसयइं । विक्कमियमाणवभयभयइं ।
अकयाइं विलंबियतोरणइं । पर्यसिवि जिणचियणिहेलणइं ।
मंडिय सीहासणचेइयउ । परियंचिवि अंचिवि चेइयउ ।

घत्ता—णरविहुणा सगवइगुरुणा करु णिउ सेसासयदलहो ॥
तं मणियहिं महुयरझुणियहिं भणइ व तरि दुक्कियजलहो ॥ २ ॥

3

ता तहिं ओलंबियभुयजुयलु । संपत्तउ चारणमुणिजुयलु ।
मलु जासु सरीरि ण झाणि मलु । णउ परतावणि बलु झुतवि बलु ।
जसु भमइ जासु णउ भमइ मणु । णहु भज्जइ कहिं मि ण सीलगुणु ।
थंकत्तणु भउंहहं आयरिउ । णउ जासु मइइ किं पि वि धरिउ ।
रसु परमागमि णउ कामरसु । वसु जं ण समिच्छइ धम्मवसु ।
सिरि केसजडत्तणु जासु गय । णउ सीस वियाणियसत्तणय ।

2 १ MB णिसुणिवि २ MB अइवलु सुउ ३ BP वदणभत्तिइ ४ P °भर° ५ MBP ° भवसयइं ६ MBP पइसिवि ७ MBP सिंहासण°, ८ MBPKT तरु.
3 १ P मइ and gloss मतौ २ MBP जो

2 8 *a* घ ज्जि य° शब्दायमान 10 *b* प य सि वि प्रवेश कृत्वा 11 *a* °चे इ य उ पादुष्पिका., *b* चे इ य उ प्रतिमा 12 °वि हु णा °चन्द्रेण, से सा स य द ल हो निर्माल्यस्यपद्मस्य कृते. 13 म णि य हिं मनोज्ञैः, त र दु क्कि य ज ल हो दुष्कृतजलात् तर, पाप मुक्त्वा सुखी भव
3. 3 *b* ण हु णखम्

तुम्हइ मण मइ वि आसु मण   कय पंचिंदियइं वि जेण वस ।
ते रिसिसुपकुत्तु मंडियउ   सयंबुद्धें मण्णउ विंडियउ ।
हउं मंति वि पर ण करमि तउ   केसिउ किर पोसमि असुहवउ ।

घत्ता— सिरिगोयर पुण्णविसेसर देसु महाकच्छउ वसइ ।
तंजमयहु सुरगिरिसिहरहु मायउ तं तहु दिहि दिसइ ॥ ३ ॥

४

तं अवरचुंबंपयरविरयसरे   ण्हाणउ ण भडह संचोरसरे ।
तहिं पहु साहु मारमगइ   भव्वेण मरिंजउ सुहमइ ।
ते पुण्णिम कुरुं वे वि जण   गुम्मइं तिव्वातवपावीयपण ।
महु सामि महाबलु संभवइ   किं भव्वु अभव्वु ण बुज्झइ ।
आमिसरसपावरजीववह   तं णिसुणिवि जंपइ जेट्ठु जइ ।
इह जंबुदीवि धादिम्मभवे   अम्माइ सुवाइयपारंभभवे ।
आसण्णभव्वु सो णिच्चपवर   दहमें भवि होसइ तित्थयरु ।
सोयासिउ जं तं कहउ रामि   कुम्मोवमघु सहु हुव कहमि ।
पच्छिमविदेहि पुंडरिंगिणि   सीहवरि णरिंदु विमुक्कमय ।
णामें सिरिसेणु सिरीणिलउ   सुंदरिदेविहि वरिसियपुलउ ।
तहु पढमु पुत्तु जयवम्मु हुउ   बीयउ सिरिवम्मु विरिंदु हुउ ।
सो अवरु जणणिजणमणमहो   सो मायह सयलहु परियणहो ।

घत्ता—सुरवरसुहु पुसिदुरसहु पियहिं ण्हेसहु वि वमीहजके ।
किं गुणमहु मण्णइ सज्जणु वज्जिर पुण्णु वि महुर भुवणयके ॥ ४ ॥

३ BP ण वी चोवण. ४ MBP कम

4 १ MBP °कुंभरि. २ MBP तंचररे. ३ MBP वणा ४ MBP °वणा ५ M मेहु जर ६ MBP दण्णर. ७ B जाउ गा, P वं त म उ ८ MBP गहु हुउ ९ MBP अजनु. १० MBP णरिंदुउ ११ P विणु १२ M मण्णर.

7 a मण मए, मण मणा 11 दिहि दूरि
4 1 a °चरे क्षी 6 b कुमारवरएवणरे धर्मबुद्धिमहतोरवालमें.

5

मेल्लंतें संतें रज्जरइ वउ लेंतें जंतें परमगइ।
णरणाहें[1] अइअजुत्तु कियउ लहुतणयहु रज्जु समप्पियउ।
जयवम्में[2] ता परिचिंतियउ को फेडइ दइवणियातियउ।
णिद्दइवहु[3] सव्वु वि चप्फलउ णिद्दइवकाज्जि जगु सीयलउ।
णिद्दइवु[4] णवतु वि को गणइ णिद्दइवहु भासिउ को सुणइ।
णिद्दइवहु सुक्कइ[5] भरिउ सरु ण फलइ णिद्दइवं णिहिउ तरु।
णिद्दइवहु बंधु वि होइ परु णिद्दइवहु देव ण देंति वरु।
ण हणइ भेसहु वि रुयापसरु वियलइ सुवण्णु पत्तउ वि करु।
णिद्दइवहु विहडइ घरिणि घरु ण करइ सणेहु[6] मायापियरु।
उज्जमु करेवि अप्पउ दमइ णिद्दइवहु किं सिरि सकमइ।

घत्ता—णहु लंघउ गिरि आसघउ ज जि करइ तं णिप्फलउ ॥
हयकाए किं ववसाएं सव्वहु दइवु जि अग्गलउ ॥ ५ ॥

6

इण चिंतमाणो अहं णिंद[1]माणो।
अरायं वहंतो अणग वहंतो।
पिउस्सोयहंतो[2] रमासायहंतो।
रईसूहवेणं सयासूहवेण।
जसेणं सियं जं[3] मुहेणं जियं[4] ज।

5 १ P णरणाहें अजुत्तु २ MBP अजवम्में ३ P णिदइयहु ४ MBP णिद्दइउ ५ MBP सुक्खइ ६ BP सिणेहु ७ MBP रज्जउ.

6 १ B णिद्माणो २ B °स्सायहुतो ३ MBPT सियज्ज ४ MBPT जियज्जं and gloss in T मुखेन कृत्वा जिताब्ज यद्यौवनम्

5 4 *a* चप्फलउ चपलम्

6 1 *a* इण एतत्पापम् 2 *a* अराय वैराग्यम् 3 *a* पिउस्सायहंतो पितर कथयन्, *b* रमासायहंतो लक्ष्मीस्वादहन्ता 4 *a* रईसूहवेण कामदेवोद्भवेन, *b* सयासूहवेण सर्वदा सर्वेषामभिलषणीयेन, 5 *a* जसेण सियज जशसा निर्मल यद्यौवनम्, *b* जिय जितम्

वयंसं समंतो	समेयं समंतो ।
पियं ओम्मयंतं	मणो सो वयंतं ।
फिडीयवक्के	येयासीणक्क़ं ।
सरेणं सवंतं	महावंसपत्तं ।
सयलीपियंतं	पुलिंदीपियालं ।
बिणिसंकुपोयं	विविसंकुपोयं ।
ससीपीयवासं	फणिंदारिवासं ।
महारि पसित्त	वणमीपरित्तं ।
पणजुंतपीलुं	पगलंतपीलुं ।
दुयातावसीयं	सया तावसीयं ।
पविसं पसत्थं	दयावयसत्थं ।
बिसुसंतयासं	पफुल्लंतयासं ।
सुसंतावयासं	विरिक्तावयासं ।

घत्ता—तहिं काणणि विपणकाणणि विहु महारउ पुरिपमहु ॥
वयपयम्मे समियकुसम्मे मोणयदु केरउ णाइ पहु ॥ ६ ॥

7

वसु तिरयगमणु मरेवावराणु वसु धम्मेमयणु महया धीमेणु ।
वसु दीमियरणु मह पणमंकरणु वसु मणत्तविंत मह सुणसरणु ।
वसु आयाविर मह आमाणु वसु पलेमिसिर दुइ मह तवचरणु ।

६ MBP मिलियकलरं T मवालियवरं मिलियवेयं ६ M °विसणं ७ T णुमणालं MBP [illegible]

7 १ MBPT महया धराणु २ P वम्मणणु ३ MBP वरोणु. ४ MBT णवचरणु ५ P वक्रिमित्र

6 [illegible] 8 [illegible] 10 [illegible] 11 [illegible] 12 [illegible] 14 [illegible] 15 [illegible] 16 [illegible] 17 [illegible]

7 [illegible]

जसु सयणु घराणि अह कट्ठु तिणु जो तणुमलधरु मणमलेण विणु ।
उववासु जासु अह जिणकहिउ परपिंडु जेण सुद्धउ गहिउ
तहु दुम्महवम्महणिम्महहो ि वाउ करेवि सयपहहो ।
सिरिसेणसुएण समिच्छियउ अणगारत्तणउ पडिच्छियउ ।
लुहु केसभारु आलुंचियउ लुहु करणावियारु वि खंचियउ ।
तामायउ पणवहु परमजइ महिहरु णामें खयराहिवइ ।

घत्ता—जंपाणहिं विविहविमाणहिं णिहिलु णहंगणु छाइयउ ॥
वेंभइएं णवपावइएं मुहुं णिव्वायवि जोइयउ ॥ ७ ॥

8

वड्ढउ णियाणु परिसिय जहिं कुलि रिद्धि होउ महु जम्मु तहिं ।
जइ अत्थि किं पि रिसिधम्मफलु तो होउ रज्जु विद्दवियखलु ।
ता तक्खणि णिग्गउ गिरिविवरे कालउ विसहरु तहु लग्गु करे ।
रुहिरुल्लउ धारहिं परिगलिउ धरणियलि कलेवरु रुलुघुलिउ ।
गुरुणा भवपासणासकरइं कहियाइं पंचपरमक्खरइं ।
असुथामु विसेणें झडत्ति हुउ गउ जीउ ईसिउवसमियरउ ।
अलयाउरि रायहु तणइ घरे उप्पण्णु मणोहराहि उयरे ।
सो एहु महाबलु भोयरसु णउ मुयइ तेण सणियाणवसु ।

घत्ता—मिच्छत्तें मणकुडिलत्तें अवरु णियाणणिबंधणेण ॥
जगु ताविउ आवइ पाविउ ण वणगयउल्लु वंधणेण ॥ ८ ॥

६ MB कट्ठतिणु ७ MBP मलहरु वि मलेण ८ P °मेणु सुएण ९ MBP तावायउ १० MP मुहु
११ MBK णिव्वाइवि

8 १ MBP परियलिउ २ P झडत्ति विसेण ३ P जीविउ इसिउवसमियरउ

11 णवपावइए नवप्रव्रजितेन जयवर्ममुनिना

8 6 *b* ईसिउवसमियरउ ईषदुपशमितरजा

9

पंचिंदियविसयहिं दुम्मइहिं पंचमिच्छमहामयमइहिं ।
मुयगइहिं कामिणि पेल्लियउ अप्पाणउं णरयमि घल्लियउ ।
पइं कामिणि सुविणाएहिं णविउ उप्पायवि सीहासणि थविउ ।
णिसि णिविड मणु णिवच्छियउ गुरु णाइं पुरिउ दुग्गंछियउ ।
सुपुत्तिउ णाइं मि णउ णवर मप्फुर चिंताऊरिउ णिवर ।
णिद्धउ णिमित्तु तं णउ णवर णागमणु गुहारउ णवि मइर ।
मणिरेल्लु जाहि पंडुमंदिराहो भमइ ण मणेतु रंधिवराहो ।
जा ण णवर सा परिथ्यवु सुपणु ता परिहउ सिविणउं सुइं मि मणु ।
अण्णु वि दर दुबी णयविरा पयहिं सो पहु माणु णिणर ।
परिवज्जइ पम्मु म मंति कव णिवसहिं होसइ तेलोक्कगुरु ।
संपायहि जाणवि सुरिउं सुइं पावेसइ मणु अणंतु सुइं ।
तं णिसुणिवि आयरमोहिरयउ णिपडिवयउ पुरम सहियउ ।
साहाविवि सुमरिवि णियवयणु णास्कोडवि धम्मविज्झइ णयणु ।

घत्ता—रिसि संसिवि वे वि धम्मसिवि अह संचलिउ मंतियउ ॥
पहु पणिमतु गुरु देसणअतु तच्चइ आयउ पोमरउ ॥ ९ ॥

10

तोवेयाहि माहणि णिम्मविउ पोयउ णमणारिंदिहि वरिउ ।
णियइ सा णहुंचिउ णिम्मयइ किं णिरियइ णं णं पंचवणइ ।
किं भणु णं णं परिपाडियमइ किं पाविय ण पहु पवसकर ।
एय आम कम्मिय विवेइयउ ता पुषु सेमीपु पयायउ ।

9 १ MBP णिच्चतणिमाहिं २ MBP सुरवरिहिं ३ P णिमिवउ वण ४ MBP सुरवरिय
५ MB णवणियउ ६ MBP णवणिम्माइ णमणु
10 १ MBP ण एणहिं २ MB णहुणिउ ३ MB णवरणइ ४ MBP णिरिय णियवइ
५ MBP वणीउ

9 1 [illegible] 9 [illegible] 15 [illegible]
[illegible]
10 1 [illegible] 2 [illegible] 5 [illegible]
[illegible]

उट्ठिवि आलिंगिउ णिववरेण तेण वि णिर्वु पणविउ णियसिरेण ।
पुणु भणिउ अउव्वु पसाउ किउ किंकरु हउं पर्रमुणणइहि णिउ ।
ता भणइ राउ णिसि लक्खियउ पइं जीवियव्वु महु रक्खियउ ।
मतें पउत्तु भो णउ रहमि पइं दिट्ठउ दंसणु हउं कहमि ।
र्चप्पियउ जेहिं ते जड कुगुरु जो पंकु तं जि दुग्गइविहुरु ।
जं जलु तं जिणवरिंदवयणु धोयउ मइं तुहुं सुविसुद्धतणु ।
हरिवीढारोहणु सुगइसुहुं पुणु कहइ संतु वियसंतमुहुं ।

घत्ता—मइं देसिउ चारणभासिउ देव कयाइ ण संचलइ ॥
सहु सासें एक्कें मासें आउ तुहारउ परिंगलइ ॥ १० ॥

11

ता भणइ महावलु रयविरमु कल्लाणमित्तु वंधउ परमु ।
तुहुं वप्प मज्झु दाहिणउ करु आलग्गणखंभु सुसतियरु ।
आर्सण्णमरणु किं तउ केरमि हउं एवहिं सणांसिण मरमि ।
इय जंपिवि मउलियकरयलहो पुरि अप्पिवि पुत्तहु अइवलहो ।
परियणसयणाइं खमाइयइं मुँणिभावणसुत्तइं भावियइं ।
तणुमणवयसिरइं वि मुडियइं इंदियइं खगिंदें दंडियइं ।
मलभरियइ चरियइं छंडियइं मायामिच्छत्तइ खंडियइं ।
णींसेसें परिग्गहु परिहरिवि अरहंतु भडारउ समरिवि ।
पच्छा घुलंतसाहारवणि थिउ सहससिहरि जिणवरभवणि ।

घत्ता—अहिसित्तइं सुर्द्धपवित्तइ जिणपडिबिंबइ पुज्जियइं ॥
हयभमरहिं चालियचमरहिं खयरकुमारहिं विज्जियइं ॥ ११ ॥

६ MBP णिउ ७ P परमुण्णइ णिहिउ ८ B चपियउ ९ B परियलइ

11 १ MBP आसण्णु मरणु २ MBP चरमि ३ MBP सणासणु करमि ४ M णियभावण° ५ MBP णीसेसु ६ MBP पुण्णपवित्तइ

6 *b* परमुण्णइहि णिउ परमोन्नतिं नीत 8 *b* दसणु स्वप्न

11 9 *b* सहससिहरि सहस्रशिखरे

12

कमकमलपरियमुक्कतणयहो   कम्मासिवसिपक्कतणयहो ।
तिपसिरविरइविविपयपहो   पारय पुत्र परमप्पयहो ।
तस्सिवत्त वरुण पीवीयें भूप   माया इच जवाणेम पूपे ।
हरिसिपता इव मंदामुहम   सरलवरसेणा इव सहम ।
कम्मपिहिवेला इव सरयविय   वेला इव हरिसियपोम्मविय ।
तवराइ व विविहकुसुमपरण   माइकम्मि व पउरवेरुरुय ।
धम्मा इव सितवीवसहिय   सुरसिहरि व चंदणमहमहिय ।
महुसर महिवि मिणाहिवर   वावीय विवव संभासगर ।
पाउम्मासरवविहि वेय कप   सुरमाणारंमे मार्वे गप ।

घत्ता—ईसाणइ सोम्मविमाणइ सिरिपहि सिरिक्माविमिमरु ॥
विपकम्मेँ विउ विममम्मे जणमेवेण भमरु भमरु ॥ १२ ॥

13

मणिमइ सुमरुतपंतविवरु   पवरावसंयपवि मंपुसविकरु ।
वो मरिवि महापघु विपसउले   मं विरुयुंउ मममपरवे ।
हुउ वेउ विघु मकिंपयरउ   मौसिरंगु जाम मं कुसुमवरु ।
वेगमियसवलपसुरावलिय   तवंपीपवेप मोहावलिय ।
विहिं पविपरि पंथिम सुरवलिय   विउ तगु सिव वोम्मवेसिरि वविर

12. १ MBP णीमियमुक्को २ MBP चमाइणमुक्को T मुख पुरी पुरुष. ३ MB °मम्मउं
४ K omits this line ५ MBP पम्म ६ MBP वमिय मिमाणउ

13 १ MBPK °वमण° २ P मिअयुउ ३ MBP तमिसंपमाह ४ MBP वमोवसरि°
५ P वोम्मयु

12 8 b मा मा इ ए चमांग पु च पुरी पुरुष 6 °उ इ पवि 7 a च मा इ ए प्रममरवसुरी
सारवलीम विरुद्धिम् 8 a मयूरइ वर विमाणी

13 1 a °पंघमिकर मन्यमिमो 4 b व च वान वै च मो उ च मिन पुममीहिलितम्यरिप
6 a पुरंच मिन सुरमिवा

लइ पुण्णविसेसें सावँडिउ   पाएं सहुं णेउरु तहु घडिउ।
हत्थें सहुं कंकणु मणिजडिउ   सीसें सहुं मउडु वि पाँयडिउं।
मउडें सहुं कुसुममाल चडियं   कंठें सहुं सियहारावलिय।
वच्छें सहुं बंभसुत्तु विमलु   सहु कडियलेण कडिसुत्तु चलु।
तहु जम्मविलासपयासणउ   सहजायउ णिवसणभूसणउं।
णयणहिं सहु अँणमिसपेच्छणउ   लायण्णु भणमि किं तहु तणउं।
घत्ता—णउ रोमइं अट्ठियचम्मइं ण छिरँउ णउ मुहि मीसियउ
घणघंडिमहि कंचणपडिमहि संणिहु देहुँ पयासियउ ॥ १३ ॥

14

छुहु देउ णिसण्णउ गब्भहरे   णियदिट्ठि देंतु णियबाहुसिरे।
ता दुंदुहि वज्जिय गहिरसर   धाइय जयजय पभँणंत सुर।
वरिसिय कप्पयरु कुसुमवरिसु   अमरगणगणु णच्चिउ सरसु।
एए के को हं कवणु घरु   अवलोयइ णियउरु पाँउ करु।
सुत्तुट्ठिउ जिह जा संभरइ   ताँ अवहि तासु मणि वित्थरइ।
बुज्झिउ सइंबुद्धहु संचरिउ   संणासु वि जं णरभवि चरिउ।
उट्ठिउ सीहाँसणि संणिहिउ   देवँहिं अहिसेउ तासु विहिउ।
जिणु कामकसायविवज्जियउ   तेण वि परमेसरु पुज्जियउ।
उँरपेल्लियपीणपयोहरँह   चालीससयइं पवरच्छरहं।
णक्खत्तकंतिसकासणह   महएविसयंपहकणयपह।
चिरभवपरिपालियसुद्धवय   कणयलय सुहासिणि विज्जुलय।
सो एयहिं सहु सुंहु तहिं वसइ   एक्कें पक्खेण समूससइ।
घत्ता—सुहसाउ पर्उ परमाउ जलहिमाणवित्थँरिएण ॥
सो जीवइ एक्कँसु जेमइ वरिससहासें भरियएण ॥ १४ ॥

६ M सपडउ, BP सपडिउ ७ B पायपउ ८ MBP add after this कण्णें सहु कुंडलु विप्फुरिउ, ९ MBP चलिय १० MBP आणिमिस° ११ MBP सिरउ १२ T घणणिविड १३ MB देउ

14 १ P पभणति २ MP सरिसु ३ MBP पाय ४ MBP तो ५ P सिंहासणि ६ MB देविहिं. ७ M घरि, BP उरि ८ P °हरिह ९ M विज्जुलिय १० MBP सहु तहिं ११ MB थिरु, P थियउ १२ MBP °वित्थरियएण १३ M एक्कुसु

14 10 *a* सकासणह सदृशनखा 14 एकसु एकवारम्

15

सो एयवि सत्त समुप्पिणउ छत्तकारि ण केण विसप्पिणउ ।
तहु पहुपुत्तासंसि वमिय भागुरपीयपीवरपणिय ।
कालेण विरत्तम मयहरिय अण्णेक्क सप्पय मणमरिय ।
तहि आहरणइ कामेण रस्सु तहि तिहुत्तियणतपि णियसयस्सु ।
तहि णाहिदेवि पहिरत्तवउ तहि मरुदेवाइ कुलिकत्तवउ ।
तहि पयहुवगइ कलिकत्तवउ तेण वि संणिहियई सप्पयइं ।
मंदरकंदरि कीमिलपरे कुलकम्मसमविहुराणिवरे ।
तहि तणुपविवारें पय दिवस तहु कठिसंगहु परमणयस ।

घत्ता—भरहाहिव णिज्झुणि महाविव रिसिर्हिं पुराणहिं वज्जरिय ।
गयकलमल भरमसपालर पुप्फयंतपहसंभरियं ॥ १५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महाकुलपिसंभवो कुलियंगुप्पत्ती णाम
एक्कवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २१ ॥

॥ संधि ॥ २१ ॥

15. १ B नमिपिणउ २ MBP °पुत्तासंसि वमिय ३ Tp विरत्त ४ MB पुराण, P पुराणि. ५ MBP वमरिय T वमरए ६ MBP °समरिय, T संमरए. ७ MBPK [illegible].

15 1 a समुप्पिणउ समुत्पिन्न: सप्त। 2 a पहुपुत्तासंसि [illegible] मरुदेव्या [illegible] कर्तिता 9 10 भरहाहिवेत्यादि—गौतमस्वामी श्रेणिकं कथयति। हे भरताधिप श्रेणिक निशृणु [illegible]। पूर्वोक्ते [illegible] [illegible] [illegible] पुराणानि [illegible] कथयति। [illegible] [illegible] (?) [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] पुष्पदन्तस्य [illegible] [illegible] वा [illegible] पुण्यानि वा। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कुलिंगप्पत्ती इति भरताधिप निशृणु। [illegible] पुराणं [illegible] [illegible] पुष्प [illegible] [illegible] पुष्पदन्ताभि [illegible] इति।

XXII

सज्जणमणसंतावियइं खलतुहयारणाइं दुप्पेच्छइं ॥
दिट्ठइं दुक्खियदुमहदलइं ललियंगेण मरणणेवच्छइं ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुक्खक्खयकालें पडिपेल्लिउ   दिट्ठउ कुसुमदामु ओहल्लिउ ।
मउ देवगवत्थु दरमइलिउ   दिट्ठउ अगु किं पि मलकलिउ ।
परिवड्डिउ मोएसु विगयउ   आहरणोहु दिट्ठु णित्तेयउ ।
परियणु सोयविरसु जपंतउ   दिट्ठउ सुरतरुवणु कंपंतउ ।
मोहियमणु माणिणिउ णिरिक्खइ   जा सो माणसदुक्खें सुक्खइ ।
ता तियसगुरु को वि तहिं भासइ   णियइणिओएं सग्गु वि णासइ ।
भो ललियंग पमेल्लहि भयजरु   तिहुयणि णत्थि को वि अजरामरु ।
सुरवरहिं जं सच्छु सिट्ठउ   जगु सेवाहलु पलु जि दिट्ठउ ।
त जिणपायपोमु सब्भावें   जेण विमुच्चहि भवकयपावें ।
दुल्लेसाइ णरत्तणहाणिहि   मा पडिहोंति वण्ण मूगंजोणिहि ।
संसारंघिवमूलुम्मूलइं   मा होंहिंति दूरि वतसीलइं ।

घत्ता—जायइं पुणु वि पणट्ठाइं रंगणडा इव भावविचित्तइं ॥
मेल्लिवि सासयसिद्धिसिरि दुलहाइं णउ होंति मुरत्तइं ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza –

मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना
मृगपतिनादरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम् ।
निर्मलतरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा
भारतमातृ सास्तु देवी तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

GK do not give it

1 १ MB °दाम २ MB °वत्थ ३ MBP दरमालियउ ४ MBP °कलियउ ५ M परि-यट्टिय, B परिवाट्टिय ६ P दुक्खइ ७ MBP को वि णत्थि ८ M सुम्वरहिं, BP सुमरहि ९ MBP जेण जि मुच्चहि भवभयपावें १० MBPT मिग° ११ MBP मा हो होंति १२ MBP वयसीलइ; K मयसीलइ १३ MB सासयरिद्धि

1 2 °णेवच्छइं चिह्नानि 3 *b* ओहल्लिउ म्लानम् 4 *a* दर° ईषत् 8 *b* णियइणिओएं भवितव्यतासंसर्गेण.

2

ता सहियंचें तं आयण्णिवि वारवार णियहियवइ मण्णिवि ।
सिविणइं भासवि सुहवित्थरणउ जंपइ पत्ते परमसुहंकरें ।
कुवलयहिं कुवलयमयसारउ कुंभहिं कुंभसत्थु सुहकारउ ।
सेंदूरहिं हरिविक्कमधम्मह मंदारहिं दाणसाविस्मोह ।
बीसंतहिं बसिलु णियविमाणु सुहिवाहिं रिसिसमूहपरिमाणु ।
सिरिएहिं तिजगपतिकउ जो कामिउ सूरहिं ण मेरुहु मेरु ण्हाविउ ।
चंदुएहिं चंदविइंसणु णक्खहिं णेवउककेवककंसणु ।
पयसासेहिं सीलपरिसासिकयणु चंदणेहिं पसमियणिवंचणु ।
पुण्णंहरेहिं णिहीहरवावउ दीवएहिं तेल्लोक्कहु दीवउ ।
मालहिं मालइवामहिउ जिणु पुज्जिपइं तव दूंपावहु । 10
मच्छुयकप्पाविआगउ आरवि णोरंकसवि आवइ आरवि ।
वीविउ सुहउ जाणि सक्किणीं अंगु जिसीयउं पुण्णविसेसें ।

घत्ता—जंबूदीवहु मंडविण मणुपरजाणि विवित्तपसुहयारवि ॥
मेरुहिं पुण्णविसेसहिं पिय णाम पुण्णजणय सुसमोरवि ॥ २ ॥

3

कुराहिंदविंदवंदणसहु अप्पमाणोह णाम तहिं णाहु ।
साहुवरणु जेणु मंदणाणि जउ अंदंति जाहिं मि दीसइ जाणि ।
जेणु खेव णिवंपणोवकुज पहाणणु एक्कु मि करहाउ ।

---

2 १ MBP °सिलफर २ M पह B पट. ३ BP °सुहमर. ४ MBP सिरएहिं ५ P °णिमगु ६ PT णाससिहि ७ P मेसहि मेसहिं ८ MPK चंदणसिहरवणु ९ MB वणिकव°, P वणिक° T णवाक° १० P °सुमणिय° ११ सूहमेहिं १२ P पुजिय १३ MBP पुजाप्तु १४ MBPK °णिलें T °णिले.
3 १ M वणु भेदु २ MB वाणें णमु ३ T वासुवलवीलाल

---

2. 4 *b* णाणुसर° सकलमणिकाम 5 णारदहिं अतिसुवर्ग 7 *b* जनवककेवककंसणु अवनिवासिहि विशालस्त्रराजाको केवल केवलवाणी वरस 8 मकरालहि वहि, *b* °सिधदहु सिवाजनम् 10 णाणदण° अवलितिकिवि. 12 *b* पुण्णविदेसें पुण्णविसेसेण
3 2 साहुवरणु सामासमूहकरणम् 5 सिवदणेणपाल सिनेन अव्याः; *b* कदहुणवतडि.

करि कंकणु बंधणु पइ णेउरु अण्णु ण जेत्थु अत्थि दुक्खाउरु ।
खलु तेल्लियहरि णिरु णिण्णेहउ अण्णु सव्वु जहिं सुयणु सणेहउ ।
वाहि लिहिय भित्तिहि चित्तयरें दीसइ तणुहि ण णरवरणियरें ।
सरसंधाणु जेत्थु वायरणइ णउ पर्यक्कभीमि रायरणइ ।
जहिं हयवरु हरि णउ णारीयणु वंसु जि छिद्दसहिउ णउ पुरयणु ।
कुणडि रसक्खउ णउ विवणीवहि अंसिहि अपेउ वारि णउ सरिदहि ।
अंजणु णयणि जेत्थु ण तवोहणि णायभंगु गारुडि ण घणज्जणि ।
संकरु पहु ण वण्णविहिसंकरु दोहउ गोवालु जि णउ किंकरु ।
जहिं कुंजरु भण्णइ मायंगउ णउ माणवु कइ वि मायं गउ ।

घत्ता—जणु कलहं सहुं सज्जणेण ण करइ को वि ण विप्पिउ भासइ ॥
जहिं कलहंसहं गइपसरु पंगणि पंगणि वावहि दीसइ ॥ ३ ॥

4

वज्जबाहु णामें तहिं णरवइ रिद्धिइ जेण परिज्जिउ सुरवइ ।
जासु कित्ति गय दसहिं दियतहिं आरूढी वरदिक्करिदंतहिं ।
जासु खग्गु वेरंतु वियंभिउ जासु रज्जु ण परेहिं णिसुंभिउ ।
जासु कोसु चाएण पवित्तिउ जेण तिजगु सुकुडंबु वि चिंतिउ ।
जेण गोत्तु धम्मेणुज्जोइउ जेण चित्तु जिणपयजुइ ढोइउ ।
पेम्मसासवासालवसुंधरि तासु देवि णामेण वसुंधरि ।
सग्गहु गब्भवासि अवयरियउ णवमासहिं उयरहु णीसरियउ ।
ताहि तेण जणियउ ललियगउ णंदणु णं णरवेसु अणगउ ।

४ M पउ, B पए ५ P अत्थि जेत्थु ६ MBP तेल्लियगिहि ७ B णरवइणियरें ८ MB परचक्कभीमराय-रणइ, P परयक्कें भीम° ९ MB आसि अप्पेउ १० MBP माणउ कया वि ११ MBP मदिरपगणवाविहि
4 १ MBP परज्जिउ २ MBP दिसहिं ३ MB खग्गि धीरत्तु ४ MB पवत्तिउ ५ MBP सकुडुंबु व ६ MBP तहु वाल्लह महएवि वसुधरि

7 *a* सरसधाणु स्वरसधि , पक्षे, शरसधानम्, वायरणइ व्याकरणे 8 *a* हयवरु अश्ववर , हतो वरो यस्य नारीगणस्य, *b* छिद्द° छिद्र दोषश्च 9 *a* कुणडि कुत्सितनटे, विवणीवहि अट्टमार्गे 10 *a* अजणु अञ्जनं पाप च, *b* णायभगु सर्पभङ्गो न्यायभङ्गश्च 11 *a* सकरुपहु प्रभुरेव सुखकारी शकरो न तु वर्णसकर, *b* दोहउ गोदोहक , द्विधव स्वामिद्वययुक्त 12 *b* मायगउ माया गत . 13 कलह सकण्टकम्.
4 6 *a* पेम्मेत्यादि—स्नेहधान्यस्य वर्षयुक्ता भूमि

कुडिलहिं कसहिं तमोहगसहिं पासहिं कंपहिं दीहरमेहहिं ।
किसमज्झेण धारमुपसुवरें बिवहिं करिपयेण बच्छयलें ।
मत्तें णाहि सर गंभीरें उच्चा सीसें छत्तायारें ।
कामसयणहिं सकोमलहत्थहिं भमरहिं मि कंकणकहिं पसत्थहिं ।

घत्ता—छप्पायपुंजु व पुंजियउ पजडहि विहिणा मयणविहायउ ॥
पवरंगियकरचरणयरु कमलंधु सकोमलकायउ ॥ ४ ॥

5

सो कुमारु तहिं पहुहुं आयउं पयरीसायसफलु ता तायउं ।
चयइ णरयंपइ पियपियछाडस हा ण सुहासि मज्झु सर मायस ।
हा हे सम्पसोय पिच्चमयउ पिउ बाहण विरम्मासु आयउ ।
हा कप्पदुम किं फिर फुलहि परमरणे वि वहु वो दुलहि ।
हा तुंबई गारवउं पयुगर रमणें पिउ महु किं पि ण दयर ।
हा सेसिपंगलेपु कहिं पेच्छमि हा हे सांवि देव कहिं मच्छमि ।
को धारइ मणिपन्नु हेमंतउ दइ देवहु वि कम्मु बलवंतउ ।
एम्व भणंति पिसुकुप्पमाहिय दरपम्मे सुरेण संबोहिय ।
णायसयपिवि व मेरुदक्खी मेरुसेणहु मेरुदक्खी ।
णय सगमयसहुपसाविणहरि मुरय सरहरिविंदु धाविवि सिरि ।
पुप्फविहेहिं वहिं जि सवमरुसर पयहिं पुंडरिविमाणि पुंडरमर ।

घत्ता—जहिं परमिहरि पवंतपण परसिहरेयरि किंपेहि विमंडिउ ॥
पणजककणवप्पोणपण तुमिपि मेहु मरूरें चुंबिउ ॥ ५ ॥

७ MB वज्जुणपत्तहिं P कमकमतहिं ८ MBP णीहरमेहहिं ९ MBP तुरें १ MBP कम्मपयहिं
5 १ P हुवर. २ MBP णमिउ हेउ ३ MBT ककि and gloss in T कहि ४ MBP मणंतर ५ P वहि. ६ MB णहि. ७ M मयर. MB वहि. ९ P विवहि

11 a णवें णाहेम 13 a वकवसिहा दव अनुणिकण
5 1 b णवOणायवपि देवसुहिणवमत्ते 6 b हाहि णाविम. 9 a मेरुदक्खी मेरुपरवहीं b मेरुदक्खी लोपरकीच 10 a "हउला" पुरिहिम b णOरहिंदु स्यहरिम्मिन्नलम मिम्मड 12 पिमपिह मिन

6

णिवेसेण रम्मा णहालग्गहम्मा ।
मुणिंदेहिं सोम्मा जिणुद्दिट्ठधम्मा ।
धणेणं समिद्धा जसेणं पसिद्धा ।
सुएणं पवुद्धा वएणं विसुद्धा ।
घणारामवती विसाला वसंती ।
सुपायारदुग्गा कयाणेयमग्गा ।
अणेयादुवारा अणेयप्पयारा ।
जणेणं महत्था कएणं कयत्था ।
भएण विमुक्का सया जा णिरिक्का ।
इमीए पुरीए अमेओ सिरीए ।
महेणं महंतो गुणी वज्जदंतो
पहू चक्कवट्टी सुमग्गाणुवट्टी ।
कयंतो व्व दंडी सई तस्स चंडी ।

घत्ता—लच्छि व सोहइ लच्छिमइ तासु विउलि वच्छयलि विलग्गी ॥
झत्ति असंकें कुद्धएण मुक्की भल्लि व हियवइ लग्गी ॥ ६ ॥

7

अरिहरिणोहवियारणवाहहु तहि सुंदरिहि तासु णरणाहहु ।
सिरि व सिरिप्पहसुरहरवासिणि चविवि सयंपहतियसविलासिणि ।
सिरिमइ णामें तणुरुह हूई णाइ कुमारहं कामविसूइ ।
पाय सकुंकुम किं तहि वण्णमि वम्महमुद्दावेसु व मण्णमि ।

6 १ P जिणोदिट्ठ° २ B omits this foot ३ MP विवुद्धा ४ MBP add after this गुणाण पवित्ती ५ MBP add after this महातेयवती ६ MBP सपायार° ७ MBP अणेयद्दुवारा ८ B रएण ९ P इमेया सिरीए
7 १ B °वाहहु

6 1 *a* णिवेसेण रचनया 9 *b* णिरिक्का चोररहिता 11 *a* महेणप्रतापेन 13 *b* चंडी भार्या
7 2 *a* सिरिप्पहसुरहर° श्रीप्रभविमानम् 4 *b* °मुद्दावेसु °मुद्रावतार

तेयइ पोमरायमणिसोहइं रयणइं किं रायंति ण वण्णइं ।
पेच्छिवि तरुणिसमुहसयणाइं मुणि वि करंति मयणसंधाणइं ।
फलिहालियपासियमंतरि थुउ कासु ण जणइ चप्प मणोरुहु ।
कासु ण चित्ताहिउ कंचणकलसु सोवीर्गंधवलणि ण गुरुयत्तणु ।
मरगयपहपच्चाइयमाणसि रामावलि तरलइ हियमावलि ।
णाहिकुंड रयणरससारसु तिवलितरंगु वयणंमयपासु ।
पयोहरुहुँ पियथणसुहयहु मयरहँ भासइ विसेस विसयहु ।
वम्महभूमि जासु देवी कह तासु वि कामउं पिउ सुसुयरु ।

घत्ता—पोम्मीतिपिंडसमागमहो केरछु को ण होइ वच्छीठिउ ।
सुरवरु सुणाहि सिवरम्म सुहसुबन्धसिरिविदय परिट्ठिउ ॥ ७ ॥

8

वेरुवन्नाइं णयणाइं कवरायउ रयउ पहावन्तु वगु जावइ ।
कासु ण हियउ फिट्ट सुरतणु मरइहयरुव्वें वंकडसु ।
अंगोवंगपवमुल्लवाइं कसैपासु पासु ण पयंचिवइ ।
जाहि रूव सुरगुण ण वियाणइ ता वण्णउं परिणवइ वि ण सकइ ।
सा जासच्चार मसकिनयेती सिरिपियरि सत्तमभूमिहि सुती ।
णिसि ससहरकरपडिमिलण वेती साअम्ह अंगाविडास वइंती ।
मणहरवसु असरइ जिणु जायउ कहिं वि पे मायउ देवणिकायउ ।
वीणावंसमउत्तविलसिरहिं णाणापोयविसडुसरहिं ।
ता उद्विय वज्झपडु महमारउ वियलिय वण्णाइं विहुमारउ ।

---

१ MK तिमतिरषु २ MBPK पोमीलसरो य ४ MK सुरवणु ५ M reads this line as. मयरहें भासइ विसेस विसयहु, पयपहुँ पियथणसुहयहु ६ P सिव MB पोमीतिपिंड°; P पोमीतिपिंड°

8. १ MP विदुवन्नाइं रयणाइं, B विरवन्नाइं रयणाइं २ M हियउ. ३ MBK वेरणय. ४ MBP सुरपुर मि ण जाणइ ५ B वसहरु ६ P °विलसिरहिं B सुरसरहिं

---

6 b पदपदमाणदक्रमसंकला 7 b °अंगुण वन्धुरु 8 a कनकितपु मनसाभिलषितं, 10 a रद वहइरवें कामरव 11 a मिचेनमिवतपु निरीक्ष निरत्ने नमति

8. 6 a मनदें प्रापु

घत्ता—सुर जोयंतिहि ताहि तहिं जम्मावरणइ खणि ओसरियइं ॥
सग्गभवंतरु संभरिवि थक्कइं मणि ललियंगहु चरियइं ॥ ८ ॥

9

हा ललियंग देव पभणंती पडिय स महियलि तणु विहुणंती ।
मुच्छिय सिंचिय सलिलणिवाएं आसासिय चलचामरवाएं ।
उट्ठिय णीससंति अइरीणी दइयविओगवेयविद्दाणी ।
वम्महु अट्ठ वि अंगइं तावइ धित्त जलइ जलइ जणियावइ ।
मलयाणिलु पलयाणलु भावइ भूसणु सणु करि बद्धउ णावइ ।
जहिं संजायउ चित्तु जि सयदलु तहिं किं किज्जइ सीयलु सयदलु ।
ण्हाणु सोयण्हाणु व णउ रुच्चइ वसणु वसणसंणिहु सा सुच्चइ ।
असुहारु व आहारु ण गेण्हइ णंदणवणु पिउवणसमु मण्णइ ।
फुल्लु णयणफुल्लु व असुहावउ तंबोलु वि बोलु व कयतावउ ।
पुरु जमपुरु व घरु वि अरइयरउ परहुयलविउ महुरु णं महुरउ ।
गेयसरु वि णं रिउमुक्कउ सरु सवलहणउं सवलहणु व दिहिहरु ।
चंदणु इंधणु विरहहुयासहु ता सहीहिं विण्णविउ महीसहु ।

घत्ता—आवेप्पिणु लच्छीमइइ सह सपियाइ पईहरवाहें ॥
पियसुमरणदुहदुम्मणिय दुहिय णिहालिय णरवरणाहें ॥ ९ ॥

८ M पुव्वभवतरु.

9 १ MBP पडिय महीयलि २ MBP °णिहाए ३ MBP उट्ठी. ४ MBPK °विओय°. ५ MBP अट्ठइ अगइ ६ BP पुलयाणिलु ७ MBP परहुय°. ८ MBP विरहु ९ M सहीइ.

9 2 *a* णिवाए °निपातेन 3 *b* दइयेत्यादि– दयितेन प्रियेण सह वियोगस्तस्य वेग आवेशः वेदोऽनुभवो वा, तेन विदीर्णा. 5 सणु शणबन्धनम् 6 *a* सयदलु शतखण्डम्, *b* सयदलु कमलम् 7 *b* वसणु वस्त्रम्, वसण° व्यसन दुःखम्. 8 *a* असुहारु प्राणहारक 10 *a* अरइयरउ अरतिकरम् 11 *b* सवलहणउ समालम्भन चन्दनादि, सवलहणु स्वबलघातक मृतकस्नान वा 13 सपियाइ स्वप्रियया, पईहरवाहें प्रदीर्घवाष्पेण.

10

सुरवेरि सुन्दर पुप्फियउ वणु किं जाणहुँ सुय किंपय किं वणु।
इय परिणामपवित्ति वियप्पिवि पंचिवमहारि पुरि समप्पिवि।
मड मरणीसु णिवेसु जावहिं पहरणगणमणभाविण तावहिं।
भीसण घोरि मि करिय भवेप्पिणु देव दव णिसुणहिं मण देप्पिणु।
असरणसु कम्मणव केवलु णाणहणाठहि णउ णिरमोल्लु।
ता रायं सीहासणु मल्लिवि सिरकमलेण महीयलु पेल्लिवि।
भणिउ णवहि अणंतमहारउ जय संसारमहण्णवतारउ।
णवहि तिसद्धपेल्लिविगयरूव सविणयमत्तुयमणोरहपूरय।

घत्ता—तिमिरु हणंतु करंतु दिहि जणसमवंतहु विपक्खियगयहो॥
तहुमामियउ दिवसयरु पाणविसेसु ण सोहइ मज्झहो॥ १ ॥

11

ईसाणगिरिसिहिविसियारवि कम्मतावसंकिआरवि वारवि।
कुसुमिहरसु कयमयणमणिरसु मालेविण सविसिवपसुपणिवसु।
समवसरणु मउ देवें सहियउ अण्णु वि जो पहर सो सविणउ।
रिद्धु असोयहु मुक्कि असोयउ कुसुमंजरि हरपोमसायउ।
दिव्वहाणि सुणि णिज्झायेसरु भमउ भपारिमीहि संदिय वर।
चक्कणामउ णियोमरवोमिउ मायंडमउमेरुवीरिउ।
दुंदुहिरव दुरियखणिवारणु भीमसाह संसारणारणु।
छत्तसमासिउ छत्तविणायरु भतिपणउ संपुयतिणायरु।

10 १ MBP सुरविउ २ MBP णियणमि ३ MBP °णमहि ४ MBP णवीणि ५ MBP सिम्मप्प ६ MBP ण कमविणउ
11 १ P णियामउ, २ P सुरहि° ३ MBP सुरसर°, T सुरीर°

11 1 b °ताम° [illegible] 2 a सुक्किवदएसु [illegible] 3 b [illegible] 4 b [illegible] 5 b [illegible] 6 b [illegible] 7 a दुंदुहिरव° दुरि [illegible] 8 a [illegible] b [illegible] °सिद्धाणव° [illegible]

कमलासणु केसउ जगि सो हरु तित्थणाहु णामेण जसोहरु ।
देउ अणिंदिउ वंदिउ भावें वड्ढंतेण विसुद्धें भावें ।
अवहिणाणु राएं उप्पाइउ रूवि दव्वु णीसेसु वि वेइउ ।

घत्ता—विद्धउ कणयरसेण जिह लोहु वि हेमत्तणु पडिवज्जइ ॥
तिह जिणभावें भावियहो भवियहु णाणभाउ संपज्जइ ॥ ११ ॥

12

पहु गुरु वंदिवि आयउ गेहहु तित्ति ण पुण्णी पुत्ति सणेहहु ।
आलिंगिवि अंके वइसारिय सा तप्पंति तेण विणिवारिय ।
चवइ णिवइ ण्विरु पइ जाणंतउ अच्छइ सुरवरिंदु हउ होंतउ ।
बीयइ कप्पि विमाणि णिवासिणि तुहु ललियंगहु तणिय विलासिणि ।
महुरालाविणि पाणपियारी एवहिं हूई धूव महारी ।
मा झिज्जहि सो तुज्झु मिलेसइ हारु व उररुहजुयलि घुलेसइ ।
बोलहि मइ बोलइ पच्छाइय पुणु वि धाइ पहुणा सकेइय ।
दुत्थिउ जडयणु कूरसरावहु गोगाइहि घरु खरहु सरावहु ।
उल्हाविय विओयसंतावहु णवजोव्वणु जणु कामालावहु ।
विवुहहु वुहु गोवालु वि गोवहु महिलहि महिल जाइ सब्भावहु ।
णिवेण कहिवि दिट्ठलकहाणउ पुणु दिग्विजयहु दिण्णु पयाणउ ।

घत्ता—आउंचियतणु थरहरिउ फणिवइ भीयउ किं पि ण जंपइ ॥
हयगयरहणरपयदलिय जंतें राएं मेइणि कंपइ ॥ १२ ॥

४ MBP उप्पायउ ५ MB दिव्वु.

12 १ MBP विलासिणि २ MBP °लाविणि. ३ MB बालं एम बोलइ ४ MP जडयण ५ B उल्हाविय°.

13 भणिमहु मध्यस्य

12. 8 b गरावहु सानन्दस्य

13

तरछमममाछताछमाणीममि गाइ णरिंदि पंचकंकेल्लीयणि ।
फलिहसिलायलम्मि मासीणी परमजिणपयसंभरणें झीणी ।
सुरवइ महारहाउ संचालिवि कोमलकरकमलें तणु धालिवि ।
पभणइ विणि करपिहियकणोली पेढ्मकदवियुधिवणिसुरणी ।
ववरुपहेंडीकंदलसोमाली कंचुईए णीसरिअण णाली ।
पुणि पुणि मोज्झण छंडहि पुणि पुणि तणु तणुरुप मंडहि ।
पुणि पुणि किं मप्पाउ दंडहि पव्वणीहि दंतमाहि खंडहि ।
मासहि गुरुयु कार्ड किर रक्खहि मग्गु वि किं जिणमग्गु ण लक्खहि ।

घत्ता—तं आयण्णिवि रायसुय पीसखंति जिणजम्मु पयासइ ॥
भरमि ण वेडिहि मग्गु तुहुं जाणवि माए तुह कार्ड ण सीसइ ॥ ११ ॥

14

णासीरसंदि मेरुपुण्णिकार पुण्णविसेहि वेसि णमिठर ।
मूपगोयं किह कंमपविवरउ पारविगार्ड जरिय णणरिखउ ।
गोरउ णो तवसि णसिहु ण करिसनजायउ णो ढुकरिहु ण ।
पविडरुवणु वि ण जो बसंकुडु जो हलहर वि मुणावि ण मामिड मढु ।
जो करि ण्ण णरयारोवणकर णहुयंकणु णं णरकामिविकर ।
कप्पुससु ण मिहिवमणारउ जिणवारयपिवाउ णं सेवारउ ।
णाणवत्तु णामें तहिं वविणउ सुपरवणुछिपाहि णडहु णर ।

13 १ MP तहिं कंकेल्लिणि, B तहिं किंकेल्लिणि २ MBP °कणोलीयं° ३ MBP णाणणी.
४ MBP णुहि

14. १ MB णमर, P णाएं° २ T मूढगाह. ३ MB तवसिंह

13 1 a तरल° दीर्घो 5 b कंचुईए कंचुलिका मध्ये. 8 a मासहि मासान्
14 2 a मूढगार्ड मूढगाधा जातिम् 3 a गोरउ गौरवात्र पदे गौ वाणी तस्याः रविण-
वाली मत्त्वा, b करिस° कर्षक पदे हस्तिपक ; जह रिहु हस्तिपालक 4 a °णहु बलमदबुषम्
5 b णहुयंकणु णहुयमध्य पदे णहुयवर्णकथन 6 b जिणपद° जिनपदे, पदे जिनाज्ञा, सेवारउ
सेवक 7 b सुपरवणुछिपाहि सुरवर पूर्ववत्.

णंदुं णदिमित्तु वि सुउ जायउ णंदिसेणु तहि गब्भि समायउ ।
पुणु मायइ मणमोहणु लद्धउ धरसेणु विजयसेणु थणद्धउ ।

घत्ता—सिरिवह सिरिहर वणितणय अवर वि हउ तिज्जी लहुयारी ॥
णामें णिण्णामिणि विसम दालिद्दिणि जणविप्पियगारी ॥ १४ ॥

15

अम्हारउ घरु मोक्खु विसेसइ णिक्कलसउ णीरजणु दीसइ ।
णिद्धणु ण घणणासि णहगणु णिक्कणु तोलीरु व सारियरणु ।
णीरसु कव्वु व कुकइहि केरउ तं[2] जिह तिह पुणु णिरलंकारउ ।
अट्ठभाउ हंडइं दो पियरइ कयखलचणयमुट्ठिआहारइं ।
कडियलवेढियवक्कलवासइ हडहडफुट्टफरुससिरकेसइ ।
अम्हइं दहजणाइं तहिं सयणइं कलहतइ भासियदुव्वयणइं ।
पंडुरपविरलदीहरदंतइं जावच्छहुं परकम्मु करतइं ।
वारणचरियहु तरुसंछण्णहु तावेक्कहिं दिणि हउ गय[3] रण्णहु ।
तहिं अंबरतिलयम्मि महीहरि विहरंतियइ गहीरदरीहरि ।
सरलहरियपत्तहु तविरयहु मइं उच्चोलि भरिय माहुरयहु ।
अण्णु वि दारुभारु गरुयारउ सीसि णिहिउ णं दुक्खहं भारउ ।

घत्ता—जा पल्लट्टमि णियघरहो ताम लोउ मइं पंतु पलोइउ ॥
रयणालंकारहिं विप्फुरिउ जिणु वंदहुं णं सुरयणु आइउ ॥ १५ ॥

16

ता कट्ठभारु णं दुक्खभारु ।
महियालि घिवेवि णारु मइं णवेवि ।

---

४ M णंदि णदिमित्तु वि सुउ जायउ, B णदिमित्तु णदि वि सुउ जायउ, P णंदि णंदीमित्तु वि सजायउ ५ MBPK धरसेणु ६ P जणविप्पिय° but adds °मण° in the margin between जण and विप्पिय

15 १ MBPK तोणीरु २ M ज जिह ३ MK गउ ४ MBP तहिं पुणु अंबरतिलयमहीहरि ५ MB सरलु ६ M भरय ७ MBPK दुक्किय° ८ MBP फुरिउ ९ M सुरयणु आइउ, P सुरयणु चल्लिउ

---

15. 1 *b* णिक्कलसउ घटरहितम्, अन्यत्र, निष्कलाना चरितमनुष्ठान प्रशस्तिर्वा.

पुंषिकाउ हय कहिं वढिउ सेउ।
ता तेण वुत्तु सुविगुरुणिगुरु।
सिवत्यणासु मा विरवासु।
जो सुवसत्तु मेलवरिपसत्तु।
जो सुवणिवासु सुमभणि णिवासु।
सुवमाहणासु वम्मलणासु।
जो पोउवेसु वम्मदिसेसु।
गयसरिम्माकि जो सिसिरयाकि।
णरि सपयसारं जो सुमवसारं।
तिसुणयवेदि णरसाइवेदि।
रविपर विसहर जोएव सहरं।
जो सुमिसलंकु दपपरमलंकु।
तसु पंपि वासु पिहिवासवासु।
पर्वंति पाय पुप्फंति पाय।
पवडीयवमग्गु सम्मापवग्गु।
णिरुद्धमवारं आणइ मवारं।
पिसि भागमारि णिपयम्मवारि।
इह गिरिवरम्मि ता कंदरम्मि।
णिवसइ कुवीणि सोमवसीणि।

घत्ता—ता मई पोरपगत्थणिय ईहिवंसु पसारेप्पिणु पविमउ ॥
पउसिवि ताहु महीसहहि कायवणुवकउ भणिउ णविमउ ॥ १६ ॥

16 १ P पुम्मिउ २ G omits this foot; K however adds it the margin. ३ M वसि वरिव° B °मुल P पमसेसु ४ MB add after this वरिसवि मेहि, सुसु वसिव देहि ५ M णवण. MBP महासहहो

16 5 a सिवतवणासु किवाई मोक्षे वम्मोत्पविमलो वम्म 7 b °मिठाणु समणु. 10 a प्रक-षरिरतहि गो गवमं मेघो अविष वर्षे 11 b सुमवसारं परमसवम्मि सुद्ध उत्तम. 12 a °वेदि °आदि. 18 b सदद पोलो 14 b दपपरमलं सु उत्तमवमवड 23 हरि वसु उत्पत्तं वाणं विविनि गवसु

17

तवपहावविभावियवासवु　　पुच्छिउं पुणु तेहिं सो पिहियासउ ।
कवणें दव्वें हउ दालिद्दिणि　　हुई दोग्गयगोत्तणियविणि ।
कहहि देव तुहु सच्चउ जाणहि　　दीण वि मइं पियवयणें पीणहि ।
ता पभणइ समणगणपहाणउ　　दीणु वि राउ वि मज्झु समाणउ ।
णिसुणि पुत्ति अन्नमि जम्मतरु　　आसि कयउ जं पइं कम्मंतरु ।
गामि पलासपुव्वि तहिं गहवइ　　देविलु सुमइ तासु रंजियमइ ।
गेहिणि ताहि धूय तुहु हुई　　हलिय जुवाणह ण रइदूई ।
वीयरायसिद्धतु पढंतहु　　जीवाजीवभेय भावंतहु ।
एक्कहिं दिणि घणि खतिसणाहहु　　हसिवि समाहिगुत्तमुणिणाहहु ।
अण्णाणइ पइ उप्परि घत्तिउ　　रिसिणा तणुभूसणु व विचिंतिउ ।
किमिकुलपूयरुहिरदुग्गधउ　　पयडियदंतउ विहडियरंधउ ।
सुणहकलेवरु दियहि दुइज्जइ　　तेवं जि पुणु वि पदिट्ठु तइज्जइ ।

घत्ता—णउ तूसहिं रूसंति ण वि सुइ कदप्पदप्पखयगारा ॥
जो मंडइ जो खंडइ वि बिहिं मि समाणा समणभडारा ॥ १७ ॥

18

पेच्छिवि मुणि परिहरियसकायउ　　तुह अणुकंपभाउ सजायउ ।
भसणसरीरु घित्तु अण्णेत्तहि　　पइ णयणेहिं ण दीसइ जेत्तहि ।
पणउ करेप्पिणु जोइ खमाविउ　　तेण जि खमभाउ जि सभाविउ ।
ईर्सि समेण मरेवि असुहाउलि　　तुहु हूईसि एत्थु दुग्गयकुलि ।
धम्में मुच्चहि दुकियदुक्खहु　　धम्मु णिसुणि सुइ कारणु सोक्खहु ।
फणिचरणइ जागि को अहिणाणइ　　परमत्थेण धम्मु को जाणइ ।

17　१ MBP °वासउ　२ MBP पुच्छिउ तें पुणु सो　३ MBP पभणइ मुणि समणपहाणउ. ४ MP पइ ज　५ MBP गाम　६ MB ललिय°　७ MBP तेम जि पुणु पइ दिट्ठु　८ MBP तूसति

18　१ MP परिहरियकसायउ, B परिहरिसकायउ　२ B °भाव　३ MBP इसि उवसग्गें मरिवि ४ M असुहाहलि　५ MB दुग्गम°

17　7 *b* हलिय कर्षकस्त्री
18　1 *a* परिहरियसकायउ परित्यक्तस्वशरीर

धीरधम्मु होई जगप्पहाणें । वीरपुरिसमंदयवयणाणें ।
धम्मु होइ पुणु पुंजु भवायवें । पाहाणुग्गरि पत्थरठवणें ।
धम्मु होइ म म पियमुहदंसणि । धम्मु होइ सुरदीवयपुप्फसणि ।
धम्मु होइ तिलपापसमावणि । धम्मु होइ जासरयाविणि ।
धम्मु होइ गोमुत्त पिवंतहु । धम्मु होइ महु मज्जु पिवंतहु ।
धम्मु होइ पसवेहु करंतहु । छेमइ कुक्कुड जिवि मारंतहु ।

घत्ता—एहु कुमिच्छु कुधम्मु सुप पत्र पवर कुमार जाइजइ ॥
जिणणाहेण पयासियउ धम्मु अहिंसामइयउ किज्जइ ॥ १८ ॥

19

महुमज्जमंसाणेयणाइ पडिवि णाई णणु मारउ हरिणइं ।
किं तिगोयें किमिसंदोहु जइ जउ मुयइ तिणु वि कोहु ।
अंतरंगु जसु सुत्तु ण दीसइ कायकिलेसें तहु किं होसइ ।
दंसणु सम्मउ मुणिविहिपालउ तासु तहिंजि भवसंसारउ ।
धवसमेपुप्फागुण्णयघारहिं अहिंड ण कंपहि जीव ण मारहि ।
कम्मयरउ परवणि ण होवहि परपुरिसु वि सयरु मा जोवहि ।
सुमहि संगु चउक्कोहुप्पायणु एयजीवेयणु दुक्खइं भायणु ।
मयइ पज्जपासहु परिपालहि जिणपडिबिंबइं विच भिडालहि ।
जहिंसिविहि कंचिणि णियसरिह णाइं सवेजासु गयवर भत्तिर ।
सुरणाहु वि सयमंतहु पेक्खहु णियमयण णियमणु णियमेक्खहु ।

घत्ता—पच्चासण्णुत्तम सउ वि खियपंचमिहि णाहि णर जणवहि ॥
सुवहरि मणिहरि जे णिवइ तो तुंदुं वि णिरुइरिज पयासहि ॥ १९ ॥

१ M होम MBP कुपु अवयवें MBP तणु सुयो जगणि ५ P णिवइ.
19 १ B किं तिगिय तकिमिसंदोहु २ MBP जीवइ BPT मुणिविहिपालउ P तहिंजि
५ P णरम्मु ६ MBP जोय MBP ण हु

8 a अवयवें जाणहोम 9 पद हरी 5 इरहोतहु मोतापिय
19 1 a मेहुअजहाइ म म पेसहा कुमायिम हुमारिणिम्मे च पमममपइ तमेहुपाणि 11 णच्च-
बहुपप णउ मि णियरम्मिरि [illegible] 19 सुवहरि सुवर्णे.

20

मुणिहिं सरीरि परमु समु णिवसइ ते णिंदतह दुम्मइ विलसइ ।
चूडामणि किं चरणि णिहिज्जइ वंदणिज्जु भणु किह णिंदिज्जइ ।
दुच्चिंतियउ दुवोल्लिउ दुक्किउ आसि जम्मि एवहिं करि सक्किउ ।
ता सा खविय तविय गयगावें अतोअतो पच्छुत्तावें ।
महु पावोहें कहिं पावणियत्तणु जाइ कयउ गुरुहुं मि पिसुणत्तणु ।
मायामोहु मुइवि मणु रोहिवि एमप्पाणउ णिंदिवि गरहिवि ।
गय रिसिवइ वंदिवि णियवासहु हउ लग्गी सहि सुयउववासहु ।
काइं वि दविणु ण विज्जइ जइयहुं मइ दालिद्दिणीइ तहिं तइयहु ।
खलु वि सुपत्तहु भणुदिणु दिण्णउं छड्डिउ सव्वजीवपेसुण्णउं ।
पुज्जिउ जिणवरु दोणयहुलें वोहिउ दीवउ दुल्लहतेल्लें ।

घत्ता—पुज्जउ इंदु णराहिवइ अवरु वि णिद्धणु सिरिमइ भासइ ॥
एक्कु जि फलु मइं अक्खियउ जइ मणि णिम्मलभत्ति ण णासइ ॥ २० ॥

21

एम तेत्थु हउं चिरु जीवेप्पिणु गुरुउववएसलेसु पालेप्पिणु ।
पुणु आहारु सरीरु मुएप्पिणु परमक्खरइं पच सुमरेप्पिणु ।
मुइय गपि ईसाणविमाणइ सिरिपहणामि रमियगिव्वाणइ ।
ललियगहु महएवि सयपह हूई जुइणिज्जियचंदप्पह ।
मुइ पिययमि छम्मास जिएप्पिणु इह हूई सग्गाउ चएप्पिणु ।

20 १ MBP किह भणु २ BP पच्छत्तावें ३ BP पावहि ४ MBPK मणु ण रहिवि. ५MBP सणिवासहु ६ P दालिद्दिणि एत्तहिं ७ MBP मोयणु.

21 १ P °उवएसु. २ MB पावेप्पिणु ३ B omits this foot.

20 6 *a* मणु रोहिवि मनो निरुध्य 10 *a* दोणयहुलें [illegible]
याचितेन तैलेन.

पिउँ सुयरेविणु चंदु वि तावइ   चंदणु देहि ण सम्मउ भावइ ।
महु वि अंगाइँ दुमइँ असोगँ   दुहुँ कि ण मुणहि रंगिवेल्लिमें ।
एम भणेप्पिणु पहु आणाविउ   णाहु णिएप्पिणु बाहरि ताविउ ।
पियविरहउ तहिँ वि णासिहियउ   फुरइ ण वेल्लवणि संणिहियउ ।
मज्झम्मइ कीलासंताणइँ   कित्तिमइँ गैरिसरीमरियरवीणइँ ।
मज्झइँ तहिँ परिवसंचरियइँ   पुत्तइँ मोरइँ गुरइँ धरियइँ ।
पत्थु वसंती पत्थु रमंती   को पडर इउँ पडी होंती ।
एम भणेप्पिणु गुरुयु ण धरियउ   सुंदरीए पियहियपउ भणियउ ।

घत्ता—माणहि पंडिर मौंयपुउ केवहि धम्मायाहि महारी ॥
मरउ पुप्फेंयतुणक्किय अण्ण ण तियमेंहि सहयवारी ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णिव्वाणिभिवाणम्मणंमो णाम
बावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २२ ॥
॥ संधि ॥ २२ ॥

४ MBP पिय सुयरेवि ५ B दरिसियँ MB तासवि MBP °म्मइं MBP °संचरियइं. ९ P मइए and gloss मनेन १ MBP भणेप्पिणु ११ MBP आणिउ १२ MBP पुप्फयंत° १३ MBP णियमइ

21 6 पिउ प्रियम् 11 a "रागम्" इत्यादि 15 मरउ म्रियताम् नियमइ प्रीणाति

XXIII

तं णिसुणिवि पहु करयलि करिवि गय पंडिय जिणगेहहो ॥
अइकुडिल सुतेय मणोहरिय चंदलेह णं मेहहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—एत्तहिं सा णरिंदसुय विसहइ पिययमविरहवेयणं ।
एत्तहिं पडियाइ पविलोइउ परमप्पयणिहेलणं ॥ १ ॥

पवणुद्धुयधयमालाचवलं हिमकुंदसमाणसुहाधवलं ।
गायणंगणगाइयजिणधवलं सिद्धंतपढणकलयलमुहलं ।
गयणंगणलग्गमहासिहरं अइरुंदचंदकररासिहरं ।
जक्खिजक्खपडिमाणिलयं विद्दुमतलउमयतलसिलयं ।
मरगयमयखंभसमुद्धरियं मणिमत्तवारणालंकरियं ।
आयासफलिहमयभित्तियलं हरिणीलणियद्धधरित्तियलं ।
उव्वाइयधूवगारवरं गुमुगुमुगुमंतमत्तालिसरं ।
घल्लियपप्फुल्लियफुल्लचयं ओलवियमोत्तियदामसयं ।
पइसेप्पिणु तं मुणिणाहघरं णविऊण जिण जियजम्मजरं ।
पइ विउसिइ पसरिवि दावियउ णायरणरेहिं परिभावियउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरुम्बकर्णिकं
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बिनम् ।
विलसदणुप्रतापनिर्मलजलजम्मविलासि कोमलं
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

GK do not give it

1 १ P सतेय. २ MBPK पवणद्धुय° ३ M गायणगइ°. ४ M आरुंद° ५ M जक्खिदजक्ख° ६ MBP तलउमय° ७ M °खंभ° ८ P मयमत्त° ९ MBP °भित्तियल १० MBP उव्वाइयधूमगार°

1 5 *b* °सुहा° सुधाचूर्णम् 8 *b* विद्दुमे त्यादि–विद्रुमघटिता तले कुम्भिका तलशिला यत्र 14 *a* विउसिइ विदुष्या धात्र्या

घत्ता—इय दसविसु वत्त समुच्छलिय जा पइपइएव जाणइ ॥
भरहीसरहंभंगहिं सिरिमइहि सो धवलुच्छवु मारद ॥ १ ॥

2

दुवई—विविहाहरणकिरणविप्फुरणोहामियफुविसुरसरा ।
ता मायंगतुंगतुरंगासण चल्लिय वरवरेसरा ॥ १ ॥

सेयत्तें पिहियससियमरयं णिवासियविरयं वारियभरयं ।
पत्ता पयरा मं जिणहरयं दुरियहरयं सुमणियवरयं ।
दिट्ठो किरिमो वेहिं पडो हंसरयवणो मणि वजियमो ।
तं पेच्छिवि महिवसियसिरा भणु को ण थिवो पोमंथियमो ।
केण वि मंतिया—घुत्तथिया सयंकामकिपा वग्गुस्सलिया ।
एसा बाला सामलिया थामें वलिया भविकलोलविया ।
विरमवि होंती मज्झ पिया पवरप्पथिया विहिरूत्थविया ।
केण वि भणियं—मेरं सुणिया सुरवरणाविया मुंमथोवणिवा ।
होंती वर्णें महु तणिया णीलंजणिया पीणत्थणिया ।
कण वि भणियं—विज्जसिरि हुं मेरुगिरि इह सा तरुणि ।
इह मई देवें होंतएण मायताएण मेलिय हरिणि ।
कु वि भणइ—मासाइ णिवु गुरु पाड पडु किड दिवु गंधमि ।
कु वि भणइ—हा कि करमि णिप्फल मरमि जइ पइ रमि ।

११ P तण्णु, K तणो १२ MBP जणणु

2. १ M °हरणकिरणविप्फुरणोहामिय, B °हरणविप्फुरियपोहामिय°; P हरणकिरणविप्फुरियोहा-मिय° २ P हरणाणा. ३ B किरिओ तो वेहिं, P किरिओ सो वेहिं. ४ MBP हरणिय° ५ MBP विरविओ ६ P वेच्छेविणु MBP पणिय MBP पतथिया. ९ MPB कर° १० M वरं सुणि-सुणिया P मणि सुणिया. ११ MBP मिय° १२ MBP कण. १३ MBP मञ्जुसिरि. १४ MBP add after this वज्जु वि वरिमि १५ MBP को वि एव भणइ

15 पइपइएव विज्जरम्मीकर

2 6 [illegible] 4 [illegible] 7 [illegible] 9 [illegible]

को वि सँदीहउ णीससइ तावें सुसइ उरयलु हणइ।
अप्पउ घल्लइ धरणियले आणेहि हले तं[17] मुहु भणइ।
को वि मुच्छावसु णिवडियउ रइविणडियउ णिज्जीवं थिउ।
उभ्भाएप्पिणु परियणिण दूमियमणिण णियघरहु णिउ।
धाइं जिणेप्पिणु उँत्तरहिं पच्चुत्तरहिं कु वि चवइ वरु।
हउं घरईत्तु भैवतरिउ इह अवयरिउ तहि धैरिवि करु।
घत्ता—विहसेवि पवोल्लिउ पडियइ जो गुज्झइं महु अक्खइ॥
सो सुँअवेल्लीरइसुहहलहो रसु परमत्थें चक्खइ॥ २॥

3

दुवई—मह वररमणिरूवरंजियमणु जो णरु अलिउ भासए।
सो सरसरविहिण्णु सा ण लहइ पंइसइ णरैयवासए॥ १॥

ता तेंत्थतरि　विरहमहाभरि।
कुँमरिहिं घणथणि　जायइ जोव्वणिं
छक्खंडावणि　जिणिवि महाफणिं।
देव वि खयर वि　णित्तेयइ रवि।
चोयेंवि गयवइ　आयउ महिवइ।
पुरिहि पइट्ठउ　सघरि णिविट्ठउ।
महुरालावें　सपणयभावें।
सुय वोल्लाविय　णिरु संताविय।
पियपरिणामें　णिद्दयकामें।
पुत्ति म झिज्जहि　लइ पडिवज्जहि।
ण्हाणु विलेवणु　कंकणु परिहणु।

१६ MB सुदीहउ　१७ MBP तम्मुहु　१८ MBP णिज्जीउ,　१९ MBP धाइउ.　२० MBP दुत्तरहिं.
२१ P वरयत्तु　२२ M भवतरु　२३ MBP धरमि　२४ M सुह°
3　१ P अलियउ भासइ　२ MBP णिवडइ　३ P णरइ°　४ MBP एत्थतरि　५ MBP read this line as पसरियरायइ, कुवरिहि (P कुवरहि) जायइ　६ MBP add after this उत्तुंगत्थणि, घणि घणि जोव्वणि　७ P चोइयगयवइ　८ M ककणु पहिरणु, B ककणु परिहरणु, P कचणु पहिरणु

17 तं तां तरुणीम्, मुहु वारवारम् 23 °सु अ° सुता
3, 2 स र स र विहिण्णु स्मरबाणविभिन्न

गुप्पइ रंजहि भीयउ मुंजहि ।
बज्झइ बाणहि जबहि गाणहि ।
भयभेय मायहि पविमल पहावहि ।
दुग्गु सुपुलउ तिहुयणमलउ ।
हउं माणोणमि तो पउ जीणमि ।
ताणइ जंपिउ तं सुणइ णिउ ।
पुत्तु मायेप्पिणु पणउ करप्पिणु ।
णिमरहि णिसण्णी णिरहिविसण्णी ।
मारिगेप्पिणु सिरि धुवेप्पिणु ।
जयणायहिं मणिय णरिंद ।
णाव णिराणई कहमि कहाणई ।
मयरद्धयसिरि णिसुणि किमोयरि ।

घत्ता—जिह पहु पुंडरिगिणिपुरिहि रमइ मणइ पंचमेमणि ॥
हउं मसणजणहिहि पवर होंतउ कुक्खि णिहुप्पणि ॥ ३ ॥

4

दुवई—णामें वंसक्खिवि जयंखिवि सुमित्तवेरेण भूसिमो ।
सुर जणवे मई पि कप्पमि महीर णिरं समासिमो ॥ १ ॥

णिरवमसुहसयहरिषिणमयेहिं णिव सुत्तु रज्जु दोहिं मि जयेहिं ।
भवसाणि णिहिं वि सिरि परिहरेवि पीलिखुणि वणि पाउरेवि ।
पयसेविवचंदसेणगुरुहि किउ तउ णिरंणि कम्मक्खुसहि ।
दोहिं वि विभिवारिय पावमह सह वेय णिहिं वि वव वावमह ।
णिम्मि वि जाया मासिमसुर सव्वंगुहिमाइप्पमावपर ।
णिय जीवेप्पिणु देहिं विवसपुम पुण्णमहार सुंदरि तहिं वि सुप ।

¹P ककरु. ¹ MBP वद बोसुहर ¹¹ MB हउ माणोणमि P हउ माणोणमि. ¹² G omits णिरह णिसण्णी ¹¹ MB पणउ करि.

4. ¹ MBP वसंखिवि ² M °वीय ³ MBP हउ ⁴ MBK दिवसिमसुर

10 ण णिव वहिवं चलिया मा.

पुक्खरवरि पुव्वमेरुसिहरे तहु पुव्वविदेहि रसतकरे।
धणधण्णरिद्धि जायाइसउ णामेण मंगलावइ विसउ।
जहिं दहिउ दुध्दु जलु जिह सुलहु जहिं णत्थि दोसु गुणगणु जि बहु।

घत्ता—जहिं घणछेत्तावलिपालियहि सुउ हॅलिणिहि कह भासइ॥
आरत्तचचु चचेलमुहु जंपमाणु मणु तोसइ॥ ४॥

5

दुवई—मत्तमहंतधवलगलगज्जियवहिरियविउलगोउले।
विसरिसाविसमभिडियधरसेरिहकयकाहलियकलयले॥ १॥

तहिं किडिदाढाहयथलकमले कमलदलच्छाइयविमलजले।
जलजंतसित्तकेलीतरुणे तरुणतरुकुसुमरयछप्परणे।
छप्परणालकियदियपवरे दियपवरकलरवुद्दंतसरे।
सरसीमारामपएसमुहे मुहयरच्छुहपंडुरि रायगिहे।
गिहसिहरालिंगियघणणियरे।
णिर्यरायणायणिच्चिंतपए पयपाडियपरणरवीरसए।
सयवत्तपसाहियजलपरिहे परिहरियपावि मंदिरि सिरिहे।
सिरिहरु पुरि रयणसंचि णिवइ णिवइच्छियवित्ति सुधम्मरइ।
रइ विव कामहु कंत सइ सइ ण देविंदहु हंसगइ।

घत्ता—सा णामें देवि मणोहरिय जिह तिह सच्चसउच्चें॥
अम्हइ विण्णि वि सग्गहु ल्हसिय हयखगकालदइच्चें॥ ५॥

---

५ P हालिणिहि ६ M जणु

5 १ M °धवलगज्जियरवयहिरिय° २ MB °तरुणी ३ MB तरुणतर° ४ MB छप्पराणि ५MBP °पडुर° ६ B दियराय° ७ MBP णिच्चत° ८ MBP पयासिय° ९ P मंदरीसिरिहे १० MBP कामहु तहु कत ११ MB सिरिमइ सच्चें १२ P अण्ण वि सिरिमइ सग्गहु ल्हासिय अम्हइ हयणियमिर्ते

---

4 10 *a* जायाइसउ जातातिशय 12 सुउ शुक, हलिणिहि कर्षकस्त्रिय 13 चंचेलमुहु वक्रमुख

5 *a* जलजंत° जलयन्त्राणि, *b* °छप्परणे भ्रमरा षट्चरणका पठनपाठनयजनयाजनदानप्रतिग्रहाः 5 *b* दिय° द्विजा पक्षिण

6

दुवई—आया ताईं गामि दूअइ हरि विण्णि वि सुरूपकारिणा ।
वरिय सुयायमाणि सिरिसम्मयिमीसंजणामधारिणा ॥ १ ॥

ताहिं मि मायर्हं जणयच्छिसहि | मइदिंसिथिवि अम्हई देवि मइ ।
गउ जण्णु सुंभसहिसिरहु | किउ घोरु वीरु विणतचरणु ।
छिण्णउं कण्णाविसयामणु | पर्यंड पवणु मिच्छकरणु ।
पुहु परिमाविउ कंचणु वि तणु | णण्ण विसुद्धु मर्दे सि पणु ।
विज्जाहरमज्झासासयरो | थेरिसु वि पथत्यज्ञ धारणो ।
पिरिकंदरंअवि किं करह | दुक्खिपरिणासु ण तं धरह ।
इय मण्णेवि मणाहर पिय भणवे | विण्णवइ मायंतिउ पियपणवे ।
विण्णवइं अजवि दुपय वारिउ | पच्चाविउ धम्मंतरपुरिउ ।
संभासवि माइवि पच्चुउ | सा हुई दिवि कविलंगसुर ।

घत्ता—सिरि मुंविवि मीयपदिसं तिसिउ सुपउ विहीसंभराणउ ॥
पणच्चउ णरयमहाविवरि काउँ को ण विडीमउ ॥ २ ॥

7

दुवई—कप्पिउसपसाँण सहवासु ण विरिया एभिणि णम्भिमो ।
दुरियमकप्पतरु ण सुहाविउ जयकारिउसम्मपेम्मिमो ॥ १ ॥

सं्तु पेच्छिवि हउं दुक्खाउलिउ | सोयम्मि देहकम्मु वलिउ ।
हा मम्मपाणि हा पाणपिय | हा अंपण किं मणोहरि किय ।
सुसहोयर दामोयर भणहि | हा पक्कवार मरं संपणहि ।
सुर णरवर विरिया पुहुवर | किं मरह महारउ बाहुवर ।
मरं मिच्छसमार्चे मावियउ | महजङर वीचि णडावियउ ।

6 १ MBP °मिहिलय° २ MBP तुणमु ३ MB णत्त मिच्छु मिम्मु णउ P णाड मिच्छु मिहकपरणु; T मिनण भरणु ४ M मिउ M णट. ६ P °अंहर. ७ MB करिवि; P करिवि. P °मिच्छवर. ९ B मिहिलणु

7 १ MBT पउ २ P एकपर.

6 4 चणनु दिया गीवर 5 b मिहदवयरणु मिच्छसमासपरंपयरं 7 a मिच्छाइमेका रि-
मिम्मीता अमिमेना नरयरता नार मामिद्रयम् 11 b हिंवि वर्गे

7 8 वहु वान्यम्

तं पुसमि हसमि हउ तेण सहुं   जंपेवि पच्चुत्तरु देहि महु ।
मइमूढु ण काइं मि संभरमि   पुरगामसीमरण्णहिं चरमि ।
तहिं अवसरि आयउ जणणिचरु   ललियगु ललियभासिरु अमरु ।
पहि थिउ चोयंतु वसह सभय   सो जंतें णिप्पीलइ सियय ।
मइ भणिउं म णियवलु णिट्ठवहि   किं पाणिइं लोणिउं उट्ठवहि ।
किं णेहु होइ दासीसुयहे   किं तेल्लु विणिग्गइ वालुयहे ।
तं णिसुणिवि देवें भाणियउ   जइ एउ वप्प पइं जाणियउं ।

घत्ता—तो एउ वियाणहि किं ण तुहु कीस विसूरहि हलहर ॥
जे मुय ते पुणरवि दिट्ठ पइं कहिं जीवंता णरवर ॥ ७ ॥

8

दुवई—हाहाकारु पुत्त किं मेल्लहि धीरिवि जाहि अप्पयं ।
धीराधार वीर विउल भुयण पि गणंति गोप्पयं ॥ १ ॥

किं भायर भायर पुक्करहि   हउं माय तुहारी संभरहि ।
तुह मंदिरि णिवसिवि कियउ तउ   संपत्ती तेण सुहासिभवु ।
गउ एम भणिवि सुरु णियघरहो   मइ मुहुं जोइउ चक्केसरहो ।
सघउ णिच्चेयणु जाणियउ   सलु रइउ हुयासणु आणियउ ।
लहु वासुएउ सक्कारियउ   तणुरुहु सरज्जि वइसारियउ ।
वयसजमभारधुरंधरहो   दिक्खकिउ पासि जुयधरहो ।
पंचिंदियगयउलु पीडियउ   तउ कियउ सीहणिक्कीडियउ ।
पुणु सव्वभद्दु उप्पाइयउ   मिच्छत्तजडत्तु णिवाइयउ ।

३ MBP जंपमि ४ मइमूढ ५ P चोवहु ६ P लोणउ ७ B मय

8 MBP पुत्त म मेलहि २ MBP धीर ३ P विउण ४ भायरु भायरु. ५ MK कयउ ६ P जोयउ ७ P सलु रयउ ८ MBP सकारियउ ९ P पीलियउ. १० B omits this foot ११ B omits this line १२ K मिच्छत्तु जडत्तु

10 *a* जणणिचरु पूर्वभवस्या जननी 11 *b* सियय सिकता वालुका 15 कीस किमर्थम्.

8 2 धीराधार धैर्याधाराः 4 *b* सुहासिभवु देवभव 6 *b* सलु शवशयन चिता 7 *b* सरज्जि स्वराज्ये

पंचसयविहाणि जं साहियउ तं धरधिहु मई आराहियउ ।
हउं मरहु मरेण मोपिवि मुउ महुर आइंदसु अमर हुउ ।
घत्ता—ता रयणविमाणाराहियउ मई अणुवरंप्पहो भियउ ।
धम्मिअंमरेउ सो णिवयगुरु मेरुपइ मसिए पुष्फियउ ॥ ८ ॥

9

दुवई—पुरु कंकियंगवेउ अंबूलचलंपेपि दीवि सुहवई ।
सुरगिरि सुरविसार सुविवेहर अवमहि मंगलावई ॥ १ ॥

णगरसंसाहियविज्जाधम्मि रप्पयगिरिसिहरसंरयसिहे ।
गंधव्वणयरि तहिं णिमलजसु वासेउ णामें पासवसरिसु ।
पायडपयाउ णरवइ वसइ अणु विहिवि कसिकपंतु तसइ ।
तहि पेमिहि उयरि पहायरहि उप्पण्णउ कमलरायगाहि ।
णामेण महीधर धीरमुणि तापस मरिजइ दिव्वमुणि ।
सुउ पणि थवेप्पिणु सेविपउ णिम्मलयमाउ संभाविपउ ।
सुहायभिखयवाये तविउ दुक्कम्मामाणु परिक्खविउ ।
संतें दंतें सव्वासएण अप्पउ णिउ मोक्खहु वासवेण ।
जं ससविभिसाहि पहायरहि पप्यंतिहि ताहि पहायरहि ।
तउ दिव्वइं कंपलमसंसियइ सुवइ पोमाणइकतियइ ।
सीसियविवइ पुण्णु समासियउ साविसपक्सावकणु णिश्चियउ ।
एयणावाडि णामें थोणिपविदि कयपेइदोसउवणासविदि ।
घत्ता—घ वि मण तहिं थिय णिरसणु कविवि माउसार कि सिजैर ॥
घोसवमर सम्मि परिहु हूंप मणु णिर धम्मु ण णिजर ॥ ९ ॥

११ B omits this foot. १४ P °यंपहि १५ P सुमर

9 १ MBP कंकियु रेउ B °जंबूलोवि MBP सुविवेहर MBP °सुवइवई ५ P °णग ६ P दिव्वहुमि MBP परिक्खविउ ८ MBP अपरावर्तिमह. १ MBP पहायरहि १ MBP णिजर. ११ MBP हुए

11 b व व स्थित महीयंकाशयवासवम् 12 करे व करे रे सि अरवं स्थला

9 1 सुहवई सुखवती 2 व व व ह रि कानसा 6 b व कि° ववन वर्ण ना 9 b व माव व सु कर्मकरणम्. 11 a व ताहि भिवाहि समुद्रसा रजी. 15 नि व इ धोमते

10

दुवई—अह णलिणंकि दीवि पच्छिमदिसमंदरपुव्वि रिद्धिया ।
पुव्वविदेहि छोणि वच्छावइ पुरि पहयरि पसिद्धिया ॥ १ ॥

तिजगवइधरियछत्तत्तयहो जइणिद्देसियरयणत्तयहो ।
परिगणियमुणियकालत्तयहो हयजाइजरामरणत्तयहो ।
थिरचरियधरियगुत्तित्तयहो सुइसबोहियभुवणत्तयहो ।
विद्धंसियणियसल्लत्तयहो परियाणियजीवगइत्तयहो ।
वियलियरसाइगव्वत्तयहो गईकम्माइयदेहत्तयहो ।
पज्झियहेट्ठिमझाणत्तयहो कयकिरियाछेयपयत्तयहो ।
केवलचेयणगुणइत्तयहो सीदीभूयहु ण णियत्तयहो ।
णिव्वाणपुज्जविणयधरहो हउ करिवि कुहरकक्करवरहो ।
फणिमणिभाभासियअहिहरहो गउ पढमदीवसुरमहिहरहो ।
तहिं णदणि सुपसिद्धम्मि वणे इंदासासठियजिणभवणे ।
विज्जउ पुज्जतउ दिट्ठु सइ महिहरु वोल्लाविउ मुद्धि मइ ।

घत्ता—किं ण मुणहि तुहु खयराहिवइ हउ णदणु तुह होंतउ ॥
सिरिवम्मु सीरिभायरमरणे जइयहु कलुणु रुयतउ ॥ १० ॥

11

दुवई—तइयहु तइं सुरेण सबोहिउ पवहिं किं ण याणसे ।
सिरिहररायघरिणिमणहरिभंवु किं णेउ सरसि माणसे ॥ १ ॥

अज्ज वि किं भुंजहि विसयविसु विसु मारइ मित्त एक्कु णिमिसु ।
भवि भवि सघारइ विसयविसु ता तेण जि लद्धउ त जि मिसु ।

---

10 १ MBP पच्छिमदिसि मदरि पुव्व° २ MBP सयलत्तयहो ३ MBP थियचरिय° ४ B omits this foot ५ B omits this line ६ MBP गयकम्मा°

11 १ MBP °भउ २ MBP ण सरीसि ३ MBP भुंजसि

---

10 1 णलिणंकदीवि पुष्करद्वीपे 5 *b* सुइ° आगम 6 *b* °गइत्तय° पाणिमुक्ता लाङ्गली गोमूत्रिका च 7 *b* देहत्तय° कार्मिकमौदारिक तैजस च 8 *b* °पयत्तय° प्रयत्न 9 *a* ° इत्तयहो युक्तस्य. 15 सीरि° बलभद्र

महिहरविवि सुरवरराउ पयउ धम्मोहरु सहसा णियवयउ ।
भडमणिकणि णावइ डाणिय महिकंपइ पुणइ मेरुणिय ।
डाहवि मंदरु मुणिगुरुविहिउ वेयमग्गि डमि बद्धसिउ सहिउ ।
सहुं मरहुणीहं णिज्झाइयइं तवकोडरगिरिविवरंतरइं ।
तहुं णिग्गु तेण कयपावखिय णिरसंणियपुरिणाणि पखिय ।
कालेण गेंकें महिहरहो पुणु भरणासु संपेणु तहो ।
सो मीणिमणपरिरक्खयरु मीणहु जायउ तिपसियरव ।

घत्ता—संतपियउ बीससायरसमइ पुणु काले संचोइउ ॥
भायरसेवर पुण्फिलमुह जो सुरगिरिवरमोडिउ ॥ ११ ॥

12

दुवई—तस्सायरविवेहि पंमिदविसयम्मि विमुक्कविप्पिया ।
रज्झायवरि तीर जयकम्मु णरेसर सुण्णहा पिया ॥ १ ॥

तहि णविवि पुरंदर हुउ तणउ मविदंजउ णामें सुहउ ।
दिक्खहि कारणि णीकणिमयउ अमवे मदिदवतु मणिवउ ।
तं दिज्जइ पंच मेहमयइं मुणइ तेण सत्त वि मयइं ।
मयणिमिसणहिं णाइं मणा तवपरकोपास वि णवहु मणा ।
मायंणितु लेपु दुमरु चरिवि कम्मद्दुमगंठिवि णीहरिवि ।
होऊण सिंधी गउ णिवयपहो सिंहु सुहह णामु विव णीरपहो ।
सविणि वरसिरमणमणयरहो वह जम्मइ तं कणाककरदो ।

४ MBPK सुपमइ पउ ५ MBP संणाइउ ६ MBP णयण ७ MP तणमणि वणि; B धम्मर णाहिउ सयमहिउ MBP तस्सोइरि. ९ MBP तउ १ MBP पहें ११ MBP वणुण १२ B पाणिउणु B पमिणामं° १३ MBP पापइ १४ MBP संणाविणउ १५ MBP °पालीणउ

12 १ B om ts this line २ MBP °महम्मइं ३ MBP तन दुवर चरिवि. ४ B कम्महु ५ MBP णीमरिवि. ६ MBP णियरहो MBP णियहुए णाम

11 7 b मदिदव लक्खि 18 हुन हुमि
12. 8 a णिवयणहो विस्तारम् 9 दूमिदि पंचरतन

छुहकामकोहविद्धंसणहे गणिणिहि पासम्मि सुदंसणहे ।
जं वउ परिपालिउ सुप्पहइ तं किं वण्णिज्जइ कइकहइ ।
सुइचक्खुसोक्खणिण्णासियइ संरुद्धफासरसणासियइ ।
रंणावलिकयरण्णासियइ पच्छाविरइयसंणासियइ ।
घत्ता—मेल्लेप्पिणु माणवकुणिमतणु देवणिकायहुं वल्लहु ॥
अच्चुइ अणुदिसदेवत्तु खणे पत्तउ ताइ सुदुल्लहु ॥ १२ ॥

13

दुवई—चोद्दहरयणपहरणुत्तासियणासियारिउभडत्तणं ।
कयमजियंजएण वरिसहरणयावहि महिपहुत्तणं ॥ १ ॥

धम्मघोसउड्डिंडिमपहयउ एक्कहिं दिणि समवसरणु गयउ ।
थिउ अग्गइ मउलियउहयकरु वंदिउ अहिणंदणु तित्थयरु ।
मेरु व समणु णिच्चलु थविउ पंचासवदारणिरोहु किउ ।
सुविसुद्धचित्तु रिसि विव गणिउ पिहियासउ सो सुरेहिं भणिउ ।
मायासुयवइयरु साहियउ तहिं अवसरि मइं सवोहियउ ।
मुणिधम्मसवणसामियमइहिं वीसहिं सहसहिं सहुं णरवइहिं ।
गुरुमंदरत्थविरु समासियउ हुउ जइवरु मोहु विणासियउ ।
आलिंगिउ चारणरिद्धियए सव्वोहिणाणससिद्धियए ।
वणिं पुत्तिइ पावयखामियए होइवि णामें णिण्णामियए ।
अहिहरिणमिल्लभिल्लीणिलए दिट्ठउ गिरिवरि अंवरतिलए ।
पइं तासु पासि सुउ धम्मु चिरु किं बहुएं मज्झु वि सो जि गुरु ।
दिवि जीविउ हुउ माणियरमइं दह दह जि दोण्णि सायरसमइं ।
घत्ता—जणणी ललियंगु आइ करिवि सुंदरि कलिमलवज्जिय ॥
वावीस देव ललियंग मइं गुरु मण्णेप्पिणु पुज्जिय ॥ १३ ॥

८ MBP गणियहि ९ MBP त वण्णिज्जइ कह १० MP रयणावलि°

13 १ P चउदह° २ MBP धम्मुग्घोसउ डिंडिमु हयउ ३ MBP सममणु ४ MBP °धम्मु समण° ५ MBP सबोहियणाणसमिद्धियए ६ MP कलमल°

10 *b* गणिणिहिपासि आचार्यानीसमीपम्, गणिनीसमीपम् 13 *a* रण्णावलि° रत्नावली नाम तप, °रण्णासियइ रत्नत्रययुक्तया

13 २ वरिसहरणयावहि क्षेत्रविभागकरपर्वतावधि 10 *b* सव्वोहिय° सर्वावधिज्ञानम्. 14 *a* माणियरमइ अनुभूतलक्ष्मीकाणि

14

दुवइ—चक्कतरुमारियमेयपयासु उप्पससिरिविवरंपमे ।
नवर वि कह वि तुज्झु पिय विरहमहाणलसुसियकाये ॥ १ ॥

जम्मंतरि विलेउ संमरमि मरिएयासु मिसुणि तुह कहमि ।
इयं पुंण्डिउ विपविपसुम्माणा पंमिर्व संदवसुरवाणा ।
कीलाकयरियमसुमपवो मह मसिमाउ करिउ सुपंमवहो ।
पीयंमिम संपुमच्चाकिपप मेसरि विरिरि पुम्माविमपर ।
सीमासरिविजिजयपबिट पवर वष्मावमरेसु संपकपवर ।
कामण सुसीमा सर पमरि तहिं पहु मजियंजम पुरिसहरि ।
ममपमर मीठि सहरपमम तहु सकहाम कामेय पम ।
तहि सुउ पहसिउ पहसियवयणु तहु सहमर वियसिउ सियवयणु ।
सह ते विण्णि वि कपोल विणु विसुणंति पढंति गमंति दिणु ।
ते वे वि विउस विच्छिण्णमय छक्कारहेउकुविवावरय ।
पक्कहि दिणि पर्य माई सुदय मासायपरिसिसौमीउ पय ।
सो पहुणा पुंण्डिउ जीवगइ माहासइ संभरड ताहु वर ।
संतेण येण वासु परिपंमाइ तं कारणु कालु महापिपर ।

घत्ता—जहिं अप्पउ ण मुणइ मयजयमु गाहि धम्मु सहयारिउ ॥
इउ होइ भडम्मु विरत्तमहो पत्तेसहिं वेयारिउ ॥ १४ ॥

15

दुवइ—पोमाकरम्मु हाइ विमेयपसु जं जं पिय सुवेयणं ।
तहिं तहिं कहमि तुज्झु पत्तमत्थं जीव ति माणकारणं ॥ १ ॥

---

14. १ BP मिराम्म° २ MBP विण्णउं P पुच्छिउ ४ MP पयासय; B सुरमाणइ. MBP °वासीउ ६ P पुच्छिउ MBPK सयर ८ MBP परिणय ९ MBP सुय. १ MB एय हरिउ; P हय हरिय

15. १ MBP करेसम.

---

14 12 b °माई °मिम्मीलतरम् 17 ब ब ई रि ब मविमासिमम्

विणु जीवें पोग्गलु किं[2] तसइ विणु जीवें पोग्गलु किं हसइ।
विणु जीवें पोग्गलु किं रमइ विणु जीवें पोग्गलु किं भमइ।
विणु जीवें पोग्गलु किं जियइ विणु जीवें पोग्गलु किं णियइ।
विणु जीवें किं पोग्गलु सुणइ किं विर्द्धउ वेयणाइ कणइ।
ता वुत्तउ पहसियवियसियहिं अणुहुत्तपुहइपत्थिवसियहिं।
जइ जीउ जि पेच्छइ कहहि कह तो विणु णयणहिं ण णियइ कह।
जो एतु ण दीसइ जंतु ण वि तहु कवणु भाउ किर कवण छवि।
जइ चिंतियमेत्तें तहु कुणइ तो चिंतइ पूरइ किं ण रइ।
दालिद्दिउ भुक्खइ किं मरइ भोयणु चिंतविउ किं ण करइ।
को जाणइ भासिउ केण किह आगमु णवकवलु पुरिसु जिह।
सिद्धंतहु किं जणु गुरु णवइ तवतावें किं अप्पउ खवइ।
किं वीहिउ वट्टा णउ हँचइ त णिसुणिवि मुणिवरिंदु चवइ।

घत्ता—चित्तयरहु लेहणिवज्जियहो चित्तलिहणु ण संतउ ॥
इह दव्विंदियभाविंदियह जाणइ जीउ णिरुत्तउ ॥ १४ ॥

16

दुवई—जो जो पेच्छसे ण णेत्तेहिं ण सो सो जइ पयट्ठओ।
ता सपियामहस्स सपियामहु पुत्तेय पइं ण दिट्ठओ ॥ १ ॥

जइ सो जि णत्थि तो तुहु ण पुणु चिम्मेत्तहु कहिं वण्णाइगुणु।
ससहाउ भाउ परिमाउ ण वि ज णाहु त णाहु जि ण चंदु रवि।
जइ चित्तें चिंतिउँ णउ हवइ ता झाइय देवय किहँ चवइ।

२ MBP किह ३ B किम ४ P किह ५ MBP पोग्गलु ६ MB वद्धउ ७ B °पत्थिवसयहिं ८ MBPK णयणेण ९ B चिंतिए १० MBT सिद्धत्थहु, and gloss in T सिद्धत्वस्वरूपप्राप्त्यर्थम्, P सिद्धतउ and gloss आगमनिमित्तम् ११ MBP महइ १२ M चित्तलिहणु

16 १ M पयत्थओ, P पइत्थओ २ M पुत्त ३ BPT परिभावि ४ MBP चिंतिउ ५ MBP किं

15 9 *b* भाउ परिणति, छवि आकारो वर्णो वा 12 *b* णवेत्यादि—यथा नवकम्बल पुरुष इति वाच्य नव वा कम्बला अस्येति संशयहेतुत्वादप्रमाण तथा आगमेऽपि 13 *a* सिद्धतहु आगमनिमित्तम् 14 *a* वट्टा मार्ग 15 ण संतउ अविद्यमानम्

16 1 पयट्ठओ पदार्थ 4 *a* ससहाउ भाउ स्वस्वभावो भाव

पविउलमइसायरपारगउं   जइ कोइ ण गेण्हइ पारगउं ।
तो कंचुयसुत्तरासु तियहिं   किं सुहइ सिरि पच्छंडियहिं ।
जइ साहु वि ण मडइ पइं भणिउ   तो माणु केण जाणिउं गणिउं ।
महमोहु ण वसहि बुहि जणइ   इय णाणु वि मोक्खु वि सुणइ ।
धम्मु वि कयमोक्खउ पयसरहो   पंडिउं पुणु आयउ भयसरहो ।
करमाणु धम्मु किह एउ मउइ   जिह कमलु कण्णिर सिरि वहइ ।
घत्ता—जइ जं जइउ तं तहउ वि पाउउ पइं संभाविउउ ॥
तो किरियाखाणे किह मणेण कोहिं सुयम्मेहिं ताविउउ ॥ १६ ॥

17

दुवई—हो हो आहेरक्खयपयविरयणु सुणहि वण्णउं ।
कुरु कुरु परमधम्मु जिणभासिउ करहि संमिच्छिमं एउं ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि हूई सम्मइ   णाईसर णियमेण वइय ।
गुणमत्ति करिवि पणविय गुरवे   दविडपइ कच्छउ वेदुरवे ।
जिह णउ पवइ तिह मज्झमणे   आयणिपसमिसणसुवियक्खणे ।
कम्मरायमिउ ते वे वि जण   संसारविसायविरत्तमण ।
तासु वि तेल्लोक्कविणयरहो   पायरय णासि मज्ञाणयरहो ।
आयंबिलु वड्ढमाणु कियउ   तउ भीमु सुदंसणसंकियउ ।
दोहिं मि दुक्कम्मु णिरोहियउ   पण वेण्णि वि णियंमवि णिवरियउ ।
सिद्धत्थसुमुहणेहिं भुय   सुकामर हंद पविय हुय ।

९ P ररयउ   MBP कि   MBP किउ   १० MBPT व णविउ धम्मर सायरउं.
११ MB कि णइ   P कि णु   ११ MBPKT सिरि   T सिरि ममुर: कमेत्रिपम धमल्ल भुवलिरिगि.
१२ M णइ वमाक्खिउ   B णइ णइ माणिउ   १३ M सुवण्णउ ताविउ   B सुवण्ण ताविउ
17   १ MB समीहिय   P समाहिय   २ MBP णिसुणिवि   ३ BP दुरवगु वणिउ. ४ MBP णिवमिणि

6 a रयणत्रय पर्यंगीकृत   8 तदु आत्मा   9 a मद मोह आत्मना   न वसति पुरुषे. 10 a-b धम्म मी ... 11 b सिह पनी.
17   1 ... 8 b ... 10 ...

ओसारियकायकंतिसिहइ   णिवसिवि सोलहजलणिहिणिहइं ।
धादइसडइ थिय सिसुससिहि   पच्छिममंदरपच्छिमदिसिहि ।
पच्छिमविदेहि णरदिण्णसुह   णामेण पुप्फलावइ वसुह ।
घत्ता—तहिं अत्थि पुडँरिंकिणि णयरि राउ धणंजउ णिवसइ ॥
जयसेण सेण ण वम्महहो अवर वि भज्ज जसंस्सइ ॥ १७ ॥

18

दुवई—ससिसिय भमरणील णंळपाउसणासपवेसकुसवहा ।
इय पडिंद वे वि अवेप्पिणु जाया ताह तणुरुहा ॥ १ ॥

जयसेणहि णंदणु सीरधरु   पहसियउ इंदु दणुयारिवरु ।
वियसिउ पडिंदु सणियाणवसु   तवरयणें किणियणिकामतुसु ।
णारायणु जायउ जसेसइहि   भूहरवियारि वेउ व णइहि ।
णामेण महावलअइवलहं   तहि ताह जगत्तयमंगलहं ।
सिरि भुंजतहु गउ मरिवि हरि   अइवलु वि ण रायकालहु उवरि ।
अवलोयवि णियवधयपलउ   मणु मुक्कु ण वीरें मोक्कलउ ।
वणु पइसिवि सरु णिसुणिवि मयहं   पणवेवि समाहिगुत्तपयहं ।
तउ लेवि महाबलु तहिं मरिवि   प्राणयतियसेसरत्तु करिवि ।
वीसद्धिसमाणहिं पुणु पडिउ   अंतयराएण ण को णडिउ ।
पुव्वुत्तदीवभायतरए   पुव्वुत्तसुरहिदियंतरए ।
पुव्वुत्तविदेहि तवियतरणि   णामेण वच्छयावइ धरणि ।
पुरि तम्मि पहायरि जणभरिय   महेसेणहु देवि वसुंधरिय ।
घत्ता—तहि देविहि मयणमयालसहि गब्भवासु सेवेप्पिणु ॥
चउदहमयँ[६]कप्पसुराहियइ थिउ माणुसु होएप्पिणु ॥ १८ ॥

---

५ MBP पुडरिंगिणि ६ MBP धणज्जउ ७ Mp जसमइ

18 १ MBP ण पाउसणासपवेसि २ MBP जसमइहि ३ MBP पाणइं ४ P मरुसेणहु
५ MBP °महालासिहि ६ P चउदहमइ

---

11 *a* ओसारिये त्यादि–उत्सारिता स्फोटिता अवसाने कायकान्ति शिखाज्योतिर्यै, *b* °जलणिहिणिहइ सागरोपमाणि

18 1 ससिसिय चन्द्रवत्पाण्डुर, कुसवहा मेघा 3 *a* सीरधरु हलधर, *b* दणुयारि° वासुदेव 4 *b* °णिकामतुसु तुपवत्तुच्छा मानुष्यकभोगा 5 *b* वेउ व वेग प्रवाह इव 11 *a* वीसद्धिसमाणहिं विंशतिसागरोपमै.

19

दुवई—दुरें अवसेसवाहिं को पावइ होंती पुव्वसरिया ।
तासु वि तेण भीमकरवालें महि छक्खंड भुंजिया ॥ १ ॥

पुणु केवलणाणसिरीहरहो पायंतियम्मि सीमंधरहो ।
वोहिहरयणइं जिणि परिहरेवि दुग्गइ वारियमायारेवि ।
मणपावको व्व विरायवउ भावेप्पिणु सोलह भावणउ ।
फणिणरसुरणाहजयकियथवइं भावेप्पिणु तित्थयरत्तणइं ।
गउ मासु पिसंसिवि पुक्खिणयए सयरिगमेणजाइ मणसोमए ।
तीसंसुहिरंगपियारं लिहवि आहमिंदु हउ देत्पइ आहवि ।
पुव्वविदेहि पुक्खि गिरि णामेण मेरुसरि सुरसिरि ।
तहिं पुव्वविदेहि विण्णगुग वरउमोदि मंगलावइ पसुर ।
तहिं रयणसंचि भविजणयहो रायहु पालिमसाणवणयहो ।
चोरपरपुरसिरिणियरयंभारे हुउ सुउ देविहि तासु वसुंधरे ।

घत्ता—सो देउ सुयंधरु पउमणिणु पम्महपम्मपियारउ ।
रज्जम्मु जि सयलहिं सुरवरहिं मेरुहिं ण्हविउ भडारउ ॥ १९ ॥

20

दुवई—पुणु परमप्परायणायणु मेलिवि गउ वणंतरं ।
वेमिसि वरंतरेण परिसंसियवरु थिउ सो चिरंतरं ॥ १ ॥

मयणंतु विवुधेतु दुरिउ पावंतु सुरउग्गु थरिउ ।
उप्पणइं वगसेवीरहवं केवलु थिउ तवसिरयणवं ।
ओहंधउ तित्थु पवरितियउ तिहुवणु दुयहाव विपरियउ ।

---

19 १ P दुर अवसेसु २ P पावइ° ३ MBP पाय. ४ P मिलिमिति. ५ MB मणभावए P मणिभावए. ६ MBP पुव्वरस्सरीवर पुणमिरि. ७ MBP मेरुसरि.

20 १ MBP read this line as तिहुयणु हुवराय चिवरियउ ओहडउ तित्थु पवरियउ

---

19 8 b पायंतिय म्मि पादसमीपे. 8 अट्ठविह मिहारं कर्मस्थानि.

20 8 b दुरतरं पु कल्पनोयम्, 5 a आहरण स्थानम्

गउ मोक्खहु अक्खरु अक्खरहो तणु सक्कारिउ परमेसरहो ।
अग्गिदहिं णियमउडाणलिण भणु किं ण होइ सुधियफलिण ।
इय कहपवंचि मइं सकहिए सम्मत्तु लइउ देवहिं सहिए ।
हे हे मह कुलकमलेक्कसिए ललियंगहु तुह ललियंगपिए ।
हियउल्लउ णिद्दियइदियउ णइयहुं जिणधम्माणंदियउ ।
सभरसु पुत्ति रमियामरहो अजणणामयहु धराधरहो ।
अम्हइं तुम्हइं मि महासरहो दीवहु गयाइं णदीसरहो ।
सभरसु पुत्ति पविउलकमले कीलियइं सइंभूरमणजले ।
किय जाएप्पिणु रुद्दासवहो णिव्वाणपुज्ज पिहियासवहो ।

घत्ता—सभरसि पुत्ति मइं भासियइं पयइं व हुअहिणाणइं ॥
तुम्हइं दप्पइहिं रईयरइं सुरवरकीलाठाणइं ॥ २० ॥

21

दुवई—तहिं णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु अच्छइ विहि वि जइयहु ।
हउ कालेण कह व णिल्लोट्टिउ इदवयाउ तइयहु ॥ १ ॥

इमच्चुया चुओ सुए कुले सुरिंदसंथुए ।
वसुंधरावइयरे महंतपुण्णगोयरे ।
णिवद्धपेम्मराइणा जसोहरेण राइणा ।
सुओ हुओ हियंतओ इहेव वज्जदंतओ ।
कुवाइएहिं मोहिओ सुमतिणा पवोहिओ ।
कयगयारिण्हाणओ मरेवि दिण्णदाणओ ।
सुधम्मभावणामलो खगाहिवो महावलो ।
दुइज्जसग्गठाणए सिरिप्पहे विमाणए ।

२ B अक्खर अक्खरहो ३ MBP भणु होइ किं ण ४ M मइ सइ कहिए, B सइ मइ कहिए ५ P सयंभु°
६ B दपइरईयरइ
21. १ MP सए

6 *a* अक्खरु लब्धानन्तचतुष्टयरूपतयाविनश्वरम्
21 1 णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु नियुत लक्ष तस्यार्धं पञ्चाशत्सहस्राणि तत्प्रमाणानि पूर्वाणि आयुर्यस्य,
3 *a* इ अहम्, सुए हे पुत्रि 4 *a* °वइयरे वधूदरे 8 *a* °अगयारि° मदनान्तको जिन

मयारपुप्फवामसा सरूवजियकामसा ।
हुमा सुरा दुवीममा मई गुरू स पच्चिमो ।
पियम्मया मणाभिया गयाउमा सोपं पिया ।
तुमं पि तप्पिउसिया पईय मंतिभिसिया ।
दियायरस्स ण पहा सलेवणया सयंपहा ।
र्दयंवयंविमायमो तुदं पिमो तहिं मममो ।
वरुण्णसार पडप पुर विचित्तमीवए ।
पञ्चयोरयाहुमो पियस्स वज्जबाहुवो ।
सुवण्णवण्णकायमा कुमामायार आयमो ।
सवि प्प सो तुकपमा मयच्छि वज्जसंपमो ।
पिओसुया सुदंसरा मई सुहीव ते पत्त ।
संमीहु मुमिमंडसे वसंति ते सुवीवले ।
सुयामयाउ भायया रमावईए आयया ।
तुम सयो पहरपरी मह सुया किसोयरी ।
वरं वरं विहाविही पियकवाया विहीविही ।
पियापम पयासिही सिवेहिं तीहिं मासिही ।
सिरीमईइ भासियं तए मई पयासियं ।
मैयामि ई पेरं मयं विरं पि ताव यं वयं ।

घत्ता—सुणि धेविय मासि समासियउ मयघइ रिसहविसिरें ।
सयडंसुयुप्पयंतहिं हसिवि पुणु सुय भणिय वरिदें ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सिरिमइभवसंभवं णाम
तवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २३ ॥

॥ संधि ॥ २३ ॥

१ MBK पयामिया २ BP तुमं सि ४ MBP वहू वयं पि सिविया ५ MBP सुवण्णवण्ण ६ MP वमयी ७ MBP समीव ८ MBP सुवंमिड ९ BP कवगामए १० M हलमिहि ११ MBP सवमि १२ P वयं १३ MBP °कुपमारि

11 a कमारपुप्फवामओ कमिमाइ 16 a "धीणिया" रोहरम् 20 b मयच्छि है एयासि 21 a सियोसुया सियामुदि 23 b रमावईए कमीणसयासु 25 a सिहा सिही इन्यसी b सिवकमा कीत्ता, वासी सिहा सिही सिवयह सामिही आमसिकासी 26 b आ सिही धीरिसमी सिवसेन

XXIV

सहु णंदणेण णियपरियणेण महु लोयणसुहु देसइ ॥
सुणि राउलउ तुह माउलउ अज्ज पुत्ति आवेसइ ॥ ध्रुवक ॥

1

म करहि वयणकमलु तुहुं दीणउ अज्ज पुत्ति जायउ सुविहाणउ ।
आयहु वज्जवाहुपाहुणयहु अज्ज करमि करणिज्जु सुविणयहु ।
सोयकिलेसपंकु पक्खालहि अज्ज पुत्ति तुहु णाहु णिहालहि ।
आया माणणिज्ज ते माणमि लहु अद्धवहि गंपि घरु आणमि ।
जांमि भणिवि गउ णरवइ जावेंहिं पंडियभवणु पराइय तावेंहिं ।
मुणिहि वि मयणुक्कोवजणेरी दिट्ठी सुय णरणाहहु केरी ।
णं गंगाणईहि जउंणाणइ णं कइमइहि मिलिय सुयसंतइ ।
णियडि णिसण्णी सा तरलच्छिहि पुरिसुज्जमलीला इव लच्छिहि ।
करिणिइ कराणि जेम करु मग्गिय वेल्लिइ णववेल्लि व आलिंगिय ।
मत्थइ चुंविवि पुरउ णिवेसिय हंसिइ फलहंसि व संभासिय ।
मुहराएण जि सिट्ठुं णियच्छिउ कज्जु तो वि णिवकण्णइ पुच्छिउ ।

घत्ता—विउसिइ कहिउ ढक्किवि लिहिउ पइ ज तहिं मइं ढोइय ॥
णरवइ दमिय ओसरिवि थिय वासवदुद्दत्ताइय ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza –

हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डल
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुमसकरे ।
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमध. क्षिते-
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावक यश ॥

GK do not give it

1 १B लोयणु सुहु २ P रावलउ ३MBP अज्जु–and throughout this Kadavaka ४ P सुविणयहु ५ B अद्धवहु ६ M एम ७ MB जावेहिं, P जाविहिं ८ MB तावेहिं, P ताविहिं ९ MBP मयणुक्कोय° १० MB सुट्ठु, P सिट्ठु ११ P पुंछिउ

---

1 6 *b* अद्धवहि अर्धपथे 8 *a* मयणुक्कोव° मदनप्रसर

2

पच्छइ सयमइं आयउ जा पइ सा जं मोहप्पासु केरउ पइ।
सो जं धम्मोहेण पसिउ सरु सा जं कुसुमसरहं जीवियहरु।
सो जं परमेसरबिंबु सायरु सो जं गुरु गुरुकमसरियायरु।
सो जं रूवविकासु पसारिउ सा जं कंतिकोसु वइसारिउ।
सो ण विज्जाविहि विरयारिउ सो जं पुण्णपुंजु अवयारिउ।
सो जं सुहउ मइ मणि भायउ जो गुरु मइ वि अंगहं तावइ।
पुणि महासिहरग्गु सुरमासग्गु देवि पयासिय जिणवरवासगु।
केणहिमहिहरासरकासगु णाइं पुरंदरेण कइलासगु।
हियवउ रहियपासिउ मउलेप्पिणु णम ण वि वियहरु मउलेप्पिणु।
वंदिउ जिणु सुरवंदियचलणउ वंदिउ जिणु सुरपुज्जियपुज्जिउ।
वंदिउ जिणु अगोचरियवंदिउ वंदिउ जिणु पुरपिहियपिहिउ।
धम्मवासु देवगु पर कुमारु पिणु सयलेण सत्तु किउ भमारु।
णविविउ णिहसु गयणसरिवउउ अंपउ भयवणु पुणिरु गुम्मउ।

घत्ता—णवयउ भवहो सीयलु तिमहो जिण गुरु पंच गुरु देवउ।
णवरयसुयहो भंगासुयहो णकुसुमसेहरु सेहउ ॥ २ ॥

3

जिणु णवेप्पिणु धरिय मुणिवर मुणिवर ते सुवहर जं भणहर।
अंगणहरवरजिणवसेरिस दसविहिमिपइपमरिपाविम्मकंस।
भसु ण कउंकु गोधि भव हियपर अंपणाकिवि भर अणु पिय जिणवर।

2 १ MBP °विन्नगु २ MP हिमरि° ३ P णइकणगु ४ MBP रइ° ५ MP भोलिगु ६ BPT हुरगविण° M भयपरिवसरिउ; BP भयपविवसरिउ MBP रणर
3 १ MBP °रवरिउ २ MBP °णह ३ MP भणमकिवि

2 8 a र इ मि न सिउ भीरोयवसिगम् 10 a त इ म ज़ि म° सुमदर्शनहि 12 a–b ण मी ला कि-कम्पमाणो पर्वोक्लातो देवस्य न युज्यते पर्वोन्नितम्भतातस्य भवीतरमाकायत्वं —नि गु इ का वि—कवनियत-सर्वेमुनीमितं वद स्वीये इति यस्य भगोरत देन निराम्भमुचमागत दिवस वास सम व ज (युज्यते 16 ज क र व मु न हो पश्चिमुमस

णयसिरुँ पट्टसाल स पइट्ठउ सपइट्ठउ मइं संमुहुं दिट्ठउ ।
दिट्ठउ पइ सहुं सुलिहियचित्तें चित्तें चिंतिउ तेण ससंतें ।
संतें इट्ठविओयकंतें कं तें धुणियउं भवसंकंतें ।
कंतें जयलच्छिहि विक्कंतें कंतें सुमरियपेम्मुक्कतें ।
कंतें चंदेण व सपुण्णें पुण्णें पियसंजोउ ण रुण्णें ।
रुण्णें पर सरीरु णिव्वट्टइ णिव्वट्टिउ देउ वि ण पवट्टइ ।
वट्टइ जाणिउ कहिं दीसइ सा सा मणणलिणीयरवासिणि जा ।
जा सा सा भणतु सो मुच्छिउ सोमुच्छिउ चंदु व्व णियच्छिउ ।
अच्छिउ विमणु पपुच्छिउ धाइइ धाइइ परियणि कहिं मि ण माइइ ।
माइइ भणइ रमणु तुह अक्खमि अक्खेमियं ज तं किह रक्खमि ।

घत्ता—भवेंसचरिउ पडिउद्धरिउ वहुपयारु पेरढकिउ ॥
णरवइसुयइ सुललियभुयइ कीस सहियवउ वंकिउं ॥ ३ ॥

4

एहु ईसाणकप्पु विविहामरु लिहियउ एहु सिरिमहु सुरहरु ।
एहु दिव्वतरुवरु णंदणवणु पलवमाणु चलफलकोइलगणु ।
एहु ललियगु देउ हउ होंतउ एत्थु वसंतउ एत्थु रमंतउ ।
थणयलघुलियहारमणहारी एह सयंपह देवि महारी ।
अच्चुयणाहु एहु तियसेसरु कुलिसपाणि लिहियउ परमेसरु ।

४ B °सिरपट्ट° ५ M omits this foot ६ BPK पेम्मक्कतें सुयरियकतें ७ MBPT णीवट्टइ ८ MBP णीवट्टिउ देहु ९ B अक्खमियउ १० MBP भवि ११ MBP °ढकियउ १२ MBP पाकियउ

4 १ P इहु and throughout this Kadavak २ MB सुप्पहसपयसुर°

3 4 *a* पट्टसाल म पइट्ठउ स पट्टशाला प्रविष्ट, *b* सपइट्ठउ सप्रतिष्ठ 5 *b* ससतें निश्वसता 6 *a* संतें उत्तमपुरुषेण, °विओयक्कतें वियोगपीडितेन, *b* कं तें धुणियउ तेन मस्तक कम्पितम् 7 *b* °पेम्मुक्कतें स्नेहयुक्तेन 8 *a* कतें चदेण व कमनीयेन चन्द्रेणेव, *b* पुण्णें पुण्येन 9 *a* णिव्वट्टइ विनश्यति 10 *a* वट्टइ जाणिउ ज्ञान वर्तते 11 *a* जा सा सेत्यादि–या जगत्प्रसिद्धा लक्ष्मी 'सेयम्, सेयम्' इति मूर्च्छित, *b* सोमुच्छिउ सौम्य उच्छ्रित 12 *a* धाइइ धात्र्या, *b* धाइइ धाविते 13 *a* माइइ हे पुत्रि, *b* अक्खमिय इन्द्रियैर्ज्ञातम्

कहर सुर्पयरेपयहामर्इं कंतयर्यसर मई कीमरइं।
पर्णा अमहं वे पि बाहुरे कोह विसुमिवि णिर्यमवि संपुहं।
एव मेरुहि गयाइं अमर्यमइ इह पमाइं जिणण्हाणारंभइ।
पहु मंजणमहिहव मडु रयार पहु धीर मंगीसद सुयार।
हह लहु सुरणाहे सुदसम्मिपइं पंगवहविर णिण्मि वि वक्मिइं।
मंचरतिलय पहु गिरिसारउ एहु पिहिपावउ खिविउ भडारउ।
पहु तासु कमकमसु पमंतई पियई वे वि जिणधम्मु सुणंतई।

घत्ता—पहु महरहिउ हउं पावहिउ पहु सयंपहु भयार ॥
तियसिद्धिपवे जिणवरमवणे महि पयपोमहिं मंयार ॥ ४ ॥

5

अच्चेयवहि पि पत्तु पेो खिहियउ जो मइं कीसारंभु पवित्तिउ।
एवेहरसोइं पेमंचिउ पत्तु ण खिहियउ मोर्ण पयासिउ।
भमरइं तणुपरिमलपरिमसियइं पत्तु ण खिहियइं अखिसुमुमुमियइं।
पोम्मु ण खिहियउ पयारोसिउ सुय गुरुंपयमापमजुम्मासिउ।
सयजमरणु एह भासिसु ण खिहियउ जे मडुमयपई सोहर महियउ।
पत्तु ण खिहियउ पहिवाहुविहसिउ पत्तु ण खिहियउ पयपारोसिउ।
एह कयोलपलाचसिमोसणु पत्तु ण खिहियउ किसलयवाखणु।
पत्तु ण खिहियउ विरहायर मुइं पत्तु ण खिहियउ मिर्ड विसंपुइ।
पत्तु ण खिहियउ मूसेलु पेखिउ पत्तु ण खिहियउ सुपयमासिउ।
एक्कु वि खिहियउ मणुजयमारउ पेहु महु मिण्णउ पायपहारउ।

१ MB करि ४ MB मिययय° ५ MB सरई

5 १ MBP माणिक्किउ २ B मेर ३ MBP सुर ४ MB सुसमु ५ MBP read this line as. पत्तु ण खिहियउ पयपारोसिउ पत्तु ण खिहियउ पहिवाहुविहसिउ ६ MBP विरहायर. MBP मिउ MB सुपय. ९ M पत्तु ण B एउ महु

4. 1b पावहिउ पावाचारैः. 14 मि मवहिं° मेय

5 6 b सुप सुकः. 10 a मणुजय° मनुष्यम्य

पयवडिए सारभु सुयाविउ पत्थु ताइ हउं आसि समाविउ ।
अण्णहि गेहीं रूवविहूइं देवि सयपह माणवि हूई ।
अण्णहि पसइणिहिंाणइं[10] णेत्तइं अ[11]ण्णु लिहइ किं महु चारित्तइं ।

घत्ता—भणु किं कहमि ण विरहु सहमि दूइइ पिय महु आणहि ॥
सा ते[12]त्थु पुरे थिय जम्मि घ[13]रे तहिं जायवि समाणहि ॥ ५ ॥

6

ता दूई[1]इ उत्तु अम्हारी णयरि पुंडरिंकिणि पुरिसारी ।
वज्जदतु पहु तहु सुहगारी लच्छीमइ महएवि भडारी ।
धीय ताहि सिरिमइ उप्पण्णी पिउ सुमरिवि जीवियणिव्विण्णी ।
पहु ता[2]इ लिहियउ कहवइयरु पइं जाणियउं णिरुत्तउ तुहुं वरु ।
एम भणेप्पिणु हुउ पत्थाइय पडसंबंधिणि वत्त णिवेइय ।
तावेत्तहि कुमारु गउ तेत्तहि उप्पलखेडउ पुरवरु जेत्तहि ।
पियविओयसिहिजालाछित्तउ घरि तलिमयलइ देहु णिहित्तउ ।
तरुणीव[3]ग्गुरुवढिउ पलोइउ णं वणवाहें मि[4]गु सभाविउ ।

घत्ता—रइ[5]रिद्धएण मयरद्धएण विद्धउ पचहिं वाणहिं ॥
विवरीउ हुउ सो रायसुउ कह व ण मुक्कउ प[6]ाणहिं ॥ ६ ॥

7

दुप्परिणामें कामें तप्पइ सीयलमलयजपंकें लिप्पइ ।
रसइ हसइ णीससइ विरुज्झइ उट्ठउ वइसइ मोहें मुज्झइ ।
कर मोडइ धम्मेलय मेल्लइ अहरु डसइ अणिव[1]द्धु पवोल्लइ ।
घेवइ चलइ विलासहिं गच्छइ परु पच्छ[2]ण्णु पउत्तिहिं पुच्छइ ।
एक्कहिं णिलइ ण णिवि[3]सु वि अच्छइ दिसि लिहिय पिव पियमुहु पेच्छइ ।

१० MBP °णिहाइं ण. ११ MB अण्ण १२ MBP जेत्थ १३ MBP हरे
6 १ MPB वुत्तु २ MBP ताहि ३ M °वग्गुरु पडिउ विलोइउ; P वग्गुरु वडिउ विलोइउ. ४ MBP मिगु ५ M रइविद्धएण, P रइरिद्धिएण ६ MBP पाणहिं
7 १ MBP अणिवद्धउ योल्लइ २ MB पच्छण्ण°. ३ P णिमिसु

11 *a* सारभु कोप 15 समाणहि मदीयकुशलवार्तया सतोषय
6 10 विवरीउ कामजनितोन्मादादसयद्धप्रलापी.

ण्हाइ ण जुवइ ण विलवइ पुक्कइ भूसणु लेइ ण मोयणु भुंजइ ।
रमइ ण कुसुम तुरउ ण चाहइ करि वि रहु वि चडेवि ण वाहइ ।
गेउ ण सुणइ ण वज्जउ वायइ पर विभावियवम्मु व झायइ ।
एक्कु वि पावविमोउ ण मण्णइ कामगहिल्लउ किं पि ण जाणइ ।
मडिहिं वज्जबाहु विण्णविएउ तणउ देव मयणें परिहविएउ ।

घत्ता—हूई सारि लच्छीमइहि जा सिरिमइ सहि एयउ ॥
दुकी विणइ जुवउ जिणइ कामाणलसंतत्तउ ॥ ७ ॥

8

तं णिसुणिवि णहयरउ हएप्पिणु कहिउ भरहइ रइ विहसेप्पिणु ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ सा बालउ पणवइ णहु सुय णिरु किं कालउ ।
भावहि काम ण हाइ विणालउ मणु जि किमइ गुरु पुंवमेलउ ।
सुणइ महारी पई कहिं दिट्ठी अमरें वत्थ परिहइ सिट्ठी ।
गउ कुमारु परिममइ समीरउ दिट्ठउ णहु आकिरिउ जिणालउ ।
पुप्फजम्मु तहिं पम णिपच्छिउ णिरंकेतावयाउ परिपच्छिउ ।
कामु वि कामरूवि जं पावइ ताहि रूउ कं कं ण भमावइ ।
पहेरे लिहियउ रियपइ मिलियउ को' त पुत्तइ णिउंयर जिहियउ ।
भवसें होसइ णिव णिहिविहियंरउ पम णाम मरेवें कहियउ ।
ता सहुं पुत्तें समउ कलत्तें सहुं सण्णेव पवंसपयत्तें ।
वज्जबाहु सहस त्ति पयाइउ णयरि पुंडरिकिणि संपाइउ ।
एप्पउगोउ पुरि कारापेप्पिणु कीलइ मत्तवरिंदि चडप्पिणु ।

घत्ता—मायंतु पत्ते पहु मज्जबाहे पविभुवण जयकारिउ ॥
सा तव जिह दवीरु तिह तिह सुयण मेंवयारिउ ॥ ८ ॥

४ M हरि ५ MBP ववहि रि व ६ P वरि. ७ MBP विव. P वरिहरिउ
8 १ MB णो मच्छइ २ MBP कि णिउ ३ MBP णिक्केवर ४ NBP णिव वंसा ५ MBP वणिहिपउ ६ B om to this line ७ MBP णिवाइ ८ B °पहियर ९ MBP मरणें १० BP सम्मत्तरों. ११ MBP संवाइ १२ M पविसरिउ

7 7 छरइ हरइ 10 b मरिहविवउ विहंसिउ परमिणो वा 12 नि वइ भरितम्मा

8 1 a ण हइ णेहउ मदोत्कीरित. 6 b णरिहरियउ इला. 7 a कामरूवि कामरूपधर
9 b अदपंचे अतिक्रमणेन भुवितरेन, 10 b णि सुदइ यहायुता. 11 णयण रिव ब्रसारुपा.

9

सालउ सस विण्णि वि जोएप्पिणु णयणहुं केरउ फलु पावेप्पिणु ।
राएं अवलोइयउ ससीयउ अच्छिउ टेहिं रूवरसु पीयउ ।
पुरणारीयणु कहिं मि ण माइउ अवरुप्परु चूरंतु पधाइउ ।
णिवइहिं केरउ सहि धरणीवइ वज्जबाहु पहु सो वहिणीवइ ।
जसहरणामहु धीय जिणिंदहु एह वसुंधरि बहिणि णरिंदहु ।
एयहु उप्पलखेडणरेसहु दिण्णी सुंदरि णिरुवमवेसहु ।
जो सग्गाउ देउ अवयरियउ जो सिरिमइवरु जम्मतरियउ ।
इहु सो वज्जजंघु हलि णरवरु एयहु समुहु मइ पसरिय करु ।
सो वि ण पावइ चित्तु जि पावइ तं पावंतु वि तणु संतावइ ।
पुरिसु होइ जइ एहउ वम्महु ण णं सो अणंगु मुणिमणमहु ।
का वि भणइ उच्चायहि मइं पिय लंघवि कोट्टु पलोयमि वरसूय ।
ताइं णियंतिय रूवु कुमारहु पेम्मजलोल्लिय तणु भत्तारहु ।

घत्ता—रइपेल्लियउं उव्वेल्लियउ णिच्छुट्टंतु णिरुंभइ ॥
कविणिम्मलए चुयं मेहलए दढु परिहणु णिव्वंधइ ॥ ९ ॥

10

का वि भणइ णगयग्गदुवारें अंतरियउ सहुउ पायारें ।
उब्भिउ करु करयलइं ण णयणइं किह पेच्छमि अगाइ समयणइं ।
का वि भणइ भासिय दुव्वयणइ अज्ज परइ मेल्लमि पइसयणइ ।
एयहु घरि दासित्तु समिच्छमि जीवमि छुडु मुहकमलु णियच्छमि ।
का वि भणइ णिवसुय सकयत्थी ण वियाणहु चिरु काइं वउत्थी ।

9 १ MBPT ससीयउ २ MBP पुरि ३ K पराइउ ४ MBP एहु, K एहु but corrects it to पहु ५ MBPK बहिण ६ MBP पसरिउ ७ MBP पावउ जि ८ MBP वरासिय ९ MP धुउ मेहलए द्रढ°, B चुए मेहलए दढ° १० MBP परिहाणु णिवधइ
10 १ B मेल्लिवि २ MBP पिउसयणइ ३ MBP फुडु ४ P सकियत्थी ५ B चिर

9 2 *a* सस्सीयउ भागिनेय 11 *b* कोट्टु भित्ति, वरसूय वरश्री 13 उव्वेल्लियउ उच्छ्वासितम्
10 1 *a-b* णगेत्यादि–नगश्च प्राङ्गणवृक्ष, अग्रद्वार प्रतोली, ताभ्यामन्तरित प्राकारेण च, अथवा, न गता अहमग्रद्वारेण प्रतोल्या निःसृत्य तं द्रष्टुम् 5 *b* वउत्थी व्रतस्था

पहउ जाहि एमहु संपज्जइ | मं तुह का वि महाभउ दिज्जइ ।
ताहिं अवसरि पहुभवणि पइट्ठइं | पाहुणाइं पीणत्थु णिविट्ठइं ।
उवविट्ठ महाणु णिसण्णु णिवासणु | माइं सुकुसुमदामु मणिभूसणु ।

घत्ता—पुणु णिविट्ठ एवु सुरहिउ सुर्यणु पंकिविरिगडु णिवारउ ॥
अप्पिउ जिमिउं भायर रमिउं पयमुहुं पुच्छिवि चरउ ॥ १० ॥

11

भणइ जरिउ ण किं पि णिवेयामि | पहु उ ममाहि मं जि भमयामि ।
तुहुं परु भायरु तुह किं किज्जइ | महु मणु पत्थणाइ किं दिज्जइ ।
णवर कुविंसयवर पणुरूवमंदर | पहु गुणवण्णहुं णिय जि वंदर ।
पहु महु व मझावर माणुसु | पहु माणवइं वसुहाणविसु ।
पहु णवणइं आणमि मरयरमणं | तेण जि पाण एहु वि ण विहारु ।
पहु कि संणिवाउ मइ हासरु | तथ जि पणि मणिवंधउं माणरु ।
पहु कामीणु दीणुं गुणहु | रविणमुणिसहुं मंगु सुगुणहु ।
सयणु संति महु गुणम पसाएं | पहु जि मग्गमि सुहिमणुएं ।
सकुवमयउ सोहइउं हावहि | णिरिमउ कमउपकारि दीवहि ।
तं भरणाइं पयणु समप्पिउ | गिरवहु उप्पारि णिउ मामणिउ ।
परमभाउ सुरभिट्ठणु जि मायरु | महु तुह मेहिरि मोणुमु भायरु ।
मण्डउ णिरहाणसमत्तउ | संजाणुतर गरणविहिरिउ ।

घत्ता—जलमरहा महु पविसरहो देंतवार णिहिपउ भाविउ ॥
गुणमूसियण ता विउसियण पडपवंधु वक्खाणिउ ॥ ११ ॥

---

१ MB णाणु ७ MBP वेणु

11. १ B णिवणिवि २ MBP कुविणयर ३ MBP पहु णवणवइं आणमि मरणं ४ MBP पहु पुरंण ५ MBP कणिवाउ ६ MBP णाणु गुणगु ७ M मणि MBP भणहि ९ MBP एउ कि. १ MBP णिहाउ ११ MBP भावर मिहिरं णिवाणिरे

---

9 गुणगु भायरु

11 3 a कुविणयर वायनु 9 a सोहइउं णिवायनु 10 b णिवहु उप्पारि मोणरी उप्परि (1) उप्परमा उपरि ओपमणिउ अणिहनु 18 a णिवरहो भायणहो

12

पियराहिरामाइ संपुण्णकामाइ ।
मुक्काइ वायाइ तुट्ठाइ मायाइ ।
परिखवियकम्माइ कइयाइ रम्माइ ।
जिणणाहपूयाइ दि[1]ण्णाइ धूवाइ ।
सुहसायकुंभेहिं घ[2]ण घडियखंभेहिं ।
रुप्पभ[3]यकुड्डेहि आलिहियभेदेहिं[4] ।
विप्फुरियरयणेहिं वरहीरगहणेहिं ।
आसणविराइयहिं माणिकवेइयहिं ।
पडिणेत्तपच्छइउ कंतीइ चिंचइउ[5] ।
रु[6]ल्लतमोत्तियहिं ण दंतपंतियहिं ।
विहसंतु पडिहाइ दिट्ठीसुह देइ ।
णाणापयारेहिं णाणादुवारेहिं ।
कउ मंडओ ताम संमाइ जणु जाम ।
मिलिएहिं सुहियणहिं[7] भरिएहिं तोरणहिं ।
घणरवगहीरेहिं पहएहिं तूरेहिं ।
णच्चंततरुणीहिं मउलियघरिणीहिं[8] ।
खयरीहिं जक्खिणिहिं णायरणियंबिणिहिं ।
हिमहारसेरिसेहिं[9] सजलेहिं कलसेहिं ।
पइपुत्तवंतीहिं महिणाहपत्तीहिं ।
सोहग्गसुंदरइ ण्हवियाइं वहुवरइ ।
पुणु पुणु पसाहियइं णवरइरसाहियइं ।
सुइवयणकलयलहिं धवलेहिं मंगलहिं ।
पुणु पुणु जि गाइयइ आसण्णढोइयइं ।

घत्ता—पसरियकरहे मयणिब्भरहे मणु मयणें सुवियारिउ[10] ॥
मुहवडु पियहे ण गयघडहे वरसुहडें ओसारिउ ॥ १२ ॥

12 १ P सदिण्णधूवाइ २ MBP घरु घडिउ खमेहि ३ MBP °कुडेहिं. ४ MB °भंडेहिं ५ MBP चिंचइउ ६ MBP झुल्लत° ७ P सुहयणहिं ८ BP घरिणीहिं ९ M °सरसेहिं १० MB सवियारिउ

12. 8 *b* °वेइयहिं चतुष्किकाभि

13

सोहणे वासरे वासवमुणामे उम्माडोहमाणुक्कमावणीविम्मये ।
पाणिणा पाणि लीए णिवा धारिमो मंगलाहो परं दूसहो हारिमो ।
राय रायण मिगोग्गयणाणियं मायंबेयस्स थिरं करे पाणियं ।
पच्चजम्मागया तुज्झ सीमंतिणी तुज्झु मे दिण्णिया पेसणावाणिणी ।
चारुणो वाउवेया पमत्ता मया पंचवण्णा पविता विचित्ता धया ।
जाव संपाण छत्त सिये चामरं दस गामं पुर सत्तभूमं घरं ।
वत्थयं हेमदेहमरोमावयं दीवओ मंचओ दासदासीयणं ।
हीरियीरोहमा दप्पिणं मंडयं कंचिदामं वरं कंकणं कुंडलं ।
पाहणा पुप्फिंसंतोसरप्पापयं चलुसारं पमेयं पि दिण्णं धणं ।
पायपुत्ति करेणुं व खीणापमो त करे गेण्हिऊणं परो विम्हओ ।
मंडवे वेइयापहि आसीणमो बज्जबाहू समाणंदिओ रायओ ।
मज्झया पुप्फदंतुज्जमीमिया वसुकोएण भिण्णा सिरे सेसिया ।
जाव गंगाणई जाव मेरू गिरी ताम्ब भुंजेह तुम्हे वि णिच्चं सिरी ।
होंतु पुत्ता महंता पहाणीसुरा संतु अच्छिण्णणेहेण वो बासरा ।
मज्झमायाइ कप्पंबिसाला जहिं सो पवो ता वा वा वि जाएं तहिं ।

घत्ता—कमिणि परतो तहु वासरहो पेरियाहिउ हुयवासरिं ॥
महिसिविणयं पुणु संबिमरं णियहिं दुणीससहासहिं ॥ १३ ॥

14

णाहमुणाहसरसक्कोममयर दिवसहिं जंतहिं णीसर वहुवर ।
वर सकरसु कारे वि संपरवर वसु मजीहि तं वि सेमावर ।
वर तसुपण्णेरओमु मालिगइ वसु सुठी तं पुपु मणि मण्णइ ।

13 १ P मगए° २ MBP मायंबेयस्स MBP °दूसव°; K °दूसव but corrects t to °दूसह° and gloss दुःसहं दुःसहं ४ M हार° ५ MB पविम ६ MBP एव्युलें P कोछु ण MBP दूसकुरमीमिया ९ M मुजेरि १ MBP माणुए ११ MBP धणर ११ MP पविपरि°
14 १ P वासु MBP वरवमोउ

13 2 णि ला हेम राका 7 दूसह° दुःसहदुःसहं 8 हारि की रो हमो मनोहरतोरणमुर
12 पूर्ण° नमिता 16 मुहवासहि मुखवासे
14 2 जमावह अनुमन्ते 8 तनुपमहगोमु मणीरावरपरीतम्

वरु केस[3]गहेण ओणामइ　　वहु हेट्ठामुहुं मुहुं लिहि[4]कावइ ।
वरु मउ[5]अउ जि करइ अहरग्गहु　　हुं हु[6] मेल्लि दर भासइ णववहु ।
वरु थणसिहरइं छिवइ सहत्थें　　वहु वीलावस ढंकइ वत्थें ।
वीरु पसारिउ सणियउं पुंजइ　　वरु क[7]रु ऊरुजुय[8]लि णिउजइ ।
वरु फेडवि घल्लइ पल्लंकइ　　पाणि देइ वं[9]हु वयणससंकइ ।
वरु सोणीयं[10]लहुत्तउ जोयइ　　वहु तहु दिट्ठि[11] करहिं पच्छायइ ।
अलियणहेहिं णाहु सघट्टइ　　वहु उग्गयपुलएण विसट्टइ ।
चवइ रमणु रइहरि सिज्जंतइं　　आसि वे वि भणु किं लज्जंतइं ।

घत्ता—कीलिवि पवरे हिमगिरिसिहरे चलियइं उड्डायासहो ॥
तुह सिरिहरहो भरहेसरहो पुप्फयंतक[12]इवासहो ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जजंघसिरिमइसमागमो णाम
चउवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २४ ॥

॥ संधि ॥ २४ ॥

---

३ P केसगाहेण ४ BP णिक्कावइ ५ P मउ जि ६ M महु मेल्लहि दर, BP लहु मेल्लहि दर ७ B कर ८ P °जुयलु ९ MBP णियवयण° १० M सोणीयलु हुत्तउ, P सोणीयलहुत्तइ ११ MBP करहिं दिट्ठि १२ MP °कयवासहो, T records a *p* पुप्फयतरुइवासहो इति पाठे चन्द्रादित्यदीप्तिस्थानकात्.

---

13 °हुत्तउ °अभिमुखम्

XXV

मणुसिन्धु दसरहेण संभासणेण कान्तसंगमासामें ।
पूंजभाउम्मामसे एमपीत्थमे पमर विसेसविकासें । धुवकं ।

1

पणकुसुपोमपहसियमुहाई　　पहायणकाणपुआरमहाई ।
मउमधिममम्मणुहाविराई　　उंडजरहसुपमाणियकपाई ।
मणरंदणपमरिपमुंमयकाई　　मुहकंमुहि मुंणमरपीाई ।
रजणकेउत्तिपसपणीमपाई　　पिपकेसाई मणुपीणारपाई ।
कणपपपकोर्सेसमाविराई　　कोसाकडणमाविस्वेविपाई ।
पविलंपसिरीमाणपुणपाई　　कीर्मताई गयगणुणासपाई ।
एवं सोहमें मोर्टुंप　　हिमकिरणकंति कुंकिमसरपीय ।
सिरिमइवीरमहुसिस मैकप्पि　　के पिविमकर सपमेव मप्पि ।
णामेणाणुपरि सोणकोर　　णियपंपणु कं सो कामपउ ।
मैकामिमहेवीणम्पणाउ　　परियोमिउ पयं अमिपकेर ।

घत्ता—सणप पसुंमपहि परमरमपहि पजार गणु करि कम्भी ।
कुकडपणु सिरि म कण्णु सिरि म सिहि म सिसिहि भावमी ।

MBP give, t the commencement of this Samdhi, the following stanza:–
वपताभिममुमानपाकट पाहि मय मपरम पणडे ।
कामवडीमिपमरपे एहि पम पुप्पमन्ती सिवागड ॥

GK do not give t.

1 १ MBP पीमाहाहि २ MBP सिर° ३ MBP °मिमाणहि ४ MBP यरि परमर°; K परडरम° ५ MBP मुखम्माण° ६ MB °मुम ७ B °राई MBP कोमपमारिया ९ MBPT मुहीम १० B कुमिपेमरपेण ११ MBPK °म° १२ MB मिमपि १३ MP मिपमपम, B मिपम-मकम १४ MBP मपोमहेरिमिहि पमिम पाह. १५ MBP परिपाहि

1. 6 a पदपीदपउह लपमेरिपपणा लपलपसुहमण; b मणुपीणादरउई मणुपोरसमीतः पीड्ड पटपपो 6 a पसिपर्ण परपण 9 a पपुईप माहिरीमा b कुमिपपरपीप गपणपुणी. 13 b भमिपहेड अमिमरोया पाम मीमाला मपड. 14 भावमी भावमिता.

2

अण्णहिं दिणि दिण्ण पयाणभेरि दसदिसु वि दिसासु थरहरिय वेरि ।
णरणाहें करिकरदीहबाहु णियणयरहु पेसिउ वज्जबाहु ।
सहुं सुण्हइ सहु णियतणुरुहेण सहुं सकलत्तें ससहरमुहेण ।
आउच्छिवि इट्ठ विसिट्ठ बंधु संचलिउ सुयणु चंदक्कचिंधु ।
उप्पलखेडाहिउ चमुसमेउ अम्मणु अचहु णीसरिउ राउ ।
हरिखुरधूलीधूसरिउ सग्गु छत्तहिं छाइउ दिसिविदिसमग्गु ।
पहरणविप्फुरणहिं जिगिजिगंतु चउपासहिं दीसइ महिदियंतु ।
गयमयजलथारहिं भरइ तल्लु हयलालइ हुउ चिक्खिल्लु खोल्लु ।
गुरुयणविओयतावें चुयाइं पुत्तियहिं पुसेप्पिणु अंसुयाइं ।
सह कामिणीहिं पंकयमुहीहिं पंडिय सपेसिवि समउ तीहिं ।
आसण्णपयि सुंदरपएसि सरसीमारामसिरीणिवेसि ।
पेच्छिवि परिपुच्छिवि सयणविंदु णियभवणहु पल्लट्टउ णरिंदु ।

घत्ता—इयरु वि जंतु पहे भल्लइ दियहे उप्पलखेडु पइट्ठउ ॥
पुरयणपरियणहिं कयतोरणहिं मंगलसेसहिं दिट्ठउ ॥ २ ॥

3

पिउघरि णं रइरजियउ मारु सहुं बहुयइ सुहुं अच्छइ कुमारु ।
लक्खणवंजणहिं पसाहियाइं जमलइं पण्णासिकाहियाइं ।
वरतणयहिं जणियइं सिरिमईइ सुललियकव्वाइं व कइमईइ ।
एक्कहिं दिणि राणउ वज्जबाहु जावच्छइ सुइसीलंबुवाहु ।
सेउहइ सेहीरासणणिसण्णु ता कालीयरवरकिरणवण्णु ।
णहयलि अवलोइउ सरयमेहु णं विहिणा णिम्मिउं दिव्वुं गेहु ।

2 १ MBPK °धूलिइ धूसरिउ २ MBP दिसिविदिसि° ३ M °भारहिं ४ MBP चिक्खिल्लु ५ K °णिवेसि ६ MBP पल्लट्टिउ ७ MBP उप्पलखेडि

3 १ MB °रजियकुमारु २ MBP °वंजणहिं ३ K सुइसीलधु° ४ MBP सउहयलइ ५ MBT सीहासण°, P सीहासणि ६ MBP ता तें कालीमरकिरण° ७ MBP दिव्वगेहु.

2 5 *b* अम्मणु इत्यादि—कियन्मात्रमार्गवोलापनं कर्तुं निसृतः. 7 *b* महीदियंतु पृथिव्या दिगन्त 8 *a* तल्लु क्षुद्रसर

3 1 *b* कुमारु पृथिव्या काम 5 *a* सेहीरासण° सिंहासनम्, कालीयर° चन्द्र

रयणगसिहरसुरवरसमाणु पुणरवि सो थिउ थिरसीमाणु ।
चिंतइ पहु गउ वासिदर खेम आयत्तमि पयमग्गु हउं मि तेम ।
वीसिउ मणु पुत्तु कलत्तु वासु होसइ पिउ समसंकासु कासु ।
इय भणिवि तेण परमरुमग्गु कुसुमसिरिहि समप्पिउ वज्जजंघु ।
महु सुयसुयहि सुयसुयसुयहिं मयरोहिं मि रायहिं थिरमुयहिं ।
जिणदिक्खा लइय कय कम्ममोक्खु तवासाइउ तं परमसोक्खु ।
एत्थाहि विपमुत्थसुंदरीहिं पत्ताहि वि पुंडरीकिणिपुरीहिं ।

घत्ता—जं सो चक्कवइ सुरवरपुर अवहार मगुहिरमाणिउ ॥
ता णिसि सिविणयसु सुयहिं कमलु सयवत्तकाउं माणिउं ॥ ३ ॥

४

जोयउ करणाउं जेवि जोइउ को किर ण थियर गोसिमिसिरि मयउ ।
उप्पाइउ तं सो एम्वराइ सम्मीसुरदंसणि कासु चारि ।
तं वारवार वप्पिवि करेण विहडियउ कमलु सुरेण तण ।
पुणु पुणु जोयइ जोयंतयत्त पवोकर पत्तु पत्तवंतपत्त ।
हणियउ रायं कयरंदवासु कयरंदवासु तहु गुणविसेसु ।
कयमसमकरदलकसंतपालि कयसोयउ अलि केसररपालि ।
सरवरकरीहि थिरमुंककरीह जं दंसणिंमणि थियहि राउ ।
मासइ हे मासि सिरिसिमुहेण वरिकप्फरमण्णु सहिउ पत्त ।
पाणुक्कि कयाडि मुवेतपण सेयपसेउ पुण्णु रत्तपत्त ।

घत्ता—तिमहिं सभुहमिर जेहा कया उयरु करि पसरउ कय ॥
जिणि तमविहियमुहे पस्संपुणो गंधबाहु मेउ मधुपउ ॥ ४ ॥

८ MBP °मिरउ. ९ MBP ठो पुणरवि. १ MBP होसइ ११ MBP पुणवीणिं ११ MP जो
4. १ M जणिपु २ MBP °रयणाउ ३ MBP विमउ बीउ ४ MBP एसीसु पसि. ५ MBPK पुणरवर ६ M पत्तु पुण्णु वरतवपण MP पत्तु पुण्णु वरतवपण BP वहुवार. ८ MBP तुय

11 a सुयसुयएहिं सुतानां सुतैः सुयसुयसुयएहिं सुतसुतसुतैः भयरोगैः
4 2 उप्पाइउ विकसितानि रयणराउ कोकिलानि 4 b अयमलरागयोकिलातं 5 a कर रयणाइ कमल b वरदंडपाणु दीर्घलालाग्रता तस्य पुष्पावेश 8 वासि हे सखि ।

5

आरोहणवधंणताडणाइं　　अंकुसखयाइं कइंवेयणाइ ।
गणियारिफासवसमागएण　　भणु किं ण विहुरु विसहिउं गएण ।
रसलालसु मासकणावलुद्धु　　परिधावमाणु संमुहउ मुद्धु ।
सरिविउलविमलजलि कीलमाणु　　धीवरगलेण गलि भिण्णु मीणु ।
संगीयगोरिगयचित्तसोत्तु　　णउ पेक्खइ समुहुं सरु सरंतु ।
णउ पेक्खइ विसयासाइ दमिउं　　चउदिसहिं वि वग्गुरवेढु भमिउं ।
प्रौयं सम्रायिउ प्राणणिहणु　　वणि वाहें विद्धउं हरिणमिहुणु ।
पवसियमहिलसुयहंतसिहेण　　तिडितिडियतिडिक्कारवणिहेण ।
वेच्छिल्लकुसुमसमवण्णएण　　दीवुच्छवि देहलिदिण्णएण ।
रूवरयपयगह कयखएण　　ण भासिउ भावइ दीवएण ।
एमेव कयताणणि पडंति　　मोहंध सयल सहि खयहु जंति ।
एक्केक्किंदियवसमुवगयाह　　एवड्डु दुक्खु तेहिं जंतुयाह ।
असंरियपचक्खरसामिसाह　　चक्खियपंचक्खरसामिसाहं ।
कंपावियदसदिसिवहरसाह　　अक्खवि तं किं अम्हारिसाहं ।

घत्ता—इय सभरिवि मणे आहूउ खणे अमियतेउ णिवसंसिउ ॥
तेण समायएण जुवरायएण जणणु सिरेण णमंसिउ ॥ ५ ॥

5　१ MBP °ताडणवंधणाइं　२ MBP कय°　३ B सुद्धु　४ MBP °दिसहिं वग्गुरावेढु　५ MBP पावें सपाइउ पाण°. ६ MBPK हय°　७ MBP ककेल्लिकुसुम°, T विच्छिल्ल कोरण्टक　८ M रूवयरपयरगह, BP रूवयरपयगह　९ MBP जहिं　१० M असरिसपच°, T असरिय°　११ MBK दस-दिस°, T दसदिसि°　१२ MBP अक्खमि　१३ MBP णिव°

5　1 *b* °खयाइ° क्षतानि 2 *a* गणियारि° हस्तिनी 3 *a* मासकण° मांसखण्डम् 7 *a* प्राएं प्राय , णिहणु विनाश 8 *b* °रवणिहेण °शब्दव्याजेन 9 *a* वेच्छिल्लकुसुमसमवण्णएण कोरण्टक-पुष्पवत्पीतवर्णेन. 10 *b* भावइ प्रतिभासते 13 *a* असरियपचक्खरसामिसाह न स्मृता पञ्चाक्षरस्वामिनां पञ्चपरमेष्ठिनां सा लक्ष्मीर्यैस्तेषाम्, *b* चक्खियपचक्खरसामिसाह आस्वादित पञ्चानामक्षाणामिन्द्रियाणां रसो रतिसुखं तदेवामिषं यै 14 *a* कंपावियदसदिसिवहरसाह कम्पिता भय नीता दशदिक्पथा मार्गा रसा च भूमिर्यैस्तेषाम्.

6

पराण भणिउं भो भो कुमार धरि धरणिभार मंडेयधीर।
कंचिचकुसुमहु तणहु पणहेण हउं सोसेमि कंपियसयमहेण।
तुहुं देहि कुसुममणहु बंधु ता चवइ तणउ सो मयरविंधु।
मइं पहवेयउ पवमायरण तमणिवय ण वाणविमायरेण।
कामिणि मेहंणि वि अपेक्खयाय पइं मुएवि भुंजमि केम ताय।
तुह पयपंकयपरणयचरीउ हुयारिहुमायमपुंडरीउ।
जिह सम्मथिहउ तिह पुंडरीउ भासणु कहियाहि सपुंडरीउ।
मड़ु तणउ तणउ सो पुंडरीउ रह करउ रज्जु गुणपुंडरीउ।
हउं तुहुं मि वे वि साहुं पवणु तं णिसुणिवि रायं तं वि वयणु।
घत्ता—तो सिसु ससिसरिसु कयकरपरिसु महिणाहें सोमाइउ।
पणि परिठ्ठविउ मउरम्बविउ पुत्तु पुत्तु पय पाडउ॥ ६॥

7

पेरिसेसियचमरमहागएण पेरिसेसियवणहिंसियवएण।
परिसेसियपंकयपसंडपेण परिसेसियमसहवरच्चवेणे।
परिसेसियपाउसेसंतरेण परिसेसियपउएतेउरेण।
परिसेसियससयवणसुंपरेण भयभीए देवें चक्केसरेण।
वसहरसीसहु पमरहु पासि पमाअ वणण गिरिकुहरवासि।
विरोहंति ण हरिणय पुत्र कम्मे सह णमियपतेयणामण हेण।
रयारिविजियपरगुरुमुहाइं सहसु वि णयमासिउ तसुपयाइं।
पण्ण हयो मुणिमयभाविपाइं सह सहसहस रायाविपाइं।

6. १ MBPK कोरि° २ K पीयाणि ३ M मेहणि वणि हउं°; BP मेहणि ण कोह° MBPT कामणि. ५ MBP णिर° ६ MBP तो.

7 १ K adds this foot in the margin. २ K omits this foot. ३ M वरेण P °यवेण but records p °यहवेण ४ M हेण. ५ MBP वणयर

6 1 b मयरेय° तुरि बाहु 4 a पहयेयउ वीरयजम्म् 6 b मुक्त्वय° महिणः °पुंडरीउ म्याज 7 b अस्मिन्दि देशे सपुंडरीउ मध्यम् 10 तो बालक कोमल, 11 पय चालन प्रमा पात्व.
7 7 b समयदीउ वर्त्त यतिनाम.

दिक्खंकियाइं लुंचेवि केस णाणाणिवाहं सहसाइं वीस ।
इय राए किउ णिक्खवणु जाम सपत्त विलासिणि तहिं जि ताम ।

घत्ता—पडिय तवचरणु दुक्कियहरणु लेवि थक्क णियजोग्गउ ॥
किउ मणु अप्पवसु कदप्प[6]वसु होंतउ खतिइ भग्गउ ॥ ७ ॥

8

णिरुद्धय णिराइणा समाणसं विराइणा ।
विमुक्क[1]ओ सवासओ सभूसणो सवासओ ।
स[2]मासिओ तवासओ लुओ कयंतवासओ ।
णिवारिओ कसायओ समाहिओ कसा[3]यओ ।
मईहरो पिसायओ जिओ [4]पहुल्लसायओ ।
चलेहिं जाण साहिया थिरेहिं जाण साहिया ।
दढ दिही[5] हणति सा पराजिया छुहा तिसा ।
सरतु सो वसी [6]अय सहेइ माहसीययं ।
विइण्णवाणरोडरं भरंतरुक्खकोडरं ।
णियाहिदेहकंचुयं घणागमे वि कं चुयं ।
महीहरे भयालए हुयम्मि गिण्ह[7]यालए ।
रविस्स सं[8]मुहो ठि[9]ओ तवेइ मोक्खपथिओ ।
[10]अहिण्णभूतणग्गयं सवाहिरतणग्गयं ।
महाखले वि सामिणं णमसिऊण सामिणं ।

६ P कदप्पु वसु

8 १ T विमुक्कणग्गवासओ and adds सवासउ इति पाठे निजगृहमित्यर्थ २ MBP समाहिओ. ३ P कसाईओ ४ MT पिहुल्ल° ५ MB दिहिं, P दिइ ६ GK यय but gloss अजम् ७ MBPK गिंभयालए ८ M समुहे ९ MBP थिओ १० MBP अभिण्ण°

8 1 *a* णिराइणा नृराजेन चक्रवर्तिना, *b* विराइणा वीतरागेण 2 *a* सवासओ स्वगृहम्, *b* सवासओ सवस्त्रम् 3 *a* तवासओ तपआश्रवम्, *b* कयतवासओ कृतान्तपाश 4 *b* कसायओ क परमात्मा तस्य स्वादोऽनुभव 5 *b* पहुल्लसायओ पुष्पबाण काम 6 *a* चलेहिं चञ्चलचित्तै, *b* थिरेहिं जाण साहिया स्थिरचित्तै परीषहेभ्योऽक्षुभितचित्तै जानीहि साधिता निर्जिता 8 *a* अय अज जिनम्, *b* माहसीयय माघमासे शीतम् 10 *a* णियाहिदेहकंचुय प्रवाहितसर्पकम्, *b* क चुय पतित जलम् 13 *a* अहिण्णभूतणग्गय अखण्डितभूमितृणाग्रम् 14 *a* महाखले वि सामिण महाखलानामप्युपशामकम्

तमो बहुंधरीसुया मणुंधरी ससीसुया ।
धरेवि पुंडरीयवं सिरि व्व पुंडरीयवं ।
परिंविमोयकाविया अणंगिम व्व काविया ।
समंसिरि समाइया अमेयतेयमाइया ।
घत्ता—हुंयपिधि पियवचर सा हंसगइ पिया सरीव महिहरंभके ॥
पयपंकयमाल कुंकुमकपिलु मंसुपवाहु पवत्तके ॥ ८ ॥

9

पुणु सोउ मुएप्पिणु हसियवंतु बोल्लइ णरिंदपयणारविंदु ।
परमेंहिमंतविम्भअमरिंदु संचितिउ मणि अच्चंतमरिंदु ।
पिआर एणमि णवि मारुयंप पिअरविर ताय वेमि वारूयंव ।
मससहाणहु कासु वि णत्थि सिरि विलेबी परम सहायसिद्धि ।
जो परिउ माव णावें विमासु तं वहइ केम मेयणु पासु ।
ण पवउ पुरंधर धीर परउ तहि मरिय ण वच्चु ण पर वि समउ ।
गंधव्वपंचरयणइ सुणाय मंदरमालिणि सुणरिणि णाय ।
विताया मयणइ वणरराय देवीउ भणिय ते वे वि माय ।
घइ किरिडें केउ मर्ग कुंर्ड मणमि सामुमा विरिडें सर्वकनमि ।
णाहि वरएमणीपुरुसासु विभिम्पणु सिरीमापहासु ।
विहुमिणि अम्माहि कम पवणि पाइय केमिरें माहरछु वेणि ।
मप त णोण पंडरवरेर पवहुपणहीरारविणपमेर ।
घत्ता—णवि मणपवणगार चवराहिर दर्पोकरोइ पराइय ॥
पडजम्मनिवेण इण्णिअसिवेण ते पणवंत पक्षोइय ॥ ९ ॥

११ K सावहुया but corrects it to सुलाहुया. १२ P वरि व्व ११ MBP गुणरिणि; K इणरिणि. १४ MP महिमके B महर्के

9 १ MBP °वनिम्मद° K °मति मंद° २ K वणि ३ MBPT मणुरच ४ B णले एणउ. ५ MBP वेनु विरिड ६ M वन BP विरिड MBP सिरलेनु चिरिमर° ९ MBP व मिइमिणि अमाहिवतसु वे मि १ MBP वेणिउ ११ MBP वणहु वेतु

16 b तवासुता धनुष्मिका. 17 b का बिमा एनि. 18 b अपेमतेमया इका बसमोकमानूय

9 1 b °मतिम° दीम 8 b वर्षि वसे तातदन वर्मवरीन 5 b बमण हु कामला 9 b वहुपणद हारमके वक वन मि पुहासुके. 19 b °चे हीए° मुद्रुमम

10

तहु तेहिं समप्पिउ मणिकरंडु उग्घाडिउ तेणुवरिल्लखंडु ।
उव्वेढिवि वाइउ झत्ति लेहु जिह जाउं जोइ महिणाहणाहु ।
जिह दिज्जंतं वि परिहरिवि भूमि हुउ अमियतेउ तस्साणुगामि ।
जिह पुंडरीयसिरि बद्धु पट्टु मेल्लेप्पिणु णियजोव्वणमरट्टु ।
जिह लइय दिक्ख नृवकामिणीहिं जिह मउलियहिं मुक्कावणीहिं ।
जिह तणुरुहेहिं जिह पडियाइं हयकामकोहविच्छड्डियाइं ।
गउ पहु जिह अवरु वि अमियतेउ तुहु पालहि तेरउ भाइणेउ ।
ज जिह तं तिह लेहेण कहिउ ता सुहिणा सुहिहि चरित्तु महिउ ।
चंगउ किउ देवें मयणजूरु जं लइयउ तंवु भवतिमिरसूरु ।
चंगउ किउ तासु तणुब्भवेण जं ग्रेंउ संगहियउ णववएण ।

घत्ता—धण्णउ सो णिवइ परिहरिवि रइ अरिहु जेण मणि भाविउ ॥
णिहिघडदरिसियइ घरदासियइ महियइ को ण विहाविउ ॥ १० ॥

11

इय भणिवि तुरिउ संचलिउ राउ दिसिगयजत्ताभेरीणिणाउ ।
सव्वत्थ रहेहिं ण जाहुं जाइ जपाणु खलइ मायंगु थाइ ।
संचारु ण लब्भइ हयवरेहिं जलु थलु संदाणिउ किंकरेहिं ।
छत्तइं ण कुसुमइं वियसियाइं सिरिमइमुहससहरपहसियाइं ।
चमरइं चलति कामिणिकरेसु णं हसइं रत्तिदीवरेसु ।
दीसति सुवंसारूढकेउ णावइ सुपुत्तकुलकित्तिहेउ ।

10 १ MBP °णुवरिल्लु १ MBPT उव्वेल्लिवि, K उव्वेढवि. ३ K तेण लेहु ५ MBP जोइ जाउ ५ MBP दिज्जती ६ M मियउ तेउ ७ B बद्ध पट्टु ८ MBP आमेल्लेप्पिणु जोव्वणु मरट्टु ९ MBP णवकामिणीहिं १० MP तउ, B तव ११ MBP वउ, K वउ but corrects it to ग्रउ १२ MBP घरदासियइ महिए

11 १ MBP कुमुयइ

10 2 *a* उव्वेढिवि प्रसार्य, *b* महिणाहणाहु चक्री 6 *b* °विच्छड्डिया समूह 10 *b* णववएण यौवनस्थेन 12 विहाविउ विखण्डीकृतो वाधित

11 4 *b* °पहसियाइं प्रभाशुभ्राणि

कीलाइ मिढिप मंडलिप बंठि मयवड सुरगुरुसारिच्छु मंति ।
मायंतु पुरोहिउ विम्हादिट्ठि भमयरउमाणु भणेमिसु सेट्ठि ।
वसबा वि मयणपु कपिवारि संचेवियउ मकरवासयारि ।
विपर्संतपामपुरपहुमेहिं मघु सर्मीयप करयपरिमेहिं ।

घत्ता—मयउरवेगित्वु फुल्लियकमलु तहिं सरवरु मयजोरउ ॥
पं रायहु महिए मायउ सहिए मग्गमगु उम्मारउ ॥ ११ ॥

12

करिकरङगसियमसर्पिङुमखिपु मयमिहुणपिसेवियविडवपुखिपु ।
मयपउण्णेपरकरहखिमनखिपु मयमेत्तभमरगाहरदयमखिपु ।
मयणंपपच्छमहिमसिरिपिकेउ मयमासुहमीहाविसिरिपाउ ।
तहु तीरि विमुक्क छिमिर्ड आम सई सायरसेण छुरि ताम ।
विरंतु मोक्खमापमपरिफल रिसि परिर्मनमु कंतापमिक्ख ।
समचंत नामें पुरहंसरासु सपरत कूमाचाहु तासु ।
ससंत पियेंवि मउखियकरेल सिरिमरपरिरंपणाहवरेण ।
धामाविप वे वि पवसमवसेण यिप चरिंमुणिविषियपंकुसेण ।

घत्ता—सुरसिरकुसुमरयरयमुक्करयमहुयरपंतिहिं काणिंड ॥
मंदयरसमलउ णाणुवजलउ पयहुपयडं पणवाणिउं ॥ १२ ॥

---

११ MB मयवाण ३ K सवगिउ ४ MBP सयरह ५ M रविंड मघु, B° रहिंकिमघु, P रहियनव

12 १ MBP °कवमरर° २ MBP मयरस° ३ K मयवल° ४ MBP सिसिर ५ MBP पोममयव° ६ BP परिमयहु. B समवर BP सर्वघु. ९ MBP मियरि १ MP पारपमय

---

11 ९ ह ड्डि वइर्ड पोलम 12 व ति र वयणा

12 2 मयकंडमयरेताणि-पुरुकाम्बल यर्थ करेणीमि मयणामलयर वासिय ; तस्वीरेकित वासित पत्र 8 a "पयरतिम" पूर्वम् मिरिविकेन पदम् 6 b दूणायाघु मयरहरं सिसिरयु. 9 सुरे लाणि-कुरुयर्थ रेपनी सिर कुसुमरयांसि एत: कुसुमेघु निवता ये मधुकरास्तेषां पंक्तिभि:

13

वंदेप्पिणु भावें चरणकमलु उच्चासणि णिहियउ साहुजमलु।
तं दीसइ भोयणु भुंजमाणु सुरसेसु वि णिरसेसु वि समाणु।
हत्थु वि उड्डंतुं ण होइ दीणु लेंतु वि पाणइं णं वि धम्महीणु।
णिक्कूरु वि कूरहु दिट्ठि देइ णिण्णेहु वि दिण्णुं सणेहुं लेइ।
तिम्मणु गेण्हतु वि वमयारि रसु जाणंतउ रसणिव्वियारि।
णित्थद्दें लइयउ यद्दु दहिउ जगमहिए पीयउ सीउं महिउ।
मणसच्छहु ढोइउ सच्छ वारि इय भुंत्तु भोज्जु वहुदोसहारि।
उच्चाइयथिरदीहरभुएण आसीस दिण्ण तहु मुणिजुएण।
उवविट्ठ णिहित्तइ आसणाइ विहियइं पयपणमणपेसणाइं।
पुणु दीहु वेलु जिणधम्मु सुणिवि जपिउ णिवेण णियसीसु धुणिवि।
घत्ता—रूवइं मुणिवरह सजमधरह आसि कहिं मि मइ दिट्ठइं॥
णवर ण सभरामि हा किं करमि विहिं लोयणह सुइट्ठइं॥ १३॥

14

तो भासिउं विहसिवि मइवरेण तुह तणुरुह दमवर जलहिसेण।
जमलहं पण्णासह पच्छिमिल्लु सुयजुयलु ण याणहि किं गहिल्लु।
पत्थिव जइवर जाणंति सव्वु ता चवइ णिवइ परिगलियगव्वु।
गुणकारणु किं थेरत्तु होइ जरेंणिवु ण महुरत्तणहु जाइ।
महु महुरुं जि दीसइ सयलुं कालु तहुं तणुरुहेहिं मइं मोहजालु।
आयरियउ किं परिणयवएण कम्मु जि वलवतउ किं वएण।
महु दमवर दमियाणगलील गयभवइ समासहि सामिसाल।
अण्णु वि एयहि तुह माउयाहि जइपुगव चक्काहिवसुयाहि।

13 १ MBP सरसेसु णीरसेसु वि. २ P उड्डुह ३ P णउ ४ M दिण्ण ५ K सिणेहु. ६ MBP णिरु णिव्वियारि ७ MBP णित्थड्डें ८ MBP थड्डु. ९ MBP जगि महिए १० MBP सयि. ११ MBP सच्छु १२ MBP भुत्तभोज्जु १३ MBP विहिलोयणह

14 १ MBP तो २ B जइ णिंवु, P जरु णिंवु ३ P महुर ४ M सयल ५ MBP तउ. ६ MBP मह ७ MBP किह परिणयवसेण, T परिणतवयसा ८ MP °भवहिं

13 5 तिम्मणु व्यञ्जनविशेष स्त्रीचित्त च 7 b महिउ तक्रम्
14 1 b जलहिसेण सागरसेन 5 b मइ मयि 6 a परिणयवएण परिणतवयसा

मायंदपुरंधियमहुयराई मयमिराकंपणकिंकराई ।
विरएम्मु कहसु महुं गवड भेउ किं कारणु ता भवर्ष साहु ।
रिसिणा पउत्तु पेरिवत्तमाणु अयथंमु णाम थेधिवि" मियाणु ।
कामो सि पप्प तुहुं अपरणाहु कामेण महाबलु धम्मसाहु ।
घत्ता—थिउ रम्मयगिरिहि मम्मथाडणिपि सासुंदें संथाहिउ ॥
मुउ अयपाहियर सुपिसुवमर सोम्मुणिहि पसाहिउ ॥ १४ ॥

15

कामो सि देउ महिहिंसिउ कोर्ड ईसाणकप्पि ललियंगु चोरे ।
तहिं मरिवि मयंतरि पंतु माउ तुहुं वज्जंघु मेर्हि तमउ ताउ ।
पुणु करइ साहु मयमाणमुक्क सुणि सिरिमइसम्मंतरवक्क ।
गयपासुय पयसिरिसुंवरपसु वयसमु केरेप्पिणु भुवियसु ।
हुइं दोगिरिदिप्पि वणियवीय पिहियासवेण वयसमु वीय ।
सा मयं सायवत्तउं किं पि केवि हुइं देवत्तवि तुज्झ देवि ।
पासेण सयंपहु चविवि तेत्तु हुइं अरणाहु पुण पत्तु ।
सिरिमइ सह सुंदरि मज्झ माय आयम्माहि मियपवंतु ताय ।
जंबूदीवामयगिरिविवाहि पुरिमिढिा मयरणिकेविमेहि ।
धम्ममयावेसि हंसा सामिद्ध दीतउ बरदा पामिय गिद्ध ।
गउ परपाइ पसमायरसमाउ अणुंदिवि पंकम्माहि पराउ ।
पियमयरपियमहि मियमसुविवासि हुउ वणु दिसागयकुम्मवासि ।
घत्ता—ता तहिं मरिहरए समकोहरए पीवेदेंदु भामिउ ॥
रूपारि मायरडी समरायरडो वेतु पउ आवासिउ ॥ १५ ॥

१ M पभिरणाणु २ MBP अयथमु, K अजयमु but gloss अयथर्म सं ११ K थंधवि
15 १ MBPK महिहरिस २ P काउ, ३ P माउ ४ MBP एत्थ बाह. ५ MBP मइ ६ MBP °सुय ७ MBP °वाय ८ MB सुरबरउ ९ MB वरेप्पिणु १ P समीरिय ११ P सुर १२ BP रत्तमिद्ध GK note this as p in the margin : रत्तमिद्ध इति पाठे पुष्पमितिपूर्वे । T रत्तमिद्धु महिहरेमि रक्तमाडो वा पुष्पमितिपूर्वे १४ M पीवेदंडु, BP पीवेदउ

11 a वरि वसवाणु पविसमाणा
15 1 a मारं भम ; 10 a दस्मो कोमेय सामिद्धु स्वामिन 11 b वरा४ माणा, 12 a °मुक्तिदासि सापमस्थामि 41 अमरायरदो वेकमासरस

16

तहिं णिवसइ पहयरिणयरिणाहु जा तांवोलवियलयबाहु ।
चारणमुणि णहयलि ओयरंतु वणि चरियामग्गे पइसरंतु ।
गिरिवरविवरंतरसठिएण मयमासाहारुक्कंठिएण ।
दिट्ठउ पुलिं पिहियासवक्खु परमेसरु णिम्मलणाणचक्खु ।
संभरियजम्मु हउं मइभाउ पत्थु जि चिरु होंतउ पुहइराउ ।
गउ सब्भहु पुणु अलियहि जाउ पसुमासें पोसमि काइं काउ ।
मणु जाणिवि मुणि वि समीउ आउ संबोहिउ साहिउ धम्मणाउ ।
थिउ सणासणि मिगु णिक्कसाउ गउ भिक्खहि भिक्खु महाणुभाउ ।
तो थाहि भणिवि महुरें सरेण पडिगाहिउ झत्ति चक्कसरेण ।
पक्खालिउ जंमिकमजुगु जलेण अच्चिउ पोमेण सकेसरेण ।
गुणवतहु संतहु कयउ माणु तें तहु दिण्णउं आहारदाणु ।
तं पुच्छिउ इच्छिउ णियहिएहिं सेणावइमंतिपुरोहिएहिं ।
सो ताह तेण दरिसियउ पुंलि जइणा पत्तउ सुरवंइसुहिलि ।
ईसाणि दिवायरु णाम तियसु अण्णु वि सुहु पावइ किं ण सवसु ।
गउ महिवइ मोक्खहु खविवि कम्मु तिहिं तिण्णि समीहिवि दाणधम्मु ।

घत्ता—मुणिपयपोमरय कालेण मय चमुवइ मंति पुरोहिय ॥
कुरुभूमिहि मणुय हुय पीणभुय णाणाहरणहिं सोहिय ॥ १६ ॥

17

मंउ मंति कुरुहि गइ आउमाणि कणयाहु णाम कंचणविमाणि ।
उप्पण्णउ सुरु ईसाणसग्गि विप्फुरियविविहमाणिक्कमग्गि ।

---

16 १ K तिहिं २ G तारोलयिय° ३ P णिम्मल. ४ MBP सभरिउ जम्मु ५ MBP सुब्भहु । T सब्भहु नरके ६ MBP मिगु. ७ M तो ठाहु भाणिवि, BP तो थाह भणेवि, K भो थाहि भाणिवि ८ M पुणु कमजुउ जलेण; BP कमजुयलु णरेसरेण, T कमजुगु मरेण ९ MBP इच्छिय १० MBPT इलि ११ BPK सुरवर° १२ BP तहिं

17 १ MBP मुउ.

---

16 1 *a* पंहयरिणयरिणाहु प्रभंकरीनाथः प्रीतिवर्धनः 4 *a* पुलिं व्याघ्रेण, पिहियासवक्खु पिहिताश्रवाख्यः 6 *a* सब्भहु श्वभ्र नरकम् 7 *b* धम्मणाउ धर्मोपदेश 10 *a* सरेण जरेन 13 *b* सुहिलि सुखपरंपरा 15 *b* तिण्णि सेनापत्यादय

देविपइ बलभवणि पइसर्यंकु आयउ पुरोहियउ गलियसंकु ।
सेणावि पहावउ पइसरंति हुउ दिव्वदिट्ठि पीडियतिरंति ।
चत्तारि वि णिहु जि दिट्ठिपमेव पेच्छंति तुम्हु परिवारदेव ।
पई जुउ पुणु हया जासु वम माहासमि विमुक्कहि देसु तेम ।
मइ्सणेउ गिरिमहहि उयरि सोवियसणो हुउ पुण्णपवरि ।
महबल मायर गुइ मति ताम को पावइ पयडु मचिव जाम ।
ह ताय पहावए मरिवि एउ मज्झणहि मकेपणु पुणु आउ ।
सणमइ मरउ तिमसेउ पयमहु सुमुणाउ पमकउ ।
कणमाउ गिवसु जुउ कोहिं मणिउ सुपविदित्तिमयणमणेहिं मणिउ ।
सा एहु बप्प सो दिव्वमुदि मार्णुं पुरोहिउ विमलबुद्धि ।

घत्ता—ममइ पईअमउ रंजियवमउ हसियविमायहु आयउ ॥
दसयवमिमरणा विजयपरहा मणवयहि हुउ जायउ ॥ १७ ॥

18

पणमिणु महिकुमयविजमिणु विणउ मइया हुइ परममिणु ।
पयइ छइ बहुमिमेहयाई तुम्हई सम्पाउ समायवाई ।
पत्ता कउ चिकरू समरभीम गिरिमिह णाणी साहम्मसीम ।
णिमुणवि मयावमि विमिसेपाइ ए वि जिणेदमिगुव विणिवि विचारे ।
पुणु मपइ गउ मयवंत विमम सहुम कोम गाउँल बउस ।
चत्तारि वि परइ ण मामरंति मच्छंति णिसव्व ण वणि चरंति ।
मउ मणणु केणि मउ जमु पिनंति अवियाणव हुव मासिउ पुवीति ।
किं कारणु कहहि मुणिवरिंद ता भणइ हरि मुणि सो करिंद ।

१ MBP मणिमइ ३ P चत्तारि वि णिव वि ४ B देवम ५ MB मायरेण य हुइ P मायरेणमो हुइ K मायरेणं हुइ ६ MBP वदेव

18 १ MBP मिमिया ४ MBP विमण° ६ PT वीगुम MBP मो मुणि

17 4 ... 9 ... 10 ...

18 6 ... 7 ...

इह देसि हत्थिणायउरि रम्मि वणि सायरदत्तु विचित्तहम्मि ।
तहु घण धणवइ सुउ उग्गसेणु सो कामुउ कामिणिपायरेणु ।
पहु कोट्ठागारि अइक्कमेवि भत्तइ भरणइ वेलि मइ लेवि ।
उवणेंतु पणयसीमंतिणीहिं वधाविउ राए णियरणीहिं ।
मुउ कोहें जायउ एत्थु वग्घु ओहच्छइ मइ मण्णिवि सलग्घु ।

घत्ता—होंतउ सूयरउ चिरु माणरउ विजयणयरि वुंद्धिए किसु ॥
महणंदें जणिउ जणेवइमुणिउ णिव वसंतसेणाहि सिसु ॥ १८ ॥

19

हरिवाहणु णामें वूढमाणु दप्पधु समदिरि कीलमाणु ।
णरणाहें णंदणु भणिउ एव माणेण परम्मुह होंति देव ।
त णिसुणिवि धाइउ चवलु डिंभु सिरि लग्गु सिलामउ भवणखंभु ।
मुउ एत्थु एहु हूयउ वराहु पुणु कहइ साहु अचतसाहु ।
उद्धुयधयमालापचवण्णि कइ आसि जम्मि णयरम्मि वण्णि । 5
वणिवरिण कुबेरें जणिउ पुत्तु पणइणिहि सुदत्तहि णागदत्तु ।
वहिणिहि विवाहु किज्जइ धणेण भासिउ मायइ ता सा अणेण ।
वंचिवि चामीयरु णियउ सव्वु ता तहिं चि ताइ तहुं गहिउ दव्वु ।
सुउं मायारउ हुउ एत्थु एहु वणि मक्कडु माणुसमेत्तदेहु ।
णायारि णिसुणि णिव पुव्वयालि सुपइट्ठियपट्टणि तोरणालि ।
होंतउ कदुवि लोलुयउ णाम दियहेहिं णवर रामाहिराम ।
पारंभिउ जिणहरु पत्थिवेण कारवहु पण काराघएण ।

घत्ता—जुण्णउ रायहरु तम्हाउ तरु लेवि वहइ पुरु परियणु ॥
इट्ट विसट्ट जहिं सहस त्ति तहिं कदुइ पेच्छइ कव्वणु ॥ १९ ॥

५ MBP हत्थिणाउरि पुरम्मि ६ BP वत्थाभरणइ ७ MBP घालिमट ८ MBP उवयतु, T उवणेंतु ९ MB तुह अच्छइ, P हुउ अच्छइ १० MBP बुद्धीइ ११ MBP मह णदें १२ MBP जणमग्ग°
19 १ MBP धाविउ चवल २ B अवइत्तसाहु ३ MBP त गहिउ ४ MBPK सुउं. ५ MBP मक्कडु माणुसु ६ MBP लोलुउ ७ M तुम्हाउ भरु ८ B विसिट्ट ९ MB कदुउ, P कदुव

12 b णियरणीहिं वरस्त्राभिः 13 b ओहच्छइ ऊर्ध्वं स्थित
19 5 b कइ वानर 9 a मायारउ मायावी 10 a णायारि नकुल 11 a कदुवि कादविक, b रामाहिराम हे रामाभिराम वज्रजंघ 12 b पण अनेन कांदविकेन 13 तरु शीघ्रम. 14 विसट्ट स्फुटिता

20

णाडेप्पिणु कमकरमणुणाइ परियावेप्पिणु वणियरकसाइ ।
दूइउ वामीयरपुरियाइ पेंहि मिप्पिरेहिं समारियाइ ।
कड्ढयड ण कम वि माविवाइ अट्ठ विसमवम्मु मेवाविवाउ ।
कम्मंभरदु हिम्मइ मणसु माला गुनु वि दावेप्पि करेर कम्मु ।
इय गयरिउ कम्मु करवि गुरु मग्गहिं मिमि मोहवसण सुरु ।
घरि तणउ पवण्णिउ विमसिमासु गउ मामंवरु तमुभहरि पासु ।
पत्तहिं पुर्ण सिमरत्त सिप्प मावण्ण इकु वारिपरि रिप्प ।
मे संवर जाम सुवण्णयाइ तं पिक्खर पुत्तपिजगाम णाउ ।
तें गीणि पचपिवजामपन्न आणाविउ रायहु मोवपण ।
मासिउ वण्ण विसेतु सम्मु तं जावउ रायहु तम्मइ कम्मु ।
मरणीमरकुसविमय अडिय कार्त्तुगणइ विवलुइ पडिय ।
परिरक्खियसमाहिवमायमोहि परमीमेरहिं मं रायवहि ।
मुउ वंचिवि काराणारि पिसु वहिं अमसरि मंतुर तहिं वि वज्जु ।

घत्ता—मेइणु तम्म हउ कइ वि ह्न ण मउ इंदपहावहिं ताडिउ ॥
परममकालुमउ सो मोलुपउ पउजम विम्माहिउ ॥२०॥

21

पुणु वहुरविमासाउरिएण कहिं मये मणेवि वेडूरियण ।
तुम्हइं विभिन्न वि मडु सपु जाय पाहाणें चूरिवि लिवह पाय ।
मुउ कारकसायमकण मासु दद हूयउ पन्तु मारिय णउडु ।

20. १ MP वहि मिरारेहिं, B वाहिमिसेहिं २ M कमरवह ३ MBP एकेन वि करर ४ MBP वरिउ MBP ण ६ MBP वी. ७ MBP व MBP णमुयहि वेवी ९ T मणिय वा कम्मेहिं वणिय वणिया इणि पवे.
21. १ MBP वउ २ MBP कुरूएण

20 ° ३ वहिं वहिं ६ ण मिवमि वासु मिवमिवाल मिवरावमिवा. १३ माविय' कम्मीवमी पया.
21 १ ३ वडूरिएण वेदुरिय

णिसुणेप्पिणु महुमहुरक्खराइं सुयरेप्पिणु गय जम्मंतराइं।
उवसंत पडंति ण भउ ण रोसु मूलउणि भज्ज खवंति दोसु।
पइ छिण्णु गासु मइं गउ दमेहिं णरइंदयणयविरइयदुमेहिं।
णंदुमेसमाणस्सयंबुगाणि गयगाउ पत्तु तुम्हहं गुणाहिं।
अउमइ जणिम तुम्ह जिणवरिंद होसहि णयजुयणामियसुरिंद।
सिरिमइ होसइ मयमयाउ पडिलद्धउ जि दाणसिरिपयरुंदु।
सुरणरसुहाइं सयलइं सिहि ण तुम्ह भुवि होइवि सिरिगेहिणिति।
सम्मारिसुरंजियहयजणोण जिणणाहधम्मअणुगाइयेण।
णमंतेण जज्जमणवरगयमिरेण ते णिसुणिवि पणवि्य चक्कवरेण।
पणविय मोरिहिं मायाणेण गय णिमि णहयरु णहपंगणेण।
सयल सुरसिं घणयरसु सम्माणिवि पत्ताइं वि णियघरु।

घत्ता—सुर्यासहि णीहि णहि णियमियपाणियि सविज्ज मणगहि गह णिगाउ ॥

परिहिय भरहाहिं पणमियकरहिं मयरसहाविसहिगाउ ॥ २१ ॥

22

एत्थंतरु सणुकुहड पवण्णु सियरहिं पुंडरिंकिणि पवण्णु।
सायरसरि पवयणिल्लयहिलि ओलोइय तेण णयंति वणिहिणि।
पणमिय सासुय आमोइएण भविवयमणोहरपुत्तरियसुएण।
सालिगिउ तेण आयणिउ अविउन्तु पान्तु पहम्मियसुह्न।
सिल्लियउ रुल्लुलिमहसिमिसिहंडड ण गयाणइजउणाणरंइउ।
णियंतउणि संविविनीयनिमिरेण तहिं गेण वज्जजंघे णियेण।
सामिसरिसणुणि सयणिहिउ सामि मंति ग्रि किंउ पिउंहणयाणुगामि।

१ MBP °सासण . २ B °कप्फडुमगप°, P कप्पोल्लवप° ५ M महुमेग° ६ MBP °दाणाहि ७ MBP °लालियमारि. ८ M णाउ ति. ९ PK वणयमल° १० M गयहत्थे कमिणि साहिं णिणि णियमोय B गाह ये णामरि गहि णवि गियेसि, P गयहत्थे पमिणि गहि णिय मांतिवि

22 १ M णयागि २ MBP अवलोइय ३ MBP णणिय ४ MBP जामाइएण ५ MBP °गिलिउ° ६ MBP णाहणिउ ७ MBP अविउन्तु वि T अविमु इति पाठेऽप्ययमेवार्थः ८ MBP णा णियसुहि विंसग° ९ MB विपुर°, P विपुर

6 b °कट° मुक्र

22 4 b सुहसु सुपान्तम 7 b विडक णया णु गा मि विटमयानुगामिन

जिणवइ विमलाणियउ वेसु मुहि संमाणिय संचियउ कासु।
विणीय मसार सियंसियंत ओमार्इ पुमाई परिविहियाई।
पडिवक्खु मसमु वि यमइ भीउ थिउ एक्कु यक्खिप्पु पुंडरीउ।
अप्पेणु पुणु परमत्त मारउ सद्धं कमइ उत्तंकियउ करउ।
मेंधु मिमाचगउ ससिमुहउ थिउ रम्मु करेंतु सुरी सुरउ।
का एम मसमपत्तई वर रिद्धि पवरु कामु गामत्थसिद्धि।

घत्ता—थिर पगमुरय णिपवंसयण सुपुरिस का मासंभर ॥
भवनममरहरय विमीइँ रयो पुप्फदंत को कमइ ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहबाहुबलिसंतपवरणकरणं
णाम पंचवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २५ ॥
॥ संधि ॥ २५ ॥

१ MP मणिणार ११ MBP समप्पिसि १२ BP भयुरु १३ MBP वणगु वेगु १ B omits this foot १५ MBP महणेव १६ P विरोहऍ

11 b कइयमाला। 10 ययनमई ललनमतल 14 मार्यवइ गामसीमि

XXVI

कामभोयसुहरसवसट्टो तहु वसुमइहि काइ वण्णिज्जइ ॥
ज जं चिन्तइ किं पि मणे तं त स्सयलु वि खणि सपज्जइ ॥ ध्रुवक ॥

I

जक्खपंको उढ वल्लहालिंगण | मालईमालिया कुंकुमालेवणं ।
उंचओ मंचओ चारुमेज्जोयल | आवरोहारि सोम्हं थणाणं थलं ।
उण्हय भोयण तुप्पधारोहर | रत्तओ कंबलो लूणरत्थ वरं ।
पुव्वपुण्णेण सव्वं पि संजुत्तय | सीययालम्मि तेणेरिसं भुत्तय ।
चंदण चंदपाया पिया णेहली | मल्लियादामयं तारहारावली ।
दाहिणो मथरो मारुओ सीयलो | रत्तकोल्लाणिओ पल्लवो कोमलो ।
वल्लरीमंडवो पोमपुत्तो सरो | वीयणंदोलणालीणओ सीयरो ।
थईथडं दहि सीयंय पाणिय | उण्हयालम्मि तेणेरिसं माणियं ।
फुल्लियामाकयंबोहधूलीरओ | मत्तमाऊरवंदस्स केयारओ ।
णीरधारासुयतवुवाहज्झुणी | सगया सुहवा पासि सीमंतिणी ।
णिग्गलं मंदिरं णिक्कियं भूयलं | धावमाणं रयाल पणालीजलं ।
इट्ठगोट्ठीविसिट्ठेहि विण्णायय | दिव्वगंधव्वय कव्वयं पायय ।
विज्जुमालाफुरंत णह दिप्पह | तस्स महागमे त पि सोक्खावह ।
ईहरे कालओ जाव वोच्छिण्णओ | गेहए धूवओ नाम से दिण्णओ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza –

पैनचवल्ताश्रयाणामचलस्थितिकारिणा मुहुर्भ्रमताम् ।
गणनैव नास्ति लोके भरतगुणानामरत्णा च ॥ १ ॥

GK do not give it

1 MBP रुमओ २ M °मेज्जावर, P सेज्जारय ३ MBP सोम्ह ४ GK मारओ but gloss धायु ५ MBP पोमपुण्णो ६ MB थडथड्ड, P थडथड्ड ७ MBP सीयल ८ M रयाण ९ MBP वोच्छिणओ, T वोच्छिण्णओ

1 4 *b* आवरो हारि स्थूलोन्नत मनोज्ञ च, सोम्ह उष्मसहितम् 9 *b* सीयरो शीकरो जल्लवा, 11 *b* °माऊरवन्दस्स केयारओ मयूरवृन्दस्य केकारव 13 *b* रयाल सवेगम्

सोवसंचारि धूमेण तावं हम्मो ॥ पंगइंदं संमयेण जीमो वमो ।
करयं मणुबो किं जया करूप ॥ होइ मेत्थे सिरीमं पि भाउकम्म ।

घत्ता—जंबूदीवसुराससयो उत्तरकुरुहिं रमणमणोहारिहि ॥
मरिवि चहुवद मयमरिउ उवरि भमिवहु मज्झमणोहारिहि ॥ १ ॥

2

अवमाणहिं णम्मइ णीसरियई ॥ णाई णिरि वि मेयिमेघुदयरियई ।
रुत्ताणिमुहाई णियसंताई ॥ करकमलंगुलिणाउ पियंताई ।
सत्त सत्त दिण णव रंमंताई ॥ पुणु वि पुणु वि उट्ठेपरडंताई ।
सत्त वाकिम पयेवयणाई रंगाई ॥ अवरोप्परु हरकेमि करंताई ।
पुणु सत्तहिं थिराई संजायाई ॥ गयंकुसवाई परिएगुणवायाइं ।
अवरहिं सत्तहिं मविणिउचिवुरउ ॥ णिहिलकलाकलावविणयपरई ।
अण्णहिं सत्तहिं दियहहिं पोढइं ॥ णवजोव्वणमिमायरूढइं ।
ताई तिगाउयतुंगसरीरइं ॥ वरंबरउदहमसाहारई ।
सो वि गासु गेण्हंति तिदिवेसहिं ॥ इय भोमिउ रिसीहिं हयहरिसहिं ।

घत्ता—जहिं वासीयरयरयविपत्तु पाविउ मिहुणं णाई रसायणु ॥
मणिमयकप्पमहीरुहहिं थिउ रवि मत्तावीसं जोयणु ॥ २ ॥

3

जहिं अणिवण्णोवल ॥ वहमेय वयण ।
जणमणु हरंति ॥ थिरथिरउ वेति ।

१ MBP सोमेण ११ B हत्थं मिगमोवाए P मत्थं मिरीमं णसामो पर. १ MBP °हयहो ११ MBP °णारिहो

2 १ B णमिमकुछयवरियां २ MBP णिव T णव सत्ति ३ MBP पद° ४ MPB णर णरोप्पर°; T पुणो सर्दि ५ B पुणिमाणि ६ MBP भामिवर रिसिहि MP णिव B णिउ) T णिउ मज्झारिम्

18 b मिरीये भीमुहं पुणं णा 19 °हु उ मणहो येरो।

2. 4 a णवयणयणयं ससाणि णवयणि णा, b हरकेमि णीसरसोला 8 b °हुवणो सरो 11 णिउ मज्झारिम्

महसहिउ पेज्जु मज्जगु मज्जु ।
तूरंगवृरु भूसंगु हारु ।
केऊरु दोरु वंच्छगु चीरु ।
गेहंगु गेहु ण सरयमेहु ।
ढोयंति तुंग तरुभायणंग ।
भायणविहंत्ति दित्तगदित्ति ।
जे भोयेणक्स ते विविहभक्ख ।
भोयणसयाइं रससगयाइं ।
उवणंति ताइं जणु महइ जाइं ।
पुण्णाय णाय वर पारियाय ।
णवमालियाउ अलियालियाउ ।
मालगकुरुह ढोयंति णिरुह ।
हयतिमिरभावु दीवंगु दीवु ।

घत्ता—णिच्चु जि उच्छंवु णिच्चुं दिहि णिच्चु जि तरुतारुण्णु णवल्लउ ॥
भोयभूमिरुहमाणुसहं जं जं दीसइ तं त भल्लउ ॥ ३ ॥

4

ण दुज्जणु दूसियसज्जणवासु ण त्रासु णं सोत्तु ण रोसु ण दोसु ।
ण छिंक ण जिंभणु णालसु दिट्ठु ण णिद्द ण णेत्तणिमीलणु सुट्ठु ।
ण रत्ति ण वासरु धंतु ण धम्मु ण इट्ठविओउ ण कुच्छिय कम्मु ।
अयालि ण मच्चु ण चिंत ण दीणु कयाइ कहिं पि सरीरु ण खीणु ।
पुंरीसविसग्गु ण मुत्तपवाहु ण लाल ण सिंभु ण पित्तु वि डाहु ।

3 १ MBPKT मयसहिउ २ MBP भूसंगु ३ MBP केऊर° ४ M वच्छग ५ MBP गेहग ६ MBP °विहित्ति ७ MP भोयणेक्स ८ P णिरुह ९ MBP °भाउ १० MBP दीवगदीउ ११ MBP उच्छउ १२ MBP णिच्चु

4 १ MB दुज्जण २ MBP ण रोसु ण सोसु ३ MBP णालस ४ M णित्त° ५ MBP वण्णु, T धण्णु ६ MB मिच्चु ७ MBP पुरीसुस्सग्गु ८ MBP सिंभ ९ MBP पित्त ण डाहु

3 8 *a* महसहिउ हर्षसहितम्, पेज्जु पातव्यम् 8 *a* °विहत्ति विभक्ति भेद 9 *a* भोयणक्ख भोजनाख्या 14 *b* णिरुह निर्दोषा

4 3 *a* धंतु ध्वान्तमन्धकारः पापं च

ण रोउ ण सोउ ण खेउ विसाउ किलेसु ण दासु ण को वि वि परें।
सुरूव सलक्खण मायण दिव्व मगग्घ सुमग्ग समाण वि सव्व।
सुहाइं पिवीसिय सासु सुयंधु कलेवरि भक्खसमाहिवयंधु।
तिपल्लपमाणु थियाउणिबंधु करीसरकेसरि ते वि ण बंधु।
ण वाउ ण मारि ण घोरुवसग्गु अहो कुरुभूमि विसेसइ सग्गु।
घत्ता—जिहिं मि ताइं तहिं संठियइं एक्कमेक्कपरमाणुरइं।
मुंजंतइं णाणासुहइं जाइ कालु पिंडेप्पिणियइं ॥ ४ ॥

5

तहिं वि परिहरेप्पिणु कर सइंभुअप्पण णाम णर।
पत्तसोहम्मसुरसमवेय सव्वसंपयासंवेय।
समहिएण सप्पोवमप्पण सुरवरसिरि पेक्खंतएण।
कालु वि मासिणसम्मयहो कजोवेवे समायमहो।
देवहु तीसियविप्पयहो विप्पवि विमाणु एवप्पयहो।
पुण्णमवसह संभरिउ सं पव्विंयगवेवचरिउ।
थिउ विप्पमवि णा विमाइउ मणविसेसपमाणभउ।
ता पभणइ णरवज्जरिसमु सोपरिउ मणहिंदु विमलु।
मंतु तेण उच्चारियउ करयरसवि णरउच्चारियउ।
सीसें सीसेण वि बेविउ साविवपयायर विष्णविउ।
के तुम्हइं कि आगमणु किं वि वि तुम्हइं वयरि मणु।
महु वहर वेहुतियउ ता गुरुणुविणा बोल्लियउ।
घत्ता—अरणइं तुहुं महपाउरिहि होंतउ मासि महाबलु रायउ।
तरणइं हउं सयंबुद्ध तुह मंति मंतसम्मायविणायउ ॥ ५ ॥

---

१ MBP ण वेर ण सोग ११ MBP सेद ११ MBP add after this सुमि (B सुवि, P सुवे) ण पविय माणिय (B णम्मु ण) सेम तुरेण्णु सुमि विसेसिमम (B °णम). १२ MBP करम १४ M करीसरि १५ MBPE मुवसग्ग १६ MB एक्केक्कणिम्भर

5 १ MBP सहुणर मि २ MBP सुरससिरि. ३ MBP सव्वें तेण P °गेउ ५ P मि. ६ MBP कि अवर तवर

---

9 a सुवंधु सुगन्ध 11 b विशेषयति स्वर्गात्

5 10 a शीर्षेण नमस्कृत्य, 12 a मे कुशीलं तव बोलितं

6

णिद्दाइ भुत्तो म्हि   विवंरतथित्तो म्हि ।
जइया घुम्माईहिं   सिविणंतरे तेहिं ।
दो थण्प दुग्गेज्झ   तइया मए तुज्झ ।
संसारहागाइ   जिणवयणसाराइं ।
मिच्छा रिसी जेहिं   दिण्णाइ ते तेहिं ।
होऊण ललियंगु   मोत्तूण दिव्वंगु ।
भीमारिणिण्णासि   भूमीसु इओ सि ।
मुणिदाणतुट्ठीइ   घरपुण्णसिट्ठीइ ।
तुहु पत्थु जाओ म्हि   णाणेण णाओ सि ।
मंतधिओ होमि   किं णेय जाणामि ।
सगवइविओएण   मइ मुक्कसोएण ।
किउ घोरु तवयरणु   इंदियच्छिंदावरणु ।
सोहम्मि सोहालु   हुउ देउ मणिचूलु ।
सइपहविमाणम्मि   दुक्खावसाणम्मि ।
इह जंबुदीवम्मि   पुव्वे विदेहम्मि ।
पुक्खलहि मेइणिहि   पुरिपुंडरिंकिणिहि ।
पियसेणरायस्स   पसरंतरायस्स ।
कयणाहणेहम्मि   सुंदरिहि देहम्मि ।
जाओ मि इह भद्द   आलोविणीसद्द ।
पीइंकरो णाम   मुणि रामिणीकाम ।
अलिवलयणिहकेस   पीईसरो एस ।
मज्झाणुओ होइ   दिव्वो महाजोइ ।

6. १ MBP विवरति २ MBP हा थण ३ MP add after this णयणेहिं दिट्ठो सि, णेह गओ तो सि ४ B °छुहा°, T °छिहा° ५ MBP आलावणा° ६ MBP पीईकरो. ७ MBP फामिणी°, T रामिणी° ८ P ईस

6. 12 *b* °छिहा° स्पृहा वाञ्छा 19 *b* आलाविणीसद्द वीणासदृशशब्द 20 रामिणी° स्त्री,

घत्ता—सियं विव महाउअहो णिग्गय विण्णि पि णियभरवासहा ॥
जाया सीम सयंपहहो मरहंतहो संसारिपियामहा ॥ ६ ॥

7

अयहियाणि बारण सेजाया विण्णि पि मई सेवोहई जाया ।
मइ सम्मत्तु असेसाहि गमार्थे मायहि जिणहंमणु मम्मार्थे ।
अरिय णरिथ किं संऊ ण किजइ हइपरमायकेल पजिजइ ।
गुणवंतहु दोसु वि ढंकिजइ मयामइ पुणु मम्मि ठविजइ ।
असुरेक्कबद्द जणु ण पियप्पइ सातुइं वेईगुंठ ण पिप्पइ ।
वेजावचु समउ वच्छलें किजइ हियएं संवेहियलें ।
मिच्छु गुच्छु जो धम्मु कहिजइ सम्मदिट्ठिमई सो ण पुंणिजइ ।
बहुर णाहिपहुसियसेम्पर मम्मु कुसेयकुच्छिप्पगुरुसेवर ।
समयपेयरोरपमूहत्तणु अवसें करइ अणरपयत्तणु ।
मच्छर पुरपमगयीविपरउ सिउ मायमिम णाउ हुपसिरउ ।
घत्ता—पेयं किजइ जीपहेय मप्पइ पद सवणु वि आपिजइ ॥
इम्मइ जेम जिपंतु पहु ठं करपासु ण चेउ मपिजइ ॥ ७ ॥

8

सवा पारिरहो मया मोअमहो ।
मया विसलुयो सया सहेतुयो ।
समाहो पमामो सहासो सरामो ।
प सो हीर देवो जं दो हुच्छमायो ।
पठे जस्स पओ मई जस्स पेओ ।

7 १ M ममहि MBP सि सोसु. २ P बसुह° ४ M सेसु हुइन P सेसु पुंसु ब ५ B संजिपयाँ. ६ MBPT °हू ७ MP हुसिजइ ८ MBP °पमहि मइ T पयसियह ९ MBP वीतरगा

8 १ P मसि मसी २ P सत्तुवी ३ MBP सम तुम्म°; T ए व म मम्म हेर

१ ४ प व्वा रि सि मा स हो परजरोहमगाल सर्वलिस्मांसम्भ च
7 3 मजाडि मसिमेजम्मवमु 6 b °हि व सं दितसैम 7 b अम्मासि हिंस हु सिम्मारोलमहि कर्म 10 a हु इ अ मय म अ सिं ग अ ब परिकी सामें एशि b सि इ र ति—सिर हमे इति साइ अरिप
8 4 b च प च म मम्म देव

घड़ जस्स गेहे   रई जस्स देहे।
गुरू सो घि हा हे   जगे मदमेहे।
सपावं सपावा   णवता विगावा।
ण गच्छति सग्ग   ण वा तेऽपवग्ग।
पउत्ता महता   ण कायस्स चिंता।
विसस्सावि हारे   खमा होइ भारे।
पमोत्तूण वेयं   खग वइणतेयं।
जिणिंद अणिंद   सुरिंदोहवद।
विदु वीयरोसं   अहिंसाणिघोसं।
विहाऊण एक्क   णयाणीयसक्कं।
परो को हयारी   जगे मोहहारी।
तिणा जो पउत्तो   असम्मेण चत्तो।
अहिंसापयासो   वियाणागमो सो।

घत्ता—पँत्तीय धम्मु दयापरमु रिसि गुरु देउ जिणिंदु भडारउ॥
लइ लइ तुहुं सम्मत्तगुणु मइं अक्खिउं संसारहु सारउ॥ ८॥

9

भो ललियगत्त   भो धवलणेत्त।
सद्दहसु मित्त   तच्चाइ सत्त।
छद्दव्वभेय   छज्जीवकाय।
पंचत्थिकाय   चउ सुरणिकाय।
णाणाइं पंच   गइभेय पंच।
रिसिवयइ पंच   गिहिवयइं पंच।

४ MBP तस्स   ५ MBK विसस्सावहारे, P विसस्साहवारे   ६ MBP मोहयारी, T मोहयारी मोहदारक   ७ MB एत्तीय, P पत्तिय and gloss प्रतीत्या   ८ MB °पवरु, P °परु

9   १ K adds this line in the margin but scores it out   २ MBP सुरचउणिकाय   ३ M गयभेय

7 *a* हा हे हा कष्टम्   8 *b* विगावा विगतगर्वा   9 *b* अपवग्ग मोक्षम्   11 *b* खमा समर्था.   12 *b* वइणतेय गरुडम्   15 *b* णयाणीय° नमनार्थमानीत   16 *a* हयारी विनाशितकर्माराति . 18 *b* वियाणागमो सो विजानीहि स आगम   19 पत्तीय प्रतीत्य , अथवा प्रतीतिं कुरु

छक्केसमाण मुणि तिण्णि णाण ।
तेरह चरित्त गुत्ति वि विहुत्त ।
णवविह पयत्थ वह धम्मपंथ ।
सत्त भय सिद्ध मय अट्ठ दुद्ध ।
अप्पाणुवाउ कम्माणुवाउ ।
वरणाभिमोउ वरणाभिमोउ ।
जं कहिउ तेण मुणिपुंगवेण ।
णिसुणिवि कमेण तं गहिउं तेण ।
भत्तेण खेम भत्ताइ टेम ।

घत्ता—जिह सद्दंसणवयरेण कोसवरेण वि तिह पडिवज्जउं ॥
वावरवरसिरिरिउंवरेहिं सम्माइसणु मुणिणा दिण्णउं ॥ ९ ॥

10

मत्तिए भविय भवियणरवम्मे गय दिसि पंसभेमि वाहमग्गें ।
कुलिसाउहतवयलु ते किंकर मायराइ ववारि दुरंकर ।
तउ करेवि वाया णिरवज्जहि महविमाणि ईहुमणोवज्जहि ।
कोमपसाय महिमिवद्दुरत्तणु पत्ता पुण्णपहावपहुत्तणु ।
वज्जजंघु सह सिरिमह मज्झर वे वि मणाहं समंकियपुज्जहं ।
दुवे ईसाणकप्पि वर सुरवर सिरिपहमंदिरि णामें सिरिहर ।
तहिं जि कप्पि कुंदेंदुसमप्पहि सोमंविधि सुरगेहि सयंपहि ।
जिणवरणाहविहरमाविज्जें णारिपिंगु जिणेवि ईमरें ।
हूई अमरु सयंपहु णामें सो रूवेण व णिज्जिय कामें ।

---

४ MP रयणई तिरत्त ५ K °पुण्णेण ६ B सिहुणमि P णिहुणमि ७ MBP मविउ MP वह्ण वयणेण B वड्ढमवयरेण ९ MP °दिण्णउं

10 १ P वसुलेमि २ MBP वाहमिगु ३ MBP वज्जजंघु सिरिमइ वह अमर ४ P दुवई ५ P हुव ६ MBPK समरें

---

9 7 *b* तुणि चउदिहि 11 *a* अप्पाणुवाउ अध्यात्मिकसूत्र; *b* कम्माणुवाउ कर्मानुवाद 12 *a* वरणाभिमोउ चरणानुयोग 17 भत्तिरिउं° बहुधा

वग्घंचरु वि णरु मुउ ललियंगउ णिलइ मणोहरि हुउ चित्तंगउ ।
देउ वराहचरु वि संजायउ णामें कुंडलिल्लु सुच्छायउ ।
णंदविमाणि सरयकंदाहइ थणि सोदामणिपुंजु व मेहइ ।
घत्ता—कुरुभूमिहि माणेवु मरिवि कतिइ णाइ मियंकु दुइज्जउ ॥
णियसुहकम्में पेरियउ पहयरि मणरहु हुउ णउलज्जउ ॥ १० ॥

11

होंतउ आसि जम्मि जो वाणरु सुहु भुंजेप्पिणु कुरुधरणीणरु ।
णंदावत्तविमाणइ हूयउ णाम मणोहरु देउ सरूयउ ।
जो सइबुद्धु बुहेहिं भाविउ जेण महाबलु धम्महु लाविउ ।
पीयंकरु तिलोयपीईकरु सो संजायउ केवलिजिणवरु ।
णाणें परियाणिवि सुरसहयरु गउ वंदणहत्तिइ तहु सिरिहरु ।
अमरसहंतरालि पइसेप्पिणु थुउ णियगुरु गुरुभत्ति करेप्पिणु ।
णिवडंतहु भवविवरि मुणीसर पइ महु दिण्णु हत्थु परमेसर ।
पइं सइंबुद्ध बुद्धें जगु बुद्धउ पइं हियउल्लउ कयउ विसुद्धउ ।
पइ जोइयउं तम्मु णीसेसु वि तुहुं समु सहणेसु वि णीसेसु वि ।
तुहुं महु लग्गणखंभु अभंगउ हउ तुह चरणजुयलु सरणं गउ ।
घत्ता—मिच्छादिट्ठि सुदुट्ठमण पावयम्म णिद्धम्म वराया ॥
कहहिं मयणमयणिम्महण कहिं ते मंति महारा जाया ॥ ११ ॥

12

कहइ भडारउ विण्णि कुधामहु गय सभिण्णसहसमइ भीमहु ।

७ K विग्घचरु. ८ MP कुंडिलिल्लु ९ MBP माणउ . १० MBP मणहरु, K मणहर but corrects it to मणरहु

11 K सो. २ MBP °विमाणे पहूयउ. ३ M मणोहर. ४ MBP सुरूयउ. ५ M पीइंकरु, P पीईंकरु ६ MP पीइंकरु, B पीयकरु ७ MB °भत्तिहि, P °भत्तिइ. ८ B करेविणु ९ MP सुद्धु. १० MBP जाणियउं ११ MBP अभग्गउ १२ MB सुदिट्ठिमण, P सुदुट्ठमण

10 12 *a* कंदाहइ मेघाभे

11 6 *a* °सहंतरालि सभान्तरे 9 *b* सहणेसु सधनेषु, णीसेसु निस्वेषु दरिद्रेषु

असहायविहुर संतइ संजोयंतु णियतमंगलु णियविणोयंतु ।
दुक्खपावविवरम्मुहियमइ णिवडिउ णरइ दुरंतइ सयमइ ।
तं णिसुणिवि णिविडिउ गउ तेत्तहि णारउ णरइ णिसण्णउ जेत्तहि ।
पासेप्पिणु तं सतिमिरु कुविवरु भणइ विमाणारूढउ सुरवरु ।
अहो अहो सयमइ सुमरहि महाबलु हउं सो पयररउ कलिमलु ।
मुत्ती सुरवरु जेण मसत्थारि सामिसालु तुहुं रिउकरिकेसरि ।
सुरसुंदुहिगंभीरणिणाएं तुम्हइं तिण्णि वि णिसुणिवि विवाएं ।
गुरुणा जिणवयणम्मि णिउत्तउ सोक्खपरंपराउ हउं पत्तउ ।
जीवदयाधम्मेण परिचत्तउ तुहुं पुणु पावें एत्थु णिहित्तउ ।
दुक्खयहिं मा णिवडहि अप्पउ वीयराउ जिणु मणु परमप्पउ ।

घत्ता—धम्मु अहिंसउ सद्दहि मोक्खमग्गु णिम्मंथु वियाणहि ॥
जीवोयत्थविहारयरिउ मुणि णिग्गंथमोक्खु संमाणहि ॥ १२ ॥

13

पहाणिवंतरप्पी णिरुंभेण करेंती ।
पहू तेण मुणिमो देवालिंद भणिमो ।
इउं हूंति पहिमो सया दोसपहिमो ।
णिण्णिद्दस्स समम्मो अमोहेण वि गम्मो ।
पसुप्पत्तपुरिमं महादुक्खमरिमं ।
पेंतोयून महूरं गओ सम्मसिहरं ।
सुरो सोम्मभावमणो सिपायंचयमणो ।
समो णिहुरदक्खिमो सकाळेण चक्खिमो ।
पिक विविहसमउ महावीरपविचर ।

12 १ P सो सोमु २ MBP पुणरि ३ P सुवर. ४ MBP °परगार ५ MBP °हय-णसी ६ MBP भणु णिणु ७ MB णिग्गंधमोक्खु; P णिग्गंथमोक्खु.
13 १ B करती २ MBP णिरुंभेण करेंतो ३ MBP णसि° ४ M पसुप्पत्त° ५ MBP पत्तोयून ६ MBP सोम° ७ MB °सयर°

12. 18 जीवोयत्थविहाररहिय निर्ग्रन्थमुनिपरीक्षा.
13 5 पशुप्पत्तपुरि मे च पापनाशकम्

मणीणलिणणिलए वरे दीववलए ।
सिरारूढहरिणो महामेरुगिरिणो ।
सुरासाइ सहले विदेहम्मि विउले ।
जलाऊरिया णई मही मंगलावई ।

घत्ता—पट्टणु रयणसंचु सधणु तेत्थु जि णरिंदु महीधर णामें ॥
सुइवसुंभवु गुणसहिउ चावदंड ण दाविउ कामें ॥ १३ ॥

14

तहु गेहिणि सोहग्गें सुंदरि किं वण्णिज्जइ णामें सुंदरि ।
पाउ असेसु वि अणुहुंजेप्पिणु जिणमयसद्दहाणु पावेप्पिणु ।
सयमइ सुहहलेण तहि तणुरुहु हुउ छणयंदविंबसणिहमुहु ।
सो जयसेणु भाणुसणिहयरु जाम विवाहि थरइ कण्णाकरु ।
ता सिरिहरसुरु तहिं जि पढुक्कउ वाउ धूलिउवलोहु वि मुक्कउ ।
तेण विग्घु भीसणु पारद्धउ उच्छावि केण वि सोक्खु ण लद्धउ ।
तं पेच्छिवि वरइत्तें भाविउ पइंउ चिरु मइ कँह व णिसेविउ ।
एम कहिं मि पाहाणहिं ताडिउ एम्व कहिं वि खरपवणें मोडिउ ।
एम कहिं मि रयपुंजें छाविउ एम्व कहिं मि हउ दुक्खें कंपिउ ।
एम सरेवि सुमरिउ णारयभउ जमहररिसिहि पासि लइयउ वउ ।
तउ करेवि थमिंदु पहूयउ धम्मु जि जीवहु अग्गइ हूयउ ।

घत्ता—अइगरुआ वि णवंति गुरु चंदसूरवंदारयवंदें ॥
सामण्णु वि सुरु धम्मगुरु सिरिहरु पुज्जिउ वम्भसुरिंदें ॥ १४ ॥

८ MBP °ऊरिय, K °ऊरिय but corrects it to °ऊरिया in second hand ९ MBPK तेत्थु णरिंदु १० MBP महीधरु ११ MBP °वसुब्भव

14 १ P गेहणि २ MBP जिणमइ° ३ K पालेप्पिणु ४ MBP °सणिय° ५ MBP सिरिहरु ६ K omits this foot ७ MB कहिं मि ८ BK पाहाणहिं ९ MBP णायर° १० MBP तउ, K वउ ११ MBP सग्गहु, K सग्गहु, but corrects it to अग्गइ

10 *a* मणीणलिणणिलए मणिमयपद्मस्थाने, *b* वरे दीववलए पुष्करार्धद्वीपे

15

सुउ सुरवि णियकाउ सिरिहरु वि सम्माउ ।
ससिसूरदीवम्मि एह जंबुदीवम्मि ।
हरिविंधगिरीसस्स मेरुगिरीसस्स ।
पच्छिमविदेहम्मि सुरविसिविदेहम्मि ।
णिरिच्चवसीमाहि चमरिहि सुसीमाहि ।
सुरवहि णरणाहु पवि णस्स ण एणाहु ।
जा पोढ संवरइ जो मिरिसेणु णरइ ।
जो कामु परिहरइ परमारिरइ हरइ ।
जो माणु णिम्महइ महएण संगहइ ।
जें कण्णि कंचि हरिसु जे जे किउ महहरिसु ।
जें कोहु णिम्महिउ पुरिसत्तु जें महिउ ।
मउ जेण णिहुणिउ मणु जेण थिरु धरिउ ।

घत्ता—एवं सोहम्में गुणेण णावइ उप्पत्ति णं इंदीवो ॥
किं वुच्चइ अम्हारिसिहिं सुंदरि णेय णाम सहु दीवो ॥ १५ ॥

16

सुरेयण सम्मु सुपच्चिणु मायउ वाहि गम्मि को जेयणु आयउ ।
तेण सुसिरिहिरामेण सुवाणें णं पवणट्ठे धम्मक्खाणें ।
सुमिरिहि वि मणगुम्मायपबारी अमयघोसखक्कवाहि केरी ।
सुय सीहाणिविणियदेवेरम परिणिय पवरवि णाम मणोरम ।
जो सिरिमाहि वीर स सवंपहु सुप्पहिरिसुय वसुपुच्छपहु ।

15 १ M हरिविंध° २ M सुपच्छोहम्मि ३ MBP णिरिसु णरइ. ४ MBP णवहरिसु. ५ P कि ण रउ ६ MBP सुरवहि K सुरवइ B सुरवि.
16 १ MBP णिरिहय २ MB पुण्णाहु

15 8 a हरिविंधगिरीसस्स हरिणा इन्द्रेण सेवितो गिरि गिरीशः तस्य 8 b एणाहु एणाक समावरोण
16. 4 a देवेरम इत्यो 5 b वसु पुच्छाहु वसुपुच्छ राजः

पुत्तु मणोरमाइ सजणियउ केसउ णामें जणवइ भणियउ ।
जो सद्दूलजीउ चित्तगउ सग्गहु णिवडिउ कालवस गउ ।
सो वि विहीसणेण सियणेत्तहि हुउ सुउ वरयत्तउ[3] पियदत्तहि[4] ।
जो चिरु कोलजीउ कुंडलसुरु[5] सो संपाइउ[6] पुणु जम्मतरु ।
णंदिसेणराएं अणुरूवउ तणउ गणतमईहि पहूयउ ।
मयणहिं वरसेणु जि जणि कोक्किउ जो वाणरह जीउ मइ तक्किउ ।
सो जि मणोहरु माणव सुगइहि रइसेणें हूयउ चंदमइहि ।

घत्ता—तहु चित्तंगउ णाउ किउ णउलु[7] मणोहरु सुरु सग्गायउ ॥
जो सो णिविण पहंजणेण पुत्तु चित्तमालिणियहि जायउ ॥ १६ ॥

17

सतमयणु जाणिज्जइ णामें ए णरवइसुय सुहपरिणामें ।
कय रिसि सुविहिहि सुविहिहि सहयर अभयघोसराए सहु किंकर ।
विमलवाह जिणवइणहत्तिइ[1] गय विविहच्चणवण्णविहत्तिइ ।
अभयघोसु जिणघोसु सुणेप्पिणु चक्कु[2] णिहाणइं वसुह मुएप्पिणु ।
कामकसायविसायविहंजणु हुउ मुणिवरु णिग्गंथु णिरंजणु ।
पंचसयाइं सुयाहं अणिंदहं अट्ठारहसहसाइं णरिंदहं ।
तेण समउ दिक्खिय हयराया वरदत्ताइ वि तहिं रिसि जाया ।
सुविहिणिहालियकेसवदेहें[3] घरवइ सठिउ णइणेहें ।
पंचाणुव्वय तिण्णि गुणव्वय चउ सिक्खावय कय वज्जिय मय ।

घत्ता—जेण सचित्तु णिरोहियउ इंदियँ[4] विसयरसेसु ण थक्कइ ॥
तहु माणवियहु घरि जि तउ जो अप्पाणउ दडेंहुं[5] सक्कइ ॥ १७ ॥

३ MBP वरदत्तउ ४ MBP पियदत्तहि ५ MBP कुंडलिसुरु ६ MBP सपाइउ ७ MBP णउल
17 १ MBP °वदणभत्तिइ २ MB चक्क ३ MBP णियसुवणेहें ४ P इदिउ ५ MBP दडिवि

10 *a* अणुरूवउ आत्मसदृश

17 1 *a* सतमयणु प्रशान्तमदन 8 *b* विविहच्चणवण्णविहत्तिइ अर्चन पूजा, वर्णविभक्तयो गद्यपद्यादिषु विविधभागा, विविधा अर्चनवर्णविभक्तयो यत्र

18

वंसेण बउ मामहिउ पोसणु सावित्तयविरमणु उववूसणु ।
बाउरि पारिसगपरिचयणु पंमयेर मारंभसमुज्झणु ।
दुविहु वि संगमाउ मयगम्मिउ पाउँ ण काइँ वि मणि मणुमण्णिउँ ।
णिद्दिट्ठ ण तेण पविवज्जउं मुत्तउ पयडिउ देण वि विज्जउं ।
भंतर संघायसवंजणणु कयिवि पणु मणुंउ दंसणु ।
तापयिभोयं मेरपि मेल्लिवि सीलयायमाउ पवज्जिवि ।
जियतउ विसु परिप्पिणु चसउ तहिं जि तासु आर्यउ पविचालउ ।
था पि दुवीसंदुहिउरिसागम दंसाइयर ण मवपाउस ।
चएत्तय वरसय जियमय सतमयव मुणिवर विसंगय ।
ए चत्तारि वि बाउयिमामहे तत्थु जि जाया मणिह समाणहे ।

घत्ता—किं ससि मरउ[illegible]पयउ पं मइकहिति जिणिंदिं जागवि ॥
ममुयवर गुणगणु गुणहु पुप्फयंतु सुरगुरु दुद्धसिरमवि ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे मोक्खभूमीसिरिहरसमंघवमुंगिड
केसपरंपरपरिवणणं णाम
छव्वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २६ ॥

॥ संधि ॥ २६ ॥

18 १ MBP हणु २ P णामाणु, ३ M जिय ४ P काउ वि काइ ण ५ MBP वज्जणु ६ MBP मणमहर° P वरिसिय MB पविजमाउ; P पविजमाउ MBP °उयरहें ण (P काउ) पाउ ९ M मइकहिंति ण ११ MBP णियत, १२ MB दुद्धसिरमवि १३ MBP °सुमिरि°

18 8 b दंसाइयर हणणु 9 a जियतउ जिण णाउ णामी णु णमु 10 a माणहे समा जिणणं देवाणं

XXVII

सजायइ विच्छायइं तेओहामियचंदहो ॥
णियंगइ मयलिंगइ अच्चुयकप्पसुरिंदहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

अइलोमसहाव महारउद्द सचल्लिय चल ससिरवि बलद्द ।
जिंह वर्चाव कालरहट्टचारु घडिमालइ लंघिउ आउणीरु ।
अप्पउ जाणेप्पिणु थियलियाउ छम्मास समच्चिवि वीयराउ ।
सिग्गिणिहिँ णिरहु तहु चरणजमलु भवियहु भवणासे वि चित्तु विमलु ।
चुउ कालेँ अच्चुयसग्गणाहु कहु कालेँ किर कवलिउ ण देहु ।
इह जंबुदीवि सुरगिरिहि पुव्वु किं भणमि विदेहु विलासदिव्वु ।
रमणीयउववणावलिणिवेसु तहिँ वर पुक्खलवइ णाम देसु ।
बहुवण्णमणिसिलाबद्धभूमि पुरु पुंडरिकिणी तेत्थु सामि ।
हरिमउडपडिच्छियपायरेणु णरणाहु जिणेसरु वज्जसेणु ।
मुहससिजोण्हाधवलियदियंत सिरिकंता णामेँ तासु कंत ।
सो तियसराउ हयदुरियवाहि तहि हुउ णामेँ वज्जणाहि ।

घत्ता—सग्गायउ सभूयउ वरयत्तु वि तहि बालउ ॥
विजयकउ हरिणकउ ण उग्गमिउ सुहालउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनान्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it

1 १ MBP किं वण्णमि २ MBP घित्तउ ३ M रिंगि° ४ MBP चलणजुयलु ५ MBP भवणास विचित्तु विमलु ६ P जंबुदीउ ७ MBP °उववणावणि° ८ MBP तहिं पुक्खलवइ णामेण देसु ९ MBP पुरि

---

1 3 *b* बलद्द बलीवर्दौ 11 *a* हरि° इन्द्र 15 विजयकउ विजयनामा, हरिणकउ चन्द्र सुहालउ सुखालय, सुधालयोऽमृतालयश्च

2

भरहेसु वि हूयउ चक्कवट्टु णिरसियउ णामें पुणु जयंतु ।
सुरलोयहु चविवि पसंतमयणु मयराहरु हुउ पडुतवयणु ।
ए सहुलोयहु चउ सहाय जाया सुवरायहु छह भाय ।
हेट्ठिमगवज्जविमाणयासु मेहेप्पिणु ओम्मधु माणवासु ।
भायरु भायरु भायरु सुयासु मायंदु वि णाम महंतवासु ।
भद्दमित्तु भकंपणु हूयउ पीढु धम्मेमित्तु वि तेत्थु वि गरुयपीढु ।
जे बज्जजंघमयवि मित्त तासु रायहु वण्णलमेवाहिवासु ।
होंता चिर पयहिं विहिवसेण हूया चत्तारि वि सहुं जसेण ।
ते देविवि पम्मि महासरंति ताहिं वि सुरसिवसुरत्ताणपरंति ।
सुसिवेसा वेवसंदोयरासु को होइ वेगु जिणमायरासु ।
पलेप्पिणु मयवक्कमवेणु तेत्थु वि पुरि केसरु सा वरिंदु ।
चविऊणं सुरवामसमाहि सिहु जविउ कुमरे वंतमहि ।
घत्ता—हयतूरहिं गंभीरहिं वंधुयणु मायंविउ ॥
वंमाणें मणवाणें पचवेउ वि सा सहिउ ॥ २ ॥

3

पच्छहिं विणि हरिय समागएहिं मासिउ कि तुडुं मोहिउ मएहिं ।
कि विणुणि तुह दिव हएहिं जेहिं रंजिओ सि बालीरएहिं ।
तुडुं देवदेउ तेलोक्कणाहु तहिं मण्णहि किं चिर बोहिलाहु ।
हय संबोहिउ लायंतिएहिं सो वमसणु कयसंतिएहिं ।
सिंगारमारवेहमरहु पमिणाहिहि वंधिवि रायपटु ।
संवयणवि पाणि चिमलचलु किपउ तित्थंकरेण णिपणिपउ णिवउ ।
वण्णवरं तायहु धम्मचक्कु पुत्तहु मसिसासहु रयणचक्कु ।

2 १ MBP चविवि २ MBP भाउयरु वि ३ G वम्महु. ४ MBP भद्दमित्त ५ M सुमेणु, BP वम्मेणु ६ MBP वरसेया. G सुदीमरासु M सुरयणु°, BP मधु वरयम्मामुं° ७ MBP केसर
3 १ M योहिउ २ M विहु ३ K करि किर

2. 4 b चम्मधु माणवासु मानवस्य करपत्र 11 a °वधु एत्थ
3 1 a समासणु केवलासम्

ताएण पराजिउ मोहचक्कु पुत्तेण वि णिज्जिउ वइरिचक्कु ।
तायहु सठियँ णिहि समवसरणि पुत्तहु वि णव वि सभूय सराणि ।
तायहु इंदा वि करति सेव पुत्तहु वि भिच्च गणवद्ध देव ।
हुउ ताउ धम्मवरचक्कवट्टि सुउ छक्खंडावणिचक्कवट्टि ।
घत्ता—सिरिँ मेइणि सुहदाइणि जुण्णउ तणु व वियप्पिवि ॥
पविद्धतहो णियपुत्तहो पच्छइ रज्जु समप्पिवि ॥ ३ ॥

4

अंगुलिदलु णहपहकेसरालु सुरवरहंसावलिरवबमालु ।
मुणिभमरपीयमयरंदविंदु आसघिउ पिउचरणारविंदु ।
पव्वज्ज लइय धरणीसरेण विजएण वइजयंतेण तेण ।
सवेउ विवेउ पराइएहिं धीरेहिं जयतवराइएहिं ।
तउ लइउ सुवोहु पत्थिवेण संतेण महावाहुं णिवेण ।
णीसेसजीवविरइयकिवेण पीढेण महापीढाहिवेण ।
धणदेवें णिवइघराहिवेणें ।
सज्जीवें पहुरयणुल्लएण णिम्मुक्कविविहरयणुल्लएण ।
दस रायहं सुयह वि दससयाइ जइभावहु तेण समउ गयाइं ।
एक्कु जि विहरइ रिसि वल्लणाहि परिगणइ संदेहि घुलत णाहि ।
घत्ता—महि हिंडइ तणु दंडइ णिवसइ कहिं मि णिरासइ ॥
भीसाँवणि ठिउ पिउवाणि सुण्णावासपएसइ ॥ ४ ॥

5

दसणविसुद्धि गुरुविणयसारु सीलव्वएसु अईअणइयारु ।
णेरंतरु थिरु णाणोववाउ सत्तिइ तउ णिरु सवेयभाउँ ।
किउ वज्झब्भतरगंथचाउ मुणिसंघहु वेज्जावँच्चजोउ ।

४ MBP णिहि सठिय. ५ B मिरिमेइणिहि सुहदाइणिहि ६ M रज्ज

4 १ MBP °दल २ P सुवाहुहु ३ MB add after this line धणय व्व विविहदव्वाहिवेण ४ M भीसावणि पिउववाणि, BP भीसावणि थाणि पिउवाणि

5 १P अइसणइयारु. २MBP णाणोवओउ ३ MBP सवेयचाउ ४MB वेज्जावज्ज°, Pविज्जावज्ज°.

9 *b* सरणि गृहे.

4 10 *b* णा हि न + अहि, अहीन् सर्पान् न गणयति 11 णिरासइ आश्रयशून्यप्रदेशे अभ्रावकाशे.

झियमसिपउरसुयसाणुमचि तें विरइयपयवाणि परममाहि ।
छमोसपसु णावइ हामि मरहंनमग्गु पायडइ णाणि ।
मज्झासु करइ कम्मिमविमसमणु मच्चउसु पबोहणु धम्मरयणु ।
मीराए सधुं रवहारणाई मर्दहंगहु सामइकारणाई ।
पयई मपवेम्मारोहणाई तेम्मेत्थपंकमसाहणाई ।
मावेण तेण संमाविणाई णारं दुम्पिवं जुत्तावियाई ।

घत्ता—संपुण्णउं वर विण्णउं कालकमेण वि सवउं ॥
सगपियरहो तित्थयरहो णाउं गोत्तु तें मवउं ॥ ५ ॥

6

को पम वेउ तवेण पुण्णु का सवार किर पणु पुण्णु ।
उग्गतउ तत्तु मारत्तउ तत्तु दित्ततउ तत्तु संपीणयणु ।
आमोसहीहिं खेलोसहीहिं जल्लोसहीहिं विप्पोसहीहिं ।
सव्वोसहीहिं णावइ सहीहिं सो सहइ साहु दंसियमहीहिं ।
तहु कोट्ठबुद्धि बरबीयबुद्धि संभिण्णसोत्त णामेण बुद्धि ।
पायाणुसारिणी मवर बुद्धि उप्पण्णी तवविसिरिपरिद्धि ।
अणिमामहिमालघिमाइ सिद्धि सुरसेविं महीयमहालयंसिद्धि ।
सो सुदुमसंपयपयरुरण्णु करियउ गुणरोसु अणुमकण्णु ।
सीसिसमाहसंदोहसमणु सिरिपिहमहिहरमेहमहि समणु ।
माहारसरीरइं णाउ करिवि पाडिवणगमणमरणेण मरिवि ।
सव्वत्थसिद्धि हुँपइरि सुपणु महामिणु हुपउ दिवि वरमाणु ।

घत्ता—पेहिवविसमहिं विहिवविसमहिं दिणु सरीरु सुपण्पिणु ॥
सुरवरमउ मरहेसरउ मप्पाणउ ओमप्पिणु ॥ ६ ॥

५ P जणसुणणु. ६ MBP णायानिणि सोणा G मव्वमव्व पेह° ८ MBP तेमेम°

6 १ MBP णामोसहीहिं खेलोसहीहिं पेलोसहीहिं विप्पोसहीहिं (P विप्पोसहीहिं) २ MBP सुरसेवि, T सुरसवि. ३ MBP °महालसिद्धि. ४ MBP सुहु. ५ MBP सुपरासु ६ M सिरिपहमहिहरमेहमिहि, B सिरिपहमहिहरमेहमि, P सिरिपहमहिहरमेहमिहि, MBP पडमणमरणमरणेण M हुपरि वरो, BP हुपरि वरोहु, K हुपरि वरणु T वरणु ९ BP वरिविवमहि

5 6 ० कम्मिमविमसमणु कम्मि पाप दोसो वा तेन मलिन मलिनता तस्य शमनं शमकः

6. 7 ० हुरयमहि खेलमलसहीहिं 8 सुहुमसंपयपयरुरण्णु सूक्ष्मसंपरायस्य चरमं सम्पराय्यकरणात्. 9 ० णयणु रमिव 11 ० हुपइ हुवोय

7

अवहीइ तेण जाणियउं जम्मु पणविउ जिणु जिणवरकहिउ धम्मु ।
घणमणिमऊहपिंजरियमग्गि तेसट्ठिपडलसिरिचूलयग्गि ।
सिवपयणिवासु सिरिसोहमाणि बारहजोयणहिं आपावमाणि ।
पिहुजंबूदीवपरिप्पमाणि हिमसंखससिप्पहि तहिं विमाणि ।
पविणाहभाउ कयधम्मसेव अट्ठ वि जाया अहमिंददेव ।
णव ते परमेसर सुकयपुण्ण सुविसुद्धफलिहमाणिक्कवण्ण ।
तणुमाणें जाणिय रयणिमेत्त अहिणवसयवत्तदलसरलणेत्त ।
ते सुक्कलेस मज्झत्थभाव अपिसुणसहाव परिहरियगाव ।
मउडग्गघुलियमंदारदाम पवियाररहिय संपुण्णकाम ।
खेत्ताउ ण खेत्ततरहु जंति उत्तरवेउव्विय तणु ण लेंति ।
वरिसहु तितीसंसहसहिं असंति तेत्तियहिं जि पक्खहिं णीससंति ।
तेत्तीससमुद्दोवमु जियंति जगणाडि असेस वि ते णियंति ।

घत्ता—णाइंदहो खयरिंदहो तं णउ झसधयमद्दहो ॥
पुहईसहो ण सुरेसहो ज सुहु जगि अहमिंदहो ॥ ७ ॥

8

गयगव्व भव्वत्तणारूढ धरणीस पुणु भणइ रिसहेसरो णिसुणि भरहेस ।
जयवम्मु होऊण सणियाणदोसेण जाओ मि खयरिंदु कयधम्मलेसेण ।
होउं महाबलिण संणासु मइ कियउ सइबुद्धबुद्धीइ बहुपुण्णु संचियउ ।
तहिं मरिवि ईसाणि ललियगु सुरु जाउ तेत्थाउ अवयरिवि पविजंघु हुउ राउ ।

7. १ MBP °कहिय २ MBP °सिरिचूलिय° ३ MP अपावमाणि, B आयावमाणु ४ K पविणाहि° ५ MBP add after this दहमउ घणदेउ उप्पण्णु तेत्थु, आहिलच्छि णिरतरु सोक्खु जेत्थु ६ MBP °सरिसणेत्त ७ MBP परिगलिय° ८ MBP पवियार° ९ MBP सउण्ण° १० BP तेतीस° ११ P तेत्तियहहिं पक्खहिं १२ MB तण्णज्झसद्धयचिंधहो, P तं णउ सुहु जयमद्दहो, T झसद्धयमद १३ MBP पुहईसरहो ण सुरेसरहो.

8 १ MBP अजवम्मु २ MBP सुणियाण° MP जाओ सि ४ P सइबुद्ध

7 9 *b* परियाररहिय प्रतीचाररहित. 13 झसधयमद्दहो झषध्वजेन कामेन मन्दस्य विषयव्यावृत्त्यनुद्यतस्य

कुरुपयपविमल पुणु वि दीवम्मि कप्पम्मि सिरिहर सोहम्मीस इंदसविमाणम्मि ।
पुणु सुविदिविविदिविदियविमलसामण्णेण मसु सुरवि हवे हूउ मोक्खसमसंगिए ।
पुणु वज्जणाहेण दोरूय मे भिण्णु परियाणियम्मकरणु तवचरणु संपण्णु ।
सोम्मरिय महासिंदु होइं महविहद पुणु मह इणा मई पल्प ठिप्पयह ।
गहवासुया मणसिरी विहयमण्णपसुवि कामंव विण्णाणिणी विहव वणिवीत ।
आपा पुणा सहणा वज्जेहस्स सिरिमारिस सीमंतिणी कमियदेहस्स ।
सिरिमामहीसस्स मेय पुणु वि कुरुमारि पुणु पवि सयंपहु सुंदरवि सुयारि ।
केसवु पुणा मयिवि संभूउ पडिमहु संसारि संसरइ जमि वंत इह पहु ।
मणहेउ वड पविवि पुणु हुयउ महसिंदु रुयणरिय सरयम्मि सेंकमिउ पं चंदु ।
तम्हा समावरिवि कुसलंससपसंसु एहु पत्थु कप्पयम्मु अरयाइ सेयसु ।

घत्ता—मसु पिसह जिणु चंदह तिरयणाइं मणि भावइ ॥
समरयणु सुवरयणु गहणु व माणुसु वि पावइ ॥ ८ ॥

9

जो मरवर वासें मासि पिउ आहारमारिससमापमिउ ।
भरयम्मि वडरथइ माहिवि विहुर पुणु हुयउ पुत्ति वज्जकुडिकणउर ।
पुणु वेउ दिवायर भरयरसु जइ पंचजामह सो दिव्वयमसु ।
पुणु पवि सुवाहु विज्जम्ममेरउ विहिविवयवेह महसिंदु जाउं ।
मणुइंजि वि आयउ पल्लु मरहु मइ सुउ सा हामरि हुइं वि सिवइ ।
पीसंमरथ वसुपा सेणणु कुरुमणुपंपरामव सुव पवेण्णु ।
इयपंकु मभपसु रिसिपीढु गयविवदेह पुणु हुवेउ पीडु ।
सव्वत्थसिद्धि मेंइ सुउ मरणु पुणु पहु पाइयउ वम्भदेवु ।

५ MB सुपविमाणि ६ वय P सुराधीस दुइ चीस° ६ MBK सपुण्णु ७ MBPT महपविवि ८ MB °वीहल्ल ९ MB सुय I सुय and gloss सुना १ MBP पत्तमह वरादि. ११ MBP सेकमिय.
9 १ MBP सेसमरु २ MBP °भाउ ३ MBP काहु ४ M fr. ५ MBP सणुपु ६ M °बसासह MBP पसुहु P मर्के° ६ MBP पत्त ९ MBP पहु तथा सुहु T भरहु वसायर-वासिरहेरविल

8 बहुरविहरह यम सिहरा 9 b सिहय सिसिम 10 b सवमवि सर्वसिद्धि
9 2 b पुडि भाव 8 वरेगु सामवत्थामिरयोवहिय

जो [11]होंतउ सुइरु महीसमति कुरुकुवलयमाणउ अमियकंति।
जो पुणु जायउ कणयाहु तियसु आणदु णाम होएवि सवसु।
हुउ पढमहिं [12]एहु चविवि साहु पुणु [13]सो महाबाहु धरि[14]त्तिणाहु।

घत्ता—गउ इट्ठहो सव्वट्ठहो णट्ठहमिंदसरीरउ॥
हुउ भुयबलि पसमियकलि केवलि भाइ तुहारउ॥ ९॥

10

जो रायपुरोहिउ समियडमरु कुरुमणुयपहजणु पवरु अमरु।
धणमित्तु पुणु वि [1]हउ सुहपहाणि ओइल्लु[2] अहविंदु पर[3]मठाणि।
पुणु हविवि महापीढु वि स[4]मेउ सव्वत्थसिद्धि संभूउ देउ।
सो मरिवि महारउ णतविजउ उप्पण्णु पुत्तु जीवेसु सदउ।
जो आसि मरेप्पिणु उग्गसेणु होएवि वग्घु मुणिचलणलीणु।
कुरुमाणुसु सो[5] चित्तगयक्खु वरदत्तु णराहिउ कमलचक्खु।
अच्चुइ समसुरु हुउ विजयराउ तवच[6]रणें खीणु करेवि काउ।
सव्वट्ठइट्ठु ववगयसरीरु जसवइसुउ [7]एहु सोणंतवीरु।
पहिलारउ हरिवाहणकुमारु पुणु सूयरु पुणु कुरु अज्जसारु।
सुरु[8] कुडलिल्लु वरसेणु संतु समविबुहु पुणु वि जो वइजयंतु।
अहअमरणाहु सजणियविणउ तहिं चुउ अच्चुउ हुउ मज्झु तणउ।
धणि णागदत्तु वाणरु [9]पलासि अज्जउ हूयउ कुरुभूमिवासि।

घत्ता—[10]सुमणोरहु सुरु हयदुहु पुणु चित्तगउ परिय[11]उ॥
संचियसमु सुरवइसमु पुणु जयतु णामें णि[12]उ॥ १०॥

११ B सो हुइ १२ M एहु चएवि, B एहु त चएवि, P पहु चएवि, T पहु अहमिन्द्र, १३ MBP सुमहा° १४ P धरत्ति°

10 १ MBP हुउ २ MBP ओविल्लु ३ MBP पढम° ४ PK सहेउ ५ K सुरु चित्त° ६ P तवयरणें ७ P एहु अणतवीरु ८ MBP सुर ९ P फलासि १० MBP समणोरहु ११ MBP पत्थिउ १२ MBP णिउ

10 2 *b* अहविंदु अहमिन्द्र 7 *a* समसुरु समारिकदेव 10 *b* समविबुहु सामानिकदेव,, 11 *a* अहअमरणाहु अहमिन्द्र 14 सुरवइसमु सामानिकदेव

11

पुव्वविदेहि महमीसरू मार्कमाणिवाडि हूयउ विमाणि माणिक्कपयडि ।
जा सो दुवंसेणसुरिपभीरु हुउ समतागउ तुउ णाम धीरु ।
णाउस कंदुर घोढय सुपउ जा चिउ मिरिकालयवि घरागु युवरु ।
पुणु मस मणोहरु ममयर्मीरु पुणु मंतमयणु परंगाहु जाउ ।
पुणु हरिसमाणु णिम्मासु णाउ मपराजिउ णामें णिवकुमारु ।
पुणु मंतिमितु सुरणासणासु सुपसिद्ध मइवर तिमिरणासु ।
मावेप्पिणु सुर सुर मारुवदि सो एहु धीरु मडु तणउ मेहि ।
जा मणाउंममवि मज्जु णहिवि सालुंमरि मं परमपकुहिवि ।
हुं मंपहि मं पम्मणीकु णाहुणमिहि सहुं मस सुमीलु ।
जा सिरिमंरमवि पंडीय णाय सा ममिवि एत्थु रमणीय जाय ।
धमी वि तुम्ह जाणहि महीस जणु मोहें तम्मइ णहु कीस ।
परिममिपसपकभुवणत्यमीरु केणिउ किर कहमि मणायणीउ ।
एंमं धेउ जइ बहुदवणारि मणवरएपुविहम्माणुपारि ।
सा जत्थि णवि जीहि जिउ ण जाउ पुणु पुंच्छिउ मरहें धीयपाउ ।
घत्ता—कइ हम्मइर कइ सिरिहर कइ पडिसत्तु णरेसर ॥
मइं मेहा णं देहीं कइ होहिंति जिणेसर ॥ ११ ॥

12

तं णिसुणिवि देवें वुत्तु एम्व मइं भेदा जिणवर मंदविवेय ।
होहिंति भुवणि तणीस एत्थु कोडिंहिति पवइ सिरिसमतित्थु ।
भाभामियाइं भेदा एमाइ णाणीसइं णइं तेहडं ताइं ।
कहियाइं जिणइं कम्मंतयाइं संगोहियविमुकम्मेवराइं ।
सुहयंथोहामियससिमयीर महु थणिउ तुह लहुयहु मणीर ।

11 १ MBP तेमणं° २ MBP दुसलु ३ MBP कुउ ४ MBP णरणण ५ MP निमाण, ६ MBP सिरिम° सिर MBP एमउ णडु ण णडुं° K जिउ णवि ९ P पुजेउ १ MBPK मेहा
12. १ P णिसणेण २ M कहिंहि ३ MBP मेहार णाई G णम्मणाइ ५ MBP तणिति

11 2 a सुहरणणं° मिथ्यात्वमेघम् "पुरिस" पाठम् 5 हरिसमाणु णमामिक 8 b णाईंणइ णाइमिव 11 b तम्मइ खिद्यते 15 पडिसत्तु प्रतिवासुदेव
12. 8 b तेहड तादृशानि. 5 °ससिमयीर कान्तिशरीर

होसइ चउवीसमु तिजगणाहु सिरिवड्ढमाणु णामेण णाहु ।
दिय कविलसीस गुरुभरहतणुउ तं णिसुणिवि णच्चिउ मुइयमणउ ।
जाही मिच्छत्तहु मूढु होवि मरिही महु केरउ मउ मुणवि ।
घत्ता—होही सुरु कविलहु गुरु सयलसुत्तपवियारउ ॥
णियतणयहु कयविणयहु पुणु पुणु कहइ भडारउ ॥ १२ ॥

13

सिरिबाला कीलाविउलसेल चलचतसधरधरधरणलील ।
पइ जेहा णिव णायाणुवट्टि एयारह महियलि चक्कवट्टि ।
णव बल णारायण णव जि भंति पडिसत्तु णव जि महिं भुंजिहिंति ।
अवर वि तेवीस जि कामदेव एयारह रुद्द रउद्दभाव ।
मंडलिय मउडबद्ध वि अणेय होहिंति पहुत्त वि णामधेय ।
तुह सत्तधम्मु महु परमधम्मु अवरु वि जं किं पि विसिट्ठकम्मु ।
सव्वेहिं जुयलि दिणि णासिहिंति सिहिमय विसमय घण वरिसिहिंति ।
उम्मूलियतिट्ठाकयलिकंदु ता णरणाहें संथुउ जिणिंदु ।
घत्ता—जिणमतइ भयचत्तइ पइ दिट्ठइ मलु खिज्जइ ॥
सयलामलु तं केवलु णाणु णरहु उप्पज्जइ ॥ १३ ॥

14

णमो वीयराया महादेवदेवा कयाणेयगिव्वाणणिव्वाणसेवा ।
सरीरे ण भूसा समीवे ण णारी तुमं देव सच्चं अणंगावहारी ।
ण चावं ण चक्कं ण खग्गं ण सूलं ण दंडो ण हत्थे किवाणं करालं ।
तुमं देव णूणं रिऊणं ण गम्मो अहिंसाणिवासो सहावेण सोम्मो ।
ण डिंभं ण डंभो ण ए वित्तलोहो ण मित्तो ण सत्तू ण कामो ण कोहो ।

६ MBP सिसिवड्ढमाणु ७ P कविलकेर ८ P तणउ ९ G मइउ मणुउ but gloss हृष्टचित्त

13 १ P भणंति २ MBP कामएव ३ MBP add after this होसहिं णारय णव कलहसील, पयभभेरदढधरणसील (P धरणलील) ४ MBP पुत्त बहुणाम° ५ P सव्वइ ६ P केलिकंदु

14 १ P °णिव्वाण २ K कराल कवालं ३ MB अगम्मो

---

7 b मुइयमणउ प्रहृष्टचित्त 9 °पवियारउ प्रवीण

13 7 b सिहिमय अग्निवर्षा

14 5 a णए न ते तव

ण माया ण पिया पंडुत्ताहिमाणं समं पेक्खसे रायरायं पि दीणं ।
ण छत्तेण णो किं पि सीहासणेणं ण पच्चामराणीसरसेणेमणेणं ।
उंचासीणमाणं सकम्मप्पपण्णं तुमं जे ण वंदंति णाहं णिरेयं ।
णरा ते तुमं मोहमारस्स मत्था ससंता वसंती हया किं णिरत्था ।
जओ सो णिरासो तुमं णिच्चणासो तुमं वीयरायं पई णिम्ममासा ।
तुमं कम्मकंतारडाहे किसाणू तुमं मूणमाणप्पयासम्मि भाणू ।
जडा किं णिमीलंति मिच्छत्ततोए तुमाहिं परा को गुरू जीवलोए ।
पसंसेवि देवं गओ भूमिपालो अउज्झाउरिं भूरिसेणाणपालो ।
पहुत्तो णियं मंदिरं वंदिघोसे महातूरघोसे महामंगलंके ।

घत्ता—णरणीसर मयहेसर पुरवरणिहिं णियरुमिहिं ॥
भवकोइउ पोमाइउ पुप्फदंत हरिसंतिहिं ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जणाहितिहुवणसंखोहणं
जिणपुप्फावयरणं णाम
सत्तावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २७ ॥

॥ संधि ॥ २७ ॥

४ M पहु पारिमाण BP पहु णारिमाण ५ MBP छत्तेण. ६ M णिरत्तेण. P वसतीप॰ MBP णियाणु ९ MBP भणु १ B ण मणमि ११ MBP णिच्चणासए १२ MBP हुए १३ MB पुरेण॰ १४ MBP णयणाइ॰ १५ MPP पुणवणण.

6 a पङ्कुत्ताहिमान प्रमुत्ताभिमान 8 b सिरे न निमासम् 11 a कि वाणु भमि ; b मूवमाभवपासम्मि प्रमिमप्रमाणदीपिरत्न.

XXVIII

पुरु पइसिवि तेण णराहिवेण वहुदाणेहिं समिद्धउं ॥
दुस्सिविणयदसणहलहरणु संतिकम्मु पारद्धउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

जाउडजडिलरसेणाययइ अहिसित्ताइं जिणेसरविंवइं ।
हिमकणकणयकणोलिवियारहिं घडपल्हत्थियपयघयधारहिं ।
मुणि अणिट्ठदुट्ठासयहारिहिं चंदणतोंतडिल्लवरवारिहिं ।
पुज्जियाइ छप्पयउलधामहिं कुवलयवउलमहुप्पलदामहिं ।
सथुयाइ वहुथोत्तालाविहिं भावियाइं सुविसुद्धहिं भावहिं ।
कंचणणिम्मियमुणिपडिमालउ णाणामणिमऊहणियरालउ ।
दसदिसि गयटकारविसट्टउ लवियाउ चउवीस जि घंटउ ।
पहि पहि रइयउ तोरणमालउ एतजतणिवणयणसुहालउ ।
दिण्णइं दिण्णसोक्खसताणइं अभयाहारोसहसुयदाणइं ।
भूमिदोहकयगोदुहसत्थहिं अच्चिउ घरि घरि अरुहु घरत्थहिं ।
दिण्णइं कारुण्णेण वि अण्णइ दीणाणाहह चीरहिरण्णइं ।
पोसहु सीलु दाणु देवच्चणु राए सचोइउ पालइ जणु ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

मुखनलिनोदरसद्मनि गुणहृतहृदया सदैव यद्वसति ।
चोज्जमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥ १ ॥

M reads गुणधृत° for गुणहृत°. GK do not give it

1 १ MBPT सुणिवद्धउ २ MBP हिमकणु कणय° ३ BP °कणालि° ४ P °घयपय°. ५ MB °हारहिं; P °दारहिं ६ M चदणतोयतडिल्ल° ७ MBP °वरधारहिं ८ MB भाविहिं ९ M °माणि°. १० MB °णियरालिउ ११ MB राइ

1 3 *a* जा उ ड ज डि ल° जाउडदेशोत्पन्न कुङ्कुमम् 4 *a* हि मे त्या दि-हिमकणाश्च कनककणाश्च तेषामोलय व्यूहस्तैस्तुल्यो विकार परिणामो यासाम् 5 *a* अ णि ट्ठे त्या दि-न इष्टे विषये दुष्टा आर्तरौद्रोपहता अनिष्टदुष्टाश्च ते आशयाश्च मुनीनामनिष्टाशया निर्मलाभिप्रायास्तानजुहरान्ति अनुकुर्वन्ति तै , मुन्यनभीष्टदुष्टाभिप्रायनाशकैर्वा, *b* °तोंतडिल्ल° मिश्रिता 9 *a* °वि स ट्ट उ प्रसर 12 *a* °गो दु ह° गोदोहका

घत्ता—धम्मद्दि रए धम्मिहु पुरउ पुच्छियउ पुच्छियउ ॥
पयाणुपहि कामि संचरउ जिह मरउ तिह जयइ ॥ १ ॥

2

सीहु व धावमाउ गमेसरु विमयरूपम्मु करइ भरहेसरु ।
मायविहिमि होएवि परेसरु चितइ वेसोहु अभियवरु ।
गोसवाई गोउलु वि पिआरु पारीसहसई पाउ रमिअरु ।
बारीसपमत्तइं पसरइउ रायवक्खई भडु पडु पडहउ ।
मंड जयाई पेक्खिवइ मयहरई हरि हरियाहरई करि वि करिहरई ।
पाहाणहु वि मणिहि सयपीयमु धणु परमुंडविहि धरणीमहु ।
जर वि पम जापइ संगापउ चितिविंतउ सयलु पयावउ ।
तो वि जीउ कब्बर टीयपरें कामविपाहि संतावि पहुरें ।
बहु कामबाणु वि रक्खइ छुपें छुज्जउ जीव व पेक्खइ ।
पंच कुमारंदलु दरिसावइ मणि सोहासमणि कहसु भावइ ।
मणि मणिरम्मबहोसवि कारणु धम्मु वरंतयराहयपाउणु ।
कंथाणि कामि सोहइ पुहइनिहई भमहारिसाई परिचिंतसमीहई ।
हाउ होउ टीयपरें हो गंधे दरु सुणिवरु पेरिवेहिउ वस्थें ।
मणुविपु इय हायंचहु कंपिउ व उहिवि वीरि" रायपरमाणुय ।

घत्ता—छिविकाई होति छीयसरहो पिंगीयमयमयपूरई ॥
मिमवंति झत्ति खोणीयकई करवंकणविकुरई ॥ २ ॥

2 १ M मिमाय मसु २ M आयमिन होएर. ३ MBP वसोर ४ MBP मरयाई ५ G पविपरयस्न ६ MBP हर्ते MB कामि कोस होइ गलोहइ, P कामि कमि होत्र पुहवीहइ T कामि मायर MBP लयाइ धेरें ९ MBP पर वेहिउ १० MB पयहव and gloss धैय T कंपेउ व पुविरि. ११ G वडु K वडु but corrects to वरि and gloss वयानि १२ MBP रवें वपो १३ G मिमाय° K मिमवव° but corrects ३ to मिमवयण°

2. 1 a वापवाई जवचाय्ां वायखर्ड प ? a वेयावउ व्ययसु वायई वेयावइ 11 a मणिरमयर्° पुव्वोसर 14 a कवंदव पुविरि 15 मिमवयमयमवपूरई मिनोत्ता व्योमितजुत्ता वेयु.

3

रायणाणु किं तासु कहिज्जइ जासु मंतु अरिणरहिं ण भिज्जइ ।
जासु खग्गु रणि को वि ण[1] कड्ढइ जासु पयावु[2] दिसंति पवड्ढइ[3] ।
जो पहाइ परमप्पउ पुज्जिवि मगलणेवत्थइं पडिवज्जिवि ।
णयसासणि हियउल्लं[4] घत्तइ सयलउ पयविसिउ[5] संचितइ ।
अहियारिय णिउएसु णिउंजइ णिव संभासणदाणहिं रंजइ ।
के वि सणेहालोयणहंसियहिं[6] समाणिहिं लोयअहिलसियहिं ।
दविणोवाइ पुरिसें[7] संभावइ चर परमंडलतु पट्ठावइ ।
सयलकलाकुसल वि समाणइ पवरपसडीपिंडहिं पीणइ ।
पुणु अत्थाणविसग्गु समिच्छइ घरि सच्छंदविहारें अच्छइ ।
मज्झण्णइ मज्जणउ पईसिवि णियसरीरु भूसणहिं विहूसिवि ।
वालाचालियचामर[8]मालइ अच्छइ कोइ वि परियवलीलइ ।
पुणु भुत्तुत्तरि पहु[10] णिवगोट्ठिइ गमइ कालु गरुयइ संतुट्ठिइ ।
घत्ता—संपण्णइ खणि तिज्जइ पहरे जाणिय घडियाघाएं ॥
पहु अच्छइ वारविलासिणिहिं सह कीलाइ विणोएं ॥ ३ ॥

4

महिवइ गयलीलइ पय[1] ढोयइ[2] पुणु अंतेउरु भमिवि पलोयइ[3] ।
खणि ससहावें मंतु पमंतइ वज्झु णत्थि किं छग्गुण चिंतइ ।
जाणइ अप्पउ वण्णपवित्ति वि वत्तायरणु[4] णयाणयजुत्ति[5] वि ।
पुणु अवलोयइ विविहपयारइं पहरणभवणइं भंडागारइं ।
पुणु गुरुयणसहमंडवि पइसइ धम्म[6]सत्थसंदेहु वि णासइ ।
कामसत्थु अवलोयइ जावहिं कामु वि तेहु[7] आसंकइ तावहिं ।

3 १ M म कड्ढइ २ MBP पयाउ ३ G पवट्टइ ४ MBP हियउल्लउ ५ M पयवित्तउ ६ P °सहियहिं ७ MBP पुरिसु ८ Our mannuscript P ends with चामर° ९ MB काइ व १० MB घुहणिवगोट्ठिहि

4 १ MB पउ २ B ढोइउ ३ B पलोइउ ४ B वत्तारयणु ५ MB ण याणइ जुत्ति वि ६ MB °सत्यु सदेहु ७ MB तहि

3 1 *a* रायणाणु राजनीतिशास्त्रम् 8 *b* °पसडी° सुवर्णम्
4 2 *b* छग्गुण संधिविग्रहयानासनशयनद्वैधीभावा 3 *b* वत्तायरणु कृषिपशुपाल्यादि

हत्थिघडत्थि हरिसत्थि ण मुंचइ आउमेउ मणुमेउ वि रक्खइ।
ओरसखउष्मसमूहविमिस्सइं भरहावीसकम्मइं विचित्तइं।
तंतु मंतु तेण वि संजोइउ मयणें सरई वि भरहु पयाइउ।

घत्ता—मसु माणु विमेलेविं परिमेंभइ सलिलकरणिएरउ पोसइ॥
तहु भरहहु सरिसु महामिणइ जगि भउ हुयउ ण होसइ॥४॥

5

सो पणविराउ सामंतइं मंडलियइं महिमाइ महंतइं।
णहरिं लिपि पीयइं पिरंतापइं भम्बाइ भत्तविणु मणुपरइं।
कुम्मायमण्णपणपरिपालणु अवइ सयंमसणु मणकालणु।
णिसुणइ भुयमणुगोयिपकारियइं पंचमेउ चारित्त चरियइं।
मेण चरिवि तउ गिरिवरकंदरि मज्झिउ तित्थयरहु मणंतरि।
णहु मोरु वि धम्मि पवणिउ परिठोइउ धम्मउ सो भणिउ।
कुंडु भरहाइं मणु विसेसें कुणु कणिययार दुरयसमत्थें।
दंसणणाणचरित्तप्मासें कुणु दणियार पुण्णपयासें।
कुणु भणियार पुराणाईं देवकुलेण भणुज्ञयमार्ते।
साइ भणाइ वि दीसइ आवइ तीर्थंकुरकमेण कुणु आवइ।
भरहेरावयहिं कुणु कियार काणि काणि जिणणाहिं कियार।

घत्ता—पणविपणिउ मणलिंभयरहमलु भाइं कयइ हरि किंतहु॥
ते परिपव कुलसंताणयर ताहं महादेवत्तहु॥५॥

८ B मुणवर ९ M दिवसाहिं १ MB मरि ममर

5 १ B णिमासइं T णिरक्खइ २ MB चतविति ३ B °भुरिव° ४ MBK चारित ५ M चउत्तरु T चरिताइ ६ MB णउ णर° MB °चरिताणमें M दसकुल T दसलोय ९ M चीमुय

9 b भरहु सर्वान्

5 2 पिरतावदं चान्डरेकजस् 6 b परितोइवन्धानयन परिरक्षितो धर्मवान्. 9 b देवकोन दशकुलेन. 12 हरि इन्द्र

6

अवरु वि मइ राएं रक्खेवी अरहंतहु जि सिक्ख सिक्खेवी ।
णासइ णिवमइ मिच्छारंगें कुगुरुकुदेवकुलिंगिपसंगें ।
णासइ मइ चामीयरलोहें णासइ मइ णिरु कामें कोहें ।
णासइ मइ हरिसें चवेलत्तें णासइ मइ जिणपडिकूलत्तें ।
णासइ मइ मयण माणेण वि णासइ मइ महरापाणेण वि ।
णासइ मइ वेसायणगमणें णासइ मइ कुरंगवहरमणें ।
[3]णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती णासइ मइ पररमणिहि रत्ती ।
मइ ण जासु कलिकलुसें छित्ती जिणवरचरणंभोरुहघित्ती ।
णिवविज्जारिसिविज्जागामिणि तहु होसइ इहपरभवि गोमिणि ।

घत्ता—मइसुद्धिइ वड्ढइ धम्ममइ धम्मु वि मइ सो घोसिउ ॥
जो खीणकसायहिं केवलिहिं जीवलोइ उवएसिउ ॥ ६ ॥

7

धम्मु खमाइ होइ गरुयारउ धम्महु मद्दवगुणु पहिलारउ ।
अज्जउ धम्मु पाउं मायारउ धम्मु सच्चवयणोहु वियारउ ।
धम्मु सउच्च धम्मु तवतप्पणु धम्मु असेसवत्थुपवियप्पणु ।
धम्मुं बंभचेरें परिचाए जेण ण कियउ वियाणवि राएं ।
पुण्णाउसु सो णिद्धाडेवउ रज्जें पुणु वि णरइ पाडेवउ ।
इय मइसुद्धि कहिय णउ रक्खमि तणुपरिरक्ख णरिंदहु अक्खमि ।
हुयवहपविसणु हुयललियगउ विसकणकचलणु मरणु ण चंगउ ।
सत्थग्गहणु महाजलबोलणु गिरिणिवडणु अतावलिघोलणु ।
पयइं कुच्छियमरणइ दुहमि णरु भामेवि घिवंति भवकद्दमि ।

6 १ MB °कुदेउ° २ M चवलित्तें ३ MB read this line and the following as णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती, जिणवरचरणभोरुहधित्ती, मइ ण जासु कालिकलुसें छित्ती, णासइ मइ पररमणिहि रत्ती ४ G मइबुद्धिइ ५ MB धम्मु सइ ६ MB सो मइ

7 १ B गुरुआरउ २ MB मद्दउ गुणु ३ MB पाउ ४ MB °वयणोह ५ MBK सउच्चु ६ MB धम्मु जि बंभचेरपरिचाए ७ MB हुयवहु पविसणु हुउ ललियगउ

7 2 *a* पाउ पापम् 3 *b* °पवियप्पणु त्यागो विचारण वा 4 *a* परिचाए आकिंचन्येन, *b* वियाणवि ज्ञात्वापि 7 a हुयललियगउ दग्धशरीरम् 8 *a* सत्थग्गहणु आत्मघात

घत्ता—सुचिरविरयकम्मक्खि उवसमु करिवि जो न मुयइ संपावें ।
वरुरासीखवणमोविमुहहिं सो परिममइ किलेसें ॥ ७ ॥

8

भवउ वि रायउ करउ थिरिक्खणु पयहिँ धम्मणायं परिरक्खणु ।
तुम्भइ हुई जाणिवि पावइ तिम्में दंडे णाइ ण ताडइ ।
जिह मोयउ पीडइ गोमंडलु तिह पालउ मोयइ गोमंडलु ।
विझारण्णमारणु जो रायउ सो रक्खणु समसूयसमाणउ ।
मिहु मंतिवि दुक्खरसंतावइ णिद्दोसह दिय वणिहिं वरायइं ।
गुरुणारिविसमयसंतावणु जो पयारणु करइ मीसावणु ।
अम्मीसासससिहिहिं सो दज्झइ भग्गु वि तुद्धिपकम्में वज्झइ ।
कमाइ ण जिणइ दुम्मणुभासइ ण वसइ देसु विसइ परदेसइ ।
पहु मणुरंजणवार जो तासइ कहिं वि दियहिं सो सर्व णासइ ।
रत्तउ सत्तउ मिहु मरिजइ तम्मिवरीयउ भवहेरिजइ ।
सुणिझयकळावावयवायं वरलोहेण णिहालियवायं ।
गुरुचरणारविंद सेवेवउ णवर सुमंजसणु भीवेवउ ।
रोसें णउ विसिहु पहरेवउ सुयणस्सु ण कयावि मरेवउ ।

घत्ता—इय पंचपयारपयासियउ णिसुणरिसु जो पालइ ॥
कमलासण कमला कमलमुहि तहु सुहकमसु णिहालइ ॥ ८ ॥

9

तहिं मज्झणर मरोसह जायइं णाणि पमणइ सुणि सेविय तइयइं ।
कुरुवंसकमलवणगयणरवा जियकुमकमलजुयलसेवारउ ।
सोमप्पहमहिणाहहु णंदणु कंचणमयमावहि तोसियमणु ।

MB °णरसुवि
8 १ G णहि २ M पमइ ३ MB °मीसावणाइं ४ MB तुम्भइ ... ५ M मणुरंजु पयाई
६ MB °रमिहु ७ B बम्भउ G णिसुणरिसु
9 १ MB °कमसु

11 °सुणहि इति.
8. 6 a मोयउ मोयइ गोमंडलु पया संतान; b मोयइ राजा गोमंडल भूमण्डलम् 8 b णिवइ अविवादी

सुंवरु चोद्दहभाइहिं जेट्ठउ जउ णामें अत्थाणि पइट्ठउ ।
कुरुवसाहिवेण पणवेप्पिणु पभणिउ तेण राउ विहसेप्पिणु ।
ताएं रायपट्टि महु वद्धइ रिसिरयणत्तइ सइ उवलद्धइ ।
तम्मि हुयइ णिक्कलि कलुसच्चुइ दाणपवत्तणि सुरवरसथुइ ।
जाणियपयाणेयवियप्पइ रिसहसामिपयपकयछप्पइ ।
घोरवीरतवचरणच्चब्भुइ पित्तिइँ सेयंसाहिवि णिव्वुइ ।
ससहोयरु दिम्मुहइ णियतउ हउ णियपुरवरंति विहरंतउ ।
मारुयचालियचलसाहाघणु एक्कहिं वासरि गउ णंदणवणु ।
धम्माणदें मणु आणदिउ दिट्ठउ सीलगुत्तु मुणि वंदिउ ।
दिट्ठउ फणिवरु समउ भुयगिइ धम्मु सुणतु सरलललियंगिए ।
गयसंवच्छरि पुणरवि आए सा दिट्ठी मुक्किय णियणाए ।

घत्ता—दीवड्डु काओयरु णाइणि वि विण्णि वि धम्मु सुणंतइं ॥
मइ लीलाकमलें ताडियइ तेहिं वि जाइरइरत्तइ ॥ ९ ॥

10

कसणारुणविदुयतणुराइहि कहिं णाइणि कहिं लग्गवि जाइहि ।
इय गरहिवि परिवारेणाहय सहु जारेण तेण सा णिग्गय ।
कासपुप्फकतिसकासउ हउं पडिआगउ णियआवासउ ।
णिसि णियकतहि मइ आहासिउ सयणालइ तं णाइणिविलसिउ ।
कुमहिलखलचरियाइ पयासमि जाम किं पि किर पिय संभासमि ।
विविहाहरणकिरणरंजियघरु ताव तहिं जि अवयरिउ वरामरु ।
पुच्छिउ सो मइ किं अवलोयहि दिट्ठि वियारभरिय किं ढोयहि ।
तेण पउत्तउं किं ण वियाणहि लोयह तुहु वि धम्मु वक्खाणहि ।

२ MB चउदह ३ M °भावहिं ४ B वइट्ठउ ५ MB पित्तइ ६ MB °चलियचवलसाहा° ७ MB फणिवइ ८ M सरलललियगइ, B सरललियगिइ ९ MB मुक्की णियणाए १० G °णियणायए ११ MB काओयरु विसहरु णाइणि नि १२ M तहिं जइपयरइरत्तइ

10 १ MB °तणुरायहि २ MBK काससर्सककति°

9 7 *a* तम्मि ताते, णिक्कलि शरीरनिस्पृहे 9 *b* णिव्वुइ सुखीभूते 15 दीवड्डु सर्पजातिविशेष, णाइणि नागी,

पोसणाहणु ण कासु वि किंकरु पंगुलु पंगुलु केम भविंकरु ।
पइं वि कीरइ महु कुमरत्ती पाविपोमेंपोमें कं किरती ।

घत्ता—तं पोढिम सयले परिपपेम उवसहिं दंडसहासें ॥
कंपंतदेह कारेम सइ सा मुक्की वीसासें ॥ १० ॥

11

पुण्णमेण मुउ फणि वणवारउ हउं हुउ माणहु णायकुमारउ ।
सप्पिणि हुई समपरिणामें सुरसरि देवय काली णामें ।
किण्णि वि मिढियइं हियवइ परिपउं तं गुरु दुम्मणधिउ संमरियउं ।
आयउ एत्थ णाम किर मारमि भारहसिवि वण्णमणु वियारमि ।
ता मइं आणिउं तुहुं पुण्णाहिउ करेमेवि सीकेण पसाहिउ ।
एम भणेप्पिणु तेण फणीसें सर्वज्ञपसिविपरोसहुपासें ।
दिण्णइं महु दिण्णइं परिहाणइं दिण्णइं भूसणाइं मणमाणइं ।
णवसरि सएहु मणिवि गउ तेत्तहि अहिवसवियरि णिहेलणु जेत्तहि ।
णिसुणि देव सासपरंपणपर जमि कीयहु बम्मु ति कम्मपवर ।

घत्ता—विहसिवि कुरूमाहे बोल्लियउ मरहपसाहियमेहियउ ॥
देव वि तहु पावहिं पवहिं कुह कासु मम्ममर किंकरु ॥ ११ ॥

12

इय कहेवि कइ साहिय कावहिं मयर वि मेंति पराइय तावहिं ।
गीवांसविमोत्तिपहारें सो दोविउ एम्मु पविहारें ।
देव पउत्तु णिसुणि णिवकेसरिसि कायोविसर णयरि कामारुवि ।

---

१ MB कारउ ४ MB पोमस्सइ, ५ MBK तासिम

11. १ M पुण्णवसिय २ MB परमेहि, ३ MB सयमणु सिविय° ४ M सुहास ५ MB °मसिय

12. १ B कहुण २ K चोवोसिविय° ३ MB एमहु सभिउ ४ MB °वरसवि.

---

10. 10 a साइरइ चम्पका प्रकृति कमुदला.

11. 7 b कवलाकइ पक्षिविलासि

राउ अकंपणु राणी सुप्पह सालंकारी णं वरकइकह ।
फुल्लकुसेसयसंणिहसमुहह सहसु सुयहं हेमंगयपमुहहं ।
सस मृगलोयण ताह सुलोयण लहुई लच्छीवइ सुहभायण ।
जेट्ठहि रूउ काइं किर सीसइ उवमाणु जि जहिं किं पि ण दीसइ
पायहुं काइ कमलु समु भणियउं त खणभंगुरु कइहिं ण मुणियउं ।
रिक्खइं वासरि कहिं मि ण दिट्ठइं कण्णाणहपहाहि णं णट्ठइं ।

घत्ता—कुरुविंदु तणु वि जघाजुयहो णासवतु करु दतिहि ॥
ऊरुजुयलहि जो समुं भणइ सो कइ पडियउ भंतिहि ॥ १२ ॥

13

वण्णमि काइं णियवगुरुत्तणु जहिं पत्तउ तिहुयणु जि लहुत्तणु ।
भमउ भमउ सो भूए भुत्तउ णाहिहि सरिसु ण सलिलावत्तउ ।
कहिं थणजुयलु चित्तगइरंभणु भासइ कणयकलस कहिं कइयणु ।
दट्ठा ताह दासिमिरमंडणु चंगउ ससहरु समलु सखंडणु ।
किं तरुणीवयणहु उवमिज्जइ तासु सरिच्छउ त जि भणिज्जइ ।
जेंवं कुमरिहियवउं सदाणइ मृगुं ण तें अवलोयहु जाणइ ।
किं सारंगणयणि सा उत्ती केत्तिउ किज्जइ उत्तपउत्ती ।
णक्खहं लग्गिवि जा केसग्गइ ताम ताहि णिरुवमइ वरगइं ।
लीलदोलणकीलाजुत्तइ छुडु जि वसतमासि सपत्तइं ।

घत्ता—अकुरियउ कुसुमिउ पल्लविउ महुसमयागमु विलसइ ॥
वियसति अचेयण तरु वि जहिं तहिं णरु किं णउ वियसइ ॥ १३ ॥

५ B° समुहह ६ मिगलोयण ७ MB तक्खणि भंगरु ८ B कुरुविंदत्तणु. ९ MB जघाजुयलहो
१० K सम

13 १ MB वि २ जिम कुमरिहि हियवउ ३ MB मिगु ण तेम. ४ MB °णयण ५ MB वत्त-
पउत्ती ६ MB °कीलणजुत्तइ

12 5 *a* °कुसेसय° रक्तोत्पलम् 10 कुरुविंदु शंखघर्षणम्, तणु काइं लघुत्व.
13 2 *a* भुत्तउ युक्तो गृहीत 4 *a* दट्ठा अमिना सततः.

14

सुइ मायंदरुक्खु कंटइयउ महुयरिच्छिर कामिणिहि घरयउ।
सुइ चंपयतरु अंकुरिंचिउ णं कामुउ हरिसें रोमंचिउ।
सुइ कंकेल्लि किं पि कोरइयउ णं वम्महसिहाएँ रइयउ।
सुइ मंदारसाहि पल्लवियउ वम्महु णं महुणा पल्लवियउ।
सुइ चावउ चंपेउ कलियायउ मत्तयमोरकीरसरवालउ।
सुइ वाणु वि पउकुमु पयासइ पहियहुँ कम्मइ विरहदुपासउ।
सुइ फुल्लिउ मल्लियकुलोहउ रमणीयणि पसरिउ रइलोहउ।
सुइ कणवेल्लिविरुउ वि मउ चडिउ चडिकुसुमरउ चुंबिवि कढिउ।
फुल्लु कुसुमगंवहि णं हसियउ कोइलु कामपहु णं रसियउ।
वणयवणकंपकुसुमयपरुसहं कंदणकदमपिंडविकिण्णहं।

घत्ता—सुइ केवइहरे विणिग्गियरं पुप्फैंमहुरवइं पियरं ॥
सुइ णावरं सिहुणइं सरहसइं अवरोप्परु रमीसरइं ॥ १४ ॥

15

पिप्पिलमहुलवपहिं मलिसुखियहिं सुमणसुरहिरयपरंपावडियहिं।
समरतुप्पलकलियपीवहिं चंदकवयणचवणममावहिं।
घणकुसुमकंदरिपसमाकहिं गुरुगुमंतमहुलिमपेसावहिं।
रायहंसकामिणिकमरंमकहिं पिउ चलंतपहु वणयमवणहिं।
कुररकीरकोरंजणिमावहिं चक्कलंतु ण धोलमिहुणहिं।
सियसलकलयंतुकोलाहलहिं मिसिमिसियसरमरणपचालहिं।
मणमसमसपरमसरलफ्फिर पिय देस णं तहु वणहच्छिर।

14. १ MB मायंदु रुक्खु २ B पाइयउ, K रइय ३ M णं वेय B चावउ. ४ MBK महुय. ५ B विरहयरसिग्गलि ६ MB फुल्ल ७ MB कोइलु MB °कणवेल्लिवलग्गउ ९ MBK °सिग्घविकिण्ण १० MB पुप्फरवयह ११ MB रइरत्त

15 १ MB °रमणिहि २ MB महुयरगणगाविहि ३ MB सरइ° M °मिहुणहि, B मिहु-णहि, K °मिहुणहि,

14. 8 [illegible] 8 b [illegible] 12 [illegible]
15 1 b [illegible] 7 a [illegible]

फग्गुणपइसारइ णंदीसरि छुडु सुरणविइ दीवि णंदीसरि ।
पोसहपरिसमखामसरीरइ थणजुयलतविलवियहारइ ।
पुत्तिइ पहसंतें मुहकमलें पइ दिट्ठउ जिणसेसाकमलें ।

घत्ता—तेलोक्कपियामहु णंचवि जिणु णवमयरंदकरंबिउ ॥
तं णलिणु णरिंदें णिहिउ सिरे महुयरउलमुहचुंबिउ ॥ १५ ॥

16

तेण धूय पियवयणहिं पुज्जिय करि पारणउं भणेवि विसज्जिय ।
गय सुंदरि णियगेहु पराइय तायहु चित्ते चिंत समुट्ठिय ।
भडयणु सव्वु दूरि ओसारिउ रायंए मंतिहिं मंतु समीरिउ ।
तणयहिं उड्डुदिणि गलियइं रत्तइं मइ डुहंति भो अट्ठ वि गंत्तइं ।
ण दुपुत्तरइयइं दुचरित्तइं अवलोयहु लहु णववरइत्तइं ।
घरि कुमारि केत्तिउ रक्खिज्जइ कासु वि कुलगुणवंतहु दिज्जइ ।
सायरमति चवइ सरसहमुहु अक्ककित्ति चक्कवइहिं तणुरुहु ।
ढोयहि तासु कण्ण किं अण्णें सुमंतेण लोयसामण्णें ।
सिद्धत्थेण भणिउ मणरंजणु अच्छइ राणउ णामु पहंजणु ।
ण पच्चक्खीहूयउ सइं सरु रहवरु वलि वज्जाउहु घणसरु ।
सव्वत्थेण लविउ मुइ महिहरं तुह पुत्तिहि वरु जइ विज्जाहर ।
होंति[12] ण अण्णहु तं लायण्णउं सुमइ कहइ मइ पहु पडिवण्णउं ।
अविरोहणउ सयंवरमंडणु होउ ण कासु वि णेहहु खंडणु ।

घत्ता—जं पहुसुपण परिणयमइएण सुमइवुहेणब्भत्थिउ ॥
परियाणिवि होंतीं कज्जगइ तं सयलहिं मि समत्थिउ ॥ १६ ॥

५ MB °जुयलति विल°. ६ MBK णविवि.

16 १ MB राए मतिहु २ MB उड्डुदिण° ३ MB डहंति ४ MB अगइ ५ M ण दुपुत्तु रइयइ, B णं पुत्तरइयइ ६ MB किं मंतेण ७ MB पहजणु ८ MB सुरु ९ K वज्जाउह, T घणमरु मेघेश्वर १० MB महियरु, T महिहरु राजान. ११ MB विज्जाहरु १२ MB होइ ण

16 4 *a* उड्डुदिणि ऋतुदिवसे 8 *b* °सामण्णें अनुत्कृष्टेन 10 *a* सरु स्मर कदर्प, *b* घणसरु मेघस्वनः

17

विमाणगोमिणीघणो कुमारिपुप्फवंधणो ।
सुरे विचित्तभंगमो तओ तहिं समागओ ।
तिणा सुमंडवो कओ विचित्तभित्तिसोहिमो[1] ।
पसंततोरणालओ सुकंतपुप्फमालओ ।
ससंतमंतभिंगओ पहुल्लकप्पासिमओ ।
सुणीलवज्जमूसओ तमेव णाइ साम[illegible] ।
कहिं पि हेमपिंजरो सरो व्व कंजकेसरो ।
कहिं पि रुप्पधामओ विचित्तचंदमंडओ ।
कहिं पि मत्तुणयमो सुपीसपिंछवण्णमो ।
संपतपत्तधाम[illegible]समो मर्हतपुप्फसंभमो ।
मणीहिं पंचवण्णओ रईइ णाइ णाइओ ।
कहिं पि देसि रत्तओ बहूइ णाइ रत्तओ ।
पिओ मओ व्व मित्तओ सिरीविचित्तसरित्तओ ।
विचित्तमोत्तिवत्तओ ससंकसुंदरप्पओ ।
असेससंगकासमो पमीयमेयघोसओ ।
विसाणमत्तवारओ विणायरंसुवारओ ।

घत्ता—मंडउ किं वण्णमि देव हउं बहुमाणिक्कहिं जडियउ ।
जहिं दीसइ तहिं जि सुहावणउ सग्गे महिहि णं पडियउ ॥ १७ ॥

17 १ MB add after this [illegible] (B [illegible]). २ MB °[illegible]. ३ MB add after this [illegible] ४ B [illegible]° ५ MB [illegible]; K [illegible]° ६ MB [illegible] and gloss [illegible] ७ GK [illegible] but gloss [illegible]; T [illegible] M [illegible]°, B [illegible] ८ MB [illegible]° ९ G [illegible]° but corrected to [illegible]° in the margin ११ MB °[illegible]° १२ MB °[illegible]° १३ MBK [illegible]

17 1 a [illegible] 9 b [illegible] 10 a [illegible] 14 b °[illegible]° [illegible]. 16 a °[illegible]

18

जहिं कुमारि अहिलसइ सइं वरु   सो पारद्धउ णाहसयंवरु ।
पइं विणु तेण वि काइं णवल्लें   लहु चल्लहि किंकरवच्छल्लें ।
अविणउ एत्थु मे होउ मलासिउ   हउं हक्कारउ तुंह संपेसिउ ।
तं णिसुणिवि हूयउ कोऊहलु   दिण्ण भेरि गुरुरव मिलियउ बलु ।
मेरुधीरु जगणलिणदिणेसरु   तं णिसुणिवि चल्लिउ भरहेसरु ।
चल्लिउ पडिभडगयघडमद्दणु   अक्ककित्ति णामें तहु णंदणु ।
चल्लिउ बलि रहंवरु वज्जाउहु   चल्लिउ घणरउ णं कुसुमाउहु ।
भूगोयरविज्जाहरराणा   गंपि सयंवरघरि आसीणा ।
पहुहु अकंपणु पणविउ जावहिं   सदणि तरुणि चडाविय तावहिं ।
सहुं धाइइ भूसणहिं सहती   भायसहासें रक्खिज्जंती ।
चोइय हय महिंदरहिएं तहिं   रायकुमार परिट्ठिय ते जहिं ।
जोयइ सुंदरि कचुइ दावइ   एक्कु वि णरवइ मणहु ण भावइ ।

घत्ता—तहि अक्ककित्ति पलयक्कणिहु बलि भूयबलि वि समाणउ ॥
वज्जाउहु वज्जु व आवडिउ रुच्चइ को वि ण राणउ ॥ १८ ॥

19

जिह जिह सुंदरि अप्पउ दावइ   तिह तिह णिवतणयहुं तणु तावइ ।
को णीससइ ससइ दिहि छडेइ   अप्पउ पुण वि पुणु वि कु वि मंडइ ।
कठाहरणु को वि संजोयइ   अप्पउ दप्पणि को वि पलोयइ ।
को वि णियइ णियणहइ अभंगइ   पयइं पयहि थणहि ण लग्गइं ।
चिरभवि मइं ण कियउ मणणिग्गहु   किह विरयमि पयहि कंठग्गहु ।
को वि समिच्छइ तहि अहरग्गहु   कासु वि लग्गउ काममहग्गहु ।
कासु वि आयउ विरहमहाजरु   कासु वि उरि खुत्तउ वम्महसरु ।
मुच्छिउ पडिउ को वि विहलघलु   केण वि णियलज्जहि दिण्णउं जलु ।

18 १ MB सयवरु २ M ण होइ ३ MB तुम्हह पेसिउ ४ MB रहवर ५ MB भाइ° ६ MB जेत्तहिं

19 १ MB सुसइ २ MB छड्डइ ३ MB अगउ को वि पुणु वि पुणु मडइ ४ MB अहगइ ५ MB °महागहु

18 8 *a* मलासिउ दोषाश्रित पापाश्रितो वा 11 *a* महिंदरहिए महेन्द्रसारथिना,
19 8 *a* विहलघलु विह्वलाङ्ग

घत्ता—कर माणइ कंठइ सिरिविहुर वम्मसंतसिंगारहिं ॥
मइमिस्सर इमर मानर महुर भमर कामवियारहिं ॥ १९ ॥

20

तरुवियपणु आयवि बोलार मणु परिपालिवि सुरगिरिधीरें ।
पुणु रइयरु मंचारोउ तेत्तहि आसीणउ वरें अरवर तेत्तहि ।
पुप्फइ पेयांगी गंधवरमर पभणइ कसुर मिहुणि महासर ।
कुंडु केरवयर एहु मिपसवर एहु मासवयर एहु कोंकणवर ।
एहु बब्बरवर एहु गुज्जरवर एहु आलंधरिसु एहु पञ्जरवर ।
एहु कंभोयकोंगमंगाई राउ एहु सम्बु मि चोडिगाई ।
एहु कस्सीरराउ रकेसर एहु मयर मवलोयहि तुहुं वर ।
सोमप्पहसुउ एंडु सेयावर कुरुकुलणाहि कम्मउ सुवि आयर ।
मवमइरयरपवित्थारहि सिमहरवरिममाणजेयपारहिं ।
तिय तिमिरभइ मयंपि परिक्खिय मेप्फ महुप्फमंस रवि सिक्खिय ।
मण्णिर ववयमपोसविमाणं मेहेसर जिं इच्छारिउ पयं ।
इय मायपरिखाविं पियसहिवयणइं सुयइ पेसियाइं सियमवणइं ।

घत्ता—तिह औरड वार धणोयवयर जर मियवइ जयगारउ ॥
जिह पोमि पोमि तहिं विष्फुरिउ वम्मइ वम्मवियारउ ॥ २ ॥

21

जिह जिह कम्मइ पर आमारउ तिह तिह रेहिय संचउ होरउ ।
करवाहिं मीसेस पमाइवि मंधरियेहमंचं आयवि ।
सघसपक्षपाविमयरागउ पीमयवसपरिमेरदिम्मपेत्तहि ।

१ B सिरि सिहुर.

20 १ MB पंभेसर २ B कमयरलु. ३ GK पसर° b ३ gloss पश्चरपक्षि; K corrects जर° to मर° MB read lines 4 5 and 6 as एहु केरलवर एह कोंकणवर, एहु सिंधवहु एहु मालवयर, एहु कुरुयणमगुज्जरयर, एहु जालंधरिसु पञ्चरयर; एहु कंभोयकोंगणमय, एउ एहु सम्बु मि चोडि- बहु ५ MB रकेसर ६ MB वहु ७ MB °वसयारहिं MB अमेय ९ MB तिह कारिउ

21 १ MB रहियं २ MB कणक्केय° ३ MB °माणिय°

20 1 चीरा ईं सत्तविता
21. 2 = ५ भा इमि परिमत्त

जयहु लच्छिकीलाभूमित्थलि घित्त सयवरमाल उरत्थलि ।
कुँसुमसरेण ण कुसुमसरावलि गहिय कुमारि तेण कँयपंजलि ।
गउ लहु सरहु भरहु साकेयहु दुम्मइ परिवड्ढिय जुयरायहु ।
ता दुद्दंसणु दुद्धरु दुज्जणु दुट्ठु दुरासउ दूसियसज्जणु ।
रविकित्तिहि सुहिवंदाकरिसणु अत्थि मंति णामें दुम्मरिसणु ।
मच्छरवंतें तेण पउत्तउ जहिं अहिंस तहिं धम्मु णिरुत्तउ ।
जहिं अर्रहंतदेउ तहिं सयमहु । जहिं मुणिवरु तहिं इंदियणिग्गहु ।
जहिं महिवइ तहिं रयणहं संगहु ।
ण करहेण खरेण वा णरवंदहु घंटालंबणु सहइ करिंदहु ।
एरिकणिथीआईयइं णियंदहु मयलइं रयणइं होंति णरिंदहु ।

घत्ता—संकेइय पुत्ति अकंपणेण एहु णिहालिउ बालए ॥
अवमाणिवि तुम्हइं पिउँतणय घणरवु पुज्जिउ मालए ॥ २१ ॥

22

रोसविमीसहं जयकासीसहं ।
इच्छियवसणहं दोहं मि पिसुणहं ।
समरि भिडेप्पिणु सिरइं खुडेप्पिणु ।
घिप्पइ सुंदरि णं वम्महपुरि ।
विउसदुगुंछिउ पहुणा इच्छिउ ।
कर्लहुद्देसिउ त तहु भासिउ
त णिसुणेप्पिणुं णिवहु णवेप्पिणु ।
दरविहसेप्पिणुं फग्गु मुएप्पिणु ।
णिद्दुक्कियमइ चवइ महामइ ।
भुक्खइ झीणी कोवविलीणी ।

४ MB सकुसुम ण कुसुमसरमरावलि ५ MB किय° ६ MB अरहंतु देउ ७ MB add after this: जहिं सुवण्णु तहिं विसयपरिग्गहु ८ M °थीअइआइं णियदहु, B °थीआइअइं णिअदहु ९ MB पहुतणय
22 १ MB कलहुद्देसउ २ MB add after this कर मउलेप्पिणु ३ MB add after this बहु ससेप्पिणु

6 *a* स र हु सरय 8 *a* सु हि वं दा क रि स णु मित्रवृन्दकृशताकारकम् 13 *a* णि य द हु चन्द्रस्य

माउच्छाणी मयविहाणी ।
आपर्वसिरी दुक्खें वत्ती ।
विहरें मुत्ती गमगासत्ती ।
सा वि विरत्ती अण्णहु रत्ती ।
पयडीवेस वि अपयंकपयपि ।
सा करिकरभुव मयरेसर हुय ।
कामिंपिखार भय रमिअर ।
पइ पवत्ती पीरकुम्भरत्ती ।
पहारंकतइं अमु मारकंतइं ।
माउ सुयंतइं रम्महि कंतइं ।
सो सुयणियवार हहपरमणगार ।
मयसें प्पासार गुरु कि सीसार ।

घत्ता—घसि रिपयरु पमरठ पमगु चसु मयगु महीयमु वार वि ।
अंगमीयियकारेण धुइ सुणहि सुंदर तुहुं तुह वार वि ॥ २२ ॥

23

मणयंतेण माइय पीणेण वि मेकुसीलेण वि सकुसीलेण वि ।
सरप सर्पवरि कुमरि ण हिप्पइ हियपइ मरणे पावें छिप्पइ ।
पहु पियसतेण गुरु तार्य मग्गु पवासिउ मसुरंवार्य ।
घड्ड कंपिवि को मूर्पा तावर सो मक दुक्खसु दुम्मइ पावर ।
पम करंतई मर परिदुवरु जं मयण छित्तउ भूमवरु ।
मकसिवि परिकमर विरमइ मरपहु पीरेवड वड्ड मरण ।
मरमुं फणिवर माउण वयविउ मवर्वे मलहुरुतव मर कोसिउ ।
तरमुं मई रोसापहु हुयर भिपमिउ पंडु मरबई ममहुपर ।

४ MB पर वयसिरी ५ MB read this line as वयवासत्ती विरह (B वरह) मुत्ती ६ MB मण्णई G omits this line. B पवु ९ MB कारण गुरु

23 १ MB सुकुलेण मि मकुसीलेण वि. २ MBK पीरणु

22. 19 *a* मायवणि रसी या मापनिता वमहता

23 4 *a* कूपद मणिव 5 *b* कुलवत कति 7 *b* मक मम इति मता

घारिउ छण्णपउत्तिहिं वप्पें अज्जु सयंवरमालातुप्पें ।
सो दूसहु पज्जलियउ घेट्टइ रिउलोहियसित्तउ ओहट्टइ ।

घत्ता—भो ओसरु कण्णइ काइ महु हउ किं मग्गु ण बुज्झवि ॥
जउ अप्पु वि भडलीहहि गणइ तेण समउ रणि जुज्झवि ॥ २३ ॥

24

ताडिय समरभेरि कउ कलयलु रणि उद्धाइउ चउरगु वि बलु ।
रक्खिय सिक्खिय वइरिवियारण सूरारूढ सूर वरचारण ।
मेंठपयंगुट्ठहिं संचोइय गज्जमाण मेहा इव धाइय ।
हैरिखरखुररयरोणीमडल वाहिय वरकामिणिमणचंचल ।
रहरंखोलमाणधयडंवर दित्तविचित्तछत्तछण्णंवर ।
चक्कचारचूरियविसहरसिर असिप्पसमुसललउडिलगलकर ।
सुणमि सुविणमि महापहु णहयर अट्ठ चद णामें विज्जाहर ।
जुयराएण रणंगणि मुक्का गरुडवूहु णाहि विरइवि थक्का ।
विजयघोसि करिवरि आरूढउ बालु महाहवसयणिग्घुट्ठउ ।
चक्कावूहमज्झत्थु विहावइ रवि परिवेसें वेढिउ णावइ ।
एत्तहि कण्ण पइट्ठ जिणालउ णिच्चमणोहरु णाम विसालउ ।
रक्खिज्जती किंकरवग्गें थिअ णिच्चलमण काओसग्गें ।
झायइ हो विवाहवित्थारें णाणाजीवरासिसघारें ।
एत्तहि दूए कज्जु समीरिउ त चक्कवइसुएणवहेरिउ ।

घत्ता—एत्तहि जामाए पुलइएण भणिउ अकंपणु धणुहु धरि ॥
रिउ जिणिवि जाम पडिवलमि हउ ता तरुणिहि रक्खणु करि ॥ २४ ॥

३ M वड्डइ ४ MBK मुज्झमि ५ MBK भडलीलहि ६ MBK जुज्झमि

24 १ MB किर २ K मेंठ° ३ MB हयखुरेहिं खय ४ MB चक्कचारु° ५ MB अद्धचंद.
६ MB °सयणिग्घूढउ ७ MB थिय तायाणइ काओसग्गें ८ MB झाइय

24 5 *a* °धयडमर ध्वजाटोप 9 *b* बालु अर्ककीर्ति

25

तेण समउ वरवीर एतुभ्मइ | चलिउ सुकेउ मेरुमित्तु वि मइ।
कण्णपावि मीसणु पयसिरियउ | दवकिसि धम्मंमणु ससिसिरियउ।
पंच वि ससिरपविणायकुसुम्मव | पंच वि कयसंपाममणुम्मव।
पंच वि ते मासीविसविससहर | पंच वि मयवयउ रयसहरवर।
पंच वि कोवणाउ मं दारुण | पंच वि पंच वाई पंचाणण।
मेरिवम्मपकवारपियासण | पंच वि पंच माई पंच दुपासण।
मेरुणु चमपर तहिं पहुर | करणाहरपरि पाई मणु रिहुर।
जउ वि वीर वहिं पवसिउ आयउ | तहिं ण घरइ रिउ कम्मविहायउ।
विरइयमपरबूहमज्मंतरि | थिउ वेयणुमहाकरिकंधरि।
वीसइ सोमप्पहसुउ केहउ | वणगिरिमत्थए केसरि जेहउ।
चोहमायपेयहिं परिपरियउ | रवि व सकिरणकलावहिं फुरियउ।

घत्ता—रणपयकरणाकमपंकर्य आहवि कोवियाण्णई।
मारुम्मई कण्णाकारपिय मकरिसिवमयसेण्णइं॥ २५॥

26

पंचिदियपरंचमकंचुरणवर्ड | सामरिसाइं चवरिपावयवइं।
मयमुहमुहराकरणाई | मामियचकाइं भेसियपत्ताइं।
हयसंखासपियोरापाराई | संपाइयतपवुणुमइंकाराइं।
मुक्कपिसकम्मरपगयणयवकाइं | वहिरवारिरेषियणपरिवर्ण।
मंकुसपसविसंठमापंमाई | संदयसंकरपरिभगुरंगाई।

---

25 १ MB दरवीर २ MB मित्तपुर. ३ B चलमणु. ४ MB एलसरउ; K एलसहर. ५ M चाहरए° but gloss नरिः ६ MB चमर ७ MB चोमराज्माउ MB °रियत.

26. १ MB पहरिए° २ MB °कपुर° ३ MB कलंकुसमपि° ४ MB सुपन्न°

---

25. 6 a नरिंदचमकेचार° करण एव तारकायामं सत्तमयसम्भम, 8 a ववसिउ चयु रयसमवसे वयान 8 a घरइ रिउ कम्मविहायउ रिपुर्वर्गोऽपि कुटोपयोगसमागिवर्गं कर्मवतो न करोति न लोकरोति.

26. 2 a °कराइं टैप 4 °रिवकं° चयु

असिणिहसणसिहिसिहपिंगलियइं लुयकरसिरउराइं महिघुलियइं ।
मिलियकरालकालवेयालइं हणहणरावसमुग्गयरोलइं ।
पडपडभावियभेरुंडइं पाडियधवलछत्तधयदंडइं ।
घत्ता—जुज्झंतइं दिट्ठइं विसरिसइं पयलियवणरुहिरल्लइं ॥
वेण्णि वि सेण्णइं णं रणसिरिए वद्धइं केसुअफुल्लइं ॥ २६ ॥

27

रत्तमत्तरयणियरवेंभले घारणीयलुलियतचोंभले ।
पडयहत्थिमत्थिक्कपंकए रसवसाणईजणियसंकए ।
उद्धयद्धत्तिधोहतूरणे तियसमुद्दतोसपूरणे ।
उयरऊरुउरयलवियारणे वइरिघरिणिमणिहारहारणे ।
भीरुवयणणीसरियहारणे मरणदारुणे तहिं महारणे ।
ता जएण सपेसिया सरा पुंखलग्गहुंकारगरसरा ।
आहया हया विद्धया धया णिग्गया गया णिम्मगा मया ।
ते ण किंकरा जे ण मारिया ते ण राइणो जे ण दारिया ।
तं ण छत्तयं जं ण छिण्णयं तं ण वाहणं जं ण भिण्णयं ।
सो ण रहवरो जो ण भग्गओ सो ण खेयरो जो ण खं गओ ।
ताम पक्खिपक्खेहिं विज्जिय मग्गणेहिं किवंण व ताडिय ।
फुट्टकंचुय फुट्टमद्दल तुट्टपक्खर मुक्ककुंतल ।
घायघुम्मिर चत्तगोंदल चक्किसूणुणा णिग्गय बल ।
समरकोच्छरो हसियमच्छरो बंधुपरिहवे बद्धमच्छरो ।
झत्ति बाहुबलिदेवतणुरुहो सोमवसतिलयस्स संमुहो ।
भुयबलीविलग्गो महाभुवो पहु अणंतसेणो वि साणुओ ।
दिव्वलक्खणंकियसरीरहं सयइं पंच भिडियइं कुमारहं ।

५ MB हणहणकार° ६ M वणासिरिए, B णवसिरिए

27 १ MB °विंभले २ MB रसवस णइ ३ G छित्तय; K छत्तय, corrects it to छित्तय but scores out the correction and restores it to छत्तय ४ MB खिजिय. ५ MBK किविणं ६ MB फइ° ७ M चित्तगोंदल ८ MBK हरिसियच्छरो

27 1 *a* °वेंभले विह्वले; *b* °चोंभले समूहे बीभत्से वा 2 *b* रसवसाणई° रसस्य वसायाश्च नदी 7 *b* मया मृता 14 *a* °कोच्छरो दक्ष 16 *b* साणुओ सानुज लघुभ्रातृभिः पञ्चशतैः सहित इत्यर्थः

घत्ता—पुव्वेवसमयवयणहिं मिलिवि कर मायरउ खावहिं ॥
देमंगउ मायरहसपहिं सह अंतरि पिउ तावहिं ॥ २७ ॥

28

जर तासिवाउ छिजइ मिसार पहे पडु जे लहि मारिज्जइ ।
कुसुमवणि वे विहडियवसत्थइं सत्थइं भाविवि बीति मिरत्थइं ।
चंरमवेइ ण मरंति महावि किरे वाहिति महामुणि णावइ ।
मेहसम्मसरजासु अणंतउ कुंमरहु वप्पहि खिहि ण पवत्तउ ।
वसुसमसतिविणहिं पविकाणियउ सहसु सपुत्तउ पिहु ण वखियउ ।
पत्थंतरि पसहापसहापहु मुई अवशोहवि देवरयहु ।
मणइ कुमारु पवलु हुई ण कसउ वहइ माम तुहारउ अवसरु ।
सुणमि पियावहि जउ महु वेरिउ ता वम वि रिउ दमि पचारिउ ।
कंतामोहमोहपमूढउ र जीमूयवाय हुई मूढउ ।
किं कज्जिउ मसिबउ पहुतणहु वीरहय पिबरिबो वि गुरुविणवहु ।
संमुहुं जाहि जाहि मा जासहि पेक्खहुं तिक्ख सिलीमुह पेसहि ।
ता सो वपयरमाहिं हसियउ हय वबंतु किं महहु ण दसियउ ।
घत्ता—हुई वीरउ परमाण्डु पमुहु जाणविवि सरं कस्सउ ॥
हउं णायबिलंबउ वरविणवे णियपहुपायहं मत्तउ ॥ २८ ॥

29

पम वबवि वार सम्पहाविउ वं कायवि हरिणा ओराविउ ।
वायं कमंतहु पवरं रसियउं अग्गु गिलेवि वं कालें हसियउं ।
मेसियसुरणरफणिसंपायउ जीयाउट रउहु संजायउ ।
णियजयविहुरविलाससमत्थें पहु कालियउ देव सरं हत्थें ।

१ G पुव्वेवसमयहिं

28 १ MB तहिं ण. २ M चरमवेद ३ B किर ४ MB कुमरहु ५ M वाद MB भणे प्रवर M कामर

28 8 b वाहइ मि प्रमुले. 5 a महुसम ... [illegible] 9 b जीमूय ... 10 b वीरहय ... 13 हुई ... 14 णायबिलंबउ ...

29 1 b हरिणा मिलित.

लोहवंत किर के णउ मग्गण धम्मुज्झिय किर के णउ भीसण।
गुणवज्जिय किर के णउ णिट्ठुर पिच्छंचिय किर के णउ णहयर।
चित्तविचित्त के ण किर चलयर वंम्मणेसिय के णेउ ताविर।
सुद्धिवंत णियदित्तिइ दित्ता उज्जुय के ण मोक्खु संपत्ता।
वइरिहि देहावयवि पइट्ठा एक्क ण जयसर अण्ण वि दिट्ठा।
कोडीसरु जि जाहं पवरासणु ताहं ण दुग्गमु लक्खु विणासणु।

घत्ता—अइदीहहिं विसविसमाणणहिं णिहिलु णहंगणु रुद्धउ॥
णारायहिं णायहिं णं मिलिवि सुणमिहि वलु खाणि खद्धउ॥ २९॥

30

कुंजर जरभावेण व भग्गा तुरय तुरंतंतयपहि लग्गा।
सदण संदाणिय वावल्लहिं भणु कहिं किर णिज्जंति रहिल्लहिं।
तिक्खखुरुप्पहिं छिण्णइं छत्तइं चिंधइं चामराइं वाइत्तइं।
चउदिसु पच्छाइयसरजालें विज्जाहर हरेवि णियकालें।
एम दिसावलि संदिज्जंतउ पेच्छिवि णिययसेण्णु भज्जंतउ।
सुणमिं मुक्कु बाणु सघोरउ ढंकिउ तेण वइरिपरिवारउ।
कोइ ण काइं वि तेत्थु णिहालइ वाहणु पहरणु को वि ण चालइ।
एत्थु तेत्थु मग्गियअवठंभणु सालसणयणु पमेल्लियजिंभणु।
वलु णीलीरसि बोलिउ णावइ जाम अहद्द णिइ संप्रावइ।
दिणयरसरदीवियदहदिप्पहु तावंतरि संठिउ मेहप्पहु।

घत्ता—त घतु महंतु विणासियउ उज्जोइउ णियंसुहिमुहु॥
जगि सज्जणसंगें जायएण कासु ण संपण्णउं सुहुं॥ ३०॥

29 १ M मम्में णिसिय, B धम्में णिसिय २ MB ण सताविर
30 १ MB जरतावेण जि भग्गा २ MB तुरत तहे पहि ३ MB किर कहिं ४ MB छिण्णहिं ५ MBK अघारउ ६ M परहणु ७ MB जेंभणु. ८ MB सपावइ ९ B णियसहिमुहु

7 *b* वम्मणेसिय मर्मान्वेषिण 9 *b* जयसर जयस्य बाणा जितस्मराश्च
30 1 *a* जर° ज्वर, *b* तुरततयपहि तुरत त्वरमाणा + अतयपहि अन्तकमार्गे 2 *a* वावल्लहिं सेल्लै, *b* रहिल्लहिं सारथिभिः 9 *b* अहद्द अभद्रा 10 *b* मेहप्पहु मेघेश्वरमित्र,

31

जं जयहर जलहरू णाइ हूसिवि
सुणमि मुक्क भीसु पंचाणणु
सुणमि मुक्कु अवंतु दुवाससु
सुणमि मुक्कु संवरु मंदरु
सुणमि मुक्कु चिमंडु महाफणि
सुणमि मुक्कु महंतु मंडीवहु
सुणमि मुक्कु मत्तसाराभरु
जं जं सुणमि मेहाणहु पेसर
धाइउ ताहे सुणमि आवरिसिवि।
मेहप्पहेण सरहु फुरियाणणु।
मेहप्पहेण मोरु अवसरिसणु।
मेहप्पहेण सकुसिसु पुरंदरु।
मेहप्पहेण गरुडु पणसिरमणि।
मेहप्पहेण तमेप्पणु सूरहु।
मेहप्पहेण सीहु वारणरु।
तं त मेहप्पहु विद्धंसइ।

घत्ता— जइ धाविउ विसहइं रिउहि सर कसर ण मुइं पंकेप्पिणु॥
मोसारिउ सुणमि जयराहिवइ सगरमाउ सुपप्पिणु॥ ३१॥

32

मग्गइ सुणमीसरि सोंडीरहिं
मेहप्पहु पहरेहिं पउत्तिउ
दाणवारिपीणिपमहुयरउलु
कणिरकणयकिंकिणिकोलाहलु
माणसवणपवणसंतोसलु
पणमिउ भलकिवि सहु आवहि
मंगउ किलउ रायपुत्तउ
पत्थरप्पाहिंहि मयपणमाणिहि
तं पई भरदारमाण पिउलमिय
तं पिसुणप्पिणु अवेद सुत्ते
मेहुदंडविज्जाहरवीरहिं।
सो भासेड जं सुपइं वि अजिउ।
माहवणणमहुवडुंमत्तलु।
कंठसिहावलिसेयवरथोयलु।
ता जयहु संवोहवि मयमत्तु।
भज्ज वि सुंदर कावि वियप्पहि।
पिहियउ तिहुयणि पुण्णसलिलु।
रत्ताओ सिय जं देवकुमारिहिं।
णिहय आवसिविधि णाइमिव।
पडिसीपिउ भरहाहिवपुत्तें।

31 १ MB जयहर° २ MB सुणिमि, ३ K सुणमि तास. ४ MBK मेहु. M सुमेरु. ६ MB महाणव M णहवउ B णहलग ८ MB वाउड जोमाइ ९ MB णेमिणु

32 १ MB सुणमि सगरि. २ MB मग्गवर° ३ M णि ४ G कंचि° ५ MB मिलु ६ MB सिरपणी. ७ MB दलद.

31 2 b णाइ हु मइयउ 6 b त धू व ठु तमोपणहु आणि

32. 4 करित्ति° कणयकण

घत्ता—महु मणिहि आउ सुलोयणए अत्थि भवणि घडदासिउ ॥
एउ लग्गउ तुह भुयबलमयहो पुव्वमेव आसासिउ ॥ ३२ ॥

33

जेण थलेण जित्तु घणमंडलु　　तोसिउ ससुरु सग्गि आहंडलु ।
तं बलु पेक्खहु दावमि अम्हहं　　अज्जु परिक्ख करेवी तुम्हहं ।
पेहाविउ आवत्तचिलायहिं　　तुहुं मि बप्प जुज्झहि सहुं रायहिं ।
तहिं अवसरि सेंदूरकणारुण　　जयवारणहु विलग्गा वारण ।
अट्ठ अट्ठचंदेहिं आवाहिय　　कक्खरिक्खगेज्जावलिसोहिय ।
एक्कु दंति जुवराए ढोइउ　　ण इंदें अइरावउ चोइउ ।
हयअरिकरिवरेण ते दंतहिं　　णिवडियणवविललंतहिं अंतहिं ।
सरससमुच्छलंतपलपंडहिं　　दोखंडीहूयवणदढसोंडहिं ।

घत्ता—गय पाडिय सूडिय ण सिहरि धरणिवीढु आकंपिउ ॥
देवासुरहिं णहि संठियहिं जय जय जयणिव जंपिउ ॥ ३३ ॥

34

एत्तहि रणु कयसूरत्थवणउ　　एत्तहि जायउ सूरत्थवणउ ।
एत्तहि वीरहं वियलिउ लोहिउ　　एत्तहि जगु संझारुइसोहिउ ।
एत्तहि कालउ गयमयविब्भमु　　एत्तहि पसरइ मंदु तमीतमु ।
एत्तहि करिमोत्तियइं विहत्तइं　　एत्तहि उग्गमियइं णक्खत्तइं ।
एत्तहि जयणरवइजसु धवलउ　　एत्तहि धावइ ससियरमेलउ ।
एत्तहि जोहविमुक्कइं चक्कइं　　एत्तहि विरहें रडियइं चक्कइं ।
कवणु णिसागमु किं किर तहिं रणु　　एउ ण बुज्झइ जुज्झइ भडयणु ।
ता चप्पिवि मंतिहिं ओसारिउ　　रयणिहि जुज्झमाणु विणिवारिउ ।
तुमुलरणें णिरु रोसाउण्णइं　　तेत्थु जि वसियइं बेण्णि वि सेण्णइं ।

७ MBK आरोसिउ
33　१ MB सिंदूर°　२ MB अद्धचंदेहिं　३ MB अवराइउ　४ MB देवासुर
34　१ MB संझारुणु सोहिउ　२ MB रोसाइण्णइं

33　5 *b* °गेज्जावलि° वरत्राभि　7 *b* अंतहिं अन्त्रै
34　3 *b* तमीतमु रात्र्या अन्धकार

घत्ता—पत्तिहिं एयरणि मयंतिपय मरवरकरि समरउ ॥
मरिविण पिउ सहियहिं हाविय सरसपणपवि पमुत्तउ ॥ ३४ ॥

35

का वि भणइ हंसावसरुद्धी कम्मयार पियहियय पउद्धी ।
गहपरत्तु हउं किंह रयमि हयविहि मोयहि कार्य ण मुवमि ।
का वि भणइ जं मेरं परिवज्जउ पिय तं हियउ सिवहि किं भिज्जई ।
जं मई चिरु अंतग्गहि परिजेउ महुरेसिपु तं पभिवयिवंविउ ।
का वि भणइ पिय कव मा होसहि मोसउ कावाकिव किं जमिहि ।
पहुलमकिपसीसहु कव्वणु मै मुइ मुई पिमिवेन मुमियव्वणु ।
जो मई थप्पिउ भासि पर्यतहि मा कंपउ उव करिवरसंतहि ।
पप्पेपमपियउ पयइपिंजावर का वि सप्पाइहु कंठउ चीणई ।
का वि भणइ आपवि तणुपाणुहि भाषिय पासि परेहि पिंडिगुहि ।
पाहिं धम्मेविलंबणु दिज्जई भसिपेगुणर साहुं ण किज्जई ।
को वि पुणासणुत्तरिजयकउ जप्पहि पहु मरारु वरउ ।
केण वि संचिय सिवरिमहारी रयकमोहि मार्येगहु केरी ।
यरप मिरहम्पिणु धोहिं चि हत्यहि मसु किं व किपउ पहु समत्यहि ।

घत्ता—रिउ मारिवि पच्छइ रयसमिवि मेल्लिवि ससव सपासणु ॥
गयवरसंपारइ को वि सुर करिवि वीरेसंमासणु ॥ ३५ ॥

35 १ MB कि एवमि. २ MB पाणहि ३ M मुइ, B मइ ४ K चीर ५ MB कारणेण परिवरपिहिं पिहिरि ६ MBK चोरहि ७ K मिरिय ८ MB सउ आरिसपरिसंमि ९ MB °समिवरं- १० MB °मणं ११ T सिमाणुहे १२ MB बज मिल्लणु १३ MB सोहु वह भिमाई १४ MB सीर- सेणासणु

10 समराय समाहो वार 11 पिय मिव

35 2. a तवयरत्तु महामातृकामारवत्त 9 a बहुपाणुहि मठेरतमस्त b मिहाणुहि पुत्पारिवास 10 b पाहु मि पाव:

36

पुणु जामिणीगमणि दिणमणिसमुग्गमणि ।
भेरीणिणद्दाइं कयजयविमद्दाइं ।
असमुद्दरउद्दाइं हरियंदणद्दाइं ।
गज्जियमयंगाइं हिंसियतुरंगाइं ।
चालियरहोहाइं सण्णद्धजोहाइं ।
चलचलियचिंधाइं धूलीरयंधाइं ।
किलिगिलियणिसियग्गइं जिगिजिगियअसिवग्गइं ।
कंपियधरग्गाइं सेण्णाइं लग्गाइं ।
ता संदणत्थस्स आहवसमत्थस्स ।
णरसिरइं लुणंतस्स करि हरि हणंतस्स ।
विहुणियदणुयस्स लच्छिमइतणुयस्स ।
परिचत्तसरकेहिं वरसुसमसरकेहिं ।
उब्भूयगावेण विज्जापहावेण ।
परपाणपहरणाइं छिण्णाइं पहरणाइं ।
कोंताइं कप्पणाइं मुसलाइं घणघणाइं ।
चावाइं चक्काइं चूरेवि मुक्काइं ।
ता गलियसत्थेण चित्तें महत्थेण ।
जयणामगएण इच्छियसहाएण ।
जियसरयमेहम्मि जो आसि गेहम्मि ।
सिद्धो सउण्णेण धण्णेण वीरेण ।
अहिराउ सभरिउ सो झत्ति अवयरिउ ।
फणिवासु रणि तिव्वु अद्धेंदुसरु दिव्वु ।
दोण्णवि रणि तासु गउ णाइणीवासु ।

36, १ M हरियय° २ MB °मयंगाइ ३ MB किलिकिलिय° ४ MB °धयग्गाइं ५ MBK परियत्त° ६ B omits this foot ७ MB कप्पणइ ८ MB चितियमहत्थेण ९ MB धीरेण धण्णेण, G धम्मेण वीरेण

36 3 b हरियंदणद्दाइं हरिचन्दनार्द्राणि 11 b लच्छिमइतणुयस्स जयस्यार्थये, 12 a वरसुसम सरकेहिं अप्रभिर्विद्याधरैः 20 a सउण्णेण सपुण्येन 22 फणिवासु नागपाश

ता विज्झवडेण ससिभासपुत्तेण ।
जाला मुयंतेण जालियदियंतेण ।
हुयवहसमाणेण मेहिहिरिण्णवाणेण ।
कुवरपुरासहिम णिहिहिविं रेविं पहिय ।
हरमसियपंपिसहि णवविसहविं हरि ।
परिमसियसिमिणवसि परसरिवि महतुमसि ।
अहु वि विहु तेण णयहु सुरेसेण ।
कुवारितासेण दहसीविवासण ।
घरिमो रसातवउ वहवहरिविं तवउ ।

घत्ता—जिणु तापयाउ पिउ रोसवइ तो वि णिवंधणु पत्तउ ।
सोई माइ कुमीउ भराहिवेण पुकियफलु किउ भुत्तउ ॥ ३६ ॥

37

१) पत्थ वयंतिहिं सुरयरमणियहि वल्लिउ जयसाहसु णयणिवयहिं ।
पहिउ कुसुमययव सुरपियरें गाइउ वं वसुवसिउ भमरें ।
जयविजासु जयरायु केरउ दरयहु तपउ याउ विवरेरउ ।
पहसिहियउ कुमारु विम्मयउ करकविगंकुसचोरवयोयउ ।
भलहरसउ पाहु समुरपमरि विवमार्णपु पवहुउ पुरवरि ।
तक्कणि सपढ वि परमवतावि मप तिपयमवणु परमइ भविह ।
अम्मावासपासविभरंमुह वंदिउ भवउ तिवपपुआयहु ।
मिहिवपरिवारिं मउवियपाणिहिं सुवकुहरमायसुककियवाणिहिं ।
पहुमिच्छतवीयरण्यभउ मोहविसासणु सितिपच्छउ ।
भयगरवंपु सुहासासाहउ पुरुवकरणुकियपापीउ ।

10 B वाहरिणं 11 MB दिहीव 12 बरमि 13 M रिवमि 14 MB °वयणवेण 15 MB °मिव 16 M बकवर 1 B पुम्मार 2 K कुमार.

37 1 MB °णाहव 2 MB पमिउ 3 K °सुम

24 b वविभाए° वैम्यम 27 a कुमर° एमुद्धम् b रहिव नारकिम् 30 a बहु विविहु बहादि बला विवाकरणामिव 34 व दबाद यस मता.

37 3 b वाद वैता. 4 b वादव बत्ता

गहियमुक्कगुणिगणगुणपत्तउ पुण्णपावकुसुमेहिं णिउत्तउ।
सोक्खदुक्खफलभिरिसपण्णउ इंदियपक्खिसउलहिं पडिवण्णउ।

घत्ता—इय भवतरु झाणहुयासणेण पइं दड्ढउ परमेसर॥
जिण जम्मि जम्मि महु तुहुं सरणु जय जय जियवम्मीसर॥ ३७॥

38

अक्ककित्तिदुज्जयजयरायहु महु कारणि उवाइयवायहु।
एयहुं मरइ मज्झि जइ एक्कु वि पच्छइ इच्छइ जइ मइ सक्कु वि।
तो वि णिवित्ति मज्झु आहारहु लच्छिहि कुच्छियकुणिमसरीरहु।
इय चिंतंति पुत्ति संभाविय लयियकर ताए बोल्लाविय।
तुह मइ सामत्थें असमंजस रणि उव्वरिय महीसि महाजस।
एई भंति होउ किं झायहि सुंदरि करपल्लव उच्चायहि।
जणणवयणु णिसुणेवि कुमारिइ णियमु विसज्जिउ कामकिसोरिइ।
सिरिणाहहु सिरि व्व आवग्गी जयरायहु करपंकइ लग्गी।
जाइवि पासि कुमारहु णेहें महिणिहित्तदंडासणदेहें।
जउ सोक पुणु पायहि पडियउ भासइ सामिभत्तिभरणमियउ।
अम्हइ णर तुहु णरपरमेसरु अम्हइ पक्खि देव तुहु सुरतरु।
अम्हइं णलिणायर तुहु दिणयरु अम्हइ कुवलयसर तुहु ससहरु।
अणुपालियहु काइं रूसिज्जइ अभयपदाणु सभिच्चहु दिज्जइ।

घत्ता—इय वयणहिं सो भरहंगरुहु मच्छरु माणु मुयाविउ॥
लच्छीमइवहिणिसुलोयणहे पुप्फयंतु परिणाविउ॥ ३८॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सुलोयणासयवरविवाहो णाम अट्ठावीसमो परिच्छेओ समत्तो॥ २८॥

॥ संधि ॥ २८॥

५ MB जय णिज्जियवम्मेसर

38 १ MB जइ मइ इच्छइ २ MB संधि ३ MB साकपणु, K सांकपणु? ४ MB भावइ ५ M भत्तिभरणडियउ, B °तत्तिभरणडियउ ५ MB वयणें

12 *b* पडिवण्णउ आश्रित

38 5 *a* असमजस कोपाविष्टा 8 *a* सिरिणाहहु विष्णो

XXIX

जे कया समरि पंका ते जिह मेल्लिवि पुज्जिय ।
पियवयण हैं वरयाहरणहिं जियजियपुंएं विसज्जिय ॥ ध्रुवकं ॥

1

थिर हुई पंचउल पंचमाव — ता सोयइ मण्णइ भिवकुमार ।
ता पणमिर्व तमाईपयेण — जिणवरपयपीणिवियमणेण ।
तुहुं वरउ मं जियर्वसि पिउ — तुहुं वरउ मं हुंवणोद्दंसु ।
तुहुं वरउ मं मायेणसंतु — तुहुं वरउ मं संवउ मांतु ।
तुहुं वरउ मं सालय धीर — तुहुं वरउ मं पुण्णेण धीर ।
तुहुं वरउ मं सिरिमविपिविकास — तुहुं वरउ मं धुवरायिवेह ।
हेकर अमण अपपाएण — तुहुं वरउ मं तमेवाएण ।
एयरह कि ममाई साहु होसि — मण्णाप्पं हुंसिउ वणहु जासि ।
एय भविवि तेण कमोहरिवि — पियपुप्फु विसैज्जिउ माहविवि ।
घत्ता—पर वाहिवि पणा पमाहवि सिव पयहुवमा होरि ॥
तें भरहु नरिंदरिसरहु वर व वर व मुहुं जोरे ॥ १ ॥

B give at the commencement of this Samdhi, the following stanzas.

णहण्णुरिवणरियहरिषा वनिवमतणणा ।
विरिपुहुवसणवदुमिवरिवी वसह् गर्ईवी ॥ १ ॥
तन्मोवलेरविर्वेरविरिवेवीर्णवलीर्वे
धार्णे इन्दन्ति रिवि मीवि न वमी मल भेद पुतीपे ।
धर्मे दुन्द्वन्तोके कविधवमविवेण्णवा णिरुविणी का
वीरर्थ ववरत र जिवावि मसो चमि पुण्णवेशिविन् ॥ २ ॥

GK do not give the stanzas here but at the commencement of Samdhi XXX. See note on Samdhi XXX.

1 B मुक्त २ MB पुहु ३ MB हरिविणु ४ M परमणु, BT वरणु ५ MBK वड बाहरण ६ MB णवर M णिविरिय ८ MB तोसवर ९ MB वेदवर

---

1 8 a वंचवारह कपणम 5 b हुवधोह इहराय, 6 b वरदहु कायवणयु, 7 a साहेम माविम 9 b रववारहण पाहुमविवा, 10 a हवरह कमया

2

लज्जंतु वि ताएं सो पउत्तु वरं गलउ गब्भु मा होउ पुत्तु ।
वसणेसु रमइ खलवयणु सुणइ अविवेयभाउ सयणाइं हणइ ।
जो एहउ सो वरं कहिं वि जाउ मा करउ पयहिं परियणहु ताउ ।
महु चरपुरिसहिं दुद्दंतदुरिउ पयहु केरउ घज्जरिउं चरिउ ।
होएण सुदुण्णयगारएण ता चिंतिउ तेण कुमारएण ।
गुरुकोवें सिसु जाणंति मग्गु गुरुकोवें जैंगि सिज्झइ तिवग्गु ।
गुरुकोवें को वि ण स्रयहु जाइ गुरुकोवें सपय घरहु एइ ।
गुरुवयणइ कडुयइ जाइ जाइ परिणामि सुपत्थइं ताइ ताइ ।
लग्गाइ ण सुइसुसिरंति जाहं जिम परिहउ तिम धुउ मरणु ताहं ।
लइ दिज्जमि हउ दिट्ठु पत्थु लंघियउ जेण गुरुसुयपयत्थु ।

घत्ता—जयवंतें सुप्पहकंतें तो पेसिउ गुणवंतउ ॥
आवेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु पभणइ सुमइमहतउ ॥ २ ॥

3

भो देव कसणसियतंबिराइं लइ रयणइं लइ पवरंबराइं ।
किं तुह णवणिहिवइ पाहुडेण किं किर जलहिहि पाणियघडेण ।
लइ भत्तितो वि णियकिंकराहं तुह पायपोमलालियसिराहं ।
जयविजयाकपणपत्थिवाहं विण्णविउं णिसुणि णिव अवणिवाहं ।
पहिलउ जि दोसु दीहरभुयासु ज दिण्णी सुय णउ तुह सुयासु ।
बीयउ जं कोक्किउ घरणिहाउ दावियउ सयंवरविहिणिओउ ।
तइयउ जं जइ णिक्खित्त माल रइलालस लग्गी तासु बाल ।
परघरिणि हरतहु रोसणडिय चोत्थउ तुह तणयहु समरि भिडिय ।

2 १ MB वरु २ MB °वयण ३ M किर ४ G परिणयहु ५ B जाएण ६ K सदुण्णय° ७ धुवु सिज्झइ
3 १ MB °णिहाउ.

2 6 *b* तिवग्गु धर्मार्थकामा 8 *b* सुपत्थइ सुपथ्यानि 9 *a* सुइसुसिरंति श्रोत्रविवरमध्ये
3 2 *a* णवहिवइ हे नवनिधिपते 3 *a* भत्तितो वि भक्तितोऽपि 4 *b* अवणिवाहं अवनिपानां राज्ञाम् 6 *b* °णिओउ नियोग

पंचमउ तासु णंदणु कुमारु
थिउ णियमणए एवँ रमणीउ।
एय दोहा दोसपरंपराइँ
जं ण वि भुंजइ मंजा वि मराइँ।
तं देव पसाउ तुम्हु सरणु
किं वंदु एत्थु सव्वस्सहरणु।
किं माणणु किं मणु किं जि भेउ
मं भिसुचिवि अवर मेरजीउ।
ता हउँ परिभमामि कामिणउ
पवसियए ताए महु सा बि ताउ।
जइ पुत्तु महु हासिउ भाइएंगु
ज सा तं जाणु ण भग्गु वंगु।
वेयरइ धम्म संगामकालि
गहसिपगिरयसमतमालि।

घत्ता—गच्छामो रोसे तिम्मे ता अथवउ संपहइ।
सुर वंदवि सो मरइ मंडवि जो उप्पाइय पयहइ ॥ ३ ॥

४

एम काहिवि तम पहुविउ मंति
गउ सा घोसइ विवाहुरि संति।
णरवइ मण्णइ पइ पिउसमाणु
जय विजय य सिरिउतिमिरभाणु।
महु मयर विभिन्न सुपवंड मयर
तुम्हारउ माणुसु एक्कु पवरु।
इसइ ससोसि गुणवंति मोहरु
को मरइयु कहीं सीक वहरु।
थमउ किंउ पुत्तहु दप्पभारु
थं कज्ज देवि विरयउ बाह।
पं मग्गु णिवारिउ कहइ भंगु
णउ किजइ घाति संभावसंगु।
ता कपकंपण हरिसियसुभाम
कुडवंमणाइ वंसाहियाम।
घरविविहपमंडियमण्णाहियण
पुब्बविळायसप्पाहियण।
मयणरपमाविपडिमणरप्पम
मणुभुवियमरयारसंपयण।
कण्णाहिं विपि मावंदियग्गण
णाउभिउ णियससुरउ अप्पण।

घत्ता— गुरु गोट्ठिहि विणवेरादिट्ठिहि माण विरइ किं किज्जइ।
अविपम्मे तो वि सकम्मे जीउ णिपाडिवि भिज्जइ ॥ ४ ॥

१ K दर्शनंदइ २ MB तहुविभेतु ४ B बधु ५ MB महु पुत्तु ६ MBK वक्कतु ७ M कवइ
4 १ G महु मुहु २ MB एमइ ३ MB भवइ MB पुत्तु किउ ५ M °वसिहुवे

10 a दोहा दोसिय 15 b णिय व कच्छमाकि युर्गमीणा धननेषस कृसिण. 16 र्थ म इ इ णीकमति
4 5 a मनवाउ मनमइ b देवि दच्च 12 a णि म में विचुरेण

5

को विसहइ सुहिविच्छोयताउ परियाणवि कज्जावियप्पभाउ ।
उम्मुक्कु सुयावरु ससुरएण तं जंतं हरिखुरखयरएण ।
णहु पिहिउ गिल्ल मदि करिमएण चलवलिउ खलिउ धयघड घएण ।
कय जलहिवलय चलवलियणीर थिय विसहर भरभयदलिय धीरं ।
उट्ठिय गहीर भेरीणिणाय आकंपिय कक्कुहणिवास णाय ।
गच्छंतु संतु सो समियसत्तु दियहहिं गंगाणइतीरं पत्तु ।
णियणियदूसावासहिं सउण्ण हेमगयाइ सयल वि णिसण्ण ।
पडकुडिहि महामहु सुरसमाणु थिउ राणउ गंग पलोयमाणु ।

घत्ता—सविहंगहि दिट्ठइ गंगहि छणससिरविपडिबिंबइ ॥
ण चेल्लिहि अमरसुहेल्लिहि कुसुमइ पडुरतंबइं ॥ ५ ॥

६

आमेल्लिवि खंधावारु तेत्थु कइवयभडेहिं सह महिमहत्थु ।
साकेयहु जाइवि भुवणसारि थिउ पंजलियरु णरवइदुवारि ।
पडिहारें पइसारिउ दवत्ति विण्णविउ णवेप्पिणु चक्कवट्टि ।
विसहरणरखेयरविहियसेव जउ पणवइ एत्तहि पेक्खु देव ।
ता दिण्ण दिट्ठि णाहें विसाल ससिवियसिय ण कंदोट्टमाल ।
पसरंतपणयरससायरेण मुहुं जोइवि सइ परमेसरेण ।
ण फलियइ णेहमहीरुहासु अंगुलियइ दाविउ पीढु तासु ।
उवविट्ठु तुट्ठु समाणु कियउ पोरिसु परमुण्णइ सेहहि णियउ ।

5 १ B कज्जु २ MB add after this पडिवोहिउ वुहमणॅं वरेण ३ MB add after this पडिपेल्लिउ सदणु सदणेण ४ M भयभर°, B पयभर° ५ MB धीर ६ MBK कक्कुहणिवासि ७ MB °तीरु

6 १ MB सुट्ठु २ MB सयहि

5 8 *b* गिल्ल आर्द्रा 6 *b* ककुहणिवासणाय दिग्गजा 9 *a* महामहु महातेजा

6 1 *b* महिमहत्थु मया महार्थो महान् महान्तो वा अर्थधर्मादयो यस्य 8 *a* दवत्ति शीघ्रम् ,5, *b* कंदोट्ट° नीलोत्पलम् 7 *a* णेहमहीरुहासु स्वहस्तसवर्धितवृक्षस्य फलिकया इव अंगुल्या 8 *b* सहहि सभा-याम्

पउ कमलणु पालिउ भवद वणु पउमाणुमाउ पउ भवद सणु ।
णयणंभमाउ पउ भवद णवउ कामाउराउ पउ भवद सरउ ।
जिणु मेल्लिवि को तेल्लोक्कसामि पइं मेल्लिवि को सुहसम्मयामि ।

घत्ता—जो दुक्खियउ सो परिरक्खियउ जं कुसेहु तं करवं ॥
पइं होतें पवि पहरतें जय महुं काइ म सिसउं ॥ ६ ॥

7

इय भणिवि विसज्जिउ जउ महंतु राएं गउ णियसिमिरहु तुरंतु ।
चलियउ वेयड्ढमहागिरिंदि जं दिक्खयउ कयवमहीहरिंदि ।
जसु चोक्खिम पुणु दिण्णउं पयाणु पयउ सुरसरिजलमज्जमाणु ।
जोयवि गंगहि सारसइं सुयमु जोयइ कंतहि पयवक्कसजुयमु ।
११ जोयवि गंगहि सुकम्पितरंग जोयइ कंतहि तिवलीतरंग ।
जोयवि गंगहि आवेत्तमंडु जोयइ कंतहि वरणाहिमंडु ।
जोयवि गंगहि पप्फुल्लकमलु जोयइ कंतहि पिउ वयणकमलु ।
जोयवि गंगहि विव्भत्त मच्छ जोयइ कंतहि चलदीहरच्छ ।
जोयवि गंगहि मोत्तियहु पंति जोयइ कंतहि सियदसणपंति ।
जोयवि गंगहि मत्ताहिमाण जोयइ कंतहि धम्मेक्क चीर ।

घत्ता—जियणेहिहि चम्महवाहिहि वेवि सुलोयण केरी ॥
मंदाइणि जयसुहदाइणि दीसइ राएं तेरी ॥ ७ ॥

१ M दुक्खिय MB परिरक्खियउ ५ M दुक्खउ, B दुक्खु

7 १ MB °सिमिरहु २ MB चक्किय पुणु वि दिण्णउं ३ MB जोयइ MB जोयवि ५ MB भमंतु मच्छु B मं सुरसरवि

10 b कवच चरोत

7 11 उज्जा हथा हिमि कमलनी, 12 मंदा इणि गङ्गा.

8

आहंडलमयगलसरिसलीलु तहि अवसरि मंयहें धरिउ पीलु।
सहु बहुवरेण पयंलतदाणु बहुजलविलंति बोलिज्जमाणु।
दंहि पियदुहकयअवलोयणाइ घप्पाणउं धित्तु सुलोयणाइ।
आलग्गपुच्छकच्छंतरालि हाहारववड्डियगरुयरोलि।
अवलोइवि रुइओहामियक हेमंगयपमुह कुमार ढुक।
एत्थंतरि थरहरियासणाइ देवंगवत्थसुइणिवंसणाइ।
धणदेविइ धारियवइरिणीइ करि कड्डिउ सुरसरितीरिणीइ।
णं धणसंपत्तिइ कामभोउ उद्धरिउ अहिंसइ ण तिलोउ।
णिविसद्धें णिउ सुरसरिहि तूहु हरिसें णच्चिउ किंकरसमूहु।
रणि वणि जलि जलणि समाइएण रक्खिज्जइ पुरिसु पुराइएण।

घत्ता—वेउव्विउ घरु मणिणिम्मिउ चारुतीरि सुयसेविए॥
हरिऊढइ थविवि सुपीढइ ण्हविय सुलोयण देविए॥ ८॥

9

दिण्णइं सुरजोग्गइं णिवसणाइं दिण्णइं अण्णण्णइं भूसणाइं।
दिण्णी वियसिय मंदारमाल सहुं णरवरेण विंभइय बाल।
पभणइ का तुहुं करि केण धरिउ किं तारियं सरि सो कवणु तरिउ।
भणु भणु सुरसुंदरि सुयणवंदि ता भणइ सा वि हिंडियपुलिंदि।
विंझउरिकडइ विंझइरि अत्थि पइ विंझकेउ वलफलियहत्थि।
महएवि पियंगुसिरी सुरूय हउं विंझसिरी णामेण धूय।
परियाणवि ताए तुह पहाउ सिक्खहु णीसेसु कलाकलाउ।

8 १ MB हारें २ M पलयत° ३ MB read this line as 5 ४ MB reed this line as 3 ५ MB °णियसणाइ ६ MB तीरिणीइ ७ GK णिवसद्धें but gloss निमेपार्ध ८ MB सुयसेविए.

9 १ B अण्णइ २ MB सहु ३ MB तारिउ ४ MB विंझइरि°

8 8 *a* दहि हदे 9 *a* तूहु रोधस्तटम्. 10 *b* पुराइएण पूर्वार्जितेन कर्मणा 11 सुयसेविए श्रीसेविते

9. 8 *b* तरिउ तारक

हउं तुम्हु समप्पिय दे वयसि संमेयसि ण कीलउं जं मयासि ।
मंदाणिय विरहि वसंततिलय हउं सुही सच्चं पेक्खियविलय ।
मणिभायसारं वंजणविसिट्ठ पइं पयम मंत मह पंच सिट्ठ ।

घत्ता—ते विसुमिवि तुहिउ विहुणिवि पाणी कय विहुरे ॥
सुरणीरा गंगाहूउ गंगादेवय हरे ॥ ९ ॥

10

सीअंती कुमिमपविसहरेण सह सरसें णाएं विम्मरेण ।
आ पहय सरायसकोमलेण तुह कंत करयलुप्पलेण ।
जा णासंती णवरहिं णयेहिं मुहमुहिय पंकहिं पत्थरेहिं ।
सा हउं विसुणहि हणि पियासि अक्कोवि ण णामें पत्तु काहि ।
मोक्खनियवि वर बालापिण्डु पवणंदोलणयोलंवाविंदु ।
मयरोह दक्खेप्पिणु कूरिमाइ कुंजर कीडिउ कुलेण ताए ।
मई जाणिउं मासुयलंपडेण जा जाणिय मवमिय सर्वंपडेण ।
सा किं हम्मइ पहकासियाइ मुणिमइ किं ढिम्मइ काढियाइ ।
इय विविहिवि हउं भणियरिय जाम वहरिविर गय णासिवि कहिं वि ताम ।
मई उच्चारिय विहुर वसेण हुए हुयर सहु सुविबसरसेण ।

घत्ता—मह हुयउ तुहि पमहइ विस वहुधाराहिं तुम्हइ ॥
रिउ णासइ विहि मरि पइसइ धम्मे काई ण कम्मइ ॥ १० ॥

11

इय सुणिवि सुलोयण चंदहासु मय गंगादेवय विपमिवासु ।
पुणु चोइयि णारयु चं गिरिंदु धउ मयरद पवरु णयणरिंदु ।

---

९ MB संमरिवि

10 १ MB विहुणवि हउं २ MB सीमेण.

---

10 ८ पंचणविसिट्ठ भावपमि भवरामि निविहामि पेनु, ३ परम मंत पंच परमेष्ठिन

10 ८ ३ हुदुहूदिव वर्धिता ६ ८ सिवाकि विपदाकि. ९ ३ वाकिवाद वर्णेन धनुवेन

वहु[1]कालपरिट्ठिउ सुहिण जाव   सत्तंगु रज्जु पालंतु ताव ।
वहुपेम्मसोक्खसंजोयणाइ   एक्कहिं दिणि समउ सुलोयणाइ ।
अच्छइ अत्थाणि णिसण्णु जाम   णहि खयरमिहुणु तें दिट्ठु ताम ।
हा देवि पहावइ कहिं भणंतु   मुच्छिउ पहु जम्मंतरु[2] सरंतु ।
हा णाह णाह विलवंतियाहिं   कुलउत्तियपणियाइय[3]तियाहिं ।
सिंचिउ चंदणमीसियजलेण   आसासिउ चलचमराणिलेण ।
पारावयमिहुणालोयणेण   मुच्छिय[4] पिय पणयासायणेण ।
हा रइवर हा रइवर रसंति   उट्ठिय पुणरवि सा णीससंति ।
पारावइ हउ रइविसेण[5] आसि   चिरभवकुलउत्ती तुज्झु दासि ।
तुहुं रइवरु पारावउ ण भंति   लग्गी पियगीयहि[6] इय भणंति ।

घत्ता--कहिं णिववरु कहिं सो रइवरु कवडें वल्लहु किज्जइ ॥
जयपत्तिहि भणिउ सवत्तिहि कइयवेण जणु खज्जइ ॥ ११ ॥

12

सोमप्पहपुत्तें णायरेण   जणमणसंसयहरणायरेण ।
जाणंतेण वि सुहभायणेण[1]   पुच्छिय पिय अवहिविलोयणेण ।
पुच्छंतहु कंतहु सुहरु चित्तु   वज्जरइ सुलोयण णियचरित्तु ।
इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि   पुक्खलवइविसइ विलासगेहि[2] ।
वेयड्ढमहीहरणियडदेसि   तहिं धण्णयमालवणंतवासि ।
सोहापुरवरि वयपालु[3] राउ   देवसिरिदेविसजणियराउ ।
तहु वाढियपयपंकरुहरेणु   सामंतु पसिद्धउ सत्तिसेणु ।
अडइसिरि[4]घरिणिआलिंगियंगु   रेहइ ण रइभूसिउ अणंगु ।
हिंडंतु कहिं मि लक्खणपसत्थु   णयरेक्कु वालु सपत्तु तेत्थु ।

11 १ MB omit this line २ MBK जम्मतरु ३ MT पणियगण°, B पणयगण° ४ B मुच्छाविय पणया°. ५ MB रइसेण ६ MB पियगीवहि

12 १ MK °भायरेण २ MB विसालगेहि ३ MB णयपालु ४ MB अडयसिरि

11 7b पणियाइयतियाहिं अवरुद्धादिपण्यस्त्रीभिः 9b पणयासायणेण स्नेहानुभवेन 12b पियगीयहि प्रियस्य ग्रीवायाम् 14 कइयवेण कपटेन वैशिकेन

12, 1a णायरेण चतुरेण 2b अवहिविलोयणेण जातिस्मरणादुत्पन्नावधिचक्षुषा 8a अडइसिरि° अटवीश्रीः

सामंतें पुच्छिउ मज्झु कुमारु तहिं काले पुत्तु सुसपरिमारु।
किं किर वियप्पहिं मदि सेसवेण तं वयणु सुणेप्पिणु मणिउं तेण।

घत्ता—उप्पेक्खिउ मयणु ण पत्तिवइ गउ इउ सिसु हकारिउ॥
पर मायए बिहुरणायए मंदिरउ णीसारिउ॥ १२॥

13

महु बप्प सिसुत्तणि मुयए माय पिउ मायहि विमहु वयण जाय।
भूमत्थें तायण वि ण दिट्ठु हउं तुम्हारउ पुरवउ पट्ठु।
ता तेण सपरिसेसें अगाउ पडिवण्णु पुत्तु सो सणेहेउ।
पंचहिं वि कहिउ णिरक्खियकम्मु ममियसमद्दमसंतमोहिं धम्मु।
रायं वजिउ महु मज्झु मंतु रायविद्ध तेम तं किउ सगंतु।
सामंतें पुत्तु ममयारवेण पालिय तियरउवहु ठविय वेण।
वणसिरियर फिर दुक्खियविरामु तहु मणुपयट्टु सुखाणयामु।
ता सिसु मयच्छि गुरुहार आय संचलिय तेत्थु जहिं णयर माय।
परिमुक्क सिविर संदणिरक्कहुकि सह पयणा णसार वणयंतपक्कि।
जा तावेचहिं मुहिसोमवसपरि अणण्णहरि मुयाक्खर पि णयरि।
वणयसिहरि वणिंदु मुवेउ कंतु मयवेउ पुत्तु मं कणियपंतु।
रोहूंडेउ डुम्मुडु सो वि मणिउ पुरवरि मण्णेकु वि तहिं जि वणिउ।

घत्ता—सिरिमत्तउ पिउपयमत्तउ विमलसिरी तहु गेहिणि॥
सुहकारिणि सुयमणहारिणि एवेमा गइवाहिणि॥ १३॥

13 १ MB सर्पमिककुसि. २ M बहूंडय

11 देवदेव न भाले

13 1 *b* ताम बोला 6 *a* ममयारवेण मम तारेणम्मां मीमा मेकारलम् 7 *b* वसुपद्दु सद्दा न तुरपवे प्रतिसमवम्मरमीतर्द्धवीलीर्यवातु म्हरणं माथ्यमाणि सम्मतहिंम्मो सिविर देवानि, एवं सर्व वर्यवु सच्चमानमोजनिनां प्रविशान्य सन्मोक्यं कर्यन्तमिति *b* वेसमाह 10 *a* मोवमय नरि मौक्षवत- रामके

14

विमलसिरिभाउ वणि विहॅयसोउ[1]   अण्णेक्कु वि अत्थि असोयदेउ ।
जिणयत्त घरिणि णंदणु सुकंतु   सूहउ से[2] सोमु सोमु व सुकंतु ।
ता ससुराणिवासु दुवारु धरिवि   बारहवरिसइं मज्जाय करिवि ।
जइ हउं णावेसमि तावरासु[3]   ता तेरी तणुरुह[4] देज्जसु वरासु[5] ।
णिद्दविणु ण गिण्हमि अज्जु माम   गउ वाणिज्जहि[6] सो जाम ताम ।
चक्कवइसंख वच्छर पउण्ण   कण्णहि थणयल समएण पुण्ण ।
पच्चारिय सक्खि[7] णिबधु मुक्कु   सुय दिण्ण सुकंतहु वइरि ढुक्कु ।
णिस्तिंसु तिक्खणिस्तिंसवंतु   मरु दारवि मारवि[8] वरु भणंति ।
मडेवि[9] णिरुद्धु थेरीथडेण   बहुवरु वि पणट्ठु परोहडेण[10] ।
गलगज्जिवि तज्जिवि कंचुइउ   अवलोयवि दंपइ पयपइउ[11] ।

घत्ता—कुढि लग्गउ पिसुणु अभग्गउ ईसावसु हेवाइउ ॥
सहुं घरिणिइ हरिणु व हरिणिइ वणु वरइत्तु पराइउ ॥ १४ ॥

15

दोह वि पयरत्तइं पयलियाइ   दोहं[1] वि मुहकमलइं मउलियाइं ।
तें रिउणा कह व ण मारियाइं   अंगइं तरुकंटयसीरियाइं ।
चिम्मक्किवि रयणिहि रीणयाइ   दुमलग्गफट्टपरिहाणयाइ ।
पासेयधोयतणुमंडणाइ   अवलोइयमयउलमंडणाइ ।
सूरग्गामि पत्तइ बे वि[2] तेत्थु   आवासिउ वणसिरिणाहु जेत्थु ।
देज्जणु अणुलग्गु जि दुक्कु केम   चलपावइयह कुसुमसरु जेम ।

14 १ MB विहियसेउ २ MB सुसोम्मु ३ M सायरासु ४ M णियतणुरुह ५ MB परासु ६ MB वाणिज्जें ७ B सक्खिणिब्बधमुक्कु ८ MB मारवि दारवि ९ MB मडव १० MB परोवडेण ११ MBK पयगईउ

15 १ MB दो वि २ B omits this line

14 4 *a* तावरासु ता + अवरासु अपरस्य 6 *a* चक्कवइसंख द्वादश, *b* समएण कालेन 8 *a* णिसिंसु निर्दय , णिसिंसवंतु खड्गयुक्त 9 *a* थेरीथडेण वृद्धासमूहेन, *b* परोहडेण पश्चाद्द्वारेण, कुड्ये छिद्रं कृत्वा गृहपश्चाद्द्वारेण 11 कुढि पृष्ठे, हेवाइउ कुपित

15 2 *b* °सीरियाइ विदारितानि 3 *a* चिम्मक्किवि भ्रान्त्वा.

विट्ठेण होंति वि तहिं सत्तिसेणु | णासेप्पिणु वेल्लिहिं मे करेणु ।
तहिं भायइं मायउ मसु मरणु | कर द्रुमु पेछइं वे वि सरणु ।
चिंधुप्पिणु णायह करमंडलगु | एक्काणिउ तेण किमाउ मग्गु ।
गउ णीसिवि सहसा मक्तिमभाणु | कि करइ तिमिरु जहिं फुरइ भाणु ।

घत्ता—जं कवेप्पिणु वइवरु रक्खिउ किउ पडिवक्खहु दुक्खु ।
पयवरिसइं अवि सप्पुरिसहं पोरुसवंतु वि मुक्खु ॥ १५ ॥

16

विसकरिकरकरहुरंगबाहु | पेरपीड पमेसरु सत्थवाहु ।
भारिविकेसामुहरायरत्तु | ता तहिं वि समागउ मेरुवत्तु ।
संठिउ समीवि विरएवि हत्थु | करिहरिरवबहिरियासिहरिसत्थु ।
कंतारमज्झि वारण पइट्ठु | सरणागम पविपंजरेण दिट्ठु ।
केम्वि वि ठामविम महासमेव | रिसिगयवरु थिय विमलकुलेण ।
मुणिवसहाहे णवविहु केवि पुण्णु | ओणाइ मेरुणु मायेण दिण्णु ।
जइपाहि दूरं तिवसहिं हयाइं | मच्छरियाइं जेण समुण्णयाइं ।

घत्ता—भणि होयइ पुण्णु पहोयइ पंसारिअमुहससिपयउ ।
वट्ट केरउ पयवज्जेरउ मेरुदत्तु घर आगउ ॥ १६ ॥

17

तहिं तेण तासु ओप्पवि तासु | भारिविबर लाइं बहुय विसाहु ।
मोयामि अमिय महु होउ पुत्तु | पहउ जुत्तिपयस्सणमित्तु ।
माहिं दंसमाणु वे विसि विपिह्रु | ता तहिं पत्तउ पंगुरव वइ ।

१ B omits this foot. ४ MB पमहिं ५ MB पहुण वे वि ६ MB विहुविवि गरु ७ MB सवित्ति MB गउ पेरिसउ

16. १ MB मरीव २ MB add after this: एवहिं तउ पुत्तं पविवाहे, सायाहं सवेवां बोसिमाइं. ३ MB पवरियसु

17 १ MB आपमिय २ B विसु

8 a वहवय बसिवरा.

16 1 b परमीय पंचेतमहे

17 8 a विरय वेर

पुच्छिउ वणिणा णियमतिवग्गु   भणु पयहु किं गइपसरु भग्गु ।
सउणिं[3] जंपिउ अवसउण[4] जाय   पयहु भवि तेण पणट्ठ पाय ।
भेसइणा भासिउ सुहमहेहिं   उद्दिट्ठु एहु कूरग्गहेहिं ।
धण्णंतरि जपइ पयइदोसु   सिंमें[5] जडत्तु पित्तेण सोसु ।
पवणें भज्जइ माणवहु गत्तु   भूयत्थें मंतें[6] पुणु पउत्तु ।
घत्ता—सउणत्तइं गहणक्खत्तइं सहुं पयईहिं पउत्तइं ॥
चिब्भावहं सयलहं जीवहं होंति सकम्मायत्तइं ॥ १७ ॥

18

इय संणिउ[1] सणिउं पभणेवि तेहिं   पुणु पुच्छिउ गुरु मउलियकरेहिं ।
किं सउणु किं व दुग्गहवियारु   किं पयइदोसु किं कम्मचारु ।
किं कारणु पगुत्तहु मुणिंद   ता भणइ सूरि सुणि[2] भो वणिंद ।
वहिरंध कुट्ठि वाहिल्ल भिल्ल   दालिद्दिय दूहव मूय लल्ल ।
अविसिट्ठ दुट्ठ दंप्पिट्ठ[3] कट्ठ   दंट्ठोट्ठ[4] रुट्ठ दुहघट्ट वंठें[5] ।
छिण्णोट्ठ कण्णणासाविहीण   दुग्गंधदेह काणीण दीण ।
णिल्लज्ज खुज्ज वामण कुसील   पलखंड सोंड चंडाल कील ।
जरचीवरधर फरुसुद्धकेस   छोहाणलहय कंकालवेस ।
जूयार णिसेवियणयरटिंट[6]   पावेण होंति णर कुंट मंट ।
पगुल परघर[7]पिंडावलुद्ध   विवरीय होंति धम्में विसुद्ध ।
णउ देव देंति णउ ते हरंति   देविंद वि पुण्णक्खइ मरंति ।
घत्ता—रिसिपिसुणिउं भवियहिं णिसुणिउ णियमें चित्तु णियत्तिउं ॥
परदविणइ परवहुरमणइ लोयणजुयलु ण घंत्तिउं[8] ॥ १८ ॥

३ MB सउणें ४ M अवसवण ५ MB सिंमें ६ MB मतें
18 १ M सणउं सणउ २ MB मो सुणि ३ M दुप्पिट्ठ ४ M दुट्ठोट्ठ ५ B वट्ठु ६ MB °णयरटेंट ७ MB परहर° ८ M घित्तउ, B घित्तिउं

5 *a* सउणिं शकुनज्ञेन 6 *a* भेसइणा ज्योतिर्विदा, सुहमहेहिं शुभप्रयोजनविनाशके 7 *a* धण्णंतरि वैद्य 10 चिब्भावह चैतन्यरूपाणाम्
18 8 *b* छोहाणल° क्रोधानल 12 °पिसुणिउं प्रतिपादितम्

19

ता तहिं मोहमिच्छ तरुणितउ भूयरयें कामिउ सयणेउ ।
ए एहि पुत्त ए एहि बप्प कि णीसारियउं महु तणउ बाउं ।
सुय तुह सुहयंगाइं कोमलाइं सग्गंतइं धूलीधूसराइं ।
होंताइं आसि महु सुहयराइं णिहाहिंवपियकंताकराइं ।
सुय तुह मुहसासामिउयाइं हउं सुमरमि णियउरयलि सुयाइं ।
सिक्खाविओ सि सिसुमहुरयाइं णिहेंसमाइं अक्खरपयाइं ।
णीसरियउ सुय तुहुं कि मलाउ कि महुयं महु घर जाइं बाउ ।
इय पलिवमो वि सा मंदमेह पडिवायउ णउ णियजणणमेह ।
पिउणा तिमुंडपविराइएण तवचरणु लइउ णिम्मोइएण ।
णिरप्पिणु रज्जयर मोहपासु महु गुरुहि पासु णरयारणासु ।
सुरगुरुणा संहिउ पिसिणु जम्म सोउमी धम्मंतरिणा वि तेम्म ।

घत्ता—तं बहुमउ मयर्पकप्पज्ज सेट्ठिहि तम समप्पिउ ।
महु सामिहि मयहरणामिहि मेरि पवेजासु जंपिउ ॥ १९ ॥

20

गउ वंदिवर सोहाउर तुरंतु पणवेप्पिणु पहुहि सवंधु कंतु ।
सो तेण णिरोपिउं तासु णाम पत्ताहि वि सत्तिसेणकु णाम ।
माउहरि पवेप्पिणु णिययघरिणि जं णिम्मणाहरि पवरकरिणि ।
वंदिणि गुणालयाइ णिम्मराइं मयणामपवि समुरय सिरिहराइं ।
गुरुहार धारि पेसलसरीर साहुरपहु णउ सकार सहार ।

19 १ MB सुमरमि २ MB णिरप्पिणु ३ MB णि तुह सुय. ४ MB लीढ ५ MB सर्व

20 १ MB वणिवर २ MB णिरुपिउ ३ MB "पवीउ"

19 2 a पेउ भाविउम्म् 5 b तुमरमि स्मरामि 6 a "णकाइं णाणि. 9 ति मुं केशानि-मलरक्ममोहस्पत्तारमीरणिविउ.

20. 5 a पवरउ" गर्भिणिम्म्, b ण हार भारवीढ.

सासुरयहु णिग्गउ भद्दवरिट्ठु आवेप्पिणु सोहाँपुरि पइट्ठु ।
घरि दिट्ठु राउ इच्छियसिवेण वहुवरु मग्गिउ पसरियकिवेण ।
णिउ णियवणिवासहु दिँण्ण धामु गोउलु माहिसु फलछेत्तु गाँमु ।
आसणु भूसणु णिवसणु समग्गु तवु करिवि मंति गय कं पि सग्गु ।
मुँउ मेरुयत्तु पाँयडियसिरिहि तहिं देसि पुंडरिंकिणिपुरिहि ।
पयपालणरिंदणिहित्तचित्तु वणि हूयउ णाम कुबेरमित्तु ।

घत्ता—तुहु धारिणि मरिवि सुकारिणि जइ वि ण सम्माइट्ठिणि ॥
व्रउं पालिवि दुक्किउ खालिवि हूइ धणवइसेट्ठिणि ॥ २० ॥

21

पुत्तंत्थिणि भवभावियणियाण सा एक्कतीसघरिणिहिं पहाण ।
गब्भेसरि सयलकलापवीण धयरट्ठगमण सद्देण वीण ।
भवदेवें पावें पसुवहेण तं वहुवरु दड्ढउ हुयवहेण ।
घरि अट्टझाणें मरिवि तेत्थु जायउ पुरंसेट्ठिणिवासि एत्थु ।
पारावयजुयलु मणोहिरामु गुंजारुणच्छु वण्णेण सामु ।
तं घेप्पइ खुज्जयवावणेहिं तं[3] संभासिज्जइ परियणेहिं ।
णच्चइ हक्कारिउ सदु देइ पट्ठवियउ पुणु रगंतु जाइ ।
पुच्छिउ पहुणा कहिं पाव जंति धम्मेण जीव किर कहिं वसंति ।
तं दावइ चंचुइ णरयमग्गु उद्धाइ ताइ सग्गापवग्गु ।
तहिं पक्खिणि हुउ रइसेण णाम तुहुं रइवरु पक्खि सँणेहकाम ।
अच्छहुं कीलंँतइ बे वि जाम सो सत्तिसेणु तहिं मरिवि ताम ।

घत्ता—तें[6] वणिणा वणिसिरिंमणिणा धणवइयहि सुउ जायउ ॥
सोहग्गें जणमणलग्गें रूवें णं सुररायउ ॥ २१ ॥

४ M सोहाउरि; B साहाउरि ५ MB दिण्णु धाउ ६ MB गाउ ७ MB मुउ ८ MB पयडिय°
९ MB वउ

21 १ MB पुत्तत्थि वि २ MB पुरि सेट्ठि° ३ MB संभासिज्जइ परियणजणेहिं ४ MB सिणेह°.
५ MB कीलत बे वि ६ M त ७ MB °सिरिमणिणा

21 2 *b* धयरट्ठगमण हंसगमना

22

जं णिवडिउ कयरयणसिरिकेउ णामें सो भणिउ कुबेरकंतु ।
सुमरेप्पिणु जम्माहिसेउ ते मंतिदेव तहु देंति भोउ ।
वत्थंगु तिमयलद भूसणंगु मज्जंगु तुरिय जम्मोयवंगु ।
पवहइ दुइदुमुदसप्पवाहु मज्जाणइ पवरिसइ धारिवाहु ।
णिच्चं पिय पिवइ लाछिपेतु भवणु वि सुरहुसिर छोहिमेतु ।
समभेय रयइ वीणा सवेणु घरि चिंतिउ दुम्मइ कामधेणु ।
रय णिम्मलोयभुंजणयवाहु जयजोम्मणु पिडवा हिडु णाहि ।
पियसेणु तेण सहयरु पवरु किं बहुएं किं एक्कु वि कक्कु ।
दप्पदर मणु तेरउ परमणितु आहासइ सो भवभिण्णतेउ ।
णवहिं विणि गय णवणमाझि विहुय मुणि दोहिं वि णवविमुज्झि ।
पेउ सहयउ णामें पहारविंद को पावइ गुरु हुय सीलसरिद ।

घत्ता—तेसु वि पुरि सुहयंकियपवरि वणि वरहेमवसमायउ ।
णयणायणहि वंभु णयहि सायरदत्तु कुडीवउ ॥ २२ ॥

23

तहु केरी जं वणियय सिरि णेहिणि णामेण कुबेरमित्त ।
तहि पउमंमंतरि वरयणय हूई वलमण्डिउ मरिवि तणय ।
जं सुरवसोक्खमाणिक्कपाणि कम्मेहसमयण कवयंडिवाणि ।
णीहालियणपसंहासकेस जं कामभति पव्वपवेस ।
णामें पियदत्त पसण्णदिट्ठि गुणभव जं वणमाणववट्ठि ।
मण्णहिं दिणि विविमकुसुममाल कव ताए णाई मयंकसरपसाल ।

22. १ MB हैं. २ MB हउमैर मोक्ख. ३ MB दोहिं मि मुणि. ४ MB वर ५ MBK पयरण°
23. १ MB वम्मंतरह° २ MB वणविमिवय ३ MB दुमवरणह. ४ MB मयपयमाण; K मयवयलमाण and gloss मयं; G in gloss मयवरवायमा.

22. 5 b दमोयवंतु दत्तपयोतमा 6 a पवेद्य मंतपेण वहिता. 10 b णवविसुज्झि सव्वमसारतम्मे. 12 वरयण° पुरेउ.
23. 5 b हुणभव पुण्णा

गय लेप्पिणु ससुरयघरु वयसि पियकारिणि गइजियरायहसि ।
तं पेच्छिवि विंभिउ इब्भतणउ एउ[6] विण्णाणु ण मुणइ मणुउ ।
तं वयणु सुणिवि सच्छइ सईइ णियसुण्ह पससिय धणवईइ ।

घत्ता—पियँवत्तइ सुइसुहमेत्तइ मयणजलणु सधुक्किउ ॥
मणु लेंतें तेणे जलतें झत्ति कुमारु झुलुक्किउ ॥ २३ ॥

24

जाणिवि तणयहु कण्णाहिलासु वणिणा पारद्धु विवाहु तासु ।
णाइणवणि पट्टण जणमणोज्ज णिव्वत्तिवि णियकुलजक्खपुज्ज ।
भायणइ दुतीस समीरियाइ णिरु चोक्खभक्खपरिऊरियाइ ।
तर्हि एक्कु पवमाणिक्कवत्तु जा गेण्हइ तहि सो होइ कंतु ।
वणिउत्तियाउ समाइयाउ बत्तीस जि पियदत्ताइयाउ ।
सव्वहु वणिणार्हे भूसणाइं दिण्णाइ विलेवणणिवसणाइं ।
गेर्हेहु पभणिवि परिभावियाइ चरुभरियइं थालइ दावियाइ ।
ता कणयवत्त बहुभोज्जु थइउ एक्केक्कइ एक्केक्कउ जि लइउ ।
सरयणु पूर्यदत्तहि करि विलग्गु को लघइ किर भवियँव्वमग्गु ।
पयपालसुयार्हि सुहालियार्हि गुणवइजसवइणामालियार्हि ।
आलद्धउ णेउ तहिं चरुयवत्तु हियवउ मसारहु वणि विरत्तु ।

घत्ता—मुगॅरोलइ गिरिकुहरालइ वैरु पइसिवि तंवु किज्जइ ॥
णउ दाणहु सुहिसंमाणहु कारणि हलि कलहिज्जइ ॥ १४ ॥

५ MB °तणुउ ६ MB एयहु ७ MB पियदत्तइ ८ MB सधुक्कियउ ९ MB जेण १० MBT झुलुक्कियउ

24 १ B समारियाइ २ MB परिपूरियाइ ३ MB सपाइयाउ ४ B गेह पभणिवि ५ K पभा-वियाइं ६ MB एक्केकउ एक्केकर्हि, ७ MB पियदत्तहि, ८ MB भवियव्वु मग्गु ९ MB णे वि १० MB मिग° ११ MB वणि १२ MB तउ

10 पियवत्तइ प्रियावार्तया 11 झलुक्किउ सतापित

24 8 *a* समीरियाइ प्रसारितानि 10 *a* सुहालियार्हि सुखवतीभि, 11 *a* चरुयवत्तु चरुकपात्रम्

25

रोमहरविसमि सियवरवियासि ममियमाममंतमीहि पासि ।
सर्दु कारयउ तार्हि सीमंतिणीहिं पत्तहि वि पवहमंगलगुणीहिं ।
धणियमणु सुगपुप्फहरणु मियदेंतर सर्दु विरइउ विवाहु ।
वर्षमासु मेरेप्पिणु खोपवासु पयपालेहु सुर्वे हूयउ गुणासु ।
देवसिरिदेवि मसवमहीहि वसुमइ सुय हूई पवरवीहि ।
गयजम्मपरिविय सा दिण्ण ताहु पुणु हम्माउ होहि सि पेम्मणहु ।
संतावि पमेप्पिणु सो वि पुत्तु परणाहें लायउ मुणिचरित्तु ।
देवीउ कमयमाआरयाउ पव्वज्ज लएप्पिणु संठियाउ ।
जं परिवय दे पव्वाइय सण्ण कामकमाइ विप मीरि मरि समण्ण ।
एक्कु वि मुउ स कुबेरमित्तु मो माचर तवचरई माल सत्तु ।

घत्ता—जयकीमई मासिउ कुमीउ हसाइ प बोलेइ अम्मारे ॥
भणसत्थउ मेलेंमणत्थउ माणुसु पुण वि सुम्मार ॥ २५ ॥

26

सो विय सुइ तार्वे विहिड मंति तहु दंसणेण अमाई ण संति ।
किं विइविपकरण विमीत्ति कम्मु हो मेरई कम्मु ण कि पि विसु ।
मायउ अमाई मिरमेंतु दिट्ठि अम्मउ विमलमोहिरि ताम देट्ठि ।
राउ वि कुमारु मंति वि कुमार दोन्नि वि होति ओहावि विचार ।
हिरिविक्कमरेंपरु बद्दु सुपहु वारिउ पहुणा चव देहु मुद्दु ।
जयविपिउगुणि कोमलसहार सिसुमंतिहिं सर्दु रायावियउ ।

25 १ MB एमारे विमर° २ MB तउ मवर तेहि ३ MB विसरण ४ MB कमलु ५ MB विद्दु. ६ MB विसमरि. MB कम्मलाहि MB इमाहि ९ MB वेसई १ MBT देवमलव

26 १ MB दंसणि अमारु माहि तमि. २ MB विरउत ३ MBK वीसु.

25 4 a वयमाणु प्रतपाल 5 a मसु वत इ कि वरपमावता 12 मे वाणलव अतिसरणता.
26. 4 b विचार वनियप 6 a भति सिय° कामीप

अण्णहिं दिणि णंदणवणि पइट्ठु अरुणच्छवि वाविजलोहु दिट्ठु ।
पुच्छिउ विहसिवि चवलमइ तेण इह लोहिउ जलु किंह कारणेण ।
बुहसिट्ठविसिट्ठगईचुएण पडिजंपिउं विउलमईसुएण ।
वावीयलि अच्छइ मणि णिहित्तु तहु छायइ दीसइ सलिलु रत्तु ।
ता तेहिं मिलिवि असंसएहिं पाणिउं वहि घल्लिउं घडसएहिं ।
चिक्खल्लतल्ललोलणविलोल थिय सयल णाइं कयकील कोल ।
माणिक्कु ण दिट्ठउ तेहिं केम वहुमोहधहिं जिणवयणु जेम ।
अण्णाणकिलेसें णत्थि सिद्धि गय घरहु परिक्खिय मंतिवुद्धि ।

घत्ता—गरुंगावइ सपणयकोवइ पयहिं पडंतु वि कयरइ ॥
वसुमइयइ रयणिहि दइयइ चरणें सिरि हउ णरवइ ॥ २६ ॥

27

मंडलियमउडरुइरइयराइ अत्थाणि णिसण्णें सुप्पहाइ ।
जो महु सिरु पहणइ णियपएण तहु किं वुत्तउं णरवइणएण ।
ते तरुणमंति पुच्छिय णिवेण तेहिं वि पउत्तु सफरुसरवेण ।
तुह जेण दिण्णु सिरि चरणघाउ खंडिज्जइ णिव तहु तणउ पाउ ।
तं वयणु सुणेप्पिणु विमलवंसु संठिउ हेट्ठामुहु रायहंसु ।
महु सिरचूडामणि मयणसरणु खंडिज्जइ किह सुंदरिहि चरणु ।
अविवेउ महंतउ जासु गेहि दुक्करु सिरि णिवसइ तासु देहि ।
संसिद्धसमग्गतिवग्गलिंगु भल्लारउ भुवणि वियक्कसंगु ।
इय चिंतिवि णियकुलकमलमित्तु कोक्काविउ तेण कुबेरमित्तु ।
आउच्छिउ तं णीरारुणत्तु अवरु वि जं सीसि पयग्गु घित्तु ।
तं णिसुणिवि मामें वुत्तु एम पाणियरत्तत्तणु णिसुणि देव ।

४ MB किं ५ MB वावीजलि ७ B असेसएहिं ७ MB चिक्खिल्ल° ८ MB कयलील ९ MB गुरु°
27 १ MB omits this line २ MB फरुसें मणेण ३ MB दिण्णु जेण ४ B गेहि ५ MB अवरु वि सीसें पयलग्गु घित्तु

9 *a* बुहेत्या दि— बुधैर्या शिष्टा उपदिष्टा विशिष्टगतिर्व्युत्पत्तिस्तया च्युतो रहित 10 *a* वा वी य लि वापीतले, 11 *a* अ स स ए हिं सशयरहितै

27. 2 *b* ण र व इ ण ए ण नीतिशास्त्रे 13 व णु जलम्

घत्ता—रसगिरिं पंतिउ पिउ तीरवसिउ मणि मच्छरु ।
तहु कायउ पसरियरायउ अणु अणु जोइउ पेच्छरु ॥ २७ ॥

28

गुरुणारीहिमयणरसु पहुणि सिरिविजयाइ भज्ज व सरसविहुणि ।
गुरु पुत्तु जायवि रोसंकियाइ सिरि महिउ होपी पउ पियाइ ।
ते पुत्तिअंत वरबेउरेण ता सेपुरु सेढि महीसरेण ।
पयवउ पाहि कुरुयोसिणीणि विहुउ पविपंकुरु कम्मभूमि ।
साहउ व विजयम्मोवएस्सु जरदासिरु पुसिर दाणवेसु ।
तें पेच्छिवि मणु कुबेरमित्त भवक कि पव्वाउ समुददत्तु ।
सुरमहिरिव णेपि सुयम्मसारि दुपा सुसीसे धाविसुवमारि ।
जाया मरेपि मेहीरवासि जोयंतिर्यं सुर वंसंतवासि ।
पिउकमेह णाम वारणमुणिंदु पियदत्तह मुंजाविउ मणिंदु ।
सिद्ध पिविवि पुच्छिअ तहुं पुगेस्सु करयड्ढ होसह मुणिवाह मज्जु ।
पारिपर्यगुमियउ करपमि वामर कणिट्टु हाविपि भवमि ।
गउ मुणिवरु काडें पंच पुत्त मइपुर्य कुबेरदत्तेण हुत्त ।
जो सवरेव सुरै सो वि एउ संभूउ पुत्तु वि पिउ गणेसु ।

घत्ता—कह पिराइ तेसियमरराइ जयइ सुकोयम मासर ॥
सोहंती पहरं फुरंती कुंदपुप्फयंती एार ॥ २८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जयमहारायसुक्खगमण-संवरणं णाम एऊणतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २९ ॥

॥ संधि ॥ २९ ॥

१ MB पिउव

28. १ B पुवभह २ MB कुसीसु मिक्ख° ३ MB रिमएत्तहि ४ MB जोयतिर दे. ५ MB मिमवमर. ६ MB दर ७ MB हुर MB पहर

28. 1 b °मिहुणि °मउह 4 कुरुजोसि° कुरुजभोमी 8 a मेहारदासि मेयय भाले 15 यहद मयका; यह तदी.

XXX

अमियमइअणतमईसईहिँ सीलगुणेहिँ पसाहिउ ॥
जिणवइगुणवइवरजसवईएँ वधुवग्गु सबोहिउ ॥ ध्रुवक ॥

I

लोयवालु सा वसुमइ राणी   पउरदरियहि तियहिं समाणी ।
बारहविहदिक्खाइ समग्गाइ   तिण्णि वि सावयवइ दिढु लग्गाइं ।
खंतिहिं कहियउँ धम्मु णिरंतरु   अरुहमग्गि लग्गउ अंतेउरु ।
णिसुन्भवमगलणिग्घोसहु   ताम कुबेरकतवणिवासहु ।
चरियामग्गे णिग्गयरायउ   जघाचारणजुयलउं आयउं ।
पियदत्तावरइत्तें णावियउ   लहु जि तेण पंगणि पउ थवियउ ।
तो तहिं पक्खिजुयलु सपत्तउ   पक्खहिं पहणइ पयरउ भत्तउ ।
दोहिं वि मुणिहिं गुणिहिं जोयतह   धम्मवुद्धि होउ त्ति भणतहं ।
रिसि पेच्छिवि भउ सुमरिवि मुच्छिउ   महिहि पडंतु णरेहिं णियच्छिउ ।
सलिलें सिंचिउ थियउ सइत्तउ   अवरोप्परहुं जि णवर विरत्तउ ।
भरई पक्खि किं कीरइ पक्खिणि   कहिं रइवेय महारी पणइणि ।
सरइ सेकोंति पुण्णससिकतें   किह जीवमि णिम्मुक्क सुकतें ।

घत्ता—सोहापुरि वहुवरु पउ चिरु पवहिं दपइ णहयर ॥
लोलंत पलोयवि धरणियले कउ अलाहु गय मुणिवर ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

णाइन्दणरिन्दसुरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥

GK give this stanza as well as तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यै etc here for which see note on Samdhi XXIX

1 १ MB तियहिं २ M सवाणी ३ MBT °सिक्खाइ ४ MB कहिउ ५ MB णेरतरु ६ MB पियदत्ता° ७ MB ता त पक्खिमिहुणु ८ MB भणइ ९ MB सुकंति, T सकुंति

---

1 4 *a* बारहविहदिक्खाइ अणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतरूपया दीक्षया 9 *b* पयरउ पदरज 12 *a* सइत्तउ मूर्च्छारहिततया सचेतनम् 13 *a* भरइ स्मरति 14 सकोंति पक्षिणी 16 अलाहु अलाभोऽन्तराय

2

वसुमईए भवसंकमपेसए सिमिण वि पुभिच्छाएं मियवेसए।
बंधुए वहिपेम्मि संपिहियएं थाहि मि मयमयणामएं किलियएं।
महपरियणहि समउ आणाविउ रएवेणागमु णयरु पाविउ।
मा विहडेपि पयडु म विरप्पउ सिमिण वि सुहुं मुंजउ कंदप्पउ।
णयणें लेप्प ताएं पुंणु रत्तएं कणु चुणंति खेडंति पसत्तएं।
वप्पणगिरिसमीवि सुरणयरिहि करिदंसणविहेवरकंतिमयहरि।
ते तहिं संमाणारय जायए आयवि धवल तिणाणविहायए।
मणयमएहिं मणतमएहिं वि आयवि सेसएहिं विहि तोहिं वि।
पुच्छिय त कुसुमसरविवाय पारायणमंबेयु मयाय।

घत्ता—मायणमिहुणतर तं भरिवि भवसंकडि संतावियई॥
मुणि मण्णए एव्वए कि पि ण वि जिह भावेण विसामियई॥२॥

3

जिह वासरकिय पहुएं बाकर पमेयापुखंतप्पमकं।
जिह वायर विसासु जिह बहुएं जिह सामेणु सरणु पउरं।
जिह पहु मण्णकणु भिण्णभिण्ण कण्णकवणणयणोहि धुत्तिउ।
पाकिउ हंडे जिह सखाणसरणे जिह भर कमाट धुरणामत्थे।
जिह घरि रिजणा कपड पमीयपु जिह वहुयव पयर पभिजवमु।
एवं जिह जिह भाहिउ मुणिमाते मयणहरियविसंसवयाहे।
तिह तिह कमिणाहि णावेप्पिणु कोपणासपुरवरि पसेप्पिणु।
सुवसंभोगहु सिरिविमयसोमहु भाविउ सपवहु वावमसेवहु।

घत्ता—इय मिहुणिवि अणवउ वम्मवइ हुवउ विवेसियवण्णउ॥
गुणवालअसमारणाथसियए कयउ जिह मुणवेसउ॥३॥

2 १ MB सिवसाइ. २ MB वाममि ३ MB परिमयइं ४ MB स्वरतं ५ MB °तिसोसीन°
3 १ MB वर २ MB सत. ३ MB मिहवि° ४ MB वर जिम°

2 6 b पवणरं मयवी कणमियवी
3 1 a वददवकि हिलपुवे 6 b °याइं भाईच °भाचेन. 9 मिवविणपवर मिलविवसग.

4

अज्जिय हुई सम्माइट्ठिणि घरु मेल्लेपिणु धणवइसेट्ठिणि ।
अवर कुबेरसेण रायाणी दिक्ख लेवि थिय सुट्ठु अदीणी ।
किंकरेण केण वि ण पलोइउ तं विहिविहियविहाणें चोइउ ।
गयउ कवोयजुयलु सारामहु कहिं मि भमतु[1] पुरंतिमगामहु[2] ।
कणु चंचुइ कड्डइ णयगीवइ जाम चरइ किर वइसामीवइ ।
सरदुंदुरसेढामिसभोयणु णवमहुबिंदु व पिंगललोयणु ।
असुहरतिक्खकुडिलणहपंजरु उट्ठिट्ठउ तहिं जायउ मंजरु ।
वइविवराउ झत्ति णीसरियउ[3] तेण कंठि पारावउ लइयउ[4] ।
पक्खिणि पासिहिं भमिवि झडप्पइ णियपियपरिहवि णारि[5] वि कुप्पइ ।
चिरभववइरें दसणकरालें कसमसत्ति[6] खगु खद्धु विरालें ।

घत्ता—मुइ वल्लहि दुहविद्दाणियए विहि वलवंतु पउत्तउ ॥
अप्पउ तणु माणिणवि रिंछिएं[7] विसदंसहु मुहि घित्तउ ॥ ४ ॥

5

पक्खिहिं पसुहुं वि पेम्मु पयट्टइ णरहु ण किं विरहें मणु फुट्टइ ।
पुणु तहिं पुक्खलवइदेसंतरि जीवदयाहलेण सुहसुंदरि ।
रययसेलि खगदाहिणसेढिहि उसिरिहि[1] णयरिहि मोक्खणिसेणिहि[2] ।
दिणयरगइ णिवसइ खयरेसरु तेयं णं पच्चक्खु दिणेसरु ।
तहु ससिपहदेविहि हुउ रइवरु तणउ हिरण्णवम्मु ण रइवरु ।
तेत्थु जि गिरिवरि उत्तरसेढिहि गउरीविसयभोयपुररूढिहि ।
घडियउ[3] तहिं राणउ विज्जाहरु मरुरहु माहवियहि देविहि वरु ।
सा रइसेण मरिवि तहिं पक्खिणि ताहं विहिं मि हुई णं जक्खिणि ।

4 १ K भवइ २ MB परंतिम° ३ MB णीहरियउ ४ K धरियउ ५ K णारी कुप्पइ ६ M कसमसंतु; B कसमसत्तु ७ T रिच्छियए
5 १ MB उसिरइहि २ MBK सोक्ख° ३ K चडिउ.

4 5 *a* णयगीवइ नतग्रीवया, *b* वइ° वृति . 10 *b* कसमसत्ति भक्षणप्रकारानुकरणे 12 रिंछि-यए पक्षिण्या
5 5 *a* रइवरु काम .

एय पत्तिय पहायइ णामें रूवें ससिहिं हिंगइ मा कामें ।
गयउ कहिं वि चंद्रप्पहकुमारु दिट्ठु कपोयमिहुणु तहिं कीलइ ।
तेण हिरण्णवम्मणामाएँ परमउ सुमरिवि सिहिंयउ बालें ।
पहि जं विरइउ जम्मकहाणउं पणियएपविरइयसंमाणउं ।

घत्ता—कइं पिउणा पवरसयंवरए ताइ मयच्छिइ कलियउ ॥
पारावयजुयलउ पियचियउ संभरंतु मुच्छिरिसियउ ॥ ५ ॥

6

पियमइ कुम्मिवि चिवडिय महियलि सिंचिय पाणियएण सिरि हरयालि ।
रइसेणापरि भणइ वामिय सा रइवरविरएँ णामामिय ।
कंचुइणा भरवइ विण्णविउ दुहियहि हेउ कुवेरं चविउ ।
होउ सयंवरेण किं किज्जइ भाउ भाउ रणवइ जाइज्जइ ।
इरयह चित्तपडु पहाविउ सो वि ताइ पियरियइ माविउ ।
मंदिरि आपवि गहएणु मंगिउ फुल्लसरु जं सरइ तेण कीउ ।
सुरगिरि परिवंचिवि पयाएण चयरउ धम्मह कुंभरि पयाएण ।
कयपउ तं वाय सुह ण पावइ पुच्छिहि केरी मेर को पावइ ।
माम अयणु हरिसें कराइयउ मेविणयणु अवलोयवि मुएयउ ।
केयरमियउ जाय पुणु कितउ ताव हिरण्णवम्मु तहिं पत्तउ ।

घत्ता—पुणु माम पयडिय मेरहो वि च्चिय वि सह भावंतउ ॥
पिहुं फलिमिफलरमसिरवि हिं तुरिउं पयाहिय देंतउ ॥ ६ ॥

7

रइवरराय रराइयउं घोरउ पुकर माम जहिं तहिं संभारउ ।
तेय परिचिम्मय महिहि पडंती णाइपवि चयपेमिमिवि ण करंती ।
दिट्ठी कुसुमावलि जलिणावलि जं कामें संचिय सरपोलवि ।

४ MB थं ५ MB पणियामिनयविरइयसंमाणउ, K पणियणु विरइय° ६ MB कय
6. १ MB मंदर २ MB ण तहिं वर्ण संचिय ३ MB कुमरि. ४ MB को वर्ण
7 १ MB रंभमिर. २ MB चयपमिमिवि चिवडंती.

6. 8 b कुवेरं कुवेरेण.
7 8 a कुसुमावलि पुष्पमाला

दोहिं वि धरियइ चप्पिवि चिंत्तइ[3]　　घोलतइं विवलतइ णेत्तइ ।
दोहिं मि दिण्णउ दलियफणिंदहु　　दढलज्जंकुसु मयणगइंदहु ।
गंउ घरु तहिं जोयवि मणहारिणि[4]　　तावतरि संठिय पियकारिणि ।
पट्टउ ताइ तासु दक्खालिउ[5]　　तेण वि तरलच्छीहिं णिहालिउ ।
जोइवि घुज्झिय पक्खिजकहाणी　　एत्तहि सा खगतरुणि पहाणी ।
ससयण पिउहरु पत्त पहावइ　　जो णाइदहु वण्णहु णावइ ।
कउ विवाहु बहुतूरणिणायहिं　　रविगइमारुयरहखगरायहिं[6] ।
दोहिं वि कताकतहु एयहु　　पयलियपेववधपासेयहु[7] ।

घत्ता—परियलइ कालु कुलमंडणह पसरियदिट्ठिवियारह ॥
दसणसभासणगुणविणयदाणदिण्णसिंगारह ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं वासरि वे वि रमतइ[1]　　पत्तइ गयणुच्छगि चंडतइं ।
हल्लियघंटाटकारालउ　　सिद्धसिहरु णामेण जिणालउ ।
मोहजालतरुजालहुयासह[2]　　तहिं पुज्जिवि पडिमाउ जिणेसह ।
मुणि वम्महवम्मोहवियारणु　　पुणु वंदिवि सव्वोसहिचारणु ।
पुच्छिउ णियय तेहिं जम्मतरु[3]　　रिसिणा कहियउ गयउ कहतरु ।
वणिभवि मायापियरइ तुम्हह　　जाइ ताइ एवह सुहंकम्मह[4] ।
पुणु सजायइ केत्तिउ सीसइ　　भवससारहु छेउ ण दीसइ ।
जो भवदेवबप्पु चिरु वणिवरु　　इह उप्पण्णउ सो हउं णहयरु ।
पुव्वणामु सिरिवम्मु पयासिउ　　रिसि सव्वोसहिचारणु भासिउ ।
गयणगमणु तवतावें सिद्धउ　　तइयउ णाणु विसेसें लद्धउ ।
पणाविवि पयजुयलउ रइसेणहु　　मुकउ दुक्कियदुक्खविहाणहु ।

३ G चिंधइ　४ MB गउ वरु जोइवि बहु मणहारिणि　५ MB दिक्खालिउ　६ MB रविगय°　७ MBK °पेम्मबध°

8　१ MB चरतइ　२ MB मोहमहातरुजाल°　३ MB तेहिं णियय　४ K सुकम्मह.

11 *b* पयलियपेववधपासेयहुं प्रगलित प्रेमबन्धेन प्रस्वेद ययोः

8　1 *b* गयणुच्छगि आकाशमध्ये　10 *b* तइयउ णाणु अवधिज्ञानम्　11 *a* रइसेणहु रतिषेणस्य भट्टारकस्य

घत्ता—गुरुभयमयकुंडार तिक्खपत्त मयरद्धय मई छिज्जउ ॥
विंधंतउ पंकहि मग्गहिं मयणु दिमावलि दिज्जउ ॥ ८ ॥

9

सुरमइ वड्ढिय रमणिहि रमणु तं मायविणवि गयउ समवसणु ।
मेहकूडु आवि णिम्मिज्जउ मारयरहु पत्तउ पवज्जउ ।
पुरु मणोरहु रहिं परिट्ठिउ विजयरहाइ वि जारवसि संठिउ ।
थिउ णिम्मउ सव्वंगपयारउ रहिं हिरण्णवम्मु तहु केरउ ।
पियसुय रायइ तं सुहणिमहडु मणहरमुणइ दिण्णु णियरहु ।
अण्णहिं दिणि गयणंगणि रमियइं मञ्झयमाकव्वंतरि ममियइं ।
छेप्पसरोवरविंदु णियप्पिणु विज्जि वि पुव्वजम्मु चोएप्पिणु ।
मायइं पियपुरयउ हक्कारिउ रहिं सुवण्णवम्मु बइसारिउ ।
पई हूयउ रिसिकुलकमलकहु करकमूलि सिरिपालमुणिंदहु ।
सहइ हिरण्णवम्मु वारणमुणि कण्णइं पावइ गुणगणयरु गुणि ।
गुणधरणाइ पहावइ दिक्खिय करकमलसरयत्तइं सिक्खिय ।
सम्मइं मणइं कम्मुभिण्णइं ताइं पुहइतिलवि मणहरणइं ।

घत्ता—रिसि थिउ पुरवाहिरि पवरवणि कज्जाणुमयवियारउ ।
कुसुमेण्णदिट्ठि वियरंतु तहिं पुंडरीयहि मण मायउ ॥ ९ ॥

10

जणिणिउ विणयपणामें स्वाउ तं भुंजाविउ मोसु छुहियउ ।
पुणु भासणु मउंकमु विवेप्पिणु ताइं पहावइ भाविउ णवेप्पिणु ।
किं ण वियाणिउं पई पारओमणु किं तारुण्णइ संसेविउ वणु ।
विसयपियपियसुमहुरभासिणियइ तं णिसुणेवि भासिउ तवसिणियइ ।

५ MBE °पुहरे.

9 १ MB विणु. २ MB छप्पु वरो°; T छप्पु and gloss अस्य दरि पूर्वजन्मनि ब्राह्मि युगले एकत्र स्थिते नाम. ३ MB सुवण्णिं. ४ B भाइं MB कम्मणिण्णइं. ६ MB पुरणिए. MB विणयवहि.

10 १ MB मुयणिवि. २ MB जणुत्तउ.

9 7 ex छप्पयरो वरविंदु अस्य दरि पूर्वजन्मनि वणिकयोः एकत्र तत्र नामेय.
10 8 a पइ रओ नयु पतिरीतव्य.

एत्थु जि सज्जणणयणाणंदिरि अम्हइं माइ तुहारइ मंदिरि ।
अण्णहिं भवि होंताइं कवोयइं किं ण वियाणहि विहियविणोयइं ।
रइसेणाचररइवरणामइं कठसद्दउक्कोइयकामइं ।
पंणिट्ठयाहलेण मणुयत्तणु पत्तउ दोहिं मि तं णियमिउ मणु ।
अक्खु कुबेरकतु वरु तेरउ कहिं सो अच्छइ सुहइं जणेरउ ।
सेट्ठिणि भणइ णिसुणि सजमधरि पियकइ जिणपयपंकयमहुयरि ।

घत्ता—एक्कहिं दिणि भवणु पराइयहो जिणवरवइणिहिं केरउ ॥
महं भोयणु देवि णमंसियउ पयजुयलउं सुहगारउ ॥ १० ॥

11

जिह पइ तिह महु ताइ पयासिउ णियतवकारणु णिहिलु समासिउ ।
इह रइसेणु णाम आयउ चिरु भूमिविहारत्थिउ सुंदरगिरु ।
णंदणवणि ज्लंतहिंतालइ तालितालताल्लूरपियारइ ।
वेल्लीहरि पसुत्तु विज्जाहरु पायगुट्ठइ लग्गउ विसहरु ।
णाहु वि तहिं जि भमंतु पराइउ धाडिवि फणिवइ वणु अवलोइउ ।
कोएं वम्म हंस ईरिउ गरु गरुलेण व तेणुत्तारिउ ।
हयउ गाढु विहिं वि मित्तत्तणु गउ खगु सणयरु वणिवइ सभवणु ।
आयउ खेयरु पुणरवि त वणु अवलोयंतिइ बहुणायरजणु ।
उत्तउ कंतइ एत्थु जि अच्छहुं कोड्डें लोउ रमंतु णियच्छहु ।
ता रइसेणहु तणियइ णारिइ महु पिययमु जोइउ गंधारिइ ।

घत्ता—हियउल्लउ कामें णिद्दएण तहि केरउ णिद्दलियउ ॥
वरकुंजरचरणें चप्पियउं दिसिहिं जलु वुच्छलियउ ॥ ११ ॥

३ MB पाणि°

11 १ K भवतु २ M चप्पिय ३ MB जलु व उच्छलियउ

11 °वइणिहिं भगिन्या

11 8 b °ताल्लूर° कपित्थम् 12 जलु वुच्छलियउ जलमिव उच्छलितम्

12

मणि पविपमिर अमयरविमर माउम्मिउ विपवर पेसीयर।
कवणु पहु पिर्मपम किं किं वर मणेणु मग्गल किं किपव विसहर।
तम पउपउ मिहु महारउ वमिउ कुबेरवंतु गुणसारउ।
एण मंतु परमंतु विराविउ फणिणा कवण हउं वीवाविउ।
के वि सकुम्मिपपीपमियाणइं कोसुद्दीठमणवि भासीणइं।
किं एमवामि तिरयाइं जाइयाइं फुल्लाइं वीपामि पिय सुह ओम्माइं।
गय पियमम मिल्लुपउ संमिवि कंजपप कप्पतरु विविवि।
हा हा उरयपय हउं अकिय पियहिय मिल्लावियसेपंकिय।
कलें भोमइसपर मिउताइं पियइ जवावियाइं विरि जेताइं।
महिमवि को ण मुणमि वरावि कंतु विमोप छोप संमोविउ।
मउ तेतहि तुरियं पंववियउ अहि भप्फट उवाइउ मगु वर।

घत्ता—तेमुदर भावहि मित्त तुहुं विसु सम्वंगाइं तावर॥
फणिवइहिं घरिणि महुं तविय तुह मंतें पुणु जीवर॥ १२॥

13

मित्तें मित्तु विमममु बोरउ आपवि सुवरि वमेषु पबोरउ।
पाभा गेठवणिगु पो अमियउं पवारें मउविविमयवें अविमयउं।
मंदर आरपि मणु रिवोसहि हउं मामि सुहं एमवाइ पिवसहि।
एम कहिवि गउ संदर आवहि सुवरि अवि वहीं तावहि।
मणइ ण मेवमि सविसमुयंगें हउं कवी पइं सुयबुयंगें।

12. १ MB वेसवर २ MB किं किमम ३ MB वणु वर किं ४ MB सकुम्मि[illegible] G सकुम्मिणीगुणियाइं, but gloss सकुसुम[illegible] "विमाणे च ५ MB कवविउ ६ MB तुर°.

13. १ MB वेतु. २ MB पउम° ३ MB मउविमयवें ४ MB सव्वीवहि ५ MB कार्ड

12. 1 a [illegible] 2 b [illegible] 5 a [illegible]

जइ मम्मणमत्तें तणु अंचहि जइ रइरसजलधारइ सिंचहि ।
तो हउं मुच्चमि विरहविसोहें ता पडिजंपिउ पसमियमोहें ।
पीयलु हरिवारुणिफलु जेहउ अगु वियाणहि मेरउ तेहउं ।
धम्महसरह कँयाइ ण भिज्जमि सहु पुरंधिहिं हउं ण रमिज्जमि ।
परकुलउत्ती जणणिसमाणी तुहु पुणु जाय विहिणि मित्ताणी ।

घत्ता—रइसेणु वि आयउ मदरहो वणि पुच्छिवि सकलत्तउ ॥
गधारणयरु सो अप्पणउं णहि विहरतउ पत्तउ ॥ १३ ॥

14

तहु पुणु सहु महिलइ वियरंतहु उप्पलखेडहु वहि णहि जंतहु ।
खलिउ विमाणु दिट्ठु मुणि उववणि वदिउ भावें दोहिं वि तक्खणि ।
पुच्छिउ धम्मु रिसिंदें भासिउ सावयमग्गु विसेसें देसिउं ।
गुणवंतेण सुणिम्मलवइणा तहिं परयारु णिवारिउ जइणा ।
परयारिउ लोएं णिंदिज्जइ असिधाराकरवत्तहिं छिज्जइ ।
तित्ति ण पूरइ जूरइ सज्जणु वड्ढइ कामडाहु पसरइ मणु ।
लोयणजुयलु वलइ कयणेहउ परयारियहु सोक्खु कहिं केहउ ।
जइ वि लोउ णियकज्जु पॅवुक्खइ संकालुहि तं तासु जि दुक्खइ ।
मत्थयमुंडणु विल्लणिबधणु कुखरारोहणु णासाखडणु ।
जारु होइ तिहुयणि अपससउ मुउ पुणु दूहउ दुट्ठु णउसउ ।

घत्ता—इय रिसिवयणाइ सुणतियए गधारिहि मॅणु तप्पइ ॥
हा हा मइ दुट्ठइ दुट्ठु किउ इय णियहियइ वियप्पइ ॥ १४ ॥

६ MB जइ रसजलधारहिं मइ सिंचहि ७ MB ण काइ वि ८ MB माय वहिणि

14 १ MB महिलहि सहु २ MB सावयधम्मु ३ MB दसिउ ४ MB पवुक्कइ, T बुक्कइ ब्रवीति ५ MB तासु खुड्डुक्कइ ६ M दूसउ ७ MB तणु

13 8 *a* हरिवारुणि° इन्द्रवारुणीफलम् 10 *b* मित्ताणी मित्रभार्या

14 1 *b* वहि वाह्ये 8 *a* पवुक्खइ पर्यालोचयति 10 *b* णउसउ नपुसक

15

मण्णिवि मुणिवरु ण वि पयहइ पोइपयासिहियपायकंदोट्टइ ।
कंचइ गुरुयणमणइं चिंतंतिइ मोरयपिंछरयरयण ठवंतिइ ।
फेवइ थर्इ मंडिमायंवियाइड कडिइ कुसरकरंतमहिमाहउ ।
हउं पाविइ सुदारी धारी मा होसउ तिपमइ मर्इ जेही ।
सुर सुर जामि देव पोमक्खाडि दसण वइयं दिच्छु मसक्का ।
मसु ण पर्इ परपुमसस्माढिउ तं आसोवणजझपक्खाढिउ ।
पत्तरिं सुइं मइं सुहें महासइ भाउ वाइं ता थडु परिमासइ ।
जीवदयाणपयारामिते सुइपरिणामसमीरणफिडे ।

घत्ता—धम्मोदयसमधुमुणिपण अइ तपवसमें वज्झमि ॥
तं तवसुवण्णसहाय जिह हउं भत्तार विसुज्झामि ॥ १५ ॥

16

केम वि वाइवसयहिं ण पत्ती ता जाइय विवंधिवि मुत्ती ।
वेण्णि वि ताइं ठेलु पावासयइं दइं णयर विहरंतइं आयइं ।
पिउ मुणि वाहिरवेसि रवण्णइ मइ आवइ मज्झ पहाण्णइ ।
जिंह जिह सा मडु करिय कहाणी गुणेसरस्सुं वाउ विरोणी ।
तिह तिह पिययमेण आयंप्पियउ मिमालिहिवि सा तव पसेविवउ ।
मणिउ ताहि पणामु विरएवि सुय चंचारि मीरसी कंते ।
सब्बहिं अप्पवि हवसंसारउ वंदिउ सो दसेसु भडारउ ।
तडुमकमु गुणभाडु णिव्वउ झोयवातु पमडा पयण्णउ ।

15 १ MB णवमि मिरिव° २ णयमिवण्णिवउ ३ MB विमडिउ ४ MB पसिड मिडु पत पीडी. ५ MB पणिमणि ६ MB तुह ७ M वाणीसि M ती B भी

16 १ MB तड वेतु सि २ MB तह मिह मिह मडु ३ M गुणवतलें B गुणवतलें. ४ MBK विरणी. ५ M आसाइविय ६ M पसादिय ७ MB पणतु

15. 6 सुर सुर सुव सुव

16. 4 ओ विराणी विराणिणी

पुत्तचउक्कि सहु भत्तारें　　णिप्पिहेण तोडियमयमारें ।
लइय दिक्ख चालियघरभारें　　मोहिय लहुययरेण कुमारें ।
हउ कुवेरदइयं तेणच्छमि　　पुत्तहि मुहु पहपहसिउ पेच्छमि ।

घत्ता—गुणवालहु कयमंगलसयहिं घल्लिय कामिणि सेसहो ॥
पुणु दिण्णी ताइ कुवेरसिरि णियकुमारि घरणीसहो ॥ १६ ॥

17

सा कुवेरपिय तणुरुहु पुच्छिवि　　इंदियसुहसंबंधु दुगुंछिवि ।
पत्तइ पारावयइ णरत्तणु　　पेच्छिवि अरुहधम्मचारत्तणु ।
कयलीकंदलकोमलगत्तइ　　किउ णिक्खवणु तुरिउ पियदत्तइ ।
संतहि दंतहि बहुगुणगणणिहि　　चरणमूलि तहि गुणवइगणिणिहि ।
कयजयवयणावंगालोयण　　पुणु वि कहाणउ कहइ सुलोयण ।
तहिं पुरि वहि मसाणि सो जइवरु　　थक्कु हिरण्णवम्मु लंबियकरु ।
णरवइ पुरु परियणु संपोहिउ　　मुणि पडिमाजोए संथोहिउ ।
सत्तमि दियहि पवणि पहावइ　　मुणिचरियाणुय गिरिणिच्चलमइ ।
थिय णिसिहि णयरपओलिसमीवइ　　जिणु थुवंति णियमणराईवइ ।
पेत्तहि जो रिउ वणि पुणु मंजरु　　सो णरु हूयउ तलवरकिंकरु ।
णिसिहि समागय गयवरगामिणि　　तासु पासि पुरवणिवइकामिणि ।
सा कुद्धलय तेण परिपुच्छिय　　अज्जु सुहरु सुंदरि कहिं अच्छिय ।

घत्ता—मुणि पडिमाजोए संठियउ तहु चलणाइ णरिंदें ॥
वंदियइ असेसें पट्टणेण अम्हारएण वणिंदें ॥ १७ ॥

८ MB चालिय° ९ MB लहुयरेण इह कुमारें १० M मुहु महु पहसिउं; B मुहु पहपहसिउ

17　१ MB कुवेरपिउ २ MB पेच्छिवि ३ MB मणुयत्तणु ४ MB °धम्मु चारुत्तणु ५ MB कयलीकोमलकदलगत्तइ ६ MB पियदत्तइ ७ MB पडियोहिउ ८ MB णिसियर° ९ MB थवंति १० MB एत्तहि वइरिउ ११ MB घरगय° १२ M पासि वणिवर पुरि कामिणि, B पासि पुरवणिवरकामिणि. १३ MB असेसइ

10 *a* चालिय° पालित　11 *b* पहपहसिउ प्रभया प्रहसितम्
17　5 *a* °अवंग अपाङ्ग　9 *b* °राईवइ पङ्कजे

18

धावयवम्मे वज्जियदिम्मे गुणधारयसयारणपवीसेण ।
सयलहिं संधुय वायरणायरं तं पिययमु मेल्लेप्पिणु जायरं ।
पिय मुणिणाहहु केरी पेसिवि दुक्कियसिसुसीलाउचारिणि ।
चवधारिणि भत्तविणाय सुरय पंति पंति पिय णयरुवारय ।
दुम्मइयस्समइसरसंधारी वसुविसमु विरयवि भडारी ।
ताइं बे वि पायंवपयुम्मय सेट्ठिघेरि वाणियवियणम्मइं ।
पवि ण्णाइं वयइ मेआरें आणइं मणुयइं सुहसंचारें ।
बे वि णिरत्तइं परियचरित्तइं तवतत्ताइं पत्थ संपत्तइं ।
ताइं वाहु गडे संयदहिय तेण समागय गयमयि दंतिवि ।
ता णिसुणियविसरसंघपवर्णे मड्ढ संमरिपउ तवचरणिम्में ।
ताइं बे वि जाणवि मह णहियण मइं ति पुष्पयम्मंतरि वहियइं ।
घत्ता—णिण्णुत्तय वेसहि चवारिवि मय कोयम्मिपहिलय ॥
वहिं अप्पाण संजमधारिणिय तहिं दुरि वाहिरि पत्तउ ॥ १८ ॥

19

ता जोयवि पुणु मुणि अंकोयउ सिरि मसाणकुडिं संजोयउ ।
परियायव तेण पचारिय पाविट्ठेण ते वि णिवारिय ।
इहं महु पुष्पमवम्मि पयाणी तेण समय अप्पिय सुहवीणी ।
सो वररायु वाहिं पर मुक्क अप्पाण गुरु एरेमणहु दुक्कउ ।
भाव दुज्जु मेयणइं समावमि पवरिं दुरं णिवाडु जणपावमि ।
पम मवेवि सु बांधि वरावित्र विरयहु वियवहि विरेय संसाविय ।
वाविंयपइ मवेवि एरसुवइं विविह वि पत्तीकरिवि विवरइं ।
वीमें भीसयेवि जयपत्तिवि पिवइं विवाहि अंकेतरकंदोरि ।

---

18 १ MB पुर मिहुण° २ MB वम्मड ३ MB तमारें. ४ MB वासर मणुय. ५ MB णयर णय एत्ति. ६ MB वर ७ MB पुण्णहिरि.

19 १ MB वम्मीसर २ MB एसयतो पुवर ३ MB गिरद वाणरय ४ B बीत्थोय

---

19 3 a वसाणी मसाम 6 b मिरय वार्वा 8 b मिवइ पियावाम

दड्ढइ तिण्णि वि सिमिसिमियगइ णिग्घिणु णिहणेप्पिणु णीसरइ ।
रसवसवसिद्ध गत्तालित्तउ अचेप्पिणु णियभवणि पसुत्तउ ।
णिद्धंधयउ जणइ वेरिउ चगउ मज्झु महिलइ मइ मारिउ ।
त णिसुणिवि वेग्गइ उवलक्खियउ गविउग्गामि जइजुयलु णिरिक्खियउ ।
पेयालइ हुयवहेण पलीविउ राए पउरयणें सिरु चालिउ ।

घत्ता—मणि चिंतिउ ताइ विलासिणिए दुच्चिउ कम्मु करिज्जइ ॥
इह जम्मि अहव परजम्मि सइ पाव पाउ गिलिज्जइ ॥ १९ ॥

20

हाहारवहँ रुणगु णगरहँ अप्पाणउ णिंदिउ णरणाहँ ।
घहकारिहि लोगहि गंविट्ठउ पायमग्गु पुणि गपि पइट्ठउ ।
खलु णाउ वि रूउ वि पलट्टिवि णट्ठउ भयभाविण विसट्टिवि ।
पक्कमेक्क गय फणेण लइयइ वेण्णि वि मरिवि ताइ पावइयइ ।
उप्पण्णाइ सग्गि सोहम्मइ मणिकुंडइ विमाणि रइरम्मइ ।
सुर मणिमालि देवि चूडामणि ण मेहहु सोहइ सोदामिणि ।
आउ ताह मुणि गणणाखुद्दइ पल्लइ पंच पमाणणिबद्धइ ।
उसिराणयरिहि कयपयणायहु कहिउ सुवण्णवम्मणरणायहु ।
केण वि पालियसजणणियरइ मारियाइ तिण्णि वि तुह पियरइ ।

घत्ता—मा देव पुंडरिंकिणि णयरि हुयवहजालहिं उज्झइ ॥
णिसिमारय सगहयारि खलु गुणवालु वि रणि सज्झइ ॥ २० ॥

५ M जलतजलंतिहि; B omits जलतजलंतहि ६ M थागइ ७ M णिद्धंधउ दय जणइ ८ MB पइरिउ
९ MB हुयवाहें पउलिउ

20 १ B गरिट्ठउ २ MB पुण ३ M णाउ रूउ वि, B णाउ वि रूव ४ M फारण, B करण
५ MB पव्वइयइ ६ MB रइरम्मइ ७ MB गणिणा ८ M °णामहु

18 *a* पेयालइ श्मशाने

20 8 *b* विसट्टिवि प्रकम्प्य 7 *a* आउ आयु, मुणि जानीहि 8 *a* °पयणायहु प्रजाया न्यायस्य

21

तं विसुणिवि सहुं सेण्णहिं णिग्गउ सो पच्छागिलवि केलाए दिण्णउ।
साहसु सिवकुउ संमोरउ तं सुरमिहुणु वि तहिं जि पराइउ।
देवें देविहि कहिउ कहाणउं हुइ तणएण विरुज्झु पयाणउं।
सम्माइं मरेंणु मुणि विसुणेप्पिणु गुणवाणहु वप्परि हसेप्पिणु।
पुरवरु सव्वुं पहु संपत्तियउ सम्मइं धरणसेण जिं मिलियउ।
पुत्त भणेप्पिणु विण्णि वि मायाउं संजमधर संजमभरकायाउं।
मासीणाउं वसोहिहि पवियक्के धरिणीउं कुलकुसुमपमियक्के।
कंचणवण्णे विण्णि वि मायें वणिउं मायामुणिवरसावें।
किं कुलमो सि पुत्त वणसंतउं अम्हइ सम्मइं वे वि णियंतउं।
सोयरु णिरणुगुणमु किं मारहि भज्ज वि सो पहु णियह णिसुरए।
घत्ता—अप्पमइं पायाउं मारियाउं सो सच्चत्थ गवेसिउ ॥
तणुयम्म गुणवाणणरवहिवेण मण्णउ दुक्खें सोसिउ ॥ २१ ॥

22

वार वि मुंयाइं तो वि फिर ण मुयइ सम्मइं वेण्णि वि मुंजियममयाउं।
जायाउं वेवा दिव्वसरीराउं मणिमाणमहिमाहिं गहीराउं।
वार वार मणहुविउ पसंसिउ सुरमिहुणें विमहउ पसंसिउ।
कण्णपवम्मु कममाणें सरयउ देवेंदिव्वभूसणवेवारयउ।
गउ णियवासहु सो वणरेसरु वच्छेहिसि सिवपोसु विवेसरु।
तं वंदहुं संपत्तु सुरेसरु अवहरए णामें वकेसरु।
मयर वि सा मच्छर सो सुरवरु संजुउ संसमेवें तित्थंकरु।
णिम्मविण्णमुणिरंजियकण्णाउं हुइ हुइ सम्माउं णाम विसण्णाउं।
ता तहिं पच्छा सयमहएमउ वणाण्णउ सइं मीवरणमरु।
णिसु वकेसि पुच्छिउ पत्तउ किं मरणसमविहायें वायइ।

21. १ MB भाउं दिवायउ २ MB समरउ ३ MB सुणि मरणु ४ M मि ५ B [illegible] ६ MB [illegible]. ७ M जणु [illegible]
22 १ MB सुयाए. २ MB विण्ण ३ GKT p [illegible] ४ M [illegible]
५ MB तो

21. 9 a कुरमो कुणिय 12 a तणुवदहेण
22 7 b [illegible] 10 b [illegible].

समउ पुरंदरेण किं णा[६]यउ　　वेविजुं[७]यलु दरिसियमुहरायउ ।
केवलणाणपईवें दिट्ठउ　　चक्कीसहु जिणणाहें सिट्ठउ ।

घत्ता—बिहिं मालायारिहिं दिट्ठु वणे वंदिउ मुणि हयकम्मउ ॥
कर मउलिकरिवि आयण्णियउ भावें सावयधम्मउ ॥ २२ ॥

23

ल[१]इउ वउं[२] घरविहि परिवट्टइ　　जा[३]हु जिणिंदभवणु ण पयट्टइ ।
उत्तमगु भत्तिइ णावेप्पिणु　　देव णमोरहंत पभणेप्पिणु ।
बे वि घिवंति चंदरविणयणइं　　पढमं चिय कुसुमंजलिगयणइं ।
एण णिओए गलियइ कालइ　　एक्कहिं वासरि लवलिलयालइ ।
एक्कहि पाणिपोमि फणि लग्गउ　　हाहारउ वयणाउ विणिग्गउ ।
सहि णियसहियहि पासु पधाइय　　सा वि भुयंगमेण आसाइय ।
विसमविसाणलेण जलजलियइं　　बिहिं वि सरीरइं महियलि घुलियइं ।
दोहिं वि दं[४]रवेयणइं सं[५]रंतिहिं　　दिट्ठउ इंदागमणु मरंतिहिं ।
भोया[६]कंखइ करिवि णियाणउ　　लद्धउं सुरवइदेवीठाणउं ।
धरणिणाह छुडु छुडु उप्पण्णउ　　तेण समागयाउ सुरकण्णउ ।
एयउ बिण्णि वि णियवइपच्छइ　　एयहु केरउ अच्छइ कच्छइ ।
अज्जि वि णिवडिउ तणुजुयलुल्लउ　　लोएं जोइउ गयजीउल्लउ ।

घत्ता—कह कहइ सुलोयण तहु जयहो भरहचरणणवियंगहो ॥
कंतीइ पयावें दुज्जयहो पुप्फयंतगु[७]णतुंगहो ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणघित्तपुप्फंजलिफलं णाम
तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३० ॥

॥ संधि ॥ ३० ॥

६ M विण्णायउ　७ MB णारिजुयलु

23　१ MB लइयउं　२ B वर घर°　३ MB जाह　४ MB गर°　५ MK सहंतिहिं, T सरंतिहिं.
६ MB भोयाकंख करेवि　७ M गुणचगहो

23　1 *a* घरविहि पुष्पत्रोटनग्रथनविक्रयादिगृहव्यापार　8 *a* सरंतिहिं स्मरन्तीभि　11 *a* णियवइपच्छइ निजपतिपश्चात्, *b* कच्छइ अरण्ये　18 पुप्फयंतगुणतुंगहो पुष्पदन्तौ चन्द्रादित्यौ तयोर्गुणौ कान्ति प्रतापश्च तौ तुङ्गौ महान्तौ यस्य

XXXI

विजयपलउं भावणिज्जवि वियहियणउडर माणिबावि ॥
माडरमामामामिउ मईं कंतह मणिमाणिक ॥ ध्रुवकं ॥

1

गउ सिरिमाणणु पर्वकमकाणणु ।
जहि विहरंतउ कोवणु पत्तउ ।
उज्जयताडउ घण्णपमाडउ ।
वार्ड पसिउउ महिरुहरिडउ ।
हंसहि मयकिउ चाहहिं सुयकिउ ।
कबकबहारिउं कसमहि फुल्लिउं ।
मयमयमामगु केसरपिंगलु ।
पत्तहिं जीकिउ ममरहिं काकिउ ।
विद्रुव मजहरु सव्वंसरोवरु ।
माणि विप्फुरियउ मवें संमरियउ ।
कप्परिसिसेवें मामिउं देवें ।

घत्ता—भामि जमि मंचियथणु इउं सुरवु कथियंदणु ॥
तुह्रं मेइवगयिपारी होंती परिणि महारी ॥ १ ॥

2

वीसइ पुरि एह सुपासगारु जहिं हुई सिरि कि विवाहरु ।
कें परियई कह य चीरंवरउ कहरउ कमाउ एप्पहरु ।
रइ मालेहरुज्जयविहियर्ड धार्मतई पिज्जि वि विवडियई ।

1 १ B व कसमा २ MB कामि ३ M केसरि MB उज्ज° ५ MB का ६ B कक-
सिरिसेर्वे MBK रहियाडिया
2. १ MB का परिय २ MB पाम°

1 B a सिरिमाणणु स्पष्टार्थी

इह तुह पयलोहिउ पयलियउ   इह महु उप्परियणु वियलियउ ।
इह कंटइ लग्गउ कंचुयउ   इह दोह मि देहकपु हुयउ ।
एहु सो सरवरु खगभूसियउ   जसु जलेण देहु आसासियउ ।
एत्थेत्थु जाम सो धरइ खलु   तावेत्थु जि दिट्ठउ पवॅलु वलु ।
सो सत्तिसेणु राणउ सुयणु   सभरहि ण किं तुहु हलि सुयणु ।
पुव्विल्लउ जम्मु णिहालियउ   ता देविइ सिरु संचालियउ ।
इय वयॅणु वियारिउ जाम जॅहिं   रिसि एक्कु णिरिक्खिउ ताम तहिं ।
अमरें विहुणेप्पिणु सिरकमॅलु   पुणु जंपिउ वणवतिसरलु ।

घत्ता—बेण्णि वि रमणरसड्ढइ   जेण णिहेलणि दड्ढइ ॥
पारावयमॅवु एत्तइ   खद्धइ णिग्गयरत्तइ ॥ २ ॥

3

पुणु उप्पण्णइं विज्जाहरइं   हुणियाइं मसाणइं मुणिवरइं ।
भवदेवॅ विडालउ तलवरउ   जो होंतउ चिरु दुक्कियणिरउ ।
सो एवहिं जायउ एहु जइ   हउं जहु ससारु विचित्तगइ ।
परिभावहु एयहु तणिय मइ   किं रूसइ किं अम्हह खमइ ।
इय जंपिवि हयवम्महसरहु   आसण्णु णिसण्णउ जइवरहु ।
कय वंदण पुच्छिय धम्मविहि   रिसि भासइ सुय सुयणाणणिहि ।
म्नत्थॅ सहु लेसासख मुणि   ए एति एपुच्छहि तच्च गुॅणि ।
हउ किं पि ण याॅणउ णवसॅवणु   किं देवहु करमि धम्मसवणु ।
कयॅगाहहु तियसहु णउ रहिउ   पुणु तेण तासु तिजगु वि कहिउ ।
जिह जीवाजीवपुण्णगइउ   जिह वड्ढियाउ पावयमइउ ।
जिह आसवसंवरणिज्जरइ   जिह बंधमोक्खभावतरइं ।

MB पवर ४ वण्णु ५ M तहिं ६ M °कवलु ७ MB °भरु

3 १ MB भवदेउ २ MB मुणि ३ K याणमि ४ B समणु ५ MB किय°

2 8 *a* सुयणु सुजन , *b* सुयणु हे सुतनु

3 7 *a* लेसासंख पद्

थिउ मुणिणा सवणु पयासियउ तं णिसुणिवि तियसें भासियउ ।
पई भरउ सिसुत्तणि समंचरणु मणु वररायहु भरहु कणगु ।

घत्ता—तं णिसुणिवि हयरायउ मउगंभीरउ पायउ ॥
केवलिकहियउ वायउ देवहु मक्कउ मुणिवरु ॥ ३ ॥

4

वरसिहराखरमियणयरि अत्थीह पुंडरिंकिणि णयरि ।
तहिं कुंभोयरु णिवसइ वणिउ णामेण भीमु अंतणु भणिउ ।
अभिवणउ णियमहु णियवणु हउं कीसइ गउ पंचयवणु ।
जइ कंतिरिवि सावयमउ गहिउं गउ भायणु वर्णे मउ गहिउं ।
परदारियगमणेपुंभिणीरियहो मेउ कि ढुंयरु दाणिरियहो ।
जं दिण्णउं अप्पहि तासु सुय मायेहि आउं लग्गु दीहभुय ।
तापण सहयें पेलियउ मुणिवासहु दंडें पुणु वहियउ ।
परमारउ परमीसमाइउ परमसमाणिहइंपु मणियसइ ।
पुणु वि पहि घणु णियपिम्मउ जणणें पोंकउ पुच्छियउ ।
तेहिं वि वणियउं णियणियचरिउं हिंसाजणियपणहिं परियरिउं ।

घत्ता—जेण वीयकमु दिसिउ जेण पयासउ भासिउ ॥
जेण पंरमपु दिण्णउ जसु मणु परमगुरुत्तउ ॥ ४ ॥

5

जो धीरकसायं भाविसउ सो कमयु ण विहुरें ताविसउ ।
मंदं मणियं णायें पयरं मणयें मंदं गहियां कंतिवि दिसिपयरं ।

१ MB तणयु.

4 १ MB °वउ भमउ २ MB °पुंभिणिरयहो; G पुंभिणिरियहो and gloss भिन्नस्त्रीणाम्; K पुंभिणिरियहो but corrects to °पुंभिणिरियहो; T तभिणिरियहो ३ MB वउ ४ MB पुणु हउं ५ MB read in place of this line, पमहउ वणियमाणियउ देवु पयमहिवाउ भणमह्रोयु; T भवमायेतु मणि यवं पयं देयुष हमवमंसायपयवणं तम ६ MBK वरसु णिदिउ and gloss in MK on णिदिउ तिर्येश्च हतम्; T वरसु मि वयरमणि.

5 १ M read this line as मंदं गहियं कंतिवि दिसिपयरं मंदं मणियं तय पयरं णयरं २ MK णाय ३ MB वयरु

4 5 a वरपयणिवसोण मानसादर्शना; b भिन्न स्त्रिया ही भिन्नस्त्रीणाम्.

पर्एँ वयविवरमुह बद्ध जिह　　हउं रॉए वज्झमि जणण तिह ।
त णिसुणिवि पिउणा इच्छियउ　　मइ देसचरित्तु पडिच्छियउ ।
गय बिण्णि वि णयरुज्जाणवरु　　पणविउ मुणि भुवणाणदयरु ।
तहु वयणें वणिवरु उवसमिउ　　घरधम्मि जिणिंदसेट्ठि रमिउ ।
दोगच्चें किं वर करमि तवु　　किं णासमि लद्धउ मणुयभवु ।
मइ पएँ णएण समुल्लविउ　　पिउहत्थहु अप्पउ मेल्लविउ ।
तसथावरजीवहु कयदयइ　　उद्धरियइं पंचमहव्वयइं ।

घत्ता—कयफणिसुरणरसेवहु　　पायमूलि जिणदेवहु ॥
दूसहदुक्खणिरंतरु　　णिसुणिउ णियजम्मंतरु ॥ ५ ॥

६

महु तिहुयणणाहें ईरियउ　　पइं वणि मिहुणुल्लउ मारियउ ।
णिसिं चिरु भवदेवें विप्पिएण　　होंतेण कालकंदलपिएण ।
पुणु त[3] चि वि जुयलउ लक्खियउ　　मज्जारें होइवि भक्खियउं ।
जइयहु ताइ जि तवतत्ताइ　　पइं धरिवि हुयासणि हित्ताइं ।
तइयहु होंतो सि तलारु तुहु　　ओसहिगुणेण णट्ठो सि लहुं ।
गुणवालें तुहु अण्णेसियउ　　फह फह व ण जमउरिं पेसियउ ।
जाइवि अण्णेत्थ वासु रइउ　　सो णरवइ हुंउ जं पावइउ ।
पइ पुणरवि णयरि पवेसु कँउ　　अजणगुणेण दिखारु हुउं ।
लोयहु केरउ धणु चोरियउ　　पउरें रायहु पुक्कारियउ ।
तें आरक्खियउलु गरहियउ　　तेण वि पडियजणु साहियउ ।
तुहुं विज्जुचोरु दिट्ठउ धरिउ　　पइ वित्तणिवासु वि वज्जरिउ ।

---

४ MB ए ५ MB पावें ६ MB दोगत्तें किंकर ७ T एण णएण ८ MB दूसहु

6 MBKT रिसि and gloss in T रिसि हे भीममुने २ M °कदालि°, ३ MBT त चिय जुयलुल्लउं खियउ ४ K हुयासें णिहित्ताइ ५ MB अण्णत्थ ६ MB हूयउ पव्वइउ ७ MB कयउ ८ MB हुउ; T हउ

---

5 7 *a* दोगच्चें दरिद्रेण

6 2 *b* °कदल° कलह 8 *a* त चि वि जुयलउ तदेव पक्षियुगलम् 8 *b* दिक्खारु हुउ दृष्टिचारो हतः, अदृश्यो जातः

घत्ता—कयरमणीयपयकीलवि कंचणमयरमणिहेलवि ॥
पई मिलियाई भियवाई हरिवि सत्त माणिक्कई ॥ ६ ॥

7

तं णेमिर हाविउ विवर्धणउ करवालकरालंपउरंपरेउ ।
सोवच्चीउ वि मई हकारियउ समियउ ण देह विविहारियउ ।
पहुणा सो पुंछिउ भोपणउं तं करमिवि माणिवि मंजणउं ।
आणाविय मेणि गये विहिय पविमाणउ णासमिणाविय गहिय ।
जिम्व णावि पगु जिम देह मणु जिम्व विमलाहि मैत्त गुहिलपणु ।
रय विमलहि देह विपारियउ मज्झे पावहि ओसारियउ ।
मोमउ वि ण मयाउ साहियउ वहु होयउ विवि वंभहियउ ।
पविचारिउ णो गिरिव वि करिवि गुम्मउ गुमाइ पवउ मरिवि ।
गुरुं पुणु वंभाणहु होयउ मेउ कारउ तेण ण वाहयउ ।
कुलउ होहि मि पहु पमतिमिरि होत्थि वि वंधियि वसिय विवरि ।
पैरं मणिउ पाव माणइं हरपु हउं संभोविउ कि वड मरणु ।

घत्ता—ता वंहाउ मासिउं विमुणवि कम्मु गुणिहिं सिरे ॥
जं संसारह पवरं मई विमदेहें मुणउं ॥ ७ ॥

8

इह होंतउ गुणपालउ णिवइ राणी कुवेरसिरि सवइ ।
पुहई वसु पाणी धीरमण सवाणिपहि मायर विहि जय ।
गंधपवे सरिस मेरुसिरिहि पहु वि वंभउ कुवेरसिरिहि ।
णच्चंतई ताई देवु सयरि विवकरियारिहु धीयहु सरि ।

7 १ M °णयह, B णउं २ M कउं, B वर ३ M सोणाउ, B हुण्णउ, ४ MBK पुणिउ ५ MBK मणि वणिमणि विरिय ६ M मणि MB मवणि MB णाविणउ ८ MB वर, K वर but मर in second hand ९ MB वणिय वंधिवि ११ M वह पणिउं पाणु पाणरए, B वह पहणिउं पाणु पाणरणु १२ MB कारउ १३ MB भासिउं १४ MB गुणिहिसिरे
8 १ MB हुलवी

12 b केवलणाण° सुवर्णकलश॰
7 8 b होउ पर्व अभिमानम् 11 a पाण नायक
8. 2 a पुरइं पृथ्वी

वणि समवसरणि जिणदेवझुणि आयण्णवि जायउ अत्ति गुणि ।
अवलंबिउ हिंसविरत्तियउ[2] जिउ[3] जोयवि सणियउ दिण्णु पउ ।
अविसुद्धउ गासु ण अहिलसइ गयवालउ महिवालहु दिसइ ।
करि कवलु ण गिण्हइ पाणपिउ[4] ता राए पहिउ कुवेरपिउ ।
तें पलपिंडउ दरिसावियउ तं ण णियइ करि वरभावियउ[5] ।
पुणु अण्णु वि सुंदु[6] पयच्छियउ तो हत्थिंदेण पडिच्छियउ ।

घत्ता—वारणु दुण्णयवारउ हूयउ अणुव्वयधारउ ॥
इय[7] मइवंतु वियाणिउ वणि पाणहु समाणिउ ॥ ८ ॥

9

अण्णहिं[1] दिणि णरणाहहु तणउ णहु णट्टमालि णवतोरणउ ।
घरु आयउ णच्चाविय दुहिय रसविब्भमहावभावसहिय ।
पुच्छिय राए विरइयतिलय णामेणुप्पलमाला विलय ।
मयणाहिविसेणुब्भंतियए वणिवइसरूउ चिंततियए ।
मुद्धइ णीराउ पजंपियउ राए णियहियइ वियप्पियउ ।
णियघरु जाएवि वणीसरहु वेसाइ णिउंजिय दूइ तहु ।
सा सुहए पडिवयणेण हय पणयगणरयहु[2] णिवित्ति कय ।
सव्वोहिय सहियइ हसगइ दुल्लहलंभेसु म करहि रइ ।
दुम्महवम्महमग्गणवहिय[3] ता जंपइ पवरविलासिणिय[4] ।
सहि वट्टइ चित्तु दुसंथवउ संभूयउ वल्लहु णवणवउ ।
हलि पंचमु सरसु[5] समालवहि जइ सुंदरु[6] कह व ण मेलवहि ।
तो मरउ[7] णिरुत्तउ कहिउ मइं असमक्खि रुवेवउ माइ पइं ।

२ MB हिंसविरत्ति जिउ ३ MB जोयवि सणियउ पहि दिण्णु पउ ४ MB पाणपिउ ५ MB करिवरु भावियउ ६ MBK सुद्धु ७ MB अइमइ°

9 १ MB add before this the following lines पुणु णिवएं तूसिवि दिण्णु वरु, सेट्ठि पउसु आणंदयरु, अच्छउ (M अत्थउ) वरु थवणीराय महु, जइया मग्गेसमि देसि पहु २ MB पणियगण° ३ MB मग्गणवणिया, K °वणिय° ४ MB °विलासिणिया ५ MB सरु सुसमा° ६ MB सूहउ णउ महु मेलवहि ७ MB मरमि

8 b पहिउ प्रेक्षित

9 4 a मयणाहि° कामसर्प 5 b राए रागेण 12 b असमक्खि परोक्षे

घत्ता—सहि पमयाए मडुमरिसि पाडइ सिवमयपंगावि ॥
हियवइ मडु धरेप्पिणु कोपविममु करेप्पिणु ॥ ९ ॥

10

तरमहु हुइ सेविपमायरसु उप्पाइवि मायमि सा भवसु ।
इय तेहिं विहि वि माहोदयर तो मडुमिपणु पयारपर ।
पिउ मोहविपक्ख धीरं जहिं माकिर आवेप्पिणु तुरिड तहिं ।
उव्वाइवि माणिवि माणियह पिउ मणिपई उप्पसमाणिमरे ।
मुवाइ सुरयविहि मपसु कउ चउ पकउ जावइ कुमउ ।
हे धीरसत्तु दुम्मोहियउ अहि मणिमउ तहिं पुणु मणियउ ।
तं पयण वि मीमपिमयउं वाविमयसु थिरत्तणु मणिमयउं ।
उवहसिय वेस चर परिहरिवि परि पयो वंमचेर धरिवि ।

घत्ता—मुणासुत्त पहार मसउ ण हरिय विरेयार ॥
वेमाहि मडमणु णिवडर विडसहु तहि मणु णिवडर ॥ १ ॥

11

तणुमरसुर मयउ वि मंतिसुर मोणाहउ णिवमोहविहि हुर ।
नहि मतमहोमायणामिवि पय मउ आवा कामिमिरे ।
पकहु जि पउ एकमाणियउ मयमार्ण मणु मंचाणिमउ ।
परिवाडिर विभवयणविमय मंजूसहि पइसारिय सयल ।
पिहिहि वि तहि चिहिणा माणियउ गंमभिमाउ तहविर माणियउ ।
जा दिण्णउ सुविपसाय एसहि मडु तण्उ हाय पर्ग वियससहि ।
सा माणप्पिणु मडु वेमि जा मो वमि हउं भि मुद एमवरा ।
मंजूस सनिमकप मउ मणहु वीपर विवि उप्पमि दियमणु ।

MB कायमिसणु.

10 १ MB णडु सणिय २ MB तम्मुणि ३ MB णिय ४ MB णीय M आवेप्पिणु ६ MB णपार ७ MB हो णीरसु ति MB वाणियउं M णिरुत्तउ

11 १ MB णियमीमविहि २ MB "महणन" ३ MB णिहिणिणि ४ MB एउ वणिय उवणिय ५ MB वेरि, ६ K वंमि

10 1 b "णमु एणि: 8 b जा किंद एमसा. 9 कुला" कोलिप

11. 1 b णियमोहमिहे हुउ एणंपुण 5 a णि बिंद इसुणेमाला समवणिमाला

जिह हारु नेण उच्छवि गहिउ   जिह लोहिट्टें पुणरवि रहिउ ।
सुरयाकखइ पडिवण्णु जिह   गयहु विचतु पउत्तु तिह ।
माणिणिइ मति ओहामियउ   णिज्जीवसमिच्छ आणावियउ ।

घत्ता—गहियगारयहत्थहिं   दासिहिं भणिउ समत्थहिं ॥
फुडु मजूसि समासहि   मा हुयवहमुहि पइसहि ॥ ११ ॥

12

तामायसवलयविहूसियए   सहसा घोसिउ मजूसियए ।
पडिवण्णु हारु गयेंदियहि पइ   तुहुं कट्टु कट्टु किं भणहि मइं ।
रे देहि विहसणु सुंदरिहे   मा पडहि मति णारयदरिहे ।
उप्पण्णु चोज्जु णियसिरु धुणिउ   कहिं तरु चवति पहुणा भणिउ ।
परधणहरगारउ साडियउ   मजूसहि मुहु उग्घाडियउ ।
ते तिण्णि वि तहिं णिग्गय कुविड   णारिहिं के के णउ मलिय जड ।
णरणाहें पुच्छिय सच्चवइ   सा भणइ भंडारी सुद्धमइ ।
पिहिविहि अलद्धकंचणधवहु   मइं हारु समप्पिउ बंधवहु ।

घत्ता—खलु दुव्वयणिहिं दोच्छिवि   ता समंति णिब्भच्छिवि ॥
महिवइणा आणाविउ   तहि भूसेण देवाविउ ॥ १२ ॥

13

आणदु पवड्डिउ माणिणिहे   मणि रोसु रायचूडामणिहे ।
तें[1] दढणु अणु पवियप्पियउ   असहंतें एम पयपियउ ।
मोइणि तलवर मतिहि तणय   तिण्णि वि घाडह दूसियविणय ।
सिरकमलु लुणह पुहइहि तणउ   ता वणिवरु चवइ सुहावणउं ।
जइयहु परिणामु विहावियउ   जइयहु कुंजरु भुजावियउ ।
तइयहु जो पइ सइ दिण्णु तरु   सो अज्जु देहि णिव सतियरु ।

---

७ MB पडिदिण्णु ८ M मणि णियए, B माणिणियए, ९ MB मजूस १० M पयसहि

12 १ MB ता आयस° २ MBK गइ दिवहि ३ MB महिवइ ५ MBK भूसणु

13 १ MB ते दढणाणु परियप्पियउ, (B पवि°) २ MB पइ जो महु दिण्णु ३ MBT पट्टवहि

प परोमचु मा विरुवेहि पहु वि मा उम्मी वंचवहि ।
ता तहि परणीसे विउ करणु यारिउ विदेसविपरेसु मरणु ।
वणिवयणु णरिंदें जं णियउ त पिहिविविचु रोमंचियउ ।
वयवाउ रासहु होउ हरिणु फणिमणिणार्ड हुवु वि होउ विहु ।
संचितइ ता मारमि मरमि सहिहि पियमाहु मयपसें करमि ।

घत्ता—पुणु गएण महतीरए तण तुसारसमीरए ॥
विज्जाहरकरविमलिय भंगुरपक्खिम मिवालिय ॥ १३ ॥

14

मगुमिणइ कप सुहवाणिय ता पयद पमोयइ महणिय ।
कि जाणहि मंतें पुच्छियउ तणुसउ इह हउं कच्छिउउ ।
महु कामरूवधरि मुहविय पत्थेमु मित कम्पाइ परिय ।
णं पियपम भाहासिस्पविय तं तहु मा विहणिवि पयलोयम ।
पुणु मम्मिणं कयरे पिण्ड ताव सहुक्कड गउ वियमंविपरो ।
महुयर मायर महु मिक्खपिउ मुहर कुवरयपिउ मा वि विउ ।
एक्काससि वणियउ णणिपइ सयवराहि पम्मविपाविवरे ।
सो पेक्खइ विणयसहायरउ अपु पेक्खइ पवि मयणाचिरउ ।
पिसुण पहरोसहु विण्णाविडं पउमसर गुरु कहउ गमिडं ।

घत्ता—कयोजोयणमयममणं सुउ पयंपाणहि पुण ॥
मा पर्व कप संकायहि आहवि मग्गणु जोयहि ॥ १४ ॥

४ MB °विरइय ५ MB वितइ को मारमि पुणु मरमि ६ MB मनुवि

14 १ MB कवियमहणा हुई वमिय २ B मम्मिवि ३ M की MB वमि विवयमरई ५ k पवमोल्लय ६ M गियवडि M पर पर.

13 f a पियवाहि प्रिय 18 अद्दुल मिव सुनिया

14 1 पाहासिस्पविय मर्मा अभिलिता 8 b अवमारिरत अपावमिरा 11 पवमद मम्प वलर

15

मायावइसत्तविलयियउ मुद्धइ डिंभउ सिरि चुंबियउ ।
दुप्पिच्छमच्छरुक्कोयणहिं[2] दिट्ठउ राए सइं लोयणहिं ।
ण वियाणिउ कवडरूवरयणु किउ भिउडिभंगभंगुरवयणु ।
घरु जाइवि रायहु पेसणिण जमदूएण व जमसासणिण ।
पिहिं[3] वी चारित्तमहिड्डियउ पडिमाइ परिट्ठिउ कड्डियउ ।
वणिवइ मारहु णेवावियउ उप्फालें जणु मेलावियउ[4] ।
जूरइ सव्ववइ कुबेरसिरि हा किं चलु हूयउ मेरुगिरि ।
उण्हउ ससहरु रवि सीयलउ हा किं जायउ वम्महु पलउ ।
अहवा लइ एउं होइ जइ वि तहु भव्वहु सीलु सुद्धु तइ वि ।
तहि अवसरि सो चंडालयहु अप्पिउ तालियकरघालयहु ।

घत्ता—पाणें झत्ति विमुक्की वणिगलकंदलि ढुक्की ॥
खग्गलट्ठि जमदूई सियहारावलि हूई ॥ १५ ॥

16

साहु त्ति भणिवि पणवियपयए पउमासणु किउ पुरदेवयए ।
सोवण्णभूमि मणिमंडविय तहु पाडिहेरसिरि णिम्मविय ।
णिक्करुणु[1] साहु जो णिम्महइ भूवइ णिवद्धउ सो पुहइ ।
अवरेक्कहिं मच्छरणिब्भरहिं णिंदिवि सिरि[2] चूरिउ टक्करहिं ।
अण्णेक्कइ[3] वेउद्धाइयइ जहिं णरवइ तहिं संप्राइयइ[4] ।

15 १ MB °वइसत्तु २ MB °क्कोवणहिं ३ MB पिहिविवि चरित्त° K पिहिवें चारित्त° ४ MB add after this the following lines —

पुणु हट्टहु मज्झें चालियउ सव्वेहिं जणेहिं णिहालियउ ।
णिज्जतउ पेक्खिवि जणु रुवइ कु वि थामि थामि धाहउ मुयइ ।
कु वि सवइ राउ कु वि पुहइभउ सुदरु सुसीलु दुहु पावियउ ।
जो दुरएहिं तुरएहिं जउ चिरु जाणहिं जपाणहिं गुणपवरु ।
उद्दहणु जेम थट्टिउ जणण रोयतें सयलं परियणेण ।
सो एवहिं चरणहिं चरइ किह दुक्कम्महिं पायउ पुरिसु जिह ।

16 १ M णिक्करुणु २ MB सिरु ३ MB अण्णेक्कें ४ MB सपाइयइ

15 1 *a* मायावइसत्त मायावणिक्त्वम 3 *a* °रयणु रचनम् 4 *b* जमसासणेण यमाज्ञया 6 *b* उप्फालें पटहध्वनिना

पहु विण्णु अमरिसु वड्डियउ पहु पायहिँ धरिवि विमड्डियउ ।
सो भणइ काइं मइं दोसु किउ मासइ पिसायगणु घम्मेहिउ ।
मुद्दापरिबंधु परक्कमगा मुद्दियपणु परक्कमविरइ ।
गुणिबंधणु रायहु मिल्लमइ तें तोसिय पणविवि समवइ ।
परकम कुळमण्डिय कुबेरसिरि उवसामिवि णरहिवि णिययसिरि ।
गउ तहिँ जहिँ अच्छइ णरसयइ महकिंपयरु मा पत्थिय वयइ ।
घत्ता—पिसुणजणहु म विसज्जिउं मइं पावें किउं दुक्किउं ॥
खमहि वप्प जं दूमिउ कमलाइणहिँ विसामिउ ॥ १६ ॥

17

भणि मणइ पुराइउ कम्मु महु णिक्कारणि जं दुज्जण सि हुई ।
हं[१] आसमि एवहिँ तउ करमि पउ दुग्गुप्परि मच्छर धरमि ।
पिउ भणिवि सममणु भाणियउ आहेण दुहु महु माणियउ ।
पंचाल महुमिवरवसिरिं पाविय मइँ इस दिण्णी पियसिरि ।
पुणरवि पावें चोरहु कहिउ णिह गुणवालें मेरु संपडिउ ।
त णरम वारिसिपवुहिय णिव्विप्पाणहरणप्पणमहिय ।
दिण्णी कुबेरसिरि अंकणहु वसुपालहु मुवपालंकणहु ।
तहु अवरें भणिउ कुबेरपिउ किं मोक्खहु कारणु करमि पिउ ।
तेण वि परोइ धम्मु वि भणमि मिच्छकरणु धम्मु ण पेरिणमि ।
जिय कामि होमि हउं आयरिउ सा तिण्णि दियइ पहुणा धरिउ ।
घुणरयणहु को वि णिरिक्खियउ दिवि णिवइ पंडु ण कलियउ ।
पहु पच्छा घणिउ पराइयउ मणियमपहिं विसंमउ आयउ ।
घत्ता—जहिँ णिमिसु जहिँ अच्छिय कणाविय किं अच्छिय ॥
जीवहु कम्मु सहेज्जउ अण्णु ण किं पि दुइज्जउ ॥ १७ ॥

---

५ M समाहिउ

17 १ MB read this line as पउ दुग्गुप्परि मच्छर धरमि त आसमि एवहिँ तउ करमि
२ MB तउ ३ MB णिक्कारण ४ MBK बड्ढि ५ B णि उल्लु ६ K पर वणमि ७ MB पडु.

---

16 7 b [illegible] 9 a [illegible] 13 [illegible]
७ [illegible]

17 12 b [illegible] 13 [illegible] 14 [illegible]

18

डिंभहु सुंदु[1] दइवु जि करइ कि मायेवप्पु[2] चिंतिवि मरइ ।
सिरिपालु सच्चवइदेहरुहु होसइ चक्कवइ पहुल्लमुहु ।
दइवण्णुएहिं आएसु कउ गुणवालु सवणि[3] मुणि होवि गउ ।
कह णिसुणिवि कुसुमालें दमिय मइ खतिइ सतिइ ससमिय ।
णरयाउसु तेणोसारियउ[4] तइयाउ पढमि सचारियउ ।
ज सायरसखहिं मेलविउ त वरिसलक्खकोडिहिं थविउ ।
सिरिपालविवाहि सवंतवण वसुपालें मुक्का वे वि जण ।
सो चोरु मरिवि णिवडिउ णरइ पहिलारइ भीमैं[5]दुक्खणिलइ ।
बहुदियहहिं तेत्थहु णीसरिउ वणि कुंभोयरघरि अवयरिउ ।
इहु अच्छवि हउ सजमु वहमि जिणएवें[6] भासिउं सद्दहमि ।

घत्ता—ता देवेण समीरिउ ज जम्मतरि मारिउ ॥
त जइमिहुणु णियच्छहि ता किं रोसें पेच्छहि ॥ १८ ॥

19

किं खमहि भडारा फुडु कहहि किं अज्ज[1] वि वइरु चित्ति वहहि ।
त णिसुणिवि रिसिणा बोल्लियउ पाविट्ठें ज मइ सल्लियउ ।
त एवहिं णिस्सल्लु[2] जि करमि तहु हियमियवयणइ वज्जरमि ।
ता तियसें जपिउ णिसुणि रिसि अम्हइं जि ताइं विण्णि वि सवसि ।
पइ पहयइ देवइ जायाइ इय कहिं मि भवतइ आयाइ ।
तुम्हहु पयजुयलउ वदियउ ता मुणिणा अप्पउ णिंदियउ ।

18 १ MB सुहु दुहु दइउ २ K माइयप्पु ३ T सवाणि श्रेष्ठिना सह ४ MB तेणोहारियउं.
५ MB दुक्खभीमाणिलए ६ MB जिणदेवें
19 १ MB अज्जे वि २ K णीसल्लु

18 3 *a* दइवण्णुएहिं दैवज्ञै, *b* सवणि सवणिक् 4 *a* कुसुमालें चोरेण, *b* सतिइ विद्यमानया
7 *a* सवतवण स्रवन्ति व्रणानि क्षतानि ययो
19 4 *b* सवसि स्ववशिन

हा पुत्तु पुत्तु मइ मंतियउ   हा पुत्तु पुत्तु मइं चिंतियउ ।
हा पुत्तु पुत्तु मइं मारियउ   हा पुत्तु पुत्तु मइं वचलियउ ।
कलसु केरउ पीसह मुर्इ   णवहिं ण वहइ केणावि सम ।
जिह दुमेहइं तिह तिजगु वि वमिउ   दुवे णवहिं मज्झमि संजमिउ ।

घत्ता—ता दुक्खिमपमच्छरु   समसवसमामउ मच्छरु ॥
गउ गुरु वहिवि सम्माइ   ण हविउ जिणवरसमाइ ॥ १९ ॥

20

मा मीसमाइ विहवेवि मरि   वसुपाडणमरि उज्जासमहि ।
माधवि सिरंकरि मंडियउ   गइ माइ धम्मसु वि विड्डियउ ।
उप्पण्णउं केवलणाणु बले   कंपावियसुरवरसुरसवण ।
गइ एकु वत्तु थो णामगं   णयियाँ मंडपिदं वरामरं ।
पामोमसु मणिमंडसु विरेतु   देवसमु कमार धरविमसु ।
पेडुवविमाप वरअसिमविड   भायउ मण्णाउ विपक्खविड ।
तहिं मवसरि पवणुरुवउ   देवीउ मजाइ समागमउ ।
विसु परमा तहिं विपरिप्पमउ   को पर होती का पुच्छियउ ।
अरमा पउंदु मरमोहमिया   हर पुरि सुन्दरु गेहिणिया ।
वसुमेण वसुमरि धारिणिय   मण्णऊ पुहइ सुहकारिणिय ।
सिरिमइ मसोम संमी विमम   बोल्ती भरधामि ताड विमल ।
णवहिं भडहिं वि सुविसिम्मियरें   वलि कुविहि पामि पाहियरें यवरें ।
कुर्मेड मरिवि सुरसाणउ   मधुपवा यवित हरणउ ।

घत्ता—रयमेया सुरकामिणि   भवर सुमेव सुहासिणि ॥
सुहयर कोमलहत्थी   चित्तमेव सुपसत्थी ॥ २० ॥

---

१ MB वर्ण   MB संपर्ह विम्म॰ २ MB यमिर

20 १ K वयमाउ २ MB मणिमउ ३ MB विसु ४ MDK omit this line ५ MB पमरि. ६ MB पडड MB सुविमलं MB केतार.

---

20 10 सु रह च °सुमिता

21

लज्जियउ चयारि वि कयवयउ   संभूइयाउ वणदेवयउ ।
तहिँ चित्तवेय जक्खसेमरिय   धणवइ वणदेवी वणसिरिय ।
अज्जु जि उप्पण्णउ दिव्वकुले   इह एयउ पेच्छहु गयणयले ।
सुरदेवें दाणु ण मण्णियउ   रिसिदिज्जतउ अवगण्णियउ ।
मुउ हयेंउ गद्दहु डुहतु सढु   पुणु वायसु पुणु उंदुरु सरढु ।
पुणु दाढाभासुर घोणसउ   पुणु हुउ चडालु कुमाणुसउ ।
मइ समउ आसि सो घित्तु विलें   हउ मरिवि पइयउ णरयविले ।
जिणधम्मु तिसुद्धिइ भावियउ   वउलें चिरु जइवइ सेवियउ ।
तेण वि तहु आउ पयासियउ   सत्त जि अहरत्तइ भासियउ ।
ओसारियदूसहभवरिणइ   संणासु करिवि रिसिसमदिणइ ।
उप्पण्णउ एवहिँ फुडु जि दिवि   को पुसइ णं विहिणा विहिय लिवि ।
सो पइ तुम्हारउ णवियसुरु   लइ सो जि महारउ धम्मगुरु ।

घत्ता—सुरदेवहु जा मायरि   सा मरेवि तुच्छोयरि ॥
एत्थु जि देसि चिरंतणे   उप्पलखेडइ पट्टणे ॥ २१ ॥

22

सिरिधम्मपालणिवणंदियहे   उप्पण्णी पुत्ति अणिंदियहे ।
मुणिदाणहलेण सुसीलिणिय   जगसुंदरि मंदरमालिणिय ।
तहिँ तहि विवाहि कयणिग्गहहो   अम्हइ मुक्को वदिग्गहहो ।
रइसभवसोक्खाकंखिणिहिँ   गुरु पुच्छिउ चउहु मि जक्खिणिहिँ ।
भणु भणु भुवि को अम्हहं रमणु   ता कहइ काममयविद्दवणु ।

---

21 १ MB चक्केसरिय २ MB धणवइ धणदेवी ३ MB गद्दहु हुउ ४ M दाढीभीसणु, B दाढाभीसणु ५ MB वि

22 १ MB °धम्मवालसिरिणंदियहे २ MB मुक्कइ ३ MB °विद्दमणु

---

21 1 *a* लजियउ दास्य 8 *b* वउलें वकुलनाम्ना चाण्डालेन 10 *b* रिसिसमदिणइ सप्त दिनानि

22 2 *b* मंदरमालिणिय मन्दरमालिनीनाम्नी

जं णाणें कय संभासणाइ
हरिमाणियपीढयणमुहइ
णा हाणइ तुरइं हियपहइ

णइ तणउ पुत्तु भणुणु सुणइ।
भणणाणि चिंड सिरहसमसुहइ।
पण रुहड णाया कुसुमणह।

घत्ता—माणपहइ सुपहरिणु अकणु गुरिंद हयणिणु॥
णारसिंगणु हमइ तुरइं पुसउ अणणइ॥२२॥

23

मणयणहिंदु सिगाग्धार
में पविउ भिसगुर गयणगुणु
जक्सिरहिं आणंरि असंभणहा
भागामिउं पुण्णु पर्मसियउ
णहिं भवमरि वणिवग्गणु भद
आयाउ ताउ भिंहंसयउ
मंसहंतें विग्हवियालियंउ
सुउ कोगपणवणिपगु सुउ

इणउ माणउ मा कोहलाउ।
माहियउ वविहिं गउ सम्पु पुत्तु।
गलासु वरंठहु भणुणहा।
णहु सियमहिमणणु भामियउ।
मणाउ हविहिं पमतेणउ।
पिहि ग्गुणउ वम्महमणाउ।
तणयउ ककणि कसिपउ।
गहमाणि पिमोहरउ हुउ।

घत्ता—णणु वि वयवहर्पवणु पुरि सुवणउ पविसेसणु॥
णहिणि ताणु वमुंघरि बाहइ कोहु वसुंघरि॥२३॥

24

भणु पि परिवणु कोमु वमइ
वसिउतें मायविहिमपणु
पुग्वाहिरि पइ किमि करइ जहिं
पहिभाहिउं महुयमीमियउं

णहु कंत सुणत्त सुरणमइ।
काराणिउ तव भावमवणु।
कम्माहिं हिवि वरिय वरिय तहिं।
मावेणु गण्दवि सुरवासियउं।

४ MBK ३

23 १ B वइवयइ २ MB सलसणाहा ३ B सलहिं ४ MB सिहिसियउ, T सिहिसउ ५ MB णामहत॰ ६ MB सिमाउ ७ B णाइ

24 १ MB वसिउ २ M वसिउतें ३ MB कोमगु

23 1 b व इ व य इ वहुणमाणमा णारापाउ 5 a मण सुणहो महाना वेसउ 7 a ॰सिहे सियड णहसिन b ह व रि सोतविलणउ 8 b रि व व देउ सिवाय

24 2 को व रि ड्डु भ व हु संरामा रो पुत्तरणा मणवायल 4 a भ ड व॰ वरमणह, b हुइ वा सि भ व वहुरिकासीतवसितावित्तम

पहे जंतिइ साहु पलोइयउ आहारु तासु तहि ढोइयउ।
ससिवयणइ पडिवणि णायहरे भुत्तउ मुणिणा मणिहिउ करे।
दाणेण तेण जणसंथुयइ जायइं पंच वि अच्छभुयइ।
गिव्वाणहिं रयणइ घित्ताइ करकच्चुरियाइ विचित्ताइं।

घत्ता—जोइवि मणिगणवुट्ठी पणइणि तासिय पणट्ठी॥
गय घणकणिसहु छेत्तहु अच्छइ सा णियकंतहु॥ २४॥

25

तुह कूरकरवउ आणियउ जो तेण साहु मइ पीणियउ।
केण वि तहिं फुल्लइ मुक्काइ पियथम महु मत्थइ थक्काइ।
अण्णेत्तहि रुइरकिरणजडिय गयणंगणाउ पत्थर पडिय।
अण्णेत्तहि काइं वि गज्जियउ णउ जाणउ वज्जउ वज्जियउ।
अण्णेत्तहि साहु साहु भणिउ अण्णेत्तहि वरिसिरघणझुणिउ।
तं णिसुणिवि हउं णट्ठी सभय ता भणइ णाहु हलि तुहु सदय।
तुहुं महु केरी घरकमलसिरि पइ होंतिइ होसइ मज्झु सिरि।
तुहु गुणमाणिक्कहं तणिय खणि पइं कियउ धम्मु भुजविउ मुणि।
पत्थर ण होंति ते दिव्वमणि इय भणिवि अहीहरु ढुक्कु वाणि।
धरियउ विवक्खवइसेण धणु उत्तउ सुकेउ मा किं पि भणु।

घत्ता—हिमगोखीराभासइ महु केरइ फणिवासइ॥
पडियइं रुइरहियकइ महु जि होंति माणिक्कइं॥ २५॥

26

इयरें पवुत्तु तुहु खुहु खलु महु घरिणिहि केरउ दाणहलु।
मा हरहि चोर रूसइ णिवइ ता दव्वु लएप्पिणु सो कुमइ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ धरणिवइ को पावइ धम्महु तणिय गइ।

४ MB ताइ तहु ५ B मणगणबुद्धी ६ MB घणकसणहु
25 १ MB ण २ M वज्जुउ ३ MB पेच्छिवि ४ MB तुहु हाले

25 5 *b* वरिसिर° गन्धोदकवर्षणशील 9 *b* अहीहरु नागभवनम् 10 *a* विवक्खवइसेण नागदत्तेन

सो रायउ भवन वि सो थविउ — णिम्मूलगउ मोहें वमिउ ।
जिह जिह मणि त सीकरइ मणु — तिह तिह वि होइ इगासमणु ।
पुरेवेविमुखहिं दीहरहिं — मेसाविय किंकर वेहरहिं ।
परमाइ वि हियथइ संकियउ — संठिउ सुकेउ पुप्फकियउ ।
विणउ रयणोह वणु गसिउ — मणु तवचरणउ का ण मसिउ ।

घत्ता—मज्झहिं विणि पणयपमरि — विहुइ माणि तवकोडरि ॥
मामाइयपरविरुँ — पशु करहिं वि अहिवसें ॥२६॥

27

मं कहिउ कह ण कह ण भरिवि — पुणु रोसहुयासें विप्फुरिवि ।
माहु करि ण वरहि किं वज्जरिवि — गुरुवयं पाहाण हुंकरिवि ।
पहरंतहु उच्छलिवि कमसि — णिहुर तहु मम्मउ मासमवि ।
उम्मोयगंडेण विवारियउ — वणियागमहु हक्कारियउ ।
भयसयहर बमहारेण जिउ — पेहरंतु वसुंधरिवाहि थिउ ।
मणु वाहिसु आयउ वसिठें सि — हारिउ तहिं णिहुर्में वेसिठें सि ।
कुपुरिसु वसुगामें वेमिनयउ — तं वणु सुकेउ मणियउ ।
वेपुत्तउं म मरहिं मिऊरिसहुं — वेयाण पहाणहर वेसि हुई ।
पुणु वेण फणीसरु वुप्पिमयउ — हउं णं किं वेण गरुणसियउ ।
मग्गातहु किं पि ण दिण्णु वरु — ता भणइ मणु मणु इवि वरु ।

घत्ता—वाणि पमणइ मुर्यसूसणु — बहु सुकेउविसंसणु ॥
मो मो विसहरसाए — विसहउ मज्झु भडाए ॥२७॥

26 १ MB णिम्मूल गउ K णिम्मूलु गउ २ MB पुरोवेविमुहहिं, A पुरवेविर मुहहिं ३ M कि
किर MB दिण्णउ ५ M वरिविरें

27 १ M वहन B वहह २. MB वम्महपहेण ३ M मारुपति ४ MBK वेताउ MBK
वेतउ ६ MB पणियउ T वणियउ ७ MB वणियउ MB मूमूसण.

26 5 a सीकरइ लोकयति. 6 b दहरहिं रथ्याभिः 9 पण्णयमरि नागसमूहे
27 5 b पहरंतु प्रहरन्तम् 7 a वणियउ वञ्चितो भूत 8 b वेयाण वेयाकरणा

28

पडिजपइ फणि गभीरमणु　　द्दविणेण ण जिप्पइ दिव्वधणु ।
प्रांणावहारु तहु को करइ　　जसु पुण्णु सहेज्जउ संचरइ ।
मइ तो वि तासु तुहु अल्लिवेंहि　　मज्झायवयणु एहउ लवहि ।
भणु फणिवइ कम्मभारु वहइ　　जइ णत्थि कम्मु तो पइं वहइ ।
ता जायवि र्निंतियविप्पियउ　　फणि तेण सुकेउहि अप्पियउ ।
किउ णियमतु विहावियउ　　अहि हियइच्छिउ काराविेयउ ।
णीसेसइं कम्मइं णट्ठियइ　　ससिद्धइं कज्जइं सठियइं ।
मग्गइ पेसणु उरजगमउ　　वणि भणइ खंभु पाहाणमउ ।
आणिवि भवणगणि लहु ठवहि　　गरुआरउ वाणरु तुहु हवहि ।
तहिं वधिवि खंभि सुवणवणइ　　गालि सखल लाइवि अप्पणइ ।
तुहु तेत्थु वप्प सट्ठेण विणु　　आरुहणुत्तरणहिं खवहि दिणु ।
इय णिम्मइ भणियउ जइयहु जि　　तुह अवरु देमि हउ तइयहु जि ।

घत्ता—ता विसहरु विहँसेप्पिणु　　तुरिउ खंभु आणेप्पिणु ॥
मकडवेसु धरेप्पिणु　　थिउ अप्पउ वंधेप्पिणु ॥ २८ ॥

29

खभग्गसिहरि उट्ठिवि चडइ　　उत्तरइ सरइ धरणिहि पडइ ।
अहि दिट्ठउ अहिदत्तेण किह　　सज्झायहु लग्गेउ साहु जिह ।
णेरंतरु णिसिदियँहइ गमइ　　लइ विहिविहाणु सव्वहु भमइ ।
विसि भणइ मित्त मइ मेल्लवहि　　पडिवक्खें सहु णिम्मउ चवहि ।
ता तेण माणु अवहत्थियउ　　वयणामु णवेप्पिणु पत्थियउ ।

28　१ MB पाणाव°　२ MBT अल्लवहि　३ MB केउ　४ B विसहेप्पिणु　५ MB मक्कड°
29　१ M अहिदित्तेण　२ MB लग्गइ　३ MB °दिवसइ

28　2 *b* सहेज्जउ सहायम्　3 *a* अल्लिवहि समर्पय　8 *a* उरजगमउ भुजग, 11 *a* सट्ठेण विणु शाठ्येन विना
29　4 *a* विसि नाग

पइं मणुएं काइं वि मणु जहिं मण्णिज्जइ साहसु काइं तहिं ।
दुद्धर धम्मेण वि हुई कि गुरु भा बंधइं महहि णाणस्सुव ।
तं णिसुणिवि मणुवि पडिभणउ फणिवइ दीविया मेत्तइहिवउ ।
अवधारयवि तिवयरमत्यएण णियसुयणु समप्पिवि णियमएणु ।
संसेविउ गुणहरगुरुचरणु णिच्चहुँ सावउ तवचरणु ।
णिम्मम्मलइयाहि णिउ णिम्मयाहि गैंणियाहि पयवप्पिणु मुणयाहि ।
णिव्वंकिय चरिवि चउसुचरिय परियाणिवि अणसणकिरिय ।
मुणिवउ सुरउ सुउ णिद्धरहरे कप्पम्मउ समिय सवारहरे ।
धीरिनिणु हवेप्पिणु णियइमिय तेत्थु वि सुवि दूर तासु पिय ।
सम्मत्ताइकिय मणवइ रामासु णिरायैयणामपइ ।

घत्ता—भरहबम्भणणिम्मायइ वर्पंइमइ चरचणिरूयइ ॥
होंति ण वणभवयंतरि पुप्फदंतवासंतरि ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भविस्सभवपुच्छणवण्णणं णाम एक्कतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३१ ॥

॥ संधि ॥ ३१ ॥

४ MBK देव ५ MB वि ६ MB मेवहि चवइ ७ MB कवियइ, T कविया M पुच्छइ पुर्ं ९ MB मुणिम्मयाहिं १ MB पयमिहि ११ M सुर सुरउ १२ B णिरस° १३ M अरसहवउ K पवबइ परय° १४ MB जणि°

5) बंधइ इ मुम्हि. B) मणि णा सुहेकुमा 16) एवासु णिंमसणुपयंतवितु, णिरावयणावइ वीरायणणमलपा 16 जणवणइगरवणिवेचइ चव वणएयविणु 17 पुष्कदयणाणगरि ज्योतिर्मिपक

XXXII

णिसुरासुरविज्जाहरसरणे आसीणें आसि समवसरणे ॥
गुणपालजिणिंदें जं भणिउं जं मइं वि पइं वि सुंदरि सुणिउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

देवि सुलोयणि विंत्तु कहाणउं तं वज्जरहि मज्झु अहिणाणउं ।
इय जपएण पुच्छिय भासइ मइ सिरिपालहु केरी गुणसंतइ ।
तेत्थु जि चारु पुंडरिकिणिपुरि वरसोहाणिज्जियसुरवरघरि ।
ससिरिपालु वसुपालु णरेसर सहुं णिवसइ णं ससुरु सुरेसरु ।
ता चिंतिउ कुबेरसिरिमायइ जंपिउ मुहकुहरुग्गयवायइ ।
दीसइ सव्वु लोउ सवियारउ एक्कु ण दीसइ णाहु महारउ ।
अण्णु वि सो कुबेरपिउ मायरु तेण णिज्जिय चंदु दिवायरु ।
गय वेण्णि वि ते पुणरवि णाया किं जाणहुं विहाय सिविजाया ।
एम भणंतिहि वामउ लोयणु फंदइ सुहिदंसणसपायणु ।
हियवइ परमुच्छाहु ण माइउ ताम संमुह वणवालु पराइउ ।

घत्ता—सो पभणइ मयणवियारहरु सुणि सामिणि केवलणाणधरु ॥
गुणवालु देउ सुरपरियरिउ उज्जाणि महारिसि अवयरिउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza –

वम्भण्डाहण्डलखोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।
खण्डेण सम समसीसियाइ कइणो ण लज्जान्ति ॥ १ ॥

GK do not give it

1 १ MBK आसीणेणासि २ MB कुत्त ३ MB सिरिवालहु ४ M सिरिपालें वसु°, B सो सिरि-पालु वसु° ५ G °कुहरग्गय°, K °कुहरग्गय° but corrects it to °कुहरुग्गय°. ६ K गय ते बिण्णि बि. ७ M समुहु, B सुमुहु ८ M गुणवाल

---

1 10 *b* सिविजाया शिवीभूता मोक्ष गताः

2

मज्झेहु वि तिहिं गुत्तिहिं गुत्तउ झाणपसण्ण णिमीलियणेत्तउ।
जो कुबेरपिउ आयउ मुणिवरु सो भायउ तुम्हारउ मायरु।
तं णिसुणेवि देवि[1] रोमंचिय केहि ण समयरसाईं सिंचिय।
वंदणहत्तिइ गय परमेसरि हरिहयणवणमसमसरि।
पडिय सुंदर चोइय संवय मज्झे पंपि णिविण वि वंदण।
दिट्ठ तेहिं उववणि विहरंतउ सयलु सहलु कोमलु वरपावउ।
पत्थरवरिउ वरिउ बहुरयणहिं सेयउ णाण सुदयणवयणहिं।
तहु तहि अम्हहु णाम जगपालउ मयरु णिहाणिउ णरवरमउडउ।

घत्ता—जगपालणपरिघु तवचरणे सुउ झोए तहिं संपिहिउ वणे।
तहु मयरु मणिउ वरसिहगु वसुपालु मयरु सिरिपाल सुउ ॥२॥

3

पिम्मि वि मारिउ पिम्मि वि णरवरु जइ वंदति होंति ता मणहरु।
तं णिसुणेवि कुमारें वेत्तउं देव देव मइं सुमिरउं चित्तउं।
णरवेसेण सरणसोमाली एहु सुरंगी पवरु मणेसी।
तहिं अवसरि कीमें सह होरउ मायापुरिसें रमणु पओरउ।
सिक्खीरूवउ णीलीवंधणु परिममंति णयणाइं कंपइ मणु।
कुसरु महरु पासेउ पवियक्कु केसभारु कलवेणु वि विअरउ।
सुसीरु थणु चलिय अवरु मासरु ता कंचुरउ सुवणु सीसरु।
पुण्णमणाएविमणम्मि सुसिम्मउ रम्मउ देहु अणाउं रम्मउ।
तहिं सिरिसेहरि सम्मीसउ णरवरु तहु सुहकारिणि वरिसि अवसरु।

2. १ B omits from देवि down to चलिय in 5 a. २ MB सिरिवसमर T सिरवसर ३ MB °पामर ४ B सुणगडउ ५ MB सुरलोई

3. १ MB णवण २ MB सुराई ३ MB सव कमी ४ MB वरिस तणु ५ MB वसणु वि णिसुणइ ६ B सुणिमणु MB कंचुरमउ MB वरमणु MB सिरिरमणि

2. 6 सिरवासु सिरवासम

3. 8 a सुरमणम सुरमं.

जसमइ दुहिय महिय णियचंदें पुच्छिउ जइवइ णाविवि णरिंदें ।
खयकंदप्पदप्पदुमकंदें अक्खिउ इंदभूइसवणिंदें ।
पुरिसवेस णच्चंती जाणइ जो सो पुत्तिहि जोव्वणु माणइ ।
तं णिसुणिवि महु गायणवायण दिण्णा राएं भाउप्पायण ।
दिट्ठउ मंतिहिं ज जिह जेहउ कज्जु पयासिउ तं तिह तेहउ ।

घत्ता—परियंचिवि पुरइं सघरवडइं णयराइं सखेडइं कव्वडइं ॥
णच्चावहि दावहि तणय तिह वरइच्छु णिहालहि तुरिउ जिह ॥ ३ ॥

4

पेक्खु पेक्खु पच्चक्ख णिरावय ता मइं आणिय ण वणदेवय ।
सुय णयराउ णयरि णच्चंती जणु णवरसमलिलें सिंचंती ।
एवहिं एउ समागय पुरवरु तुहुं दिट्ठो सि होसि एयहि वरु ।
णच्चइ मुद्धहि सच्छ सहेज्जी णंदपरमेसरपुत्ति दुइज्जी ।
ताहं जुवेसें दिण्णइं वत्थइं आहरणइं मंदिरइं पसत्थइं ।
एत्थंतरि सुहिसुहइ जणेरउ जणणियाइ पेसिउ हक्कारउ ।
तहु वयणें चल्लिय विण्णि वि जण अग्गइ अणुसरंति जा सज्जण ।
ताम णियच्छिउ तेहिं अरूढउ णरवरु चवलतुरयारूढउ ।
आसु पमग्गिउ सो सिरिपालें दिण्णउं धणु लेप्पिणु हयवालें ।

घत्ता—सो तहि कयपरिणामें णडिउ सहसा कुमारु हयवरि चडिउ ॥
आसण्णु जि सेण्णमज्झि चालिउ हरि दूरु गपि दुरुल्ललिउ ॥ ४ ॥

5

वाहपवाहजलोल्लियणयणहं हाहारउ मेल्लतहं सयणहं ।
तुरिउ तुरंगु अदंसणु जायउ महिवइ माउसमीउ समायउ ।

१० MB णिववदें

4 १ MB णउ परमेसर° २ B सुहइ जणियारउ ३ MB अणुसरत ४ MB धणवालें

15 परियंचिवि परिभ्रम्य

4 1 *a* णिरावय आपद्रहित 4 *a* सहेज्जी सहाया 5 *a* जुवेसें युवराजेन श्रीपालेन 8 *a* अरूढउ अप्रसिद्ध 10 कयपरिणामें कर्मपरिणत्या

धुणिमोवसोयसंतिपरियरु जो पच्छुग्गिउ पविउ णिरंगउ।
जिणभणि पि माउ करंति पियारिय मंतिहिं कइ व कइ व सा हरिय।
गयइं तासु जहिं जियवम्मीसरु केवलणाणपयरि ओसरु।
वंदिउ भवारयसयवंदिउ मणिउ मण्णुभाउ आवंदिउ।
भाणिउं कुवरहिययहो पुत्तसे पुत्तु महाएउ जिउ मायासे।
तहु मयवंत समागमु करयलु पममइ जिणु मरणु जिणु करयलु।
तरयलु भासंउ पवराहिं भासउ ता पयपेणिणु मुणि गुणवासउ।
सुरगिरितामि संकिवउं सुरवरु सिविरु सुपंपिणु मायासुत्तं।

घत्ता—वेयहुमहामहिहरणियडि कामणि कुसुमियवणवरि णिवडि।
रिउणा तुरयत्तणु परिहरिउ मीयरु रयणीयरकपु धरिउ॥५॥

5 १ MB add after this the following lines—

पेच्छेवि णरणु वीयरतउ भयणु वि परिणु रिउ भणंतउ।
भयणोवंदु भमइ मयि चित्तउ (B omits it)
हाहाकारु करतउ देवि हुणिकण मही वणतरुवेरि।
भयहु एहु कि हुणिकउ करणु जो करणंहु (B करणहु) देव भरमणु।
देव मि कहिय भत्त भणेवरि हरिसोय दिउ भणतेभणरि।
तं णिसुणवि वरुहु भणवंती णहिकवे णियणिव देवि भणवी।
भहु भणीवइ पुत्तें रत्ती (B रत्ती) वणि व वंदइव णिरत्ती।
हा हा पुत्त वणणु णिपोहउ देव पुत्तें हयण वीरउ।
किं भणहरिवइं रमिय भरत वणियणिहरिविणयहिवि पुण।
हा किं पर्णे हिउ मडु भणणु णिहुभवणभमणभवणाभंउ।
हा णिहि रहउ देव हरि रोहउ जं महु पुत्तपुत्तु णिव्वोहउ।
पुरसणाहु पुण्णणिरमणायर हा मम सुहु (B मुहु सुहु) पवोभइ भवर।
देव भयणमू हम भमणवी तो मर पुत्त व वंदिय देवावि।
वसु मवणमि जो भणंतमि हा हा रहण भणव विवि भणवि।

२ MB भासइ ३ MB हुपंपिणु MB रयणियरत्तणु

5 1 a भाइ भणुमि 4 b हारिय भासमविवा b भा भा है भासवेण. 10 रयणीयरय रक्खसत्तणम्

6

उरयलविलुलियविसहरहारो फडियलवेलइयघोणसघोरो ।
पंडुरपविरलदीहरदसणो घग्घचम्मवरविरइयवसणो ।
मंदरकंदरसंणिहतोंडो मणुयवसाचिक्किक्कियगंडो ।
सिसुससहरसमदाढाभीसो जलियजलणजालाणिहकेसो ।
णवघणसामलकुवलयकालो खयरो होऊण वेयालो ।
भासइ हित्ता घरिणि महारी पइं गयजम्मि सुचपयगोरी ।
कुद्धो तुज्झु दुरंतकयंतो जासि इदाणी कह जीयंतो ।
भैरइ कुवेरसिरीए पुत्तो अहमिह णियकम्मेण णिहित्तो ।
पणिह भवजलसायरतरणं जिणवरकमकमलं महु सरणं ।
भीमणिओ तुरएण कुमारो इय जणवत्तावुज्झियचारो ।
ता विहगजाणियसुहिदुक्खो पत्तो तहिं जयपालो जक्खो ।

घत्ता—रणभरधुरधारियकंधरहो चंडासिदंडमंडियकरहो ॥
जुवरायहु कारणि दुद्धरहो अब्भिट्टु जक्खु रयणीयरहो ॥ ६ ॥

7

भणइ जक्खु खल रोसपरव्वस जाहि जाहि विज्जाहररक्खस ।
मा णिवडहि जलंति कालाणलि घइघसवयणविवरि जगघंघलि ।
मा ओहट्टउ आउ तुहारउ मा तासहि कुमारु महु केरउ ।
अमरिसरसवसु कहिं मि ण माइउ एम भणंतु महंतु महाइउ ।
सो रक्खें खग्गेण दुहाइउ घणसुरवरु विहिं रुविहिं धाइउ ।

6 १ MB °विरइय° २ MB °सणिहतुंडो ३ MB गयजम्मे चपयगोरी ४ MB दुरंतु कयंतो ५ MB एवहिं कहिं दुहु जासि जियंतो ६ MB भणइ ७ MB जाम णिहित्त, B सामणिओ, K माणिणिओ ८ MB °सुहदुक्खो ९ MB जगपालो १० M रणभरधरधारिय°, G रणभरधारिय°

6 10 *a* मामणिओ मामक मदीय

7 2 *b* घइघस° यम, °घंघलि आपदि 4 *b* महाइउ महादत 5 *b* घणसुरवरु व्यन्तरदेवो मम

इय चिंतिवि वि चत्तारि समुब्भम गलगज्जंत विसमें पंडिगय।
पढम चयारि मइ परिभाया मइ पि इय सासय संजाया।
हय माइस बत्तीस भयंकर बत्तीसहं चउसट्ठि मडप्फर।
चउसट्ठिहिं मेडमिड रुपउ अट्ठवीसेहिं सउ संमूवउ।
तं पि तुमाइं पवगपमयारि वसु वसु महपलु पिहियउ जम्मारि।

घत्ता—रमणियरइ मुयवलु जउ कहिउं दमइ रिवगइहरं पंचालिउं ॥
कि होही कम्मु णिरंतियरं मणिपमु कुमारइ विरिवरं ॥ ७ ॥

8

ण तहु दीसइ सुंदुं परिवम्मउं थिउ णिरप्पणि बंधु पच्छण्णउं।
रुप्पयसंडु उप्परि याहि बोलइसउ महचवमणि जाहि।
रिउणा चित्तउ पयडापरियउ दरिसे² मइ चित्तउ धरियउ।
सामिउं सामिउं सिरिसिहरउ हवियउ चिरकंपणु तहिं तच्छड थवियउ।
पडिबद्धसिरमोयमु दंकिउ मरडउ रिउ जसु तेण्णवि णउ दीसउ।
गोपायंकाइ ववहि धीवित्थरि पसारियकरमउ तम्मा पत्थरि।
चिरड वाम्मउ विमिउं णिम्मउ देससहावें सामिउ वि विहुरु।
णा तहिं मयहरि कामकिसारी चउकडिपय संमोरय गोरी।
अम्मविवरंतरि सा परमंती दिट्ठी तरवें पीण मउंती।
णेम वि मम्मो आयदि कोमसु पसिउ तम वसुहमेरयपरिमसु।
घत्ता—पविसम्मि चरतिहिं बोलणिहिं सा महियत मम्मिवुबोलणिहिं।
चउसंकिपवाडिय णिपणिउमउ पडिहोहयाइ णाउंमिउ ॥ ८ ॥

7 १ M मत २ MB परिभाया ३ M चहुलीह रा ४ MB प मीर ५ MB कम्मविभणियर
8 १ MB सुर° २ MB रउ ३ MB दे ली सु मु, T दसार तमसु ४ MB °रिवलती
५ MB मणिमिमु गुरर ६ MB वणित्तरि. ७ MB °कतसु MB मिवय° ९ MB °संभर°
१ MB °रसारिमु ११ MB चवचवलहिं बोलणहिं, K चलणिहिं १२ MB मसुबोलणिहिं १३ MB
परिहयत णाणाउमिणउ T परिहयत

8 b म च हु र मरोरम
8 8 चवचोवरिवम आम्मणतलणिं 10a षी म णु मणोरम 12 पतिहारयाद पविणाहत्ता.

९

सरसमणुब्भवपणयससणिद्धइ[1] आइय भवणहु भागिउ मुद्धइ।
हरि जइ तो तहु चाहु ण लछणु वम्महु जइ तो तहु ण कोसुमधणु[2]।
ससि जइ तो तहु णत्थि कुरगउ रवि जइ तो सो ण वि अत्थ गउ।
सुरवइ तो जइ कुलिसु ण तहु करि तोयहु जतिह माइ महासरि।
मइ अवलोइउ एक्कु जुवाणउ किं जाणहु तेल्लोक्कहु राणउ।
किं जाणहु ज जणवउ घोसइ सो सिरिवालु णराहिउ होसइ।
लइ आयउ पिययमु तुम्हारउ घोलउ थणयलि ण मणिहारउ।
ता मच्छलियउ पच कुमारिउ गयहु पासि णावइ गणियारिउ[3]।
ण कदप्पें भल्लिउ मुक्कउ ताउ तासु आसण्णउ ढुक्कउ।
भासिउ भद्दं धवलियणयणहिं[4] किं जोयहु अद्धद्धहिं[5] णयणहिं।
किं महु आसण्णाउ णिविट्ठउ आसि कालि किं कत्थइ दिट्ठउ।
त णिसुणेप्पिणु विहसिवि धिट्ठइ दिण्णु पडुत्तरु जेट्ठकणिट्ठइ।
घत्ता—पुक्खलवइमहिहि सुगोहणइ पयडम्मि[6] देसि दुज्जोहणइ॥
सीहउरि सहइ णरवालणिउं[7] लच्छीकतइ ण लच्छिधउ[8] ॥ ९ ॥

१०

हउं सस रइकतहि लहुयारी जयदत्ता एयहु गरुयारी।
मयणकंत[1] मयणवइ कुमारिहि जयवइ जेट्ठहु जणमणहारिहि।
अवर वि विमल वयसिय छट्ठी असणिवेयखयरिंदं दिट्ठी।
अम्हहिं सहु उववणि कीलती कामुयमइणेहेणुब्भती।
मग्गिउ तें[2] ताएण ण दिण्णउ पुच्छिउ जइ को परिणइ कण्णउ।
भणिउ जणणु रिसिणा पिहुघोरं[3] एयहिं णरवइ काइ विवाहें।

9 १ MB °समिद्धइ २ MB कुसुमधणु ३ MB गणियारउ ४ MB धवलियणयणहिं ५ MB अद्धद्धहिं ६ MB पायडवि ७ MB °णिउ ८ MB लच्छिधउ

10 १ MB मयणकंति २ MB तेण ताउ णउ दिण्णउ ३ M पहुबोहें

9 8 *a* गणियारिउ हस्तिन्य 14 लच्छिधवु विष्णु

10 4 *a* कामुयेत्यादि—वियुद्वेगविद्याधरस्य मति कामासक्त्या विह्वलीभूता 6 *b* पिहुघोहें पृथुशानेन.

गेहिणीउ होसंति पियाहिउ हुइ पुत्तिउ सिरिकाउ वाहिउ।
पुणु भणइं मणाइ णरिंदयउ गिरिंदयणयण णिवेसइ आयउ।
वारिणि माणियाउ णिवद्धणें कमणीणगसंचारणसणें।
तिय पुरामयण पुत्तें णिहिएउ णियमणि राउ मणें।
घत्ता—णियमई कारणि णियपच्छणि जणिउ णार्इंरउपसंणिहयणिउ।
भणइ हियवइ गोयंतियइ सिरिवाकंपु आयंतियउ॥१०॥

11

तुहुं जि बाबु णं तपियइं भगाइं भण्णु कि बाहु मत्थइ सिमइं।
घर सर धरिणि फल रिउघडहिं भणकंवहिं बीवहिं पुवकहिं।
मासइ सहेउ अइ वि रत्थवइं कत्थारणणु होइ वाहिण्णइं।
अण्णिक वि पुमाणि संमालेण णंजविरवें करहि वि ण माएण।
णियवही दोंति भवंमें मेवी पंवहि सरहिं उरत्थणि विवी।
मवरें इय सारंगि व सोमा सुहमइ करउ बमणु विहाक।
ताहिं अवसरि मायउ उ वि तवणिउ वणिणहि गंयें माणइ हरिणिउ।
रयरइ पुणु पासाउ विरइयउ सयणमणु सोहइ भारहणउ।
सरसावाण ताहु सुर पाणिय मयणुंबुवउ मीणा इव माणिय।
जं पडहु महिं वणयंविउ जं कण्णाणउ कण्णइ बंदिउ।
तं होसेण पियइ गय भासिणि पिय पीवणुहि मण्णाणइं हविवि।
हउं कामगाइं णिवरेरी पुण्णउर हणउ तुहुं वहु केदी।
घत्ता—मयणें णिम्मियमाहिहरणु सा भडइ मयरणइ परवणु।
सिरिपिहिहएणु करजाणयवसणहिं रयणउव घरिय मंगिय बणहिं॥११॥

४ B णियरणेण ५ M णिवहउ ६ MB घम्मर

11. १ MB वरिणि २ MB तुहउ वइ नि हरणइं ३ MB वेवइर. ४ MB रसवसणेण वइ नि ५ MB तुहुं ६ MB मवरेंहि M वयणुवाण मीणा इव B वयणुव वीवो इव ८ MB वयर ९ MB सणिणिरु

7 a सिवणिरु वालुवत्स 9 b भयणयिर° चेतनलक्षम्, 11 काहर° विलक्षणम्

11. 1 a कि किम्, 4 सवणमणु सहिः 9 ताहु मीणकाव इव वर्ती 12 a णिवरेरी विहवा 18 वरइएव लग्नादिरूपम्.

12

थणियवेउ तहिं अत्थि णरेसरु　　जोइंचेयदेविहि वल्लहु वरु ।
असणिवेउ तहु पुत्तु पमत्तउ　　तेणाणेप्पिणु इह तुहुं घित्तउ ।
हउं तहु तणिय वहिणि पिय तडिरय　　तें पेसिय पइं णियहु समागय ।
किं जीवहि किं मुउ सिंचियसिलि　　णिवडेप्पिणु खयलि गिरिवरयालि ।
दूरहु जोइओ सि मइ रोसें　　किर पइं हणमि णिसीयरिवेसें ।
णवर हउ जि हय वम्महकंडें　　इंदचदणाइंदविहंडें ।
तें सोहग्गभिक्ख मइ मग्गिउ　　मच्छरु मेल्लिवि तुहुं ओलग्गिउ ।
एक्कवार जइ करि करु ढोयहि　　एक्कवार जइ मुहुं अवलोयहि ।
तो जीवियफलु मइ जगि लद्धउं　　त तहि भासिउ तेण णिसिद्धउ ।
मई विणए पारद्ध महुच्छव　　जइ पइ देंति मिलेविणु बंधव ।
तो गिण्हमि ण तो धुउ वज्जमि　　कण्णासाहसेण हउ लज्जमि ।
ता सा गय जवेण रयणउरहु　　भासइ भाइहि मारियवइरहु ।
मुउ सो णरु मग्गियपलसयलइ　　मइ दिट्ठइ भमियइं गिद्धउलइं ॥

घत्ता—णीसासजलणजालियदिसइ　　असहंतिइ असणिवेयससइ ॥
जहिं णिवसइ थिरु वरु जित्तमहि　　तहिं पेसिय मयणवडाय सहि ॥ १२ ॥

13

ताइ गंपि सुहउ अब्भत्थिउ　　जो रक्खेसइ जणवउ दुत्थिउ ।
विज्जाहररायहिं रइधुत्तिउ　　थणियवेयमरुवेयहं पुत्तिउ ।
सो परिणेसइ रुइहयरविरहु　　चक्कवट्टि सिरिपालु महापहु ।
रूवुं तुहारउ हियवइ भावइ　　विज्जुवेय पिय दुक्करु जीवइ ।
भणइ कुमारु काइं भासिज्जइ　　होंतउ केण कम्मु लंघिज्जइ ।

12　१ B जाइवेय°　२ MB हुहु इह　३ MB णिसायरवेसें　४ M दिहि　५ MB करु करि　६ MB बहुविणए　७ K मिलेप्पिणु　८ MB मारीय°

13　१ MB सिरिवालु　२ MB रूउ　३ MBK विजवेय

12　3 *a* तडिरय विद्युद्वेगा　13 *a* पलसयलइ मांसखण्डानि　11 मयणवडाय मदनपताकानाम्नी

आहि दूर हवे पियमम् होममि कामदि मोहाभिगणु रमणि।
तं पिसुणिवि गय गेहहु दूरे मामोहप कुमारि फिम हूं।
माइय पुणु पिउहाउर हेलहि मप्पाइ करमयस्थउ अवहि।
कुमरिउ रमणमायरमगिताउ गंभामेतु ताउ पुच्छितउ।

घत्ता—जणमाहवि सुंदरि सुंदरिउ वसि पहुउ णवि छे वि कुंपरिउ।
कं मुणियपविणिहि पुम्पाउ कं मुणरमइहि अक्कमाउ ॥ १३ ॥

14

भाय मिसम्बी मिपहि पयउरि णाई ममुहासम्म महासरि।
चवइ सयपणु पिहुम्पिणु हवे पोमु रिं भावणाह मामगे।
मो मणसिपकमाहमिम्पाय मगणु ण कामु पि हाइ मवाय।
हवं पि सपेहिं अंसिय पेक्खमि तं पवं पुष्पयंतु फिर लक्खमि।
तो वि देव वीमाहु ण किज्जइ वयणरुमाउ मणु रजइ।
पम वंधेप्पिणु मरयासतोरणु संभहु उप्परि कपउ मिहणु।
तहिं कुवेरमिरिहणुवइ मिहियउ हवे कंचणम संपिहियउ।
णुणिणु पंतिहिं दरमगुरिवहि मिहू भउ पिप्पाइ मुणोपरिवहि।
मिह तहिं मुहरि पमणु पवप्पिणु मम पमाइमि पेसणु मंसिप्पिणु।
मरवावरणमम्णु हरमोरे मण्णिवि मासरिपु मेहे।
मिउ मिहयंतु वंगणपयसह मगुत्पमिप मुमिप करकमलहु।

घत्ता—णापसपुरिमवामेकहरि दूराहविमोमसिहिहारहरि।
तं रमलमिमहिं मिम्मउ पेउ जाणिवि जम्पिप जम्पिउ ॥ १४ ॥

४ B हूंयर ५ MBT णउमोपरिउ and gloss in T कामोदरः.

14 १ M णाणु ण मोर° २ MB वंधेप्पिणु. ३ MB वंधेप्पिणु ४ MB ण ५ MB णरि.

14 8 a "वमोह" वाक्यम 13 b सिण दु ढयमाणहीवहिमाई वेसुरे कणयाणाय, पडो पिम-पिदी, तरो पविमिण इताम रता ण हुविधा.

15

णाणारयणफुरंतपईवइ मिद्धकूडजिणणिलयम्मीवइ।
जाव पक्खि धरणियलि परिट्ठिउ ता पहु अंगु वलेप्पिणु उट्ठिउ।
तासिउ खयरु उड्डिउ णहि चचलु तहु पयणहलग्गउ गउ कंयलु।
पडिउ धरहि किंकरहिं णियच्छिउ जाणवि मयणवईहि पयच्छिउ।
पत्तेंहि एण वि दिट्ठउ जिणहरु दुव्वियदुक्खलक्खणिम्महयरु।
थुइ विरयंतहु दुण्णयसाडइ विहडियाइं दढकुलिसकवाडइं।
जें दिट्ठें णट्ठइ सचिउ मलु जें दिट्ठें उप्पज्जइ केवलु।
जें दिट्ठें कुदिट्ठि ओहट्टइ जें दिट्ठें सम्मइ परिवट्टइ।
जें दिट्ठें उवसमु सपज्जइ जें दिट्ठें अप्पउ परु णज्जइ।
जें दिट्ठें दुग्गइगइ णासइ जें दिट्ठें जगु सयलु वि दीसइ।
सो दिट्ठउ दुक्कम्मणिवारउ देवदेउ अरहंतु भडारउ।
थोत्तविप्तु कइमग्गपसिद्धउ गुणवालगरुहें पारद्धउ।

घत्ता--तुहुं मायपप्पु तुहु सतियरु तुहु णिरलंकारु वि हियय‍हरु॥
जिण णिम्मय तेरी जेहिं तणु इह तिहुयणि तेत्तिय जि अणु॥१५॥

16

इय वदिवि जिणु गुणहिं विसिट्ठउ मुहमडवि कुमारु उवेविट्ठउ।
ताउ तहिं संपत्तउ खेयरणरु आहासइ सिरसजोइयकरु।
इह भोगउरि समुण्णयमाणउ अणिलवेउ णामें खगराणउ।
पिय कतवइ णाम तहु गेहिणि सुय भोयवइ भोयजलवाहिणि।
को होहि त्ति पणयतणयहि वरु पुच्छिउ तेण को वि जोइसरु।

15 १ MB °जिणभवण° २ M लेविणुउ दिट्ठउ, B वलेविणु तुट्टिउ, ३ MB एतएण तें दिट्ठ ४ MB णिट्ठइ सचिय मलु ५ M °णिवारिउ ६ MB तिहुयणि फुडु तेत्तिय

16 १ MB सुहमडवि २ MB उवइट्ठउ ३ MB तो

15 10 *a* दुग्गइगइ दुर्गतिगमनम्

16 1 *a* मुहमडवि रङ्गमण्डपे 5 *a* पणय° प्रणता स्नेहयुक्ता वा

णाहणिणियसंजमसुहमंसि तं जाणिवि खयरु अहंसि ।
अण्णाई णिहलंति सुणिविडई णियकुलजणियभवणकवाडई ।
दम्मइ णा वम्मदमरमप्पहि वरु गुरु सुणहि सुकेवलगम्महि ।
हउं आयउं रायणु णिमहउ मणपा हउं पवहि संभिउ ।
णच्छेउ वि कुमारु उयाइउ णहयल तुरिउ णाणुवयाउ ।
णिवसमि पामायहु उण्णहि पुर सपस्त वाणिय सुंदरि ।
णा मायवर तम हुईसीणं णिहिम वंपयमोयविसीणं ।
णइ णारि भामीविम णाणि णइ णारि मसुमणिक्विणि जाणि ।
णिवु णाइएँ णइ णिसुई णिवु सिविहणा वि कुमुवि संभूई ।

घत्ता—णयरायहिंणुणिमायिंयणिणिर कुलमयणंगइ मयंगायिणिर ॥
णयगुणयहउ णियाणिमणियरउ णियमणयणईणणु हाणियउं ॥१६॥

17

कंदरण णिवु वम्मि मरमि गरुडलवि यं मारयसीवी ।
रणवि व णिवहु पुरउ ण पडइ समलहु हासावरहु पहुवा ।
मरउ हव णिवु वि मयमत्ती मौवि व हाससेहवयमत्ती ।
हा हा कंलेविउ णिव मण्णमि मायमाउ जइ वम्मि वि पण्णमि ।
णा हउं जीवामि णिहुं णाहें होउ पहुयारु मज्झु णिवाहें ।
पम मयंगु दवणिउमयहु हरिसिउ सुंदरु मायवमहु ।
मणु वि जविमण जिह थउ हणिउ जिह त णाणीरणु हुंगुणिउ ।
णिवसुमिणिहाणयणिवलें णं णिवुणिवि सयरस हुव ।

४ MB कसं° ५ MB दंमणिर ६ GK record a p सुम्मीमें हरि यडे वडीयी कांसीविन एक-णीम स. ७ MB मरतणिमि MB °पयुणु

17 १ MB वयमणि व णरयारं° २ MB मयरए च. ३ M वणि व हणमणवरं°; B ठणिवण-वणीसिदु. ४ MB पुवणिर

6 a सुरहं हिं णीमवरणेण (हतीक) कुररीहैमणं 7 a केवाइ केह कारीव. 9 a दंसारह दंतपीडी इत्य. 12 a इ हरणिं वारवमिय 14 a णिवुई णिवुणिमा: b पुरुषि वारा.
17 8 a वाणिय हुयुणि.

उत्तउं उच्चाएप्पिणु णिज्झाणि पहु गहिल्लउ घल्लउ पिउवाणि।
थेरीरूवें रएवि दइच्चें घत्तिउ सो तहिं तेण जि भिच्चें।

घत्ता—छुडु छुडु जि णिहित्तउ वालु तहिं हरिकेउ पवणजवपुत्तु जहिं ॥
झायंतु मंतु वलणिज्जियउ सव्वोसहिविज्जइ तज्जियउ ॥१७॥

18

तंविरणेत्तइ पिंगलकेसइ दाढाभीसणरक्खसवेसइ।
विज्जइ चवंतउं ज जं जेहउं उड्डिवि अंजलि तं तं तेहउं।
पिव पिव ताहि भणंतिहि पीयउ सुहडचित्तु ण वि किं पि वि भीयउ।
पुच्छइ पहु तुहुं हिरि सिरि दिहि मइ कहइ देवि हउ सा सव्वोसहि।
सिद्धी तुज्झु वीर परमत्थें तो पविलोइय वुड्डावत्थें।
लद्धदिव्वविज्जासामत्थें णियतणु पुसिय तेण णियहत्थें।
सो जायउ पुणरवि णवजोव्वणु ता पत्तउ खयराहिवणंदणु।
पभणइ सीहकेउ तुहुं सामिउ हउ तुह किंकरु पेसणगामिउ।
जो कहिओ सि आसि रिसिवयणहिं सो दिट्ठो सि देव णियणयणहिं।
सुट्ठु दुसज्झइ णिरु णिरवज्जइ जाणिओ सि मइं सिद्धइ विज्जइ।

घत्ता—वारह संवच्छर इह वासिउ फलकालि अज्ज विज्जहि तसिउ ॥
दइवेण लच्छि तुम्हारिसहं उज्जमु णिरत्थु अम्हारिसहं ॥ १८ ॥

19

एम भणिवि गउ णहयरु जावहिं पहर चयारि वि णिट्ठिय तावहिं।
गलिय रयणि उग्गमिउ दिवायरु संचलिउ वसुवालसहोयरु।
रणि भवंतें तेण णिविट्ठी जरसीमंतिणि तरुतलि दिट्ठी।
उग्गामिवि करु भिउडिवि णयणइं देइ ताहि जणवउ दुव्वयणइं।
चिंतइ णरवइ वरं होज्जउ तणु णउ माणुसु विणिवंधु विणिद्धणु।

५MB °रूव घेरेवि ६ MB जहिं ७ MB ता हरिपवणजवपुत्तु तहिं
18 १ MB दाढी° २ MB °भीसइ MB वमियउ ४ MB ताए विलोइय ५ MB विहिं णयणहिं ६ MB णिव ७ M ससिद्धइ
19 १ MB भवती २ B जरु ३ MB भिउडिवि ४ MB वरि होज्जइ ५ MB णिव्वंधउ णिद्धणु; T विणिवधउ

19 4 *a* भिउडुवि भ्रुकुटीकृत्य 5 *a* तणु तृणम्; *b* विणियधु विनिर्गतवन्धु, वन्धुरहित

हो कि भावपेहिं कसरिकार वेरि मलेप्पिणु पव हसियार ।
ता चिरचारिउ पियसहु तेही पिहिय कुमारहु तक्खणि तेही ।
तें हत्थें चिरपंगु पेरिमहुर मिय पुप्फिसउ णिह पुप्फ सिहर ।
पुरमतिकर पमहु विम्भविपउ मर्द बरहत्तचरिउ सवसियउ ।
जं जिह देहि देव पिम्मारिउ तं तिह बरसीसहु परिचरिउ ।
तासु गवेसा पेसिय पारं पवि कहिं कुवेरचिरिपारं ।
सोहणपरसरपुरियणिप्पहि संकिय करंसिहु मिकिय करप्परि ।
सिहु सोलह सुहउ महावल सोलह पत्थर बहुप्पहुक ।

घत्ता—सो तेहिं मणिउ सुमहुरगिरिहिं अम्मह याहवि पंकजिमपिहिं ॥
मो मो कुमार किं विलसहि गोरुवहु कपरि गोलव परहि ॥ १९ ॥

20

एपपर्दे पंपिय आईं प कम्मार रामाप मोसिंगु में सुम्मह ।
रय चिरसेप्पिणु पंपिउ कुमार महु कप्परि बहु प पयार ।
जामि पप्प किं पप पगावें रापविमोयें मिम्महगावें ।
पम्म मयंतु वि भरिउ चिरंसिवि तेवाँवें सपिर संमिवि ।
बहुसिविहि वि राप करतें पुप्पिम्म किंचर पुविरमिहिं ।
कमगु देसु को परपर मुंजर महहि बहुठपगु किं कुमार ।
मिच करहिं मरोसिहसम्नु कसरसहियहिं वेपाह ।
पमपोर पामें वपराहिउ पत्प महीपर अणवपराहिउ ।

---

१ MB हा मिह. ० MB सर बहुर M करकप्प; B करकरह ३ MB पाहिर १ B तेप. ११ G4.
20 १ MB हि. २ BK सुपर ३ MBT पेहहिं GE rooon ४ पेसहिं हवि परमेपन- वेमापं; T देकहिं हवि पवेम्पसमेपर्ष ४ MBK °पहिं. ५ MB महामिरहु; G महमिरम्म

---

7 a चिरचारिउ हरमिता 9 a पुरमतिकर कमिरमा 18 b महपवहुल पहिलेप एवा.
20 5 a बहुसिविहि बसरपो (?), करहिं कुमेप. 8 b मणवपराहिउ महपरपसहिय.

जो आवइ णरु वट्टपरिक्खहि सोलहखयरणरेसरसिक्खहि ।
उज्जलवण्णउ णवलायण्णउ सो परिणेसइ सोलह कण्णउ ।
गय अणुयर णियणियरायंतिउ कुवरें अग्गइ गमणु जि चिंतिउ ।
मेहविमाणसिहरि जोएप्पिणु भूयरमणु काणणु मेल्लेप्पिणु ।
थक्कु महाणयरहु वहि जाम्वहिं अवर वि वुड्ढ पराइय ताम्वहिं ।
घत्ता—जरकसरसिरइ लंवियथणिइ आवेप्पिणु थेरणियंविणिइ ॥
हउं रीणी माइ किं पि चविउ कुवलीहलपिंडउल्लउ थविउ ॥ २० ॥

21

पसिढिलचम्मछिरोलविवण्णी तरुतलि तासु जि णियडि णिसण्णी ।
णिववालहु केरउ सिरिमाणणु दिट्ठउ ओहल्लिउं कमलाणणु ।
छुहतण्हापहखेए खीणउं अगु णिहालवि णिरु विद्दाणउं ।
तिण्णि तिसाछुहपहसमणासइं दिण्णइं वोरइं अमयाभासइं ।
प्पोसियाइं सुहयं रसेणिद्धइं वीयइं चीरंचलइं णिवद्धइं ।
वसुवालहु जाइवि दरिसेसमि णियपुरणंदणवाणि पइरेसमि ।
इय चिंतंतु जाम सो अच्छइ णियबंधवसंजोउ णियच्छइ ।
ता वुड्ढइ कुंदुज्जलदंतिइ देहि मोल्लु भासिउ पहसंतिइ ।
महु फलाइं किं मुहियइ भक्खहि वयणु केम णिल्लज्ज णिरिक्खहि ।
चवइ णरिंदु असच्चु ण जंपमि जं मग्गहि तं सयलु समप्पमि ।
जइ आवहि तुहु णयरु महारउ तो णिहणमि दालिद्दु तुहारउ ।
कवणु णयरु को तुहु कें जायउ भणइ थेरि भो इहं किं आयउ ।
घत्ता—त णिसुणिवि भासइ चक्कवइ पुरि पुंडरिंकिणि दिण्णरइ ॥
गुणपालु राउ तहु तणउ सुउ वसुपालहु भायरु हउं लहुउ ॥ २१ ॥

---

६ MB परिणइ सोलह णिवकण्णउ ७ MB गय णर णियणियरायह मतिउ, T अणुयर ८ MB °सिहरु
९ MB तेण चविउ

21 १ MB पसढिल° २ MB °विराल° ३ MB ओहल्लउ, K ओहुल्लिउ ४ MB पासियाइ
५ MB रसविद्धइ ६ MB दसेसमि ७ MB किं इह ८ MB सक्कवइ ९ MB दिण्णरुइ १० MB गुणवालु
११ MB वसुवालहु

---

11 *a* °राय तिउ राजसमीपे 14 °कसर° पाण्डुरा

21 1 *a* °विवण्णी विरूपा. 6 *b* पइरेसमि वप्स्यामि

22

जगि सिरिपालु णामु जाणिज्जमि
मायाहरिवरेण पराणिउ
गुरुविमोयसंतावें णिडिउ
जइ मायरु णिहणमि ता अंगमि
मयरु पुत्तु मो तुहुं पर दीसउ
कापुरिसियउ बंधिवि सयणउ
परलोगेण तुहुं वि किं काणहि
तेरउ पुत्तु महियलइ मणोमउ
पहिय इसिणु सरिमियइ जि म मासहि
जाइ एउ सा भणिय महासें

सुरचावायरहिं गाइज्जमि ।
खोहयिप्पहिं अमेमेहिं आणिउ ।
सच्छमि एतु घुरुडुंठिउ ।
मं तो णिच्छउ जमउरि पावमि ।
पुत्त सहावें होसि ण पावउ ।
कवणें रावें तुहुं मणु रावइ ।
अप्पाणउं परत्थु पयासहि ।
कहिं तुहुं कहिं सो तुज्झु सहामउ ।
मइ णाहितहि णाहि विणासहि ।
आसिउ येउ पाणिसंकासे ।

घत्ता—णयरहुविरि पणविपपुरउ
आसणी तहु गरुअंतरउ ॥
जाणिय तेण वि मायाविणिय
तइ एह पयरि मयणें कणिय ॥ २२ ॥

23

कहइ कुमारु म मउद्दउ कामहि
कायंपयण किं पुत्ते आहण्णइ
ता जरउ विमुद्धउ कण्णइ
मो मो विसुणि णरेसर णिवडउ
तसु णायवच्छहायमहीहर
एउ अइंपरु विज्जाहरवइ
णामें हउ भुवणपाल पसिद्धी
महयरणाहहिं सिद्धिणि मणिहउ

हा हो कहिउ मई केरिपाकहि ।
सम्भावण मुणि एवं पिण्णइ ।
वरतउ कोमलसामलवण्णइ ।
पुव्वविदेहइ वसुमइ पुण्णउ ।
तहिं रायउरि वसइ करिकरयरु ।
समिणइ गेहिणि पुण हारावइ ।
सा ण विज्ज वा महु पउ सिद्धी ।
मइ विज्जाउवपु णिवडउ ।

22 १ MB सिरिपालु २ MB बोल्लेमहि ३ MB पुत्तु तुहुं णयर दीसइ ४ MB णिव ५ MB °दीसइ. ६ B जाणहि. ७ MB °सहसि

23 १ MB कणिपाणहिं; T करिपाणहिं २ MB कयरइ ३ MB णिव ४ MB पुत्त ५ MB रायउरि णिवसइ ६ K सिद्धी.

22. 10 a जाय वर ठाणि पाणि तहु 12 b भणिय मतिया.
23. 1 b करि पाणहि कम्मा 2 a कयरबेन कैकेय करेय

को वरु ताए पुच्छिउ जइवरु तेण वि कहिउ तासु चक्केसरु।
अवरु वि णिसुणि देव तुहु सुहहलु कच्छावइवसुहहि रयणायलु।
तहि मेहउरइ मयगलगामिणि कंपणु खगवइ घरिणि विमाणिणि।
ताहं पुत्ति चप्पिल महु पियसहि णं गोमिणिरमणिहि वट्टइ महि।

घत्ता—अवलोयवि तुज्झंगुत्थलिय सा तोएं तिम्मइ कंचुलिय॥
डज्झइ विरहें वेल्लहल किह दवदहणें अहिणववेल्लि जिह॥ २३॥

24

घरु गइयहि मुहणिग्गयवायइ महुं अक्खिउ तहि तणियइ मायइ।
को वि आएसपुरिसु तहु मुद्दिय पेच्छिवि सुय मयणेण विमद्दिय।
बालवयसियाइ ण विकंप्पिउ मज्झु वि ताइ सहियउं समप्पिउ।
मइं धीरिय सा ससिरयराहिं मेलावक्कु करमि सहु णाहिं।
चामीयरपुरवरि हरिदमणहु मयणवेयसीमंतिणिरमणहु।
तहिं जि देसि अण्णेक्क वि सुंदरि मयणवइ त्ति दुहिय विज्जाहरि।
जणणहु पुच्छंतहु रयणुज्जलु जें जोइहिं भासिउ हयहिमदलु।
आणिउं पेच्छवि तेरउ कंचलु वियलिउ तहि तरुणिहि मणि दिहिबलु।
सूहव तुज्झु विओएं पीडिय चिंतावक्कें सा वि भमाडिय।
कंदइ कणइ विमुक्कुत्तंसी दुक्करु जीवइ मज्झु वयंसी।

घत्ता—तं तेरउ पेम्मपरव्वसइ उद्दामकामकीलणरसइ॥
सहिहत्थहु दीणइ मग्गियउ पगुरणु मइं वि आलिंगियउ॥ २४॥

७ MB तुहु जि ८ MB रयणायलु ९ B गोमिणिहि णवल्लवल्लइ महि

24 १ MB घर २ MB अमु. ३ MB वियप्पिउ ४ MB सहिउ ५ MB सिसिरयराहें ६ M तेरउ पेच्छिवि, B तेरउ पुच्छिवि ७ MB मण° ८ MBT विमुक्कवयसी, G*p* विमुक्ता तेसीति पाठेऽप्ययमेवार्थ, K*p* विमुक्तसीति पाठेऽप्ययमेवार्थ, T विमुक्तत्तसीति पाठेऽप्ययमेवार्थ

12 *b* गोमिणिरमणिहि लक्ष्मीस्त्रिय 13 तोए प्रस्वेदेन.

24 3 *b* सहियउं स्वहृदयम् 4 *a* ससिरयराहिं चन्द्रसदृशेन, *b* मेलावक्कु मेलापक 10 *a* विमुक्कुत्तंसी विमुक्तावतंसा

25

तुहुं परमप्पिउ तहिवबकसरे | पय पणमिउ अरहंतपियरें ।
हर्ड भड पत्तिपंति गय तेत्तहि | तेर्पी मयरि मराहिव तेत्तहि ।
पसेकुबकपसीघोहमसंबद्ध | पयहिं पहिय गुणपोमिसविबद्ध ।
सअवमयवामंदक्ष्मयेरउ | पुच्छिउ सो आयमतु तुहारउ ।
तेण पवत्तउ सिसुमूमीसर | सत्तमि दिवि आवत मामासुर ।
पिआवाहें सउं घरि पारसा | पुरयणु सपत्तु किं पर वि भामा ।
विहुन तुरे मायद मणिकुंडल | दिहो मायरि सोयविसंठुल ।
सुरमहिहरसमीवि विपसंतं | हा सिरिपाल देव मयंतं ।
कंदंतं विसुमहिरकेसरं | विहुरं परिवमसयणसहासं ।
पभोइ पासिहिहि पुरि सइयणुं | तुहुं मिलिहीसि मराहिव जाणइं ।

घत्ता—मरहरु गयें गय वि मयामयउ
मो वहइ पई पलोयण विणु | गणियारु कार्ड यमदेवयउ ।
जमसंकुलु पडहु कार्ड वणु ॥ २५ ॥

26

गिरिसिहरिसिहरिपचसपरं विपंतिह | जमदावासहिं पई जोयंतिह ।
दिट्ठी मगविपच्छि जोयंती | पंडुपंकनुम्मिवासपवंती ।
विसुवेप तुह पियों सोसिय | मरणमणोरह मई मग्गीसिय ।
जइ तुह पियसंजोउ ण संभमि | तो विझाहरपहु ण वंभमि ।
णियमाणयणि किसोयरि जावहि | सप्पउ मा ससिमंमि दिमावहि ।
मोयवहि केवी विपसिमपय | तरुणारिघिय सारि तहिं वि समाययं ।
कवरउं ताह नपंसिर विहुरु | मतु वंदु मिसि मवणि पाइउ ।
विमाउ पुणु आविउं कुम्मिसपिकरं | जिणपुत्तमउ पच सव्वयदे ।
संतिमत्तु समणहिं सुमरेप्पउ | सिवहरु विणयविकर करेप्पउ ।

25 १ BK परार° २ MB मिथ° ३ MB तुम्मल° ४ MB मि. ५ MB अमर एव ६ MB °विहुण ७ MB णिरिक्ख देव पसंतं MB मिरि. ९ MBK कन्तं १ M मवमिलमानइ, B मम मम वि मयामयो

26. १ MB °परिमपय समयिह २ MB मंजीमिय.

25 B a र व वु म म ई° मग्ग एव कुम्मणानि.
26. B b म ण्णी वि व मावमिना B c मि या म हि हिमम. B d म र र इ इत्थी

घत्ता—अवरहुं कण्णहु अवरउ सहिउ   अवरहु वि लेहु सुहइ सहिउ ॥
भोयवइहि तुहु सहि गउरविय   इक्कारी तुंह हउं पट्ठविय ॥ १६ ॥

27

एम कहेप्पिणु गय सा सुंदरि   हउ आरूढी सिरिसिहरुप्परि ।
मणिमयकुंडलमंडियकण्णउ   दिट्ठउ तहिं काणणि छक्कण्णउ ।
सत्तावीस जोयणवत्तउ   भूगोयरियउ पिय तुह रत्तउ ।
असणिवेयखयरें वणि घित्तउ   मइ कारुण्णएण मृगणेत्तउ[1] ।
उच्चाइवि णियपुरवरु णीयउ   अप्पियाउ णरवालहु धीयउ ।
हउं पइं दोदियहइं जोयंती   अच्छमि खगणयरेसु चरंती ।
जाम ताम तेरी वित्थारें   कहिय वत्त हरिकेउकुमारें ।
एत्थायइ तुहु मइ अवलोइउ   मयणें पचेमु[2] सरु मणि ढोइउ ।
कंचुइरूउ देव मइ धरियउ   पिंडउल्लउ कुवलीहलभरियउ ।
जाणिओ सि [3]णेमित्तिकियवें   कहिय पुंडरिंकिणि[4]पुरचिंधें ।

घत्ता—इय भरहणरेसरकिंकरहो   जयरायहु तिजगभयंकरहो ॥
कह कहइ पुरंधि सुलोयणिय   वरकुंदपुप्फदंताणणिय ॥ २७ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे विज्जाहरकुमारीविरहावण्णण[5]
णाम वत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३२ ॥
॥ संधि ॥ ३२ ॥

---

१ MB हउ तुंह

27 १ MB मिगणेत्तउ २ MB पंचमसरु ३ MBT णेमित्तिणिवंधें ४ MB °पुरि° ५ MB °विरहवण्णण

---

27 10 *a* णेमित्तिकियवें नैमित्तिकानामादेशेन

XXXIII

सम्मोमहिसामत्तु तरुणें तेण पमाहिउं ॥
मयणें सुहावयार पिपघुणु विणासिउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

संसाहियविज्जाहोसखेण कोमलकरयलसंफासणेण ।
अहामकामकामसमहि विहुणियउ कराहु सुहावहि ।
केण्णि वि तारुण्णालिंकियाउं पागकणार बणपाउं जोसियाउं ।
गुरु देउ महारउ मणिग्णु गुरुं भजपावि सयमेव विहु ।
विज्जाहर पिसुण हणंति जेम ण करेमउ पउं वि ण मउं वि तेम ।
मइ कंचुयवेसहुवारिणीहिं पाइ कंचर चे सुरवारिणीहिं ।
पहि धेरउड सुविविलहृहु भावहि जाउं तं सिरमहृह ।
तहि धोसिहोर पीवरथणीउ मिकिकिंति कजु गुरु पवरणीउ ।
कंकेलिवासमहणमुपाउ भयकोपहि वेयरवासुपाउ ।
ता कंपावेवणु कियउ तेण सा विज्जुवण अविय पहेण ।
वहोंपिवि गुरिउ भईमयंतु कंपंतें विवहरंगवंतु ।

घत्ता—वंदिउ तिहुयणणाहु पोत्तसयउं वण्णुहं ॥
विण्णि वि गुरुं त इं गुहमाकहि वणिहुउं ॥ १ ॥

MB gives, at the commencement f this Sandhi the following stanza—

विमलहुरवासवासी हरणे रिसगुणि मवेण ।
जय तय वोम्मलक्षणायुवसारी भवणि सण्ण (मण्ण !) एव ॥ १ ॥

GK do not give it.

1 १ MB णवसेण, २ MB वसह, ३ MB सुरवारिणीहि ४ MBT धोसीण ५ MB
वेयरव

1, 4 वइ एवैलाहि—वहमयण भीवण तस्स कामे केणे महिवंता सा तस्सा. 8 b विहु
विहु 8 b व हु मणोन्त 10 a धोहहीब वखा

2

भोयवइ भडारी विज्जुवेय तहिं दुक्की वप्पिल णिरुवमेय ।
मयणवइ समागय मयणलील रइरमणिहि केरी णाइं कील ।
अण्णाउ मणोहर[1]वण्णियाउ कण्णाउ अट्ठ अवइण्णियाउ ।
जरसरिधुयसिरकेसासियाइ कुं[2]यरिहिं थेरइं संभासियाइं ।
अवलोयवि तरुणिहिं तणिय रिद्धि पुणु कंचुइ थिउ विम्मंतवुं[3]द्धि ।
छंडिवि[4] जरत्तु जाणियमईइ णियसिरि दक्खाविय सुहवईइ ।
थिय पुणु पच्छण्णी सा कुमारि दुलक्खचारु होएवि थेरि ।
वरइत्तु ताइ दंसणरयाहि भूभंगें दरिसिउ तडिरयाहि ।
ताइ वि वोल्लाविउ पिउ[5] अणंगु मायाजराइ पच्छाइयंगु ।
भोयवईइ तहिं पारद्धु हासु वुड्ढहु उप्परि पेम्माहिलासु ।
हलि असणिवेय स[6]सि काइ कराहि लहु णवजुवाणु वरु को वि वरहि ।

घत्ता—ता खयरं[7]रायसुर्यां[8]हिं वंभु महेसरु अच्चुउ ॥
णिरलंकारु जिणिंदु सालंकारहिं संथुउ ॥ २ ॥

3

रत्ताहराहिं भवसयविरत्तु चंचलचित्तहिं गिरि[1]थिरचित्तु ।
विरहें तत्तहिं तवचरणतत्तु मृ[2]गणेत्तहिं झाणणिलीणणेत्तु ।
मज्झें खीणहिं संखीणपाउ थद्ध[3]त्थणीहिं णि[4]त्थद्धभाउ ।
कुडिलालयाहिं अकुडिलमइल्लु जणमणसल्लिहिं णिम्मु[5]क्कसल्लु ।
णहचारकमियमदरदरीहिं वंदिवि परमेसरु सुंदरीहिं ।
आहिंसेउ कयउ पुज्जापयारु ता वर्कं[6]गीउ णामें कुमारु ।

2 १ MB मणोरम° २ MB कुमरिहिं ३ MB विसमतवुद्धि ४ MB छड्डिवि ५ MB सो जोइउ ६ B सस, K ससे ७ K खगराय° ८ B °सुयहिं

3 १ B omits from गिरि° down to मृगणेत्तहिं inclusive २ M मिग° ३ MB थड्ढ° ४ MB णित्थड्ढ° ५ MBK णिम्मुक्कु ६ MB वक्कगीउ

2 11 *a* ससि हे भगिनि

3 1 *b* गिरिथिर° अतिशयेन स्थिरम्

संपत्तउ साहुं पियपरिचत्त पेरेण पेरि पुच्छिय अरेण ।
माहरत्तपिहेसहिं पिप्फुरंतु किं आर्विउ पवमिमउ तुरंतु ।
ता हसिवि पउत्तउ कंचुइत्र के के ण वि हय किअरवाइ ।
इय मोयपंति पुरि तिसिरिरउउ मिप्पसाइ उपेहइकंतसाहार ।
सुय तासु पहावइ णेहु पुत्त सिहि णामें गुणमंडणें पिवत्तु ।
एवहिं रयणिहिं कंबंतमाणि बहुसविवि साहरेड मसाणि ।
पिरउउ पिआइ कोडमारमंगु अरणं कंपाविमउं णंगु ।

घत्ता—मावेप्पिणु पवणण मिसए मेसहु सिप्पउं ॥
बहुंतउ अरसिंगु रयणकुमारहु पिप्पउं ॥ ३ ॥

4

पउ फिहइ कंठहु पंकमार भावप्पिउ अरणें वीयराउ ।
फिह होसइ सिसुपर्वकरयुपणु तं पिसुणवि अरपाइया पउइ ।
समोसरहि सिरुहइ सुपणि आसु गुरु पुच्छि पहावइ पियणमासु ।
करफंसें तहु अवेसरासु होसइ सुपणीमोमेमचासु ।
भावेसइ सो जिणणाहणीइ मामेण पसिग्गउ सिरिहूइ ।
तहु णियसहु अमिपि मरुसमेरु अयरइ पहु सयरिउपिकेउ ।
सो आसइ कंपरमंगुरत्तु सो मुंजइ कम्मादि उपहं वधु ।
मम्मेवु मरइ मंकहु हपारि ता पमणइ वीरें पचोसणारि ।
किं कम्मइ किं वेसेण मज्झ धम्मेण करमि सामेत्थ सज्झ ।
ता वेज्जें वेज्ज पोसिउ णिवेणे आगा सुव हो मणसिउ णिवेण ।
णहिणीइकरणें पिसु णाम गडेमोहि पत्ती तासु ताम ।

---

७ M कमउ MBK सिसिर एम ९ MB तिणाह° १ MB सिर ११ MB °मंसु.

4. १ M सिसुणु णसुणु २ MBK णीसा° ३ MB सारुवहु ४ MB णीर. ५ MB सामसु वसु ६ M सिसु सिसु, G वेसु वेसु but gloss वैद वैद ७ MB णिवेण ८ MB करमह. ९ MB णमोमिय सिसिर

9 b वर्देह आसिस्नेर. 14 मित्रसहेदेन 15 बहुसत बरसिंह मर्मसान ज्वरन मिशम्.

4 8 b तरतिर मिवेन चारीरपुसिमतात शाल 9 b दक्ष चान्यम् 10 b ब्रातर च बीत ज्ञान. 11 a नदी भाई° क्षमाकर्तेन.

गउ मंदिरु तणुरुहु सरलगीउ　　अवलोयवि सुद्धु पैइट्टु ताउ ।
परमेट्ठिघरंगणसंठिएण　　परकज्जारंभुक्कंठिएण ।
केण वि कंचुइणा वाहि महिय　　इय मत्तिहि वत्त पवित्त कहिय ।

घत्ता--विरइयकवडजराए ढकियणवचयकायहो ॥
चलिउ तुरिउ णरिंदु पासु तासु जामायहो ॥ ४ ॥

5

छुडु छुडु करि चोइउ दाणवासु　　जिणहरु छज्जीवदयाणिवासु ।
अवइण्णउ जाम खगिंदु तिसिरु　　सुहिसुहदंसणु पाणीयतिसिरु ।
ता मायाविइ वचणमईइ　　णिउ सुंदरु णावइ मउ मईइ ।
पियजीवधणरक्खणमईइ　　मणिवाविहि णिहिउ सुहावईइ ।
पलट्टउ तिसिरु अपेच्छमाणु　　जलहरवहजववाहियविमाणु ।
एत्तहि मुद्धइ अहिणववरासु　　तडिवेयायारु णरेसरासु ।
करसाहाणिहियइ मुद्धियाइ　　कउ माणवणयणविमुद्धियाइ ।
गय एत्त सुहावइ अवर का वि　　णामेण सुहोदय जेत्थु वावि ।

घत्ता—णवइंदीवरणेत्त रायहंससहवासिणि ॥
पाणियवत्थअियत्थ सोहइ वाविविलासिणि ॥ ५ ॥

6

कण्णउ इक्कारइ जाम तेत्थु　　जलकीलहि देंतिउ कमलहत्थु ।
तामेक्क वि तरुणि ण दिट्ठ ताइ　　गइयउ सरु परियाणिउं इमाइ ।
एत्तहि राएं उद्दामतेय　　अप्पाणउं दिट्ठउ विज्जुवेय ।

१० MB मदिर तणुरुह　११ MB पद्दिट्ठु　१२ MB जामायहो

5　१ MB °दयावपासु, T ° दयाणुवासु　२ B अइवण्णउ　३ M सुहसुहदसणपीणीय°, B सुहिमुह-पाणीय°　४ MB °धम्म°　५ MB° विमुद्दियाइ

10 जोमायहो जामातु .

5　1 *a* दाणवासु मदवर्प, *b* छज्जीवदयाणिवासु षड्जीवनिकायेषु दयाया निवास　2 *b* °तिसिरु सतृष्ण　3 *b* मउ मृग, मईइ मृगया　5 *b* जलहरवह° आकाशम्　6 *b* तडिवेयायारु विद्युद्वेगरूपम्　7 *a* करसाहा° अङ्गुली

अवणियउ समाइण्णंगुणीउ णियरूवधारि पिउ मंतु णीउ ।
तो तहिं अवसरि तहिं वडियारु किं सुहउ हरणु पेरडियारु ।
णयरकुसिसिरिविंपणगामिणीए सुसुंदराईए मह सामिणीए ।
अवरमवणकजसंकेरणाउ इह णागवरधीयउ णायणाउ ।
मसिणुविपगयंडविपयपणाउ अम्बत्तहिं कम्पइ जहिं गयाउ ।
तहिं गय हउं णिहिय समीवि गुम्मु भवइ वि णरिंद वञ्चपमि गुम्मु ।
कण्णाकावपि मण्णइ पईति मसमअसु सुंहे परं ते वइंति ।
पडउ जाणिवि मइ ताणियाए सम्मसिमाहसमाणियाए ।

घत्ता—धत्थि बारि लयरिष ताएं जांयु वक्खट्ठिउ ।
मंगुरयणियर जाइ तुह सेवडु पहाट्ठिउ ॥ ६ ॥

7

जो सा जायइ तहु तहु पसाहि णियतणुसरिच्छससिसियजसाहि ।
विवेअसु भजु महाणुभाव वंवेअसु पिसुण सेवुरणाव ।
सविमाणविरविणणविविहरूउ पत्तंतरि पवरु असणिवेउ ।
ससहोयरिरूउ विहारमाणु पउ सो जोइय णरमाणुमाणु ।
खेयर तहिं पवर वि वउ मुवंति महु महु त्ति वहिणि सपक्ख वि मवंति ।
अण्णेक्क भुविणयपंकयण ताणिवाउ तहिं कुसुमंबयण ।
सुपयिद्धिमरिड्ढिमभूरयण गय णयरें रुपणाउरुपण ।
णहणसोलवरव्वावएहिं मंं वि इउ अप्पणु ओणएहिं ।
विणु मुहेर कण्णा वि पुरिसरयणु सवहु जड मासमि अविवयणु ।
जं वजावि गुणवंत साहु गंमीरु धीरु रिउ सोमराहु ।

6 १ MB तो २ MB °णिमिस° ३ M हणतम्मेई ४ MB °मणुणि° ५ MB पुर
६ MB मणु ७ M कुम्ज; B छम्म
7 १ M वणुरमाण B णुरमाण T नणुरयण २ MB मुहेर.

6. 4 a मवणियउ वमलोण सेविना, मवाइण्णंगुणीउ माइरम्मत्ति गुणिया 6 a °णिमि-मयं° पाठ

7. 2 b वइयरउगड़े वणुरणये 4 b णरमाणुमाणु दोमानिलमिलाणा. 6 b कुसुमंबयण माणिवेन. 7 a सुपरिड्ढियरिद्धि मभूरयण बोधीन लियस्सेण पीतिलो भोयणे मतर्व रोभ राजपुरेण नवग्न्वेण

जो अग्गइ होसइ चक्कणाहु   णिच्छउ सो पट्टु सिरिपालु पट्टु।

घत्ता—धम्मारूढगुणग्गि जो आरूढउ भावइ ॥
इहु सो चम्महयाणु णारिसरीरइं तावइ ॥ ७ ॥

8

ता धाइय भड आहवसमत्थ   हणु हणु भणंत हलमुसलहत्थ।
लद्धउ वइरिउ कहिं जाइ अज्जु   कहिं होइ राउ कहिं करइ रज्जु।
इय भणिवि पवेढिउ खेयरेहिं   ण पिउ पुण्णालिहि उत्तरेहिं।
ण सिहरि पलविरजलहरेहिं   ण दिवसु दिवसणाहाकरेहिं।
ण चंदणतरुवरु विसहरेहिं   हम्मइ ण जाम फुरियाहरेहिं।
जोएप्पिणु सरवरु सारणालु   हंसीमुहचुंबिय सिसु मरालु।
कण्णउ गयाउ कीलवि समत्त   सा पियवयंसि मणिवावि पत्त।
अवलोयवि रिउसेणावियारु   थालइ अहसणु किउ कुमारु।
णउ दिट्ठु तेहि सो तेत्थु केम   अण्णाणिएहिं सव्वण्णु जेम।

घत्ता—उच्चाइवि परिहत्थु अहिणवकंचणवण्णइ ॥
पुव्वुत्तइ जिणगेहि वरु सणिहियउ कण्णइ ॥ ८ ॥

9

करिणि व्व कहिं वि कीलीवणासु।   गय सुंदरि णियणिहेलणासु।
णियमुहसोहामियचदकंति   पेच्छंतउ फलिहसिलायलंति।
धरणीसु ताइ मुद्दाइ रहिउ   ण कामु कामकामिणिहि महिउ।

---

३ MB होहइ   ४ MB सिरिवालु   ५ M धम्मारूढु गुणग्गे,

8 १ MB आहवि समत्थ २ MB पलविय° ३ MBK दिवसणाहह ४ B अण्णाणिइ हिंस ण एहु जाम ५ B पुव्वत्तइ

9 १ MB णियमुणिहेलणासु, २ MB णियमुहु सोहा°

---

12 धम्मारूढगुणग्गि धनुष्यारूढस्य चढितस्य गुणस्य दोरस्य अग्रेतनभागे
8 10 परिहत्थु शीघ्रम्

मयरद्धपाय वण्णिउ खाइयय परिवाणियउं छज्जयमाइयय।
पुणु सा धरिउ गुणपायवयड जो पणयजीहि संजणियपयड।
जो णिम्मर वेवेहि परिविभेय जो दुरियपसंजणकामधेणु।
जं पढइ समुग्गउ धूमकेउ इय णिसिवि धाइउ धूमकेउ।
णियपंगणोड णयणीरणड उणियत्तउ गरुडे जाउ णाउ।
णिउ रिउण्ण रसियायवणमीणि कायरीविहि णमियणीसमीणि।
वाळण्णयगुरुहि कायाविणाणि णिग्गउ हरिवाहिणिसेणविसि।

घत्ता—वाहिणिंसरयाणंमि जयसत्तोण विवज्जिउ।
सेणाहि वाहु णिसण्णु कामसुरंगे पुज्जिउ ॥ ९ ॥

10

वसिरायपुरवरि हेमयम्मु तहु णियहिं भासिउ ताहु धम्मु।
जिह धरिउ सेणि जिह धरिउ णाउ जिह णिग्गउ पयउ धूमकेउ।
जिह णिउ परवरु मण्णत्थु हु ति जिह केम वि ण मुणिय पुण वि थत्ति।
जिह णिसुणिवि वसिरायपुरेसु किंकरहुं कुरउ किं णियउ णाहु।
जंड पणिवाउ किं मायसपुरिसु किं आवेणिउ महु हाणु हरिसु।
तावेत्तहि रायपुरस्सपण वण्णिवसंतुणयं छुडयण।
वंदुहरि णिसिहि तमजाळमणीमि पेयाहरु पडु णिसिण्णु मणि।
ताणिउ धम्मे पुणु मोग्गरेण पुव्वाहिउ पउ णिग्गरु वरेण।
पउ णिहाउ सहुँ सण्णहेण पउ सजउ पउ एक्कासणुमेण।

घत्ता—णिसउ सकाणि वजंति तहि णि पणिहिउ अविसहु।
जियपयपोमरयाहु जम्मि णि आयउ सीयहु ॥ १० ॥

१ MB पुष्फर्ण° ४ B °पसर° ५ B वेसवाहि ६ B वणियवयउ ७ MB दाहिणि MB णियणिउ
10. १ B णि एणिवाउ २ MB °सहएण.

9 4 a वायवइन रसोण 9 b °धीणपणि° मगुरे. 11 दाहिण° अनुरजन.
10 10 वव णि ज्जणे वडी

11

जिणु सुमरतहं सीहु वि ण खाइ विसदुम्महु फणि संमुहु ण थाइ।
असिघडणहुयवहुग्गमियजालि ओवडियसुहडसगामकालि।
जिणु सुमरतहं रिउ थरहरंति धीरें वि पच्छाउहु ओसरंति।
करडयलगलियमयजलपवाहु गुमुगुमुगुमंतचलमहुयरोहु।
धावंतु एंतु गिरिवरसमाणु उरि देंतु वेहुं वद्धयविसाणु।
रयपिंजरु कुंजरवरु वि खलइ जिणसुमरणंकुसंकुसिउ वलइ।
वणगलियरुहिरें करसडियणास अविणट्ठकट्ठकुट्ठाविसेस।
खंयखासजलोयरजणियसोय जिणु सुमरतहु णासंति रोय।
णित्थाहसलिलि सरहयदियंति करिमयरमच्छपुच्छुच्छलंति।
माणिक्ककिरणमालाविचित्ति कल्लोलंदोलियजाणवत्ति।
जिणु सुमरतहं जलयररउद्दि वुड्डिज्जइ ण कयाइ वि समुद्दि।
जिणु सुमरतहं मगलइं होंति पयसंखलवलयइं परियलंति।

घत्ता--सत्तु वि मित्त हवंति विट्ठि वि भल्लउ वासरु॥
जिणु सुमरतहं होइ खग्गु वि कमलु सकेसरु॥ ११॥

12

णीसरिउ हुयासहु अहयपिंडु सोहइ णिउ णं सोवण्णपिंडु।
आसीणु सिलायलि रायहंसु णं भिसिणीदलयलि रायहंसु।
अइयलु णामें पुरि वसइ तेत्थु विज्जाहरु विज्जावलसमत्थु।
णं वम्महरायहु तणिय सेण तहु घरिणि कुसीलिणि चित्तसेण।
मुहकुहरुग्गयफरुसक्खरेण सा सइरिणि णिसि गरहिय वरेण।
आगय पिउवणहु तहिं णिभाणु दिट्ठउ सिहि मुहणिग्गच्छमाणु।
चिंतिउ अणाइ जयलच्छिगेहु ण पलित्तउ एयहु तणउ देहु।

11 १ M सुमरतहु, B सुमिरतहु २ MB वीर ३ MB पच्छामुहु ४ MB °वरमहु° ५ MB लोहयदड ६ MB रुहिरु ७ MB खरखास°, G खरखाय° ८ MB °सलिलसरसय° ९ MB परिसखल° १० MB परिगलति

11 2 *a* असीति—असीनां खड्गानां घटनात्परस्परसघटनात् उद्गमिता निर्गता ज्वाला यत्र 8 *a* खय° क्षयरोगः 9 *a* °सरहय° जलेन हता 12 *b* पयसंखल° पदे शृखला

जं तं होयवउं कारणेण काई मे संबंधवियारणेण ।
इय भणिवि मउलिय कोडलएण तहिं सा पविद्रु णवरायएण ।
कउ मुद्धी आणाकारिएण सव्वोसहिरससहयकारिएण । 10
णीसरिवि णिसण्णी णियहु पासि मयरज्झउ ता पिउवणनिवासि ।
णरवइ णेहिविवरणपवहरिउ हूई मंद्रुसि पिसुणेहिं भरिउ ।
णावेहि कंति णवणु णिवेउ ता णवर पुत्ति संभरिवि हेउ ।

घत्ता—हकारहि णियवंधु वीडुं घरेप्पिणु मज्झमि ॥
पसेइत्थममेयेण माणिय केणिउ मज्झमि ॥ १२ ॥

13

ता महिसारइदंसणमणेण मेरुत्तिय पंथण भारवणेण ।
रणविद्धी सहरिणि घणघणंति दुव्वेवहि दूसहि णिहणंति ।
मा तेण ण सुद्धी कंड वि केम मायाविणि वेस कंडेण केम ।
वहिय खोणय महासईहि दुपउ सिवि मीणउ सुहमईहि ।
दुण्णारिणिचरिउ णिसण्णमाणु पविपण्णइ रिउमहिरकहिसाणु ।
णिमेणाभासीतु को संपयाइ पारद्धिउ को सेविउ दुपाइ ।
मणु सोसिउ रायपंसाय काहु समरत्तु वि कं वि वडइ दुणाइ ।
वसणेण ण खिउ को कणि णिरत्तु मसईयणें वंचिउ को ण पत्तु ।

घत्ता—अविवंचिउ णारीहिं माहियलि को वि ण दमइ ॥
मयपुप्फयंतेहिं पेप्पंतउ मणु णिद्द रमइ ॥ १३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णिवाइपीमायापवंचणो
णाम तेत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३३ ॥

॥ संधि ॥ ३३ ॥

12. १ MB णि २ T वेउ ३ MB तउ ४ MB असहायमणमजुं
13. १ MB °इसणिमणेण. २ MB दुव्वयणहि णिहणंति. ३ MB कहि. ४ MB णिवेण ५ MB णिसण्णलोणु. ६ MB धण ७ M वमण MB णि ९ MB कणि वी. १ MB अविवंचिउ ११ MB वेविउ

12. 1 a वहइ णि दु अणुराणरहिउ. 7 a ण इह अथवा 10 आणा कारिइण अथवा
13 3 b णिहणंति णिकरूणाणे 8 b वेध वेधन. 7 आणिउ सत्ताणा, 10 मदर्र वड्ढमाणकारयो.

XXXIV

सा कवडपईव्वइय आलुचियवय णियपियभवणि पइट्ठी ॥
कामिणिमणहारें तहिं जि कुमारें कण्णपिसल्लिय दिट्ठी ॥ ध्रुवकं ॥

1

जियसत्तु विमलमइ देविसुय कमलवइ णाम सोहग्गजुय ।
विज्जासंसाहणि गहगहिय आणिय पिउवणु ससयणि महिय ।
जियरिउणा सुंदरु पत्थियउ इह तिहुयणि जो जो दुत्थियउ ।
तहु तहु तुहु यधेवु देहि सुयॆ महु तणयहि करहि सणाहक्रियॆ ।
ता तरुणें मतवसिल्लियहि पिसउल्लउ पुसिउ पिसल्लियहि ।
अवरोप्परु हियवउं ढोइयउं दोहिं वि अहिलासें जोइयउं ।
ईसावसेण रूसिवि वरहो गय झ त्ति सुहावइ णियघरहो ।
वुज्झिउ णरणाहें चक्कवइ आणिउ णियभवणहु भुवणवइ ।

घत्ता—पुज्जिवि मणिहारहिं जणियवियारहिं कण्णंतेउरि णिहियउ ॥
तेहिं वि पूयॆ सुद्धहिं रूवालुद्धहिं णियणियमणि संणिहियउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza.-

तीव्रापद्दिवसेषु वन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना
सतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभो सेवया ।
यस्याचारपद वदन्ति कवय सौजन्यसत्यास्पद
सोऽय श्रीभरतो जयत्यनुपम काले कलौ साप्रतम् ॥

GK do not give it

1 १ MB °पइव्वय २ MB यधउ ३ MB सिय ४ MB किय ५ MB °भुवणहु ६ MB पिय ७ MB सुद्दु विसुद्धहिं, B सुट्ठुविसुद्धहिं

---

1 1 °पइव्वइय पतिव्रता, आलुचिययय त्यक्तव्रता 6 *a* सय श्री 7 *b* पिसल्लियहि पिशाचगृहीताया·

2

सत्तुएण मणिउं मा भंदमुह कीरह विमाहमलाणु मुह ।
तम वि तहु वयणु पमाणयर दिवउमउं पंचुविमाउरउं ।
हे माम ताम मरं भेहि तहि वसुणेणु सहायक नमर जहिं ।
तहु मिलिवि थरमि करु सुंदरिहि सुरयरमयवंतरंगहरिहि ।
त णिसुणिवि सत्तुयमणु मुणिउं जियसत्तुं संभिउमणु भणिउ ।
सुंदर कप्पवि बहुमायरयरि कंडु जाहि पुंडरिकिणियवरि ।
ता सुहउ कप्पिणु भमियणेगह गउ पारिसेणु पारिहरणे ।
णिसि णिवर विसइ सोसियवयणु पत्तउ पिमवरसुमयणु ।
जणु सायइं वहिउ लगातिवा जा णिहि वमवगाविहि णिवर ।
ता सुअ णिरिपिंतय तव णिह णिब्भेह विसामिणिविवरीय णिह ।

घत्ता—हुमिणिवेसुणरह धरयउ तम्हह पायसवकार दीमउ ॥
पवसरउणयवाढि पणकोसाहलि जहिं मध्यर मासीणउ ॥ २ ॥

3

विशाहरेण आसासियउ तहि जायवि पहु संभासियउ ।
जाहिंहिवि देव मसेहु मणु मा नीहहि भोयणि सिसिरु मणु ।
इय मणिवि पेयवाहिणि सरियो गउ विहु तेण पाविसमरियो ।
महमविहयहरिउणणिवयहि मणुहरिय सा वि मायाविवहि ।
पयाहिणय रक्खियाव रे मौमिय कण्णाइ सुहावरे ।
पिउ जाइवि मायइ ताडियउ तणहाविकोसु विसमरियउ ।
अवहुं साविमु पिरहुंभरहु मायउ सरसणु सरीयतु ।

2. १ B महुम्भ २ MB णिवउ ३ M वसिमान ४ MB तुं ५ MB वसिय मे ६ M पुणिम°

3. १ MB भायउ २ MB पविय ३ वरिय ४ MB हरिपुण उम्मिवहि ५ MB णिवुम्मा, T णिवम्मारु

2. 11 यामकलवाह वीरसमरोत्पोद्भवोत्साहे विरह मावा०

3. 4 अवईत्ता वि—अविवेन मिलाप हरिणाती यतना यया 6 मानविवर ममसुविलासा 7 निवहुम्मवहु मिमा तहा वधूरा यतना वा 8 वरदेतु जहीन

छण्णइ कण्णइ बोल्लावियउ तुहु केण वप्प वेहावियउँ।
किं पाविज्जइ घरु रमणु पइं जज्जाहि तुरिउ भणिओ सि मइं।
पयहु रिउ दुज्जय अत्थि जइ मा करहि चित्तु अहिमाणमइ।
तं णिसुणिवि सो पल्लट्टु णरु णिविसेंण पराइउ णिययघरु।
सयणह सबंधु समासियउ णेइवाविजलोहउ सोसियउ।
सइ पुहइणरिंदु परिग्गहिउ हउं पत्थु कुमारिइ संपहिउँ।

घत्ता—तहि तणियइ मोलिइ चलभसलोलिइ पहु छुहु तण्ह ण पावइ॥
जसु वरिणि सुहावइ हियवउ रावइ तासु दुक्खु कहिं आवइ॥ ३॥

4

तं णिसुणिवि सयणहिं बोल्लियउ कण्णइ तिजगु वि उच्छलियउ।
सिरिपाल कप्पतरुवरचइहि सामत्थु पयुट्टु सुहावइहि।
पत्तहि णदणवणि सढियउ णरणाहु णरहु उक्कंठियउ।
सुमरंतु सहायहु दुज्जियइ हउ कुसुमहिं मायाखुज्जियइ।
चिंतइ कुमारु मुणिमणमहहु मग्गण पडंति किं वम्महहु।
पेइरत्तइ पुव्ववहुल्लियइ णिद्दंसणरुवु समुल्लियइ।
लक्खणपमाणमाणें मवियउ कण्णासरूउ तहु णिम्मवियउ।

६ MB add after this the घत्ता couplet —

घत्ता—खरतावविमीसें गिंभाविसेसें कच्छवमच्छवहूइ॥
असिलट्ठि व दीसइ किं किर सीसइ णिण्णाणिय णइ हूई॥ ३॥

and number the कडवक as 3 and subsequent कडवकs as 4 etc, upto 13 ७ MB रमण ८ M णिवसेण, B णिमिसेण ९ MB णयवावि° १० MB संपिहिउ ११ MB add after this the following three lines हरिणुल्लउ वहइ ससकु जलु, सजणइ मयिवहु तेण मलु, मुहससहरु मिगणयणइ वहइ, अम्बत जगहि पोढिम वहइ; कय उत्तिम जासु वियक्खणिय, जहिं दीसइ तहिं जि सलक्खणिय १२ MB मालइ, K मालिइ but corrects it to मालइ १३ MBK °भसलालइ १४ M किं

4 १ MB सिरिवाल २ MB पइरत्तइ कामगहिल्लियइ, ता पहसिवि पुव्वसहुल्लियइ

4 3 *b* णरहु वारिषेणस्य 4 *a* दुज्जियइ केनाप्यपराजित 6 *a* पुव्वसहुल्लियइ सुखावत्या, *b* णिद्दसणरुवु निदर्शनरूपम्; समुल्लियइ समायुक्तया

थिउ वि थिवरउ भुवणयरु संथियपरसपरसंभूसम।
महु केण कुमारिएँ ववित्रु थिउ मुहरु पुत्तु किह संमविउ।

घत्ता—तें मई पियप्पिणु महिम मणप्पिणु भूमरमवये मम्मा ॥
पियगोत्तविथावर विम्मि वि मायर विजोहर तहु कम्मा ॥४॥

5

पकहिं मिसिणिहि वा हंसवर पकहिं किसकलियहि दो ममर।
जइ होंति होंतु ण पकर भवर मह संभउ थियउ कुसुममर।
पकहिं तरुणिहि कि विम्मि जण मडकरवमहिं मार्णति मण।
इय चिंतिवि रणु पारंभियउ सुयमत्तणु थिहि वि थिउंभियउ।
सिरिभूमयपहरियाहवइं अंवराणउ कौभूमपहरवइं।
अंतरि गरुयारउ माइ थिउ थिहि पम्माथिभुं रज्जु किउ।
मिठत्तणु विहरइ अंथवइं किं पुण इह मयणई महिवहं।
इय मणिवि मिमारिय बे वि नर पर्वेरायकरवाफकराकरु।
कण्णपहरायहु तयडे घर विपमायाखंपरिजंगसिउ।
ईर्ये हरिं वाद वियप्पियउ तयपाहरि सिहिवें समप्पियउ।

घत्ता—जुवणमयचोरिहिं भणिउं कुमारिहिं मह कासु कि भारप ॥
ता पीवरयणियइ अंगियमणियइ विहसिवि वउ पिवेइय ॥५॥

6

पइ माइ सामिणी महंगुणेहि पुत्तिया पुंडरिंयिणीपुरीवराहिवस्स पुत्तिया।
पत्थ कामवंपइण वार्यरेण माणिया मूपसिंह मुच मूमियोवरी वियाणिया।
हारहारभूसियंगि हारथंबपेसिया अवर म भाउमाउमारिमोयताविया।

1 M सिरिभूयरण°, B संभियरण°, T सचि° 4 MB °रूव 5 B रियारओ
5 1 MB रहोम रणसियणामणं 2 MB कम्मगुरुणमसियलवर 3 M °कुमरिह हयसिर.
B °कुमरिउंपसिर. 4 B रणु रहु थाय रणरिवार 5 B वरइ 6 MB कयमणिमिमिर
6 1 MB पुंडरिंग° 2 MB °भूसिय.

5, 6 b रणु सविभयर. 10 b सि सिव मामाय 12 व मया म सि य ह पजणरेकमा सिवारसिवा.

ताम जक्खदेवएण वड्डिमा वियारिया लच्छिवाल चक्कवट्टि एस णो कुमारिया।
खुज्जिया वि खेयरी सुहावई सुहंकरी ता रइप्पहाइ भासिया इणं मणोहरी।
दक्खवेहि वल्लह विलासभासियाण[3] संगह सूहवं समाणिणी अदीणमाणणिग्गहं[4]।
तं मुणेवि[5] सुंदरीइ एणलंछणाणणो रूवि[6] वम्महो गहीररायरिद्धिमाणणो।
मंतिऊण चिंतिऊण दिव्वमंतसंगमं दूसिऊण णासिऊण णारिरूवविब्भमं।
दसिओ वहुल्लियाण पुंडरिंकिणीवई त पलोइऊण ताण वट्टिया मणे रई।
का वि कामसल्लिया महीयले णिवाइया का वि णीससंतिया घयसियाहिं जोइया।
पंजरत्तसोणिया सहीयणस्स लज्जिया का वि मुच्छिया[7] चलंतचामरेहिं विज्जिया।

घत्ता—इय कण्णतेउरु पेच्छंतउ वरु मयणें उप्पहि थवियउ ॥
भिच्चहि जाएप्पिणु पणउ करेप्पिणु पुरराय़हु विण्णवियउ ॥ ६ ॥

7

जा तरुणी वाला लइ थविय सा अम्हह खुज्जइ[1] दक्खविय।
सा कण्ण ण होइ मरालगइ सिरिवालु णाम रायाहिवइ।
ता खयरकुमार वीरपवर धाइय अणंत इच्छियंसवर[2]।
असिकणयकोंतविप्फुरियदिस वग्गिय मग्गियसंगाममिस।
सुंदरु पेक्खिवि उवसंत किह जिणणाहु णिहालवि भव्व जिह।
तहिं समइ खगिंदु पराइयउ[3] जामाउ सिणेहें[4] जोइयउ।
जाणिउ परमेसरु चक्कवइ संतोसिउ विज्जाहरणिवइ।
सम्माणिउ कंकणकुंडलेहिं वरहारदोरमणिउज्जलेहिं।
तियसाहव[5]जयसिरिलंपडेहिं हरिवाहणधूमवेयभडेहिं।
चिंतिउ दोहिं पि समेहलहिं अम्हहिं किं कियउ समेहलहिं।

३ MB विलासहाससगह ४ M समाणमाणिणीए माणणिग्गह, T अदीण ५ MBK सुणेवि ६ MB रूव°
७ MBK add का वि before this

7 १ MB जक्खइ २ MB इच्छियसमर ३ MB समाइयउ. ४ M सणेहें जोइयउ; B सणेहें पुज्जियउ ५ MB तियसाहिव°

6 6 *b* अदीण° प्रचुर 7 *a* एणलछणाणणो चन्द्रमुख.
7 9 *a* तियसाहव° त्रिदशसग्राम 10 *a* समेहलहिं उपशमवाञ्छास्वीकारेण युष्माभ्याम्; *b* समेहलहिं मेखलासहिताभ्याम्

घत्ता—पिउ कण्णाहणे मायामायँ णिउ णवि पउ संचारिउ ॥
गय णिय पवाणिणि गुरुयणु कुमिणि णरणाह घर पधाविउ ॥ ७ ॥

8

गयविहिणि जं मसहर्दि कमरिमउ | तं केण वि बारि मि ण संकरिउ ।
णणवारि संबयर पुच्छियउ | गुरुं मरिकामार णियच्छियउ ।
पुणपुणि मंत्रामह पुरिसु णिह | णिरंतु गणहु वि वंदहि णिह ।
तं णिसुणिवि तेण णमामियउ | णाणामामोणयर णियमियउ ।
गइ विज्ञाहर णिसमंगिणु | णिद्दंति रमिय मठु सुंदरहु ।
सुरिसुणु वि वयवडिहि हरवि णिइ | मणु काणु ण बमइ पीणथिरु ।
गुणवंति रमावणु मणिमई | मुरवणु सुरवणु मणिमई ।
किं पणमि णिहुपणमुद्दियउ | णिज्ञाणहु तोमुणिमहियउ ।
मुद्दें णामणु ण जाणामणि | दीणर णियमिउ वयसंमुहहि ।
जयणवयर णयणु विरहियउ | णरहु ण हेण पयारयउ ।

घत्ता—गुणु णियमाणंतिणि सीलिणि भीगिणि णिविण तेण सुराणइ ॥
पई णिणु मयणालिए दवि महालिए का एणवउ मह जाणइ ॥ ८ ॥

9

हउं णिक्षणिय मणइ रूव वडि | कि जोवणि कि पुणु मणि जडि ।
दंसियरयणाकियमउडमणि | मों पणइ परिट्ठिय णाहणि ।
वमयड कि सुरहि पुरिसाहहि | जाइसमि हउं गुरु णिउयहि ।
जं मणवि ण कि हरइ करमि | पणणहु वि णवणि संतु मणमि ।

१ MB मम दंसिणि वरिणि
8 ४ M कम्मिरियरा; B मममिरिया ३ MB णरयर ३ B पुरिय ४ MB वण्णिइ ५ MB °णयणु वरिणविइसर ६ B सुरयणु; वि ७ MB वण्णहि; K वणिकिर B वोर ८ MBT पणु णिरिविरा.
९ B पुर तमरहु ११ MB णियरवर ११ MB णिरिणिर; T णहिणि
9 १ MB णिरुणि; ३ MB पुर ३ MB तो.

8. 8 b व णिणहियव णिरुमणिउ, 9 a णामर वंशरा, 11 तरिणि जरिणिसयरिपामणुय जं णि णि णरिहणाणरिणमुणा ण.
9 3 b णहुरण णी णिवणरी, 5 b जो ए पण णि पण णिउरी.

कमलवइहि दिण्णी दिट्ठि जहिं ईसाइ ईस मुक्को सि तहिं।
कण्णाकारुण्णें पुण वि मइं विरहें जलियउ जोयतु पइं।
उब्बाइवि णेंतु णिहेलणउ हरिसेण करंतु व मेलणउ।
हउ णिविसु वि पियमय जइ मुवमि तो किं णिसि णिद्दइ सुहु सुअमि।

घत्ता—इह जणवइ खलसकुलि कयरणकलयलि अण्णु ण णयणहिं पेक्खमि॥
दिट्ठादिट्ठसरीरी होइवि धीरी पइं वि भडारा रक्खमि॥ ९॥

10

वल्लहंतरंगकपण एम जाम जाय पयपण।
माणिमाणवित्थारमंथण सित्थपथसाणिहियमग्गण।
जाणिऊण मयण खलं घण सुदरीहिं विहिय खलघणं।
णहयरित्तिदिब्भित्तिलग्गओ ताम भीमसद्दो समुग्गओ।
सिहरिकुहरहरिणा वि णिग्गया भयवसेण दूर गया गया।
झाणमेव महमुणिहिं झुंजियं सकलुसं मइंदेहिं रुजियं।
पडिय विडवि फुडियं रसायल घुलिय महियलं भीरुभेंभलं।
रूवरिद्धिणिज्जियसईरई सकिया मणे सा सुहावई।
तुट्ठिपुट्ठिकल्लाणदाइणा गयणपगणत्थेण राइणा।
सइ णिरिक्खिओ सुरहिपरिमलो करडगलियओहलियमयजलो।
लुलियवेल्लियपडिवलियअलिउलो चरणचप्पणो णवियमहियलो।
णिययधवलिमाधोयणहयलो वलविरुद्धजभारिमयगलो।
सीयरभरसिंचियदिसाणणो चउविसाणणिद्दलियकाणणो।
पंचदंडउच्छेहदेहओ ताण दूण परिहाणसोहओ।

ट्ठादिट्ठिसरीरी ५ MB पइ जि

10 १ MBT सिंयपथ°, K सिंछपंथ २ MB महिउल ३ MB भीरु वेंमले ४ MB °अविहलिय° ५ MB वलियपयपडिय° ६ MBKT परिणाह°

---

10 2 *b* सित्थ° प्रत्यग्राग्रभाग 3 *b* खलघणं आकाशोल्लंघनम् 7 *b* भीरुभेंभलं कातराणां भयानकम्, 8 *a* सईरई शचीपतिरिन्द्र

कंपमाणथलकलमलपउरो पीडियाखगहो महारवो।
तं णु तासु मायंगपुंगवो विरियंतकमलसस्सयो।
कम्मिरमेसु गिरिपासु धारओ महहस्थि गेहिवि पओरओ।

घत्ता—पडिवक्खविपारणु पेक्खिवि वारणु रायइ हरिसु ण माइउ ॥
जं विउलमिलाणइ हरिवइ सयइ गरुयहंतु पयाइउ ॥ १० ॥

11

दाणंतु दंत कय करि भिवइ आसिमइ मज्झंमइं छिवइ।
भेसु रयणइ मेल्लेप्पिणु दमइ पुणु दुक्कइ कडपासहिं भमइ।
सरवसु बहुरयणविहूसणु मणुहरु हत्थि कामिणिविमणु।
वसु चउचरणंतरि पइसरइ दकार हुकारइ णीसरइ।
कंपइ आसणइ कुंभयलु पावइ पुप्फगुप्फु बल्लयलु।
दंताविसिहिं वि ठिउ कुंजरु पिंगु विजुपुंजु जं अवहरु।
विम्महइ पडीरसरेय सव रंभंतु घोरु करेण कव।
मारुयविपतणु णवणकुसलु जइमिवि कमेण दसणमुसलु।
वहिणा णवेण णिम्मयमयु मुक्कोप्पिणु सरइ मइंदमु।

घत्ता—सो करिमणिम्मरु ढीणमणउ णरणाहें संमाइउ ॥
जं पविउलयंदहु मंदरमहिहरु भुयदंडहिं उच्चाइउ ॥ ११ ॥

12

मणपइहामाहयपरियरिउ जं सुणिमवि दंति तेण वरिउ।
तं गयणहु कुसुमणिवहु घुमिउ रणुरणुरणंतमहुयरवमिउ।
आवप्पिणु पुण्णपुरिसु पवरु परियरिवि भुवणमीयरु समरु।

* MB तणगु पयंप MB विस्मउ. २ MB कम्मिरमेसु गिरिरिण धारओ. ३ MB करे.

11 १ MB तणु २ MB पुणइ ३ B चउविसिहि ४ MB वहु° ५ M °तणु णवणकुसलु B वणुवणवणकुसल ६ M मंदर.

16 b त्रासकर° पुष्करम् 17 b मदं यो 19 हरिपदन्या

11 5 a नरवपु वदन नारयन 5 b °वपनु पुष्करम्.

करिणा सुंदरु कंधरि थविउ विज्जाहरकिंकरेहिं णविउ।
णिउ तहिं जहिं अच्छइ सयरवइ सो पभणइ पुलयपसण्णमइ।
कंतावइपिंय सुक्तरमणा रइकंता सिरिकंता मयणा।
वणवाला वालहुं तुहुं जि वरु जामाइउ महु जियकुसुमसरे।

घत्ता—करि खंमि णिवद्धउ कंतिसणिद्धउ भरहसयणसुविणीयउ॥
सिंदूरें पिंजरु आसाकुंजरु पुप्फयंतु णं वीयउ॥ १२॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महाकरिरयणलंभं णाम
चउत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो॥ ३४॥
॥ संधि॥ ३४॥

12 १ MB पिय २ MB add after this इय पमणिवि घरि पइसारियउ, गुरुयणारि कारियउ ३ K °सिणिद्धउ ४ MB पुप्फदंतु ५ MB रयणालंभ

12 8 भरहमयण° भरतस्य स्वजना मृत्या 9 पुप्फयंतु पुष्पदन्तनामा दिग्गज

XXXV

ता वसनु पियंपिवि केसवई तिसंगुत्तिमहापव्वइ ॥
एवउ तहिं होतउ जवहरिवि णियइ सुहावइकव्वइ ॥ ध्रुवकं ॥

1

चंडकिरणकरदिण्णालिंगणि | पुण्णइ पुव्वें गव्वंतु वाहंगणि।
कहसु सुहावइ किं सरपव्वइं | जं जं परइं पहुम्माणिसुमइं।
किं दीसंति वम्मयर वंतिव | जं जं भयमीउव मोक्कंविव।
किं सुरचावइं मरि विचित्तइं | जं जं पिय तोरणइं पवित्तइं।
किं जवक्कउं जं जं रयणइं | मंदिरपम्माइं जं पुरेमयणइं।
किं मग्गु पग्गु धरमि विसम्मउं | जं जं णागायवर विसिप्पउं।
एव णायवसु णामें पवर | पत्तु वसइ वसवंतु क्कीणउ।
पम वर्वतं विण्णि वि तुरियइं | जहिं समु मिलियउ तहिं जवमरियइं।
पमयइ पियपमु हवि किं जवयउ | कहइ कुमारि पत्तु पियसइ हउ।
सहियगुसहसतसिकेहावियहइ | संभयाइयम्पयविरूपाइं।
सो हरि पत्तु ण जाइ वरियाइ | कंवसु मग्गु पायइ कुसुमिणइ।

घत्ता—णिहुरियपमणु पिसमसमुहु जयजयकारवपिसिहुइ ॥
सुपियगमसवुम्मवसुइ पियहरउ पाई हमयइ सिहुइ ॥ १ ॥

MB give at the commencement of this Samdhi, the following stanza—

इति भरतस्य जिनेन्द्रसमालिकतिलिप्तवैदुष्यस्य वपुः ।
यादं च गविशीन गुणौ कलानि समर्थम् ॥

GK do not give it.

1 १ MBK शिवगुत्तम° २ MB गिर ३ MB वरमावरलिउ ४ MB मच्चमाण गुणीत MB पुरत्तमणं. ६ B गिरिरम्मयु

1 4 b नइ व्यक्तिं दुवइ भावमहनाति. 9 b ओ गीवन मनोहरिर्वे 16 पुमित मसनयुम- पुरु सुतु विनेन वर्णो अतीभाव मोहरवनवतिवचन् युता वस्य णिवर° मिलनीयम्.

2

धाइउ उद्धरु　　णरसुरमयधरु ।
मरगयणिहतणु　　कंपावियजणु ।
तवियरणयणउ　　भगुरवयणउ ।
दसणभयकरु　　अरिअमरिसहरु ।
भुवणविमद्दें　　हिलिहिलिसद्दें ।
पहिरियदसदिसु　　मणिगयरणमिसु ।
णवर णरिंदें　　चवलु मइंदें ।
ण सारंगउ　　धरिउ तुरंगउ ।
कुंकुमपिंजरु　　चलु पसरवि करु ।
भुयबलपोढें　　पुणु आरूढें ।
णायह पीलिउ　　धग्गइ चालिउ ।
अवलोइवि कैसु　　हरि हयउ वसु ।
पुलइयकाए　　णगमयाए ।
पयडियमंगलु　　घुट्ठउ कलयलु ।

घत्ता—तो बुज्झिवि महिवइ अतुलबलु अहिवलेण सुवण्णी ॥
वरचंदणपरिमलचदमुहि चंदलेह तहु दिण्णी ॥ २ ॥

3

चंदलेह आउच्छिवि णिग्गउ　　णियउ सुहावईइ णिविसें गउ ।
तेत्तहि जेत्तहि सीमामहिहरु　　विउलणियंबुग्गेयणवसुरतरु ।
ते वि चारुचामीयरवण्णाइ　　तेत्थु लयाहरि जाम णिसण्णइं ।
ता सलग्ग खग वेण्णि समागय　　ण णाहि णिसियर णिसिहर उग्गय ।
महुरगिराइ पउंजियविणए　　पुच्छिय ते वणितणयातणए ।

2　१ MB °सुरसयधरु २ M कंपावियतणु ३ MB दसणभयकरु ४ MBK हिलिहिलिसद्दें ५ MB पसरियकरु, K पसरेवि करु ६ B किसु ७ MB तो
3　१ MB णिवसें २ MB °ग्गयसुरतरुवरु ३ B तेण तेणयातणएं

2　2 *a* °णिहृ° सदृशी
3　4 *b* णिसियर णिसिहर चन्द्रादित्यौ　5 *b* वणितणयातणए कुवेरश्रीपुत्रेण श्रीपालेन

दीसइ ये वि सुहु सुप्पाया कहइ कासु कि कारणु भाया।
वेरि पउत्तउ जिणपुर छंडिवि गयणु पायपुंडरियहिं मंडिवि।
भम्मरे माया पई जि णयमई पइउ तुम्हि पोरिसु विण्णासई।
केउ मरु मइ णिसिसु पयंडरि एहु पहीणमंसु कर छिण्डरि।
ता तुहुं हासिं वम्म चडेसइ विज्जाहरमूगापरोमइ।

घत्ता—तं णिसुणिवि अमिवइ करि करिवि वंमु कुमारें पाइउ ॥
मसिजलधारउ सो णिहुउ वि पत्थइ ता वि दुरीवित्त ॥ ३ ॥

4

तुहुं सो चक्कवट्टि जयसिरिहर एव भणिवि विणि मव ते खेयर।
सुरवरि मैं मोहाविवि तं करेवासु करतु पसाहिवि।
तरुणतरणिबिंबु तरुणउ हारउ गीढिवि मुट्ठिए तेण पलोइउ।
पहुपिआर्समेत्वनमम्भरु मुवइ मुकपवणोढमार।
पुणु पहु मइएकल णिउ महियलु णिहुउ मणुपहुपलु भमकियणु।
चरणपीढिउ से तवसि कुसीकउ रयणरहिउ बावइ रयणारु।
एव मुकयपुर्ण कयरणु कुसहमिवि पं पंचमहापणु।
दुरवणु छिद्दमोमिउ वं वासु पुहरपासु वं विरहयमंडलु।
परतीय व कामवियलउ काडें कालिवासु वं विरउ।
मण्णु वि सं वेरि जगसंमोमणु विट्ठु महोरउ हाहामोसणु।

घत्ता—विट्ठुं पुणि वरिवि पुरहसरिण मीव हरेणु पमतउ ॥
सो णिसइ मामिणि पयणयवि महियक्कि हासि णिविसउ ॥ ४ ॥

४ MB read for this line वइ णिसिणु रेय भमरें पञ्चमभमरचेय मणे, and add the following एहु पमाणवमु वर गिरिरि, भमरई हियरर बनु कमरहि (B कमरहि) ५ MB कप होमि ६ K दैहमीए

4 १ K चरण, २ MB मोमाउटीमि ३ MB रगणु करमणु ४ MB °वयणमणमय ५ MB मयरमव ६ MB वलमणु ७ M वसु MB °वैमाणु ९ M विट्ठु पुणि B विट्ठु पुणि १ MB माम.

8 b णिम्भावइ वड्डिमम्

4 2 b करणु मयामउ 4 b मुकवर° सिरिमाममरू 6 a चरण° माणिम रयाम 7 b °विइ चरक पसीव ना 8 a पुरवणु मिणिद ; विर° रनों मणिम 9 b कलमणु कामय 10 वइ वम।

5

आयउ तेयवंतु सो जि हरणायरु सो जिणंति णमंति पडवाहिणयह ।
अणुरायह मंगुलियहि णिग्गउ अण्णेक्क वि सोहमि णयरमग्गउ ।
तेण भणिउ काणईं गयवंदिणु णउ कोवि ण जिणवरस्स णयणिंदु ।
जइ गुरुं पणई णयणइ वहरि । सो तावहि तिहुयणु वि णवहरि ।
सो मै मांइ णिहिहइ जयकांइ मटकाणियइं पुरवीणय णयणइ ।
णियइ मेलिवि पाहिमिउ संणं पणियइ णयिसइं णियंणयिहंम ।
भणिउं आयणहणे णिहउ वेहिमउ वणिणणु णइउ ।
जणिउ मुणहि णडणाणेहिं गुरु जोयइ णिम्माणयगते ।
घत्ता—परिभाणिवि गुणगणु हरिसियमणु पुंणिणदिउ पुरणयरु ॥
णिरिंबई मदु णिहिउरयहणा धीरमीय हिउं णय ॥ ५ ॥

6

णिरुवमणवि आयवि णरणवइ णि णिसई पडिणिणिवइणइ ।
पुणु पणजइहि पराहिणराय णियणमेण दोहरु अणुराय ।
उवाणा मेलायइ णयणइ सपुणीहिय णियणयणणियमइ ।
पुण वि सुहाणइइ देहु णाणिउ पुणोइ गयणाहि णिहाणिउ ।
सुमणिय, मणेहरजणुवाणणु धीरु पाणि णो धीर वि णोणणु ।
णवणयणरणमाणु य णाणउ णिउहिअणमणुणमाणाणउ ।
णयणाय उवयणाइ मणे णाहिपंगइं मणु य णयणे ।
पयाणिय रणि तेण णुणायइ मोहि मोहि णिम्मिणु णणायइ ।
मा मडु अणइ भणि णयणणु मा पयइ णयणि अमरणाणु ।
घत्ता—अणु हियणइ मरहणाह पाणि हणि मडु हाणइ हिणइ ॥
णविणणइ पइ णि मोहणियइ मो णिह मंडु णणिहइ । ६ ॥

5 १ MB सो णि ऱदणु २ MBK ० ३ MB दाणे ४ MB णाय णिहइ ५ MB पु°णि ६ MB णोयई ७ MB णिणणिहीयइ, ८ MB °णाणि ९ माइणि, १० MB णामणिउ णाम°गु°

6 १ B णिउ २ MB मणउ, T मणणमण° ३ MBK णा, ४ MB °णयण पुजुण णणे

5 B a दाणि युद्ध

6 G a मयणइ णणउ° णोणणि ,

7

जयइ फिसीपरि परं मं कुमरउं रे रे धूमकेय पर्व पुत्तउं ।
सप्पम्मणु जर सप्पु वि बुज्झइ जयरें सहुं जर जयर वि बुज्झइ ।
एहु परायउ तुहुं गर्वाणाव बक्किवि विक्कउ पसरहि णिरंभव ।
जर तुह एहु किं पि आसेत्तउ सिवरायोमणु पाउ पि बंधेर ।
जर तुहुं ण मरहि पयडु भुयबलि तो हउं पौमरउं असिवमहाबलि ।
ताउ हउंबाहिवि हरिसें अच्छमि वइरिमारि हउं वारि ण पुच्छमि ।
माउ माउ पियमाडु ण मेहुमि तिरक्खविसदे परं बरि सहुमि ।
एम बोल्लंति तेण सीं मारय करवालेण पुणु धरेण हुंकारय ।

घत्ता—ता आयउ विज्ज हुयासउ बलेवमण्णाविहत्थउ ॥
हणु हणु पभणंतिउ धुंकरिवि पवरउ कुलममलयउ ॥ ७ ॥

8

मक्कु वि साकु वि सिरिस जमोकर सुहड हणेतु ण विषिसु वि थक्क ।
धूम धूम बाहिव संजायउ कम्मउ कम्मावेसें आयउ ।
वेदिउ धूमकेउ बर्हयाससिहि भाइउ सिसिरिसिणंत सिरिसिहिं ।
विप्फुरंतु जयसिरिपसंकिउ सो वि जाम सिविं हवहिं संकिय ।
ता बुत्तउ विवेण मा मायरि बहुय होति रिउ थक्कु विवेयरि ।
मप्णु वि मुह मरं जहिं मि वर्थतरि आवेसमु पुणु मिलिउ संमरि ।
पक्कविवम होएप्पिणु मंजरि मरिसिरक्कमजं जामी वंजरि ।
ता मुजर पिर मत्तिउ महिहरि थिउ वीमिपलणु कलकारयरि ।
पूर विकहावंतकिरयाणवि वाहहिं संजमाणु तहिं पावति ।
विठ्ठम विज्जाहरि जसेसर वें गुणि संधिरे मयरद्धयमरु ।

---

7 १ MB अधुत्तं २ MB पलेवार ३ MB विगरउ ४ MB सिवकिमणु ५ MBK संकुं. ६ MB मरमि ७ MB एम्हाहि MB वेलि. १ MB अवरि १ MB संगाए. ११ MB वुरुसिर १२ MB उम्मर°

8 १ MB पयडउ २ MBT सिमुर्मेहि ३ MBK णय. MB सिव ५ MB संसिय

8. ९ a °संण किरपाय सि जारिसावरी.

घत्ता—तं पेक्खिवि वम्महवाणहय सीमंतिणि तहिं दुक्की ॥
जंपइ पयडइ वियडाउइयइ कुलमज्जायइ मुक्की ॥ ८ ॥

9

भो भो पुरिससीह दुहखलिउ पत्थु केण तुहुं आणिवि घल्लिउ ।
सुहव कहइ व जइ मुयहि महीरुहु तो णिवडहि णिरुत्तु हेट्ठामुहु ।
हुहुइ कसमससति भज्जंतइ अट्ठ वि अंगइं पलयहु जंतइं ।
मा उप्पेक्खहि छणचंदाणण भो परिथवपउमाणण माणण ।
इच्छ इच्छ मइं पइं ण पयारमि गोरहु कंतारहु उत्तारमि ।
भणइ कुमारवीरु किं रिज्झहि परपुरिसहु मणु देंति ण लज्जहि ।
वरं पत्थु जि तरुसाहहि सुक्खमि णउ परणारिणिहि वयणु णिरिक्खमि ।
वर णक्खाइ सिलायलि भग्गइ णउ परणारीउरयलि लग्गइ ।
दंतपंति वर जाउ दिसंतरि मा खुप्पउ परवहुबिंबाहरि ।
केसभारु वर वोंपं णिज्जउ मा परपणयणीहिं कड्ढिज्जउ ।
वच्छत्थलु वर पक्खिहि खज्जउ मा परतियथणेहिं पेल्लिज्जउ ।

घत्ता—णयणइ धोलंति णिवारियाइं हियवउ जाइ वियारहु ॥
संताउ पवड्ढइ रयणिदिणु तित्ति ण पूरइ जारहु ॥ ९ ॥

10

गेहदुवारि णिरोहु करेसइ पिसुणु को वि सगहणु धरेसइ ।
लइ आलिंगिवि मुक्कणिबंधणु लइ उट्ठइ सवरइ पइधणु ।
आसंकियमणु किं किर कीलइ दुज्जसु धूमें अप्पउ मीलइ ।
अण्णु अण्णु जइ काइ वि मंतइ तो परयारिउ णियमणि चिंतइ ।

८ MB °मज्जायपमुक्की

9 १ M कसमसंति २ B omits this line ३ B omits this foot ४ M अक्खमि ५ MB वायइ ३ MB परतिय ७ MB घोलंत, T घोलंति

10. १ MB गेहि दुवारि २ MB लइ ३ MB मुक्क ४ M सवरियउ, B सवरिउ ५ MB दुज्जग

9 4 परिथवपउमाणण राजलक्ष्म्या आणण उपार्जक, माणण उपभोजक 5 a पयारमि प्रतारयामि

10 1 b सगहणु पुष्पलयुगलम् 2 a मुक्कणिबंधणु मुक्तकण्ठाश्लेष, b पइधणु परिधानम्

पयहिं सविवेयहिं हयं वाविउ पयहिं कहिं वयमि संभाविउ।
इहमवपरमवदुण्णयगारउ पहिंयपरमणु सुहु विसारउ।
कोहि ण इच्छमि परयरसामिणि तम्पवि कहिं वि देस सुरकामिणि।
एयवीमइ परएमणाकुमर तं णिसुणिवि महणारिउ कुमर।
भरवारं पिवसहि वणि मेल्लिय साहिमाइ सा किंपिवि पल्लिय।

घत्ता—परहरिपपाणिपयसिरकमलु विहुरपाणि सुहयणविसउ॥
णियवंतउ परिउ मेरं सुपहिं वणिवर विरसवयणविर॥ १०॥

11

परसारिउ सोयण्णासिलापहि माणिउं णिसुणि हुरं वयणइं इहि।
इउं तुह मायं पुत्त पोमावइ पुण्णरामि होती पावमइ।
एक्क वयेप्पिणु णेहपवासें बाहु पसाहिउ करसंफासें।
सुहयंतणहविराएसु बहुउ तणउ पहुत्तु तार संजुउ।
फुरियविविहमणिकिरणणिरंतरि परसहि णिरिगुहविवरभंतरि।
मं णिसुणिवि सा देवु पयहुउ तावेत्तहि संपत्ति पवीउ।
धूमकेउ णामिणसरजालहि विज्जाहिउ करविवि पावहि।
पुणु रुण्णणु वियप्पु विहीसउ जिह तेविर उइरिउ विहीसउ।
गय णियधामहु पीमावितिवि पवहि पाउ रायसुयामणि।

घत्ता—परसंतु णिसंकुणि णियरवहि महिवकमेहायहि पहियउ॥
तहिं संतु देवं सिलामयहु पंमहु वप्पहि वाडियउ॥ ११॥

१ MB गहिय° ४ MB कहिं MB एव कर मि ५ M सयंगुणहिं B वयगुणहिं

11 १ MB पुत्त माय २ B णिय° ३ B पहुउ ४ B धूमकेउ ५ MB °मायहि ६ MB दयह. T णियरुणि

6 °पुण्णय° रोय अवधारी था

11 2 मीमाय इ पमाणी मम मक्खिणीयाणि 6 पुण्णयमिस पमारूणी भ्रमणि, 8 अ निरोध दैसी वाणी. 10 णियहुणि णियरुणि.

12

तावत्थइरि सूरु सपत्तउ ण दिणराएं मेंदुउ घित्तउ ।
सहइ जतु वरुणासालाणिहिं मणि व पडंतु महण्णवग्गाणिहिं ।
कुंकुमकुसुमामेलु व रत्तउ ण चउपहर रुहिरग्गलित्तउ ।
णं णवदलु णहरुक्खग्गहु ल्हसियउ रत्तछलु व दिसतरुणिइ हसियउ ।
भाणुबिंबु किरणावलिजडियउ उग्गत्तेण अहोगइचडियउ ।
मदतमालणीलि पसरियतमि तहिं विचरंतरि रयणिसमागमि ।
णक्कचक्कभयपसरविसण्णउं णीलसिलायलसंभि णिसण्णउ ।
सिरिअरहतसिद्धआयरियहु उज्झायहु साहुहु कयकिरियहु ।
पचहु सचियसम्मयदिट्ठिहिं सुयरइ पयचरणइ परमेट्ठिहिं ।

घत्ता—असियाउसाइ पचक्खरइ झायतहु साणदइं ॥
घोगरिमागिसिहिपाणियइ उवसमति मृगवंदइ ॥ १२ ॥

13

ताम पहाइ कालि रवि उग्गउ ण मक्खिउयरु वियारिवि णिग्गउ ।
णीरु तरेप्पिणु तेण तुरंतें तीरि परिट्ठिय तहिं जि भमतें ।
राए णयणाणंदजणेरी दिट्ठी पडिम जिणिंदहु केरी ।
णिव्वियार णिग्गथ मणोहर पहरणवज्जिय ओलबियकर ।
लक्खणलक्खवलक्खियदेही हउं सा भणमि अहिंसा जेही ।
हउं सा भणमि कुहिणि अपवग्गहु कढिणभुयग्गल णारयमग्गहु ।
सा णाहिं सरसलिलहिं सिंचिय वियसियधवलहिं कमलहिं अंचिय ।
पुज्जे जिणतणुसिरि सथुय भत्तिइ सव्वभूयगणविरइयमत्तिइ ।
भेहपसत्थहत्थगुणगाइय ताम तहिं जि जक्खिणि सपाइय ।

घत्ता—समासिवि णिहिलणिहीसरिइ हरिसुप्फुल्लियणेत्तउ ॥
वेइसारिवि पट्टि पयाहिवइ मगलकलसिहिं सित्तउ ॥ १३ ॥

12 १ MB दिसतरुणिइ २ MB °गइपाडियउ ३ MB °सिलायलि ४ MB मिग°,
13 १ MBK पहायकालि २ MB अववग्गहु ३ MB सचिय ४ B omits this line ५ B omits this foot ६ MB मपाइय ७ T आहिसारिवि

12 3 *a* कुंकुमकुसुमामेलु व कुङ्कुमकेसरसघात इव 7 *a* णक्कचक्क° जलचरसघात
13 11 वइसारिवि प्रतिष्ठाप्य

14

मूसयपेरिहाणाइं गयणइ उभयंदरपेम्मइं तमु दिण्णइं।
गयमयगमण पाउसगुणजुत्तउ दिण्णउ मण्णेँ वि अं जं मत्तउ।
ताम गहि जि परिमासिवि ससायउ पयंडारजसंभूयमस्सायउ।
कंतरिय सहियोहु पहु जोयउ पाहाणाउ महाउ णिवोइउ।
मा पवहु सयसु पि णिरहियउ दिरयउत्तरपंतें परिणामियउ।
पुप्फयंतफणिपुरगयिपमारि मरे य णमंतु माणउ णिवासंतरि।
एम भणिवि ताए णिरियणी समगुहाणुवारि णिम दिण्णी।
अवर महायहिं सा पडिय फुल्लमयवाणा कमु कमु कंचिय।

घत्ता—उप्पाविवि ताए णागहिवइ पाउसजुयलें मच्छर॥
णहि जंतु पुव्वसिरिकिमियविदु पुप्फयंदिहरत्तणु पच्चइ॥ १४॥

15

पच्छइ रंपायाम चिमुक्कउ मासमु णिवसु मगु सा मुक्कउ।
माह णुहारउ मणुअ पवरउ मंगुपयसु णावइ मयरउ।
तिअयंचंसु मह पंपर जोयउ पय भणिवि जसहरेण जोयउ।
चमुमाओय मणिउं कि ससहइ तं तं उप्पु पउ जे णिसिहइ।
कि वीमरे वयसंमायाविउ मंजिल कोइ वि पं पं णिण्णइ यह।
सायामिणि जं जं दइयासवि तारावलि जं जं मूसवयणि।
एम णिएप्पिणि तासं कुसउ पर सहोयर पहु णिवसउ।
एम पवयंतु वहि जि पराइउ पिहिला मोयणपुंडु जं होई।
मुणिपरिगणु हरिसें रोमंचिउ तं पाउ मायागु जं पउ भणिउ।

14 १ M °परिहाणइं भूसणइं, B °परिहाणइं पसणइं २ MB णवर ३ MB पयंडारय ४ MB कयरिउ सहसिवियइ. ५ MB णिमाणउ

15 १ MB मइणोइ. २ MB णवर ३ MB जोयउ ४ MBK पउ तणिवउ ५ MBK जोयउ. ६ MB पेम्मउ

14. 9 a d aa a a a mulaji: b r d a a r a*r ashiyukta a *a ri aa
15 9 a a a a a a puta.

पणविउ पहु णिलयणु णिय तायहु　　जगतायहु पचक्खविहायहु ।
तेहिं विहिं वि तेण जिणु पेक्खिवि　　भवससरणावत्थ दुगुंछिवि ।

घत्ता—सिरिवालें गुरुगुणवालु तहिं मउडचडावियहत्थें ॥
वदिउ परमेसरु परममुणि परमप्पउ परमत्थें ॥ १५ ॥

16

जेण विणासिवि घाल्लिउ ईसरु　　पुच्छिउ देविइ सो जोईसरु ।
पुत्तु महारउ केण विहूसिउ　　चदु व पवरपहाइ पयासिउ ।
पभणइ जिणुगयजम्मि किसोयरि　　पयहु हुयमेत्तहु मुय मायरि ।
हूई काणाणि जक्खसुरेसरि　　बहुविब्भमविलास ण सुरसरि ।
जाणवि णदणु अप्पणु देहें　　ताइ पहु पुज्जिउ बहुणेहें ।
आय सुहावइ कहिउ कुमारें　　पयइ रक्खिउ हुउ बलसारें ।
विज्जाहरह पयासियवसणह　　मायावियह अणेयहं पिसुणहं ।
एह मज्झु हूई विच्छंडतहु　　लग्गणवल्लरि अवडि पडतहु ।
एह मज्झु हूई चिंतामणि　　कामधेणु कप्पद्दुमगोमिणि ।
एह मज्झु संजीवणि ओसहि　　विहुरसमुद्दणाव णिरु पियसहि ।

घत्ता—हउ पयइ रक्खिउ सुंदरिइ पयहि जीउ वि दिज्जइ ॥
जसु पुत्तु कलत्तु ण मित्तु सुहि सो दुहसलिले मज्जइ ॥ १६ ॥

17

पइ संहुं महु उग्गयमुहरायउ　　माइ माइ मेलावउ जायउ ।
जं तं पयहि तणउ विजमेउ　　पयहि परबलु बालिण णिसुमिउ ।
त णिसुणिवि विणए पणयगिय　　सासुयाइ कुलवहु आलिंगिय ।

७ MB णिउ णिलयणु　८ MB तेण वि　९ MB °ससारावत्थ
16　१ MB चिरु णेहें　२ MB दुहसालिलि णिमज्जइ
17　१ G सुहु　२ MB वियभिउ　३ B पवलबलेण

10 *a* णिलयणु समवसरणम्, *b* °विहायहु विधातु प्राणिनां वाञ्छितफलप्रदस्य　11 *a* विहिं वि कुबेरश्री-वसुपालाभ्याम्, तेण श्रीपालेन
16　1 *a* ईसरु अस्य विष्णोरपत्य ई कामस्तस्य सरु बाण　3 *b* हुयमेत्तहु जातमात्रस्य　8 *b* अवडि कूपे
17　2 *a* विजभउ विजृम्भित चेष्टितम्

पुणि पुणि पर्द कार्त पमेसमि मिहिमिह ढिं रविपरिसमहि ईसंसि।
बहुपहिकमरवमंगुम्मउ पुणु महागउ पीई मडु तिम्मउ।
तुडु जि पडु मडु भामाउरी तुर्ड समरि सुरोई तिं सुरी।
सुर्वमहउ हमि कहिं तेगउ कहिं पारिसु परवीरविसारउ।
तुह करउ सियकरिकुंभत्थलु घणुगुणपणियवु अवर धणात्थलु।
मडु तणयहु धम्मरयामा इय तुह भुय रिउई कामपामा इव।
पमणइ कण्ण पुण्णमासस्पें गिरि सुउ परिउ मव्वमहिलम्पें।
देउ सिण्णु व सिहार थंगउ अहिं तुह सुउ महिं मयसु वि वंगउ।
सुणु कुवेरकारिउ परिपुच्छिउ काहुउं मणि सुय तहिं कम्मी सिसपिउउ।
घत्ता—ता कहइ महामुणि गमियउ पारंभीउ तसु तसउ॥
चिरभवि हाहिं वि तुह णउवइहिं भवमणु किउ सिवयुत्तउ॥१७॥

18

सम्माणिहरि सुरवइसिरि मुंडिवि तियसरिसिरिसमु पुरु पउंडिवि।
रिसेंसु देइ महोणिंगु मामा प तिण्णि वि तुह सुय संजाया।
वसुपालहु सिरिपालहि कती पुण्णवसिसि गम्भसुहगारी।
मुणि वंदिवि सपवरो संतुट्टर पच्चाइ कवि सिपयपय पइट्टे।
पुण्णिवि पत्तावकिविण्णासहिं केवलिपरवणाइरवविसम्मसहिं।
मङ सुहासर पिययम मावर वसुपारिपि सम पारमलपर।
मय सुंदरि सिपमंदिरु जाणहि वसुपालहु सिवाहु कउ तामहिं।
करपलपि समाउ रद्दुसिहिं मझुत्तर मउ भरवापुत्तिहिं।
घत्ता—पुणु कहइ सुमोयण सिववारिउ सा परिपुरिसपरंमुह॥
मरहाहिवमिवहु पवरहु पुप्फयंततेओहिमुह॥१८॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महामव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वसुमित्तिपालसंममा णाम
पंचतीसमो परिच्छेओ समत्तो॥३५॥

॥ संधि॥३५॥

MB देवमि ५ M °उक्कमउ ६ MB मर पर ७ B सुरउ MB कयेलर° ९ B सुविन १ MB
५. ११ M वीय वीर लन B वीरमि लन
18 १ MB तिम्मेउ. २ M सउर, B सवुरो ३ M °इर B °सुरो ४ MB °सिरिपाल°

18. 6 b देवि क्षिव कामी (?).

XXXVI

छ वि लेप्पिणु कण्णउ वरतणुवण्णउ मगहु अकंपहु सा सुय ॥
सत्तमदिणि सुहमइ पत्त सुहावइ णविय ताइ सइ मासुय ॥ ध्रुवक ॥

1

भासिउ मइइ गुणजुत्तियउ पयंड तुह सुय कुलउत्तियउ ।
हांतिति भणिवि मृगणेत्तियउ तडिवेए गहणि णिहित्तियउ ।
ममाणहि मइ समाणियउ पयहि तुह मंदिरु आणियउ ।
ता लच्छिइ ताउ पसाहियउ णयमालइमालावाहियउ ।
पुव्व च्चिय तेत्थु पैरिट्ठियहिं भूगोयरेहिं उक्कंठियहिं ।
पियदइयवें कहिं वि विओइयउ मायापियरेहिं वि जोइयउ ।
पढिलारउ परिणिय सेट्ठिसुय जसवइ णामें जसकित्तिजुय ।
अण्णु अवरउ थोरत्थेद्धथणिउ रइकंताइयउ सुहासिणिउ ।
विरहग्गितावणीवावणउं अट्ठहिं तरुणिहिं सहु मेलणउं ।
दिट्ठउ करतु सो पुंउ ललिउ गुत्तिहिं समिइहिं ण जिणु मिलिउ ।

घत्ता—जोयवि सवत्तिहि मुहु घणिउत्तिहि णीसंसेवि दुद्दहणणहु ॥
ईसावसकुद्धइ नक्खराणि मुद्धइ आसघिउ घरु जणणहु ॥ १ ॥

M has, at the commencement of this Samdhi, the following couplet in the margin.—

पुप्फयंतविण्णउ धणुहु सरु दिण्णउ सरु सत्ति ।
मारिउ मिच्छमयाहिवइ गुणु पुणु तिहुयणकित्ति ॥ १ ॥

BGK do not give it

1 १ K सत्तमे दिणे. २ B सुहामइ ३ M एयहि ४ MB मिग° ५ MB परिट्ठियउ ६ MB उक्कंठियउ ७ MB पियरहिं विच्छोइयउ ८ MBK पुणु ९ MB °थट्ठ° १० MB पिउ. ११ MB गुत्तीसमिइहिं १२ B महु १३ M णीमेसवि

---

1 1 छ षट्कन्या, सा सुय सा प्रसिद्धा पुत्री 6 *a* लच्छिइ कुबेरश्रिया 8 *a* विओइयउ वियोग प्रापिता 10 *b* सुहासिणिउ शोभनवचना 11 *a* °णीवावणउं विध्यापनम्

2

सुरवरेपहि तावइ चमरिउ मूगोयरमूगावेरचरिउ।
मज्झंमि ण ममई वेयरहं मधुरत्तइ गुणविसिपायरउं।
मेरउ माहिति रिउ जीवहरु परिहउ जि किराविहि धरिउ कर।
अविससविवाहं कि करमि वर विमलु कज्जाणउ धरमि।
वउ अज्जयारियरपंभिपइ भाविमणु वेयि तासु मिर्वइ।
पडिवयर अज्जु मुर कम्ममाणउ थिहं हार सहावें केवलउ।
मज्झज्जहिं कुसुमहिं विपु गमइ कि वक्कहि वेल्लिहि अक्कि रमइ।
पट्टंतरि सिरिवासें ममरि मणियण मूगालमय धरि जि घरि।
पाससंत पुणु जाविवउं हा पूयमाणुमु मयमाणियउं।
मेरु आसिवि जिणमयणु गयउ कि अंतु अंतु वि विरुद्ध मयउ।
एय विंतिवि पहयर पकु मउ पसिउ बहु मेविवि मेहयउ।
संपत्तउ गेहुं मरुंपज्ज विज्जवरअमरिमाणिविमयइ।

घत्ता—जोरें सहुं पाहुड दोइवि जणमइ पविउ सामियउ पावहि॥
तुहुं मण्णियउ सज्जणु विणिहयपुज्जणु वसुसिरिवाहहि रावहि॥ २॥

3

भेय वि विमइल्पि पिवइपउ माविहियउ पत्तु पयोलयउ।
तं सोइंद भण्णई पंतिमहिं मसवंतीहिं वि पसवंतिमहिं।
कंबुरवेरवाहं सुमेवि सर जं परिणिय अविवरत्तमय मर।
तं पाविय कुकपहिं सकुहि मणु पुणु गुरु पुसिहि हरमाहि।

2. १ K °मरण २ MB °मूमेहहि° GK add second °मूगोयर° in the margin, T मूगोयरचरिउ ३ M यर. ४ G वरउ ५ MB थेमि व वासु. ६ MB मिवइ; B इवइ. M मिर MB मिच्छेलवि. ९ MB मिव° १ MBK वर ११ वसु मह मि. १२ M अमिय. १३ MB वेइ.
१४ B °माणिमयइ

3. १ MB तहर २ MB ववबर. ३ MB सत. ४ MB हुमणो.

---

2 1 b मूगोयरं° महामात्यम् मूगोयरचरित्र मूगोयरेषु व्यवहारादिषु निपुणेषु चैतिर्न मायदं मन्यन्ते. 6 हुरु हुरु; कम्ममाणउ ईर्ष्यावमिश्रीयम् 11 b मसिरु मीनकेन

3 2 b मसवंतीहि मि पसवंतिमहि सवस्तुनामिति सर्वसतीनामवरोपन पुनरपि 4 a कुकपहि हु कुकपहिं कुरुपहितः; मणु मि सकुहे

चंपयकुसुमावलिगोरियहि समरेमि सुयाहि तुहारियहि।
जिह कढिणं[6] थणत्थलु तिह पहरु[7] जिह रत्तं[8] रत्तरणु तिह अहरु।
कण्णंतु समागय णयण जिह परमारणसीला[9] वाण तिह।
जिह मज्झु खीणु तिह विरहियणु जिह धणु गुणमडिउ तिह जि तणु।
जणणंकासणइ णिसण्णियइ कण्णियइ कुसुमसरच्छण्णियइ[10]।
तं णिसुणिवि णिब्भरु चिंतियउ महु णाहें माणु णियत्तियउ।
तहि पिउणा तं जि पचोल्लियउं[11] हयगमणभेरियलु चल्लियउं[12]।
ताएण समउ गय कुमरि तहिं णिवसइ सुहउ वरइत्तु जहिं।
घत्ता—सपत्तु अकपणु सकरि ससदणु पेच्छिवि छण्णु णहगणु ॥
गय विण्णि वि सायर समुह भायर मग्गमाण आलिंगणु[13] ॥ ३ ॥

4

घरि आसीणाइं सणेहदय लहु अब्भागयपडिवत्ति कय।
हेट्ठामुह वहु वरेण भणिय किं हुई तुहुं मलिणाणणिय।
घणु सोहइ एक्कइ विज्जुलइ वणु सोहइ एक्कइ कोइलइ।
हउं सोहमि हउ एक्काइ पइं गुरुवयणु करेवउ तो वि मइं।
मा रूसहि सज्जणवच्छलिइ अलिणीलकुडिलमउकोंतलिइ।
तें वयणें रोसं[1]णियत्तणउं जायउ तहि रम्मु पेम्मु घणउं।
वप्पिल सपाइय[2] रमणवसा[3] तडिरयतडिवेयहु तणिय ससां[4]।
चलणयणजुयलणिज्जियहरिणि रइकंता मयणवई तरुणि।
पंचट्ठ[5]सहासइं राणियहं[6] परिणियइ तेण खयराणियहं[7]।
पुणु पच्छइ[8] णिरुवममोयवइ खगवइसुय णामें भोयवइ।

५ MB read for this foot लडहगहि मुणिमणचोरियहि ६ M कढिणु ७ B adds after this महु आवइसयइ णिवारियइ, सभरमि सुयाहि तुहारियाइ ८ B रत्तु रत्तरणु ९ M °सीहा १० M °सरस- णियइ, B °सरकण्णियइ, T °कण्णियइ ११ B adds after this णियपुत्तिहि मणु णीसल्लियउ १२ MB add after this तहु सहुं तिहुयणु हल्लियउ १३ MK आलिंगिणु
4 १ G रोसु २ MB सपाइउ ३ MB °वस ४ MB सस ५ MB चउवट्ठ° ६ MB राणि- यहि ७ MB °राणियाह ८ B पुच्छइ

9 *b* कण्णियइ कन्यकया, °छण्णियइ भक्तिविशेषेण

घत्ता—सेयायवत्तेवत्तपयपविपमरुपवरपुरोहियद्धयं ।
सव्वोवइं रयणइं दंतिमयवयइं सत्त तासु संपण्णइं ॥ ४ ॥

5

पोसेण सुहावइ दुक्कइ ईसाइ ण पियपुरि पासइ ।
सुरमणिमयवाणिमयणसिरिहि पिय भवणु रयणिउ सुरगिरिहि ।
परमाभिरि असरंवरणु किउ कल्लोलइ रायहु विण्णविउ ।
परमेसर वणिसुय परिहरिय परवंभिणवहें मरि धरिय ।
तं णिसुणिवि णरवइ संचलिउ हरिसुरपुरंदरु बहि मिलिउ ।
परमेसहि भणि महासरहि संपत्तु णिवासु सुहावहि ।
णिद्दंधपणहि तिह तिह कंपियउ जिह जिह मणु सुरवइ कंपियउ ।
ईसासुय पत्ता रयणमिय आयवि णमिउणय ताइ णविय ।
णिवसारि णिवमहरिहहि पिय ता वि पुंडरीकिणिपुरिहि ।
पहरणसालहि सुरहिमयतणु उप्पण्णउं चक्कु णराहिवहु ।
णवणिहिवइ आयउ चक्कवइ किं वण्णइ अमहारिसु कुकइ ।

घत्ता—ताहिमपहि रयणइ ससहरवण्णइ परिवसिजावि पहावसु ।
अवरोरपइ गर्द घर्द कयमार्द किउ सुरइंदसमासणु ॥ ५ ॥

6

भरि मयणिवेउ णिउ मण्णहरिउ आयाहयण हुउं अवहरिउ ।
मढिउ तहि रयणायरहि विडवि हिंडिउ तहि काणणि गिरिगुहिहि ।
गरुअंबियमणरयणजोहरइं चिट्ठइं कवचइं णिवाहरइं ।

१ MB णिह॰ २ MB केरण
5 १ MB रउ MB रयणसिहि ३ MB णिव॰ ४ B इक्कुरु ५ MB कणर करियउ
६ MB सुरवर तवनु
6 १ MB रयणाणि वहि. २ MB ॰णवरय

6. 11 "णिवमए" गोपालय.
5 9 णिवमहरिहरिहि रयणा वासर्वतीणिया 10 ० सुरहिमयतणु दुंदुभिवाहिं घोषणाणिय तपे वस
6 २ ६ गिरिगुहहि गिरिणितंवुगलि गिहि

मई रइयइ पसरियअमरिसइ अवलोइवि णाणासाहसइं ।
चलकरयलफुलियसूलमुसल आरुट्ठ दुट्ठ दप्पिट्ठ खल ।
उद्दहणपयडपलयपिहिर रिउ विज्जुमालि हरिघर खयर ।
दूसासण दुम्मुह कालमुह हरिवाहणधूमवेयपमुह ।
ए पिसुणियपिसुण मयच्छि मणु ता चवइ कत कंतेण महुं ।
कीरइ रिउबलमयणिम्महणु तुप्पेण समइ किं दवदहणु ।
उवसमइ समाइ ण खलहियउं असिघायहिं जाम ण कलहियउ ।

घत्ता—पुरिसेण महंतें परु जियतें जेण दीणु ण भरिज्जइ ॥
णदंति ण सज्जण जंति ण दुज्जण गयहु तेण किं किज्जइ ॥ ६ ॥

7

महएविइ कज्जु णियच्छियउं इय णएउ राए इच्छियउ ।
भायरहहि यघयु कुलधवलु णामें हरिकेउ विसालबलु ।
अहिमिचिवि पट्टणियघु फउ सेणावइ खगवइ होवि गउ ।
रणि जिणिवि णियंघिवि सत्तु तिणा आणिय णं विसहर पवरविणा ।
सो तुरयारूढउ दढकरु पणवंतु पलोइउ णिवेण णरु ।
वहलंसुजलोल्लियणेत्तियहिं विलवंतिहिं खेयरपुत्तियहिं ।
णियणाहहु दीणवयणु लविउ वहिणिहिं बंधवउलु मेल्लविउ ।
सयल वि ते पणिवडियकियहु चरणारविंद णिवडिय णिवहु ।
राएं कारुण्णु ताहं करिवि पेसिय देसहु अब्भुद्धरिवि ।

घत्ता—महियलु पालिज्जइ मग्गिउ दिज्जइ पणविज्जइ जिणयंदहु ॥
पयवडिउ ण हम्मइ मग्गें गम्मइ एउ चरित्तु णरिंदहु ॥ ७ ॥

३ MBK °हुलिय° ४ MK पलयमिहिर; B मलयमिहर, G पलयपिहिर but originally पल्यमिहिर which is corrected to पिहिर by yellow pigment ५ MB दूसह ६ MB तिम्मदणु

7 १ B पुच्छियउ २ MB वघउ ३ MB होइ ४ MB मेलाविउ ५ MB चरणारविंदु ६ B पाविज्जइ ७ MB जिणइंदहु

7 4 *b* पवरविणा प्रवरश्वासौ विश्व गरुडस्तेन

8

चउरासीलक्खइं कुंजरहं तेत्तिय सहसइं रहवरहं ।
छण्णवइ सहासइं रामियाइं बत्तीस णिवइं सेवावियइं ।
मोक्खदेसहुं सिवइं सुरिंदं आयावरहं पंजलियरइं ।
घरि चोद्दह रयणइं णव वि णिहि महि एयछत्त अणुहुंजमाहि ।
सिरिवालहु पुणु पवित्थरिउं जणु कण्णा पुण्णमणोरहिउं ।
तं णयरापरज्जण्णु धणु तं वसणा पसारउ मयणु ।
ता सव्वसुसु भणिउ सुहावए पुच्छइ संचियउ जसोहरए ।
वसु पउ वि ण धवर मरणविये पच्चेण जि भीसमि देवमये ।
रज्जेसउं साहु णिहिं कप्पतरहिं किं पुण्णकत्तहिं अपेक्खहिं ।
घत्ता—ता मंतिं भासिउं सुज्झु पयासिउं पवमाइ मा मासहि ॥
जसहरपहि केरी तिहुयणमारी सीलविणि मा दूसहि ॥ ८ ॥

9

जसवेवकुमिंगहि जिणु समसिही जसहरयहि होही परमेसिही ।
जसहरयहि जसु महियलि भमिही जसहरयहि पेय पंडु वि णविही ।
परियाणिवि दिव्वमुणिंदु मुणि छम्मासहिं होही परमु झुणि ।
दविउ पेसणसंमायउ सिरिहिरिधिरिकित्ति मायउ ।
वसुहाए पडिय पउंमणणा सुए मिच्छिय णवेय णइंयणा ।
हरि करि रवि जलणयासि णमिय दिट्ठी मोक्खह सिविणावलिय ।
थिउ चंदपुरंदरपुप्फवणु जिणु देविहि देहर णवपणु ।
सा सुंदरि णविय सुरंसुरहिं मायणवंतरहिं सविसेसरहिं ।

8 १ M तेत्तियइं वि क्कवर सहसइ, B omits this foot K तेत्तियइं सहसइं रहवरहं २ MB add after than सु भणिय सु संपण्णउं ३ B मइय. MB मउय संताणियइं ४ B वहाइं ५ MB सुरय MB अणुहुंजमिहि, K °महि but correct ६ ६ मिहि MB पुण्ण ७ MBK वणहरि ८ MBK संतहि ११ MB मणिहि

9 १ MB जसहरि कुमिउ २ MB सयर मि दु णमिहि ३ MBT मुणिंद° MB णरसंणय ५ MBK पेद° ६ MB हरसुरेहि MB सविसारहि

8 4 b अनुभुञ्जति अनुभुञ्जन्ते अनुरक्तावर्त

9 4 a देवपरंपरायाद्य स्थितेन भगवत्येन सम्मानिता.

तहिं अवसरि माणमरट्टु चुउ मणि धम्माणंदु अणंतु हुउ ।
आवेप्पिणु णिम्मच्छरमइइ जसवइ सइं णविय सुहावइइ ।
दिसि कवण सुरासहि अणुहरइ किं अवरहि रवि उग्गउं करइ ।
का पुज्ज णारि पइ माइं विणु अण्णाइ उयरि किं धरिउ जिणु ।

घत्ता—अमुणियसंवधइ चिरु रोसधइ फरुसक्खर जं जंपियउं ॥
तं अमरंपियारिइ खमहि भडारिइ मइ बालइ दुक्किउ कियउं ॥ ९ ॥

10

णामेण विलासिणि रंगसिरि अकमलकरि ण सयमेव सिरि ।
गच्छंति पलोइय वणिवइणा पहि जंति भणिय वड्डियरइणा ।
मुहयंदुज्जोइयसयलदिस किं णच्चहि वच्चहि पुलयवस ।
ता कहिउ ताइ वणिणाह लहु देवीपयफंसें णट्ठु महु ।
बारहवारिसियउ खासु किह जिणदंसणेण जणदुरिउ जिह ।
पुट्ठउ णं अमिए सिंचियउ तेणंगु मज्झु रोमंचियउ ।
जसवइपयगलियजलेण जरु णासइ गहभूयपिसायडरु ।
सा धूमवेय वइरिणि खगइ अवर वि गुरुहार जाय जुवइ ।
जुवराय हवेसइ पोट्टि तहिं जुयरायपट्टं बद्धउ अणहिं ।
तो जणणिइ जणियउ तित्थयरु भइयइ थरहरियउ पंचसरु ।
उत्तारिउ धणु लिहक्कविय सरं जिणजम्माणि कम्महु णत्थि घर ।
णिउ मेरुहि तियसहिं जिणधवलु जाणमि सिवसिरिकण्णहि धवलु ।

घत्ता—सइं ण्हवइ पुरंदरु आसणु मंदरु कायंकोड्ड रयणायरु ॥
जहिं ण्हाइ जिणेसरु तं ण्हवणउं णरु कहइ को वि जइणायरु ॥ १० ॥

८ MB दिसि कम्वण ९ MB मुएवि अण्णु १० MB जंपिउ ११ MB अरुह° १२ MR किउ

10 १ M महि इंदुज्जोइय°, BK मुहइंदुज्जोइय° २ MB वच्चहि णच्चहि ३ MB पयफंसें ४ MB वारहवरिसियउ वि ५ MBK जुवराउ ६ MB °पट्टु ७ K ता ८ M सिर ९ MBK कामदु १० MB कायकुड्डु

10 11 *b* घर रक्षा 12 *b* सिवसिरि° मोक्षश्री , धवलु भर्ता 14 जइणायरु गणधरदेव, अथवा बृहस्पत्यादिकश्चतुर

11

मायवंतेतरूप्पाहिवर्हि देवहिं हम्मिमसासंसमुहहिं ।
गुणपासु पाउं किउ जिणवरहिं भाविवि भव्विवरु जसोयरहि ।
पयमाधहिं मयर महासरहि संभूयउ पुत्तु सुहायरहि ।
ससरोमय मोयवर्तिं छट्ठ कयरहुं पियकेर समुदिसउं ।
पउ परवेंए सपय सकरि सपउ भरियपदारिमुहु चे सपउ ।
वेयड्ढमहीहरि संचरउ विज्ञाहररायहं मज्झि हुउ ।
साहिय कवि कम्म वि किंपर वि तहु भरह कंपह कि न रवि ।
पउमप्पह हुयउ आसु घरि थियसइ सिरि सवतें तासु करि ।
मुंजेवह कामभोयसेयई छक्खाई तीस पुव्वहुं गयई ।
पहरिहि पियि जिणु णिम्यारयउ कोपंतिपहिं संबोहियउ ।

घत्ता—ते होरवि कीसहं धणु कीसियहं दुग्गापामियकापई ।
पव्वइ परिवज्जिउ गुणसंपुण्णउं सुवरिउं कोपकसायई ॥११॥

12

चउतीसातिसयविसेसधरु सेजायउ केवलि तित्थयरु ।
गुणपासु महारउ गुणमहिउ विहरइ महियलि देवहिं सहिउ ।
संबोहियबहुभवियसुवोहु जिणसुद्द देउ मह मामेहु पहु ।
गुणसीलयमाइं पुरुहर्वि समर्रे सिरिवासु वि भुंजिवि सयल धर ।
पण्णुतिपयाकम्मसमुहउ सिरि पड्डे जिणयिवि तणुरहउ ।
परिविवियि जम्मजरमरणु जिपतवयवितियिहु गउ सरणु ।
सोमउसदासयरमीसरई हे सईं पज्जाइय मेहासरई ।
संसारघोरमारें छरउ यसुपासु करिंदु वि पाविरउ ।

---

11. १ MB °किर° २ MB वाणमविवर्हि ३ MB मरस्स सकरि सरि सपउ B मईं.
४ M °हरई, B घरई
12, १ M हुणवास २ GK °स्पुत्तु but gloss समस्य ३ MB सीमयु M सोर.
५MBK पु. ६ B सर मिमिमि ७ MB महोयरइ MB पमारउ

---

11. 4 b भियकेर स हुरिव हुं मियमर्ग समुद्दिम. 11 वीय ह मि सन्मम्
12 4 a भ प र स कला 7 b वहा वरहं सम्हरिसमभिमाम्

सहुं पुत्तसहासें सो सहइ तं संजमु तं वउं को वहइ ।
देविहिं परमत्थवियाणियह पण्णाससहासइं राणियहं ।
वुज्झियधम्मइं उज्झियरइए तवि संठिउं समउं सुहावइए ।

घत्ता—सा चरिउ चरेप्पिणु तेत्थु मरेप्पिणु सइं अमरींहिवु हूई ॥
णासियदुक्कम्में जिणवरधम्में धावइ पुरउ विहूई ॥ १२ ॥

13

जहिं भुक्ख ण तण्ह ण णिद्दडिय णउ देह सत्तधाउहुं घडिय ।
जहिं सत्तु ण मित्तु ण घरिणि घरु जहिं लोहु ण कोउ ण कामजरु ।
णउ माणु ण माय ण मोहु मउ जहिं केवलु जीउ जि णाणमउ ।
मणु इंदिय पंच वि णत्थि जहिं सिरिपालु वि गउ कालेण तहिं ।
वसुवालु वि गुणवालु वि परमु अरहंतु करउ महु रइविरमु ।
इय सुणिवि कहंतरु अप्पणउ घणरवेण दिण्णु आलिंगणउं ।
तूसेप्पिणु ताहि सुलोयणहि रायवसविरोलियलोयणहि ।
पुणु भणिउं देवि हियवइ धरवि हउं खगजम्मंतरु संभरमि ।
तहिं अवसरि हरिसुद्धाइयउ जम्मंतरविज्जउ आइयउ ।
गंधारिगोरिपण्णत्तियउ गयणयलविहारपवित्तियउ ।
णियसोहाणिज्जियकमलसिरि त पेक्खिवि भणइ पियंगुसिरि ।

घत्ता—हउ जाणउं भाविणि अइमायाविणि कंतहु चाडुयकारिणि ॥
अलियउ जि कहंतरु भवणेरतरु कहइ दुट्ठ दुच्चारिणि ॥ १३ ॥

९ MB वउ १० MB देवहिं परमत्थु वियाणियहं ११ MB °सहम रायाणियहं १२ MB संठिय १३ MB अमराहिउ

13; १ MB सिरिवालु गयउ २ MB °विरोलिय° ३ MB धरमि ४ B वज्जिउ ५ MB जाणमि ६ MB भवणे णिरतरु

18 विहूई विभूति

13 18 °णेरतरु अविच्छिन्नम्

14

तुहुं देवि सुलोयणि मयणरिय इउं पोयणवत्ति वाराइं भरिय ।
पई कहिउ काईं ण सरहि वि कह रिद्धउ पवहि किं रोवहि ।
रमणीयणसिरचूडामणिहि पीसहु कयउ बोहि वि वणिहि ।
बहुमायहि रत्नु समप्पियउं पणवोसें सहरिसु अप्पियउं ।
हउं पव्वइमि गयवे बंधु तहि जिणु वंदु सयंभु सो वसइ जहिं ।
रयणाउंकारिहिं विप्फुरिउ विज्जाहरवेसु तव धरिउ ।
कं दोवड चालि पराणहि तं वहु वरेप्पिणु णियवरहि ।
पिय पासि सुलोयण जयवहि मिच्छि वि पहाणिपई झत्ति भरि ।
बधु जोयइ जवविहि सुयर मणहरु विमोउ कहुपु वसइ ।
मंतेउरु परियणु पीसरइ संमयणु संभरहु सुवइ ।

घत्ता—सहपियजसइरि सुरवरमहिहरि महासालवणंतरि ॥
तं पासह वहुवर बहुकिसलयकर जिणवरभवणब्भंतरि ॥ १४ ॥

15

पेच्छिवि वि वंदेप्पिणु जिणपवरु तं महासालु सोक्खयरु ।
परिहरिवि ताई उप्परि मयई देव्याउ पंचजोयणसयइं ।
तेहिं वंदवि पुज्जिवि चेइयई पवि चउदिसु वणणिवेसईं ।
पुष्करवि तिसट्ठिसहसईं उवरि जोयणइं वरेप्पिणु पुरवसिहरि ।
चउ विहुर पासें सउमणसु करिदसणपाहवतरणसिमणसु ।
पेच्छेवि तहिं मि अपतिमगुणमउ जिणवरपडिमाउ अकित्तिमउ ।
पुणु पंचतीससहसइ गयइं पंचसयाइं किम्पजोयणईं ।

14. १ MB पमवावि २ T वाएसु ३ MB वाएमि MB चएमि ५ MB मिरु. ६ MB वड MB वड विरएप्पिणु
15 १ B ताणहि वरेवु २ MB वरणणवि पुज्जिवि ३ MB चेइयई ४ MB सिवेहरा ५ M पसवि तहिं मि वरवगुणमउ B पच्छेवि वेहिं मि विमलुतमय ६ B पवइ

14 2 a वई उ कपालयम् 6 b इति शेषमपि 9 b सिद्धो व विधेरः
15 8 b वचन सिवेदनं अट्टमिपर्वितावस्था 7 a चवइ महासमरुपयोजनानि

लंघिवि पंडुयवणि पइसरिवि अहिसेउ अरुहयंबिहं करिवि ।
जोइवि चूलिय मेरुहि तणिय चालीस जि जोयण परिगाहिय ।
जोइय उत्तरकुरु देवकुरु अवलोइय दहविह कप्पतरु ।
छ वि कुलपव्वय चोद्दह णइउ दिट्ठउ बहुभूमिभेयगइउ ।

घत्ता—जहिं वसइ सगुणगणु णिरु णिरुवमतणु जंबुदेउ रंजियजणु ॥
जंबूतरु जोइउ रयणुज्जोइउ जंबूदीवहु लंछणु ॥ १५ ॥

16

तं जोयवि आयइ तुहिणइरि जहिं हरइ सहि सिरिविब्भसिरि ।
तणुवलइय मणिमयभूसणिय सोहम्मसुरिंदविलासिणिय ।
जहिं जोयणमेत्तु अत्थि कमलु जंबुण्णयणिम्मियविमलदलु ।
जहिं सुरहं वि चोज्जुप्पायणइं णालु वि हेवेइ दहजोयणइं ।
तवणीयविणिम्मिय ण णविय कण्णिय गव्वूइपरिट्ठविय ।
जहिं कोसपमाणु विमाणु तहे लच्छीदेविहि अरविंदहे ।
तं पेच्छिवि णहयलि चल्लियइं विण्णि वि णियमणि गंजोल्लियइं ।
गंगासिंधूसिहरइं णिइवि तहिं तणउ सलिलु परिमलु पिइवि ।
सवरउलणिसेवियमेहलहो पुणु आयइं वेयड्ढायलहो ।
जयरुवणालिणलंपडि भमरि थिय पधु णिरोहिवि तहिं खयरि ।
सा भणइ वसइ इह तुलियजगु गंधारिपिंगु णामेण खगु ।

घत्ता—हउं तहु केरी सुय णवकुवलयभुय पइ णियति जणरामें ॥
गुणि मग्गणु साविवि ठाणु णिवाधिवि विद्धी हियवइ कामें ॥ १६ ॥

७ MBK परिगणिय. ८ MB °भूमिमोय° ९ MB जहि णिवसइ गुणगणु

16 १ MB जबूणय°, २ MB वि पविमव ३ M तहि तणउ सुपविमलु जलु पिइवि, B तह तणउ जि पविमलु जलु पिइवि ४ M सुरवरउलसेविय°; B सुरणरउलसेविय° ५ MB °लपड ६ B पियपधु. ७ MB गंधारपिंगु ८ MB गुणमग्गणु

16 8 *b* जंबुण्णय° सुवर्णम् 5 *b* गव्वूइ° क्रोशद्वयम् 12 °रामें रमणीयेन

17

णमिविणमिपरमाहदु गेहिणिय हउं अवि पणिवइ तहिमाविविणिय।
विज्जाहरासर्पयणमणई एवि पुच्छेप हउं विज्जाहरई।
मई एम्बहिं सहुं मणु जइ तुह पुत्तहु कारें वि णत्थि तर।
व विसुविवि मणहसेणाहिवइ माणइ सुट्ठुं सुंदरि मुहमइ।
बोमइ घर पयडु सहरिविप किं कंपहि वोमविहारिविए।
महु अणविसमाणी परमरिवि जो पेहसिवि सहइ चाहरिवि।
ता पई गेवरेउ भिव विणियवइ हउं पुत्तु तुह होमि मारु मवइ।
ता हसिवि पिंगकेसिपइ अंसहर एवमिपरिव पेसिपइ।
खिसुसमिसणिहपाढाखियइ ववपवणीअंजणकाखियइ।
णवलीहापरलवणाविपउ गुंजापुंजारुणणपविपइ।
कंपियपोमसफणिमहरव किविकिविसरें कणकणमइ।

घत्ता—सुणपत्तुविण्णासहिं विच्छुविलासहिं पिरसहपणरामेहहिं॥
मावउ मवेपहिं पहरणमेयहिं मिण्णमहामहरेहिं॥ १७॥

18

जयमीअविसुमि ण तहिं हर्पा हियंपं जणण गुरुकंपि कर्पा।
पिय विवमियपिय सुकायण वि सार्यंपि तो वि चक्कोप ण वि।
तो तें हिंपुमियए पुच्छियउ हा किं मई विप्पमु पुच्छियउ।
चरु मयरु णियठाणहु चमरु तो तुम्हु वि विवणिवि पाहरु।
मं हसेमसु वें मई पुच्छियउ विज्जउ वेणिवि भासामियउ।
गय पम सबेण्पिणु मयणमरि णमरहिं पुच्छिउ महिहरिमहरि।

17 १ M पुच्छिय २ MB णरणुं ३ MB वेणउ ४ M णवणण एवमि रिउ वेमिय, B णवरिंए एवमिवउ पेविवउ ५ K मिसुणाणी

18 १ MB एप २ MB हियए. ३ MB चव

17 6 a ओमइ घर पंयडु सहव मम मणहिं. 11 ऊंमइहि कि मेपुए. 12 "वरणउ" [illegible]

दुंदुहिसरु महुरु समुच्छलिउ रइपहु णामें सुरवरु मिलिउ ।
तेणुत्तउ इंदें पेसियउ मइ तुह सुइभाउ गवेसियउ ।
जा पइं रोहिवि थिय घणथणिय सा ण हवइ खेयरि सुरगणिय ।
तुह सीलु णिहालहुं पट्ठविय पइ णियजणणी विव चिंत्तविय ।

घत्ता—कुरुकुलणहयलससि णाणुब्भववसि कंपावियदसदिव्वइ ॥
चारित्तु तुहारउ भवभयहारउ भणु किर केण ण थुव्वइ ॥ १८ ॥

19

जो रुच्चइ सो तुहु मग्गि वरु त णिसुणिवि पभणइ णरुपवरु ।
वरु मग्गमि णाणपवित्तियरु वरु मग्गमि हउं ससारहरु ।
अवरें वरेण मेहु कज्जु ण वि पुणु णिवडइ सुरवइ चदु रवि ।
जहिं सोक्खु कयाइ ण सचलइ जहिं कामहुयासु ण पज्जलइ ।
सो मोक्खु णिहेलणु जिणवरहो हउ तत्ति करमि गुरु तहु वरहो ।
ता वंदिवि जयरायहु चरिउ गउ अमरु अमरलोयहु तुरिउ ।
तं देवपससइ राइयउ वहुवरु केलासु पराइयउ ।
रीणउ गइ विरइवि णहयलइ आसीणउ रयणसिलायलइ ।
कणयमयकोणताडणखमहं ता णिसुंउ सद्दु सुरडिंडिमहं ।
सद्देण तेण आयड्ढियइ विण्णि वि गयाइं महियड्ढियइ ।
सुरसरितरंगससियरसियइ जहिं भरहणराहिवणिम्मियइ ।

घत्ता—चामीयरघडियइ मणिगणजडियइं दिट्ठइ घरइं जिणेसरह ॥
पयपणंचियसीसहं तहिं चउवीसह दिक्खादमियदुरासह ॥ १९ ॥

४ MB जयभाउ ५ B रोहिय ६ MB चिंतविय ७ MB दह°

19 १ MB पवरणरु २ M सहु ३ MB ण काइ वि ४ MB हुयासणु पज्जलइ ५ B करउ ६ MB सुणिउ ७ MB विण्णि वि विगयाइ महड्ढियइ ८ M जिणेसह ९ MB °पणमिय°

18 11 णाणुब्भववसि ज्ञानोद्भवानि इन्द्रियाणि तेषां वशी; °दिव्वइ दिक्पतीन्

19 9 b णिसुउ नि स्रुत 18 °सीसह श्रीशानामिन्द्रादीनाम्, दिक्खादमियदुरासह दीक्षया दमिता उपशमिता दुराशा भोगाद्याकांक्षा यैस्तेपाम्

20

रिसहं रिसिमग्गपयासयरं   अजियं जियवम्महसुहसरं ।
संभवदेव संभवमहणं   अहिणंदणमहिणंदियभुवणं ।
महुगुंछियपंछियमोक्खगई   सुमइं सुमइं णमियकुमइं ।
पोमप्पहमवि पोमाहरणं   णयपासं णमह सुपासजिणं ।
चंदप्पहमहिहयचंदकिरं   सुविहिं सुविहिं वसपुंजविहिं ।
सीयलवयणंमहणंगवई   सीयलणाहं वंदे अरुहं ।
सेयंसं सेयपईवियपरं   वासवपुज्जं तिहुयणपियरं ।
सिरिवासुपुज्जणामं जिणउ   विमलं विमलं तवतावसहं ।
वंदे मयणंतमणंतमहं   मणमणिरमणिमीणयतमहं ।
धम्मं दहधम्मसुदेसयरं   पणमामि जिणं आवियसयरं ।
संतं संतिं जगसंतियरं   सोक्खयरं परमं तित्थयरं ।
कुंथुं कुंथुहुं वि दयावियरं   बहुपंथियमग्गंधयपविरियं ।
पणमामि अरं संचियविसमं   अरमलणं मुक्खिपमोहसुमं ।
मल्लिं मल्लियदामंचियपयं   मुणिसुव्वयमुणिरायं सुवयं ।
णिमिजिण णमियाइ जगसामिं   गुणरयणामिं वंदे णेमिं ।

---

20 १ MB मोक्खयरं २ M सुमइ ३ M कुमय ४ MB पोमप्पहं णमि ५ K सुविहि ६ MB °णविसयर. ७ MB °धम्मयरासयर. MB धम्मसुपंठियमिण्णामयर, T [illegible] ९ M संते. १० MB कुंथेसु दया° ११ MB दयावरं, K दयावरउ १२ MB °विरएं, T °विरयं १३ MB अरमलमुक्खि°, T °मलमुक्खि°

---

20 2 संभवमहणं संसारविनाशकम्. 4 a पोमाहरणं पद्मानां [illegible] कारणम्. b णयपासं [illegible] 5 a चंदप्पहमहिहयचंदकिरं [illegible] 6 सीयलणाहं—[illegible] 7 सेयंसं [illegible] 8 b विमलं [illegible] 9 b °तमहं [illegible] 10 b आवियसयरं [illegible] 12 कुंथुहुं अपि [illegible] 12 b बहुपंथियमग्गंधयपविरियं [illegible] 13 [illegible] 14 b अरमलणं [illegible] मुक्खिपमोहसुमं [illegible] 15 णिमिजिण [illegible]

पास पासासिफेराण हिय मत्तूण वि दरिसियधम्मरूय ।
वंदे वयवड्ढमाणणियम णिरियवड्ढमाणरीगं भैरम ।

घत्ता—जिह भरहणरिंदें कुवलयचंदें वंदिय सयल जिणेसर ॥
तिह तें जयराए समियकसाए पुप्फयंत जोईसर ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जयसुलोयणानित्थवदण
णाम छत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३६ ॥
॥ संधि ॥ ३६ ॥

१४ B °करण° १५ MB दरसियधम्मासेय १६ MB चरिमं

16 b सत्तूणेत्यादि – शत्रूणामपि दर्शिना धर्माधर्मप्रतिपादनात् थां विभूतिविशेषो येन
माणणियम मतैरुपलक्षिता वर्धमाना उत्तरोत्तरा नियमा नियतकालव्रतानि यस्य यस्माद्वा ॥
19 पुप्फयंतजोईसर पुष्पदन्ताश्च योगीश्वराश्च

XXXVII

जगणाहं रयणविणिम्मियइं पसरियकरणियरंदिरइं ॥
सत्तरिसइं जिणहं अणागयइं वंदिवि णविवि परिट्ठियइं ॥ ध्रुवकं ॥

1

पंचर मुंदरि भरपर णाम | तहिं अच्छिय मुणिवर विविह णाम ।
ते णियसहिं गय सहु समवसरणु | जहिं णिवसइ रिसहु तिजगसरणु ।
चउवण्णें पयेप्पिणु गुरुपयाइं | अणोण्ण सम तांइं वि गयाइं ।
पत्तेहिं तेहिं वोहिं वि जणहिं | जिणपणयवंदणकम्मणेहिं ।
वरपिंजणभरणणाइपाइं | चोरइं चत्तारि पणीहयाइं ।
धोरयाइं मायमंडणविभुम | माणिक्ककर दंसणाणंदमी ।
सरसएपमिअइमगाइपाउ | पंचुण्णिपवट्ठिउ वेरपाउ ।
पायाउ अहिदप्पिदेहयाइं | मुणिणाहपयइं सुरणयणयाइं ।
आपत्तहिं वोयणमेत्त विठ्ठ | मणिमंडउ जहिं जगणाहु णिविट्ठु ।
बत्तीस सुरिंद चरंति मड्डु | मणोहरु चीयउ जाउ धड्डु ।
ओरमणउ माणिउ बंधहुए | सप्पुरिसमहापुरिसाइंदहुए ।
किंणरवर दोण्णि महारसेस | ते णवमहाभावकम्मीस ।

घत्ता—किंपुरिसाइं पाणा विण्णि जण कहिय पुरिस किंपुरिसे वि ॥
गरिगिहि सोमप्पाहतपुरसेण अवकोयवि पंदरविहवि ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza—

इक्ष्वाकुरत्नमयमिलितकृष्णमुकुंदेवम् ।
शीलरत्नयार्णु आरामिय भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK d not give t.

1 १ MB °णियरंदिर. २ MB दैणियइं ३ M अणायवइ B हुरव ५ B omits this foot ६ G वरमणु ७ MB °पेंत MB चरिउ ९ MB किंपुरिस १ M भवरच्छवि B भवरिविहवि.

1 1a ण बत्तीस सुरिंद चवंति व्यन्तराधिपाः द्वात्रिंशत्, व्यन्तराणिष्व एव अन्धतरकाणा वन्तरीये चैव.

2

गंधव्वहं पहु समविसमणाम रक्खसहं भीम अवरु वि महभीम ।
जक्खिंद पुण्ण मणिभद्द भणिय भूयाहिव रूव विरूव भणिय ।
तहिं काल महाकाल वि पिसाय दाविय गेहिणिहि पिसायराय ।
वल घइरोयण दणुइंद कहिय णाइंद धरण फणिवइ ण रहिय ।
पइ वेणुणालि पुणु वेणुदेउ सोवण्णकुमारहं सोक्खहेउ ।
दीवहिं दीवगउ दीवचक्खु उयहिहिं जलकंतु जलप्पहक्खु ।
अमियगइ अमियवाहण दिसेस हरि हरिकंत वि सोदामणीस ।
गज्जंत पत्ति अलिणीलदेह थणियाहिव मेह महंतमेह ।
अग्गिंध अग्गि हुयवहसिहाह वेलंब पहंजण पवणणाह ।
इय पेक्खिवि वीस वि भावणिंद धम्माहिणंद वंदिय मुणिंद ।

घत्ता—विंभयपूरियहियउल्लएण हरिसुप्फुल्लियवयणें ॥
जय जय पभणंतें जयणिवेण चउदिसु पेसियणयणें ॥ २ ॥

3

णाहेयपायणियडइ वइट्ठु पुणु वसहसेणु गणणाहु दिट्ठु ।
पुणु वीयउ गणहरु जइवरिंदु अवलोयउ कुंभु महारिसिंदु ।
दढरहु दिहिपरियरु सत्तुदमणु गणि देवसम्मु धणदेउ समणु ।
धम्माणंदणु इसिणंदणक्खु जइ सोमयत्तु सुरदत्तु भिक्खु ।
गुणि वाउसम्मु झाणोवविट्ठु देवग्गि अग्गिदेउ वि वरिट्ठु ।
रिसि अग्गिगुत्तु अण्णेक्कु गोत्तु तेयसिउ सत्तुंदुयासगुत्तु ।
हलहरु महिहरु माहिंदु धीरु वसुएउ वसुंधरु अचलु मेरु ।
विण्णाणवंतु विण्णायणेउ मुणि मयरकेउ हयमयरकेउ ।

2 १ MB मुणिय २ MB णागिंद ६ B हुलपहक्खु ४ MB एत ५ MB आगिगइ
3 १ MB णिविट्ठु २ MB जसयरिंदु ३ MB सोमयत्त ४ M मुणि वाउसम्मु; B मुणि वाउ समुज्झाणो° ५ MB सिरि अग्गिगोत्तु ६ MB सत्त° ७ MB अचल ८ M मय°, B सय°.

2 7 *a* दिसेस दिक्कुमारा, *b* सोदामणीस विद्युत्कुमारा

पिएविणु पविणु परिचिंतिउ उवकोसहिउणु वि विजयगुरु ।
पुणु अप्पगुणु पुणु सप्पगुणु पुणु सेंभावि मायमि पवरु ।
पुणु विजयमहारउ विजयमिउ विजउ सिरिवच्छराउ भिरुणु ।
मयर वि पत्तमेर पत्तमोर वाइयासी गयकर परमार ।

घत्ता—विहिणा विहियौ एय मिलियपडे झायणीण मयमोय ॥
जोएय अप्पें विपसमहप्पें सज्ज वि साहु मराय ॥ ३ ॥

४

इम्मातवमहातवतवतपाई दित्तव्व तवंतइं घोरतवइं ।
तवसिरसुमविभारपाई अणिमाइगुणजुइं गुणइयाइं ।
आहारपतणुक्कमणागयाइं मयरहियइं मारुयासारयाइं ।
संबिपवसुयसायरपारयाइं सम्माइं वीसंगइं वीरयाइं ।
पणवीयकोट्ठबुद्धीसराइं वेउव्वपरिद्धिसिद्धिमाइणाइं ।
पंचमिदुजायकम्मापयाइं बुद्धिपयपयत्थपआयपयाइं ।
छम्मासवरिसउववासयाइं सट्ठकोडरकेयरवाडियाइं ।
केवल्लपरमविविचारयाइं जल्लसेहिहेतुपहरयाणयाइं ।
समसत्तुमित्तकंचणतणाइं पासायपडीबविवज्जमणाइं ।
सुमणपरमातगिरावराइं पीडिपवत्तणाइं केवियकराइं ।
संपियमवसमिवपारयाइं वाइयासीसासर ओवेयराइं ।

घत्ता—एहु सो सोमण्णु रिसु मुणि एहु मेरुंहु वि समियमु ॥
एहु पेम्मंतु सुलोयणि सुरूपु रिउ परिसिंसु मयंगु ॥ ४ ॥

३ MB नयरहु २ MB सयरु मायय° ११ MB सिरियउ मि १२ MB सन. १३ B °रता-

४ १ MB जणिम्म° २ MB ऐ मरु° ३ MB °वयातणाइं ४ M तवसंपरा° ५ M °उवि-ईइ° ६ M reads this foot as 11 a. ७ M read this foot as 10 b ८ B बसेयरा. ९ M पसिउ. १ MB पेम्मि.

4. 9 b पालावेलामि—प्रासादप्रतिमाविधानं सती वैदम्. 10 a पएमाइमि उपप्पहं पत्तामि पण्णमितिहराहणाम्. 11 a पणिचमपयरमय° विनिर्मितिया

5

इहु जोयहि भायसहाउ तुज्झु थिउ जाणिवि धम्महु तणउं गुज्झु ।
जेणासि सयंवरि सूरदित्ति रूसाविउ महराणि अक्ककित्ति ।
इहु सो दुम्मरिसणु णरवरिंदु समभावि परिट्ठिउ हुउ मुणिंदु ।
सम्मत्तसुद्धिसोहियमईहिं णाणुग्गमणिल्लूरियरईहिं ।
एकंवरछाइयथणत्थलीहिं दलवट्टियकलिमलकंदलीहिं ।
जल्लमलविलित्तंगोयरीहिं विज्जाहरीहिं भूगोयरीहिं ।
सुइसीलसलिलसगहसरीहिं सेवियकाणणमहिहरदरीहिं ।
आसंघियबंभीसुदरीहिं लक्खाइं तिण्णि संजमधरीहिं ।
अज्जियसंखहि कहियाइ जाइ पण्णाससहसअहियाइं ताइं ।
तेत्तियइ जि लक्खइं सावयाहं परिपालियवारहविहवयाहं ।
जीवह अदिण्णहिंसावईहिं तहिं पंचेव य लक्खइं सावईहिं ।

घत्ता—कागणिकरु सुरगुरु फणिवइ वि परिगणन्तु मणि मुज्झइ ॥
पणवंतहं देवहं दाणवहं मृगहं संख को वुज्झइ ॥ ५ ॥

6

अघंततत्ततवणीयवण्णु कंकेल्लिकुरुहछाहीणिसण्णु ।
पेच्छिवि सहमडवि जगजणेरु णं जवूदीवहु मज्झि मेरु ।
इच्छियभवभमणविणिग्गमेण सकलत्तें विलसियउवसमेण ।
इह चक्कवट्टिसेणाहिवेण पारद्धु थुणहु जयपत्थिवेण ।
जय देव दिण्णपविमलमणीस जय जिण तिहुयणचूडामणीस ।
जय जीवलोयवंधव दयाल जय पुरुतित्थकर सामिसाल ।

5 १ MB भाइसहाउ; K भायसहाउ but corrects it to भायरसहाउ २ MB एकंवर° ३ MB °विलित्त ° ४ MB पंच जि लक्खइ, K चउपण्ण जि लक्खइ ५ MB °कर ६ MB मिगह.

6. १ MB भवभवण° २ T तिहुवण°

5 11 *a* °हिंसावईहिं हिंसा आपदश्च याभि

6 1 *b* °कुरुह° वृक्ष 2 *a* जगजणेरु ऋषभनाथ 5 *b* तिहुयणचूडामणीस त्रिभुवनचूडामणिर्मोक्षस्तस्य ईश स्वामिन् 6 *b* पुरु° प्रथम 7 *b* मयतरुकरेणु मृत्युतरुमअहस्तिन् (?)

जय कप्पतरु जय कामधेणु जय चिंतामणि मयरद्धयरेणु ।
जय सयणयरओमालकोय संसारमहण्णवतरणपोय ।

घत्ता—पई पणविवि विरप्पसयवार्य वारिवि परमपय ॥
पई कीयई पावरजंमयई जयमीयहु भासिय जीवदय ॥ १ ॥

7

वड्ढियविमलियकम्मोहरयाई समयाई लेसहुं तिण्णि सयाई ।
पई थिविवि णाह जं तणु थिहु तं मुणइ ण वंसु ण कयु थिहु ।
सयकाई मणि चिंतयइ सामसंगि थिरु संमरंति किं सत्तमंगि ।
तुहुं जाणहि तिजगु वि वीयराउ तुहुं देवमउडमणिविहडियपाउ ।
तुहुं परमप्पउ देवाहिदेउ हउं कि सेवी तुहारी चरणसेव ।
इय वंदिवि जिणु जियसत्तुभिविग्घ पणविवि संभासिउ तेण मघ ।
पहु मेल्लहि गच्छमि करि पसाउ तवचरणु लेमि मंडमि विसाउ ।
तं सुणिवि चवई पयाहिराउ भउ रयणु तुहुं कि जय होहि राउ ।
ण पहुचइ जइ तुह णयचरेण तो पूरइ किं ण चरणपरेण ।
पई सयलेण वि सरणेण णायटि्ठयणयविहितिरणयेण ।
हउं गच्छमि मंतेउरि पहु तुहुं भुंजहि महि मामाणि विविहे ।

घत्ता—मा जाहि तवेवणु अणुपमुह वेढाविउ रिउ णमणि ॥
पई वेहउ वीरु महामइ वि सिप्पइ विसयकसायणि ॥ ७ ॥

१ MB चारिव; T भिवरिता भिरकृता

7 १ K वड्ढिय° २ MB मणिमिड्ढुय° (मिड्ढु 1) ३ MB पत्तमि ४ B मम्मर. ५ MB पहु. ६ MB वीर.

9 ए चाषेव निवमवदचाई चरिय एकमेवनिवमो कोटरपंचिवनहेत्ते एवोभिवमाचरचानाभिजि है भाभिव प्रवालीवरचा भिवरिता भिरकृता वेव.

7 1 b वनवई कलामम्; देव दुई विभिवनई भिवचनिवाणि नीवि चणि. 6 a विवदचि- विरदु चर्चोनुपमरचा विभित इवोभ्ययणीववचोमिवो देव. 12 हेत्ते विव भिवनपीर्ड चीता

8

जिणण्हवणधारिधुयमंदरेण ता विद्धमिवि चविउ पुरंदरेण ।
मेल्लिवि भरहाहिव जाउ पहु होसइ गणहरु तवलच्छिगेहु ।
तियसिंदहु त पडियण्णु तेण णियपणइणि आउच्छिय जएण ।
जं चिरु पिउंणिलयहु णिग्गयाइं ज णासिवि सरवासहु गयाइं ।
जं सत्तिसेणपरिपालियाइं अरिणा घरि सिहिणा जालियाइं ।
ज भगुरणहयरहिं दारियाइं बिण्णि वि मज्जारें मारियाइं ।
मुणिवरइ गलेण णिहालियाइं ज पिउचणजलणें पउलियाइं ।
चेउम्भियतणुसोहाहराइं जायाइं सग्गि जं घरुघराइं ।
जं वणि पचारिउ भीमसाहु ज हूयउ सो तेलोक्कणाहु ।
त सुयरमि सुंदरि जामि अज्ज साहेयउ मइं परलोयकज्ज ।

घत्ता—आयण्णिवि चल ससारगइ विहुणियसव्वसरीरए ॥
आमेल्लिउ पिययमु पणइणिए रुयन्तु वि गिरिधीरए ॥ ८ ॥

9

लहुयहिं विजयाइहिं भायरेहिं दिज्जंतु वि धम्मकयायरेहिं ।
अवगण्णिउं तेणु जिह पुहइरज्जु मयभावजणणु णं पीयमज्जु ।
हंकारिउ पुत्तु अणंतवीरु गुरुविणयवंतु परलोयभीरु ।
तहु पट्टु णियंधिवि जैयरवेण जिणवरु जर्यकारिवि घणरवेण ।
आउच्छिवि जीवाजीवभेय परियाणिवि णाणाणाणणेय ।
अरिमित्ति पउजिवि सरिस दिट्ठि सिरि लोउ विइण्णउ पचमुट्ठि ।
दैव्वें भावेण वि मुक्कगंथु णिग्गथु णियच्छियमोक्खपंथु ।
जउ दिक्खकिउ पणविउ जईहिं अट्ठहिं सयहिं सह णरवईहिं ।

8 १ G मदिरेण २ MB मेल्लहि ३ MB पिय° ४ MK सरवाहहु

9 MB तिणु २ MB हक्कारिवि पुणु ३ MB जयवरेण ४ MB जयकारेण ५ M दिक्खें

9 5 b णाणाणाणणेय चेतनरूपं ज्ञेय परिच्छेद्य, अथवा, नाना अनेकप्रकारा गुणपर्यायापेक्षया, अनाना एकप्रकारं द्रव्यापेक्षया, तच्च तद् ज्ञेयं च

तेयंमई णारउ सिग्नियपाउ बोहइ पुण्णाइं चयपक्खिणाइं ।
सो मुणिवरु मेहिहिवि मोहपासु आयउ गणहरु रिसहेसपासु ।

घत्ता—संभरमि पुव्वभवसंचरिउ धम्मइपसरणिवारउ ॥
भणुपाणिमिणि तुम्हइ होमि हउं संजमु धरमि महाघउ ॥ ९ ॥

10

जायउं णवियरकालि णवियराइं रिउमइयाइं छट्टुवमंदिराइं ।
चयकम्मपहावें णिम्मंडियाइं पासंतरं काणणि णिवडियाइं ।
णियपहंतइ सहुं मुहिहियपयणु जायउं सरि मिच्छियउ सत्तिसेणु ।
जायउं मुणिवेज्जावचु कियउ हियउत्तउ काइं वि धम्मि थियउ ।
जायउं जायउं पारावयाइं जायइं दोण्णि वि सावयवयाइं ।
जायउं वप्पज्जाइं खेयराइं सीलालंकियपवियंबराइं ।
रिसिसंघसमणु सिमियमयाइं जायउं सुराइं विण्णि वि जयाइं ।
तइयउं सम्मिवि बहुपरु थियउ मो तुम्हु चरिउ वि मंहु चरिउ ।
सीसेससीलसंतीपरेण तं वयणु समिच्छिउ मुणिवरेण ।
सञ्जणगुणगणजणियसीपाइ अप्पिय सुंदरिह सुहाणियाइ ।
पत्तिउ सकेसु सुंविवि सच्चु मयसीलगुणहिं भूसियउ देह ।
उम्मुक्कवियारपसंगियाइ जायउ तवचरणु सुणोवमाइ ।

घत्ता—मुसियपाणय जे पव्वइयाणि मंतिय ते मणमाणिय ॥
जं धम्मइपडुमहिसयघउ रयणगुत्त विहाणिय ॥ १० ॥

---

९ M हम्मइं होमि, K हम्मउं होमि.

10. १ MB णिवरियाइं २ MB सहुं पर ३ M मग्गु ४ MB °महवें णविचय ५ MB वरेण ६ MB सा° ७ MB सम्मुहविसरवणिमाए

---

9. b and c...

10. 8 a ... 10 b ...

11

गंधारिगोरिपण्णत्तियाउ चिरभवविज्जाउ परिचत्तियाउ ।
चिच्छड्डियघरवावारतत्ति अपरिग्गह थिय जयरायपत्ति ।
ता पियविओयणिद्धितवियकाय जूरइ अणंतवरवीरमाय ।
हा पुत्त पडिच्छिउ काइ पट्टु विणु पिउणा रज्जे को मरट्टु ।
इंदियइं पंच णेउ पीलियाइं प्राणेण ण णयणाइं मीलियाइं ।
मइं पावइ काइं जियंतियाइं पइविच्छोएं तप्पंतियाइं ।
इय ता जपंति मुयंति रिद्धि णियसुयहु देंति परलोयबुद्धि ।
मंतिहिं विणिवारिय दिण्णकामि थिय रायसासणाणंदधामि ।
घणरवघरिणिउ वयपयणईउ अवरेउ संजायउ सजईउ ।
वयरसंगसुयधारिणीउ णाणापुरगामविहारिणीउ ।
देवीउ अकंपणु तणुरुहाइं रयणहि मक्कदंतरु कहिउ ताइं ।

घत्ता—गुरु पुच्छिउ वम्मीसुंदरिहिं देव तिलोयालोयण ॥
अग्गइ कहिं संभउ जयरिसिहि होसइ केरउ सुलोयण ॥ ११ ॥

12

भुवणत्तयलोयसुहंकरेण ता भणिउ पढमतित्थंकरेण ।
उप्पाइवि केवलु विमलु णाणु जाएसइ जउ णिव्वाणठाणु ।
होइवि अहमिंदु सुलोयणा वि सुहभावें भावाभावभावि ।
माणियणिव्वाणरईरमाइ सुहुं भुंजिवि बहुसायरसमाइं ।
होही कणयद्धउ णाम राउ तउ चरिवि पणासिवि रोसु राउ ।
लहिही सुहु अमरणु अकरणालु जेवहु गलिलु तेवहु णालु ।

---

11 १ MB पत्तसियाउ, २ MB ण णिवीलियाइं ३ MB अवर वि ४ MB रयणिहि

12 १ B कणयद्धउ २ MB सो सुराउ ३ MB सुहु अमणु अकरणालु

---

11 8 *b* आणंदधामि हस्तिनागपुरे. 9 *a* वयपयणईउ व्रतजलनद्यः 11 *b* रयणहि रत्ना-श्राविकाया

12. 3 *a* अहमिंदु अच्युतेन्द्र

णिप्पसरु अक्खिवइ अत्थि मंति जिणधम्मि पेम्मु वि कुणिवि होंति ।
जिणधम्मि णिबद्ध मोहमुक्के जिणधम्मु भणमि सन्नाणमुक्के ।

घत्ता—जिणधम्मु पसीयवि मुहमइ जो परधम्मु कमाइ ॥
णरयपसीओयविसज्जणविहुरि णिवडिउ सो कहिं जिमाइ ॥ १२ ॥

13

मायइमंदरकयपमेयरासु वेडिविकम्मडिविभवपेसरासु ।
कायसमम्मवणिहिसिरासु आगामिवियमभवविवयपासु ।
सेणियह कवइ रिसि पुंखियसंकु मोहमु विसेसोर्धवपणिसंकु ।
पणइव णिसिसिमइ तिमयमूव वपरइ णवइयाणिमु हूव ।
सरंसिणु मवारव मुहणियासु संपत्तउ सो तिजगणाणासु ।
पेहिवि हरे णवइ सुरिंदु कार्हे मति णिहरइ जिणवरिंदु ।
भिरिसवमूसवमूसिड मर्यकु दीसइ सुरपयु ते सई सर्यकु ।
मायामु णिवडइ पुप्फविहि वउमाहिमाइ कमलं वाव लहि ।
जहिं पाउ एइ तहिं तहिं जिणमरु सुरवइ कुंवइ गुरुभत्तिभिमरु ।
जहिं वसइ तहिं काइ मि ण कुणइ जहिं वसइ तहिं जि कंकेल्लिखंडु ।
सीहासेणु कणयं तिण्णि छत्ति तिहुयणपहुत्तु णाइ कहंति ।

घत्ता—आविवि सुरसंघाहिं सुमणाणपइसंगहिं ॥
जिणणाहु मासिउ परिणवइ तपक्खीणमासेणहिं ॥ १३ ॥

४ MB पुण कि. ५ MB वेयणणु ६ B मुहरि

13 १ MB वायमिय २ MB वक्खिवणाहु ३ MB तिवयेर्दे वए° ४ MB णिवडय°, K णिवडय but corrects it to णिवडय° ५ MB पंचाइव ६ MB णिव°

4 b ण हु° हाणिवति.. 6 a णवइ यागु महीमिदम,

13. 10 °णवइ गहि णायातस्णि.

14

सुव्वइ दुंदुहि णाहि वज्जमाणु । पणवइ जणवउ पुलइज्जमाणु ।
देसोहिव उब्भायति चरुउ वहुकुसुमगंधपरिमलिउ मरुउ ।
भामंडलु णवरविमंडलाहु गच्छंति समउं बहुभेय साहु ।
पुव्वंगधारि तवतणुसरीर मणपज्जवणाणि सुहावधीर ।
देसावहिपरमावहिसमेय केवलिकेवलणाणेक्कतेय ।
णवदिक्खिय सिक्खुयं[12] संत दंत[13] वेउव्वियाइ वहुरिद्धिवंत ।
णिहियक्खयअक्खयपयसमीह[14] कइगमयवाइ वाईहं सीह ।
जहिं गच्छइ तहिं गच्छंति भव्व[15] जहिं अच्छइ तहिं अच्छति सव्व ।
माणव तिरिक्ख सुरवर असंख हु हु हुयति चउदिसिहिं संख ।
झं झं करति झुणि झल्लरीउ णच्चति णरामरसुंदरीउ ।
तुंबुरु णारय गायंति मिट्ठु भरहें दिट्ठउ पिउं[16] सुहु[17] णिविट्ठु ।

घत्ता—आउच्छिउ धम्मु महीसरेण जं जिह जेहउ पेक्खइ ॥
केवलि परमप्पउ णिक्कलुसु तं तिह तेहउ अक्खइ ॥ १४ ॥

15

गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गलु वि दुविहु णिज्जरु वि दुविह वज्जरइ अरुहु ।
भुवणाइं तिण्णि रयणाइं तिण्णि सल्लाइ तिण्णि गुत्तीउ तिण्णि ।

14　१ M सुम्मइ, B सव्वइ　२ B दोसाहिव　३ B चारु. ४ M °मलियगरुव, B °मलिउ गारु M adds after this in second hand and in the margin चउसहसदलभयसयाविहीर ६ B °णाण ७ M दुइदहसहास ८ M adds after this in second hand and in the margin रिसि सयपण्णास विमुक्कु वास ९ M adds after this in second hand and in the margin रिसि सहस पयडियविवेय, B adds मुणिरघसहस पयडियविवेय १० M °केवलणाणक°, B °केवलिणाणक°. ११ M adds after this in second hand and in the margin तेरघ- B adds णयणरगाई चउसुण्णसमेय　१२ MB °सिक्खिय°　१३ M adds after this in second hand and in the margin दहविउणसहसरिउसयमहत, B adds दहविउणसहस रिउसयसहत, णयणरगाई चउसुण्णहिं समेय, हु मयभयदोएक्कु वि णिरीह　१४ B णिहिअक्खयसुअक्खय°. १५ MB सव्व　१६ MB जिणु　१७ B सुहणिविट्ठु

15　१ MB पोग्गलु दुविहु　२ MB णिज्जर

14　2 *a* चरुउ अर्घपात्रम्　4 *a* ° तणुसरीर °कृशशरीरः

15　9*b* °जलजायकेउ मकरध्वज काम.

जीवहं गईउ कहियउ तिण्णि | अणवेक्खमय भासण वि तिण्णि ।
गुणवयइं तिण्णि जगि लोय तिण्णि | इयभाउँ भासिय काल तिण्णि ।
चउविहु चउगइ संसारसेरु | आहारउ चउविहु भणिउं मरणु ।
चउविहु पमाणु चउविहु जि दाणु | चउविहु दुप्पारउ झीसमाणु ।
चउ झाणइं चउ देवइं णिकाय | चोउमिच्छा उवविह चउकसाय ।
चउविहु जि बंधु चउविहु जि मोक्खु | विकह वि चउविहु गुणगणविवक्खु ।
चत्तारि वि पंचविमाणोहुर | मामाइ णिक्खिपवरूवापरोह ।

घत्ता—सज्झाय पंच आयारविहि आवइं पंच वरिट्ठइं ।
णिग्गंथ पंच ओहिसण्णइं पंचविहइं वि सिट्ठइं ॥ १५ ॥

16

सयमायणोदियहं पंच | पंचत्थिकाय समिईउ पंच ।
आसवणिरोहयरु पंच | अणुव्वय महव्वया वि पंच ।
संसारसरीरइं होंति पंच | गुरु पंच मेरु गिरिवर वि पंच ।
छज्जीवकाय छक्काल समय | छल्लेसाभाव वि समय वि भय ।
छद्दव्वइं छावासयविहीउ | सत्त वि भय सत्तावीसमहीउ ।
पयडिउ णडु पुव्विउ णडु | णच्छेव जीवगुण ते वि णडु ।
णव पायच्छय णव सीलवारि | परिसहु वि णव विहि दुक्खकारि ।
णवविह पयत्थ दहमेउ धम्मु | वेज्जावच्चु वि दहविहु सुकम्मु ।
दह भावमइए भवणंतवासि | एयारसिहासइ दह विहिणिम्म सुरासि ।
एयारह वह एक्कमाय | एयारहविह सावय विणय ।
पडिमाउ अणुवेक्खाणयाइं | बारह जिणवयणविणिम्मियाइं ।
बारह चरिय पाणिचरंय | बारह तव बारहविह सुसंय ।

घत्ता—तेरह चरियंगइं मोणिक्कइं तेरह किरियाठाणइं ।
चउदह गुणमग्गपोयणइं चउदह मग्गणठाणइं ॥ १६ ॥

१ MB कहियइ ४ MB छेयालक्खु ५ MB चउचउविच्छ चउविह चउम ६ MB सिट्ठइं. ७ MB चोउम°

16 १ MB °णायभाणं २ MB दहमेय ३ B अणुवेक्खाणाइं. ४ MB बारह तव बारहविह सुसंय. ५ MB एयिकाय

16. 6 b व न दे व न्मतारेया. 9 b व मि ब वि व ह न्नतेम्मतारीता

17

अरहंतें सिद्धंतासियाइं चउदह पुव्वाइं पयासियाइं ।
चउदह मल चउदह चित्तगय चउदह कुलयर कयमणुयसथ ।
चउदह रयणइं गुणिगहियणाम चउदह दक्खालिय भूयगाम ।
पण्णारह कम्मधराविहाय पण्णारह उवयासिय पमाय ।
सोलह वयणइं दुद्दारणाइं सोलह जिणजम्मह कारणाइं ।
सजम दहसत्त दहट्ठ दोस णाहज्झाणइं एक्कूणवीस ।
असमाहिणिलय घज्जरिय वीस कयमणमल सबल वि एक्कवीस ।
वावीस परीसह कुमुणिभीस सुद्दयडज्झयणाइं वि तिवीस ।
तित्थयर भणिय चउवीस ईस मुणिवयभावउ पुणु पंचवीस ।
छव्वीस समासिय वसुहभेय गुण सत्तवीस जइवरविहेय ।
आयारकप्प पवरट्ठवीसं अवसुत्ताइं वि एऊणतीस ।
भणियाइं मोहमंदिरइं तीस ।

घत्ता—एयाहिय तीस विवायरस कम्मह कहिय जिणेसें ॥
वत्तीसुवएस मुणीसरहं कुडिलाउन्नियकेसें ॥ १७ ॥

18

ज जलि थलि णहि पायालमूलि ज थूलु सुहुमु तिजगंतरालि ।
त पुच्छंतहु पणवियसिरासु भासिउ जिणेण भरहेसरासु ।
गुरु वंदिवि णिंदिवि दुरिउ दुट्ठु गउ णिउ णियपुरु णिलयाणि पइट्ठु ।
णरणाहें रयणिहि सुत्तएण सिविणंतरि गुरुपयभत्तएण ।
सूयरदाढाखडियकसेरु हलहुलिउ णिहालिउ तेण मेरु ।
अक्खिउ पहाइ सुयणहु हिएण सिविणयविवरणउ पुरोहिएण ।
किउ णयणगलियजलविंदुएहिं वच्छत्थलेहारोवरि चुएहिं ।

17 १ MB सिद्धताइयाइं २ MB मुणिगणियणाम ३ MB णाहाझाणइं ४ MBK सवल ५ MB सुद्दयज्झडयणाइं ६ B तिणि बीस ७ M adds after this वयममिदिपमुह जपइ जईस ८ MB एयाहितीस

18 १ MB सुविणय° २ MB वच्छत्थलु

17 1 a सिद्धतासियाइं सिद्धान्ताश्रितानि 2 b °संथ सस्था मर्यादा

तिहुयणवसियरिसिविहुयकम्मासु काआहिमहामुणि जियकम्मासु ।
ढज्झरिवि थोउ कम्माइं ताणु चउसट्ठि विहि परिससहासाणु ।
मरि विहेविवि पुण्णई पयडु सव्वसु केसासु पयारउ णासवसु ।
पावयवणकुसुमामोयमहुरु भावहिवि परिसिज्जउ सिद्धसिहरु ।

घत्ता—इसमहरिसिहिं समउ महारिसिहिं कामकोहविद्धंसणु ॥
थिउ पुव्वमहेसरि जिणवरिंद वंदिवि पलियंकासणु ॥ १८ ॥

19

आसिवि समणु अणणणणु कट्टोउ णोहुसिउ करिवि वयणु ।
सुविसुद्धबुद्धिसमीमावपासु आवउ भरहु वि मयणपासु ।
गिरि सोहइ कुसमकुमासवेहिं जिणु सोहइ ण्हाहिं आसवेहिं ।
गिरि सोहइ विसमिमविज्झरेहिं जिणु सोहइ कम्मडु णिज्झरेहिं ।
गिरि सोहइ णाणाविहमणीहिं जिणु सोहइ रिसिहिं सुविम्मणीहिं ।
गिरि सोहइ णविवमोरएहिं जिणु सोहइ सुरवरमोरएहिं ।
गिरि सोहइ धम्मधयण खेम जिणु सोहइ धम्मधयण खेम ।
गिरि परिवंदिउ सवराहिवेण जिणु पणविउ भरहाहिवेण ।

घत्ता—ता णाहु समुग्घायपयहिं वीरसमपहसंतायइं ॥
वेयणियणामगोत्ताइं कयइ णिम्मि वि आउसमाणइं ॥ १९ ॥

20

सुविपवरें किउ किरियाविहाणु वंयदोवेम ससरीरमाणु ।
णीसारिउ पंचाणउ णीउ तिसमस्थाणसमवउं णीउ ।

१ MB °पासु २ MB णिरिवाणु MB कम्माण ६ MB °रिवु ५ G णिरिणि ८ MB णिसिसिहर.
९ K सा°

19 १ MB आसिवि अणवणणु २ M कइयउ ३ MB णोहुसिउ ४ Tp समोरएहिं इति पाठे
रत्नमयूरा इति टरणाम ५ B णोणु

19 1 अणणणु अनवरतपालनम् अनघवचनम् ऐवानवभाम् 3 a कुसमकुमासवेहिं कुसुम-
मयुमवी 6 b सरमोरएहिं गरुडा अवसीला वरणा हे 7 a धम्मधयण धर्मध्वज इदमिदेव,
b धम्मधयण धर्मध्वजेन. 9 समुग्घायपयहिं समुद्धातमिति ध्यानसमवधानपूर्वणी.

20 1 किरियाविहाणु सर्वपापसमवेतम् परीति तानम् 2 °णरणपवद समावश्यवा
मनो निवृत्तिरीरूपक सर्वेतियाना चैतन्यम पर्यन्तम्

अइदूपसारिउ पुणु सुरीहु ण तिहुयणघरि दिण्णउं कयाडु ।
अप्पाणउ देवें देवणविउ रूआयारें सहस त्ति थविउ ।
णीसेसलोयपूरणु करेवि विवरीए चारें सवरेवि ।
तेअइयकम्मओरालियाइ तिण्णि वि अगाइ णिम्मोलियाइ ।
मुणि मेल्लिवि तिज्जउ सुहुमकिरिउ सपत्तु चउत्थु छिण्णकिरिउ ।
तहिं सुक्कझाणि आयउ अजोइ मणवयणकायमुक्कउ विहाइ ।
थिउ देहब्भंतरि सामिसालु क ख ग घ ङ समक्खरभणणकालु ।
अच्छतु वि अगु ण छिवइ देउ फलछल्लि व जरदेरंडबीउ ।

घत्ता—दसणणाणाईहिं वसुसमहिं सिद्धगुणहिं सपण्णउ ॥
ससहावें जोइवि परमपए परमेसरु सपण्णउ ॥ २० ॥

21

ता सक्कें कय माणवमणोज्ज अरुहहु पचमकल्लाणपुज्ज ।
सियसिवियहि णिहियउ णाहदेहु कइलाससिहरि ण अरुणमेहु ।
भभाभेरीझल्लरिसयाइ सुरतूरिएहिं तूरइ हयाइं ।
गायंतिहिं किंणरकामिणीहिं णच्चंतिहिं फणिसीमतिणीहिं ।
धिप्पतिहिं णवकुसुमजलीहिं उब्भियउल्लोवधयावलीहिं ।
सहलक्खयधूवविलेवणेहिं भिंगारहिं फलसहिं दप्पणेहिं ।
आढत्तवित्तथुइकलयलेहिं अवरेहिं वि णाणामंगलेहिं ।
कप्पूरचंदणागुरुतुरुक्ख सलं विरइय खडिवि विविह रुक्ख ।
अच्चेप्पिणु रिसिपरमेसरासु तहिं णिहियउ अंगु अणगणासु ।
पय पणवतहिं तविरतिडिक्कु अग्गिदहिं मउडाणलु विमुक्कु ।

20 १ G सरीहु २ M फयरायारें, B कयआयारें, T पयरायारें ३ MB विवरीरें, T विवरीए ४ MBT णिव्वालियाइं, ५ B छण्ण° ६ MB भरण° ७ MB जरठेरड° ८ MB वसुसमिहिं ९ MB जाइवि उड्डगइ तिहुयणसिहरि णिसण्णउ

21 १ MB सुरतूरएहिं २ MB धूम° ३ B पुरुक्ख ४ M सयल विइय खंडिवि, B सर् विय रयवि खडिवि

8 *a* सुरीहु देवस्तवतु देवस्तुत वा 4 *b* रूआयारें प्रतराकारेण 5 *b* विवरीए चारें सवरेवि प्रथम लोकपूरणसवरणं कृत्वा ततो रुजकारसवरण ततो दण्डाकारसवरणमिति 6 *b* णिम्मालियाइ नि परिस्पन्दीकृतानि

21 10 *a* °ति डिक्कु स्फुलिङ्ग

घत्ता—भरहेसु परत्तगु परहरिउ भवपरिभमणहु भमाउ ।
णिवि थं संसारें तेसियउ जिणकम्मकम्महु कमाउ ॥ २१ ॥

22

उप्पण्णिउ धम्मु भवदुहविणिवारणु जं सिरिहिं मुइउ भयभरकं ।
पुणु मिल्लिउ णयणि आसाकसाउ तणु पणु कणडें भप्पसाउ ।
वणु कुमहु गगणयलमहिसाउ मुणिवर सहारिय परिभमाउ ।
तिण्णि वि दिहि पुण्णिय सोहियाहिं पय जैव तिह पडिमि चरियाहिं ।
ते भण्णिवि पुण्णमणु पवित्तु अण्णेकहिं भाउउ भमिओणु ।
मारुंभरि कंठि मुयउउयवासिहरि हिप्पवेदु विहियउ णाहिविवरि ।
मणु मुर्दपासि मउरम्ममाउ वसमंउणु जिह ते साइउ काउ ।

घत्ता—जे तुम्हइं भावउ मारुतु सुहुं व मग्गु होउ पियारउ ।
एउ भणिवि तिपाउसु वंदियउ रिं पियाहु भेरउ ॥ २२ ॥

23

केवी सुह तहो होउ बोहि भम्महं वि भवाण मेमि समाहि ।
एव वीसंतहिं कम्पासमेहिं वंदियउ तिपाउसु केमरेहिं ।
णिउरेणहिं कोइसगणेहिं वंदियउ तिपाउसु मायवेहिं ।
वेयाडेवीइ महासरिह वंदियउ तिपाउसु असमुहिं ।
मरहेण दुक्खुप्पियमवेण वंदियउ तिपाउसु परियवेण ।
केवलिपिकसोरसहि सहरिवासि पणतुहियउवाउसि माहमाहि ।

१ MB णाविवा

22 १ B खरिम° २ K मण्ण° ३ MB चय णिव वव ४ G मार्णा ५ MBK मुणुमुण° ६ MB मुयरूह. MB मोमरणु

23 १ MB णमरमाहि

22. 0 ‹ वि णक इ इयाडे इयमलके 7 मुडइ हि मवामानेहे 0 हिगाडु मम्म

23 0 °ण R °णमे

सूरंग्गमि कंसणचउद्दसीहि णिव्वुइ तित्थकरि पुरिससीहि ।
रोवइ सोयाउरु सयणविंदु सइं सोयइ भरहु महाणरिंदु ।
तेलोक्कमंदिराधारखंभु कहिं पेच्छमि देउ जुगाइबंभु ।

घत्ता—पइं विणु जिण अधइं लोयणइं दिसउ असेसउ सुंण्णियउ ॥
उब्भिवि हत्थ ओम्माहियउ पयउ वरायउ रुंण्णियउ ॥ २३ ॥

24

तुहु मज्झ बप्पु जगडिंभवप्पु पइ विणु को कहइ कलावियप्पु ।
पइं विणु को पालइ इट्ठ सिट्ठ को विसहइ गुरुतवचरणणिट्ठ ।
पइ विणु को जाणइ तच्चभेउ को होइ देव देवहिं वि देउ ।
पइ विणु अणाहु सामिय तिलोउ ता गणहरु भणइ म करहि सोउ ।
इह सो मुउ जो मुउ गब्भि वसइ छिज्जइ भिज्जइ दुहदलिउ रसइ ।
तुह ताउ देउ तित्थयरु पवरु परमप्पउ हूयउ अजरु अमरु ।
सक्केण जि त जि पउत्तु तासु जो सुयरतहं णासइ किलेसु ।
सो तुहुं किं सोयहि जणणु भणिवि जो जायहु सिद्धु तमोहु धुणिवि ।
अरहंतु सरंतहं होइ धम्मु मा मोहें तुहु संचहि दुकम्मु ।
तं णिसुणिवि राएं दुण्णिरिक्खु मइंइं साहारिउ तांयदुक्खु ।

घत्ता—गउ सुरवइ सग्गहु ससुरयणु वंदिवि परमजिणेसरु ॥
मडलियमहामंडलियवइ साकेयहु भरहेसरु ॥ २४ ॥

25

सोमप्पहु हयसुहदुक्खहेउ सेयसराउ बाहुबलि देउ ।
गय णिव्वाणहु तिजगुत्तिमंगि थिय तिण्णि वि अट्ठमधरणिरंगि ।

१ MB सूरुग्गमि ३ B किसण° ४ B सुण्णउ ५ MB ओमाहियउ ६ MB रुण्णियउ
24 १ M दुहमलिउ २ MB मडइ ३ MB हियययदुक्खु
25 १ MB तिजगुत्तमगि

11 ओ म्मा हि य उ उत्कण्ठित
24 2 *a* इ ट्ठ सि ट्ठ इष्टा मोक्षयोग्यतया ये शिष्टा भव्या
25 1*a* ह य सु ह दु क्ख हे उ त्यक्तेष्टानिष्टविषय

सईं गयणाहिं देवाहरूवहिं आसियसमपमोहमोहारूवहिं ।
णिव्वाहियवीसियकम्मरेणु काविण मेरुम्मि वसइ सेणु ।
मइ मोक्खहु सव्वंगपसिपवयरि पंचहिं वि तासु साकेयणयरि ।
कुंकुमविलेव दोर्यंतपत्त इप्पयपाहि मुई सोर्यंतपत्त ।
णवहोत्तरि पंडुर पाय केसु सिविहि वि णरडमसु सुविभियसेसु ।
णवएयरपुरवरपवरलेस णिपमुयणु समप्पिवि महि मसेस ।
भूवसु भूरिपसरियपरिहिवेण तवचरणु कारइ भरहाहिवेण ।
परिचडइ ण विहुरप्पाउ जाम उप्पण्णउं केवलु तासु ताम ।
हूयउ परमेट्ठि परमप्पताणु घाइरवयक्खियअहिं सुम्मघाणु ।
पेक्खिवि भव्वइं भवमोहपासु महिमंडलि विहरिवि दीहकालु ।

घत्ता—गउ भरहु वि मोक्खहु विहुयभउ विविहकम्मरयपवणुरु ॥
कैविपिसहर्थिमरपवरणपुप्फर्यतगणसंघुरु ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगरचक्कवट्टिसयरवत्तण्णमण
णिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥

॥ संधि ॥ ३७ ॥

॥ समाप्तमादिपुराणम् ॥

१ MB रूवाइहिं ३ MB °मोहमहिं ४ MB °ससिय°; T सासिय. ५ MB मवई. ६ MB इप्पणि ७ B इप्पणि सेतु. M ताव तासु B केवलाणु ९ M °घम्मणेमि धुउ; B धम्मणेमि धुउ १ MB पविसेसर°

8 a कुस्ताइप्पहिं काहीति ... 4 ... निर्धरित पूर्णाकलिता ... नारिता: ... 10 ... 11 a ... 14 °भिवइट° ...

NOTES

NOTES

[*The references in these Notes are to Samdhis in Roman figures and Kadavakas and lines in Arabic figures A brief summary of the contents of a samdhi is given at the beginning to enable the reader to follow the Text The Notes that follow supplement those given at the foot of the page T Stands for Tippana of Prabhācandra.*]

I

[The Poet offers homage to Rsabhanātha, the first of the Tīrthamkaras, and to the goddess of learning, and declares his intention to compose a Mahāpurāna By way of introduction the poet says that once in the Siddhārtha year (881 of the Śaka era, i e, 959 A D) he arrived at the outskirts of the town of Mepādi (Mānyakheta, modern Malkhed) and being fatigued with a long journey rested there in the grove Two men of the town, Annaīya and Indarāya, approached him and requested him to visit the minister Bharata who would give him a good reception The poet was at first unwilling to do so because of his bitter experiences at the court of king Bhairava *alias* Virarāja, but these men assured him that Bharata was quite a different person and would receive him well Accordingly the poet saw Bharata, was well-received, and rested there for a few days Bharata then requested the poet to compose a Mahāpurāna so that he would make the right use of his poetic gifts, and offered him all help The poet was at first unwilling, because he was afraid of the wicked who criticised even good works Bharata asked him not to mind them The poet then modestly said that he was not competent to undertake the task as he was ignorant of the great philosophical systems, works of the poets of the past, works on grammar, rhetoric and metrics, still he would undertake the task out of devotion to the personages figuring in the Mahāpurāna The poet thereupon invoked the aid of Gomukha Yaksa of Rsabhadeva and of Padmāvatī Yaksinī, the goddess of learning

The poet proceeds There is in the Jambūdvīpa a country called Magadha with its capital Rājagrha King Śrenika was one day seated

in his court with Cellanādevī, when a messenger brought to him the report that Mahāvīra had arrived at the garden outside the city. The king immediately rose from his seat to pay homage to him and recited a prayer glorifying him.)

1 The poet pays homage to Ṛṣabha, the first Tīrthaṃkara.

1 3a मुणियविहि जम्मु जंगमु, T., having understood well the animate and inanimate divisions of the world. 3b दिव्वतणु पिंगलमणिसुवण्णियमेहि वणिय, T. the Jina possesses a body which is divine, i. e., it possesses ten excellences such as absence of perspiration. The number of atiśayas which a Jina possesses is 34. See Abhidhāna Cintāmaṇi I. 57–64. Of these ten are peculiar to the body of the Jina. See IV 2. 4a चरियणयमयमणपयत्थ, मणिम मणमणपुरमणयमय मोक्खपह कयय मार्गं प्रकाशयतो येन स., T., one who preached the path leading to the city of eternal abode, i. e. emancipation or Siddhi. 5a गुणविमुणोवणिवासं, गुणा सन्मार्ग तेषां गणनया निवासः, T. the home of a large number of auspicious qualities. 10a विलसियणि कुसुमियमयमणु, T. The sky was rendered variegated by flowers which Indra dropped down from heaven. 15b मणावयं, the poet wants to suggest incidentally the name of the metre which is मणावयं. 17 जासु पिसि, यस्य गिरि, in whose preachings.

2 The poet pays homage to the five dignitories of the Faith, usually called पञ्चपरमेष्ठिन्, viz., जिनेन्द्र, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय and साधु, and also invokes the aid of the goddess of learning.

2. 3b चोद्दसपुव्वि कोमलपि चतुर्दशपूर्वाणि कोमलपदानि च, सर्वं चतुर्दश पूर्वाणि, T. The poet describes the goddess of learning under the image of a fair woman; all the epithets used are therefore applicable to सरस्वती as well as स्त्री. 5a सइरि गमि, going at will (applicable to a lady); moving in a metrical form (applicable to poetry). 6a चोद्दसपुव्विण चउदसपुव्वहुँ पुणा सरस्वती, स्त्री तु चतुर्दश (?) पूर्वं चतुर्दशपूर्वाणि सत्पुरुषाणि (?) सिरसे च सोमि T. The goddess possesses fourteen Purva books, ancient texts of the Jainas, now lost; the woman possesses purity of seven ancestors on the mother's side and seven on the father's side. पुणसणि, सरस्वती पूर्वसंयुक्ता, स्त्री तु—

पुण्णा मातृ च तात पित्रे च (पितेच ?) शुद्धी यदो च सोदे च।

सप्तैव तु मातुर्बि पैव जनक तु वोदव ॥

तसदे, अंगाणिसमणविसमयार इणि द्वादशांगयुक्ता, T. The twelve aṅgas are the

famous books of the Jain Canon such as आचाराङ्ग etc. The woman's body also is fancifully divided into twelve parts, two legs, two arms, the hips, back, chest, head, ears, nose, eyes and lips. 6b सत्तभगि, सरस्वती सप्तभङ्गोपेता स्त्री तु सत्तभगि धैर्यरहिता प्राणिषु कौटिल्ययुक्ता च, T It would be better to interpret सत्तभगि applicable to a woman as सत्त्वभाङ्गिनी पुरुषाणां धैर्यनाशिका

3 3a-b भुवणक्कोगु तुडिगु, कृष्णराज तस्येद् चिह्नम् T We know that the Rāstrakūta kings had a number of *Birudas*, we have in Puspadanta's works a few others such as Śubhatunga (see I 5 2a and note thereon) and Vallabhadeva तुडिगु seems to be of Kannada origin 7b मायद-गोंछगोंदलियकीरि, आम्रलुम्बिमीलितशुके, (garden) where parrots have gathered on the blossom of mango trees गोंदलिय comes from गोंदल, a Deśi word, which means a gathering Compare गोंधळ, गोंधळी in Marathi 9b सइ means पुष्पदन्त, so also अहिमाणमेरु in 12a below 14 वर or वरि, an explative of frequent occurrence, means 'it is better,' 'I would rather prefer' 15 म णिहालउ सुयणमे, let him not see in the morning the face of a king who is under the influence of the wicked

4 Drawbacks of royalty condemned

4 3a सत्तगरज्ज, kingdom with its seven constituents, viz., स्वामी, अमात्य, सुहृत, कोश, राष्ट्र, दुर्ग and बल 4a विससहजम्मइ, fortune born along with हालाहल poison at the time of the churning of the ocean

5 Bharata glorified

5 3a पाययकइकव्वरसावउद्ध, connoisseur of the flavour of the poems of Prakrit poets. This epithet has a special significance, probably because Prakrit poetry was not much admired or understood and even ignored altogether at this time

6 The poet's reception at the house of Bharata, and his proposal to him to compose a Mahāpurāna

6 9a देवीसुएण, by the son of Devī, i e, by Bharata.

7 The poet shows his timidity to undertake the task because of the wicked who censure even good works like the Setubandha of Pravarasena

7 3a गोवज्जिएहिं etc This series of epithets have double meaning one applicable to पगदिण etc. and the other applicable to the wicked

8 Bharata assures Puṣpadanta that wicked people are always like that and that the wise should pay no heed to them.

8 7b ꣳक्कर भसंदेड रसंदेड, let the dog bark at the full moon. 9b ...., another epithet of Puṣpadanta; compare ....

9 The poet, by way of modesty shows that he is not qualified to undertake the Mahāpurāṇa, and yet he does so out of devotion to the adorable persons.

9 1a ... etc. For these writers see notes at the bottom of the page, and also Introduction to Nāyakumāracariu page XXIII. 13b कुंडेण णवु को जलणिहि who can measure the waters of the ocean by means of a Kuḍava, a small measure? 17 पिट्ठिमंसु किं भसमि, why should I say at the back? i. e., I say it openly. I challenge the people to point out drawbacks in my work if they notice any.

10. The poet invokes the aid of Gomukha Yakṣa and Cakkesari Yakṣiṇī who are the guardian deities of ..., and of the goddess of learning.

10 14 जो ...., he who barks at my work.

11 The location of the Magadha country.

12. Description of Rājagṛha, its capital.

12. 9b ...., ...
T where there are sweet songs of churning women when they are engaged in the act of churning. It is the practice of cowherd women to sing sweet songs at the time of churning.

13. Description of the outskirts of Rājagṛha.

13. 11b ... ..., it was, as it were a storehouse, ..., of collyrium of ... The lotus flower with a black bee sitting in it, appeared to be a collyrium box of the goddess of beauty.

14. Description of the town of Rājagṛha.

14. 9b ... ..., like ignorant people who are misled by false doctrines (कु+समय).

15. Description of Rājagṛha continued.

16 King Śrenika described

18 King Śrenika receives the report of the arrival of Mahāvīra

18 6b चउदेवणिकाय, the four classes of gods are भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क and वैमानिक 7a चउतीसातिसय, the Arhats possess thirtyfour atiśayas or excellences which are enumerated in Hemacandra's Abhidhāna Cintāmani and several other works See page 5, notes of Miss Johnson's Translation of Trisasti 9b अट्ठविहपाडिहेर, these Prātihāryas, miraculous possessions of Arhats, are eight viz., अशोक, सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामण्डल, दुन्दुभि and त्रिछत्र 10b विउलइरि, is a small hill in the neighbourhood of Rājagrha 15 पुप्फयततेयाहिय, the poet puts his name in the last line of a Samdhi of each of his three known works. It is thus his अङ्क, or mark, and is interpreted in several ways, but more frequently as चन्द्र and सूय, and the Tirthamkara of that name The term पुप्फयंत is at times paraphrased by पुष्फदसण, कुसुमदसण etc भरत, the poet's patron, is also mentioned in the Ghattā lines The term भरत also may be regarded as another अङ्क of the poet and is interpreted as भारतवर्ष or भरत, the first Cakravartin

II

[King Seniya, on hearing the news of the arrival of Mahāvīra, proceeds along with his retinue to see him After paying his respects to the Jina, the king asked his disciple Goyama to recite to him the Mahāpurāna which he does

Goyama then begins his narration by first mentioning the divisions of time, the Kulakaras and their contribution to the civilization of the Universe The last of these Kulakaras was Nāhi (Sk. Nābhi), and his queen was Marudevī Now Indra remembered that a Jina was to be born in their house and therefore ordered Dhanaya, i e, Kubera, to make the town of Ujjhā (Ayodhyā) gay and pleasant so that it should be a fit place for the birth of the Jina]

1 6b ण वररायवित्ति रिउदारिणि, a lady who took in her hand a कुवलय, i e a lotus flower, is compared to royalty (वररायवित्ति) which also holds कुवलय, i e, the globe of the earth, and chastises the enemies (रिउदारिणि)

2 13 जणणजणणत्तिहरु, (Jina) who removes the misery (अत्ति-आर्ति) of birth (जणण) of the people 14 भुवणमोरुहदिवसयरु, the sun to the

lotus, viz., the universe; the Jina gladdens the universe as the sun blooms the lotus.

3. 5–11. These lines contain a long epithet of Jina सुर—मणि कलणाससयणहिंससुपखिसयपायकमल, (Jina) whose lotus-like feet are washed by waters flowing from the gems in the coronets of सुर and other gods when they bend their heads (सिरणमण) before him. 35 मई णेस्सु पंचमगइ, you will please lead me to the fifth गति, i. e., सिद्धगति, emancipation from संसार, the first four गतिs being देव मणुअ णिरय and तिरिय.

4. 7a णउ संतु आइणिहि णिरुत्तु, there is no beginning (ण+आदि) and no end (ण+अंत) to the list of the coming Jinas, i. e., the number of the future Jinas is infinite. 8–9 वट्टणु लक्खणु etc. Time has no beginning and no end; i. e., it is infinite. Time is an associating cause of change in the Universe. It has no flavour, no odour, no colour and no weight. Time in abstract (णिच्छयकाल) is marked by its fleeting i. e., constantly passing (वट्टण). 12 ववहारकालु Time as understood in our daily practice.

5. 8b णिरवसिरिणाहें, by मरुदेव who is the son of सिरिवसिरि, popularly known as श्रेणिक. Compare जसहरचरिउ, 109 where the name given is णिरवसिरि. 10a गणिज्जइ गुणिज्जइ, T., is multiplied.

6. 10a भेयउ भेज्ज, divisible, to be divided.

8. 4–5 उवसप्पिणि, i. e. उत्सर्पिणी is defined as one in which strength, prosperity, height of the body, piety, knowledge, gravity and courage are on the increase. ओसप्पिणि, i. e., अवसर्पिणी is one in which these qualities are on the decrease. 7b कुलयरहिं, the ten कुलकरs, enumerated in the foot-notes.

9. 3a पडिसुइ, the first कुलकर of the Jain mythology. 4a सयधणुसय, having lit. of the length of an सय, large number. The other कुलकरs or मनुs mentioned in 9 and 10 are: सम्मइ, खेमंकर, खेमंधर, सीमंकर, सीमंधर, विमलवाहण, चक्खुमंत (चक्षुष्मत्), जसवंत, अहिचंद, चंदाभ, मरुदेव, पसेणइ and णाहि (नाभि).

11. 1 The first कुलकर explained to the world, i. e., discovered for the first time, the functions of the sun and the moon who were not noticed by the people upto this time because the world was full of

the light supplied by the कल्पवृक्ष The second discovered the stars and planets Similarly each कुलकर contributed something towards the human civilization The last कुलकर i e नाभि, discovered the method of cutting the नाल of children, and also discovered clouds which, by rain, rendered the earth full of various crops so that nobody felt the absence of the कल्पवृक्ष He also discovered fire, the art of cooking and weaving for the benefit of humanity

17 5*b* सुयरइ सुरवइ णियमणि तक्खइ, Indra, on learning that a तीर्थंकर is to be born at a particular place, orders Dhanaya, i e Kubera, to make the city beautiful and rich, so that it becomes fit for the birth of a Jina

19 1*a* छुड्ड छुड्ड—Hemacandra in his grammar under IV 422 gives छुड्ड as a substitute for यदि I do not think that छुड्ड always means यदि, in fact the usual sense of छुड्ड seems to be क्षिप्रम् which sense suits the context here as well as elsewhere The marginal notes in Mss here render it as यदा but I do not think it to be correct

III

[The birth of a Jina in Jain works is described in such a monotonous way that we are often tempted to think that we are in the field of mythology rather than that of history When the parents of a Jina are determined, Indra orders Kubera to make the town of his parents beautiful and fit to be worthy of such event. The Jina in the immediately preceding birth is born in heaven Six months before his period of life in heaven is to end, Indra sends six goddesses, सिरि, हिरि, दिहि, कंति, कित्ती, and लच्छी to the earth to purify the womb of the lady where the Jina is to be born They then come to the mother of the Jina and wait upon her as her maids The mother then sees sixteen objects (according to the Śvetāmbara tradition, fourteen) in a dream towards the end of the night. She sees her husband the next morning and tells him that she saw, the previous night, sixteen dreams The husband then explains to her the fruit of her dreams which in substance is that she would be the mother of a Jina. The Jina then descends into the womb in the form of some object (in the case of Rsabha, the first Tīrthamkara, a white bull) Gods attend this event There is shower of gems sent by Kubera. Jina is then born in due course Gods headed by Indra arrive at the birth-place of the Jina, see the

Jina born, go round him three times, offer him prayers. Indra then hands over to the mother a babe produced by his magic, takes away the Jina to the mountain Meru, puts him on a jewelled seat and gives him a ceremonious bath, the waters of which, flowing over the mountain Meru, are subsequently saluted by all gods. Indra then recites some hymns in praise of the Jina, and then brings him back to his parents. This event is usually called a जम्मण (Sk. जन्मकल्याणक) or more particularly जिनजन्माभिषेककल्याण. These events are almost monotonously described in the life of a Jina, but Puṣpadanta has on every occasion, enlivened the details with his poetic skill. The particulars about Ṛṣabha, the first Tīrthaṃkara are —

(1) Town of birth—Ayodhyā.

(2) Parents—Nābhi and Marudevī.

(3) Descent in the womb—as a white bull.

(4) Date of Descent—month Āṣāḍha, dark half second day Uttarāṣāḍhā Nakṣatra.

(5) Date of birth—month Caitra, dark half, ninth day Sunday Uttarāṣāḍhā Nakṣatra, Brahma yoga.

(6) Name—Ṛṣabha Ṛṣabha or Vṛṣabha.]

4. On [illegible], in the courtyard of the king. Although Prakrits in general do not allow conjunct consonants with we get such conjuncts in Apabhraṃśa. See Hemacandra IV 398 and 399. Of our Mss. G and K only give conjuncts with र while MBP do not. I have therefore considered G and K to preserve older recension of our text on this account as also on account of their retaining forms with र such as [illegible] etc. 11 [illegible], i. e., [illegible].

5. Thus Kahāvalī gives the list of sixteen objects which Marudevī sees in dream, and which foreshadows the birth of a Jina. The Śvetāmbara tradition differs from the Digambara one in that they mention only fourteen objects of the dream (चउद्दस महासुमिण). Compare कल्पसूत्र 4 and 32–47.

[illegible]

These objects, according to the Digambara tradition, are :—

(1) An Elephant breaking open the mountain slopes

(2) A Bull loudly roaring

(3) A roaring Lion.

(4) Goddess Lakṣmī being bathed in waters from the trunks of the elephants of the quarters (दिसागअ) The Svetāmbaras designate this under अभिसेय

(5) Wreaths, two in number, of fresh flowers

(6) The rising moon

(7) The rising sun

(8) A pair of Fish

(9) A pair of Jars filled with water

(10) A fine lotus pond

(11) A surging sea

(12) A royal seat marked with lion's head (सिंहासन) The Svetāmbaras omit this object from their list.

(13) A heavenly palace or mansion house

(14) A palace of snakes or of the king of snakes (नागभवन); this object is omitted in the list of the Śvetāmbaras.

(15) A heap of Gems.

(16) Burning Fire.

It will be seen from above that the Śvetāmbaras omit 12 and 14 from the above list and thus reduce the number of objects to fourteen.

7 5*a* सोलह वि तवभावणाओ पहावेवि, having meditated upon the sixteen forms (भावना) of penance such as दर्शनविशुद्धि etc These भावनाs are —दर्शनविशुद्धिः, विनयसंपन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगः, अभीक्ष्ण संवेगः, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरणम्, अर्हद्भक्तिः, आचार्यभक्तिः, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि., मार्गप्रभावना and प्रवचनवत्सलत्वम् Compare also नायाधम्मकहाओ, VIII 64, तत्त्वार्थाधिगमसूत्र VI 24

19 14 तहु देसहु मइ णेहि, take me to that region where there is no birth etc, i e, to the region of the Siddhas

21 11*a* विसु धम्मु तेण भाइ त्ति, the Jina is called वृषभ because he shines forth (भाइ, भाति) by विस (वृष), i e, धर्म or piety

IV

[Prince Ṛṣabha grew in the royal house in ideal surroundings. He possessed ten bodily atiśayas or excellences such as bodily purity want of perspiration etc. He grew strong and powerful and young His father then thought of getting him married. The prince was at first unwilling but being pressed by the king, agreed to be married to जसवइ and सुणंद, daughters of the kings of Kaccha and Mahākaccha. The marriage was celebrated with great pomp. On the evening of the celebration, under the moon-lit sky a concert was arranged by celestial nymphs with dance music and singing. The ceremony was rounded off by gifts which the king made to everybody so as to satisfy all his desires.]

1 10a उत्ताणसेज lying on his back the young boy was looking up, but the poet fancies that he is watching the path to emancipation which, as it were, goes in the upward direction. 16a धुर वेंगें चलंतें while walking slowly in the childhood. 16b चउसट्ठि वि कलउ sixty-four arts, and not seventytwo as with the Svetāmbaras. For that list see Rāyapasenyasutta or Paesikahāṇayam, para 89 and my note thereon.

2. This Kadavaka mentions some of the atiśayas which a Jina possesses.

3 10a जो कप्परुक्खु सो कट्ठु पर, the so-called wish-tree is, alas! a mere log of wood.

4. 14b अव्वाहिरयं, रूसेसि(वाजा)विनय किं, T., i. e., lullaby or song to make the baby sleep. 15 हुल्लरु जो जो, these are the expressions which the mother uses to make the baby sleep.

9. 10a चंदोवचीणोहिं छण्ण, covered with fine canopy (चंदोव) of China cloth.

10 8a सुरइ, सु+रइ shines forth.

17 25 दुद्धें व धोयउ, दुद्धेण ण्हाउ as if washed or bathed in milk Note that दुद्धें is the Inst. sing form which is obtainable by confusion of अनुस्वार of the Instr (Cf. Hemacandra IV 342) and ए of the Nom. and Acc. 4a आउज्जइं जेम ठविय ए तु the arrangement of the musical instruments for concert is described here, which arrangement is

called पद्याहार or प्रत्याहार. 9b कम्मारवी is an act of cleaning the musical instruments. 10b उद्विषरणु कि उ हिंदोलरण, the introductory notes of the हिंदोलराग were sung first 11b कउ पच्चणीहिं पुणु तहिं पवेसु, the dancing girls then entered presenting the three methods of keeping time (ताल), viz. वण्ण, छड्डय and धारा T adds —समस्तनाटकार्थवर्णनाद्वर्णताल , शृङ्गाररसाभिनयश्छर्दकाताल , वीररसाभिनयो धाराताल

18 The various technical terms of the art of dancing have been explained and their subdivisions enumerated in T which I quote fully here —चारि पदप्रचार , सा द्वात्रिंशत्प्रकारा, तत्र समपादा स्थितावर्ता सकटास्या अध्यर्द्धिका चापगति विच्यवा एलका क्रीडिता बद्धा ऊरूद्वृत्ता आदिता उच्छद्दिता वा जनिता स्पन्दितजनिता अपस्पन्दिता मतुली मत्तली चेति षोडश भौमाय., अतिक्रान्ता अपक्रान्ता पार्श्वक्रान्ता अद्धजानु सूची नूपुरपादिका दोलापाला पादा आक्षिप्ता आविद्धा उध्दृता विद्युद्भ्रान्ता आलत्ता भुजगत्रासिता हरिणप्लुता भ्रमरी चेत्येता षोडश कासोद्भवाश्याय 3b अंगवन्न अंगहार , स च स्थिरहस्तक सूचीविद्ध आक्षिक कर्णछेद् विष्कम अपरात आम्रीड भृश्चिक भ्रमणमदादिविलसित इत्यादिविकल्पात् द्वात्रिंशत्प्रकार 4b शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य क्रियते इति क र णा नि तलपुष्पपुट वर्तित अपविद्ध लीन स्वस्तिक अर्धस्वस्तिक अधस्वस्तिकरेचित निकूटक अलात उन्मत्त ललाट तिलमित्याद्यष्टोत्तरशतसंख्यानि दि ण्णु दत्तानि 5a च उ द ह वि सी स उक्तं च—

अकंपित कंपित च धुत विधुतमेव च ।
परिवाहितमाधूतमथाचितनिकुंचित ॥
××× पराहृतमक्षिप्त चाप्यधोगत ।
लोलित प्रकृत चेति चतुर्दशविध शिर ॥

5b भू त ड व इ नृत्यानि सप्त—

आक्षेप. पातन चैव भ्रुकुटिश्चतुर भ्रुवो ।
कुंचित रेचित कर्म सहजं चेति सप्तधा ॥ इत्यभिधानात्

6a ण व गी व उ । तदुक्त—समानता आनता अस्ता रचिता कुंचिता कंचिता चिता ललिता च निवृत्ता च ग्रीवा नवविधा स्मृता 6b छ त्ती स वि दि ट्ठी उ—तथाहि कान्ता भयानिका हास्या करुणा अद्भुता रौद्रा वीरा बीभत्सा चेत्यष्टौ रसदृष्टय , स्निग्धा हृष्टा दीना क्रुद्धा तृप्ता भयान्विता जुगुप्सिता चेत्यष्टौ स्थायिभावदृष्टय , स्तान्यामलिना (?) श्रांता सलज्जा ग्लाना शंकिता विषण्णा मुकुला अभितप्ता जिह्मललिता वितर्किता कुंचिता विभ्रान्ता विप्लुता ककिकरा (?) विकोसा त्रस्ता मेदिरा चेति षट्त्रिंशद् दृष्टयः 7a अ ति मे त्या दि

शृंगार (?) बीभत्सा हास्यरौद्रभयानका ।
करुणाद्भुतशांताश्च. . . .रसा स्मृता ॥

तत्राष्टौ रसा अतिमरसवर्जिता

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible](!)[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible] (!) । [illegible] (!) । [illegible] । 8a [illegible] (!) [illegible] (!) [illegible] 9a [illegible] 10b [illegible] The Ms. of T is illegible at numerous places, but as the contents seemed to me to be important I have reproduced them.

V

[One day Jasaval, the wife of Risaha, saw in a dream the mount Meru, the sun the ocean and the entry of the globe into her mouth. She told this dream to Risaha who told her that she would get a son who would be a sovereign ruler. In course of time, Jasavai bore a son who was named Bharaha (Sk. Bharata). As the boy grew the father himself taught him various arts as also the science of government, duties of different castes and classes, nd the principles of inter-state relations. Jasaval bore ninty nine more sons, Vasaha sena etc and one daughter named Bambhi. Sunandā also bore on son named Bāhubali and one daughter named Sundari. Risaha himself taught both the daughters the various literary and fine arts. Now once it so happened that there occurred a severe famine which worked a havoc on the people. They came to Risaha and asked for relief. He then taught the people various arts and professions. When he attained the age of twenty lacs of purva years, he was put on the throne by king Nabhi.]

2. 8b [illegible], the six continents of the [illegible]. The [illegible], according to Jain cosmology is bounded on the North by Himavanta Mountain; right through its centre passes the Veyaddha (Sk. Vaitādhya) mountain from east to west; the rivers Gangā and Sindhu

pass through it form North to South, it is in this way that it is divided into six Khandas or continents A Cakravartin rules over all these six continents of the भारतवर्ष 10*b* अहमिन्दु or अहमिन्द्र is a god of a very high class residing in the ग्रैवेयक or अनुत्तरविमान heaven

3 2 तिहुयणवइजयकरेहाहिय, The loss of folds on the belly of Jasavaī, as a result of her pregnancy, is here considered by the poet as the wiping off of the marks of victory over the lords of three worlds It means that the son that is to be born to Jasavaī will wipe off all marks of supremacy so far held by kings whom he will subdue

5 7*a* खुल्लउ कीडुल्लउ, a small insect (क्षुद्र कीटक)

6 13*a* चित्तलेप्पसिलवरतरुकम्मइ, painting, plaster work (लेप्य), sculpture, and wood-work

7 2 गिरिथणि विसय पयासए, explains (to Bharaha) the subject of governance of his consort, viz., the earth (गिरिथणिधरणि) with mountains standing for her breasts

8 12 पढमुवाउ, प्रथमः उपायः, i e, resolution, resolve

9 7*a* करेवा, See for the formation of Potential participles Hemacandra IV 438 9*a* अय तिवरिस जव, the goats to be offered in sacrifices are and should be यव corn three years' old 13*a* जिणपडिमापूयणु, worship of the images of the Jinas This is clearly an anachronism unless we accept that Risaha means by it not himself but the Jinas of the past To a Jain his religion has no beginning and there were Jinas in the past.

11 8*b* कामुप्पण्णु चउविहु दारुणु, the four व्यसनs or addictions, viz., woman, gambling, wine and hunting

12 1 एक्कंतरिउ मित्तु णिरंतरु सत्तु In the मण्डल or द्वादशराजचक्र, the immediate neighbour is an enemy while the next one is a friend (एकान्तरितं मित्रम्, निरन्तरः शत्रुः) The immediate neighbour is often in conflict with him because of the common boundary, while the next one is to be on good terms with him in order that both of them have the middle one as their common enemy 8*b* अट्ठारहतित्थइं, the eighteen तीर्थs are :—

सेनापतिर्गणकमन्त्रिपुरोहिताश्च वर्णा बलौघमहत्तरदण्डनाथाः ।
श्रेष्ठी महत्तर इतश्च महामात्योऽमात्यो वदन्ति दश चाष्ट च तीर्थमार्याः ॥

—Marginal gloss in K.

The वस्त in the above list are मसल, सुविज, वेल and बुद्द; the संग्राम is the fourfold division of the army viz., हस्ती, अश्व, रथ and पदाति.

18. 6a सम्पाजा i. e. भाषा which is counted as a distinct language. Note the items which were taught to ladies in those days, or even in the days of the poet.

19. 1–9 मयल. सुरिम इत्यादि सम्पादन सम्मत O Lord, pair of whose lotus like feet is washed by water dropped down from the gems in the coronet of Indra. 6a अम्हाकं अणु को जखे, who, other than yourself, will be our supporting pillar ?

20. 5–11 चन्द etc.—This passage gives a long list of the names of the countries or different parts of the भारतवर्ष.

21. 3–5 णगर etc.—This passage gives the list of several types of towns, villages, cities etc., such as खेड, कब्बड, मडंब पट्टण दोणमुह and संवाहण.

22. 4 तहिं इक्खुवंसु —the race was named इक्ष्वाकु because its founder brought to his house the juice of sugar-cane for drinking.

VI

[One day while prince Risaha was enjoying his royal fortune and was engrossed in it, Indra thought of reminding him of the mission that he was expected to fulfil on the earth, viz., the propagation of the Jain faith, and sent a celestial nymph named Nilamjasā to perform a dance before him. She arrived, performed the dance and at the end of it fell down dead. Risaha, on seeing her dead, was filled with horror at the momentariness of the worldly life.]

2. 3 णियमेन्त जणं, the porters and peons were regulating the conduct of the people in the court-room. The Kadavaka mentions a large number of things which should not be done in the king's presence.

3. 5a भुंजंतु जाहिं गय etc, King Risaha enjoyed his kingship for sixty three lacs of the purva years, and still likes these worldly pleasures and is not disgusted with them.

4. 11–12 पुण्णाउस णीलंजस—If नीलंजसा who completed her period of life, dances before him and after that falls dead, the event will cause disgust for wordly life in his mind.

5 4b णाहेयणिहेल्लणि, to the house of Nābheya, i e., Risaha, the son of Nābhi 6b थमिगु वि पुम्वरगु—The technical terms of dancing and music used in this Kadavaka and the two following are explained in T as follows —वी स मि त्या दि—नाटकस्येह प्रथमप्रस्तावनावतार पूर्वरंगस्तस्य च प्रत्याहारोऽवतरणा आयारम्भ आश्रवणा गीतविधिरुपस्थापना परिवर्तन रंगद्वार चारी महाचारी इत्यादीनि विंशतिरंगानि 7a ति पु क्ख रु चर्मावनद्ध वाद्य पुष्कर तत्रिविध उत्तममध्यमजघन्यभेदेन 7b सो ल ह अ क्ख र उ क ख ग घ ट ठ ड ढ त थ द ध स र ल ह इति षोडशाक्षर 8a च उ म ग्गु आलिप्त-अर्दित गोमुख वितस्ति-भेदात् चतुर्मार्ग; दु ले व णु वामलेपनं ऊर्ध्वलेपन, छ क र णु रूप कृत प्रतिकृति भेदो रूपशेषो उपर्श्चेति षट् वाद्यकरणानि; 8b ति य ति ह उ समो श्रोतोगाति गोपुच्छा चेति त्रियतियुक्त; ति ल य उ द्रुतमध्यविलम्बितास्त्रयो लया 9a ति ग य उ तद्वाम नुत उग्र(?)श्चेति त्रीणि गतानि; ति य चा रु समप्रचार विषमप्रचारश्चेति; ति जो य य रु गुरुसंयोगो लघुसंयोगो गुरुलघुसंयोगश्चेति त्रिसंयोगकर 9b ति क रि ह उ गृहीतोऽर्धगृहीतो गृहीतमुक्तश्चेति त्रय 10a ति म ज्ज ण उ मायूरी अर्द्धमायूरी कर्मारवी चेति मार्जनकम्; 10b वी सा ल का र स ल क्ख ण उ अलंक्रियन्ते वाद्य यैस्तेऽलंकारा प्रहारास्ते सलक्षण मनोज्ञ चेति विंशत्यलंकाराः —चित्र सम विभक्त छिन्न छिन्नविद्ध अनुविद्ध विद्ध वाद्यसत्रय अनुसृत प्रतिच्युत दुर्ग अपकीर्ण बद्धावकीर्ण परिक्षिप्त एकरूप नियमान्वित साधारण समेखल सामवायिक दृढ चेति 11a अ ट्ठा र ह जा इ हिं तथाहि—सुद्धा दुष्करणा विषमनिष्क्रमितैकरूपा च पार्श्विसमापर्यस्ता समविषमकृता निकीर्णा च पर्यवसाने चितिक्रियायुक्ता सप्लुता तथारम्भा विगतक्रम चललिगा पंचितिका चेकवाद्या चेत्यष्टादशजातिभिर्मंडितम्; 12a च च उ डु चाचपुटस्त्र्यस्रखिकलतालप्रवृत्तिहेतु ; चा च उ डु चचपुटश्चतुरस्रश्चतु ष्कलतालप्रवृत्तिहेतु, 12b उ प्पि य पु त्ते वि पे(?) पिजापुत्र (?)कोपि मिश्र उभयतालप्रवृत्तिहेतु ; म ण हा रि चचपुटादित्रिप्रकाराणि(?) मनोहर ; 13a इ य इत्यादि एतैश्चचपुटादिभिस्त्रिविधतालविनयैस्त्रिभिरलंकृता. 11a ओ ण द्ध उ व ज्ज उ च ण्णि य उ इत्थंभूत यदवनद्ध वाद्य तत्त्रिप्रकार वर्णित वाम ऊर्ध्व आलिंगकसंज्ञित चेति द्विश्रुतिका स्वरो जातो निषादो गंधारश्च त्रिभुवनसमश्रुतिसंख्यया त्रिश्रुतिकरूपतो धैवतश्च जनि(?)विमसमसंख्यया चतु श्रुतिका षड्जपंचममध्यमाः 16 च य ल हिं स्थितमुक्ताभि, अ द्ध हिं अर्धमुक्ताभि कम्पमानस्वरूपाभि ; मु क्कि य हिं पशसुषिरसधन्वगहिताभि (?); व त्ता व त्त गु लि य हिं उक्तविशेषणाविशिष्टाभिर्व्यक्ताव्यक्ताङ्गुलिभि व्यक्ताङ्गुलि स्थितस्थिताङ्गुलि अव्यक्ताङ्गुले

6 1a प वि र इ ह इत्यादि—वांशस्वरो जात, कथंभूते 1b व ज्जि य सु सि रे वादित सुषिरे; सु अ रथ सु इ शाश्वता श्रुतयश्च; 3a वि ये त्यादिना चतु श्रुतिकाविस्वरणामुत्पत्तिप्रक्रियां प्रदर्शयति, स्थितमुक्ताङ्गुले स्वरे इव; सु अ ह सु इ चतु श्रुतिक 4a कम्पमानयाङ्गुल्या उद्गतत्रिश्रुतिक, 4b मुक्ताङ्गुल्या जातो द्विश्रुतिक, 5a व त्त गु ली त्यादिनोत्पत्तिक्रमेण प्रत्येक चतुःश्रुतिकादीनां नामानि कथयति, व्यक्ताङ्गुले सुषिरोपरिस्थिताङ्गुले, 6b सा म ण्ण स र त र स ण्णि य ए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्त 7b अ द्ध ए मु क्क ए अ गु लि य ए अर्द्धया मुक्तया अङ्गुल्या; सामान्यसंज्ञित स्वरो निषाद अंतरसंज्ञितो गांधार 9a त ती र णि उ वीणावाद्य तच्च द्विविध 9b णि क्क लु ते प्प वि निष्कलं त्रिधा च 10a घ णु इत्यादि—घन वाद्य कांस्यतालयुगलादिक 10b स मे त्था दि समं यौगपद्येन हस्त दत्त्वा यत्र रंगे वादित 12a उ प्प ण्ण इत्यादि—उत्पद्यमानो हि नाद प्रथमत उ र ठा ण त र ए उरोलक्षणस्थानकविशेषे उत्पद्यते तत कंठे तत शिरसि 12b चा सी स वि

गुइ इ द्विमतिकसे हुये पवन- भवन विमुनिकणे वर् चगुगुनिकमं भवाणं इसेंतमिनुपम, 13a क म र इ व प मा क हिं कयोकरितकोक(1)नवचेसंद(1), 13b प हुं गु पंगुसण्णवगमेकेल वणकयं जति वंटि सिति च वर्णणो मतह मला: भतिर्णइमित्ससप, 14b त र त त तरिस्प-पितमाल तासा तगम लम तेगु मेगु तालीगु, ऐ मि ति म ल हुसेव व कमो, वतुवलो म सममतम म का समुइसा: कसिणपाले विषलो पालय पमर्तकिषा 15 इ रे तारि हुण: दुम न क चतुमलमे म र ग मलता व च व इ त ड सा अपुका: गुइणतता, सकी पुरि हमेने लग भाल इति जालवा 16 म किम ए मनाचे गमे मिस पुरा बने संकिर्ण

7 2a का इ मि व इ ई गागु मामिगु निरमलम 2b ब कम रि गु इ ई मीसर्णीय-मिगुहमा. 3a मंत ई मंशलं, म र च ड़ी ता रि व र एवं व्मापिपुर्वि 3b इ गु व व म रि नमत्थ(त्)पेकणं एहोता, प मा हि व र समलिमा तथा हि मतदुरमामिगु कवाय-णीमतोय हा मवस्थापी वंद च तत पार्सवती(1)मेनिमा एडुंत्वसतरगिएमितलत्पल मणि. 4b मी व इ गीमता इसोमाविसमाया य व र इ प मि व इ पेवालमा:, सिलावलल्प इसल 5a b मसु(1)मने हुइम इसोमविकस निरुवम । सारिसलेवेंवी इसोदमि वेसा । तर्गवा सवि-पलातु मीपि मासमप्प लाग. 6a न हि मसारि गहि मइसिलमिगु तमीकलसाले परिताबाचा स्मिर मेवा. तत्र हुइकसितलंपल बच(1)पमलप व्यवसाणगा मणिन., मिसमीनिर्वकलेम मसव मता येव केलमता मसोने. 7a क मे व सि कम्बिगुशिवेलिमेसकमेवे संसुलिमर लसुवि-सिरा b व इ मा व वपुससमट योत, 8a व हि मा र ड मेगु मल मत्ता इमाप 8b व म वे का त म म व हिं सा हि व इ इमायवलमिमा, रल च-कोइसाय सदवेला च सोमतवा च मवसोसवा च । तमपमावा सैवतिका च माला तल वं वैवमलितम च । मावा कलमात च ममित वेगतिका । मवसा इरासल इसलेवा: 9a व हे सा रि—मासी मसमी मैतसी कोसिमी सारमी मार्गमी हसिमाला मसमा पैल रि मरिर्गवामितिमा, 9b वि हि विसरि इमवमिप तिमामल्स मोनीवातिमाल संलिसुतिय 10a मा मा रि वे सा रि—मावीना माकातिमा, मीविसा मिहमीरवा पमस्मिमलितवा 10b मिसेसतममला मासवेलकिमा मारी मैतहिका कमोमी पेमलंतं मिवसा सर्ग. 11a मा इ वे तारि मतलसावा मितसलमातु 12a पि मे तारि—मितमाइमें मी हुइ मरम(1)मांजी सैवसी अमिय मीमेंकी हमिमवमीमे समपि: मवलमि कमिमा हुमा 12b क म इ तमारि हुसमारि, सासीत तमी मितांसी वेलि मिमिमसाने , म म हि र कमिसो मुक 13 मु इ सी म ई मुसमुसीर 14 म मे सा रि ममेहुसमसमरि मसुरनी: इसलेमि मीसमेमिमितेसपहुपा , इ रि व र रसिमा

8. 1–2 इ हे तारि—पम चतुर्मितुंमिलकसारितकसंमा तारि गमां मायत्वं मसेला मसा भरि मिलव , 3b इ मा इ है तारि—हमाइस सममितारि चइमासिप मवचे मनोकं बल सब सुमलमा इमेसितारि, सुरमि उपइमसुमते समलोमार(1) मामम इमि मुमर्गमा उसपंमा उसपमा हमी समासेपत मेंसी कसेमसम सुसमसा मर्गमेलापमा 4a इ क मे सा रि—सारव तलपसलो-मिमसामलत मतिमेतासइव-समतेक-पासेमानीपतासमलमामा(1)मिसुभ्ये मसे, मे व मसिवम मैमेलवालमेरा मसिमलमा तया हि समतमीसीमानां मसेइसेमेसीकम सल सल सायमा मसलपसलसमुमिय एइमेर्मलाहतने तला सवमसलसुमारि उपे मजाल(1)मर्ने च सम मालेसेका सले चन्द । मम हमालेमाक्स(1)मने तपमिसिम ब 5a व मो व मा गु तमा हि चतुरमे

समसर्द्(?)नानां पाडवोऽभिता, काकलि अतर काकल्यंतर; स्वरसयोगे सति पंचत्रिसप्त योगताना भवति, एव मध्यमग्रामेऽपि; 7a ते र हे त्या दि त्रयोदशावेध शीर्षे प्रनर्तित प्राकृतशीर्षे च(?)ज्यंते 7b तथा षट्त्रिंशद्दृष्टिभिर्युक्तमेतद्य प्रागेव व्याख्यात 8a ण व ता र उ नव ताराकर्माणि । तदुक्त—भ्रमण चलन पातो घलन सप्रवेशन । विवर्तन समुद्गत निष्काम प्राकृत तथा, ॥ 8b अ ह वीत्यादि अष्टौ परिचिता दर्शनगतय , उक्त च-सम्मसप्पनुवृत्त च आलोकित प्रलोकितोल्लोकितेरवलोकित(?) सा तियक् (?) 9b ण दे त्यादि—नवनदास्तत्प्रकार पुड(?)पक्ष्मपटक्म दर्शित उन्मेपश्च निमेपश्च प्रसृत कुचित सवर्तित सस्फुरित पिहित सविताडित 10a मू स त्त मे य भ्रू सप्तभेदा; 10b छव्विहेत्यादि—तत्र नासा पड्विधा, उक्तं च-नता मदा विरुटा च सोच्छ्वासा सविकूर्णिता । स्वाभाविकी चेति बुधे. पड्विधा नासिका स्मृताः ॥ तथा कपोल पड्विध क्षाम फुल्ल च पूर्ण च कपित कुचित सममित्यभिधानात्; तथा अधर पड्विध ; तदुक्त विवर्तन कपन च विसर्गो विनिगूहन । सदष्टक समुद्गश्च पट्कर्माण्यधरस्य च ॥ 11a स त्त वि हु । चि बु उ सप्तचिबुक; च उ मु ह हु रा य कुट्टन स(?)रागा स्वाभाविकप्रसन्नश्च रक्त समर्थानुरोधतः प्रयोजनवशात् 11b नव गला नव ग्रीवानृत्यानि उक्तलक्षणानि, च उ स ट्ठि वि क र ण भा व चतु षष्टिरपि हस्तभेदा पताक कतरमुख अर्द्धचद्र आराल. शुकतुंड खटकामुख पद्मकोश' चतु(?)रध भ्रमर इत्यादयः 12a सो ल ह वि हु सर्वहस्तानां षोडशविध कर्म । तथाहि-आकपन कर्षण च उत्कपणमथापि च । परिग्रहो निग्रहश्च आह्वान नोदनं तथा ॥ सम्लेषश्चवि(?)योगश्च रक्षण मोक्षण तथा । छेदन भेदन चैव स्फोटन मोटन तथा । ताडन चेति विज्ञेय ता(?)ज्ञे कर्मकराश्रितं; तथाहि सर्वोऽपि हस्तप्रचारस्त्रिप्रकारो भवति, तदुक्त-उत्तानः पार्श्वगश्चैव तथाधोमुख एव च । हस्तप्रचारस्त्रिविधो नाट्यवृत्तसमाश्रय. ॥ च उ वि ह वि सर्वमपि हस्तकर्म चतुर्विध भवति, उक्त च-अपवेष्टितमेक स्यात् उद्वेष्टितमथापरम् । व्यावर्तित तृतीय च चतुर्थ परिवर्तितम् ॥ 12b भु उ द ह वि हु वि भुजवृत्तमार्गो दशविधोऽपि कृतः, उक्तं च-तिर्यगू ऊर्ध्वगतिश्चैव तथाधोमुख एव च । आविद्धश्च प्रविद्धश्च मडल. स्वस्तिक तथा ॥ अजित क्षुधितश्चैव पृष्ठतश्चेति ते दश 13a ऊ रु स र वि हु उरोनृत्य शरविधं पचप्रकारं, उक्तं च- नत समुन्नत चैव प्रसारितविवर्तिते । तथापसृतमेव तु पार्श्वकर्मापि पचधा॥ 13b पो ट्टु वि पा य ढि य उ त ति वि हु—क्षाम खल्ल च पूर्ण च समोक्तमुदर त्रिधा। इत्यभिधानात् 14a क डि य लेत्यादि कटीतलजंघाक्रमकमलानि त्रीण्यपि । तत्र कटी तावत्पचप्रकारा, तथा हि छिन्नावनिवृत्ता च रेचिता कपिता तथा। उद्वाहिता चेति कटी नाट्ये वृत्त्येव पचधा ॥ तथा जघा पचधा । उक्तं च-आवर्तिता अत क्षिप्तमुद्वाहितमथापि च । परिवृत्तिस्तथा चैव जंघाकर्मापि पचधा ॥ तथा क म क म ला इ पचधा। उक्त च उद्वहित समश्चैव तथाग्रतलसचरः । अचित कुंचितश्चैव पाद पंचविध स्मृतः ॥ 15b च ले त्यादि—चला द्वात्रिंशदगहारा मिता परिच्छिन्ना यत्र करणान्यगहाराश्च प्रागेव कथितानि 16a च उ रे य य चत्वारो रेचका , तदुक्तं-पादरेचक एक स्याद्द्वितीय कटिरेचक । तृतीयः कर(?)स्त्वस्थस्य ग्रीवायां च चतुर्थकः॥ 16b स त्ता र ह पिंडी य ध कय-ऐन्द्री वा(?)ज्ज भोगिनी सिंहवाहिनी ऐरावती मान्मथी पद्मा पिंडीत्यादि सप्तदश पिंडीनां यथा कृता 17a चा रि उ सो ल ह दु य स त्ति य उ चार्य षोडश द्विकसंख्या द्वात्रिंशत्सख्या 18a वी स वि म ड ल इ प या सि य इ अतिक्रांत विचित्र ललित सचर आलातक आक्रांतं आकाशगामि इत्यादि सचारिभिर्मावे स्थायिमिश्च प्रागुक्तलक्षणेरुद्धृतैरनेकैर्नृत्याति

VII.

[The death of Nilampjasā brought about a change in Ṛshabha's outlook of the world. He thought that everything in the universe was impermanent, momentary helpless, solitary the soul has to pass through a series of births and deaths, and experience sufferings, commits sins and thus prolongs his wanderings in saṃsāra. If the soul therefore wants to secure his good, he should first stop doing sinful activities so that his stock of already acquired acts does not increase, and he should practise penance in order to exhaust the stock of old acts. Thus thinking, Ṛshabha decided to renounce the worldly life. Gods at this juncture arrived there to encourage him in his resolve and requested him to propagate the Jain doctrine. Ṛshabha then put his son Bharata on the throne of Ayodhyā, gave Potanapura to Bāhubali, and sat in a palanquin to leave the worldly life. This event was celebrated by gods with their presence on the earth. Ṛshabha was followed by his aged parents and by his wives and his ninety nine sons. He then went to the forest, sat on a slab of stone, and pulled out five handfuls of hair. The hair was received by Indra in a jewelled plate and were disbursed in the milk-ocean. He then took the five great vows and became a naked monk.]

1 11 तृणि सत्थु चु स्वरिआ a person over whom salt is passed by women, i. e., one who is so much loved by women, is taken down on a grass-bed on his death. It refers to the practice of [illegible] over the body of a person that is dear to them by women in the house. It also refers to the practice of taking down the dead body from its usual bed and of placing it on [illegible]

2. 6a [illegible], b [illegible], i. [illegible] five in [illegible] five [illegible] that man is able 12 [illegible]

7 11 12 [illegible] etc.—If [illegible] person, i. [illegible] Brahmin, can obtain emancipation by eating the flesh of animals and by drinking wine, what is the use of Dharma? Wait upon butcher (who does exactly the same things.)

10 8*a* जाउ मसाणहु न मणुयत्तणु—Let this human life go to the burial place, as we say in Marathi मसणांत जावो, i e, I care a straw for the human life.

11 1*a* तिण्णयारसंठाणयं, the world is divided into three sections each having a different shape, the region of demons and creatures in hell has the shape of an earthen plate (शराव) turned downwards · the region of human beings and lower animals has the shape of a वज्रमणि, the region of gods has the shape of a मृदङ्ग 9*a* मोक्खु वि आयवत्तसणिहयरु, the place or region for emancipated souls has the shape of an umbrella

12 4*a* पासुलियातुलाहिं, by beams made of ribs

13 4*a* णाणावरणिउ पंचपयारउ—Acts which obscure knowledge are of five types, viz, मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्यायज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय See उत्तराध्ययनसूत्र xxxiii 4 5*a* णवविहदसणु, acts which obscure दर्शन fall under nine heads —निद्रा, निद्रानिद्रा (deep sleep), प्रचला (drowsiness), प्रचलाप्रचला (heavy drowsiness), स्त्यानर्धि (somnambulism), चक्षुर्दर्शनावरणीय, अचक्षुर्दर्शनावरणीय, अवधिदर्शनावरणीय and केवलदर्शनावरणीय See उत्तराध्ययन, xxxiii 5–6 For other divisions of कर्म see the same text and Appendix II in Miss Helen Johnson's translation of Trisasti 13 तिगइ i e, पाणियुक्ता, लाङ्गली and गोमूत्रिका, straight, curved and zigzag movements

14 12–13 पिहियासवदारहु etc —If a person stops all sources of sin and conducts himself properly, new acts do not enter the soul, and those acts which long remained with it are destroyed by bodily sufferings as they do not get any nourishment

15 2*b* होमि दियंबरो, I shall be a naked monk The emphatic and express mention of this term here and also in 26 15*b* below and at several other places shows that the work is written from the point of view of the Digambara Jains 10*b* देज्जावित्तिसखाविण्णासहिं by particular permutations and combinations of morsels of food obtained by begging It refers to the various भिक्षुप्रतिमाs in which food is regulated on the basis of counting the दत्ति or dole obtained or the morsels to be eaten See below 16 3*a*

16 12–13 जिह ह्रयणिज्झरणें etc.—Just as a pond is dried up by the rays of the sun, and also when water already therein is drained and the influx of it is stopped by building dams (सड्ढे वणं), in the same way acts

done in various births are exhausted by the control of senses (which prevent the influx of sinful acts) and by the practice of penance (prescribed for a monk).

19 15 अनुप्रेक्षाओं, reflections of twelve types on the momentoriness, impurity etc. see अनुप्रेक्षा, IX 7

21 1 सेनावइ to the son of नंदा i.e. सुनंदा सुनन्दा is the second wife of रिसह.

24. 5 नंदानंदा i.e., नंदा and सुनंदा, the two wives of रिसह.

26 16 The passage gives the date of the निष्क्रमण which is the ninth day of the dark half of Caitra with उत्तराषाढा नक्षत्र.

VIII.

[Risaha thereafter began to practise the life of a Jain monk and observe the rules of conduct prescribed for him. Nami and Vinami, sons of the kings of Kaccha and Mahākaccha and his brothers-in-law came to him in the forest, and after having greeted him, said that Risaha did not assign to them even a small portion of the earth when he divided it among his sons. Risaha, of course as a monk, could not make any reply as he had completely dissociated himself from the affairs of the world. The king of snakes at this juncture felt a tremor and learnt by his अवधिज्ञान how Risaha was placed in a difficult situation. He therefore came to him, saw Nami and Vinami standing before him and said to them that Risaha had told him (the king of snakes) before he (Risaha) renounced the worldly life, that when they would come to him and ask for a portion of earth, the king of snakes should assign to them the southern and northern slopes, belonging to Vidyādharas, of the Vaitadhya mountain. The king of snakes then showed to them the various cities situated on the slopes, saved Risaha from the awkward situation and went home.]

1 9b सर्वशिबिरं जातस्य शैलापि, T I think that शिबिर comes from शिबिर camp of the army but is loosely used to designate army. 12b सुरवर्ती, consisting of pure rows (शुचिपङ्क्ति). 19 ठिउ सग्ग etc.—He stood, standing as if he was the path leading to heaven as also to emancipation (स+अपवर्ग).

2 1–4 विसयवसा etc —Those great warriors who took vows of asceticism simultaneously with Rishaha, were sinking (भग्गा) in a few days' time as they were unable to bear unpleasant contacts, were frightened by terrific tigers, lions, and Sarabhas, and were overcome by tortures of thirst and hunger

6 7*b* सालएहिं, by his brothers-in-law 9*a* पर तेण विमुक्क घरत्थकम्मु, but he has left all activities of a householder 12*a* कूरमुट्ठि, a handful of cooked rice.

7 From line 6 to 20 note the दामयमक or शृंखलायमक The sets of a large number of दुवइs, constituting a kadavaka, is not rare in this work, although normally दुवई forms only its opening couplet The passage describes the commotion caused by the coming out from the nether world of the king of snakes 26 जीहहिं दससयसखहिं, with his thousand (tentimes hundred) tongues P reads दुसहससखहिं which means two thousand tongues as the tongues of snakes are cut into two when they licked nectar lying on the darbha grass on the occasion of its distribution

11 8*b* रसवाइ व सइ णिवडियसुवण्णु, like the alchemist who always attempts to prepare gold out of baser metals, the mount वेयड्ढ always showed gold

12 15*b* सुय दूयत्तणु हलिणिहि करति, parrots act as messengers of ploughing women to carry their love messsages to their lovers

13 9*b* The passage gives the list of fifty cities situated on the right side of वेयड्ढ which are assigned to नमि

14 5*a* The passage gives the list of cities situated on the left hand side of वेयड्ढ which were assigned to विनमि The cities are enumerated from west to east (वारुणासामुहाओ).

IX

[Risaha then spent six months in meditation, and controlled the activities of his mind completely He considered that reduction of food was one of the best means of attaining purity He therefore decided to accept food which would be free from forty-six flaws, and pure from nine points of view The principle of his life was that food exhausts

the body this reduction of food constitutes penance, this penance controls senses, the control of senses exhausts all acts which event leads to emancipation. He therefore practised these rules of life, and while wandering on the earth came to Gayapura where king Soma prabha, the son of Bāhubali, was ruling. His younger brother Seyamsa, saw in a dream the previous night objects like sun, moon etc. and told this dream to his brother. The fruit of this dream was that some great person was to visit his house. In fact Risaha did arrive the next day to his house to break his fast. Prince Seyamsa thereupon offered him reception and a jar of sugar-cane juice, which Risaha accepted. There was a divine voice to proclaim "what a noble gift! Risaha thereafter proceeded with his [illegible]
the fourth knowledge called
minds of others are known.
and under a banyan tree acquired the Gunasthānas, and in due course attained kevalajñāna by which he was able to see the entire universe. Gods arrived at this juncture to celebrate the event, and built up a samavasarana on the occasion. All the thirty-two Indras graced it with their presence. They then offered prayers to Risaha.]

1 7 [illegible], food which is to be offered to Jain monks should be free from flaws such as [illegible], which the marginal note explains as [illegible] but elsewhere it is explained as [illegible]. 15a [illegible], in the plate, viz., th palm. 17 [illegible] these men, i. e., his followers who becam monks along with him.

3 3a [illegible], by the younger brother of [illegible], i. [illegible], the son of [illegible]. 3b [illegible], by one who stored meritorious deeds in the previous births.

4 15b [illegible], [illegible], arms

5. 5a [illegible], by whom the earth was given to Bharata and to you, i. e., to Somaprabha and Sreyāmsa, of course through their father Bāhubali.

6 2 [illegible] the incidents in the sixth previous birth of Risaha when he was born as [illegible] and his consort was [illegible] At that tim [illegible] was the charioteer and knew that [illegible] (or [illegible])

was destined to be the first तर्थिंकर For details see Hemacandra, Trisasti, III 284–287 and also this work XXIV

7 16a सद्दहणु णव पचह् सत्तह्, i e faith in nine पदार्थs, five अस्तिकायs and seven तत्त्वs 18a देसचरित्ताऽक्कित, marked by a partial observance of the vows, as in the case of a householder who takes the अणुव्रतs and not the महाव्रतs

9 2 दायथदेज्जपत्तवरहारसारमग्ग, principles in essence of the classification of the donor (दायय, दायक), the gift (देज्ज, देय) and the receiver (पत्त, पात्र) 11–12असणेण तणु etc.—food helps the body to practise penance, penance produces forbearance, forbearance results in the removal of impurities, the removal brings about kevalajñāna, which in its turn secures bliss Compare for the objects of begging alms —

सेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य सजमट्ठाए।
तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए॥

—पिण्डनिर्युक्ति, 662

11 8–9 तहु दिवसहु etc, the day on which Seyamsa served alms to Risaha was the third day of the bright half of वैशाख, which day, even now, is called अक्षय्यतृतीया. The passage explains the Jain view why the day is so called

12 7a पचवीसवयमायउ, the mothers of the vows which are the twenty-five भावनाs Compare तत्त्वार्थाधिगमसूत्र, VII 4–8

15 10b अप्पमत्ति गुणठाणि व लग्गउ, he stuck to अप्रमत्तगुणस्थान which is the seventh गुणस्थान This गुणस्थान enables the monk to possess 18000 शीलाङ्गs The monk is engaged in धर्मध्यान and there is a beginning of शुक्लध्यान 11b खणि अउव्वु आरूढउ तावहिं, he then rose to अपूर्वकरणगुणस्थान which is the eighth शुक्लध्यान is now fully developed here 13b अणियट्टिहि छत्तीस जि जित्तउ, in the अनिवृत्तिबादरगुणस्थान, which is the ninth, he conquered the thirty six kinds of कर्म 14a सुहुमसपरायउ पावेप्पिणु, having acquired the सूक्ष्मसपरायगुणस्थान which is the tenth, he destroyed the सज्वलनलोभ 15a पुणु जायउ उवसतकसायउ, he then pacified his passions. उपशान्तमोह is the eleventh गुणस्थान 16 खीणकसायचरिउ पडिवण्णउ, he reached the क्षीणकषाय or क्षीणमोह गुणस्थान which is the twelfth where the second शुक्लध्यान begins In this गुणस्थान the monk destroys sixteen कर्मप्रकृतिs, viz, five ज्ञानावरणीय, six out of nine दर्शनावरणीय and five अन्तराय At this stage he attains केवलज्ञान, and becomes a सयोगिकेवली which is the thirteenth गुणस्थान

20. [illegible] T 11b [illegible], at that time Kubera built a meeting place for gods etc. who arrived there to celebrate the attainment of Kevalajñāna by Prabhu

X

[Indra and other gods glorified Jina on his attaining the Kevalajñāna. Jina also possessed twenty-four more atiśayas or excellences as a result of this knowledge. At this juncture a report was brought to Bharata that his father obtained the kevala, that the cakraratna has made its appearance in his armoury and that his queen got a son.—King Bharata was hesitating for a moment whether he should first see his son, or cakra or father but ultimately decided to see his father, went to him and praised him and thereafter returned home.

On seeing that the Jina has obtained the kevala, pious persons, desirous of attaining emancipation from samsāra went to him. To them the Jina began to describe categories of Jīva and Ajīva. He first explained the six paryāptis, i. e. faculties to develop, then the lower species of animals, then the lower animals with five senses, then the number of dvīpas and samudras and finally the dimensions of their bodies.]

2. 3 [illegible] etc. The Jina had already ten atiśayas from his birth such as [illegible] etc., but when he attained केवल, he got twenty-four more as a result of his knowledge. They are described here and in the following kaḍavaka.

4. 3a [illegible] i. e., ten gods belonging to the class of [illegible].

5. 1-8 The Jina is here described in terms of the epithets of god Śiva but is shown superior to him, e. g. [illegible] god Śiva is always associated with his consort, but the Jina is devoid of her 9-13. Similarly the Jina is shown superior to Brahmā, and in 14-17 to Viṣṇu

9. 4a [illegible]—

[illegible] ।
[illegible] ॥ T

6-7 आहार . पज्जत्ति त्ति भणंति एत्थु The passage defines पर्याप्ति as a faculty which helps the development These पर्याप्तिs are six, viz आहार, eating food and digesting it; सरीर, body, इंदिय, sense-organs, आणापाण, breathing; भासा, speech, and मण, mind

19 11 सुहुमणिगोयसमुब्भवहं, of those that spring from the subtle णिगोय or निगोद; this निगोद is a physical body with infinite lives or souls

XI

[The Jina proceeds further to define the functions of different sense organs and creatures that possess them He then mentions the duration of their life After a general description of the Geography of the Jambūdvipa and other dvīpas with their rivers and mountains and antaradvīpas, the Jina proceeds to describe the human species with their characteristics and capacities He then goes on to detail the heavenly regions and gods He explains the fourteen Gunasthānas, the various prakrtis of karman, the characteristics of the Siddhas and their happiness On hearing the discourse the eighty four lacs of princes renounced the worldly life and became monks who were then called his Ganadharas Similarly Bambhī and Sundarī became the first nuns of the Order Only Marīci remained unenlightened The first lay disciple was Suyakitti and the lady disciple was Piyamvayā or Priyamvadā The first disciple to obtain emancipation was Anantavīra]

6 6b वयगुणियउ, multiplied by वय i. e. five, because there are five vows

8 9-10 मज्जंगहिं etc The passage gives the names of the ten कल्पवृक्षs

9 2b णिरूह, परामशशून्या, T, incapable of guessing or imagination.

10 4 सावयवयहलेण सोलहमउ सग्गु लहइ माणुसु, a human being obtains the sixteenth heaven as a result of his vows of a Śrāvaka The sixteen heavens are सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण and अच्युत According to the Śvetāmbaras the number of heavens is twelve, which number they obtain by dropping from the above list ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, शुक्र and शतार

11. 10 णव रज्जय etc. The passage says that the nine बलदेव or राम are destined to obtain heavens while the nine वासुदेव are destined to go to hells

17 8b पेज्ज पज्जु मज्जु सम्माणइ, the creatures in hell are made to drink as wine hot liquid juice of metals like copper When they are so made to drink it, the keepers of hell say to them ironically that they were well taught by the Kāpālikas not to observe the vows and as they followed their advice they suffer the miseries in hell.

22. 1a अद्धफलिहफलसिरिसोहमाणु the shape of the heavenly abodes resembles the कविथ्थ fruit cut into two.

25 12 परियण, attendance, service, or care.

26. 36 सव्वत्थवि णिरुवमु अहमिंद, all अहमिंद्र enjoy happiness for which there is no parallel.

29 8 15 मिच्छत्तमइ चौद्दहभेयं etc The passage gives the list of fourteen Gunasthānas. They are —मिथ्यात्व, सासादनसम्यग्दृष्टि, (सासण of our text) सम्यङ्मिथ्यादृष्टि (मीसु of our text), असंयतसम्यग्दृष्टि, देशविरति (विरताविरत of our text), प्रमत्त, अप्रमत्त, अपूर्वकरण (अउव्व of our text) अनिवृत्तिकरण (अणियट्टि of our text), सूक्ष्मसांपराय (सुहुमराय of our text), उपशान्तमोह (उवसंतु of our text), क्षीणमोह (परिक्षीणकसाय of our text) सयोगिकेवलि (सजोइजिण of our text) and अयोगिकेवलि (अजोइ of our text). For details see Miss Johnson's Trans., Appendix III. Pages 429–436

32. 5b अडतीसाहिय सउ, i.e. one hundred and thirty-eight प्रकृति of कर्म. In the Gunasthānas from number four to seven, one hundred and thirty eight कर्मप्रकृति are destroyed. They are ज्ञानावरणीय 5, दर्शनावरणीय 9 वेदनीय 2, मोहनीय 21 आयु 3 (i. e. नरक तिर्यक् and देव), नाम 93, गोत्र 2, and अन्तराय 5. The total of these comes to 138 as stated above. 11a भासुरमणिविद्दुमि, i. on the विद्रुम or विद्रुममणि.

35 12b एक्कु मरीइ णेय पडिबुद्धउ, only मरीचि who is the son of भरत and grandson of ऋषभ, was not enlightened as he was overcome by दर्शनमोहनीय and चारित्रमोहनीय. The Śvetāmbara version says that he, by his boasting and pride, was not fit to obtain सम्यक्त्व. See Hemacandra, Triṣaṣṭi, VI. 385–390

1

XII

[Now Bharata started on a campaign for the conquest of the six continents of the earth or Bhāratavarsa In the season of autumn, when the sky was clear and the roads dry, he saluted the holy beings and after going round the cakra, made some gifts to the needy and the poor He consulted his ministers, took a huge army and, led by the cakra, proceeded to the eastern direction After crossing the Ganges he went to the shore of the eastern ocean and wanted to conquer the Māgadha Tirtha He first observed a fast and then took his bow and discharged the arrow in the direction of that region The arrow was dropped down in the house of the king who was very much enraged at its sight. He was however pacified by his minister by saying that it was no use thinking of waging war against a Cakravartin, that Bharata was the Cakravartin of the Bhāratavarsa and that it would be well for all to pay tribute to him and to accept his sovereignty The king of Māgadha Tirtha did accordingly]

1 3*a* छुडु छुडु, immediately, quickly 15-16 सारयमयलञ्छणु etc If the autumnal moon that pleases the heart of men by its lustre, had not been spotted or spoiled by the deer-mark, I would have given it (this very moon) as the simile, i e, I would have compared, the fame of the Jina to it (the moon)

5 30 साडी ण हिमवतहो, the river Ganges looked like the upper garment of the mount Himavat. The next three Kadavakas contain a fine description of the river

12 12 खधुद्धरियडिंभया, the Kirāta chiefs carried their children on their shoulders as is the custom with them

14 12 णत्थि सहवाहु ओसहु, there is no cure for nature Compare proverbs like स्वभावास औषध नाही in Marathi

19 2*a* विविहणिहिसिगासु, to the master of various Nidhis or treasures. The Nidhis are nine in number and their names are —नैसर्प, पाण्डुक, पिङ्गल, सर्वरत्नक, महापद्म, काल, महाकाल, माणव and शंखक. For the functions of these Nidhis see Hemacandra, Trisasti, IV. 574-782 and also below XVIII, 15 6-10 2*b* णियकालवट्टसाधियसरासु, to one who has fixed an arrow

to his bow named वज्जवत्तु or वज्जघरु. Miss Johnson's note (see page 223 of her Tran. of Triṣaṣṭi) on this word is not justified in view of this evidence which is quite independent of Hemacandra. 7b तो तुम्हु ण अम्हइं णि देव my lord, in that case there will remain neither we nor you. Compare तुम्ही नाहीं आम्ही नाहीं in Marathi.

XIII.

[King Bharata then proceeded to the South and arrived at the entrance to the region belonging to Varataṇu (of Varadāma Tīrtha). He again performed a fast, and after it discharged an arrow which fell in the house of Varataṇu. King Varataṇu immediately came to Bharata with a tribute and accepted him as his sovereign. Thereupon Bharata proceeded towards the west, came to the entrance of the river Sindhu. There too he practised a fast, and having penetrated the Lavaṇasamudra, discharged an arrow at the king of Prabhāsa Tīrtha. The king arrived and accepted Bharata as his sovereign. Bharata thereafter conquered different countries such as Mālava etc and thus established his rule over the entire Aryan region. Thereafter Bharata proceeded to Vijayārdha or Vaitāḍhya mountain to complete his conquest of the remaining three continents or Khaṇḍas.]

1 4a सिबिरु चलुचलइ the camp of the army is making rapid movements. 23 वेलाउलिसमीवि, in the neighbourhood of वेलाउल, i. e., a narrow strip of water or channel of the sea through which access to the sea is possible.

2 13 दीवंतरदारइं थियइं the gates of different dvīpas or islands in the मंतसत्तु stood opened before him, i. e., as soon as Bharata recollected the holy chant, it was certain that his enemies would be defeated and the dvīpas conquered.

4 9a वरतणु अत्थाणि, in the court-room of वरतणु, the king of वरतणुतित्थ. Hemacandra does not mention the name of the king in his Triṣaṣṭi.

9 20 पहासें, by the king of the Prabhāsa Tīrtha, situated at the confluence of the river Sindhu and the sea.

10 1*a* सुरसिंधुसरिहि देहलिय धरिवि, i e, regions standing between the Ganges (सुरसरि) on the east and the Sindhu on the west. 5*a* अज्जखडु, the continents where the Aryans live 14*a* विजयड्ढ समुहु, towards the विजयार्ध mountain This is another name of mountain Vaitādhya as can be seen from lines 24–25 below where it is said that the mountain विजय divides the earth into three Khandas on either side and crosses the continent from east to west

XIV

[After having conquered the three southern continents King Bharata came to Vaitādhya and encamped there A god arrived there and requested him to strike the opening of a cave in the mountain so that he would obtain passage through it to the other side Bharata then ordered his general to do accordingly When he struck it the cave burst open causing great excitement among its residents The guardian deity of the mountain came out with presents to Bharata who stayed there for six months He then directed his disc to proceed through the cave and the army to follow it, but it was very difficult to pass through it because of darkness The general of the army then took the Kāgani gem and wrote out on the walls of the cave the sun and the moon With their light the army proceeded further and came to the region of snakes or Nāgas Two rivers stood on the way of the army but the Sthapati or the engineer prepared a bridge or dam and the army went further Āvarta and Kirāta, two Mleccha kings, finding that their region was invaded, invoked the aid of the king of the Nāgas called Meghamukha (Clouds in the Mouth), who began to pour down rain over the army continuously for day and night The priest of Bharata brought to the notice of the king how the army was troubled by heavy rain, when he asked his general to use the Carma gem to act as an umbrella for the whole army The army then attacked Āvarta and Kirāta who then offered tribute to Bharata Bharata then proceeded towards Himavanta mountain along the course of the river Sindhu, the guardian deity of which offered him a wreath of flowers]

1 12*b* जसवइपुत्तें पेसणु आक्खिउ, the son of Jasavaī, i e king Bharata, then gave orders to his general who is one of the fourteen gems of a Cakravartin

XVI

[Having saluted the Jina Bharata got down from the Kailās mountain and then proceeded in the direction of Ayodhyā, and having crossed various countries he came to gates of the city The disc or Cakra however did not enter the city but stood outside it His priest then told him that it did not enter the town because Bāhubali, his younger brother was not yet conquered and thus his conquest of the world remained still incomplete Bāhubali was very strong and might even defeat Bharata, but he kept quiet so long Similarly his other brothers also did not pay tribute to him. On hearing this Bharata got angry and sent messengers to his brothers to accept his sovereignty They declined to do that but went to Kailās mountain and became monks. Bāhubali on the other hand would not accept the sovereignty of his brother and challenged Bharata to fight with him].

1 2 साकेयं दिसु, towards Sāketa, i. e. Ayodhyā, of which it is another name. See Geographical Dictionary of Nundo Lal Dey 17a घुसिणेण छडउ sprinkling with water mixed with saffron. छडउ is a Desi word Compare सडा in Marathi. 19 सट्ठि वरिससहासहिं after sixty thousand years which was the period taken by Bharata for his conquest of the world.

4. 10 अज्ज वि ते etc., in as much as they are not yet won, the cakra does not enter the town. The idea is that the disc cannot enter the town unless the conquest is complete.

6 12a को किर वण्णिज्जइ कंदप्पु, how can one describe (fully) god of love or Cupid ? Bāhubali, the son of Ṛṣabha, looked like god of love and the poet says it is not possible to do justice to his beauty by a description.

7 11-11 जइ जरमरणजम्मणई धरइ etc.—we shall pay homage to King Bharata if he can ward off birth, oldage and death from us, if he can save us from birth in fourfold species or from saṃsāra.

11 7b सुयणसंगु, i. e., सुजनसंग company of the wise Note the appearance of य in the word as mentioned by Hemacandra, IV 399

18 12*a* काउ कवालावलिहि म विरसउ, let not the crow cry on the skulls of your head. The crying of a crow over the head is considered as a sign of approaching death 13*a* देहि करु, pay tribute or homage to Bharata

21. 4*a* जो बलवंतु चोरु सो राणउ, he becomes a king who is the strongest or most powerful thief A successful thief becomes a king while an unsuccessful one is called a robber or traitor.

24 11 धवलाइ जि णिरु धवलइ, on the sandy banks of the Ganges the wings of swans and cheek of ladies away from their lovers, which are already white, became whiter when bathed in the rays of the moon

XVII

[Bharata then declared that if he does not kill Bāhubali because it would be an offence to his father, he would hold him firm as an elephant is held in chains The armies of both Bharata and Bāhubali met and trumpets blown and drums beaten, when Bāhubali said to his ministers that he would not move a step from his place but would stop the progress of Bharata's army When their armies were about to strike, the ministers stood between them and adjured them not to discharge an arrow, and then requested both Bharata and Bāhubali not to engage themselves into a war which would lead to the destruction of poor soldiers, but that they should fight with each other in three ways, viz., they should fix their gaze on each other so that none would move his eye-lashes, that they should strike each other with water, and that they should go in for a wrestling match till one holds or weighs the other on his arms Both of them agreed to fight accordingly But in all the three forms of fight Bāhubali came out victorious When Bharata was lifted up by Bāhubali, he thought of his cakra which immediately went round Bāhubali and stood by the right hand side of Bharata Bāhubali thereupon dropped his brother Bharata on the ground]

1 2 णंदाणंदणहो, of the son of णंदा, i e., सुणंदा, i e, बाहुबलि

2 9*b* पडिवक्खणाहि, with the lord or prominent member of your enemy 10 ऊणेण हएण etc. There is no gain by killing a low man,

2. Note that the four lines of the Daṇḍaka have a [illegible].

3. [illegible], bearing the name of that mountain, viz. [illegible] 20 [illegible], sparkling with a hundred spokes.

5. [illegible] etc. The general then took up the [illegible] gem, and with it wrote out the moon and the sun.

6. [illegible] with the help of a dam ([illegible], [illegible]) or bridge built by the clever engineer i. e., [illegible]

XV

[Thereafter Bharata proceeded along the Himavanta mountain. Sitting on a seat of darbha grass he observed a fast and at the end discharged his arrow at the guardian deity of that mountain. The deity at first was inclined to wage war with the warrior who discharged the arrow but on reading the name of Bharata decided to pay tribute to him. He came to Bharata and offered him presents. Bharata also, in return, made some presents to him and sent him away. Proceeding further Bharata came to Vṛṣabha Mountain. He found that all the four sides of the mountain were filled with names of the kings of the past and there was hardly any space there for Bharata to write out his name. He however wrote his name there and thus completed his conquest of the six continents of the Bhāratavarṣa. Gods praised him on the occasion. He proceeded further along the foot of the mountain Himavanta and in due course arrived on the banks of the Ganges. The deity of the Ganges then appeared before Bharata, bathed him with her waters, offered him presents by way of tribute and was then sent away duly honoured by him in return. He then came to the cave Timisā of the Vaitāḍhya mountain and asked his general to strike open its gates as before and halted there for six months. God Naṭṭamāli who used to stay there, came and paid tributes to Bharata. The cave however did not become passable to Bharata, when his ministers told him that his maternal uncles, Nami and Vinami, lived on the slopes of the mountain as lords of the Vidyādharas, and it was on their account that Bharata could not proceed further till they allowed him passage. Bharata then sent messengers to them who told them to pay tribute to Bharata, if not as kings, at least as his relatives. Both of them

agreed to do this and paid homage to Bharata The Kāgani gem then produced light with the help of which the army was able to proceed Then Bharata came to the mountain Kailāsa where the Jina, his father, was practising penance On seeing him he offered him prayers]

2 11b वइसाहट्ठाणु, a posture in which left knee is placed on the ground and the right knee is half bent with its top up This posture enables the archer to discharge the bow with the greatest possible force

4 9b परिछेयवत्ताइ, well-defined, clearly written, readable 16a जो जियइ सो जियइ etc he who lives under or abides by the command (of Bharata) (alone) can live, the other will surely die

6 15 वसुमइ सेंढुलिय, the earth is like a wanton lady who would not mind going with the father and after him with the son

7. 12b को एम ससंकि णाउ थवइ, who will, like you, put his name, i e, write his name, on the moon ? It was considered to be the highest glory to write one's name on the moon 18 तुज्झु समाणु तुहुं, you are like yourself, i e, there is nobody who is like yourself

12 5–14 The passage compares the river, सरि, and the बल or army, both called by a common name वाहिणि, by a series of expressions bringing out their common characteristics.

13 2b तिमीसहि दुग्गमहे, तिमिसा or तमिस्रा is a dark cave through which Bharata had to pass along with his army

15 6b धरणेण, by धरण, the king of snakes who gave on behalf of ऋषभ, the towns to नमि and विनमि

17 7b अम्हह पुणु दइयचरिय गइ, to us there will be the mode of life peculiar to sky-clad monks The expression दइयचरिय indicates the sectarian attitude of the present work along with several other similar expressions like sixteen heavens

22 10 महिहरु महिहरहु etc the mountain (महिहर, महीधर) certainly observes all formalities towards a king (महिहरहु)

XVI

[Having saluted the Jina, Bharata got down from the Kailāsa mountain and then proceeded in the direction of Ayodhyā, and having crossed various countries he came to gates of the city. The disc or Cakra however did not enter the city but stood outside it. His priest then told him that it did not enter the town because Bāhubali, his younger brother was not yet conquered and thus his conquest of the world remained still incomplete. Bāhubali was very strong and might even defeat Bharata, but he kept quiet so long. Similarly his other brothers also did not pay tribute to him. On hearing this Bharata got angry and sent messengers to his brothers to accept his sovereignty. They declined to do that but went to Kailāsa mountain and become monks. Bāhubali on the other hand would not accept the sovereignty of his brother and challenged Bharata to fight with him.]

1. 2 साकेयहु दिसु, towards Sāketa, i. e. Ayodhyā, of which it is another name. See Geographical Dictionary of Nundo Lal Dey. 1.a कुंकुमें छडउ, sprinkling with water mixed with saffron. छडउ is a Desi word. Compare सडा in Marathi. 19 सट्ठि वरिससहसहिं after sixty thousand years which was the period taken by Bharata for his conquest of the world.

4. 10 णउ जि ते etc., in as much as they are not yet won, the cakra does not enter the town. The idea is that the disc cannot enter the town unless the conquest is complete.

6. 1.a कि किर वम्महु वण्णमि, how can one describe (fully) god of love or Cupid? Bāhubali, the son of Ṛsabha, looked like god of love and the poet says it is not possible to do justice to his beauty by a description.

7. 11-11 जइ जम्मजरमरणहं हरइ etc.—we shall pay homage to King Bharata if he can ward off birth, oldage and death from us, if he can save us from birth in fourfold species or from saṃsāra.

11. 7b बुहसंगु, i. e., बुधसंग company of the wise. Note the appearance of ह in the word as sanctioned by Hemacandra, IV 399.

18 12*a* काउ कुदलावलिहि म विरसउ, let not the crow cry on the skulls of your head. The crying of a crow over the head is considered as a sign of approaching death 13*a* देहि करु, pay tribute or homage to Bharata

21. 4*a* जो बलवंतु चोरु सो राणउ, he becomes a king who is the strongest or most powerful thief A successful thief becomes a king while an unsuccessful one is called a robber or traitor.

24 14 धवलाइ जि णिरु धवलइ, on the sandy banks of the Ganges the wings of swans and cheek of ladies away from their lovers, which are already white, became whiter when bathed in the rays of the moon

XVII

[Bharata then declared that if he does not kill Bāhubali because it would be an offence to his father, he would hold him firm as an elephant is held in chains The armies of both Bharata and Bāhubali met and trumpets blown and drums beaten, when Bāhubali said to his ministers that he would not move a step from his place but would stop the progress of Bharata's army When their armies were about to strike, the ministers stood between them and adjured them not to discharge an arrow, and then requested both Bharata and Bāhubali not to engage themselves into a war which would lead to the destruction of poor soldiers, but that they should fight with each other in three ways, viz., they should fix their gaze on each other so that none would move his eye-lashes, that they should strike each other with water, and that they should go in for a wrestling match till one holds or weighs the other on his arms Both of them agreed to fight accordingly But in all the three forms of fight Bāhubali came out victorious When Bharata was lifted up by Bāhubali, he thought of his cakra which immediately went round Bāhubali and stood by the right hand side of Bharata Bāhubali thereupon dropped his brother Bharata on the ground]

1. 2 णंदाणंदणहो, of the son of णंदा, i e., सुणंदा, i e., बाहुबलि

2 9*b* पडिवक्खणाहें, with the lord or prominent member of your enemy 10 ऊणेण हएण etc. There is no gain by killing a low man,

and therefore Rāhu, the eclipsing planet does not get angry with stars.

4 14 सराउँ सेउ बंधमि, I shall build a dam (to stop the progress of the army) by a series of arrows, having the shape of snakes (भयभयउँ).

5. 13 ण सहँ रमंमि I do not behave well when I am with you, i e it is not right for me to indulge in pleasures when my king is marching against his enemy णिहवमि shall pay off, shall redeem, shall clear off.

8. 10 कुड्डि णं लिहियाई as if drawn in picture on a wall.

9 3a बिण्णि वि जण, both of you Compare दोघे जण in Marathi. 13 णय दिट्ठि threefold fight, viz., gazing at each other without winking; splashing water against each other so as to overpower one; and a wrestling match in which one would weigh the other on his arms.

11 5 हेट्ठिम दिट्ठि etc., The lower eye i. e. the eye of Bharata, was conquered by the upper eye i. e the eye of Bāhubali, whose glance was steady fixed and unwinking

12 6b बिसतंतुरसंचुंबिय in which the beaks of cakora birds were being filled with eatable stalks of lotus. 1 थिउ णं कडि मेल्लवि, would just fall (slightly) above the waist but would not cover his face

14 5 खंडिज्जउ etc. Let your bow of sugar-cane be crushed, let (people) drink its juice, or let (them) eat the sweet raw sugar (गउ, गुळ). Bāhubali had his bow mad of sugar-cane and hence the reference 10 ता भणइ etc., Then the son of Jina i. e. Bāhubali said why do you talk in vain? why do you ridicule my bow and arrow?

15. 10a मल्लजुज्झवियप्पहिं, hundred ways of wrestling

16 8b ता चिंतइ सुकंधरु, then the fine-necked (Bharata) thought of his cakra or disc, saying to himself that he could not in reality be a cakravartin if he was to be so overcome by his younger brother

XVIII

[Having lifted Bharata on his arms and thus defeated him for the third time, Bāhubali felt that he insulted his elder brother and cakravartin He therefore asked Bharata to forgive him for the offence and desired to be a monk Bharata however did not like to have the kingdom when he remembered that he had been defeated by his younger brother in the presence of the army, relatives and women He therefore offered his kingdom to Bāhubali and desired to renounce the worldly life Bāhubali could not agree The ministers also intervened and Bāhubali placed his son on the throne, and went to Kailāsa mount to practise penance He practised penance there for one year when Bharata himself came to see him and praised him Bāhubali however, remained indifferent to the praise and was engrossed in acquiring the qualities which a Jain monk should acquire In course of time he attained Kevalajñāna Gods headed by Indra came to him and praised him Bharata also was glad to hear the news that his brother had become a Kevalin Thereafter he enjoyed perfect sovereignty over the six continents of the earth]

2 11 हउ जित्तउ पइ तुहु सइ खविउ, I was defeated by you, and you have once (सइ, सकृत्) forgiven me

3 1–3 जइ पइ etc If you, after having lifted me by your arms, had thrown me on the ground with a crash, if it had not been possible for my disc to save me, would any body have seen me alive ? You have thus won or conquered even earth in forgiveness, you have frightened Indra (कउसिउ, कौशिक , i e , इन्द्र) by your valour 10–11 सासि सूरहो, etc, To the sun there is a counterpart in the moon, to the Mandara mountain there is (small) Mandara , to Indra there is Pratīndra, but O son of queen Nandā (i. e , सुनन्दा), to you alone I do not see any second or counterpart

5 6 जइ एयहिँ etc If even after this (talk) you do not desire to have the earth, i e., do not desire to rule over the earth, then return it to him who gave it to you, i e to Risaha, our father It means Bāhubali is quite unwilling to rule and asks Bharata to rule as before.

6 7 वइरें मेल्लेवि etc. Hatred (वइरु, वैर) having left you, now stands in the form of a dark spot on the moon who is called दोसायर, दोषाकर (दोस + आयर आकर).

7 9a पंचसमिदि, i. e five समिदि viz इरिया, भासा, एसणा, आदाण and उच्चार Note that the word समिदि often retains द in this book as also गिदि in the next line. 9b आवासयजोए, practice or observance of the six आवश्यक, viz, सामाइय, चउवीसत्थव वंदण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग and पच्चक्खाण

10 This kadavaka and the next record that Bahubali, as monk, acquired th knowledge of certain tenets of Jainism and practised them. These tenets are arranged in numbers from one to thirty-two. A similar mention of these tenets occurs in the Uttaradhyayana Sūtra XXXI, and also in this book in XXXVII 15–17 I think it is a good occasion for me to treat them here fully

(1) एक्कु जीवगुणु मणि भाविउ he cultivated in his mind the quality of Jiva which is one, i. e solitariness, as nobody can share the effects of acts done by him. This गुण may be उपयोग as defined in तत्त्वार्थसूत्र II 8 (उपयोगो लक्षणम्), or better still, the एकत्वभावना. In the Uttaradhyayana Sutra however we find:

एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च संजमे य पवत्तणं ॥ XXXI. 2.

i. e., one should practise abstinence in one respect, and advancement in th other i. e., Jiva should abstain from असंजम, indisciplined life and advance with self-discipline

(2) राय दोस दोण्णि वि उड्डाविय, he sent away (lit. made to fly) both राय and दोस. The Uttara. however mentions राग and दोस which is more in keeping with the usual list. Our text certainly reads दोस in all Mss.

(3) (a) तिण्णि वि सल्लइं णिल्लूरियइं, he removed from his heart the three शल्य, viz., मायाशल्य निदानशल्य and मिथ्यादर्शनशल्य.

(b) तिण्णि वि रयणइं लहु संपत्तिउ, he soon acquired the three jewels, viz सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन and सम्यक्चारित्र.

( ) तिण्णि वि दंड झत्ति वज्जेविं, he left quickly (वज्जेविं वर्जयित्वा, त्यक्त्वा) the three types of crookedness, viz bodily verbal and mental The Uttara. has इड्ढीगारव, रसगारव and सायगारव in place of दंड of our Text.

(d) गारव तिण्णि वियज्जिय देवं, the divine one, i e Bāhubali, avoided three गारव8 (गौरव), viz, रिद्धिगारव, रसगारव and सायागारव The Uttarā adds three उपसर्ग8 here

दिव्वे य जे उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहइ जयइ न से अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥

(4) चउगइकम्मणियधणरामियउ सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ, he suppressed or pacified the four appetites or emotions, viz., आहार, भय परिग्रह and मैथुन, which take delight as it were in forming कम which puts the Jiva in the fourfold ससार, viz., देव, नारक, तिर्यक् and मनुष्य The Uttarā has:

विगहाकसायसन्नाण झाणाण च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जइ निच्चं न से अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥

There are four विकथा8, viz राज्य, देश, भोजन and स्त्री; there are four कषाय8, viz, क्रोध, मान, माया and लोभ; the four संज्ञा8 are mentioned above, the four ध्यान8 are आर्त, रौद्र, शुक्ल and धर्म out of which first two types are bad

(5) (a) पंच महव्वयाइ, the five great vows of the monk, viz, अहिंसा, अदत्तादानवर्जन, असत्यवर्जन, परिग्रहत्याग, and ब्रह्मचर्य

(b) पचासवदारइ, the five sources of sin, viz, हिंसा, अदत्तादान, असत्य, परिग्रह and मैथुन

(c) पचिंदियइ कयाइ णिरत्थइ, he avoided the (enjoyment of) objects of five senses, viz, शब्द, स्पर्श, रूप, रस and गन्ध

(d) पच वि णाणावरणइं मथइ, he (cut off) the knots of five types of ज्ञानावरणीयकर्म viz, श्रुतज्ञानावरणीय, आभिनिबोधिकज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मन पर्याय-ज्ञानावरणिय and केवलज्ञानावरणीय

(6)(a) छावासयउज्जमु सविसेसिउ, he made a special effort to observe the six आवश्यक8, viz, सामाइय, चउवीसइत्थव, वन्दण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग and पच्चक्खाण.

(b) छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ, he manifested kindness or compassion towards six classes of living beings, viz, पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति and त्रस

(c) छह लेसहं परिणामु ववहइ, he got stopped the effect of the six लेश्या8, viz, कृष्ण, नील, कपोत, तेजस्, पद्म and शुक्ल

(d) छ वि दव्वइं पच्चक्खइ दिट्ठइं, he saw or realised all the six entities, viz, धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल, जीव and काल

(7) (a) सत्त भयाइं हयाइं णाहिं the serene one (i. e. Bāhubali) destroyed the seven fears or risks, viz. इहलोकभय, परलोकभय, आदानभय, अकस्माद्भय, आजीविकाभय, मरणभय and श्लोकभय.

(b) सत्त वि तच्चइं जाणइं धीरें, the wise one knew all the seven truths, viz., जीव, अजीव, आस्रव, बंध, निर्जरा, संवर and मोक्ष.

(8) (a) अट्ठ वि मय णिट्ठविय अदुट्ठें, the unsoiled one exhausted or destroyed all the eight prides, viz., जातिमद, कुलमद, बलमद, रूपमद, तपोमद, ऐश्वर्यमद, श्रुतमद, and लाभमद.

(b) अट्ठ सिद्धगुण सरिय वरिट्ठें, the excellent one remembered the eight qualities of the सिद्धs, viz.

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुहुमं तहेव अवगहणं ।
अगुरुलघुमव्वावाहं अट्ठ गुणा होंति सिद्धाणं ॥

—सिद्धभक्ति ८

सूक्ष्मपरिणत्वाद्रूपिव्यस्य निरतिशयनिमित्तोपलक्षित परिणाम क्षायिकसम्यक्त्वमिति मन्यते । [illegible] । [illegible] मन्यते । [illegible] मन्यते । [illegible] मन्यते । [illegible] मन्यते । [illegible] मन्यते । [illegible] गुणोऽस्ति ॥ —[illegible]

(9) (a) णवविहु बंभचेरु परिरक्खिउं, he observed the ninefold celibacy viz.

[illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ २ ॥

—T in Ms. K

Devendra Com on Uttar. XXXI 10 however gives the nine rules of celibacy as follows:

[illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥

(b) णवपयत्थवित्थरु वियाणिउं he realised the extent of nine entities, viz., जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा and मोक्ष.

(10) दसविहु जिणधम्मु वियाणियउ, he knew the tenfold qualities of the Jina, viz,

खन्ती य मज्जवज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धव्वो ।
सच्चं सोय आकिंचणं च बम्भं च जइधम्मो ॥ १ ॥

(11) एयारह इयजडिमउ अवियारह धीरह सावयह .पडिमउ, he also understood the eleven प्रतिमा s which lay disciples practise These eleven प्रतिमा s are .—

दंसण वय सामाइय पोसह पडिमा अबम्भ सचित्ते ।
आरम्भ पेस उद्दिट्ठवज्जए समणभूए य ॥

For details see my notes on Uvāsagadasāo, pages 224-229

(12) बारह भिक्खुहे पडिमउ, he also knew the twelve प्रतिमा s of the monks These are described in Devendra's Com. on Uttarā XXXI 11, as follows .—

मासाइ सत्तन्ता पढमा बिइ तइय सत्तराइदिणा ।
अहराइ एगराइ भिक्खुपडिमाण बारसग ॥ १ ॥

The duration of the first भिक्षुप्रतिमा is one month, of the second two months and so of the seventh seven months, of the eighth one week, of the ninth two weeks, of the tenth three weeks, of the eleventh one day and night, and of the twelfth one night. There are several things which the monk practising these प्रतिमा s is called upon to observe Devendra describes them as follows:—

पडिवज्जइ एयाओ सघयणधिईजुओ महासत्तो ।
पडिमाउ भावियप्पा सम्म गुरुणा अणुन्नाओ ॥ १ ॥

गच्छे च्चिय निम्माओ जा पुव्वा दस भवे असंपुण्णा ।
नवमस्स तइयवत्थु होइ जहन्नो सुयाभिगमो ॥ २ ॥

वोसट्ठचत्तदेहो उवसग्गसहो जहेव जिणकप्पी ।
एसण अभिग्गहीया भत्त च अलेवड तस्स ॥ ३ ॥

गच्छा विणिक्खमित्ता पडिवज्जइ मासिय महापडिम ।
दत्तेग भोयणस्सा पाणस्स वि तत्थ एग भवे ॥ ४ ॥

जत्थत्थमेइ सूरो न तओ ठाणा पयं पि सचलइ ।
नाएगराइवासी एग व दुग व अन्नाए ॥ ५ ॥

दुट्ठस्सहत्थिमाईण नो भएण पय पि ओसरइ ।
एमाइनियमसेवी विहरइ जासण्डिओ मासो ॥ ६ ॥

सग्गा गमणम्मि इं एत्त दुमाणी णिणामि जा हव ।
मत्तं दुत्तीसुग्गी णा मण उ समणाविं ॥ ७ ॥
गल्लो व अट्ठधीया मत्तं दु पयन उत्तमंद्दी ।
मीट्ठ पाउत्तयपाउपेमलावकम्मं मइ रिंगेसो ॥ ८ ॥
दोसा रि एगिंदि जिण वरिय णामपुराण मत्तं तु ।
पवरइ तेमरताई एगणवण उदु मारता ॥ ९ ॥
तवमाए पी एवं मत्तं मत्तं तु तरह गोलती ।
पीगामजहुणा पी इमच्चा अंबदुमो दु ॥ १० ॥
एमेव अठिणंं पढ्ढ मत्तं अपयत्तं मत्तं ।
णाममगाय वहिया पच्छमिणाठीए ठावे ॥ ११ ॥
एमो एमगाई अट्ठमतेय ठाण वाहिरमो ।
ईसिप्पभारण्ण अविगिसणवेमदिट्ठा व ॥ १२ ॥

(13) (a) तेरह किरियट्ठाणइं मुणियइं he understood the thirteen किरियट्ठाण, which are enumerated below:

अट्ठाणट्ठ हिंसा रम्मा दिट्ठी य मोसअदिण्णे या ।
अज्झत्थ माण मेत्ती माया लोभेरियावहिया ॥ १ ॥

For details of these see सूयगड II. 2.

(b) तेरहविह चरित्तं गणियउं he also counted upon the thirteen types of good conduct, viz, पंचमहव्वय, पंचसमिदि and गुत्तित्तय.

(14) (a) चोद्दह गंथ, he avoided the fourteen knots which are numerated in T as follows—

मिच्छत्तवेयराया तहहासाइया (?) य छद्दोसा ।
चत्तारि तह कसाया चोद्दस अब्भंतरा गंथा ॥ १ ॥

(b) (चोद्दह) मल दि वज्जियइं, he avoided the fourteen impurities enumerated in T as follows—

णहरोमजंतुअट्ठी कणकुंडयपूयचम्मरुहिरमंसाणि ।
बीय फलकंदमूलाणि मला चोद्दसा होंति ॥ १ ॥

(c) चोद्दह भूयगाम वि बुज्झियइं, he understood fourteen groups of creatures. These fourteen groups are enumerated in T as follows—एकेन्द्रियाः सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदाच्चत्वारः द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः पर्याप्तापर्याप्तभेदात् षट्, पंचेन्द्रियाः संज्ञिअसंज्ञिपर्याप्तापर्याप्तभेदाच्चत्वारः इति चतुर्दशविधो भूतग्रामः ।

बादरसुहुमेइंदियबितिचउरिंदियअसण्णिसण्णी य ।
पज्जत्तापज्जत्ता, भूदग्गामा चउद्दसा ॥ १ ॥

(15) (a) पण्णारह पमाय मेल्लें, abandoning the fifteen प्रमाद्s or flaws, enumerated in T as follows .—

विकहा तह य कसाया इन्दिय निद्दा य पणगो य ।
चउ चउ पण एगेग होन्ति पमाया हु पण्णरसा ॥ १ ॥

i e, four types bad talk, viz राज्यकथा, देशकथा, भोजनकथा and स्त्रीकथा, four कषायs, viz, क्रोध, मान, माया and लोभ, faults of five senses, sleep and drink (पणग, पानक ?)

(b) पुण्णपावभूमिउ जाणेंते, knowing the (fifteen kind of) regions where men act (to acquire merit and demerit), viz, five in each of भारत, ऐरावत and विदेह

(16) (a) सोलहविह कसाय पसमंतें, pacifying the sixteen forms of passions T notes these as: कषाया क्रोधमानमायालोभा प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पा सन्त. षोडशविधा भवन्ति.

(b) सोलहविहवयणेसु रमंत taking delight in sixteen types of expressions T records them as follows:—काललिङ्गवचनानि प्रत्येकं त्रीणि त्रय, तथा वि (?) कोनमिश्रवचनानि त्रीणि समयलोकदृष्टपरोक्षवचनानि चत्वारीति षोडश The Uttarā has गाहासोलसएहिं which refers to the sixteen lessons of the first volume of सूयगडं of which the sixteenth is called गाहज्झयणं

(17) असंजमोह सत्तारह, seventeen types of असयम, indiscipline, Devendra has enumerated these as follows:—असंयमे सप्तदशभेदे पृथिव्यादिविषये, तत्संख्यात्व चास्य तत्प्रतिपक्षस्य संयमस्य सप्तदशभेदत्वात्। यत उक्तम्—

पुढवि-दग-अगणि मारुय वणप्फई-बि ति-चउ-पणिन्दिअज्जीवे ।
पेहोपेहपमज्जण-परिठवण मणो-वई-काए ॥

T has the following explanation पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः द्वित्रिचतु पञ्चेन्द्रियाणामप्रतिलेखन (?) दुष्प्रतिलेखनापहत्योपेक्षानि (?) जीवमनोवाक्काया अपहत्य (?) गृहीनाण्डादिजन्तून् प्रतिलेख्ये (?) उपेक्षा (?) । अथवा—

पञ्चासवेहि विरमण पञ्चिन्दियनिग्गहो कसायजओ ।
तिहि दण्डेहि य विरई संजमो सत्तरसभेओ ॥

तत्प्रतिषेधादसंयम सप्तदशविध

(18) जाणिवि संपराय अट्ठारह, having known eighteen types of संपराय viz, ten यतिधर्मs such as क्षान्ति etc, five समितिs and three गुप्तिs

(19) एउणवीस वि णाहज्झयणइं, having known nineteen lessons or chapters of the book on Illustrations (नाय ज्ञात or न्याय ?) This is clear-

ly a reference to the sixth Aṅga of the Jain Canon which in the Śvetāmbara tradition forms the first part of the नायाधम्मकहाओ. This book consists of two parts Nāyas, Jñātas or illustrations and धम्मकहा or sacred narratives. Our Mss. invariably read ह so that our reading is णाहधम्मकहा. This reading is supported by T also. Uttarā. reads णायज्झयणेसु. The change of Sk. त to ह is not unusual, compare भरह for भरत. It also appears that णाय or ण्हाय constituted at one time an independent work of the Canon to which a small section of धम्मकहा might have been added later. The present text of the नायाधम्मकहाओ in the Śvetāmbara Canon contains nineteen sections called णाय and are named as:

> उक्खित्तणाए संघाडे अण्डे कुम्मे य सेलए।
> तुम्बे य रोहिणी मल्ली मायंदी चन्दिमा इय ॥ १ ॥
> दावद्दवे उदगणाए मण्डुक्के तेयली इय।
> नन्दिफले अवरकंका आइण्णे सुंसु पुण्डरि ॥ २ ॥
>
> —Devendra on Uttarā. XXXI. 14

It appears that in the Digambara tradition there was also a book of the sacred canon called णाह or णाय. It contained nineteen lessons as in the Śvetāmbara tradition, but the names of the Nāhas with the Digambaras had a different order as can be seen from the list given below:—

1. उक्कोडणाम constituted the first अज्झयण. The story as given in T is as follows:—उक्कोडणाम मेघकुमारो। अत्र कथा। [illegible] राया सेणिओ महादेवी धारणा। [illegible] (गय) [illegible]. If we compare this narrative with the one in the first णाय called उक्खित्तणाय of the Śvetāmbara version, we shall see that there is no reference there to a Bhilla being taught by मच्छुमिस्स, although there is agreement in that the elephant saved the life of a rabbit that crept under his foot. It thus appears that the Digambara version of the narrative may have been different from the Śvetāmbara one.

2. कुम्म—This i[illegible] ... [illegible] fourth in the Śvetāmbara [illegible] ... follows:—कुम्म कुम्मलक्खणं। यथा कुम्मे [illegible] ... यथा कुमित्तमिव [illegible] [illegible].

3 अडय—This is the third ज्ञात in both the versions T. says:— अण्डजकथा पञ्चप्रकारा। तद्यथा कुक्कुटकथा मातापैका पितापैकः इति । तापसपल्लिकारियतशुक-कथा। चारणाख्यव्याकरणवेदकशुककथा। अगन्धनसर्पकथा। हंसयूथबन्धनमोचन कथा In the Svetāmbara version we get only one story of the eggs of a peahen and not five as T seems to indicato

4 रोहिणी—This is the seventh story in the Svetāmbara version while it is fourth in the Digambara one. T reads सुपुत्रमल्लदेवेन सह रोहिणी तिष्ठतीति लोकप्रवादं श्रुत्वा रोहिण्या भणितं यद्यसौ शुद्धा तदा यमुनानदी शोषितुं वेष्टित्वा पूर्वाभिमुखं वहत्विति । तन्माहात्म्यात्तथैव जातम । The story in the ज्ञाताधर्मकथा is altogether different

5 सेस—This seems to correspond to सेलए which is the fifth narrative in the Svetāmbara version. T reads शेषे शिष्यकथा यथा चेलिणीपुत्रवारिषेणप्रतिबोधितः पुष्पडालः The story in the ज्ञाताधर्मकथा is altogether different.

6 तुंब (and not रुंच as read in foot-notes)—This is the sixth story in both the versions T reads तुम्बकथा रोहिणेण दत्तकटुकतुम्बभोजनमुनिकथा The story in the ज्ञाताधर्मकथा is different as can be seen from its summary in the com which runs as follows:—

जह मिउलेवालित्तं गरुयं तुम्बं अहो वयइ एवं।
आसवकयकम्मगुरु जीवा वच्चन्ति अहरगयं ॥ १ ॥
तं चेव तव्विमुक्कं जलोवरिं ठाइ जायलहुभावं।
जह तह कम्मविमुक्का लोयग्गपइट्ठिया होन्ति ॥ २ ॥

7 सघाद—This is called सघाड and is the second in the Svetāmbara version T reads —सघादे । अस्य कथा । कौशाम्ब्यां नगर्यामिन्द्रदत्तादयो द्वात्रिंशदिभ्या, तेषां समुद्रदत्तादयो द्वात्रिंशत्पुत्राः परस्परमित्रत्वमुपागता । सम्यग्दृष्टयस्ते केवलिसमीपे स्वल्पं निजजीवितं ज्ञात्वा तपो गृहीत्वा यमुनातीरे पादोपयान (पादपोपगमन ?) मरणेन स्थिता । अतिवृष्टौ जातायां जलप्रवाहेण यमुनामध्ये सर्वेऽपि ते पातिताः। परमसमाधिना कालं कृत्वा स्वर्गं गता The narrative in ज्ञाताधर्मकथा is altogether different from the above

8 मादंगि—It appears that मायन्दी which is the ninth story in the Svetāmbara version should be the counterpart of मादंगि of the Digambara version T seems to make मादंगिमल्लि as one narrative which would however reduce the number of narratives to eighteen T reads. मादंगि-मल्लिकथा यथा वज्रमुष्टिमहाभटभार्याया मंगि (मादंगि ?) नामायाः मल्लिपुष्पमालाभ्यन्तरस्थितसर्पदष्टाया कथा. The narratives of the Svetāmbaras and the Digambarás do not at all agree

9 मल्लि—This is the eighth narrative in the णायाधम्मकहा. For remarks see above.

10. चंदिम—This is the tenth narrative in both the versions T says चंदिम [illegible] ([illegible]). Perhaps both the versions give the same narrative.

11. दावद्दु—The eleventh narrative in the Svetāmbara version is called दावद्दव which is the name of a tree in that version. T however seems to mean a different story T reads : [illegible]

12. [illegible]—It appears that this [illegible] should correspond with [illegible] which is the fourteenth story is the णायाधम्मकहा. T reads: [illegible] The Śvetāmbara version of [illegible] does not seem to agree with the above.

13. [illegible]—This seems to correspond to दद्दुर which is the thirteenth story is the Svetāmbara version. T reads : [illegible] This has no correspondence with दद्दुर of the Svetāmbara version.

14. [illegible] ([illegible])—This seems to be [illegible] of the Svetāmbara version which is the seventeenth story there T reads [illegible]. This story also does not seem to have any correspondence with the Śvetāmbara version.

15. [illegible]—This should correspond with सुंसुमा of the Svetāmbara version which is the eighteenth story there. T reads [illegible]. There seems to be no agreement between the two versions.

16 [illegible]—This is called अवरकंका in the Svetāmbara version where also it is the sixteenth narrative. T reads [illegible]. There is mention of the town of अवरकंका in the Śvetāmbara version, but beyond this there seems to be nothing common between the stories in the two versions.

17 [illegible]—This is called the same in the Śvetāmbara version but there it is the fifteenth story T reads : [illegible]

विश्वानुलोमभृत्यानां किंपाकफलकथा The narrative seems to be similar in both the versions

18 उदगनाह—This seems to correspond to उदगनाअ of the Svetāmbara version which is the twelfth story there T reads उदगनाह उदकनाथ (?) कथा यथा राजामात्यसमक्षगङ्कककथा The story seems to be similar in both the versions

19 पुडरिगो य—This is the last story in both the versions T reads: पुडरिगो य पुण्डरीकराजपुत्र्या कथा The Svetāmbara version seems to be different from the above as will be seen from the extract from the com

वाससहस्स पि जइ काऊण सजम सुविउल पि ।
अन्ते किलिट्ठभावो न विसुज्झइ कण्डरीउ व्व ॥
अप्पेण वि कालेण के वि जहागहियसीलसामण्णा ।
साहिन्ति निययकज्ज पुण्डरीयमहारिसि व्व ॥

T adds: "अथवा--गुण जीवा प(?)जत्तीपाणासायामग्गणा उ य ।
एउणवीसा एदे णाहज्झयणा मुणेयव्वा ॥

अथवा—नव केवललद्धीओ कम्मक्खयय ज हवन्ति दस चेव ।
णाहज्झयणा एए एउणवीसा वियाणेहि ॥

कर्मक्षयजा घातिकर्मक्षयजाः दशातिशयाः It is clear that the names of the अज्झयणs agree in the two versions largely, but their contents seem to differ widely Of course this is a mere hypothesis based upon somewhat imperfect evidence of T

(20) वीसविहइ असमाहीठाणइ–Twenty types or causes of असमाधि, absence of transquility of mind These twenty causes are given in Devendra's com as follows:—

1 दवदवचारी–दुय दुय वच्चन्तो इहेव अप्पाण पवडणाइणा अन्ने य सत्ते वावायणाइणा असमाहीए जोयइ, परलोगे य अप्पयं सत्तवहजणियकम्मुणा असमाहीए जोयइ

2 अपमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ

3. दुप्पमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ

4 अइरित्ताए सेज्जाए आसणे वा निवसइ

5 राइणिए परिभवइ

6 थेरोवघाई–सीलाइदोसेहिं थेरे उवहणइ त्ति पुत्त भणइ.

7 सुभेलपाई-अल्ला एमिभ्रिधारए उत्तरा लि गुणे मरा

8 गुरुण गुणे संजरा

9. मई मज्झे व मयमगुणे हरा

10. णिद्दिमर हरा

11 अभिरसमलोहुणिवि भासए मह मुणो गुणे थेणो व लि

12. मर्ण अहिलमह करेइ.

13. रसमणाणि व हरिइ

14. ठलम्मगार अणंतागमो भगिडलं संकमए अमरसोहि गा हणेहि मिलो मैमर

15 अदाणे हलार्थ करेइ

16. सलमहाहई करेइ गाईए या मझया सईण उदय

17 कम्मई करेइ मं या कमए मेय कम्मह हरए

18. महीस करेइ मरह य मेय मणे णया सम्मतीओ अस्सा

19. मरोइणाओ मायमले माल मझए

20 एयमामणिए य करेइ

T also gives a similar list of twenty causes, but the text is very corrupt

(1) एक्वीस सबल सि, i. twentyone impurities or impure and sinful acts (सबल). They are given by Devendra as :—

न सइ अ (१) हत्यकम्मं कुव्वन्ते (२) मेहुणं हु सेवन्ते ।
(३) राईं च भुंजमाणे ( ) आहाकम्मं च भुंजन्ते ॥ १ ॥
(५) सागारियं च रायपिण्डं (६) कीयं ( ) पामिच्च ( ) अभिहड (९) अच्छेज्जं ।
(१) भुंजन्ते सबले उ पच्चक्खियअभिक्ख भुंजन्ते ॥ २ ॥
(११) छम्मासब्भंतरओ गणा गणं संकमं करिन्ते य ।
(१२) मासब्भन्तर तिन्नि य दगलेवा उ करेमाणे ॥ ३ ॥
मासब्भन्तरओ तिन्न माइट्ठाणाइं तिन्नि कुव्वमाणे ।
(१३) पाणाइवायाई कुव्वन्ते (१४) मुसं वयन्ते य ॥ ४ ॥
(५) गिण्हन्ते य अदिन्नं (१६) आउट्टि तह अणन्तरहियाए ।
पुढवीए ठाण सेज्जा निसीहियं वा वि चेएइ ॥ ५ ॥
(१) एवं ससिणिद्धाए ससरक्खाए चित्तमन्तसिललेलु ।
कोलावासपइट्ठे कोलमुणा नेसि आवासे ॥ ६ ॥
( ) अण्डसपाणसबीए जाव उ संताणए भवे तहियं ।
ठाणाइ चेएन्ते सबले आउट्टियाए उ ॥ ७ ॥

(१९) आउट्टि मूलकन्दे पुप्फे य फले य बीयहरिए य ।
भुञ्जन्ते सबले ऊ (२०) तहेव सवच्छरस्सन्तो ॥ ८ ॥
दस दगलेवे कुव्व तह माइट्ठाण दस य वरिसन्तो ।
(२१) आउट्टिय सीओदगवग्घारियहत्थमत्ते य ॥ ९ ॥
दव्वीइ मायणेण य दिज्जन्त भत्तपाण घेत्तूण ।
भुञ्जइ सबलो एसो इगवीसो होइ नायव्वो ॥ १० ॥

(22) सहिवि दुवीस दुसज्झ परीसह, having borne twenty two unpleasant contacts, viz, क्षुत्, पिपासा etc For details see तत्त्वार्थाधिगमसूत्र IX 9

(23) तेवीस वि सुत्तयडे, i e twenty-three chapters of the सूत्रकृताङ्ग, the second Anga of the Canon of the Jains, beginning with समयाध्ययन and so forth. T reads ससमए वेदालिजोए उवसग्ग इत्थिपरिणामे निरयन्तर वीरथुदी कुसीलपरिभासिए धम्मो य अग्गमग्गे समसरण तिकालागन्थसाहयए (?) आदा तद्दित्था (?) पुडरीको वीरियट्ठाणे पयआराहेयपरिणामे पच्चक्खाण अणगारगुणकित्ती सुद अत्थ णालन्दे सुदयडज्झयणाणि तेवीस द्वितीयाङ्गश्रुतवर्णनाधिकाराश्च It we are to trust the text of T which is admittedly corrupt, the order of adhyayanas in the Digambara version would be different from the Svetāmbara one

(24) चउवीस वि जिणतित्थइं—the twentyfour तीर्थs of the twentyfour Jinas

(25) पञ्चवीस भावणउ—For details see तत्त्वार्थाधिगम, VII 3-8 T reads एकैकस्य परिपालनार्थं वाङ्मनोगुप्तीर्वा (?) दानसमित्याद्य पञ्च भावना, अथवा, त्रयोदश क्रिया द्वादश तपांसि च पञ्चविंशतिर्भावनाः

(26) छव्वीस वि पुहवीउ, the twentysix regions; T reads सौधर्मादि-मोक्षपर्यन्ता एका (?) पृथ्वी उत्सर्पिण्योर्भरतैरावतयोरवसर्पिण्यां शुद्धा नाम पृथ्वी भवति । उत्सर्पिण्यां च सैव सारा इत्युच्यते इत्येका पृथ्वी । रत्नप्रभो (?) मौखरभागचित्राद्य (?) पङ्कभागाद्य सप्त नरकभूमय. इति षड्विंशति पृथिव्य

(27) सत्तवीस जइगुण, twentyseven vows of a monk, viz, द्वादश भिक्षु-प्रतिमा, अष्टौ प्रवचनमातर, क्रोधमानमायालोभमोहरागद्वेषाणामभावश्च सप्त, T Devendra however gives a different list —

वयछक्कमिन्दियाणं च निग्गहो भावकरणसच्चं च ।
खमया विरागया वि य मणमाईणं निरोहो य ॥ १ ॥
कायाण छक्क जोगम्मि जुत्तया वेयणाहियासणया ।
तह मारणन्तियहियासणा य एएऽणगारगुणा ॥ २ ॥

(98) [illegible]—There are twentyeight (?) [illegible] as T says but Devendra gives them as : [illegible]

(99) [illegible] twenty-nine books of heretics which they believe to be sacred. T reads : [illegible] (1) [illegible] (1) [illegible] (1) [illegible] । [illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥

Devendra gives a different list :

[illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ २ ॥

For still another list see [illegible] under [illegible]

(30) [illegible], thirty causes or types of Infatuation. T reads : [illegible] (1) [illegible] । [illegible] (1) [illegible] । [illegible] Devendra's list is altogether different from this for which see his com

(31) [illegible], shaking off the thirty-one types of impure acts. They are given in T as follows :—[illegible] (1) [illegible]

(32) [illegible], meditating upon thirty-two preachings of the Jinas. They are given in T as follows :—

[illegible] ।
[illegible] ॥

The Uttarā XXXI 20 mentions one more series of thirty three terms as तेत्तीसासायणासु, but we do not find any mention of it in our work either here or in XXXVII 15–17 below

14 9*b* छप्पण्णन्तरदीवई—These fifty six अन्तरद्वीपs are located in the लवणसमुद्र outside जम्बुद्वीप, seven in each of the eight quarters For details see नन्दिसूत्रटीका of मलयगिरि, pp 102–103

15 6–10 These lines describe the different functions of the nine निधिs or treasures

XIX

[Bharata then thought that the wealth he acquired would be of no use if it was not given to worthy persons, popularly known as Brahmins These Brahmins, according to him, were persons who observed the vows laid down by the Jinas. He gave largely and liberally to such persons presents such as clothes etc

One day Bharata saw a bad dream towards the end of the night. He was very much disturbed by the dream and hence went to see Risaha the next morning After offering prayers to him Bharata asked him to tell him how and by what meritorious act Risaha became a Jina and Bharata as cakravartin, Bāhubali a strong man, Śreyāmsa a liberal donor, and Somaprabha a meritoriors ruler Risaha then narrated to him how there would come hard times of Duhsamā when all notions of morality would be completely changed]

8 13 अवसवणउ, अपस्वप्नः, a bad dream

10 12–13 धीवरिसरिपुत्तह देहिंति पहुत्तणु, they will give full powers to persons like व्यास who is the son of a fisherwoman and दुर्वासस् who is the son of a female ass व्यास is known to be the son of सत्यवती by पराशर, but the origin of दुर्वासस् as the son of a female ass I am not able to trace

12 2*a* पंचमजुगि, i e, in दुष्षमा

XX.

[Rsabha first refutes various theories of creation and states that the elements that constitute the universe are earth, air fire and water and that these are beginningless and endless. The universe is not created by either Brahmā, Viṣṇu or Śiva. In the midst of this universe is situated the human world called Tiriyaloya with many islands and oceans. There on the western side of the mountain Meru there is a region named Gandhala with its capital Alayā (Alakā) There ruled a king named Aibala (Atibala) with his queen Manoharī. A son named Mahābala was born to them and as soon as he attained youth king Atibala decided to place him on the throne and renounced the worldly life. King Mahābala thereafter began to rule the earth. He had four ministers named Mahāmai (Mahāmati), Sambhinnamati, Satamati and Saimbuddha (Svayambuddha). Now one day this Svayambuddha told the king the futility of pleasures of the world, and advised him to practise the pious life as recommended in Jainism. Then Mahāmati, championing the cause of the Cārvāka school, advocated the doctrine of the identity of the body and the soul. The minister Svayambuddha refuted the doctrine of Mahāmati, when Sambhinnamati advocated the doctrine of momentariness advanced by the Buddhists. This doctrine of momentariness was also refuted by Svayambuddha when Satamati came forward with his doctrine of illusion. Svayambuddha refuted this doctrine also.

Svayambuddha then narrated to king Mahābala a story of one of his ancestors, viz. Aravinda. This Aravinda had two sons named Haricandra and Kuruvinda. One day Aravinda suffered from a terrible burning sensation in his body and, when he found that it did not alleviate by any remedy asked his son Kuruvinda to prepare a pool of blood of animals, bathing in which, he said, would stop his sufferings. Kuruvinda obeyed his father's command, but prepared a pool of artifical blood (liquid lac). When Aravinda entered it he tasted the liquid and found that his son had deceived him. He then ran after his son to kill him, but stumbled on the way and was killed by his own sword.

There was another ancestor of Mahābala named Dandaka His son was named Manimāli He amassed a large fortune and having died became an ajagara (a kind of non poisonous snake) and kept a watch over his wealth One day Manimāli came to the house and saw the snake The snake recollected his former birth and recognising his son did him no harm Manimāli was surprised to see this, went to the sage and asked him who the snake was On learning that he was his father, Manimāli came home and instructed him in the Jain doctrine The snake practised it and was born as a god in the next birth The god came to his son Manimāli and offered him a present of a necklace which Mahābala had been wearing]

17 2–5 अणिहणइ् etc The four elements, viz., the earth, the air, the fire and the water have no beginning, no end and are not caused by any Whenever these four elements combine, marks of cetanā become visible Life comes into existence in the elements as intoxicating element does by the combination of raw sugar, water and flour There is thus no difference between the body and the soul This is the doctrine of the Cārvāka school

18 9*b* पउरंदरिय वित्ति, the doctrine of Puramdara, i e, Indra, who along with Brhaspati is mentioned as founder of the Cārvāka school 10–11 विणु जीवें etc If elements combine without jiva or soul and form themselves into a body, then let there be a body in a jar where a concoction of herbs is kept, in other words living bodies may come into being even in test-tubes

19 11 रिसिसमयहु भत्तएण, by one who was the devotee of the doctrine of the sage i e Jina. 12 णिरण्णउ, निरन्वयम्, without continuity.

21 3 आयाइ्ड etc A Tittibha bird, saying that the sky will fall, is frightened, and rests raising up its legs (to support the falling sky).

XXI

[Svayambuddha further told Mahābala that his father, grandfather and great-grandfather had all attained auspicious places as a result of their pious life On hearing this he also went to the

Mandara mountain to pay homage to the Jina. Just at this juncture there arrived a pair of Cāraṇamunis. Svayambuddha saluted them and asked them about the future of his master Mahābala. They thereupon told him that he was destined in the tenth birth to be a Tīrthaṅkara; but in his past life he was the son, named Jayavarman, of king Śrīṣeṇa and queen Sundarī. As the king gave his throne to his younger son Śrīvarman, Jayavarman felt that he should turn out to be a monk. He therefore went to Tīrthaṁkara Svayamprabha of the past age and became a monk. Now at this juncture there arrived a Vidyādhara king with a huge paraphernalia. The young monk Jayavarman was so much impressed by the king's fortune that he formed a hankering to have, as a result of his penance, royal fortune similar to that of the king in his next life. It was on this account that in the subsequent birth he was born as Mahābala. Svayambuddha then went to Mahabala, saved him from his other ministers who were misleading him. As Mahābala had only one more month of life left to him, he decided to die a saṃnyāsa maraṇa. He was born in the Īśāna heaven after death, as a god named Lalitāṅga and had as his consorts Svayamprabhā and Kanakaprabhā.

2. 12 कय सिरु पेल्लवत्थई, he stretched his hand (to pick up) a lotus flower from among those that were offered to the images of the Jinas.

4. 4b किं भव्नु अभव्नु व भव्वु, tell me whether Mahābala is bhavya, i. e., capable of attaining emancipation or no.

8. 1a चाउ णियाणु, he formed a hankering or cherished a desire that his ascetic life should bring him some reward in the following birth. 9 णाम्रणिच्चे, i. e., on account of अपत्य

XXII.

[One day Lalitāṅga saw some signs such as the withering of flowers on his body which indicated that his period of life as a god was to come to an end soon. He was very much frightened but was advised that he should better spend the rest of his life in doing some pious acts. He thereupon went to worship the Jinas. In course of

time he died and was born as son named Vajrajamgha to king Vajrabāhu Now while Vajrajamgha had been growing on the earth, his consort Svyamprabhā wept bitterly for the loss of her husband, and after her death, was born as daughter named Srīmatī to king Vajradanta and queen Lakṣmīmatī of Pundarinkinī One day when this Srīmatī was half asleep, she saw a dream of a visit of a Jina with a large number of gods attending on him She was immediately reminded of her former brith and former husband and fell on the ground in a swoon She was soon brought round and her parents were called in The king soon discovered that his daughter was love-sick He therefore put her under the care of a wise nurse and asked her to ascertain the person loved by her

At this juncture a report was brought to him that Jasahara attained Kevalajñāna and Cakra made its appearance in his armoury The king immediately went to pay homage to the Jina, and as a result of this act he obtained Avadhijñāna He came home and told his daughter the story of her former life in heaven and assured her by saying that she would soon meet her former lover, and then went away on his conquest of the world.

One day the nurse attending on her asked her to speak out her mind Thereupon Srimatī told her that she was in the third previous birth the youngest daughter named Nirnāmikā of a poor merchant named Nāgadatta who had a large family of ten One day while this Nirnāmikā was returning from the forest where she had picked some fruit, she saw a large crowd of people going to meet the Jina She also went there, paid homage to the Jina and asked him why she was born poor Thereupon the Jina told her that in her previous birth she put the dead body of a dog on a monk, but as the monk was unaffected by it, she removed it on the third day out of compassion. As a result of this act she was born poor The Jina thereafter explained to her the true nature of Dharma and asked her to observe one hundred and fifty-eight fasts so that she would get rid of her inauspicious acts She did accordingly and after death was born in Īśāna heaven as wife of Lalitānga Six months after his death, she also came to the earth and was born as Śrīmatī On recollecting her

love to Lalitāṅga she fainted. Having narrated the story of her past lives, Śrīmatī drew on canvas the portrait of Lalitāṅga and asked her nurse to find him out.]

9 11b [illegible] [illegible] व [illegible], the scented paste ([illegible] [illegible]) takes away my courage as it destroys force ([illegible]) or as if it is like a bath to the dead ([illegible] + [illegible]).

11 8b [illegible] [illegible] although he (i. e., Jina) is destitute of wife or consort ([illegible], [illegible]) he knows the three times, viz., past, present and future ([illegible], [illegible]).

16 6a [illegible] [illegible] we ten people, i. e., father mother five sons, viz. [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] and [illegible], and three daughters, viz., [illegible] [illegible] and [illegible]. Note the use of [illegible] with numerals which is preserved in Marathi. Compare [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] etc. 10b [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], I filled the cavity of my clothes (particularly of the [illegible]) with a vegetable called [illegible] which is similar to spinach ([illegible] or [illegible]). This [illegible] seems to be a common article of food as vegetable available to poor people.

18 9a [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] there is merit, i. e., one acquires merit by looking his face into ghee. This line and several others in this kaḍavaka mention some of the beliefs or superstitions of Brahmanic religion.

19 11 [illegible], etc. If, O young girl (बालि), you observe one hundred and fifty-eight fasts on the fifth day of the bright half (सियपक्खि, सुक्कपक्खे) of the month, you shall get rid of your past sins. [illegible] ([illegible]?) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], T

XXIII

[The nurse of Śrīmatī then took the portrait painted on canvas and went to the temple of the Jinas, and announced to the people that the person who would read correctly the events painted on the canvas, would marry the princess Śrīmatī. A crowd of princes from

different countries arrived there to try their luck, but to no purpose Now her father returned from his conquest of the world and narrated to her the story of his former lives

Vajradanta said In my fifth previous birth I was born as son named Candrakīrti of an Ardhacakravartin I had a friend named Jayakīrti We both of us enjoyed the kingdom for a long time, and having practised penance, were born next in the Māhendra heaven. After that we were both born as Baladeva and Vāsudeva named Srīvarman and Vibhīsana to king Srīdhara and queen Manoharā of the town of Ratnasamca When we attained youth, our father handed over the kingdom to us, practised penance and obtained kevalajñāna. Our mother remained at home, but spent her time in doing pious acts She was born next as god Lalitāṅga In course of time my brother Vibhīsana died, but not knowing that he was dead I carried on my shoulder his body and wandered from place to place God Lalitāṅga, i e, my mother in the previous birth, saw this, and in order to bring me round, stood on the way crushing sand to extract oil from it. I asked him what he was doing, and on hearing from him his objective, told him that he would not get oil from sand The god then asked me why I had been carrying the dead body of my brother as it would not regain life Then I realised that my brother was dead I did the funeral rites for my brother, gave my kingdom to my son, practised penance, and after death was born as Indra in the Acyuta heaven

Vajradanta narrates further the various births of Lalitāṅga till he is born in Utpalakheda as Vajrajamgha]

8 2 सो सरसरविहिण्णु सा ण लहइ, he, being hit (विहिण्णु, विभिन्न.) by the arrows (सर, शर) of the god of love (सर, स्मर), does not secure her (सा) Note that सा is used here as Acc sing feminine, which is very rare in Apabhramsa

5 Note the शृखलायमक or दामयमक here Note particularly 7a which line looks apparently incomplete as there is no 7b in any of the Mss The occurrence of such half lines seems to be justified and correct, and we need not suppose that b is lost, for the यमक here °गिहे—गिह°—णियरे—णियराय° in 6b, 7a and 8a remains in tact

8. 9b सीहणिक्कीलिय—This is a kind of penance or a series of fasts which Jains observe Similarly सव्वसु in 10a मुत्तावलि in 9 9a and रयणावलि in 9. 14a, कणयावलि in 11. 9a are fasts the details of which can be seen in any dictionary

21 2 तिलयाउ ठाणयरु, from the place of तिलक 13a मणसिय i e मिथ्यादेश.

XXIV

[In the meanwhile the wise nurse of Śrīmatī went out with the picture and while wandering over different countries came to Utpalakheḍa There she kept the picture in the temple. Vajrajaṁgha came to that place saw the picture and fell into a swoon When he recovered he was asked what the matter was and told his friends that h — th — of his — at hf including his love to

separation fr

was born. Vajrabāhu, the father of Vajrajaṁgha was informed of the happenings, and having assured his son that he would secure Śrīmatī for him, started for Puṇḍarīkiṇī. He was received well by Vajradanta, and was asked why he came to his house. After having heard of the picture incident, Vajradanta offered his daughter Śrīmatī to Vajrajaṁgha, and thus brought about the union of lovers]

4. & 5 Note the events drawn in a picture as also those that could not be and had not been drawn in the picture.

6. 8b को वि पुसइ लिहियउ णिडालि, who can wipe off what is written on the forehead ? This has become a proverb in M

XXV

[After marriage Vajrajaṁgha and Śrīmatī returned to Utpalakheḍa. Fifty-one twin sons were born to them One day Vajrabāhu

saw in a lotus a dead bee as it was fond of lotus-odour and did not

leave the lotus even though it was closing in the evening On seeing this he also was disgusted with pleasures which brought death to creatures and renounced the worldly life His son Amitatejas then did not like to rule over the earth and followed his father Thus Pundarīka, the grand son of Vajradanta came to the throne As he was young, his mother thought that he should be helped by friends like Vajrajamgha, and therefore sent a letter to him. He proceeded to her place, and while camping in a forest, met a pair of young monks who were no other than his own youngest sons, and asked them to narrate to him the story of his previous births, viz those as Jayavarman, Mahābala, Lalitānga and Vajrajamgha They then narrated the four previous births of Śrīmatī, viz, those as Dhanaśri, Nirnāmikā, Svayamprabhā and Śrīmatī They also narrated the previous births of his priest, minister, friends and servants He was also told that in his eighth birth he would become a Tīrthamkara, and Srīmatī would become prince Śreyāmsa After listening to this he proceeded to Pundarinkinī, saw there his sister Anumdharī and the young prince Pundarīka, and after having arranged for the proper government of his kingdom, returned home

12 6*b* दूसावासु, a camp in tents (दूस, दूष्य, पग्गृह).

19 11*a* कडुवि, a sweet meat seller, a baker.

XXVI

[Vajrajamgha and Srīmatī were then born in the Uttarakurus as twins to Aninda and Ajjavā There they recollected their previous birth when a pair of Cāranamunis arrived there One of them was no other than Svayambuddha, the minister of king Mahābala This Cāranamuni then explained to him the subsequent births of Mahābala as also his own, and advised him to follow the Jain doctrine Vajrajamgha was then born as Śrīdhara in the Īśāna heaven, and Śrīmatī, changing her sex, was born as god Svayamprabha in the same heaven The Cāranamuni also narrated the subsequent lives of the three other ministers of Mahābala Now god Śrīdhara was next born as prince Suvidhi of king Subhadrsti and queen Nandā Suvidhi married Manoramā, the daughter of king Abhayaghosa God Svayamprabha

was now born as son to Suvidhi and was named Keśava. Suvidhi was next born in Acyuta heaven as Indra, and Keśava was born as Pratīndra in the same heaven]

1. 14b सक्कय कव्वे—It appears that the study of Prakrit poems was considered to be a fashion of the day

7 10b विउ सत्थेण भण्ण बुज्झिज्जइ—The root विद् (विउ in Prakrit) is widely known to mean "to know" so the term Veda means knowledge Now as our text says, the Veda should preach kindness to creatures, and therefore those books which preach the doctrine of हिंसा cannot be called वेद but a सत्थम्, i. e., sword.

XXVII.

[Acyutendra and Pratīndra were next born as prince Vajranābhi and merchant Dhanadeva. Vajranābhi became a monk after having handed over his kingdom to his son Pavidanta or Vajradanta Dhanadeva also became a follower of Vajranābhi. Now Vajranābhi, by his hard penance, acquired the acts which secured for him the Tīrthaṃkara nāma and gotra, and in due course was born in the Sarvārthasiddha heaven as Ahamindra. Dhanadeva also was born as Ahamindra in the same heaven. In the following birth Vajranābhi was born as Ṛiṣaha and became the first Tīrthaṃkara and Dhanadeva was born prince Śeyaṃsa Similarly Ṛiṣaha narrated the births of several others of his followers including his sons. Bharata then asked the Tīrthaṃkara as to how many Tīrthaṃkaras, Vāsudevas, Baladevas, Prativāsudevas and Cakravartins would there be in future. Ṛiṣaha mentioned their number Bharata then offered a prayer to Ṛiṣaha]

8 Note that this kaḍavaka summarises the ten previous births of Ṛsaha. They are—जयवम्म विज्जाहर, महब्बल, ललियंग, वज्जजंघ, भोयभूमि, सिरिहर, सुविहि, अच्चुइंद, वज्जणाहि and सव्वत्थसिद्धिअहमिंद Similarly the previous births of Seyaṃsa are summarised here

12, 5-8 ... —The passage says that ... will be the twentyfourth Tīrthaṃkara named ...

On hearing this prophecy मरिचि was delighted and danced out of joy. This exhibition of pride and joy on his part was responsible for his long wanderings in Samsāra He was destined to be the teacher of Kapila, the author of Sāmkhyasūtras Compare Hemacandra, Trisasti VI 373-390.

XXVIII.

[Bharata then returned to Ayodhyā and performed some propitiatory rites for his dreams He made gifts to the needy and the poor and led a pious life He ruled as a good and noble king, explained to his feudatories how they should behave as kings

Gautama, the pupil of Mahāvīra, continued the narration further and said to Śrenika as follows —King Somaprabha had fourteen sons The eldest of them was called Jaya He was crowned and placed on the throne His father and his uncle Seyamsa became monks When one day King Jaya went to the pleasure-garden he saw a monk preaching and a snake and its mate listening to it. King Jaya came to that very place next year when he found that the snake had left the female snake which then formed friendship with a low class snake called Dīvada The king touched them with the lotus flower in his hand The king narrated the event to his wife at night, when there arrived a god and told the king that he was the snake and that his wife, the female snake, after being touched by the king, was killed by his attendants and became a goddess The god thereafter gave to king Jaya heavenly garments and went away

Now a minister of Jaya came and told him that there was a beautiful princess named Sulocanā, daughter of king Akampana and queen Suprabhā Her father saw her in youth and thought he should find out a suitable husband for her He accordingly arranged to hold a Svayamvara King Jaya attended this and was chosen by Sulocanā there Arkakīrti got angry because he was rejected and wanted to fight with Jaya At this juncture Sulocanā went to the Jina and took a vow that if any of the two, viz., Arkakīrti or Jaya dies on her account in the fight she would die by renouncing food. In the fight however king Jaya defeated Arkakīrti and arrested

him. Sulocanā therefore returned home. In the meanwhile Jaya also approached Arkakirti and coaxed him to give up his anger towards him.]

20. 11b मेहेसर णि सुणेवि पई king Jaya was called मेहेसर or मेहसर because his voice resembled that of a cloud. Our text gives मेहेसर here and also in 28. 4a, but elsewhere we find the name as मेहसर in 21. 15, मेहसरेण in 28. b, मेहसरकुमार in 28. 9b. Metrically मेहेसर here is not good, but in 28. 4b it is quite right. In T also under 30. 10b we get मेहेसरहिव.

XXIX.

[King Jaya returned home and paid homage to his father. While returning home he stopped on the bank of the Ganges, when an elephant attacked Sulocanā, but her life was saved by the guardian deity of the forest who gave her presents. Sulocanā then asked her who she was. She then told her that she was called Vindhyaśrī, the daughter of Vindhyaketu and Priyaṅguśrī, and obtained her present position because of the fact that Sulocanā taught her the mantra of five Parameṣṭhis. Now the female snake touched by king Jaya and killed by his servants became a crocodile in the Ganges and sent out of enmity the elephant to attack Sulocanā.

One day when king Jaya was seated in the court, he saw a couple of divine beings. He recollected his previous birth, and fell into a swoon saying "O, where is Prabhāvatī ?" Sulocanā also fainted saying "Rativara, where are you ? On recovering from the faint, she said that she was a female pigeon and Jaya was her lord then. When king Jaya asked her to narrate their former life, Sulocanā said :

In the town of Śobhāpura there was a king named Prajāpāla and queen Devaśrī. There lived the minister Śaktiṣeṇa and his wife Atavīśrī. One day a beautiful orphan came to him. The minister asked him why he had been wandering in the childhood. The boy then told the minister that he was driven out by his step-mother from the house as he did not keep watch well on the house. The minister

Saktisena therefore adopted him as his son and named him Satyadeva. Sulocanā continues the narrative of her past lives and also of the boy, Satyadeva]

5 2*a* सुयावरु, daughter Sulocanā and her husband Jaya. 8*a* पडकुडिहि, in the tent

9 10*a* असिआउसाइ i e five letters अ, सि, आ, उ and सा, standing for the initial letters of the five परमेट्ठिs, viz अरहन्त, सिद्ध, आयरिय, उवज्झाय and साहु Thus असिआउसा becomes a sort of मन्त्र which the Jains put on par with ओंकार and such other mystic syllables. Compare XXXV 12 10 where also the same mantra occurs.

11 11-12 पारावइ हउ etc. Sulocanā says that she was a female pigeon named Ravsienā, while king Jaya was a male pigeon called Rativara 14 कइयवेण जणु खज्जइ, people are overcome (खज्जइ, lit swallowed) by tricks The co-wives of Sulocanā did not believe the story as narrated by her and therefore said that it was a trick by her to win the love of king Jaya

12 4 The story of the former lives of Jaya and Sulocanā begins here 8*a* अइइसिरि is mentioned in the sequel as धणसिरि (See 13 7*a*) 13 परमायए, by my step mother

16 4*a* चारण is a class of ascetics This class has two types, viz, Jamghācārana and Vidyācārana Both the classes are capable of flying through the sky Jamghācārana acquires the art of flying as a result of his fast of four days and the Vidyācārana does it as a result of his learning and fast of three days

21 8-9 The pair of pigeons was asked by their master as to where the sinners go and the pair would show by their beaks the region underground, viz, the hell, and as to where the meritorious go, the region above, viz, the heaven

24 4 तहिं एक्कु etc There is one plate containing five jewels He who discovers it will marry Priyadattā

XXX.

[Sulocanā continues the narrative of her previous births, particularly of her birth as Prabhāvatī and of Jaya as Hiranyavarman. There they practised penance as ascetics and passed through several births on the earth as well as in heaven. In one such births they were born as gardener and his wife when they used to offer flowers to the Jinas. One day they were both bitten by a snake and died but cherished a hankering for the enjoyment of pleasures. They were born next as Sukānta and Rativegā.]

6 10b रइवेय—This name occurs elsewhere, e.g. 20 8b 20 8a and 22 4a as रइवेयम, रयवेयम and रयवेयम.

12 9b णियइ तारियाउ सिरि देवी the lady raised her eyes or pupils of her eyes, towards her head. This is considered to be a sign of approaching death. Compare डोळे वर चढणें or फिरणें in Marathi.

15 4b तियमणु, i. e., स्त्रीमति, i. e., wicked mind of a woman or a woman.

XXXI.

[Sukānta and Rativegā recollected then their former life. They met in that birth a monk, who had but recently renounced the worldly life and said he did not know much of the sacred Law but he told them the salient features of the Jain faith. Sukanta then asked the monk the reason why in youth he became an ascetic. Thereupon the monk gave him the story of his life.

Incidentally there is a mention of a story of a merchant named Suketu and his rival Nāgadatta. Nāgadatta had a wife named Sudattā. One day while Suketu's wife was carrying food for her husband, she met monk to whom she served it at the nāgagrha of her husband's rival. There appeared, as a result of this gift five wonders, particularly a shower of gold and gems. Nāgadatta then said that the wealth be-

Thereupon

d to his wife

ı took all the

wealth and went to the king, but the wealth handled by Nāgadatta immediately turned into charcoal, and his servants were frightened by goblins Nāgadatta then handed over the wealth to Suketu. The next day Nāgadatta discovered one more gem in the temple and in anger tried to crush it with a big piece of stone, but the stone hit him instead Nāgadatta propitiated the Snake in the temple and asked a boon to have an army that would defeat Suketu The snake however said that it was not possible to kill Suketu Suketu subsequently renounced the worldly life, and after death was born as a god His wife, Vasumdharā became a nun, and was born as a god in heaven changing her sex]

3 8*a* णवसवणु, a monk who has been but recently admitted to the Order

10 9 लूयासुत्तें etc. A fly is caught up in the web of a spider and not an elephant A fool falls a victim to a courtesan, but a wise man becomes disgusted with her

24. 1*a* फणिदत्तु, i e, merchant Nāgadatta

25 10*a* चिवपक्खवइसेण, i e, by Nāgadatta 12 रइओहियकर, gems that put into background the lustre of the sun.

27 5*a* धणमसइ etc Nāgadatta thus become inferior to Suketu, the husband of Vasumdharā, in point of wealth

XXXII

[Jaya asked Sulocanā again to narrate to him the happenings of their previous life, particularly those which were told by the Jina Gunapāla Thereupon she gave the narrative of Śrīpāla and his adventures Śrīpāla and Vasupāla were the sons of king Gunapāla and queen Kuberaśrī Gunapāla renounced the worldly life and became a monk One day a report was brought to her that a sage named Gunapāla had arrived in the grove and the queen went to see him Under a bunyan tree in the grove there was a temple of a yakṣa, and people were engrossed in festivities A pair of ladies, of whom one was dressed as male, were dancing there King Vasupāla

did not like the dance of a man and woman when his brother Śrīpāla said that they were not man and woman but both women. It was prophesied that the person who would recognise the lady in man's dress was destined to be her husband This was the starting point of numerous adventures of Śrīpāla who took a horse that disappeared in the sky It was prophesied that Śrīpāla would return safe on the seventh day Now Śrīpāla was really removed by a demon in the form of a horse. When the demon began to fight with Śrīpāla there arrived a yakṣa named Jayapāla to help him. After escaping from the demon, Śrīpāla met six Vidyādhara girls whom he ultimately married as also Vidyudvegā, a Vidyādhara girl, Sukhāvatī, and Vappilā.]

11. 1a b तुहुं पिउ पर etc.—You yourself are my lover; for you have caused the pangs in my body Are there other signs of a lover such as a horn on the head? To have a horn on the head was considered to be an extraordinary sight and hence proverbs in the vernaculars उगवला शिंगे आली etc.

XXXIII

[Sukhāvatī, mentioned in the previous Saṃdhi, was a Vidyādhara girl, and possessed miraculous powers She first showed herself to be an old lady and as soon as Śrīpāla showed to her that he possessed powers to cure any ailment, she gave up the form of an old lady Both of them then went to Siddhakuṭa and offered prayers to the Jina. All the young girls who loved Śrīpāla arrived there. In their presence Sukhāvatī showed her powers once more, made Śrīpāla an old man and still loved him, thus causing her friends to laugh at her There he cured the bend in the neck of a prince and married his sister Prabhāvatī. In the meanwhile Aśanivega the brother of Vidyudvegā arrived there, recognised Śrīpāla, attacked him but he disappeared from there with the help of Vidyudvegā]

11 Note effects of devotion to the Jina mentioned in the Kaḍavaka. 13 दिणु वि चवइ घणु even rainy day becomes fair day on account of the devotion to the Jina 14 चन्दु वि चवइ चकोरु, a sword becomes like lotus full of filaments.

XXXIV

[Sukhāvatī came back home and her father thought of arranging her marriage with Śrīpāla, but he desired to see his elder brother before that event He was accordingly being taken to Pundarikinī. He met a number of adventures on the way, and got an excellent elephant in the forest The elephant had first a mind to attack him, but it was ultimately overcome by Śrīpāla]

2 5b जियसत्तु सहिलसेणु भणिउ, Jitaśatru, the father of Sukhāvatī said to his son Salilasena, i e, Vārisena, to escort Śrīpāla to his town सहिलसेण and सलिलसेण in 3 7b are only synonyms of वारिषेण.

9 15 दिट्ठादिट्ठसरीरी, one, i e Sukhāvatī, who makes her person appear and disappear as the occasion demands

XXXV

[Sukhāvatī now took Śrīpāla, in the presence of the crowd, towards Pundarikinī through the sky, and brought him to the region where the wicked horse left him Nāgabala then offered the hand of his daughter Śaśilekhā to him After marrying her, Śrīpāla was led further by Sukhāvatī In the meanwhile two Vidyādharas met him and asked him to strike a stone pillar, saying that if he could cut the pillar into two with his sword, he would become a Cakravartin. Śrīpāla did cut it into two On his way many kings offered him their daughters and in course of time he secured all the gems that a Cakravartin should possess On the way he fought with Dhūmavega, a wicked Vidyādhara, met his mother in one of his previous births, viz., Satyavatī, who had now become a yakṣinī After having gone through many adventures he arrived on the seventh day at his capital, met his mother Kuberaśrī, and brother Vasupāla Śrīpāla told them that the powers that he attained had been entirely due to the good offices of Sukhāvatī, who was his wife]

16 11 एयहि जीव वि दिज्जइ—Note the corresponding saying in Marathi: इच्यासाठीं जीव सुद्धां द्यावा, I shall even sacrifice my life for her

XXXVI

[Śrīpāla was thereupon married to all the girls; but Vappilā did not like that her husband should marry so many hence she returned to her father's house. Śrīpāla however went there and persuaded her to return home. Similarly he caused Sukhāvati also to return to him. Thereafter he got the seven living gems of the Cakravartin such as senāpati etc., and in due course the cakra also made its appearance in his armoury. All the wealth that came to the king was in the charge of Jasavai, but Sukhāvati thought her to be a miser. The minister however told her that Jasavai was destined to be the mother of a Jina. In course of time Jasavai gave birth to the Jina who was named Guṇapāla. Śrīpāla, in course of time, placed the son of Sukhāvati on the throne and went to practise penance under Guṇapāla, his son.

Sulocanā narrated the above story to King Jaya. He then remembered fully his previous lives and obtained all the vidyās that he then possessed. Priyaṅguśrī however thought that Sulocanā had been giving a story which was not true. In order to convince her king Jaya and Sulocanā went up into the sky to offer worship to Ṛṣabha. On their way Indra put a temptation to trap King Jaya, but he stood the test well. Indra was pleased with him and offered him a boon. King Jaya thereupon arrived at Kailāsa, and offered a hymn to all the twenty-four Jinas whose temples were built by King Bharata.]

4. 21 सजीव रयणइं the seven living gems of a cakravartin, viz सेणावइ, गहवइ हय, गय, थी, थवइ and पुरोहिउ as opposed to lifeless gems such as चक्क etc.

8. 9a सवेसु सहु बिहि वत्थइं the dead body is burnt long with two pieces of cloth, which is the only property that the dead take with them.

XXXVII.

[King Jaya with his queen saluted the images of the coming Jinas and then went to Samavasaraṇa where Ṛṣabha was seated in the midst of gods, men, women, monks and nuns. He saw there his

father and uncle who had also become monks and came to stay there. Sulocanā saw her father Akampana who also had become a monk and her several other relatives Jaya then recited a hymn to praise Risaha, at the end of which he requested Bharata to allow him to be a monk Bharata at first did not like it, but at the intervention of Indra allowed him to do so Sulocanā also allowed him to be a monk He was then admitted to the Order of monks and studied the sacred books Sulocanā became a nun after him.

Now Risaha explained to Bharata all the principles of the Jain faith Bharata then returned home and saw the same night a dream in which Meru was shaken Next morning he asked his priest what the dream signified The priest said that Risaha was about to attain emancipation Bharata then immediately went to Kailāsa Indra also came there to arrange for the celebration of the nirvānakalyāna of the Jina Indra and other gods made a funeral pile of several fragrant trees, Agni-kumāras produced fire to light the pile, and his body was burnt to ashes which were saluted by all gods Risaha attained emancipation on the fourteenth day of the dark half of the month of Māgha

Bharata returned to Ayodhyā One day he found a gray hair on his head At this indication he handed over his kingdom to his son, renounced the world, soon attained kevalajñāna and obtained emancipation from samsāra]

6 9 एयाणेयवियप्पणणाएं, by the law which has modes of expression such as एकत्व and अनेकत्व I take this to refer to the famous सप्तभङ्गीनय in the form स्यादस्ति एकम् etc See 7 3*b* below where we get express mention of सप्तभङ्गी

7. 1*b* समयह तेसट्ठइ तिण्णि सयइ, i e, three hundred and sixty-three systems of heretics There are frequent references to this number of the systems of heretics in Jain literature This number is made up as is mentioned in the famous stanza —

असिदिसदं किरियाण अक्किरियाण च आहु चुलसीदी ।
सत्तट्ठी अण्णाणी वेणइयाण च होदि बत्तीस ॥१॥

12 6b [illegible], the lotus plant has as much (length of its) stalk as (the depth of) water in which it grows, neither more nor less. Similarly Jīva has the same period or extent of [illegible] as its acts have made it to be

16–17 These three kaḍavakas mention some of the tenets of Jainism arranged in consecutive and increasing numbers as in XVIII. 10–11. The terms or items are not entirely identical, but a number of them are repeated. I therefore do not give exhaustive treatment of these terms as I did there, but I think some of them require explanation which I quote chiefly from T.

18 1 [illegible] 3a [illegible] 3b [illegible] 4a [illegible] 5b [illegible] 6a [illegible]. It is rather strange that a Jain writer should mention these four [illegible] as against [illegible] and [illegible] [illegible]. 6b [illegible] 7a [illegible] 8a [illegible] 8b [illegible] 9a [illegible] 10 [illegible] ([illegible]) [illegible] 11 [illegible]

19 2a [illegible] 2b [illegible] (?). 3a [illegible] 4b [illegible] 5b [illegible] 6a [illegible] 6b [illegible] 8b [illegible] 9a [illegible] 9b [illegible]

17 1*a* सिद्धतासियाइ 2*a* च उद्दह मल चतुर्दश मलादयः द्वात्रिंशज्जिनोपदेशपर्यन्ता बाहुबलिकेवलज्ञानोत्पत्तिसमये व्याख्याता।

20 6*b* णिचालियाइ निष्परिस्पन्दानि कृतानि, were rendered inactive 10*a* अच्छतु वि अगु ण छिवइ देउ, Risaha, although he still existed as a soul, had given up all contact with body At the time of मोक्ष the soul exists, but it is not in any way connected with physical body 11 वसुसमहिं सिद्ध-गुणहिं—for the eight qualities of a सिद्ध, see page 630, (8) (b)

GLOSSARY OF IMPORTANT PRAKRIT WORDS

[*In this Glossary only some rare and important Prakrit words are indexed and their convenient equivalents in Sanskrit are supplied Only one occurrence of the word, usually the first, is noted A complete glossarial index of Prakrit words is no longer a necessity as dictionaries like Paiyasaddamahannavo are now available M stands for Marathi*]

अइमल्हइ–मन्दगमन करोति xv 18 7
अईवत्त–अतिमुक्तक xi 1 8
अक्का–माता xvi 25 12
अट्ठिलिय–अस्थिका (cf आठळी M) xxxii 22 6
अब्भिट्ट–अभिगत xxxii 6 13
अम्मणु–कियन्मात्रम् (cf अमळ M) xxv 2 5
अम्माहीरअ–रागध्वनिविशेष iv 4 13
अलियल्लि–व्याघ्र xiii 18 9
अल्लय–करमल, आर्द्रक xxxi 24 4
अल्लवइ–समर्पयति, xxxi 8 3
अल्लिवइ–समर्पयति xxxi 28 3
अवरुण्डइ–आलिङ्गति i 17 13
अवरुण्डिय–आलिङ्गित vi 5 11
अवसें–अवश्यम्, xv 22 10
अविहडिय–परिपूर्ण x 3 13
असराल–बहुल xix 2 4
आलुखिय–आस्वादित xiii 11 4
आहुट्ठ–अर्धचतुर्थ xi 25 2
उच्चोलि–कटीवस्त्र, नीवी (cf ओगी M) (H gives उच्चोल i 131) xxii 15 10
उट्टंट–उन्मत्त xxx 4 7
उप्फाल–पटहध्वनि xxxi 15 6
उब्भिय–ऊर्ध्वीकृत vii 21 18
उल्लुरिअ–कान्दविक (A baker) xxv 21 1
उल्हाइ–अङ्गारावस्थो भवति v 5 4
उव्वार–उद्धरण, रक्षण, xvi 21, 11
उव्वारुअ–अवशिष्ट (cf उर्वरित M) xxxvii 25 3
ओइल्ल–उपरितन xi 5 4
ओम्माहिय–उन्माथित, उत्कण्ठित xxxvii 23 11
ओरालि–शब्द (cf ओरड M) v 1 7
ओरालिअ–आक्रन्दन xxviii 29 1
ओलग्गिय–सेवित vi 5 5
ओहट्टइ–हीन भवति vii 18 7
ओहामिय–तिरस्कृत iv 4 4; अभिभूत xviii 1 5
ओहुल्लिय–म्लान vii 10 1
कउल–चार्वाक, कापालिक xi 17 8
कक्कर–पर्वतशिखर xxxi 23 7
कक्खड–कर्कश, निष्ठुर xi 13 10
कडप्प–संघात, समूह viii 7 6
कडिल्ल–कटिसूत्र iv 4 5
कड्डअ–चुम्बकपाषाण xx 19 2
कणइल्ल–शुक xiii 7 7
कप्पड–कर्पट, वस्त्र (cf कापड M) xxxvi 8 9
कब्बड–वसतिविशेष v 21 3
कयंर–धूलि (cf कचरा M) xxviii 2 14
करंड–स्थागिका iv 19 9
करोडि–शिरोस्थि (cf करोटी M) xii 17 8
कलमलअ–कालुष्य, ईर्ष्याजनित खेद (cf कळमळ, तळमळ M) xxxvi 2 6
कसर–बलीवर्द, vii 20 4, वत्सतर viii 2 18; गोयुवा xxviii 28 7

चुक्कइ–भ्रश्यति IV 8 5
चुणइ–भक्षयति XVI 13 2
चुणय–अरोचकव्याधि XXI 3 7
चुरुलि–ज्वाला XXXII 16 11
चुहुट्टइ–लगति XVI 7 10
चेंचइय–अलकृत III 2 4
चोज्ज–कौतुक, आश्चर्य (cf चोज M) VIII 7 23
चोवाण–यष्टि I 16 10
चोंभल–बीभत्स, समूह (cf चुभळ, चुभळ M) XXVII 27 1
छज्जइ–राजते, शोभते (cf सजण M) I 14 3
छडउल्लअ–समार्जन, जलादिनिक्षेप (cf सडा M) XVI 1 12
छडयण–भ्रमर IX 18 4
छल्लि–त्वक् (cf साल M) XXXVII 20 10
छडइ–परित्यजति (cf सांडणें M) VII 19 15
छाहि–छाया (cf साहुली M) XVII 3 12
छिवइ स्पृशति (cf सिवणें, शिवणें M) IV 5 13
छिप्पइ–स्पृशति (cf शिवणें M) VI 2 13
छिंक–छिक्का (cf शिंक M) XXVI 4 2
छुड्डु–क्षिप्रम् II 19 1
छोडअ–छुटिका, त्रुटिका XXIV 8 1
छोह–क्षोभ, विक्षेप XVII 1 6; क्रोध XXIX 18 8
जडिल–कुङ्कुम XXVIII 1 3
जंपाण–शिबिका (पाल्खीति देशी,T) VII 1 7
जावाय–जामाता XXXIII 4 16
जूरण–खेदन VII 6 12
जूरिय–निर्भर्त्सित VII 5 5
जोंवइ–मुंके XVIII 7 11
जोइय–दृष्ट XVIII 9 4
जोक्खइ–तोलयति (cf जोखणें M) IV 5 5
जोक्खिअ–तोलित XVIII 9. 5
झडप्पइ–आक्रमति (cf झडप M) XXX 4 9
झडप्पण–ताडन (cf झडप M) XXV 4 8
झडप्पिय–पतन VIII 3 9
झलक्क–पूर्णाञ्जलि (cf चुळुक M) XVII 13 6; ओल्य XXXIV 2 11
झलझलिय–ध्वन्यनुकरणे शब्द (cf झुळझुळ वाहणें M) XII 2 13
झलुक्किअ–संतापित (cf झळ M) XXIX. 23 11
झपइ–आच्छादयति (cf झांपणें, झांकणें M) I 11. 4
झपड–नेत्रयोरर्धोन्मीलन (cf झांपड M) XII 12 5
झपिअ–आच्छादित XXVI 14 9
झुलइ–कम्पते (cf झुलणें M) XIV 5 12
झुंबुक्क–स्तबक (cf झुबका M) IV 9 9
झेंदुअ–कन्दुक (cf चेंडू M) I 16 10
झेंदुलिया–पुत्तली (cf शिनळ M) XV 6 15
टक्कर–शिलाशकल (cf ठोकर M) XXXI 16 4
टिट–पुत्तली XXIX 18 9.
टेंट–वृन्त (cf देंठ M) XII 9 18
डर–भय (cf डर M) XXV 8 9
डक्किय–दष्ट XXX 12 8
डाल–शाखा (cf डाहाळी, डाळी M) I 18. 2
डावि–मुद्रा, मुद्रिका XXXV 5 3
डुंग–समूह IX 2 27
डेवत–धावन् XVII 2 8
डेंड्डुह–डुण्डुभ XVI 20 9
डोल्लइ–आन्दोलन करोति (cf डोलणें M) IV 18 2; कम्पते XV 18 3
ढलइ–च्यवति (cf ढळणें M) XXXI 19 12
ढलहलिय–चालित XVII 7. 5
ढलिय–स्रस्त VIII 9 12

डंकार-मत्ताज्ञवनि (cf डांकणे M)
L 13 10
डंकिय आस्वादित XIII. 11 1
डंवर-कुसुमवस्त्रकेश वृत्त XIX. 13 5
डंवर-समूह XXXI. 26 6
डाहड़-चाम्पति (cf डाकणे M) XIV 10 7
डिडीखुय-शिशिरपुत्र (cf डिडी M)
XXXII 3. 5
ढक्क-नाद, महाध्वा XXXV 19 7
ढम्मोर-धूर्त XII. 10 7
ढाहल-नगर XV 1 9
ढिकसुवाई-निश्चितम् XI 9 7
ढिकणुस्तु निःसरणम् XX 1
ढिम्पहार-अग्निः IV 15 11
ढिड्डरिय-निरुपनीत XXXV 1 14
ढिपद मनोक्षेपति V 15 9
ढियपणी-सम्राज्, रज्जु XXV 18 1
ढिरारिड-भविष्येन XIII 13
ढिरिक-चौर XXIX 17 3
ढिरद भविष्येन XIII. 11 11
ढिरोलिय भत्तिंन XXIX 20
ढिरेलम-गृह III. 1 10
ढिसाड-निक्षेपक प्रस्तव XVI 26 8
ढीवर-निष्पत्रपत्ति (cf ढिरणे M)
II. 19 10
ढेसर-दर्प I. 1 1
ढेढीर-कुड्डुम XXV 9 12
तकारि-बाहवे XII. 18. 9
तड-शीघ्रम् XXV 19 18
तडप्प-बापमार IV 11 7
तड़-छदनर (cf तर्के M) XXV 2 8
तंडम-समूह (cf तांड M) XVI 2. 8
तारम-कर्णधार XXV 9. 8
तिरिगिच्छि-मकरन्द, पराग IX 21 11
तिरिक्ख-लुब्धक XXXVII 21, 10
तिवा-श्री I 15. 4
तियाडल-भाल XXXVII 22. 9
तिरिपिच्छ-मकरन्द, पराग V 1 10
तिरिगिछ-मकरन्द, पराग XL 5. 6
तुय-श्री IX. 20 9
तुम्प-तृण (cf तुप M) XXVI 1 5
तुंदादि-कण्डूरा VII 1. 7
तुह-तत XXIV. 8. 9
तोड-गुण (cf तोड M) V 3. 3
थाँलविस-शिष्य XXVIII. 1 5
थोंद-उदर XX. 23 3
थाइ-स्थाने XII 3 19; स्थापक XIII 6 5
थत्ति-स्थान II. 15. 12
थग्ग-थान XII. 11 1
थाह-थान XII. 11 1
थरहरक-कम्पन VII. 9 12
थम-स्तनक (cf थाण M) XII 9 10
थिगिर-अभ्यन्तरिका (cf थिरकणे, थिरकणे M)
VII. 12. 10
थेंस-शिशु (cf थेंस M) III 14 20
दडत्ति-शब्दानुकारी शब्द (cf दाडकन M)
IX 13
दडवडू-शिखरी, सत्वरी XVI. 23. 6
दरमहिय-दमित, मर्दित XV 3 5
दवडड़ी-प्रतापित VII. 14
दवटि-शीघ्र XXIX. 6 3
दह-दूर XXIX. 8. 3
दंदिडोह-अनन्यार्थ जोली किमि दण्ड
XXII. 16 22
दाढा दंष्ट्र XVIII 1 15
दीवड-क्षेपणविशेष (cf दिवड M)
XXVIII. 9 15
दुग्गोलिय-दुग्ध VII. 5. 11
देहलिय-मर्यादा XIII. 10. 1
देर-द्वार (cf दैर M) IV 11. 11
दोर-दाम, रज्जु (cf दोरे M) II. 16 2
धम-धमन (ध्मा) XX. 3

धाह- आक्रोश, क्रन्दन (cf धाय) XIV 8 5
पइरिक्क-प्रचुर IX 24 12
पउलण-प्रज्वलन, पाक VII 6 12
पक्कल-समर्थ XIV 7 5
पच्छाउहु-पश्चान्मुखम् XXXIII 11 3
पडुक्कइ-प्रसरति XXXII 17 2
पत्तल-सूक्ष्म, सुन्दर (cf पातळ M) XVII 10 1
परअ-प्रभात, परेद्यु (cf परवां M) XXXII 26 8
परइ-प्रभाते XVI. 20 12
परवाली-पर+माला (परस्त्री) XI 18 3
परियंदइ-आन्दोलयति IV 4 13
परिहत्थें, परिहच्छें-वेगेन XIV 1 20
परोहड-पश्चाद्द्वार (cf परडा, परडू M) XXIX 14 9
पलाट्टिअ-परिवर्तित XXXIII 6 13
पसंडि-सुवर्ण IX 7 1
पहुल्ल-पुष्प (?), प्रभूत XXV 8 5
पगुत्त-प्रावरण (cf पांघरूण M) I 14 4
पगुरइ-पटेन आच्छादयति (cf पांघुरणें M) IV 15 14
पगुरण-प्रावरण VII. 23 9
पाडिहेर-प्रातिहार्य I 18 9
पाण-चाण्डाल XXXI. 17 5
पालिद्धय-वशवेष्टितपताका XII 9 4
पासुय-शुद्ध, प्रासुक IX 7 4
पासुलिया-पार्श्वास्थिसघात VII. 12 4
पासेय-प्रस्वेद VII 24 10
पाहुण-अतिथि (cf पाहुणा M) XXIV 10 7
पिक्कइ-पक्व भवति VII 14 2
पीलु-हस्तिशावक XXIX 8 1
पुण्णालि-पुंश्चली XVIII 1 7
पुलि-व्याघ्र XXV 16 4
पेल्लावेल्लि-सभ्रम IX 18 16
पेल्लिय-प्रेरित I 12 5
पोट्ट-उदर (cf पोट M) IX 8 15
पोट्टल-ग्रन्थि (cf पोटळी M) XX 10. 12
पोत्ति-स्नानशाटी IX 4 13
पोप्फली-पूगीफलवृक्ष (cf पोफळी) XXII 7 13
फिट्टइ-नश्यति (cf फिटणें M) VIII 4. 36
फुलंधुय-भ्रमर IX 11 9
फुलुंधुय-भ्रमर IX 11 9
बइसइ-उपविशति IV 1 11
बप्प-पुत्र इति संबोधने IV 8 7
बप्पीह-चातक XII 7 2
बप्पीहय-चातक II. 13 13
बाहिरि-बहिस् XVI 3 3
बुक्करइ-शब्द करोति (cf भुकरणें M) VII 25 5
बुक्कार-भूत्कार XV 19 8
बुड्डइ-मज्जति XXXIII 11 11
बुध-मूल VIII 7 10
बोल-ध्वनिविशेष XVII 3 4
बोल्लइ-जल्पति VIII 5 17
बोल्लाविअ-भाषित IV 4 9
बोहित्थ-नौः XVII 4 4
भउहा-भ्रुकुटि XXII 8 2
भम्म-सुवर्ण IV 10 1
भल-भद्र (cf. भला M) IV 5 7
भल्लारय-शुभ, उत्तम VII 17 11
भसल-भ्रमर IX 28 2
भंडइ-कलह करोति XXXV 8 7
भिडिअ-समुख गत (cf भिडणें M) XVII 1 1
भुक्कइ-भषति (cf भुकणें M) I 8 7
भेल-अतिवृद्ध XXIX 25 12
भोल-मूढ (cf. भोळा M) II 20 7
मडप्फर-गर्व XV 15 11
मडह-सुन्दर XII 12 3

विढत्त-अर्जित XVI 3 4
विराल-बिडाल, मार्जार XXX 4 10
विरिक्क-विभक्त VIII 13 23
विरोल्लिय-कदर्थित XXXI. 23 7
विलया-वनिता V 4 13
विसभर-तन्तुवाय, कोलिक XXXI 17 12
विसूरइ-खिद्यते XIV 5 10
विहलंघल-विह्वलाङ्ग XXVIII 19 8
वुण्ण-सकुचित XVII 15 12
वेच्छिल्ल-करेण्टवृक्ष XXV 5 9
वेल्लहल-कोमल III 1 11
वेहाविय-वञ्चित (द्वेधीकृत ?) XVIII 2 2
वेंभल-विह्वल XXVIII 27 1
वोद्रही-तरुणी XXXIII 1 10
वोलइ-अतिक्रामति IX 19 14
वोलाविय-त्यक्त XV 6 4; अतिक्रामित, निष्कासित, XVIII 2 2
वोलीण-अतिक्रान्त II 9 1
वोक्क-यकृत् (कलिजा T) XI 24 12
सइत्त-सचेतन XXX 1 12
समलहिय-अभिलिप्त VI 1 9
सल-शयशयन, चिता, XXIII 8 6
सलसलइ-सलसलध्वनिं करोति (cf सळसळणें M) IV 11 10
सवडमुह-समुख II 2 12
सवलहण-समालम्भन (विलेपन) III 4 7
सव्वल-सवलोहमयी घाणी, तिलपीडनायुध XI 16 9
सहइ-शोभते III 12 16
संगहण-पुश्चलयुगल, जारजारिणीयुगल XXXV 10 1
संच-शरीरबन्ध VIII 9 12; समूह XVII 5 2
साइउं-आलिङ्गन V 15 9
साड-विध्वंसक XIV 5 14
साडी-शाटी, वस्त्र XII. 5 3
सारी-उत्तमा III 6 1
सिणिसिव-तन्तुवाय, कोलिक XXXI 17 13
सिप्पि-शुक्ति (cf शिंप M) IV 6 11
सिप्पीर-पलाल VII 19 4
सिलिंधय-चाल XXXIII 6 6
सिलिंव-शिशु II 13 9
सिहिण-स्तन II 16 2
सीसक्क-तुप XIX 2 2
सुढिअ-दुःखित III 17 2
सेल्ल-प्रास VII 5 11
सेहीर-सिंह XXV 3 5
सेंभ-श्लेष्मा XX 14 10
सोण्णार-स्वर्णकार (cf सोनार M) XXXI 7 2
हट्ट-पण्यवीथिका (cf हाट M) I 16 1
हेडि-शृङ्खला VII 13 8
हल्लइ-कम्पते (cf हलणें M) XIV 5 12
हल्लिय-कम्पित I 12 5; चलित XV 15 5
हुर-दुःख XI 11 4
हुंड-विकलेन्द्रिय XI 1 11
हूलिय-प्रोत VII 5 10
हवाइद्ध-कुपित XXXII 20 4
होहल्लर-जो जो शब्द IV 4 14

ADDENDA ET CORRIGENDA

Page	Kadavaka	Line	For	Read
४	१(n)	१४(n)	उद्धृय° उद्धत°	उद्धृय° उद्धृत
१५	१६	८	ण	ण
२४	७	६	भ यहि	भायहि
२४	७(n)	३(n)	जिनाग	जिनागमे
२७	११	१	जतजणेण	जत जणेण
३९	४	११	सइ	सइ
४६	१२	५	जोणयह	जोयणह
५२	१९	१	णय	णव
७७	७	१०	मुाद्धदारेण	मुद्धिदारेण
८३	१४	९	फलिइ	फलिह
८९	२२	६	पुग्सु सपससहु	पुरिसु सपससहु
१०६	१०	१०	मरत	मरंत
१२४	३	७	एत्यु	एत्थु
१४८	१०	८	सक्काराह	सकारहि
१६५	१	५	तुह	तुहुं
१६८	४	६	रूढएहिं	रूढएहिं
१८४	७	९	एक्को रुय	एक्कोरुय
१८५	८	१५	अद्धुय	अद्धुय
१८९	१५	१	घडसह	घडसइ
२०५	३५	११	अज्जिय सघट्टु	अज्जियसंघट्टु
२३२	११	७	सडणय	सडयण
२३३	१	१६	स पट्टु	सपट्टु
३००	८(n)	९(n)	कदासिहि	कदासिइ
३०२	११(n)	६(n)	रुंच	तुय
३०९	६(n)	९(n)	माह्र	याह्र
३२१	८(v.l)	१०(v l)	MP	Mp
३३९	७	६	ि याउ	पणिवाउ
३४७	३	१४	सायहि	साविहि
३७९	१	७	पडियभवणहु	पडिय भवणहु
३८०	३	१	याद्दिय	यंद्दिय
३९८	१२	८	मुणिविणय°	मुणि विणय°

Page	Kadavaka	Line	For	Read
४	१५	४	सिरिपुर	सिरि पुर
	१५	१	पसरेसि	सारेसि
४१७	१४	५	समरें हुणि	उवमेंतु सि
४३६	१३	७	रिव कहिन	रिवकहिन
४३३		३	समायाउं	समायाउ
४३६	११	१४	सुरसम	सुर सम
४६	१४	७	रमित	समिन
४७	११	४	असुहाणें	असुहाणें
४ ३	१४	४	णा	णो
५ २	१	११	कजाविप	केवलिप
५ ६	६२	१	वेलम्म	परमेसर
५	२४	६	वहिपमि णाम	वहियमिणाय
५३३	५	१	समणिवाय	समयणिवाय
५३६	६	५	ल	लो
५ २		५	हेमि	हिमि
५५७	१६	३	णिउणम	णिम मम
५	१	४	मिहम	मिहम
५ ४	१५		उवमिय	पउमिय
५ ४	६	२	हेऊउ	हेऊ उ
४	१६	३	संगामोमि	समाम समी